

प्रकाशकीय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ अन्यान्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास और समन्वय का उद्देश्य रख कर अन्तरप्रान्तीयभाषा शब्दकोश की एक योजना बनायी है। इस योजना के अन्तर्गत सर्वप्रथम चारों द्राविड भाषाओं को प्राथमिकता देकर तेलुगु-हिन्दी-कोश, कन्नड़-हिन्दी कोश, मलयालम हिन्दी कोश और तमिल हिन्दी कोश का निर्माण कराना निश्चित किया गया। तेलुगु हिन्दी कोश प्रकाशित हो गया है, तमिल-हिन्दी कोश छप रहा है और यह कन्नड़-हिन्दी कोश छप कर तैयार है।

इस द्विभाषी कोश के सम्पादक प्राच्य भाषाविद् श्री एन० एस० दक्षिणामूर्ति हिन्दी, संस्कृत तथा द्राविड भाषाओं के उत्कृष्ट विद्वान् हैं। विद्वान् संपादक ने इस कोश के संपादन में अपने वैदुष्य और परिचय-चारुता का परिचय दिया है।

इस कोश में मूल कन्नड़ भाषा के शब्दों को कन्नड़ और नांगरी दोनों लिपियों में प्रस्तुत कर शब्दार्थ लिखे गए हैं। प्रत्येक शब्द की प्रकृति और उसके अर्थतात्विक विकास को बड़ी सावधानी से प्रस्तुत किया गया है। जहाँ तक हमारी जानकारी है, इससे पूर्व कन्नड़ में इस विधा का कोई द्विभाषी कोश प्रकाशित नहीं हुआ है। इस कोश में व्यावहारिक शब्दावली पर पूर्ण ध्यान देते हुए कन्नड़ भाषा के मुहावरों, लोकोक्तियों, कन्नड़ हिन्दी की साधारण शब्दावली और व्यावहारिक प्रक्रियाओं का विशिष्ट रूप से परिचय दिया गया है। आशा है यह कोश कन्नड़ भाषा और हिन्दी भाषा का तादात्म्य संबंध जोड़ने में सफल होगा।

—सुरेन्द्रनारायण द्विवेदी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रधानमंत्री

भूमिका

कन्नड-हिन्दी कोश की भूमिका लिखते हुए मैं अतीव प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। मैसूर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. एस. एन. दक्षिणामूर्ति जी द्वारा रचित यह कोश हिन्दी के माध्यम से कन्नड सीखनेवालों के लिए अधिक उपयोगी है और भारत की भावात्मक एकता के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय कार्य है। जब इसकी छपाई शुरू हुई थी तभी मुझे इसके अवलोकन का अवसर प्राप्त हुआ था। इसमें कन्नड-शब्द कन्नड और देवनागरी दोनों लिपियों में दिया गए हैं। शब्दार्थ हिन्दी में दिए गए हैं, आवश्यक स्थानों में विवरण दिया गया है। इस ढंग का कोश अब तक प्रकाशित नहीं हुआ है, ऐसा कोश सर्वथा उपादेय है। हिन्दी भाषा-भाषियों को इससे पूरा लाभ उठाना चाहिए। डॉ० एस. एन. दक्षिणामूर्ति जी ने “हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन” “हिन्दी और तेलुगु के कृष्ण काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन” आदि रचनाएँ हिन्दी-साहित्य को इसके पहले दी हैं। इनकी “पंपरामायण की कथा” केन्द्र सरकार से पुरस्कृत हुई है। “कर्नाटक और उसका साहित्य” और “कन्नड-हिन्दी-कोश” की रचना के द्वारा इन्होंने कन्नड और हिन्दी को परस्पर निकट लाने का प्रयत्न किया है। मैं इनको हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि ये हिन्दी-साहित्य को और भी अनेक साहित्यिक कृतियाँ प्रदान करेंगे। शुभम्।

कालू लाल श्रीमाली

निवेदन

वर्तमान मैसूर राज्य (कर्नाटक) की भाषा कन्नड है। भारत की चौदह प्रमुख भाषाओं में कन्नड भी एक है। यह एक समृद्धशाली भाषा है जिसकी एक स्वस्थ साहित्य-परंपरा है। विशाल वटवृक्ष की शाखोपशाखाओं की भाँति इसके साहित्य की व्याप्ति है।

कन्नड भाषा के स्वरूप की चर्चा करते हुए विद्वानों ने इसके तीन रूप बतलाये हैं—(१) इळगन्नड अर्थात् प्राचीन कन्नड, (२) नडुगन्नड अर्थात् मध्यकालीन कन्नड तथा (३) होसकन्नड अर्थात् आधुनिक कन्नड। इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग तीन करोड़ है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि साहित्य के अंगों में कोश का विशेष महत्व है। साहित्य के अध्येता के लिए ही नहीं भषातत्त्वविदों के लिए भी कोश-ग्रंथ सर्वाधिक उपयोगी वस्तु हैं। कन्नड में काव्य, नाटक, उपन्यास आदि साहित्य-विधाओं के समान ही कोश-ग्रंथों की भी सुन्दर परंपरा है। कन्नड-कोश-ग्रंथों में 'रत्नकंद' का नाम प्रथमतः उल्लेखनीय है। 'शब्दसार', 'कर्नाटक निघंटु', 'चतुरास्य निघंटु', 'कर्नाटक शब्दमंजरी', 'कन्नडगर कैपिडि' [कवियों की (सहायक) पुस्तक], 'कविकंठहार', 'कर्नाटक-संजीवन' आदि प्राचीन कन्नड-कोश हैं। 'वस्तुकोश', 'मंगाभिधान', 'नानार्थ रत्नाकर' जैसे ग्रंथों में संस्कृत के शब्दों के कन्नड-अर्थ मिलते हैं। आधुनिक युग में स्वर्गीय रेवरेंड एफ. किट्टल साहब ने कन्नड-अंग्रेजी-कोश की रचना कर कन्नड भाषा की अकथनीय सेवा की है। मैसूर विश्वविद्यालय ने अंग्रेजी-कन्नड-शब्दकोश का प्रकाशन किया है। कन्नड-साहित्य परिषद् (बेंगलूर) ने बृहदाकार कन्नड-कन्नड-शब्दकोश (चार भागों में) प्रकाशित करने की योजना बनायी है। यह अत्यंत स्तुत्य कार्य है। तीन-चार हिन्दी-कन्नड-कोश ग्रंथ भी अब तक प्रकाशित हुए हैं।

पाश्चात्य विद्वानों तथा आधुनिक काल के भारतीय पण्डितों ने कन्नड को द्राविड परिवार की भाषाओं के अंतर्गत माना है। परन्तु, यह ध्यान देने की बात है कि कन्नड में ६०-६५ प्रतिशत से भी अधिक संस्कृत शब्द प्रयुक्त होते हैं तथा ऐसे बहुत से शब्द मिलते हैं जिनका मूल संस्कृत ही है। इस कोश में ऐसे शब्दों का पर्याप्त संग्रह किया गया है। शब्द भाण्डार की दृष्टि से विचार करें तो कोई भी भाषा विशुद्ध नहीं कही जा सकती है। अन्य भाषाओं के सदृश्य ही कन्नड में भी अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के बहुत-से शब्द प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों के स्वरूप अथवा लिखने के विधान में कन्नड और हिन्दी में यत्र तत्र भेद दृष्टिगत होता है। उदाहरणार्थ—ತಾಸೀಲು तासीलु (तहसील), ಗಲೀಜು (गलीज़) ಗಲಿಜು (गलीज़), ತಾಲ್ಲೂಕು (ताल्लुकु), ಸುಬೇದಾರ (सूबेदार) आदि शब्द देखे जा सकते हैं। कहीं-कहीं अन्य भाषाओं से आये हुए शब्दों के अर्थों में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। उदाहरण के लिए ಹಲ್ಕಾ 'हल्का' शब्द लीजिए। कन्नड में यह शब्द 'तुच्छता' और 'नीचता' का ही अर्थ-द्योतक है।

यहाँ कुछ संस्कृत शब्दों के संबंध में भी बतलाना आवश्यक है। संस्कृत ईकारांत स्त्रीलिंग शब्द कन्नड में प्रायः इकारान्त हो जाते हैं। सरस्वति, गौरि, पार्वति आदि इसके उदाहरण हैं। आकारांत स्त्रीलिंग शब्द कन्नड में प्रायः ह्रस्व एकारांत हो जाते हैं। उदाहरण—ಅಂಗನೆ अंगने (अंगना), ಛಂಟೆ घंटे (घंटा), ಮಿಕ್ಷೆ मिक्षे (मिक्षा), ಲತೆ लते (लता), ವಿದ್ಯೆ विद्ये (विद्या) आदि।

इस कोश में प्रयुक्त चिह्नों का विवरण अन्यत्र दिया गया है। विरामचिह्न के बाद जहाँ '—' लगाया गया है वहाँ यह समझना चाहिए कि मूल शब्द के साथ आगे के शब्द को जोड़कर उसका अर्थ किया गया है। उदाहरण के लिए 'ಕೆನೆ' केने शब्द को लीजिए। विरामचिह्न के बाद '—' चिह्न लगाकर 'ಹಾಲು' हालु' लिखा गया है। इसे 'ಕೆನೆಹಾಲು' केनेहालु' पढ़ना चाहिए। जहाँ पूरा शब्द ही लिखना अधिक उपयोगी माना गया है, वहाँ वैसा ही लिखा गया है। उदाहरण — 'ಕೆನ್' केन् के अंतर्गत 'ಕೆಂದನ' केंदन', 'ಕೆಂದಲೆ' केंदले', 'ಕೆಂದಾವರೆ' केदावरे' आदि शब्द पूर्णतः लिखे गये हैं। उपयोगी मुहावरों और कहावतों का उल्लेख भी इस कोश में स्थान-स्थान पर किया गया है और उनका अर्थ भी स्पष्ट किया गया है।

इसमें लगभग २४००० शब्द संगृहीत हैं। इस संग्रह-कार्य में मुझे निम्नलिखित कोशों से अधिक सहायता मिली है।

- (१) कन्नड-अंग्रेजी-कोश (रेवरेंड एफ़ किट्टल)।
- (२) कन्नड-कन्नड-कस्तूरि-कोश (पं० चे. ए. कवल्लि)।
- (३) संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ (चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा)।
- (४) बृहद्-हिन्दी-कोश (कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुंदीलाल श्रीवस्तव)।
- (५) Bhargava's Standard Dictionary Anglo-Hindi (Prof. R. C. Pathak).
- (६) कन्नड-कन्नड-हिन्दी-शब्दकोश (गुरुनाथ जोशी और बी. अश्वत्थनारायण)।

इन कोशों के संग्रह कर्त्ताओं के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ़ और सुस्थित करने में तत्पर प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रति भी, जो इस ग्रंथ का प्रकाशन-कार्य कर रहा है, अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिन लोगों से मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता प्राप्त हुई है, उनका भी मैं अभारी हूँ। आशा है, सज्जनों से मुझे समुचित प्रोत्साहन मिलेगा।

अंत में मुद्रणकालीन परिस्थितियों का भी स्मरण करता हूँ। परमात्मा की कृपा से, दीर्घ काल के उपरांत यह कोश प्रकाश में आ रहा है, यही संतोष का विषय है। मैसूर प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री जी. एच. रामराव को, जिन्होंने सुंदर ढंग से कोश को छापा है, धन्यवाद देता हूँ।

एन. एस. दक्षिणामूर्ति

अक्षर-संकेत.

८—ए (दीर्घ)

६—ओ (दीर्घ)

५-८

६१—क

ह्रस्व ध्वनि सूचित करने के लिए अन्य स्थानों में अक्षर के नीचे बिन्दु का प्रयोग किया गया है, जैसे—अंघ्रे (अ०ई), अंजिके (अ०जि०), अंठ्रेकालु (अ०भ०कालु) कोलिमे (को०लि०), कोल्लु (को०ल्लु) आदि ।

शब्द-संकेत

हि.—हिन्दी शब्द ।

कन्नड-हिन्दी कोश

अ अ

अ अ—कन्नड-वर्णमाला का प्रथम अक्षर। (क) प्र०—षष्ठी विभक्ति प्रत्यय।

अ (सम्) सं.—1. विष्णु—‘अकारो विष्णु रुद्रिष्ट’ 2. ब्रह्मा, विष्णु और शिव का नाम 3. वायु 4. कछुवा 5. आँगन 6. अंतःपुर 7. युद्ध, लड़ाई।

अ (सम्) उप.—नहीं, न, मत अर्थ सूचक उपसर्ग जो संज्ञा, विशेषण और धातुओं के पीछे लगता है। [संस्कृत में न, अ, अन् प्रायः सादृश्य, अभाव, भेद, अल्पता, अप्राशस्त्य और विरोध अर्थ-द्योतक हैं, जैसे—अब्राह्मण (ब्राह्मण के जैसे जनेज पहननेवाला-क्षत्रिय, वैश्य आदि), अकलंक, अपट (जो पट नहीं अर्थात् अन्य कोई वस्तु), अनुदार, अकाल, अपक्व इत्यादि।]

अं (क) प्र.—बहुत, अधिक, अति। ह. क. में अकारांत संज्ञा शब्दों के भागे लगता है।

अंक (सम्) सं.—1. अंक, संख्या 2. गोद 3. संकेत, निशान 4. दोष, कलंक 5. टेढ़ा, दुष्ट 6. भारी, बोझा 7. कष्ट, तकलीफ 8. नाटक का एक भाग 9. युद्ध, कलह 10. बिंदी अंकड़ी।

अंककार (सम्) सं.—1. प्रभाव-शाली मनुष्य 2. हार-जीत का निर्णय करनेवाला 3. नायक 4. प्रमुख सेवक।

अंककार्ति (सम्) सं.—1. नायिका 2. प्रमुख सेविका।

अंकगणित (सम्) सं.—अंकगणित, संख्याओं से किया जानेवाला गणित।

अंकण (क) सं.—दो खंभों के बीच का स्थान; दो रेखाओं के बीच का स्थान।

अंकत्रिणेत्र (सम्) सं.—

1. योद्धा, शूर 2. शिवजी।

अंकन (सम्) सं.—चिह्न, निशान।

क्रि.—निशान कर, छाप लगा।

अंकपालि (सम्) सं.—आलिंगन, मिलन।

अंकपाश (सम्) सं.—गणित में संख्या-चमत्कार का एक विधान।

अंकमाले (सम्) सं.—1. संख्याओं का समूह 2. उपाधि, बिरुद 3. उपाधियों की माला या हार।

अंकपीठ (सम्) सं.—गोद, अंक।

अंकमुख (सम्) सं.—नाटक के अंकों का प्रारंभ, आगे की घटनाओं की सूचना।

अंकलि (तद्) सं.—अंकोलः (तत्); पिश्टे का पेड़।

अंकलिपि (सम्) सं.—मूलाक्षर चिह्न।

अंकवणि, अंकवणे (क) सं.—अलंकृत पीढा, पीड़ा।

अंकवरे (क) सं.—रणवाद्य, रणभेरी।

अंकवातु (क) सं.—सुंदर वात, मधुर वचन, मधुर बोली, सद्बचन।

अंकित (सम्) वि.—1. अंकित, वह जिसमें निशान या चिह्न लगाया गया हो 2. अधीन, जो वश में हो। सं.—चिह्न; शब्द; अर्पण; छाप, हस्ताक्षर। (प्रायः भक्त कवियों की कविताओं में उनके इष्टदेव के नामों की छाप देखी जाती है, इसको कन्नड में ‘अङ्कित’ कहते हैं; जैसे—बसवेश्वर के वचनों में ‘कूडल संगमदेव’ और पुरंदरदास के पदों में ‘पुरंदर विठ्ठल’ की छाप मिलती है। हिन्दी के कवि कबीर, सूर, तुलसी आदि

की कविताओं में उनके नामों की छाप मिलती है।)

अंकितनाम (सम्) सं.—अंकित नाम, रखा गया नाम।

अंकिसु (सम्) क्रि.—1. अंकित कर, निशान लगा, चिह्न लगा 2. ध्यानपूर्वक देख 3. आदर कर, आदर से देख।

अंकुर (सम्) सं.—1. अंकुर, पल्लव 2. शरीर पर के रोम 3. रक्त 4. जल, पानी 5. नौक, अग्रभाग 6. फोड़ा।

अंकुरित (सम्) वि.—अंकुरित, जिसका अंकुर निकला हो; उत्पन्न, उद्भूत।

अंकुरिसु (सम्) क्रि.—(अंकुर + इसु—‘इसु, कन्नड’ प्रत्यय) अंकुरित हो; उत्पन्न हो, जन्म लो, पैदा हो, बढ़।

अंकुशचारण (सम्) सं.—अंकुश से हाथी को चलाने की क्रिया।

अंकुशचारिणि (सम्) सं.—महावत, अंकुश से हाथी को चलानेवाला।

अंकुशधारि (सम्) सं.—महावत।

अंकुस (तद्) सं.—अंकुशः (तत्); काँटा विशेष जिससे हाथी को हँका जाता है; रोकथाम।

अंके (क) सं.—1. आज्ञा 2. वश, अधिकार; प्रभुत्व 3. सहारा, सहायक, टेकने की लाठी 4. उम्मीद, भरोसा, विश्वास।

अंके (तद्) सं.—अंक, संख्या।

अंकोट, अंकोठ, अंकोल (सम्) सं.—पिश्टे का पेड़।

अंकोणि (क) सं.—रक्तात्र, पेर रखने का स्थान।

ॐ०००० अंगसंग (सम्) सं.— 1. देह-संपर्क
2. मिलन, मैथुन ।

(2) ७०१ अंगि (क) सं.—कुरतां, पहनने का कपड़ा।

1. उगली का इशारा 2. मुहरवाली

अंगारुण संग्राणे (क) सं. — 1. निन्दा,
दूषण 2. शिकायत । अंगारुण संग्राणे
(मै. प्र.) ।

उसका रंघ ।
७०४ अंजे (क) सं.—धोती, कपड़ा ।

अ०रु०००० अंजटे, अ०रु०००० अंजटे (क) सं.—
एक पौधा, The plant Flacourtia
cataphracta.

अ०रु०००० अंतरले, अ०रु०००० अंतरले-
कायि (क) सं.— एक प्रकार का कच्चा फल,
रीठा ।

अ०रु०००० अंतरिके (क) सं.— एक प्रकार की
कॉटेदार घास, Acacia intsia willd

अ०रु०००० अंतरिसु (क) क्रि.— बाष्प रूप में
उड़ना ।

अ०रु०००० अंतवाळ (क) सं.— रीठा ।

अ०रु०००० अंडु (क) क्रि.— 1. लग, मिल,
हिल-मिल, घुल-मिल 2. आलिंगन कर
3. स्पर्श कर 4. पीछा कर, अनुगमन
कर । सं.— 1. लगनेवाली रसदार वस्तु,
गोंद (Gum), लासा 2. रिश्ता, संबंध
3. संसर्ग 4. अशुद्धि, गंदगी 5. एक
स्थान से निकाल कर दूसरे स्थान पर लगाया
जानेवाला पौधा अथवा पेड़ की शाखा ।—
अ०रु०००० अंतिमर (क) सं.— एक
वृक्ष, Embryopteris glutinifera.—
अ०रु०००० अंडुसुट्ट (क) सं.— परिवार
में किसी की मृत्यु के कारण उत्पन्न अशुद्धि ।
— अ०रु०००० अंडुरोग (क) सं.— छूत की
बीमारी ।— अ०रु०००० अंटेळे, अ०रु००००
अंडु एळे (क) सं.— बुनाई में लगनेवाले
धागे ।

अ०रु०००० अंडुक (क) सं.— बीमार अथवा
असहाय मनुष्य ।

अ०रु०००० अंडुगल्लु (क) सं.— अयस्कान्त,
चंबुक पत्थर ।

अ०रु०००० अंत्वाळ (क) सं.— दे. अ०रु००००.

अ०रु०००० अंड (सम्) सं.— 1. अंड, दीर्घ
वर्तुलाकार पदार्थ 2. ब्रह्माण्ड 3. कस्तूरी
मृग की नाभि 4. शिव का नाम 5. ब्रह्मा,
6. अंडा ।— अ०रु०००० आकार, अ०रु००००
(सम्) सं.— अंडे के आकार (शकल) का ।
अ०रु०००० आशय, अ०रु०००० कोश (सम्) सं.—
अंडकोष ।

अ०रु०००० अंडज (सम्) सं.— पक्षी, मछली,
सर्प, छिपकली ब्रह्मा ।— अ०रु०००० जा (सम्)
सं.— कस्तूरी ।— अ०रु०००० ध्वज, अ०रु००००
तुरंग, अ०रु०००० यान (सम्) सं.— विष्णु ।
— अ०रु०००० याने (सम्) सं.— लक्ष्मी ।—
अ०रु०००० अधिप (सम्) सं.— सर्पराज, गरुड ।
अ०रु०००० अंधिपकुंडल (सम्) सं.—
सर्पराज जिनके कुंडल हैं, शिव ।

अ०रु०००० अंडले (क) क्रि.— 1. दबाना, सताना,
तकलीफ या कष्ट देना, दुःखाना 2. हेय
दृष्टि से देखना 3. पीछा करना, अनुगमन
करना 4. बेकाम इधर-उधर फिरना । सं.—
तकलीफ, कष्ट, दुःख, पीडा, बलात्कार ।

अ०रु०००० अंडिगे (क) सं.— गडरी, बड़ा बोझा ।
अ०रु०००० अंडिसु (क) क्रि.— समीप जा, बैठ,
शरण में जा ।

अ०रु०००० अंडीर (सम्) सं.— पुरुष, बलवान
पुरुष ।

अ०रु०००० अंडु (क) सं.— 1. नितंब, पृष्ठ
2. आश्रय, सामीप्य ।— अ०रु०००० कोळ,
अ०रु०००० कोळलु (क) क्रि.— समीप जा,
आश्रय में जा ।

अ०रु०००० अंडु (तद्) सं.— अंड (तत्) ।

अ०रु०००० अंडे (क) सं.— 1. सामीप्य 2. साहाय्य
3. किसी वस्तु का भाग 4. एक बड़ा
बर्तन—साधारणतया इसका मुँह बड़ा होता
है; खाना पकाने का बर्तन । अ०रु००००
अ०रु०००० अंडेय वायि कट्टबहुदु मुंडेय
वायि कट्टकूडदु— बड़े बर्तन का मुँह बंद
किया जा सकता है, विधवा का मुँह बंद
नहीं किया जा सकता (कह.) ।

अ०रु०००० अंडेय (क) सं.— एक बड़ा बर्तन,
अ०रु०००० अथवा अ०रु००००.

अ०रु०००० अंत (क) अ.— 1. तुलना करते या
उपमा देते समय व्या. भा. में इसका प्रयोग
होता है । बोलते समय किसी कहावत के
अंत में 'अ०रु००००' शब्द का प्रयोग द्रष्टव्य है,
यथा — 'अ०रु०००० अ०रु०००० अ०रु००००'
अ०रु०००० 'होस

नीरु बंडु हळे नीरु कोचिकोंडु होयितु' अंत-
नया पानी आकर पुराने पानी को बहा ले
गया (कह.) । 2. शब्दों के अंत में लगने-
वाला प्रत्यय, जैसे— अ०रु०००० अगल
वादंत—चौड़ा । हिन्दी शब्द 'जैसा' अथवा
'मा' (सी) इस अर्थ का व्यंजक हो सकता
है । उदा.— अ०रु०००० अवनंत— उसके
जैसा, अ०रु०००० रामनंत— राम जैसा,
अ०रु०००० सीतेयंत— सीता जैसी (या सी)
3. कि (संयो.) उदा.— अ०रु०००० अ०रु००००.
अंत हेळिदुरु—(उन्होंने) कहा कि ... ।

अ०रु०००० (सम्) सं.— अंत, मृत्यु, छोर, किनारा,
समाप्ति ।

अ०रु०००० अंत, अ०रु०००० अंतर्, अ०रु०००० अंतस्,
अ०रु०००० अंतः (सम्) सं.— बीचोबीच,
अंदर, में ।

अ०रु०००० अंतःकरण (सम्) सं.— 1. अंतः-
करण, मन 2. करुणा, दया 3. प्रेम,
प्रीति ।— अ०रु०००० मलिने (सम्) सं.—
वह स्त्री जिसका अंतःकरण मलिन है ।—
अ०रु०००० शुद्ध, अ०रु०००० शुद्धात्म (सम्)
सं.— शुद्ध अंतःकरणवाला ।

अ०रु०००० अंतःकलह (सम्) सं.— अतः-
कलह, अंदर का झगड़ा ।

अ०रु०००० अंतःपुर (सम्) सं.— अंतःपुर,
रनिवास ।

अ०रु०००० अंतःप्रक्षेपणि (सम्) सं.—
1. पिचकी, पिचकारी 2. औषधि की
पिचकारी (Syringe).

अ०रु०००० अंतःस्थ (सम्) सं.— 1. मन, जो
अंदर हो 2. अंतस्थ वर्ण—य, र, ल, व ।

अ०रु०००० अंतःस्वेद (सम्) सं.— हाथी ।

अ०रु०००० अंतक (सम्) सं.— यम ।— अ०रु०००० हर
(सम्) सं.— शिव ।— अ०रु०००० कांतक
(सम्) सं.— शिव ।

अ०रु०००० अंतत्ते, अ०रु०००० अंतत्व (सम्) सं.—
अंतता, समाप्ति ; अंत होने की स्थिति ।

अ०रु०००० अंतपार (सम्) सं.— छोर और
पार ।

ಅಂತ್ರಿ ಅಂತ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಅಂತಡಿ ।
 ಅಂತ್ರಿ ಅಂತ್ರ (ತದ್) — ಅಂತರ (ತನ್) । ಉದಾ. —
 ದೇಶಾಂತರ ದೇಶಾಂತರ ।

७०३ अंत्रि (क) सं— एक पौधा (Ipomea pes caprae Roth or convolvulus argenteus.)

७०४ अंद (क) सं— सौंदर्य, रूप । — ७०४ एरु (मुह.)— सुन्दर हो, अच्छा हो । — ७०४ गार— सुन्दर पुरुष । — ७०४ गार्ति— सुन्दरी ।

७०५ अंदण, ७०६ अंदल (क) सं— पालकी ।

७०७ अंदिगे, ७०८ अंदुगे (क) सं— १. जंजीर २. पायल, नूपुर, घुंघरू । अंदु (तत्) ।

७०९ अंदुक (सम्) सं— पायल, नूपुर । ७१० अंध (सम्) सं— १. अंधा २. अंध-कार ३. जल ४. मूर्ख । — ७१० अंध-परंपरे (सम्) सं— अंध-परंपरा, अंधानुकरण, मूढ-विश्वास ।

७११ अंधक (सम्) सं— १. अंधा २. एक राक्षस का नाम । — ७११ जित (सम्) सं— शिव ।

७१२ अंधकार (सम्) सं— अंधकार, रात्रि ।

७१३ अंधकाराति (सम्) सं— शिव । ७१४ अंधतमस (सम्) सं— अत्यधिक अंधकार ।

७१५ अंधस (सम्) सं— १. अंधा २. भोजन ३. उबाला गया चावल ।

७१६ अंधु (सम्) सं— कुआ, कूप ।

७१७ अंध्र (सम्) सं— १. आंध्र प्रदेश २. तेलुगु भाषी ।

७१८ अंपक (क) सं— १. विदाई, बंधु-मित्रों की विदाई का समारोह २. भोजना, प्रेषित करना । (तेलुगु — ७१८ अंपु, ७१९ पंपु (क्रि.) — भेज ; तमिल — ७१८ अंपु, ७१९ अनुपु (क्रि.)—भेज) ।

७१९ अंव (सम्) सं— १. पिता २. आँख । (क) अ. — कहा जानेवाला '७१९ एंव' भी इसी अर्थ का द्योतक है ।

७२० अंवक (सम्) सं— १. आँख २. पिता ३. ताम्र ४. संख्या '२' ।

७२१ अंवकल, ७२२ अंवल ७२३ अंवलिलि, ७२४ अंवलिलि (क) सं— छाछ या भट्टे में मिलाया गया आनाज का आटा जो आहार के रूप में पिया जाता है ।

७२५ अंवग, ७२६ अंविग, ७२७ अंविग (क ?) सं— मल्लाह, कर्णधार, नाविक ।

७२८ अंवट (तद्) सं— अंबट (तत्) नाई । [७२८ नाविद (क) और ७२९ अंवटन् (तमिल)]

७२९ अंबट, ७३० अंबटे (तद्) सं— आन्नातः (तत्), आमड़ा ।

७३१ अंबर (सम्) सं— १. कपड़ा, वस्त्र २. गगन, आकाश, नभ, वातावरण ३. शून्य '०' का चिह्न ४. कपास, रुई ५. एक प्रकार की सुगंधि ६. अन्नक । — ७३१ चर (सम्) सं— गगनचर, पक्षी, देवता । — ७३१ मणि (सम्) सं— सूर्य ।

७३२ अंबरीष (सम्) सं— १. सूर्य २. सूर्यवंश का राजा अंबरीष ३. कढ़ाई ४. नरकों में एक ५. शिव, विष्णु ६. युद्ध लड़ाई ।

७३३ अंबल (क) सं— सार्वजनिक स्थान, बड़ा आंगन जहाँ आम जनता एकत्रित होकर ग्राम संबंधी वार्तालाप करती है ।

७३४ अंबल (सम्) सं— १. ब्राह्मण पिता और वैश्य माता का पुत्र २. वैश्य ३. नाई । दे. ७३५.

७३५ अंबले (सम्) सं— जुही, पाठा, पहाड़मूल, चुका, आमड़ा आदि पौधों का नाम ।

७३६ अंबा (सम्) सं— १. माता २. दुर्गा ३. काशी राजा की कन्या ४. गाय का रंभाना (७३६ अंबा, ७३७ अंबे, ७३८ अंब्या शब्द भी इसी अर्थ के सूचक हैं) ।

७३९ अंबाकांत (सम्) सं— दुर्गा के पति, शिव ।

७४० अंबाडे (तद्) — दे. ७४१.

७४१ अंबापति, ७४२ अंबारमण अंबा-रमण (सम्) सं— उमापति, शिव ।

७४३ अंबारि (क) सं— हौदा, हाथी पर बांधा जानेवाला आसन ।

७४४ अंबारे (क) सं— एक प्रकार का कीड़ा जो सूखी लकड़ी में होता है ।

७४५ अंबावर (सम्) सं— उमापति ।

७४६ अंबि (क) सं— नाव । — ७४६ ग (क) सं— मल्लाह, नाविक ।

७४७ अंबिगार (क) सं— नाविक, कर्णधार ।

७४८ अंबिल (तद्) सं— दे. ७४९, अम्बल (तत्) ।

७४९ अंबु (सम्) सं— १. जल २. बाण, शर ३. सूखना, शोषण । — ७४९ चर (सम्) वि.— जल में रहनेवाले जीवजंतु । — ७४९ वाह (सम्) सं— मेघ, बादल ।

७५० अंबुगार (क) सं— धनुर्धारी शिकारी, किरात ।

७५१ अंबुज (सम्) सं— कमल, जल में उत्पन्न । — ७५१ भव (सम्) सं— ब्रह्मा । — ७५१ मित्र, ७५२ सख (सम्) सं— सूर्य ।

७५३ अंबुजानने (सम्) सं— कमलनेत्रा स्त्री ।

७५४ अंबुजांबक, ७५५ अंबुजायताश्व अंबुजायताश्व (सम्) सं— कमल जैसे नेत्र वाले, विष्णु ।

७५६ अंबुजासन (सम्) सं— कमलासन, ब्रह्मा ।

७५७ अंबुजोद्भव (स) सं— ब्रह्मा ।

७५८ अंबुद (सम्) सं— जल देनेवाला, मेघ, बादल । — ७५८ फल (सम्) सं— ओले ।

७५९ अंबुधर (सम्)—बादल, मेघ ।

७६० अंबुधि, ७६१ अंबुनिधि (सम्) सं— जल-समूह, समुद्र ।

ॐॐॐ अकचे (तद्) सं.— अगति (तत्). एक
वृक्ष Grandiflora poir.

ॐॐॐ अकट, ॐॐॐ अकट (क) वि. बो.—
हाय ! हाय ! हा ! हा !

ॐॐॐ अकटक (सम्) वि. — कंटक रहित,
जिसमें कोंटा न हो, निर्विघ्न, बिना खतरे के,
ईर्ष्या रहित ।

ॐॐॐ अकर (सम्) वि. — 1. कर हीन, जिसका
हाथ न हो, कटा हुआ 2. बेकार, बेकाम,
कार्य से विरत 3. कर (tax) से रहित ।

ॐॐॐ अकरण (सम्) सं.— बेकारी, काम न
करना 2. अवयवहीनता ।

ॐॐॐ अकर्तव्य (सम्) सं. — 1. वह
कार्य जो नहीं करना चाहिए, अनुचित या
बुरा काम 2. जुर्म, अपराध ।

ॐॐॐ अकर्म (सम्) वि. — 1. जिसके पास
करने के लिए कुछ काम न हो, सुस्त
2. अयोग्य 3. पतित, दुष्ट । सं.—
1. अपराध, बुरा काम, अनुचित कार्य । क
— अकर्मक क्रिया । कर्म (सम्) वि.—
क्रिया से रहित, अनुचित काम करनेवाला ।
— भोग (सम्) सं.— निष्काम कर्म ।

ॐॐॐ अकल (सम्) वि. — पूरा, सारा,
संपूर्ण । सं.— 1. समुद्र का जल-समूह
2. दैवी शक्ति ।

ॐॐॐ अकलक (सम्) वि. — शुद्ध, पवित्र ।
— लका (सम्) सं. — चंद्रिका, चाँदनी ।

ॐॐॐ अकलंक (सम्) वि. — दोष रहित,
कलंक रहित, विशुद्ध, पवित्र ।

ॐॐॐ अकलत्र (सम्) वि. — जिसकी पत्नी
न हो, विधुर, अविवाहित ।

ॐॐॐ अकल्प (सम्) वि.— अनियंत्रित, अशक्त,
अतुलनीय ।

ॐॐॐ अकलमष (सम्) वि. — कलमष रहित
दोष रहित, शुद्ध ।

ॐॐॐ अकल्पित (सम्) वि. — हठात्,
सहसा, अकस्मात् उत्पन्न ; स्वाभाविक ।

ॐॐॐ अकल्य (सम्) वि.— अस्वस्थ, बीमार ।

ॐॐॐ अकस्मात् (सम्) वि.— संयोगवश,

आकस्मिक, सहसा, तत्क्षण. हठात्, दैव
योग से, आप से आप, अकारण ।

ॐॐॐ अकलंक (तद्) वि. — अकलंक
(तद्) दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ अकांड (सम्) वि. — 1. औचक,
सहसा, इत्तफाकिया । 2. जिसमें डाली या
शाखा न हो । — ॐॐॐ तांडव (सम्) सं.—
असंबद्ध आचरण, अर्थहीन कार्य, असमय
का बखेड़ा ।

ॐॐॐ अकारण (सम्) वि.— कारण रहित,
जिसका कारण ज्ञात न हो, बेकार, व्यर्थ ।

ॐॐॐ अकार्य (सम्) वि.— अनुचित । सं.—
बुरा काम । ॐॐॐ कारि (सम्) वि.— बुरा
काम करनेवाला ।

ॐॐॐ अकाल (सम्) वि. — 1. अनुपयुक्त
समय, अनवसर, कुसमय 2. कच्चा ।
— फल (सम्) सं.— असमय में मिलने-
वाला फल । ॐॐॐ मरण (सम्) सं.—
असमय में मृत्यु । — ॐॐॐ (सम्) सं.—
असमय में आनेवाली वर्षा ।

ॐॐॐ अकिंचन (सम्) सं.— जिसके पास
कुछ न हो, निपट निर्धन, दरिद्र, कंगाल,
गरीब ।

ॐॐॐ अकिंचित्कर (सम्) वि. —
1. असमर्थ, अशक्त 2. तुच्छ ।

ॐॐॐ अकुटिल (सम्) वि.— जो कुटिल या
वक्र न हो, सीधा, सरल, ईमानदार, कपट
रहित ।

ॐॐॐ अकुतः (सम्) क्रि.वि.— जो कहीं से न
हो । — ॐॐॐ भय (सम्) वि. — जिसको
कहीं से भय न हो, निर्भीक ।

ॐॐॐ अकुप्य (सम्) सं.— 1. सुवर्ण, सोना
2. चाँदी 3. कम कीमती धातु नहीं ।

ॐॐॐ अकुशल (सम्) सं.— 1. मूर्ख, मूढ़,
अनाडी 2. अशुभ, अभाग ।

ॐॐॐ अकूपार (सम्) सं.— 1. कबुआ
2. भूमि को डोनेवाला कूर्मराज 3. सूर्य
4. समुद्र ।

ॐॐॐ अकृत (सम्) वि.— 1. जो न किया

गया हो, जो ठीक-ठीक न किया गया हो,
जिसके करने में भूल की गई हो 2. अपूर्ण
अधूरा 3. अपक्व, कच्चा, जो तैयार न हो
4. स्वाभाविक 5. सच्चा । — ॐॐॐ अर्थ
(सम्) वि.— असफल, अनुत्तीर्ण । — ॐॐॐ
आत्मन (सम्) वि.— मूर्ख, मूढ़, बुद्धिहीन ।
— क (सम्) वि.— सहज, स्वाभाविक,
सच्चा । — ॐॐॐ ज्ञ (सम्) वि.— जो कृतज्ञ
न हो, कृतघ्न ।

ॐॐॐ अकृत्य (सम्) सं.— 1. बुरा काम,
2. अपराध ।

ॐॐॐ अकृत्रिम (सम्) वि. — 1. जो
कृत्रिम न हो, स्वाभाविक 2. जो धोखे का
न हो, सच्चा ।

ॐॐॐ अकृष्ट (सम्) वि.— अनजुती हुई, जो न
जोती गई हो । — ॐॐॐ पच्य, ॐॐॐ रोहि
(सम्) सं.— जो अनजुती ज़मीन में उत्पन्न
हुआ हो ।

ॐॐॐ अक्का, — ॐॐॐ का (सम्) सं.— माता ।
(क) सं.— बड़ी बहन ।

ॐॐॐ अक्कज (क) सं.— 1. आश्चर्य,
विस्मय 2. आश्चर्यकर पदार्थ 3. मात्सर्य,
असंतोष ।

ॐॐॐ अक्कडि (क) सं.— 1. दो मुख्य उपज
प्राप्त करने के लिए बीच में खींची गई हल
की रेखा 2. तंगी, संकट 3. नाप-तोल में
धोखेबाज़ी 4. बोली की ठगई 5. मूँग,
उडद, अरहर आदि अनाज (pulses) .

ॐॐॐ अक्कड़े (क) सं.— दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ अक्कदाम (तद्) सं.— अक्षदाम
(तद्) । जपमाला, अक्षमाला ।

ॐॐॐ अक्कर (तद्) सं.— 1. अक्षर (तद्) ।
2. प्रेम, प्रीति । — ॐॐॐ ते (क) सं.— प्रीति,
अक्षरत्व ।

ॐॐॐ अक्करिके (क) सं.— 1. प्रीति, प्रेम
2. एक वनस्पति ।

ॐॐॐ अक्करिग (क) सं.— अक्षरों को
जाननेवाला, पंडित, विद्वान । — ॐॐॐ वेल्
(क) सं.— मूर्ख ।

अक्षणिक (सम्) वि.— स्थिर, दृढ,
जो क्षणिक न हो ।

अक्षर (सम्), अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर, अक्षर (तद्)
सं. — 1. बिना दूटे चावल जो पूजा के काम
में आते हैं 2. बिना दूटा, साजा 3. पुरुष के
संपर्क से दूर (स्त्री)। — अक्षर
आरोपण (सम्) सं. — जिनको आशीर्वाद
दिया जाता है, उनके सिर पर अक्षर डालने
की क्रिया।

अक्षम (सम्) वि.—अयोग्य, असमर्थ।
सं. — 1. तिरस्कार, घृणा 2. अस्या,
हैर्या 3. क्षमारहित 4. अधीर।

अक्षमणि (सम्) सं. — 1. जपमाला
की मणि 2. अ से क्ष तक के अक्षरों को
गिनने की मणि-माला।

अक्षय, अक्षय्य (सम्) वि.—
1. जिसका नाश न हो, अविनाशी, अनश्वर,
सदा बना रहनेवाला, कभी जो न चुके
2. कल्पांतरायायी 3. साठ वर्षों में एक
वर्ष का नाम—अंतिम वर्ष। — अक्षय
वृत्तीय (सम्) सं.—वैशाख शुद्ध तृतीया तिथि,
जो एक वर्ष दिन है। — अक्षय पात्र
(सम्) सं.—वह बर्तन जो कभी खाली नहीं
होता। महाभारत के अनुसार पांडवों के
पास ऐसा बर्तन था।

अक्षर (सम्) वि. — 1. अच्युत, स्थिर,
नित्य, अविनाशी। 2. विषम, असंगत।
सं.— 1. परब्रह्म 2. लिखावट का चिह्न,
अ से ह तक के सभी अक्षर। 3. मधुमक्खी
4. सफेदी 5. जल 6. आकाश 7. धर्म।
— अक्षर (सम्) सं.— शब्दार्थ। —
अक्षर (सम्) वि.— लिखनेवाला, पढ़ा-
लिखा। — अक्षर जीवि, अक्षर जीवक (सम्)
वि.—लेखन-कार्य से आजीविका पानेवाला।
— अक्षर (सम्) वि.—पढ़ा-लिखा। — अक्षर
जननी, अक्षर तूलिका (सम्) सं.—नरकुल
या सौंटे की कलम, लेखनी। — अक्षर माले
(तद्) सं.— वर्णमाला, अक्षरों का समूह।
— अक्षर मुख (सम्) सं.— छात्र, विद्यार्थी।
— अक्षर संस्थान (सम्) सं.— 1. लेख
2. वर्णमाला। — अक्षर स्थ (सम्) वि.—
पढ़-लिखा।

अक्षरशः (सम्) अ.—एक-एक अक्षर,
शब्दानुसार।

अक्षरालम्ब (सम्) वि.—अक्षररूप,
जो अक्षरों के द्वारा प्रकट किया जाता है।

अक्षराभ्यास (सम्) सं.—अक्षरों
का अभ्यास, एक त्योहार का दिन—उस दिन
बच्चे को अक्षर सिखाया जाता है।

अक्षान्ति (सम्) सं.—असहनशीलता,
सहनशीलता का अभाव, तिरस्कार, घृणा,
मात्सर्य।

अक्षान्श (सम्) सं.—अक्षान्श रेखा। दे.
अक्ष 5.

अक्षर (सम्) वि.—अकृत्रिम, स्वाभा-
विक। सं.— 1. नमक 2. 'अक्षर' का
दूसरा रूप।

अक्षि (सम्) सं.— 1. आँख 2. दो
की संख्या। — अक्ष गत (सम्) वि.—
1. दृष्टिगोचर, उपस्थित, वर्तमान 2. आँख
में पड़ी हुई (किरकिरी) 3. घृणित। —
अक्ष पक्ष, अक्ष रोम, अक्ष लोम
(सम्) सं.— पलक, पलकों के किनारे
के ऊपरी बाल। अक्ष विकृणित, (सम्)
सं.—तिरछी नज़र, कनखियों की दृष्टि।

अक्षिकर्ण, अक्षिकर्ण अक्षिश्रवण
(सम्) सं.— सांप।

अक्षिव, अक्षिव (सम्) सं.—
समुद्री लवण, पौधा विशेष।

अक्षीण (सम्) वि.— जो क्षीण न हो,
जो कम न हो, पूर्ण।

अक्षीव (सम्) वि.— दे. अक्षि.

अक्षुण्ण (सम्) वि.— 1. अभय,
अनदृष्ट, समूचा 2. अनादी, अकाल
3. जो परास्त न हुआ हो, जो जीता न गया
हो, सफल मनोरथ 4. जो कुचला, कूटा
या पीटा गया हो 5. असाधारण।

अक्षुद्र (सम्) वि.—जो छोटा या हेय
न हो, बड़ा, ऊँचा।

अक्षुभित (सम्) वि.—अचल, जो
उद्देग में न आया हो।

अक्षुण्ण (सम्) वि.— दे. अक्षि.

अक्षेत्र (सम्) सं.— 1. बुरा या
खराब खेत 2. कुशिय 3. अयोग्य पात्र।
वि.— बिना खेतवाला, बिना जोता-बोया
हुआ। — अक्ष (सम्) वि.— जिसको
आध्यात्मिक ज्ञान न हो।

अक्षोट (सम्) सं.— अखरोट दे.
अक्षु.

अक्षोभ्य (सम्) वि.—अचल,
उद्देगरहित, दृढ़, स्थावर।

अक्षौहिणि (सम्) सं.— सेना का
परिमाण. पूरी चतुरंगिनी सेना। एक
अक्षौहिणी में 21,870 रथ, 21,870 गज
65,610 अश्व और 1,09,350 पैदल
सिपाही होते हैं।

अखंड (सम्) वि.— 1. जो टूटा न
हो, संपूर्ण, अभय, समूचा, अदृष्ट
अविच्छिन्न, लगातार।

अखंडनं (सम्) सं.—जिसको कोई
काट न सके, संपूर्ण 2. समय।

अखंडभाग्य (सम्) सं.— संपूर्ण
संपन्नता, पूरी अमीरी।

अखंडमंडल (सम्) सं.—
साम्राज्य, पूरे राज्य का स्वामित्व।

अखंडसौभाग्य (सम्) सं.—
1. दे. अखंडभाग्य 2. चिर सुहाग
3. वैध्यावृत्ति।

अखंडित (सम्) वि.—जिसके टुकड़े
न हो, विभाग रहित, अविच्छिन्न, अनिश्चित।
अखंड (सम्) वि.— जो छोटा न हो,
बड़ा।

अखल्य (सम्) वि.—डरपोक, कापुरुष
युद्ध के लिए अयोग्य।

अखाड (अ. दे.)— 1. अखाड़ा (हि)
2. कुश्ती लड़ने का स्थान, रंगभूमि।

अखात (सम्) वि.— 1. बिना खोदा
हुआ या स्वाभाविक जलाशय, झील या
खाड़ी 2. किसी मंदिर के नामने की
पुष्करिणी।

अखाद्य (सम्) वि.— जो खाने योग्य
न हो, जो नहीं खाया जा सकता।

आठ्ठमगत्य (सम्) वि. - आवश्यक । सं-
अवश्यकता ।

हो 2. अलग हो, पृथक हो, भिन्न हो,
दूर हट 3. नष्ट हो, मर ।

७।४ अगल (क) वि. — चौड़ा । सं.— खुदा हुआ, खाई, किले के बाहर की चारों ओर की खाई ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— दे. — अग्नि.

अग्नि अगलि (क) सं.— पका चावल का दाना, भात का दाना ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद 2. दाँत से काट ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— किले के बाहर की खाई ।

अग्नि अगलि (अ. दे.) अ.— सामने, आगे, पहले ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो घना न हो, सुगम, हल्का ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— 1. अथाह, बहुत गहरा, तलस्पर्शी । 2. असीम, अपार, बहुत, अधिक 3. दुर्बोध । — अग्नि अगलि (सम्) सं.— अत्यंत गहरा सरोवर ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— पर्वतों का राजा, मेरु पर्वत ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— घर, मकान ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद, रंध्र कर 2. दाँतों से चूर-चूर कर 3. हिल-डुल, काँप 4. आनंदित हो, प्रसन्न हो 5. डर, भीत हों । सं.— अंकुर, छोटा वृक्ष ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (तद्) सं.— अंगीठा, अंगीठी ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— जल, पानी । ये शब्द प्रायः लिंयायतों के मठों में पढ़े-लिखे लोगों द्वारा प्रयुक्त होते हैं ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अग्नि (तद्), आग ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— स्वर्ग, आकाश ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— सौरभ, सुगंधित वस्तु ।

अग्नि अगलि (क) वि.— सुगंधरहित, सौरभहीन ।

अग्नि अगलि (क) सं.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि (क) क्रि.— हो, उत्पन्न हो ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जिसमें गुण न हो, गुणहीन, हीन, नीच । सं.— दोष ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 1. विस्तार 2. बड़प्पन, महनता 3. व्यापकता ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— खोद, गड्ढा बना ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो बड़ा न हो, छोटा, हल्का, लघु ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— 1. डर, भय, घबराहट 2. भयंकराकृति ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— डरा, भयंकराकार का हो ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— हिल, डुल ।

अग्नि अगलि (क) सं.— एहसान ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. दे. अग्नि.

2. छाती से लगा ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— 1. खोद 2. गड्ढा बना 2. पानी में डूब ।

अग्नि अगलि (क) सं.— दे. अग्नि.

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.—

1. पका चावल का दाना, भात की गोलाकृति

2. एक पौधा Zingiber Zerumbet Roscoe.

अग्नि अगलि (क) क्रि.— खुदा (प्रेरणार्थक), गड्ढा बनवा ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— डूबा (प्रेरणार्थक) ।

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो गुप्त न हो, स्पष्ट ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (सम्) सं.— जिसका मकान न हो, संन्यासी ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— दे. अग्नि. सं.— पौधा ।

अग्नि अगलि (क) प्र.— क्रि. वि. प्र. ।

अग्नि अगलि (क) सं.— अंकुर या पौधों को लगाने का स्थान (द. क.) ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— पर्वतों का अधिपति, भारत के सात मुख्य पर्वतों में एक ।

— अग्नि (सम्) सं.— पार्वती ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) अ.— विस्मयादि बोधक शब्द, दूर की वस्तुओं की ओर संकेत ; देखो ! देखो !

अग्नि अगलि (सम्) वि.— जो आँखों को न दीखे, अदृष्ट, गुप्त । सं.— 1. इन्द्रियों के अनुभव से दूर 2. परब्रह्म ।

अग्नि अगलि (सम्) सं.— त्रेड्ज्जती, अपमान ।

अग्नि अगलि (क) वि.— सस्ता, आधा मूल्य, मूल्यहीन ।

अग्नि अगलि (तद्) वि.— अग्र (तद्) — सबसे आगे, प्रथम, सर्वप्रथम । अर्ध (तद्) — उत्तम, श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 'अग्नि अगलि' का अन्य रूप— रस्ती (आ.) ।

अग्नि अगलि (क) सं.— 1. छोंक 2. रस्ती, धागा ।

अग्नि अगलि (क) सं.— अधिकता, वृद्धि, बढ़ाई ।

अग्नि अगलि (क) क्रि.— अधिक हो, वृद्धि पा, ऊँचा हो ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— 1. बड़ा आदमी, बलशाली

2. कन्नड के एक कवि का नाम ।

अग्नि अगलि (क) सं.— महानता, बल, बड़प्पन ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अर्गला (तद्) ।

1. बौंदा, किछी, सिटकनी 2. गर्व, महानता ।

अग्नि अगलि (क) सं.— गर्व, महानता, आधिक्य ।

अग्नि अगलि (क) सं.— निर्लज्ज स्त्री ।

अग्नि अगलि (क) वि.— 1. धोखेबाज 2. जादूगर ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— अग्नि (तद्), आग । ('अग्नि'—तेलुगु) ।

अग्नि अगलि (तद्) सं.— [अग्र संस्कृत शब्द+अग' कन्नड प्रत्यय=अग्रिग→अगिग]

1. अगुआ, राजा, नेता 2. वेकार आदमी ।

अग्नि अगलि, अग्नि अगलि, अग्नि अगलि (क) सं.— अंगीठा, अंगीठी ।

अग्नि सं अगिंसु (क) कि.— 1. विनष्ट करा
2. पतला कर (प्रेरणार्थक) ।

अग्नि सं अगिंसु (सम्) सं.— 1. अग्नि की
पत्नी स्वाहा 2. त्रेतायुग ।

अग्नि सं अगिंसु (सम्) सं.— 1. आग 2. अग्निदेव
3. दक्षिण-पूर्व के देवता 4. पाचन शक्ति
5. सोना 6. एक वृद्धी । — अग्नि अस्त्र
(सम्) सं.— अनलास्त्र, तोप । — अग्नि कण
(सम्) सं.— आग का कण । — अग्नि कार्य
(सम्) सं.— अग्नि का पूजन । — अग्नि
काष्ठ (सम्) सं.— अगर का वृक्ष, लकड़ी ।
— अग्नि कुंड (सम्) सं.— इवन करने के
लिए बनाया जानेवाला विशेष प्रकार का
गड्ढा । — अग्नि कोण (सम्) सं.—
दक्षिण-पूर्व दिशा । — अग्नि कुमार, उदय
तनय, सुत (सम्) सं.— 1. षडानन,
कार्तिकेय 2. आयुर्वेद के अनुसार एक रस
विशेष । — अग्नि ज (सम्) सं.— अग्नि में
उत्पन्न, षण्मुख । अग्नि जे (सम्) सं.—
द्रौपदी । — अग्नि ज्वाले (सम्) सं.— 1. आग
की लपट 2. लाल फूलोंवाला एक पौधा ।
— अग्नि तारे (सम्) सं.— कृत्तिका नक्षत्र ।
— अग्नि दीपन (सम्) सं.— पाचन शक्ति-
प्रचोदक । अग्नि देवे (सम्) सं.— कृत्तिका
नक्षत्र । — अग्नि नयन (सम्) सं.— शिव ।
— अग्नि नेत्र (सम्) सं.— शिव । — अग्नि
परीक्षे (सम्) सं.— जलती हुई आग में
कूदकर परीक्षा देना, कठिन परीक्षा । — अग्नि
फल (सम्) सं.— वज्र, माणिक्य । —
अग्नि बाण (सम्) सं.— जलनेवाला बाण,
राकेट । अग्नि बाध (सम्) सं.— लूट ॥ —
अग्नि भू (सम्) सं.— षण्मुख । अग्नि मथन
(सम्) सं.— लकड़ियों को रगड़कर आग
निकालने की क्रिया । — अग्नि मित्र (सम्)
सं.— अग्नि का मित्र, हवा 2. एक राजा
का नाम । — अग्नि मुख (सम्) सं.—
1. एक देवता 2. ब्रह्मा । — अग्नि वर्ष
(सम्) सं.— सूर्यवंश का अंतिम राजा । —
अग्नि वीर्य (सम्) सं.— शिव । — अग्नि
शिखे (सम्) सं.— 1. आग की ज्वाला

2. मुर्गा । — अग्नि होम (सम्) सं.—

1. वसंत ऋतु में किया जानेवाला एक यज्ञ

2. अग्नि का स्तोत्र । — अग्नि संस्कार

(सम्) सं.— 1. आग से शुद्ध करना

2. शव को जलाने की क्रिया । — अग्नि सख

(सम्) सं.— हवा । — अग्नि साक्षिक

(सम्) वि.— अग्नि के सम्मुख हुआ कार्य,

विवाह । — अग्नि होत्र (सम्) सं.— एक

यज्ञ, सायं प्रातः नियम से किया जानेवाला

वैदिक कर्म विशेष । — अग्नि होत्रि (सम्)

वि.— अग्निहोत्र करनेवाला ।

अग्नि उड्ड अग्न्युत्पात (सम्) सं.— अग्नि

नक्षत्र, धूमकेतु ।

अग्नि अग्र (क) सं.— मुँह के अंदर होनेवाले

छोटे-छोटे फोड़े ।

अग्नि अग्र (सम्) सं.— 1. छोर, छिखर,

प्रारंभ, अग्रभाग, गाँव का आगे का भाग

2. मुख्य, उत्तम, श्रेष्ठ 3. स्तुति 4. प्रथम,

पहला ।

अग्नि अग्रग (सम्) सं.— नेता, अगुआ ।

अग्नि अग्रगण्य (सम्) सं.— सर्वश्रेष्ठ,

पहले गिना जाने योग्य ।

अग्नि अग्रगामी (सम्) सं.— आगे चलने-

वाला, अगुआ, नेता ।

अग्नि अग्रज, अग्नि अग्रजन्म (सम्)

सं.— 1. पहले उत्पन्न, बड़ा भाई 2. ब्राह्मण

3. विष्णु ।

अग्नि अग्रजाते (सम्) सं.— 1. बड़ी

बहन 2. पार्वती ।

अग्नि अग्रजेश (सम्) सं.— 1. बड़ी बहन

का पति, बहनोई 2. पार्वती के पति, शिव ।

अग्नि अग्रणि, अग्नि अग्रणी (सम्) सं.—

1. सर्व श्रेष्ठ 2. नेता, नायक ।

अग्नि अग्रतःसर (सम्) वि.— आगे जाने-

वाला । सं.— नेता, अगुआ ।

अग्नि अग्रतन्त्र (सम्) सं.— पहला

बेटा, बड़ा भाई ।

अग्नि अग्रतांबूल (सम्) सं.— सभा

समारोह में सब से पहले तंबूल पाने योग्य,

गौरव या मर्यादा पाने योग्य ।

अग्नि अग्रदूत (सम्) सं.— सर्वप्रथम

सेवक, विश्वासपात्र सेवक ।

अग्नि अग्रपूजे (सम्) सं.— अग्रपूजा,

सभा-समारोह में प्राप्त सर्वाधिक गौरव ।

अग्नि अग्रफल (सम्) सं.— पहली उपज

या फसल ।

अग्नि अग्रबल (सम्) सं.— सर्वप्रथम जाने-

वाली सेना, मुख्य सेना ।

अग्नि अग्रमांस (सम्) सं.— हृदय ।

अग्नि अग्रवरं (क) अ.— अंत तक ।

अग्नि अग्रसाले (सम्) सं.— मंदिर का

रसोई घर ।

अग्नि अग्रस्थ (सम्) सं.— नेता, सभापति,

अध्यक्ष ।

अग्नि अग्रहस्त (सम्) सं.— 1. हाथ की

उँगलियाँ 2. हाथी की सूँड का अंतिम भाग

जो उंगली जैसा होता है ।

अग्नि अग्रहार (सम्) सं.— ब्राह्मणों के

निवास के लिए निर्मित ग्राम अथवा ग्राम का

भाग ।

अग्नि अग्रहारिक (सम्) सं.— 'अग्रहार'

का निवासी ।

अग्नि अग्राम्य (सम्) वि.— जो ग्राम्य न

हो, शुद्ध ।

अग्नि अग्रासन (सम्) सं.— मुख्य आसन,

गद्दी ।

अग्नि अग्रासीन (सम्) सं.— मुख्य

आसन पर बैठा व्यक्ति, सभापति, अध्यक्ष ।

अग्नि अग्राह्य (सम्) वि.— अस्वीकार्य,

जो ग्रहण न किया जा सके ।

अग्नि अग्रिम (सम्) वि.— पहला, मुख्य,

उत्तम, श्रेष्ठ ।

अग्नि अग्रिय (सम्) वि.— पहला, बड़ा ।

सं.— बड़ा भाई ।

अग्नि अग्रेश्वर (सम्) सं.— सबसे बड़ा,

महाप्रभु, महानायक ।

अग्नि अग्रेसर (सम्) सं.— नायक, प्रथम

व्यक्ति, सर्वोत्तम ।

अग्नि अग्रोदक (सम्) सं.— भगवान

की पूजा के लिए नियत जल ।

अङ्ग अग्र (सम्) वि. — उत्तम, प्रथम, लक्ष्यपूर्वक ।

अङ्ग अव (सम्) सं.—1. पाप, दोष 2. अपराध 3. दुःख, व्यथा 4. दुष्कर्म 5. अशौच, सूतक, अपवित्रता ।

अङ्ग अघट (सम्) वि.—1. बहुत, अतिशय 2. संभावित 3. विस्मयकर ।

अङ्ग अघटन (सम्) सं.— असंभावित घटना, कठिन या अशक्य कार्य ।

अङ्ग अघटित (सम्) वि.— असंभावित । सं.— जो कभी संभव न हो, ऐसी घटना ; आश्चर्यजनक घटना ।

अङ्ग अघन (सम्) वि.— जो बड़ा न हो, छोटा ।

अङ्ग अघमर्षण (सम्) वि.— पापहर सं.— पापनाशक मंत्र विशेष, इस वेद-मंत्र के रचयिता का नाम ।

अङ्ग अघरिपु (सम्) सं.— अघासुर के शत्रु, श्रीकृष्ण ।

अङ्ग अघाति (सम्) वि.— जिससे हानि न हो, हानिरहित ।

अङ्ग अघारि (सम्) सं.— शत्रुओं के शत्रु, पाप विनाशक, परमेश्वर ।

अङ्ग अघासुर (सम्) सं.— एक राक्षस जो बकासुर का भाई और कंस का सेनापति था ।

अङ्ग अघोर (सम्) वि.— जो भयानक न हो । सं.—1. शिव, महादेव 2. वर्ग के परम व्यंजन और श, ष, स, ह वर्ण ।

अङ्ग अघ्ये (सम्) वि.— मारने के अयोग्य सं.— 1. प्रजापति 2. पर्वत 3. बैल गाय ।

अङ्ग अचक्षु (सम्) सं.— निरूपयोगी नेत्र, खराब आँखें, अंधा ।

अङ्ग अचंचल (सम्) वि.— स्थिर, अचल, जो विचलित न हो ।

अङ्ग अचंड (सम्) वि.— जो क्रोधी स्वभाव का न हो, मृदु, शांत ।

अङ्ग अचंडि (सम्) सं.— सीधी गौ, सरल प्रकृति की गाय, शांत स्त्री ।

अङ्ग अचतुर (सम्) वि.— 1. चार संख्या से शून्य 2. अनिपुण, अनाडी ।

अङ्ग अचपल (सम्) वि.— अचंचल, दृढ़ । — डंते (सम्) सं.— स्थिरता ।

अङ्ग अचर (सम्) वि.— जो नहीं हिलता हो, जड़, स्थावर ।

अङ्ग अचल (सम्) सं.— विचलित, स्थिर । सं.—1. पर्वत, भूमि 2. मुक्ति 3. महा-योगी 4. बनमानुष । — डंते, डं. त्व (सम्) सं.— अचलता, स्थिरता ।

अङ्ग अचलरिपु (सम्) सं.— पर्वतों के शत्रु, इंद्र ।

अङ्ग अचलि (सम्) सं.— भूमि ।

अङ्ग अचलित (सम्) वि.— स्थिर, दृढ़ ।

अङ्ग अचलेंद्र (सम्) सं.— पर्वतों का राजा, हिमालय, मेरु पर्वत ।

अङ्ग अचातुर्य (सम्) सं.— मूर्खता, बेवकूफी, चतुरता की कमी ।

अङ्ग अचि (सम्) सं.— अपवित्रता (मे.प्र.) ।

अङ्ग अचित (सम्) वि.— चिंतारहित ।

अङ्ग अचित्य (सम्) वि.— मन और बुद्धि के परे । सं.— ब्रह्मा, शिव ।

अङ्ग अचिक्रण (क) सं.— जो चिकना न हो, रूक्ष, कठोर ।

अङ्ग अचिर (सम्) वि.— अल्प, थोड़ा, थोड़ी देर रहने या ठहरनेवाला, शीघ्र, जल्दी ।

अङ्ग अचिरद्युति, अचिरांशु, अचिरप्रभे (सम्) सं.— विजली, विद्युलता, चपला ।

अङ्ग अचुंबित (सम्) वि.—1. जो नहीं चूसा गया हो 2. संबंध-रहित ।

अङ्ग अचेत (सम्) वि.— 1. निपट दरिद्र 2. संज्ञाशून्य, मूर्च्छित 3. ज्ञानरहित ।

अङ्ग अचेतन (सम्) वि.— 1. चेतना रहित, जड़ 2. संज्ञाशून्य, मूर्च्छित 3. ज्ञानहीन ।

अङ्ग अचैतन्य (सम्) सं.— चेतना का अभाव, शक्तिहीन, अज्ञान ।

अङ्ग अचोद्य (सम्) वि.— अविस्मयकर सामान्य ।

अङ्ग अच्च (क) वि.— शुद्ध, निर्मल, साफ-सुथरा, दृढ़, श्रेष्ठ, टेढ़ ।

अङ्ग अच्च (तद्) वि.— अच्च (तत्) । निश्चित, स्वच्छ, साफ-सुथरा, सुंदर ।

अङ्ग अच्चक (क) सं.— 1. कर (Tax) 2. दोस्ती, मित्रता 3. अति परिचय ।

अङ्ग अच्चकि (क) सं.— बढ़िया चावल, साफ किया हुआ चावल ।

अङ्ग अच्च (क) सं.— गड़बड़ी, मन की अशांतता ।

अङ्ग अच्चगन्नड (क) सं.— शुद्ध कन्नड, टकसाली कन्नड, टेढ़ कन्नड ।

अङ्ग अच्चड (तद्) सं.— प्रच्छद (तत्) ।

1. आच्छादन, उत्तरीय 2. चादर, पलंगपोश पलंग की चादर 3. परदा ।

अङ्ग अच्चते (तद्) सं.— अक्षत (तत्) दे. अक्षत ।

अङ्ग अच्चने (तद्) सं.— अर्चना (तत्) ।

अङ्ग अच्चय (तद्) वि.— अक्षय (तत्) ; जिसका नाश न हो । — अक्षय कोल् (तद्) सं.— अक्षय-बाण, वे बाण जो कभी समाप्त नहीं होते ।

अङ्ग अच्चर (तद्) सं.— 1. अक्षर (तत्) 2. अप्सरा (तत्) ।

अङ्ग अच्चरसि (तद्) सं.— अप्सर स्त्री (तत्) ; अप्सरा, देव-कन्या ।

अङ्ग अच्चरि (तद्) सं.— आश्चर्य (तत्) ; अचरज, विस्मय 2. अप्सरी (तत्) ; अप्सरा ।

अङ्ग अच्चर्य (तद्) सं.— आश्चर्य (तत्) ।

अङ्ग अच्चलि, (क) क्रि.— नष्ट हो, बरबाद हो ।

अङ्ग अच्चालि, अच्चालु (क) सं.— 1. शूर 2. हठा कटा आदमी, दृढ़काय मनुष्य ।

अङ्ग अच्चालिके (क) सं.— 1. दृढ़ता 2. शारीरिक बल ।

अङ्ग अच्चि (क) सं.— 1. रोटी (छोटे बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द) 2. माता 3. स्त्री, महिला, मलयाली स्त्री 4. चुचुक ।

ॐ अक्षि (तद्) सं.— अक्षि (तत्); आँख, दृष्टि ।— गोलि गोळिसु (क) क्रि. रु.— चमक; सुंदर रह (मुहा०) ।

ॐ अक्षि (क) सं.— 1. अति परिचय, स्नेह, प्रेम, प्रीति 2. संपदा 3. कर (Tax) लगान ।

ॐ अक्षि (क) सं.— 1. गड़बड़ी, मन की अशांति 2. प्रियतर वस्तु 2. पीडा, व्यथा ।

ॐ अक्षि (तद्) सं.— अर्चक (तत्); पूजारी ।

ॐ अक्षु (क) सं.— 1. दृढ़पूर्वक दबाने की क्रिया 2. दृढ़ता 3. निर्दिष्ट वस्तु 4. छाप, मृदा, मुहर 5. छपाई 6. सौँचा ।

ॐ अक्षु (क) सं.— 1. बेकार भूमि के लिए दिया जानेवाला कर 2. व्यर्थ व्यय 3. उचित न होने पर भी पैसा देना ।

ॐ अक्षु, ॐ अक्षु अक्षुमेक्षु (क) सं.— डुलार, प्यार, प्रेम, अति परिचय ।

ॐ अक्षु (क) क्रि.— 1. लगा 2. प्रेम से रह 3. मैत्री से रह ।

ॐ अक्षु (तद्) सं.— अक्ष (तत्) 1. धुरी 2. गाड़ी, छकड़ा 3. चौंसर, चौंसर का पौसा ।

ॐ अक्षु (क) सं.— प्रेम, प्रीति, मैत्री, निकट परिचय, आकृति, रूप ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. सफ़ाई 2. अच्छी व्यवस्था ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— मुद्रणालय, प्रेस (Press) ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) वि.— प्रिय, उपयुक्त मन को लगानेवाला ।

ॐ अक्षु (तद्) सं.— अक्षुत (तत्); विष्णु ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— सौँचे में ढाला गुड़ ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. अत्यंत प्रीतिपात्र 2. बहुत स्नेह ।

ॐ अक्षु (क) सं.— मैत्री, स्नेह ।

ॐ अक्षु अक्षु, ॐ अक्षु अक्षु— वह जमीनदार जो बहुत अधिक कर देता है ।

ॐ अक्षु अक्षु, ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— सेवक, चारक, पहरेदार, दरबान ।

ॐ अक्षु (क) सं.— 1. मछली विशेष 2. मैत्री, प्रीति 3. बाँस की तीलियाँ (मै. प्र.) ।

ॐ अक्षु (क) सं.— आधा सेर ।

ॐ अक्षु (सम्) वि.— साफ, पवित्र, विशुद्ध सं.— 1. स्फटिक 2. रीछ, भालू । अ.— ओर, तरफ़ ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— सफ़ेद भालू ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— सच्ची मल्लिका, जुही (A true Jasminum zumbac)

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— स्फटिक, पारदर्शक ।

ॐ अक्षु (सम्) वि.— 1. जिस में छेद न हो 2. दोपरहित 3. अटूटा, अभिन्न 4. नया ।

ॐ अक्षु (सम्) वि.— 1. जो खंडित न हो 2. अविरत, सतत 3. अविभक्त ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिकार, आखेट ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) वि.— निर्मल जलवाला सरोवर, निर्मल जल ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) वि.— जो कभी न गिरे, स्थिर, दृढ़ । सं.— 1. विष्णु 2. एक वृक्ष का नाम ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— एक वृक्ष का नाम ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. कृष्ण के बड़े भाई बलराम 2. इंद्र ।

ॐ अक्षु (सम्) वि.— जन्मरहित, अनंतकाल से वर्तमान । सं.— 1. अनादि पुरुष 2. विष्णु, शिव और ब्रह्मा का नाम 3. जीव 4. मेढ़ा, बकरा 5. मेघराशि 6. अन्न विशेष 7. काम 8. चंद्रमा 9. सप्तर्षियों

में एक 10. सूर्य 11. वर्षा 12. कामिनी स्त्री 13. पुराना धान 14. दशरथ के पिता का नाम 15. नायक ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— ब्रह्मा की एक काल-गणना ।

ॐ अक्षु अक्षु, ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव-धनुष, पिनाक ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) क्रि.— डर, भयभीत हो ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. सर्प विशेष 2. एक कवि का नाम 3. एक भक्त ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— बकरी और हाथी के बीच का अंतर ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— द्राविड छंदों में प्रयुक्त ब्रह्मगण ।

ॐ अक्षु अक्षु (क) सं.— 1. शिव, महादेव 2. एक भक्त का नाम ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— तुलसी का पौधा ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— एक बड़ा भारी सर्प, अजगर ।— ॐ अक्षु अक्षु सं.— बेकार बैठे रहना ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— वक्रे के गले का स्तन ।

ॐ अक्षु अक्षु, ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव-धनुष, पिनाक ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— शिव, पिनाकी ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. जटधारी 2. सुगंधित पत्तों वाला एक पौधा The flower Artemisa Indica.

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— जो जड़ या मूल नहीं ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— ब्रह्मा की स्थिति ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— बकरी के समान चिल्लाने की क्रिया ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) वि.— निर्जन, जनशून्य । सं.— 1. जनशून्य प्रदेश 2. अमुख्य मनुष्य ।

ॐ अक्षु अक्षु (सम्) सं.— 1. जिसकी माता न हो 2. अनाथ ।

अजनि (सम्) सं.—रास्ता, मार्ग, पथ।
अजनि (क) क्रि.—घृणा कर,
तिरस्कार कर, नीचा दिखा, हेय दृष्टि से
देख।

अजन्य (सम्) वि.—उत्पन्न होने या
किये जाने के अयोग्य, मनुष्य जाति के
प्रतिकूल, अशुभकर। सं.—देवी उत्पात,
उपद्रव, भूकंप, आदि।

अजप (सम्) सं.—वह ब्राह्मण जो मंत्रों
का ठीक प्रकार से उच्चारण नहीं करता।

अजपे (सम्) सं.—1. अजपा। देवता
विशेष, गायत्री। मनुष्य स्वाभाविक इवा-
सो-
चवास।

अजप्रास (सम्) सं.—तुक का एक
प्रकार जो छंद-रचना के लिए आवश्यक
है।

अजमायिसु (अ. दे.) क्रि.—
[‘अजमाना’ (हि.) से इसका संबंध प्रतीत
होता है।] 1. कल्पना कर 2. समझ ले।

अजमासु (अ. दे.) अ.—लगभग,
करीब। सं.—औसत गणना।

अजमीड (सम्) सं.—1. अजमीर
का नाम 2. राजा अजामिल 3. धर्मराज
का दूसरा नाम।

अजमेद, अजमेदिका, अजमेद,
अजमेद, अजमेद, अजमेद, अजमेद,
अजमेद, अजमेद, अजमेद, अजमेद,
(सम्) सं.—एक औषधि, लोमककट।

अजंभ (सम्) वि.—दंतहीन। सं.—
1. मेंढक 2. सूर्य 3. वह शिशु जिसके
दौत न हो।

अजय (सम्) वि.—जो जीता न जा
सके। सं.—अपजय, हार।

अजय्य (सम्) वि.—अजेय, जो
जीता न जा सके। सं.—विष्णु।

अजर (क) सं.—पौधा विशेष, नील का
पौधा The Indigo plant.

अजर (सम्) वि.—1. जो बूढ़ा न हो,
सदैव युवा 2. अविनाशी। सं.—देवता।

अजामर (सम्) वि.—जिसको
बुढ़ापा और मृत्यु नहीं आती। सं.—देवता,
परमेश्वर।

अजर्य (सम्) वि.—1. जो जीर्ण या
हजम नहीं होता 2. जो नहीं सड़ता।
सं.—मेन्त्री, दोस्ती।

अजश्रुंगि (सम्) सं.—1. मेढासिंगी
2. पौधा विशेष The shrut odina
wodier.

अजस् (सम्) वि.—निरंतर, सन्तत,
सदा, अनंत।

अजहे (सम्) सं.—1. कपि कच्छुक
2. कैंवाछ 3. शूकशिखी नामक औषध।

अजगर (सम्) वि.—अजागृत,
सोता हुआ।

अजगरूक (सम्) सं.—जो
जागरूक न हो, आगे न बढ़नेवाला मनुष्य।

अजगरूकते (सम्) सं.—
अजागृति, लापरवाही।

अजगरस्तन (सम्) सं.—बकरी
के गले के थन, निरुपयोगी वस्तु।

अजग्रे (सम्) सं.—दे. अजग्रे
कड.

अजजीव (सम्) सं.—बकरियों से
अजीविका पानेवाला, गडरिया।

अजज्य (सम्) सं.—रोगहीनता,
स्वास्थ्य।

अजान (तद्) सं.—अज्ञान (तद्) ;
जो ज्ञानी न हो, मूर्ख, बेवकूफ।

अजंड (सम्) सं.—ब्रह्माण्ड, भूमि,
जगत, विश्व।

अजात (सम्) वि.—अनुत्पन्न, जो
पैदा न हुआ हो। सं.—भगवान्।—
शत्रु (सम्) सं.—जिसका कोई शत्रु न
न हो 2. युधिष्ठिर की उपाधि, शिवजी
आदि अनेकों की उपाधि 3. दयालु।

अजानेय (सम्) सं.—अच्छी जाति
का घोड़ा। वि.—कुलीन, उत्तम या उच्च
कुल का।

अजामिल, (तद्) सं.—अजमीड
(तद्) ; दे. अजामिल.

अजार (क) सं.—अजार हजार—
ऑगन, हॉल (Hall) (मे. प्र.)।

अजि (क) वि.—गड़बड़, हड़बड़, झंझट
का।—गिजि (क) सं.—पिसा हुआ
चूर्ण, पुडिया।

अजिज्य (सम्) वि.—अजेय।

अजित (सम्) सं.—1. जिसको नहीं
जीता जा सकता, अजेय पुरुष 2. विष्णु,
शिव 3. एक जैन-तीर्थंकर का नाम।

अजितृ (सम्) सं.—चलानेवाला,
चालक, नायक, नेता।

अजिन (सम्) सं.—1. चीता, सिंह,
हाथी आदि का और विशेषकर काले हिरन
का रोएंदार चमड़ा, जो आसन अथवा
तपस्वियों के पहनने के काम में आता है।
2. एक प्रकार का चमड़े का थैला।—
पत्र (सम्) सं.—चिमगीदड़।

अजिर (सम्) वि.—शीघ्र, जल्दी, तेज,
फुर्तीला। सं.—1. ज्ञानैन्द्रिय 2. हवा
3. शरीर, देह 4. मेंढक 5. ऑगन।

अजिह्व (सम्) वि.—जो देड़ा न हो,
सीधा, सरल।

अजिह्वग (सम्) सं.—जो देड़ा नहीं
है, बाण, तीर।

अजिह्व (सम्) सं.—मेंढक।

अजिगर्त (सम्) सं.—एक वैदिक
ऋषि।

अजिर्ण (सम्) सं.—1. जो खराब
या जीर्ण न हुआ हो 2. बदहजमी, अपच
3. वीर्य, शक्ति, पराक्रम, ओजस्विता।
वि.—न पचा हुआ।—अंश (सम्)
सं.—थोड़ी बदहजमी, हजम न होने के
कारण बचा भाग।

अजीव (सम्) वि.—जीव या प्राण
रहित, अस्तित्व रहित। सं.—मृत्यु,
मरण।

अजीवन (सम्) सं.—गरीबी,
निर्धनता।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— पुस्तक रखने का पीठा ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (तद्) सं.— अष्टमी (तत्), अष्टमी तिथि ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (सम्) सं.— 1. ठठाकर हँसना, कहकहा 2. गर्व, घमंड ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. मंडल 2. तंगी, बाधा, कष्ट ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (तद्) सं.— अष्टाल (तत्) 1. अटा, कोठा 2. दूसरी मंजिल 3. महल, प्रासाद ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (सम्) सं.— दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (तद्) सं.— अष्टहास (तत्) । दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. घर 2. गोशाला, गायों को बांधने का स्थान ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— धोवी ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— 1. भगा, दूर हटा, दौड़ा 2. वश में रख 3. पका, उबालकर गाढ़ा बना ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— पीछा कर, दौड़ा, भगा, दूर हटा । सं.— हिला-मिला हुआ, सामीप्य, संबंध, रिश्ता ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— 1. गाढ़ा हो, सूख (अक. क्रि.) 2. पका, रसोई कर (प्रे.) । 3. हाथ में लग, प्राप्त हो ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— खाने के लिए दिया गया दान ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. जनता की भीड़ 2. कष्ट, पीड़ा 3. शिकार का प्राणी ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) वि.— झुका हुआ, टेढ़ा । सं.— 1. सिर विहीन देह, रुण्ड 2. तिरछी या टेढ़ी लाठी 3. चमड़ा 4. रक्तप, एक कीड़ा जो पानी में और शीतल भूमि में रहता है और मनुष्यों का रक्त पीता है । 5. पादुका (Shoe) का निचला भाग, तला ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (तद्) सं.— अष्टाल (तत्) दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (सम्) सं.— गमन, भ्रमण, घूमने की क्रिया ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— कीचड़, पंक (मै.प्र.) ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— कर्नाटक संगीत का एक राग ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) वि.— तिरछा, टेढ़ा । सं.— 1. खेल, क्रीडा 2. रसोई 3. रोक, विरोध 4. क्षुद्र 5. उतावलापन 6. एक ताल का नाम ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. भरना, हाथ में दबाकर भरना 2. समाना 3. नाप-तेल के अनुसार होना 4. सिमट कर रहना 5. संग्रह, संक्षेप 6. समाने या ठीक प्रकार से रहने का स्थान ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) वि. और सं.— एक वस्तु पर दूसरी वस्तु को रखना, एक पर दूसरे का आरोप, एक के ऊपर रखी हुई दूसरी वस्तु ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— सामान रखने की कोठरी । अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— एक के ऊपर दूसरा और इसी क्रम से रखे हुए घड़े ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— दबाकर या संभालकर भर, एक के ऊपर दूसरा रख, मिला, ढेर लगा, नियंत्रण कर, कम कर ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. सुपारी, पान-सुपारी 2. चाह, अभिलाषा ।— प्र. जैसे—अब्जवर्ण नीरडिके—प्यास, 'अब्जवर्ण'—जल, 'अब्जवर्ण' प्रत्यय ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— सुपारी काटने की कैची, सरोता ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— सुपारी काटने की कैची, सरोता ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. मांस 2. खण्ड 3. रहस्य, गुप्त बात ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— लुहार की निहाई, स्थूण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— कंटक हो, बाधा हो, विघ्न हो (अक. क्रि.) ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— बंद कर, दबा, नियंत्रित कर, ढक, अंत कर, संक्षेप कर ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— 1. छिप जा, ओझल हो, गुप्त रह 2. अस्तित्व खो जा 3. झुक जा 4. बंद हो ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— मांस पकाते समय काम में लाया जानेवाला उपकरण जिसका अंत नोकदार होता है ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— पकाने की क्रिया, रसोई ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— साष्टांग नमस्कार कर ; मस्तक, हाथ, पैर, छाती, आँख, जाँघ, वचन और मन— इन अष्टांग सहित भूमि पर लेटकर प्रणाम कर ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— किले का निवासी अथवा रखवाला ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— दे. अब्जवर्ण ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— आँख-मिचौनी खेल, एक क्रीडा ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (अ. दे.) सं.— 1. कमी, अभाव 2. अड़चन, बाधा ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) क्रि.— 1. भर, बंद कर 2. मार, पीट 3. लगा, दबा 4. विनष्ट कर ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. बीच में आने की क्रिया, अड़ने की क्रिया, रोक 2. व्यथा, विषाद 3. अनुपयुक्तता 4. निस्तेज ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— सेवक, नौकर ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) सं.— 1. धोबी से धुलाने के मैले कपड़े 2. धोबी से किराये पर लिए जानेवाले धुले कपड़े ।

अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण, अब्जवर्ण अष्टवर्ण (क) वि.— 1. तिर्यक्, तिरछा, टेढ़ा, अडा हुआ 2. असभ्य ।

अडनडे

अडनडे, अडनाडि (क) सं.—

देही चालवाला मनुष्य, पशु । — तन (क) सं.— टेढ़ापन, वक्रता, बुरी प्रकृति ।

अडप (क) सं.— 1. एक छोटी पेटी या थैली जो सुपारी रखने के काम में आती है ; नाई ऐसी पेटी या थैली में अपने सामान (उपकरण) रखता है । 2. राजा की तांबूल-पेटिका । — बड़ बल, बड़ बल (क) सं.— 1. नाई 3. महल में तांबूल-पेटिका देनेवाला व्यक्ति ।

अडपु (क) सं.— 1. एक चर्मरोग जो कुत्तों को होता है 2. आश्चर्य 3. चढ़ाई ; वृद्धि ; चढ़ना ।

अडपु (क) सं.— गिरवी, उधार के बदले रखा जानेवाला गहना या पदार्थ ।

अडबडिसु (क) क्रि.— गड़बड़ कर, हल्ला कर ।

अडबड, अडबड (क) सं.— 1. रसोई बनानेवाला, पाचक, महाराज मांस ।

अडबे (क) सं.— क्रूरता, निर्दयता ।

अडया (क) सं.— पहचान, चिह्न ।

अडर (क) क्रि.— 1. चढ़, ऊँचा हो, 2. लग, संलग्न हो, चमक 3. झपट ।

अडरासु (क) क्रि.— 1. लालच दिखा 2. जल्दी कर ।

अडरिसु (क) क्रि.— लगा, चिपका, ऊपर चढ़ ।

अडरु (क) क्रि.— दे. अडर ।

अडरिसु (क) क्रि.— ला, लग जा, फैस जा ; मिला ।

अडरु (क) सं.— 1. विश्वास, भरोसा 2. देर, राशि 3. प्रतिबिम्ब 4. राख, भस्म ।

अडल (क) क्रि.— हिल-डल, काँप, भीत हो, डर । सं.— कंपन, भीति, भय, डर, विमूढता ।

अडल (क) वि.— टेढ़ा, कुरूप ।

अडवि (तद्) सं.— अटवी (तद्)

दे. अडवि.— किंचु (तद्) सं.— दावाप्ति । — ताण (तद्) सं.— अरण्य प्रदेश । — ताण (तद्) क्रि.— अनाथ हो, असहाय हो (मुहा.) ।

अडवु (क) सं.— 1. गिरवी, उधार के बदले रखा जानेवाला गहना (या पदार्थ) 2. आतंक, कष्ट 3. संतुष्टि, संतोष 4. उपयुक्तता 5. पर्याप्त मात्र में रहना ।

अडसट्टे (क) सं.— अनुमान, अंदाज़ा ; गिनती, गणना ।

अडसरणे (क) सं.— बीच में आने-वाला विघ्न, अड़चन ।

अडसल-अडसल अडचल-अडसल (क) वि. भला-बुरा, ठंडा-गरम, पका-अनपका, खराब-बदचलन ।

अडसल, अडसल अडसले, अडसल अडसल (तद्) सं.— अटव (तद्) दे. अडव ।

अडसु (क) क्रि.— लग, चिपक, लिप्त हो, हो, उसन्न हो ।

अडहडिसु (क) क्रि.— गड़बड़ी कर, दृढ़ता से पकड़, झपट, दृढ़ता से रह ।

अडहाय (क) क्रि.— बीच में आ, रोक, बाधा डाल ।

अडहु (क) सं.— दे. अडव 1.

अडह (अ. दे.) वि.— ढाई, अढ़ाई । — अडह सेर, अडह सेर, अडह सेर, अडह सेर वि.— ढाई सेर का परिमाण ।

अडहडि (क) वि.— गड़बड़, त्वरित । सं.— जल्दबाजी, शीघ्रता ; गड़बड़ी ।

अडहडि (अ. दे.) सं.— 1. व्यर्थ परिश्रम 2. बिना पैसे दिये बलपूर्वक कार्य कराना 3. क्षेत्रहीन सेवक, वह मजदूर जिसके पास खेत नहीं ।

अडहडि (क) क्रि.— ठहरा, रोक ।

अडहडि (क) सं.— खडग विशेष ।

अडहडि (क) वि.— गड़बड़ी करने-वाला । सं.— गड़बड़ी, कोलाहल, शीघ्रता, झगड़ा ।

अडि (क) सं.— 1. फुट (foot) 2. पाद, चरण ; छंद का चरण 3. निचला भाग, तली । वि.— 1. पका हुआ, जो पकने के लिए आया, परिपक्व 2. नीच, हीन, निम्न, 3. मिटने का कारणभूत, व्यर्थ, बेकार ।

अडि (क) वि., सं.— अडि ।

अडि (क) सं.— 1. दे. अडि 2. प्रत्यय, जैसे अडि ऊँघ, निद्रा की स्थिति में हिलना ।

अडि (क) अडिगडु, अडिगडु अडिगडु (क) क्रि.— हाथ-पैर खो, बहुत डर, भीत हो, निर्मल हो ।

अडिग (क) प्र.— 1. 'वाला' सूचक प्रत्यय, जैसे— कावडिग हावडिग—साँप से क्रीडा करनेवाला (संपेर), कावडिग हूवडिग—फूल बेचनेवाला । 2. चरणवाला, पादधारी ।

अडिगडिगे (क) अ.— क्रमशः ऊपर, कदम-कदम पर, पदे-पदे ।

अडिगडु (क) सं.— 1. लकड़ी 2. नीचे का भाग, नींव, बुनियाद ।

अडिगल (क) सं.— दे. अडिगल । 1. नींव या बुनियाद का पत्थर ।

अडिगडु, अडिगडु अडिगडु (क) क्रि.— जड़ सहित ऊखड़कर गिर, अमूल नष्ट हो ।

अडिगडु (क) क्रि.— नीचे गिर, अधः पतित हो ।

अडिगडु (क) क्रि.— 1. नीचे कर, पतित कर 2. पराजित कर, हरा । सं.— 1. पीछे हटने की क्रिया, हार, पराजय 2. हथेली ।

अडिगडु (क) सं.— (अडि + अडिगडु = चरण + कमल) चरणकमल, पादपत्र ।

अडिगडु (क) सं.— पादसेवक ।

अडिगडु (क) सं.— पाताल ।

अडिगडु (क) सं.— नींव, बुनियाद

निचला भाग ।

अडिगडु (क) अ.— जड़सहित, नीचे तक, अमूल ।

विरोध 2. विलंब ।

७६ अणिके

७६ अणिके (क) सं. — कंठाभरण, कंठा, कंठी, कंठमाला 2. कंठाभरण का (सोने का) एक टुकड़ा।

७६ अणिके (क) में. — दे. ७६ अणिके (मे. प्र.)

७६ अणिके (क) सं. — 1. वह बाँस जिसके बीच में बोझा रख कर दोनों ओर दो व्यक्ति होते हैं अथवा उसके दोनों ओर बोझा रखकर बीच में एक व्यक्ति होता है 2. बीच में या सामने आने की क्रिया 3. बीज बोने का एक साधन।

७६ अणिके (क) वि. — दे. ७६ अणिके ७६ अणिके जनरु (क) सं. — असभ्य लोग।

७६ अणिके (क) सं. — 1. समतल, गोलाकार टोकरी जिसमें बीच-बीच में छेद होते हैं—ऐसी टोकरी में देवता की मूर्ति रखकर जोगम्मा (मारी या दुर्गा की उपासिका) चलती है। 2. समतल टोकरी या पानी रखने का पीपा या मिट्टी का बर्तन, जिसका व्यापारी लोग अपनी दुकानों में उपयोग करते हैं।

७६ अण (क) प्र. — दिक् वाचक प्रत्यय, जैसे ७६ अण मूढण—पूर्वका। क्रियार्थक संज्ञा के रूप में भी इसका प्रयोग होता है।

७६ अणक (क) सं. — 1. सामीप्य, लगाव 2. स्थिरता, दृढ़ता 3. हँसी, हास्य, मज़ाक 4. कष्ट, तंगी, बाधा 5. सुगमता 6. सौंदर्य। — ७६ अण (क) क्रि. — परिहास कर, मज़ाक उड़ा, चिढ़ा (मुहा०)।

७६ अणक (क) क्रि. — छिप, गुप्त रह, बंद हो।

७६ अणक (क) सं. — 1. नम्रता, विनयशीलता 2. सम्यता।

७६ अणक (क) क्रि. — 1. कम कर, बंद कर 2. चिढ़ा, छेड़।

७६ अणक (क) क्रि. — दे. ७६ अणक।

७६ अणक (क) सं. — मांगल्य।

७६ अणक (क) क्रि. — नम्र रह, विनयशील रह।

७६ अणजि, ७६ अणजे, ७६ अणजे (क) सं. — कुक्कुरमुत्ता।

७६ अणदिगे (क) सं. — जल की सुराही।

७६ अण (क) अ. — थोड़ा भी, कुछ भी, अल्पमात्र भी। वि. — बहुत छोटा, क्षुद्र, नगण्य।

७६ अणल, ७६ अणल (क) सं. —

1. मुँह का निचला भाग 2. गिलहरी।

७६ अणसु (क) सं. — 1. एक साथ पकड़ने वाली वस्तु 2. समूह, टोली, झुंड।

७६ अणि (सम्) सं. — सुई की नोक 2. रथ के खंभे का अंतिम नोकदार भाग 3. सीमा, हद्द।

७६ अणि (क) सं. — 1. उतावलापन, शीघ्रता, जल्दबाजी 2. मिलावट, समुच्चय 3. औचित्य, उपयुक्तता, सुंदरता, मृदुता, आनंद 4. सेना की पंक्ति, क्रम, दल 5. तैयारी 6. अनेक धागों को एक साथ मिलाने की क्रिया, विशेषतया कर्चे पर 7. कुंदन करने की क्रिया 8. बिखरा मोरपंखा। — ७६ अण (क) क्रि. — तैयार हो, कमर कस, सोत्साह खड़े रह, जोर से पटक। — ७६ अण गोळिसु (क) क्रि. — तैयारी कर, भड़का, उत्साह भर।

७६ अणिकटु (क) सं. — उचित या उपयुक्त स्थान।

७६ अणिकार (क) सं. — प्रबंध करनेवाला, प्रबंधक।

७६ अणिकसु (क) सं. — पहली संतान।

७६ अणिके (क) सं. — 1. कंधी 2. आज्ञा 3. अनुमति।

७६ अणिकाडु (क) सं. — 1. बुनाई का मर्म 2. रहस्य।

७६ अणिका (सम्) सं. — 1. अष्ट सिद्धियों में एक 2. अति सूक्ष्मता।

७६ अणियर (क) वि. — बड़ा, विशिष्ट। सं. — महानता, योग्यता, सुंदरता, मृदुता, उपयुक्तता।

७६ अणियु (क) क्रि. — मार, पीट, पटक।

७६ अणिलु (क) सं. — गिलहरी (मे. प्र.)।

७६ अणु (सम्) सं. — 1. अत्यंत सूक्ष्म वस्तु, अत्यंत छोटा कण 2. शिन्, विष्णु। — ७६ अणु (सम्) सं. — त्रसरेणु, धूल-कण। — ७६ वाद (सम्) सं. — अणु संबंधी सिद्धान्त।

७६ अणुग (क) सं. — शिशु, पुत्र, प्रेमपात्र।

७६ अणुगि (क) सं. — प्रिय पुत्री, प्रेमपात्री।

७६ अणुगिनव (क) सं. — हँसोड़ा, विदूषक।

७६ अणुगु, ७६ अणुगु, ७६ अणुकु (क) क्रि. — दबा, मार, पीट, विनष्ट कर, बरबाद कर।

७६ अणुव (तद्) सं. — हनुमत् (तद्); हनुमान।

७६ अणुवत (सम्) सं. — छोटा व्रत। जैन-यति अणुवत का आचरण करते हैं।

७६ अणे (क) अ. — स्त्रियों के लिए संघोधन— 'री' का समानार्थ वाचक शब्द। अधिक प्रेम होने पर इसका प्रयोग होता है। निम्न जाति की स्त्रियों के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। (तुलनीय—तमिल शब्द '७६ अडि' या '७६ अडि' जो इसी अर्थ का द्योतक हैं)। उदा.—७६ अडि इच्छा कणे—नहीं री।

७६ अणे (क) क्रि. — 1. बुन (चटाई, टोकरी आदि बनाना) 2. हिल-मिल 3. छू, स्पर्श कर, पास-पास खींच 4. पीट, मार, पटक, आगे बढ़ा, निकाल 5. अंगुली-प्रहार कर 6. उलटा 7. आलिंगन कर, दृढ़ता से पकड़ 8. जा।

७६ अणिकटु (क) सं. — बांध (Dam), बड़ा पुल।

७६ अणिकु (क) कृ. — लेपन करके।

७६ अणिके (क) सं. — लेपन, लेपन क्रिया, मलहम।

७६ अण (क) सं. — 1. बड़ा भाई 2. भीरु, अशक्त, जिससे कुछ संभव न हो 3. बहुत बुद्धिमान 4. गौरव सूचक संबोधन। — ७६ अण, ७६ अण (क) सं. — आलसी, सुस्त।

अणु (क) सं.— पुत्री, घेटी ।
 अणु (क) वि.— अच्छा, विशुद्ध । — अणु कल (क) सं.— ओले । — अणु वाल (क) सं.— विशुद्ध क्षीर, अच्छा दूध ।
 अणुपित (क) सं.— रिश्ता, संबंध, मित्रता ।
 अणु (क) सं.— 1. प्रीति, प्रेम, रिश्ता 2. लेपन, लेपन की वस्तु ।
 अणु (क) क्रि.— शक्तिमान या चलवान हो । सं.— शूरता, माहम, पौरुष, शक्ति, बल ।
 अतः (सम्) अ.— इसलिये, अतएव ।
 अतःपरं (सम्) अ.— उसके बाद, तत्पश्चात्, तदुपरांत ।
 अतट (सम्) वि.— तटहीन, जिसके किनारे न हों, सीधा, डालावाँ । सं.— प्रपात, ऊँचा पहाड़, पर्वत का अग्रभाग ।
 अतथ्य (सम्) सं.— झूठ, असत्य ।
 अतद्वृण (सम्) वि.— उस गुण से हीन । सं.— अलंकार विशेष 2. बहुव्रीहि समास का एक भेद ।
 अतन (सम्) सं.— सैर, सैर करनेवाला ।
 अतनु (सम्) सं.— जिसका शरीर नहीं है, कामदेव । — अतजि (सम्) सं.— शिव ।
 अतंत्र (सम्) वि.— बिना डोरी का, बिना तीरों का (वाजा), असंयत, अनुपयुक्त, व्यर्थ ।
 अतंद्र (सम्) वि.— सतर्क, सावधान जागरूक, होशियार ।
 अतर्क (सम्) वि.— युक्ति शून्य, तर्क या दलील के विरुद्ध । सं.— तर्क के नियमों से अतमिज्ञ व्यक्ति ।
 अतर्कित (सम्) वि.— आकस्मिक, जो विचार में न आया हो ।
 अतर्क्य (सम्) वि.— जिसके विषय में किसी प्रकार का तर्क या विवेचन न हो सके, अचिंत्य, अनिर्वचनीय ।

अतल (सम्) वि.— जिसके तली या पैदी न हों । म्.— 1. सात पातालों में से दूसरा 2. शिव का नाम 3. एक तरक का नाम । — अतर्क (सम्) वि.— अगाध, बहुत गहरा ।
 अतस् (सम्) अ.— 1. इससे, इसकी अपेक्षा 2. अतः, इसलिये ।
 अतः (सम्) सं.— आलसी, सन, पटसन ।
 अति (सम्) सं.— 1. बहुत, अधिक, विशेष प्रकार का. परिमाण से अधिक 2. बढ़कर, श्रेष्ठतर, उच्चतर 3. प्रसिद्ध, प्रतिपन्न । — अतः कथ, अतः कथा (सम्) सं.— अतिशयोक्तिपूर्ण कथा, निरर्थक कथा । — अतः कर्म (सम्) सं.— नीच कार्य, बुरा काम । — अतः काय (सम्) सं.— असाधारण देहधारी, राक्षस, रावण का पुत्र । — अतः क्रमण (सम्) सं.— उलंघन, पार करना, बढ़ जाना । — अतः क्रमिषु (सम्) क्रि.— 1. बढ़ जा, आक्रमण कर, पार कर 2. सीमा पार कर 3. अपमान कर, सता (प्रे.) 4. विरोध कर 5. हाथ से निकल जा, वश में न हो (अक्. क्रि.) 6. छोड़, लापरवाही से रह 7. अप्रचलित हो (अक्. क्रि.) ।
 अतिगंध (सम्) सं.— अत्यंत सुगंध युक्त, चंदन ।
 अतिगले (क) क्रि.— तिरस्कार या घृणा कर, लापरवाही से रह ।
 अतिग्राहक (सम्) वि.— तीक्ष्ण बुद्धि का, कुशल ।
 अतिचर (लम्) वि.— अनित्य, बड़ा परिवर्तनशील । सं.— क्रांतिकारी ।
 अतिचरा (सम्) सं.— एक प्रकार का कमल, स्थल पद्मिनी, पद्मचारिणी लता ।
 अतिचरण (सम्) लृ.— अधिक काम करना, अत्यधिक अभ्यास ।
 अतिचार (सम्) सं.— 1. ग्रहों की शीघ्र गति 2. उलंघन 3. गलती, अशुद्धि ।

अतिजव (सम्) वि.— असाधारण वेग से चलनेवाला ।
 अतिजात (सम्) वि.— जो आवाद न हो ।
 अतिजन (सम्) सं.— अपने बुजुर्गों से आगे बढ़ा हुआ ।
 अतिजरा, अतिजरा अतिजरा (सम्) अ.— अधिक, बहुत अधिक, उच्चतर ।
 अतिथि (सम्) सं.— 1. अतिथि, मेहमान, आगंतुक 2. क्रोध 3. राम के पौत्र सुहोत्र का दूसरा नाम । — अतिथि, अतिथि पूजा, अतिथि सत्कार, अतिथि सेवा (सम्) सं.— मेहमानदारी, अतिथि का आदर-सत्कार ।
 अतिदेश (सम्) सं.— स्थानांतर, वह नियम जो अपने निर्दिष्ट विषय के अतिरिक्त विषयों में भी काम दे ।
 अतिद्वय (सम्) वि.— अद्वितीय, अनुपम ।
 अतिधन्वा (सम्) सं.— अद्वितीय धनुर्धारी या योद्धा ।
 अतिनय (सम्) सं.— बहुत उदारता ।
 अतिपतन (सम्) सं.— निर्दिष्ट सीमा के आगे उड़ जाना, चूक चाना, छोड़ जाना, उलंघन करना ।
 अतिपत्र (सम्) सं.— सागौन का वृक्ष ।
 अतिपथि (सम्) सं.— अच्छा रास्ता, राजमार्ग ।
 अतिपरिचर्य (सम्) सं.— अत्यंत सेवा-भाव, भक्तिपूर्वक सेवा ।
 अतिप्रसंग (सम्) सं.— 1. प्रगाढ़ प्रेम 2. अति उद्दंडता ।
 अतिप्रसक्ति (सम्) सं.— 1. अत्यंत उद्दंडता 2. अतिव्याप्ति 3. घनिष्ट संसर्ग ।
 अतिप्रौढ़ (सम्) सं.— सयानी लड़की जो विवाह योग्य हो गयी हो ।
 अतिबल (सम्) वि.— अत्यन्त बलवान या दृढ़ । सं.— महा पराक्रमी, योद्धा ।

स.— 1. बहुत समीप 2. दूर, दूर का
3. तेज़ चलनेवाला।

अथवा (सम्) अ.— या, वा, किंवा ।

ಅದಾವತಿ ಅದಾವತಿ (ಅರಬಿ) ಸಂ.-ಸ್ಪರ್ಧಾ, ವಿರೋಧ,
ಶತ್ರುತಾ ।

ॐ, अदृश्य (सम्) वि.—अव्यक्त, अगोचर,
जो आँखों को न दीखे । — ॐ, शक्ति
(सम्) सं.— दैवी-शक्ति, सृष्टि-शक्ति ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः

ॐ ह्रीं क्लीं नमः (सम्) वि.—अनदेखा, अज्ञात, अप्रकट । सं.— दैव, विवि ; लाभ, प्राप्ति । —ॐ ह्रीं क्लीं नमः (सम्) सं.— अनुभव शून्य कार्य । —ॐ ह्रीं क्लीं नमः पूर्व (सम्) सं.— जो पहले न देखा गया हो । —ॐ ह्रीं क्लीं नमः फल (सम्) सं.— अच्छे-बुरे कर्मों का भावी फल । —ॐ ह्रीं क्लीं नमः वादि (सम्) सं.— भविष्य-वाणी करनेवाला, ज्योतिष ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुणि (क) सं.— वह पत्थर जो सुनार काम में लाता है ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (तत्) वि.—अर्ध (तत्) ; आधा, टुकड़ा ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु, ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु, ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (क) सं.— चिह्न, हुवाव, निमज्जन ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुसु (क) क्रि.— डरा, धमका, कंपा ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (क) क्रि.— हुवा, निमज्जित कर, मिगा (भिगो), गीला कर ; डरा, कंपा । उदा.— ॐ ह्रीं क्लीं नमः नीरलद्रु-पानी में हुवा । ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (क) प्र.—प्रत्यय 'जो' का अर्थ-द्योतक, जैसे—ॐ ह्रीं क्लीं नमः दूर-वादद्रु—जो दूर हो, ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु—जो कहा गया ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुत (सम्) वि.— विस्मयकर, भयंकर । सं.— आश्चर्य ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (सम्) अ.— अब, आज ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुतन (सम्) वि.— आज तक की, अधुनिक ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुपि (सम्) अ.—अब तो, अब भी । ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रु (सम्) सं.— अनुपयुक्त वस्तु, कुशिल्य, कुपात्र ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रि (सम्) सं.— पर्वत, पहाड़ ; पत्थर ; कुलिश ; पेड़, वृक्ष ; सूर्य ; बादलों की घटा, बादल ; सात की संख्या ; माप विशेष । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः ईश (सम्) सं.— हिमालय ; महादेव । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः कन्या (सम्) सं.— पार्वती । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः भिद्र (सम्) सं.— इंद्र । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः राज, ॐ ह्रीं क्लीं नमः पति (सम्) सं.— मेरु, हिमालय ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुय (सम्) वि.— दो नहीं, बेजोड़ एक मात्र, अद्वितीय । सं.— अद्वितीयता, सर्वोत्कृष्टता ; ऐक्य, अमेद, ब्रह्म और विश्व की एकता ; प्रामुख्य ; महात्मा बुद्ध का नाम ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुन (क) सं.— संकट, पीड़ा, कष्ट । अ.— खराब, बरबाद (मै. प्र.) ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुय (सम्) वि.— बेजोड़, एक मात्र ; एकाकी, ब्रह्म ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अद्रुय (सम्) वि.— दो नहीं, द्वितीयशून्य, अपरिवर्तनशील ; अनुपम, श्रेष्ठ, एकाकी । सं.— ऐक्य (विशेषकर जीव और ब्रह्म का) ; सर्वोपरि सत्य, ब्रह्म । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः वादि (सम्) वि.— जीव और ब्रह्म की एकता माननेवाला, वेदान्ती ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधस्, ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधः (सम्) अ.— नीचे, नीचे के लोक में । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः करिसु (सम्) क्रि.— नीचा कर, छोटा कर । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः कृत (सम्) वि.— जो नीचा किया गया हो । ॐ ह्रीं क्लीं नमः पतन (सम्) सं.— नीचे गिरना, बुरी दशा, दुर्गति ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधट (क) सं.— बलवान, साहसी, वीर ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधटु (क) सं.— सामर्थ्य, शक्ति, वीरता ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधम (सम्) वि.— नीच, हीन, हेय, क्षुद्र, बहुत बुरा । सं.— नीच मनुष्य, क्षुद्र मनुष्य, बुरा आदमी । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधम (सम्) सं.— बहुत बड़ा नीच मनुष्य ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधमर्ण (सम्) सं.— ऋणी, कर्जदार ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधर (सम्) वि.— नीचे का, नीच, अधम, अश्रेष्ठ, परामृत, चुप किया हुआ । सं.— होंठ, अधर । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः ते (सम्) सं.— नीचता । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः (सम्) सं.— चुंबन, चूमने की क्रिया ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधर्म (सम्) सं.— धर्म बाह्य, पाप कर्म, अन्याय, निषिद्ध कर्म, दुष्टता ; एक प्रजापति का नाम ; सूर्य के एक अनुचर का नाम । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः इ (सम्) वि.— दुष्ट, पापी, अन्याय करनेवाला ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधवे (सम्) सं.— रोंड, वेवा, विधवा । ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधि (सम्) अ.— ऊपर, अधिक, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, विशेष ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधि (सम्) वि.— बहुत, ज्यादा, विशेष ; अतिरिक्त, सिवा । सं.— एक अलंकार । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः मास (सम्) सं.— ३३ मासों में एक बार आनेवाला अतिरिक्त (झूठा) मास । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः करण (सम्) सं.— आधार ; स्वामित्व ; विषय, भाग, प्रकरण ; मरकार ; अनुच्छेद ; एककारक का नाम ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिकरिसु (सम्) क्रि.— देखभाल कर, अधिकार कर, निशान लगा, किसी को उद्देश करके कह ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिकाम (सम्) वि.— प्रबल कामना रखनेवाला, अशांत, कामी ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिकार (सम्) सं.— कार्यभार, आधिपत्य, प्रभुता ; पद ; शासन ; प्रकरण, शीर्षक ; क्षमता ; योग्यता ; परिचय, ज्ञान । — ॐ ह्रीं क्लीं नमः स्थ (सम्) सं.— अधिकारी ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिकृत (सम्) वि.— ; अधिकार प्राप्त, नियत, नियुक्त ; अधिकारी, स्वामी ; श्रेष्ठ ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिकोत्तर (सम्) वि.— अत्यंत श्रेष्ठ ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिक्षिप्त (सम्) वि.— घृणा के योग्य, घृणित, अपमानित ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिक्षेप (सम्) सं.— तिरस्कार, निंदा, आक्षेप, अपमान, व्यंग्य ; विसर्जन ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिगत (सम्) वि.— कंठस्थ किया हुआ, ज्ञात, अवगत ; प्राप्त, पाया हुआ ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिगमन (सम्) सं.— प्राप्ति, ज्ञान, अध्ययन ; स्वीकृति ; संगम, संसर्ग, आलाप ; लाभ, ऐश्वर्य की प्राप्ति ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिजिह्व (सम्) सं.— सांप, सर्प ।

ॐ ह्रीं क्लीं नमः अधिज्यधन्वन् (सम्) सं.— धनुष का रोदा ताने हुए धनुर्धारी ।

न ही।

अनधीत (सम्) वि.— जो नहीं पढ़ा या सीखा गया हो ।

अनध्ययन (सम्) सं.— पढ़ने के लिए निषिद्ध दिन, छुट्टी का दिन ।

अनुकूल (सम्) वि.— जो अनुकूल न हो, कष्ट का ।

अनंत (सम्) वि.— जिसका अंत न हो, नाशरहित, स्थिर, शाश्वत । सं.— ; आदिशेष, वासुकी ; विष्णु, कृष्ण ; शिव ; आकाश ; पृथिवी ; एक तीर्थंकर का नाम ; बुद्ध ।

अनंतरं (सम्) अ. — पश्चात्, उपरांत, बाद में ; पड़ोस, बगल का ।

अनंतशयन (सम्) सं.— ; शेषशायी विष्णु ; तिरुवनंतपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) का दूसरा नाम (मै. प्र.) ।

अनन्य (सम्) वि.— अन्य से संबंध न रखनेवाला, एकनिष्ठ, एकरूप, अमिल, अद्वितीय, अविभक्त । — गति (सम्) सं.— दूसरी गति न रहने की स्थिति । — भक्ति (सम्) सं.— एक ही देवता के प्रति दृढ़ भक्ति । — शरणगति (सम्) सं.— एक ही की शरण में जाने का भाव ।

अनन्वय (सम्) वि.— संबंध रहित, अन्वयशून्य । सं.— एक अलंकार ।

अनपत्य (सम्) सं.— संतानहीन व्यक्ति ।

अनपेक्षे (सम्) सं.— इच्छा राहित्य । अनभिज्ञ (सम्) वि.— अज्ञ, अनजान, अपरिचित ।

अनय (सम्) सं.— बुरा चाल-चलन, बुरी रीति ; अन्याय ; बदला ; हानि ; अव्यवस्था ; विधि, विपदा ।

अनर्गल (सम्) वि.— बिना ताला-कुंजी का, खुला ; स्वेच्छाचारी, अनियंत्रित ।

अनर्थ, अनर्थ (सम्) वि.— अमूल्य, प्रतिष्ठित ।

अनर्थ (सम्) सं.— निष्प्रयोजन

या बिना मूल्य का, निकम्मी वस्तु ; आपत्ति, विपत्ति ; दुर्भाग्य, बद-किस्मती ; निरर्थक अर्थशून्य ; अविवेक ।

अनर्पित (सम्) वि.— जो अर्पित न किया गया हो ।

अनर्ह (सम्) वि.— अयोग्य, अवांछित, कौड़ी काम का नहीं । — ते (सम्) सं.— अयोग्यता ।

अनल (सम्) सं.— आग, अग्निदेव, जठराग्नि । — नयन, नेत्र (सम्) सं.— शिव ।

अनवकाश (सम्) वि.— अवकाश का अभाव, फुरसत का न होना ; जो लागू न हो ; अप्रार्थित । सं.— अनुप-युक्त समय ।

अनवद्य (सम्) वि.— निर्दोष, निष्कलंक, निर्मल, उत्तम ।

अनवधि (सम्) वि.— निस्सीम, अनंत, अवधिरहित ।

अनवरत (सम्) अ. — हमेशा, निरंतर, सतत, सदैव ।

अनवश्य (सम्) वि.— अनावश्यक ।

अनवसर (सम्) वि.— अवकाश या फुरसत का न होना ।

अनवस्थित (सम्) वि.— चंचल, अस्थिर, परिवर्तनशील ।

अनवस्थे (सम्) सं.— दुर्गति, बुरी स्थिति ।

अनशन (सम्) सं.— उपवास, भोजन न करना । — व्रत (सम्) सं.— उपवास व्रत ।

अनाकुल, अनाकुल (सम्) वि.— शांत, आत्मसंयत, स्थिर ।

अनाचार (सम्) सं.— बुरा आचरण, बुरा मार्ग, दुष्कर्म ।

अनात्म (सम्) सं.— जो आत्मा न हो, विरुद्धात्मा । — इक (सम्) वि.— मर्त्य ।

अनाथ (सम्) वि.— नाथ रहित, गरीब, जिसके माता-पिता न हो । — बंधु (सम्) सं.— अनार्थों के सहायक, परमात्मा ।

अनाथे (सम्) सं.— गरीब स्त्री, विधवा ।

अनादर (सम्) सं.— अगौरव, वेदज्जती ; घृणा, तिरस्कार ।

अनादि (सम्) वि.— जिसका शुरु या आरंभ न हो, आदिरहित, सनातन । सं.— स्वर्ग ।

अनादृत (सम्) वि.— जिसका आदर न किया गया हो । अस्वीकृत, घृणित ।

अनाद्यंत (सम्) वि.— जिसका आदि और अंत न हो ।

अनानस, अनानास (अ.दे.) सं.— अनन्नास (Pineapple) ।

अनाप्त (सम्) सं.— अनजान, अजनबी ।

अनामक (सम्) वि.— नाम रहित, गुंमनाम, बदनाम, अप्रसिद्ध ।

अनामधेय (सम्) वि.— जिसका नाम न हो, बदनाम, व्यक्तिवहीन ।

अनामत् (क) अ.— अकस्मात्, अचानक (मै. प्र.) ।

अनामय (सम्) वि.— स्वस्थ, तंदुरुस्त, सुंदर, शुद्ध । सं.— शिव ।

अनामिक (सम्) सं.— नीच, पापी, अप्रसिद्ध ; हरिजन । — अंगूठी पहनने की उंगली ; चंडाल स्त्री ।

अनायस, अनायास (सम्) वि.— बिना प्रयास, बिना उद्योग, सरल, सुगम ।

अनार्य (सम्) सं.— जो आर्य न हो, शूद्र, म्लेच्छ, अधम पुरुष ।

अनावरण (सम्) सं.— उद्घाटन, आवरण या परदा खोलना ।

अनावृष्टि (सम्) सं.— वर्षा का अभाव, उपद्रव ।

अनाहत अनाहत (सम्) सं.— दुर्घटना, बुराई, हानि, विपदा ।

अनाहत अनाहत (सम्) वि.— विना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित ।

अनिच्छे (सम्) सं.— अनिच्छा, अभिलाषा का अभाव ।

अनितु, अनितु (क) अ.— उतना, उस समय तक, इतने में, पूरा, सारा ।

अनित्य (सम्) वि.— अस्थिर, विनश्वर, मूला ।

अनिष्ट (सम्) वि.— श्लाघ्य, दोष रहित ।

अनिबह (क) सं.— उतने लोग, सब लोग ।

अनिमित्त (सम्) वि.— अकारण, आधार रहित, उद्देश्य रहित ।

अनिमिष (सम्) सं.— देवता ; मछली ; विष्णु । — अश्रय (सम्) सं.— स्वर्ग ; समुद्र । — दृष्टि (सम्) सं.— बिना पलक मारे देखने की क्रिया । — ध्वज (सम्) सं.— मीनकेतन, कामदेव ।

अनियत, अनियमित (सम्) वि.— जो नियमित न हो ; अनियंत्रित, असंयत ।

अनिरुद्ध (सम्) वि.— अनियंत्रित, मुक्त । सं.— भेदिया, जासूस ; स्वेच्छा-चारिता ; प्रद्युम्न के पुत्र का नाम ।

अनिर्दिष्ट (सम्) वि.— अनिश्रित ।

अनिर्देश (सम्) सं.— निश्चितता या नियम का अभाव, अस्पष्टता ।

अनिल (सम्) सं.— हवा, वायु, पवन ।

अज (सम्) सं.— भीम ; हनुमान । — बांधव (सम्) सं.— अग्नि ।

— निष्पेक्ष विश्लेषक, मापक (सम्) सं.— वायु को मापने और पृथक् करने का यंत्र (Eudiometer) ।

अनिवार, अनिवार्य (सम्) वि.— जो निवारण करने योग्य न हो, विवश, सीमाहीन, आवश्यक ।

अनिश्चित (सम्) वि.— जो निश्चित न हो, अनिर्णीत ।

अनिष्ट (सम्) सं.— दुर्दैव, दुर्भाग्य ; इच्छा का अभाव ।

अनीक, अनीकिनी (सम्) सं.— सेना, टोली, समूह ।

अनीति (सम्) सं.— अनय, बुरी नीति या चाल ।

अनीतु (सम्) सं.— लगाम, नियंत्रण ।

अनीश (सम्) सं.— असमर्थ, जो स्वामी न हो ।

अनीश्वरवाद (सम्) सं.— नास्तिकवाद, चार्वाक का मत ।

अनु (सम्) अ.— उपसर्ग — साथ, सहित, संग, पास-पास, संबंध से, पीछे, ओर, तरफ, एक के बाद एक, समान, समर्थनीय ।

अनु (क) वि.— ठीक, अच्छा, सुंदर, रम्य, उत्तम, मनोहर, नाजुक । सं.— योग्यता, शक्ति ; अनुकूल स्थिति, सुविधा तैयारी, विजय ; उचित ; या उपयुक्त कार्य ; योजना, विन्यास ; उपयुक्त संदर्भ, समय ; लाभ, उपयोग ; अवसर, मौका । — कूट (क) क्रि. साथ हो, मिल, लग, एक हो । — कूट (क) क्रि.— खराब हो । — गै (क) क्रि.— सुविधा कर, ठीक कर । — गोष्ठ (क) क्रि.— योग्य हो, तैयार हो । — गोष्ठ (क) क्रि.— तैयार कर, अच्छा बना ।

अनुकंप, अनुकंपे (सम्) सं.— दया, करुणा, सहानुभूति ।

अनुकरण (सम्) सं.— नकल, प्रतिलिपि, एकरूपता । — करि (सम्) क्रि.— नकल कर ।

अनुकरण (सम्) सं.— नकल (अभिनय आदि की) ।

अनुकर्ष (सम्) सं.— आकर्षण, खिंचाव ; पीछे घसीटना ; रथ या गाड़ी के नीचे रहनेवाली लकड़ी जिसके सहारे पहिये रहते हैं ।

अनुकूल (सम्) वि.— दयालु, माननेवाला । सं.— स्नेह, प्रीति ; सहायता ; विश्वस्त या दयालु पति, नायक विशेष ।

अनुक्त (सम्) वि.— जो नहीं कहा गया हो, जो कहने योग्य न हो ।

अनुक्रम (सम्) सं.— गणना, रीति, परंपरा, वंशावली ।

अनुक्रमण (सम्) सं.— पीछा करना, क्रम से पाना ।

अनुक्रमणिके (सम्) सं.— अनुक्रमणी, जिसमें किसी ग्रंथ में वर्णित विषयों का क्रमिक वर्णन हो ।

अनुक्रोश (सम्) सं.— अनुकंपा, दया, करुणा, कोमलता ।

अनुग (सम्) सं.— अनुयायी, साथी, आज्ञाकारी नौकर ।

अनुगडि (क) क्रि.— रगड़, पीट, मार ।

अनुगत (सम्) वि.— पीछे चलने-वाला, पीछे आया हुआ ।

अनुगमन (सम्) सं.— पीछे जाना ; सहगमन, सहमरण ; अनुसरण, अनुकरण ; अनुहार, अनुसार । — अनुगमि (सम्) सं.— दे. अनुग ।

अनुगुण (सम्) वि.— समान गुणवाला, अनुकूल, मनोज्ञ, उपयोगी, उचित, उपयुक्त ।

अनुग्रह (सम्) सं.— दया, सहानुभूति, उपकार ; सहायता, सहयोग ; स्वीकारोक्ति, स्वीकृति । — अनुग्रह (सम्) क्रि.— दया दिखा ।

अनुचर (सम्) सं.— अनुयायी, सेवक, साथी ।

૩૪ગઠ અપગત (સમ્) વિ.— વીતા, છૂટા ।
 ૩૪ગઠિ અપગતિ (સમ્) સં.— દુર્દશા, નરક ।

ಅಸಂಗಮ ಅಪಗಮ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪ್ರಸ್ಥಾನ, ವಿಯೋಗ, ಮೃತ್ಯು ।

ಅಸಂಘನ ಅಪಧನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶರೀರ ಕೆ ಅವಯವ, ದೇಹ, ಶರೀರ ।

ಅಸಂಘಾತ ಅಪಧಾತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹತ್ಯಾ, ಹಿಸಾ ; ಧೋಷ, ಪ್ರವಂಚನಾ ; ವಿಶ್ವಾಸಧಾತ ।

ಅಸಂಚಯ ಅಪಚಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಂಗ್ರಹ, ಸಂಕಲನ ; ಅವನತಿ, ಹಾಸ ।

ಅಸಂಚಾರ ಅಪಚಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗಲತ ಕಾಮ-ದುಷ್ಕರ್ಮ, ಅಪರಾಧ ।

ಅಸಂಜಯ ಅಪಜಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪರಾಜಯ, ಹಾರ ।

ಅಸಂತ್ಯಕ್ತ ಅಪತ್ಯಕ್ತ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜಿಸಕೀ ಪತ್ನಿ ನ ಹೊ, ವಿಧುರ ।

ಅಸಂತ್ಯ ಅಪತ್ಯ, ಅಸಂತ್ಯಕ್ತ ಅಪತ್ಯಕ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸಂತಾನ, ಶಿಶು ।

ಅಸಂತ್ಯ ಅಪತ್ಯ, (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಯೋಗ್ಯ, ಅಹಿತ, ಅಸಂಬದ್ಧ । ಸಂ.— ಹಾನಿಕರ ಯಾ ಅಹಿತಕರ ಖಾನಾ ।

ಅಸಂವಾನ್ ಅಪವಾನ್ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸತ್ಕಾರ ; ಉದಾರತಾ ; ಪೂರ್ವ-ಚರಿತ್ರ ; ಸದಾಚಾರ ।

ಅಸಂದೆಶ ಅಪದೇಶ, ಅಸಂದೆಶ ಅಪದೇಶ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದುರ್ದಶಾ, ಕುರಿ ಸ್ಥಿತಿ, ದುರ್ಭಾಗ್ಯ ।

ಅಸಂದೇಶ ಅಪದೇಶ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬಹಾನಾ ; ವಿಹ್ನ, ನಿಶಾನ ; ಯಶ ; ಸ್ಥಾನ ; ಧೋಷ, ಛಲ ; ಶೌಕ ।

ಅಸಂದಾರ್ ಅಪದ್ವಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಬಗಲ ಕಾ ದರವಾಜಾ ।

ಅಸಂಧ್ಯಯ ಅಪಧೈಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಭೀಷ್ತಾ, ಅಧೈಯ, ಅವಿಶ್ವಾಸ ।

ಅಸಂಧ್ಯನ್ ಅಪಧ್ಯಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದುಶ್ಚಿಂತಾ, ಕುರಾ ವಿಚಾರ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆ ಅಪನಖ್ಯೆ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅದನಖ್ಯೆ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪನಖ್ಯೆ (ಕ) ಸಂ.— ಅವಿಶ್ವಾಸ, ಸಂಶಯ, ಸಂದೇಹ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆ ಅಪನಿಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕುಂವಚನ, ಗಾಳಿ, ಅಪಮಾನ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆ ಅಪನಿತ್ (ಸಮ್) ವಿ.— ವಿಗತ, ವೀತಾ, ಕ್ಷುಡ್ರಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಪ್ರಯೋಗ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಶುದ್ಧ ಪ್ರಯೋಗ, ಕುರಿ ರೀತಿ ಕಾ ಉಪಯೋಗ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಪ್ರಶ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪತನ, ಗಿರಾವ ; ಅಶುದ್ಧ ಭಾಷಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಮಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಗೌರವ, ನಿರಾದರ, ವೇದಜ್ಞತೆ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಮೃತಿ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಮೃತ್ಯು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆಕಸ್ಮಿಕ ಮೃತ್ಯು, ಕುಮೃತ್ಯು, ಕುಸಮಯ ಕಾ ಮರಣ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಯಶ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಯಶಸ್ಸು (ಸಮ್) ಸಂ.— ದೇ. ಅಪಕೀರ್ತಿ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರ (ಸಮ್) ವಿ.— ಜೊ ಪರ ಯಾ ದೂಸರಾ ನ ಹೊ, ಪಹಲಾ, ; ಪಿಛಲಾ ; ದೂಸರಾ ಅನ್ಯ, ಔರ, ಭಿನ್ನ ; ಅಪಕೃಷ್ಣ, ನೆಚಾ ।—

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮೃತ ವ್ಯಕ್ತಿ ಕೆ ಲಿಫ್ ಕಿಯಾ ಜಾನೆವಾಲಾ ಕ್ರಿಯಾ-ಕರ್ಮ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಂಜಿ (ಕ) ಸಂ.— ಖಾಲಿಸ ಸೊನಾ, ಶುದ್ಧ ಹೆಮ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಪಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಿರುದ್ಧ ಪಕ್ಷ ; ಕೃಷ್ಣ ಪಕ್ಷ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರರಾತ್ರಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಾತ್ರಿ ಕಾ ಪಿಛಲಾ ಪಹರ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರವಾರ್ಥಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಶ್ಚಿಮ ಸಮುದ್ರ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಜಿತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಜೊ ಹಾರಾ ನ ಹೊ, ಅಜೇಯ । ಸಂ.— ಶಿವ ; ವಿಷ್ಣು ; ಜೈನ ಯತಿ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಜಿತೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದುರ್ಗಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಧ (ಸಮ್) ಗಲತೆ, ದೋಷ । — ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾಪಿ, ದೋಷಿ, ಅನ್ಯಾಯಿ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಂತ್ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಶ್ಚಿಮಿ ಸರಹದ್ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಾಹ್ನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಪರಾಹ್ನ, ದಿನ ಕಾ ಶೇಷ ಭಾಗ, ತೊಸರಾ ಪಹರ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರಿಮಿತ (ಸಮ್) ವಿ.— ಪರಿಮಾಣಹೀನ, ಅಸಂಖ್ಯ, ಸೊಮಾಹೀನ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರೂಪ (ಸಮ್) ವಿ.— ಕಬಿ ದಿಖಾಣ್ ಪಡೆನೇವಾಲಾ, ಜೊ ಅಧಿಕ ಪ್ರಚಲಿತ ನಹಿ ; ವಿಕೃತ ರೂಪ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರೋಕ್ಷ (ಸಮ್) ಅ.— ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಆಂಖೆ ಕೆ ಸಾಮನೆ । — ಚ್ಛಾನ್ ಜ್ಞಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆತ್ಮಜ್ಞಾನ, ಮೋಕ್ಷ-ಜ್ಞಾನ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರ್ಣಾ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪರ್ಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾರ್ವತೀ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಲಾಪ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಛಿಪಾವ, ದುರಾವ, ಕಿಸೀ ಬಾತ್ ಕೊ ಛಿಪಾನಾ, ತಿರಸ್ಕಾರ, ಸತ್ಯ ಕೊ ಛಿಪಾನಾ । — ಇಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.— ಕಿಸೀ ಬಾತ್ ಕೊ ಹಹಕರ ಉಸೆ ಛಿಪಾ, ತಿರಸ್ಕಾರ ಕರ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವರ್ಗ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಮೋಕ್ಷ ; ದಾನ, ಖೆಂಟ್, ಪುರಸ್ಕಾರ ; ಅಪವಾದ, ವಿಶೇಷ ನಿಯಮ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವರ್ತನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉಲ್ಟ-ಫೆರ್, ವಂಚನಾ, ಕುರಾ ಚಾಲಚಲನ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವಾದ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಕಲಂಕ, ದೋಷ, ನಿಂದಾ, ದೂಷಣ, ತಿರಸ್ಕಾರ ; ; ಆಜ್ಞಾ, ಅನುಮತಿ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವಾರಣ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಛಿಪಾವ, ಢಕಾವ ; ರೊಕ್ ; ಅಂತರ್ದಾನ ; ವ್ಯವಧಾನ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವಿತ್ರ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಶುದ್ಧ ; ಗಂದಾ । — ತೆ ತೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಶುದ್ಧ ; ಗಂದಗಿ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪವ್ಯಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ನಿರರ್ಥಕ ವ್ಯಯ, ಫಿಜೂಲ್ ಖರ್ಚ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಶಕುನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಶುಭ ಶಕುನ, ಕುರಿ ಸೂಚನಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಶಬ್ದ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಶುದ್ಧ ಶಬ್ದ, ದೂಷಿತ ಶಬ್ದ ; ಕುರ್ವಾಚ್ಯ, ಗಾಳಿ ; ಅಸಂಬದ್ಧ ಪ್ರಲಾಪ ; ಅಪಾನವಾಯು ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಸರಣ, ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅವಸರಣ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹಟನಾ, ಪಿಛೆ ಲೊಡನಾ, ದೂರ ಜಾನಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಸರ್ಪ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗುಸ್ತಕ, ಜಾಸುಸ್, ಭೇದಿಯಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಸಂಖ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ದಾಹಿನಾ, ದಕ್ಷಿಣ ; ಉಲ್ಟಾ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಪಸಾಕ್ಷ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸ್ವಾ, ಸಾಕ್ಷ್ಯ ; ನ ದೀಖನೇವಾಲಿ ಆಂಖೆ ।

ಅಸಂಖ್ಯೆಗೆ ಅಸಂಖ್ಯೆ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಶುದ್ಧ ನಿರ್ಣಯ, ಅಶುದ್ಧ ತತ್ವ ।

असंख्येय अपस्नान (सम्) सं.— क्रिया-कर्म के बाद किया जानेवाला स्नान ।

असंख्येय अपस्मार (सम्) सं.— विस्मृति ; मूर्च्छा रोग ; एक संचारी भाव ।

असंख्येय अपस्तर (सम्) सं.— वह ध्वनि जो ठीक प्रकार से नहीं मिलती ; विरुद्ध वचन ।

असंख्येय अपहत. (सम्) वि.— विनष्ट, दूर किया हुआ, छूटा हुआ ।

असंख्येय अपहरण, असंख्येय अपहार (सम्) सं.— चोरी ; लूट ; छिपाव । असंख्येय अपहरिसु (सम्) क्रि.— चोरी कर, लूट-मार कर ।

असंख्येय अपहारतूर्य (सम्) सं.— युद्ध रोकने की सूचना देनेवाला वाद्य (बाजा) ।

असंख्येय अपहास, असंख्येय अपहास्य (सम्) सं.— हँसी, मज़ाक, निंदा, दूसरों को देखकर हँसना, छेड़ना ।

असंख्येय अपहव, असंख्येय अपह्वति (सम्) सं.— छिपाव, दुःख, 'अपह्वति' — एक अलंकार ।

असंख्येय अपांसुले (सम्) सं.— निर्मल या पवित्र स्त्री, पतिव्रता ।

असंख्येय अपांग (सम्) सं.— बायीं आँख ; विकलांग ।

असंख्येय अपादान (सम्) सं.— हटाना, अलगाव, पृथक्ता ।

असंख्येय अपान (सम्) सं.— पाँच प्राणों में एक, गुदा ।

असंख्येय अपामार्ग (सम्) सं.— चिचड़ा ।

असंख्येय अपाय (सम्) वि.— खतरा, हानि, चोट ; मरण ।

असंख्येय अपार (सम्) वि.— बहुत अधिक, सीमारहित ।

असंख्येय अपार्थ (सम्) वि.— अर्थहीन, निरर्थक, बुरे अर्थ का, झूठा अर्थ ।

असंख्येय अपावृत (सम्) वि.— खुला ; ढका हुआ ।

असंख्येय अपाश्रय (सम्) सं.— आश्रय-हीन ; बाड़ ।

असंख्येय अपासंग (सम्) सं.— तरकस, तूणीर ।

असंख्येय अपि (सम्) अ.— फिर भी, तथापि ; समीप ।

असंख्येय अपिगे. असंख्येय अपिगे (क) सं.— संयोजन, मिलने की क्रिया, पैबंद, दूटे पदार्थों को जोड़ने या ठीक करने की क्रिया ।

असंख्येय अपिधान (सम्) सं.— ढक्कन, ओढ़नी ।

असंख्येय अपुत्र (सम्) वि.— जिसका पुत्र या बेटा न हो ।

असंख्येय अपुरूप (तद्) वि.— अपरूप (तत्) । दे. असंख्येय.

असंख्येय अपूप (सम्) सं.— पक्व अन्न ; अपुआ, मालपुआ, अँदरसा, दोसा ।

असंख्येय अपूर्व (सम्) वि.— जो पहले न रहा हो, नया ; विलक्षण, असाधारण. असंख्येय दर्शन (सम्) सं.— ऐसा दर्शन जो पहले न हुआ हो, नया दर्शन । — असंख्येय भूत (सम्) वि.— जो पहले कभी न हुआ हो ।

असंख्येय अपेक्षे (सम्) इच्छा, अभिलाषा । — असंख्येय इसु (सम्) क्रि.— इच्छा कर, अभिलाषा कर ।

असंख्येय अपेय (सम्) वि.— जो पीने योग्य नहीं (शराब आदि) । — असंख्येय पान (सम्) सं.— शराब आदि पीना ।

असंख्येय अपोगंड (क) सं.— बालक, बच्चा ; भीरु, डरपोक ।

असंख्येय अपोह (सम्) सं.— वितर्क, चिंतन, संदेह-निवारण ।

असंख्येय अप्य (क) सं.— पिता ; यह शब्द पुरुषों के नामों के अंत में भी लिगता है, जैसे— असंख्येय लिंगप्प, असंख्येय दोन्नप्प । असंख्येय चिक—छोटा, असंख्येय दोड्ड—बड़ा, शब्दों के संयोग से इसके ये रूप बनते हैं— असंख्येय + अप्य = असंख्येय चिकप्प—पिता का छोटा भाई (काका) ; असंख्येय + अप्य = असंख्येय दोड्डप्प—पिता का बड़ा भाई (ताऊ) । हिन्दी में जैसे 'भाई' का प्रयोग होता है, वैसे कन्नड में 'अप्प' (अथवा अय्य) का प्रयोग होता

है, जैसे — असंख्येय नोडप्प—देखो भाई ! 'से बड़ा' के अर्थ में भी इसका प्रयोग होता है, तुलना करते समय कहा जाता—असंख्येय अदर अप्प—यह उससे बड़ा है । (यह उत्कर्ष बोधक भी है) ।

असंख्येय अप्य (क) सं.— चावल का दोसा । असंख्येय ऐरेयप्प—एक प्रकार का मीठा दोसा (अँदरसा) । छोटे बच्चे ऐसी खाने की चीजों को असंख्येय अप्पचि कहते हैं ।

असंख्येय अप्य (क) कृ.— 'अप्प' आगु 'हो' क्रिया से असंख्येय अप्प—होनेवाला रूप बनता है । उदा.— असंख्येय अप्प फूल के बिना (कच्चा) फल होनेवाला गूलर (अर्थात् गूलर का फल जो फूल के बिना फलता है) । असंख्येय अप्प प्रियवप्प नुडि—प्रिय होनेवाली (बात) बोलो (ऐसा बोलो जो दूसरों को प्रिय हो) ।

असंख्येय अप्प, असंख्येय अप्पप्प, असंख्येय अप्पा, असंख्येय अप्पो (क) वि. बो.— ओह ! अहा !

असंख्येय अप्पट, असंख्येय अप्पट (क) वि.— शुद्ध, अच्छा, निर्मल, जिसमें मिलावट न हो ।

असंख्येय अप्पट्टे (क) वि.— समतल । सं.— समतल भूमि या वस्तु ।

असंख्येय अप्पड्ड, असंख्येय अप्पळ (क) सं.— पापड़ ।

असंख्येय अप्पणे (तद्) — आज्ञापन (तत्) । आज्ञा, अनुज्ञा, हुक्म । असंख्येय अप्पणे, असंख्येय अप्पणे एनु अप्पणे एदरे बायिगे बंदिदे — झूठ बोलने के लिए आज्ञा क्या है, मुँह में जो आता है वही (कह.) ।

असंख्येय अप्पति (तद्) — अपांपति (तत्) । समुद्र, वरुण ।

असंख्येय अप्पन (तद्)—अर्पण (तत्) । कर, लगान, भाड़ा, किराया ।

असंख्येय अप्पंत (क) वि.— संभावित ।

असंख्येय अप्पंते (क) अ.—जैसे, समान, सदृश, तरह ।

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಆಲಿಂಗನ
ಕರ, ಛಾತಿಗೆ ಸೇರಿಸು.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಕ)
ಕ್ರಿ.— ಪಡಕ, ಉಪರ ಸೇರಿಸು.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಕ) ಸಂ.—
ಆಲಿಂಗನ, ಮಿಲನ. — ಇದು ಇದು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
ಆಲಿಂಗನ ಕರ. — ಇದು ಇದು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
ಆಲಿಂಗನ ಕರ, ಸ್ವೀಕಾರ ಕರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಆಲಿಂಗನ ಕರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.— ಜೊ ಪ್ರಕಾಶ ಸೆ
ನ ಆಯಾ ಹೊ, ಜೊ ಚಮಕದಾರ ನ ಹೊ. — ಇದು
ಇದು (ಸಮ) ವಿ.— ಜಿಸಕಾ ಪ್ರಕಾಶನ ನ ಹುಡಾ
ಹೊ, ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಅಸಾಹಸಿ,
ಅಪ್ರಾದ, ಲಜಿಲಾ, ಅಜ್ಞಾನಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ)
ವಿ.— ಜಿಸಕಿ ತುಲನಾ ನ ಹೊ ಸಕೆ, ಬೆಜೊಡ್,
ಅದ್ವಿತೀಯ, ಅಸಮಾನ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಪ್ರತಿಭಾಹೀನ ;
ಉದಾಸ, ಸುಸ್ತ ; ಲಜಾಶೀಲ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ದೆ.
ಅಪ್ಪಯಿಸು.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.— ಅದ್ವಿತೀಯ
ಯೊಡ್ಡಾ, ಬೆಜೊಡ್ ವೀರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಜಿಸಕೆ
ಸಮಾನ ರೂಪವಾಲಾ ಕೊಡ್ ನ ಹೊ, ಅದ್ವಿತೀಯ,
ಅಪ್ರತಿಮ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.— ಅಪಯಶ,
ಕಲಂಕ, ದೋಷ, ಧುರ್ದ ಗುಣ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.— ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ,
ಅಪಖ್ಯಾತಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಅದೃಷ್ಟ,
ಅಗೋಚರ, ಅಜ್ಞಾನಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಅಮುಖ್ಯ,
ಗೌಣ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ವಿ.— ಅಜ್ಞಾನಿ,
ನಾಸಮಜ, ಮೂಢ, ವೇವಕೃಪ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ಪಯಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.— ಇಡ್ಡ,
ಅಸಿಮ, ಅಪರಿಮಾಣ ; ಆಧಾರ ರಹಿತ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಮೇಯ (ಸಮ) ವಿ.— ಜೊ ನಾಪಾ
ನ ಜಾ ಸಕೆ, ಅಸಿಮ, ಗಹನ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಮೇಯ (ಸಮ) ವಿ.—
ನಿರೂಪಯಿಗಿ, ನಿರರ್ಥಕ, ಬೆಕಾರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಸಿದ್ಧ (ಸಮ) ವಿ.— ಅಜ್ಞಾನ,
ಅಪ್ರಕಾಶಿತ, ತುಚ್ಛ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಸ್ತುತ (ಸಮ) ವಿ.— ಅಸಂಗತ,
ಪ್ರಸಂಗ ವಿರುದ್ಧ, ಅಪ್ರಧಾನ, ಅಸಂಬದ್ಧ, ಪೃಥಕ,
ವಿಜಾತೀಯ. — ಇದು ಇದು ಪ್ರಸಂಸ (ಸಮ) ಸಂ.—
ಏಕ ಅಲಂಕಾರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಾಮಾಣಿಕ (ಸಮ) ವಿ., ಸಂ.—
ಜೊ ಪ್ರಾಮಾಣಿಕ ಯಾ ವಿಶ್ವಾಸ ಯೋಗ್ಯ ನ ಹೊ,
ಅವಿಶ್ವಸ್ತ, ಉಪ ಪದಾಂಗ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಿಯ (ಸಮ) ವಿ.— ಅರುಚಿಕರ,
ನಾಪಸಂದ, ತಿರಸ್ಕೃತ. ಸಂ.— ಶತ್ರು, ವೈರಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಸರಸ್, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಸರಸಿ,
ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಪ್ರಸರೆ (ಸಮ) ಸಂ.— ದೇವಾಂಗನಾ, ಸುರಲೋಕ
ಕೊ ನರ್ತಕಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಫಲ (ಸಮ) ವಿ.— ಫಲರಹಿತ, ಬಂಧ್ಯಾ,
ಮರುಭೂಮಿ. — ಇದು ಇದು ಆಕಾಂಕ್ಷಿ (ಸಮ)
ವಿ.— ಫಲ ಕೊ ಇಚ್ಛಾ ನ ಕರನೇವಾಲಾ,
ನಿರ್ವಾರ್ಥಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಫೀಮು (ಅ. ದೆ.) ಸಂ.— ಅಫೀಮ.
ಇದು ಇದು ಕೆ ಅನ್ಯ ರೂಪ— ಅಫೀಮ ಅಫಿನಿ,
ಅಫೀಮ ಅಫಿನಿ, ಅಫೀಮ ಅಫಿನಿ, ಅಫೀಮ ಅಫಿನಿ,
ಅಫೀಮ ಅಫಿನಿ, ಅಫೀಮ ಅಫೀಮು (ವ್ಯಾ. ಭಾ.).
ಅಫೀಮ ಅಫೀಮ, ಅಫೀಮ ಅಫೀಮ, (ಕ) ಪ್ರ.— ವಿ. ಬೊ. ಪ್ರ.
ಹಾ ! ಹಾ ! ಏ !

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಕಾರಿ, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಕಾರಿ,
ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಕಾರಿ (ಅ. ದೆ.) ಸಂ.— ಅವಕಾರಿ
(ಫಾರಸಿ). ಶರಾವ ಆದಿ ಮಾದಕ ವಸ್ತುಗಳ ಕೆ
ಉತ್ಪಾದನ ಔರ ವಿಕ್ರಯ ಪರ ಲಗಾಯಾ ಜಾನೇವಾಲಾ
ಕರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಧ (ಸಮ) ವಿ.— ಬುದ್ಧ, ಮೂಢ,
ವೇವಕೃಪ. ಸಂ.— (ಕ ?) ಇಡ್ಡ. — ಇದು ಇದು
(ವಿ.)— ಇಡ್ಡ ಬೊಲನೇವಾಲಾ. — ಇದು ಇದು
ಸಂ.— ಇಡ್ಡಾ ಸಾಕ್ಷಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಲ (ಸಮ) ವಿ.— ಬಲಹೀನ, ನಿರ್ಬಲ,
ಅಶಕ್ತ. — ಇದು ಇದು ಅವಲ (ಸಮ) ಸಂ.—
ಸ್ತ್ರೀ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಾಧ (ಸಮ) ವಿ.— ಬೇರೊಕಡೆ, ಸ್ವತಂತ್ರ.
ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವುಜ (ತದ್) ಸಂ.— ಅವುಜ (ತದ್) ;
ಕಮಲ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವುಡಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಅಧಿ (ತದ್) ;
ಸಮುದ್ರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವುಧ, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವುಧ, ಅಪ್ಪಯಿಸು
ಅವುಧ (ಸಮ) ಸಂ.— ನಾಸಮಜ, ಮೂಢ,
ವೇವಕೃಪ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವುಜ (ಸಮ) ಸಂ.— ಕಮಲ ; ಚಂದ್ರ ;
ಶಂಖ ; ರತ್ನ. — ಇದು ಇದು ಆಕರ (ಸಮ)
ಸಂ.— ಘೆರಾವತ, ಸರೋವರ. — ಇದು ಇದು
ಗರ್ಭ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬ್ರಹ್ಮಾ ; ವಿಷ್ಣು. — ಇದು ಇದು
(ಸಮ) ಸಂ.— ಬ್ರಹ್ಮಾ. — ಇದು ಇದು ಬಂಧು,
ಬಂಧು ಬಂಧವ (ಸಮ) ಸಂ.— ಸೂರ್ಯ. —
ಇದು ಇದು ಭವಾಂಡ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬ್ರಹ್ಮಾಂಡ —
ಇದು ಇದು ವಾಸಿನಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಲಕ್ಷ್ಮಿ. —
ಇದು ಇದು ವಾಹನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಶಿವ. —
ಇದು ಇದು ವೈರಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಚಂದ್ರ. — ಇದು ಇದು
(ಸಮ) ಸಂ.— ಮನ್ಮಥ, ಕಾಮದೇವ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಿಜಿನಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಕಮಲಿನಿ, ಕಮಲ
ಕಾ ಸರೋವರ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಜಾಸನ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬ್ರಹ್ಮಾ.
ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಜಾಸನ—ಲಕ್ಷ್ಮಿ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಜೋದರ (ಸಮ) ಸಂ.— ವಿಷ್ಣು.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವಜೋದ್ರವ (ಸಮ) ಸಂ.— ಬ್ರಹ್ಮಾ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅವದ (ಸಮ) ಸಂ.— ಜಲದ, ಬಾದಲ,
ಸೇವ ; ಸಂವತ್, ವರ್ಷ. — ಇದು ಇದು ವಾಹನ
(ಸಮ) ಸಂ.— ಶಿವ. — ಇದು ಇದು ಸಾರ (ಸಮ)
ಸಂ.— ಕರ್ಪೂರ ವಿಶೇಷ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಧಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ಸಮುದ್ರ ; ತಾಳ ;
ಸರೋವರ, ಜಲಾಶಯ, ಫಲ ; ವಿಶುದ್ಧಜ್ಞಾನ ;
ಕೂಲಿ ಸಾತ ಔರ ಕೂಲಿ ದೊ ಕೊ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ ಸಂಕೇತ.
ಇದು ಇದು (ಸಮ) ಚಂದ್ರಮಾ. — ಇದು ಇದು ಸಾರ (ಸಮ)
ಸಂ.— ರತ್ನ ವಿಶೇಷ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಧಿನವನಿತ (ಸಮ) ಸಂ.—
ಚಂದ್ರಮಾ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಧಿಪ (ಸಮ) ಸಂ.— ವರುಣದೇವ,
ಕೆ ದೇವತಾ.

ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಧಿಶಯನ, ಅಪ್ಪಯಿಸು ಅಧಿ
ಶಯಿ (ಸಮ) ಸಂ.— ವಿಷ್ಣು.

आगे, सम्मुख, ओर, तरफ़ ; छूना ।

अभिषङ्गः अभिषङ्गः (सम्) सं.— कर्ज,
उधार, ऋण ; हार, पराजय ; शाप ;
कसम ; मिलन, एकता ; निंदा,
तिरस्कार ।

७५१० अभीर (सम्) सं.—अहीर, ग्वाला ।
 ७५१० अभीर (सम्) वि.—धैर्यशाली,
 निडर, दृढ़ ।

अ० अ० (सम्) सं. — मेघ, बादल ;
 आकाश, वातावरण ; आँख, लोचन ;
 अन्नक, अन्न (चमकदार पत्थर) ; जूड़ा
 स्त्रियों के बंधे बाल । — ईश केश (सम्)
 सं.—शिव ।—इष पथ (सम्) सं.—आकाश ।

अभ्रक (सम्) सं.—अभ्रक, अबरक, धातु विशेष ।

अभ्रक (सम्) वि.—गगनचुंबी । सं.—हवा, पर्वत ।

अभ्रग (सम्) सं.—चिड़िया, पक्षी ।

अभ्रगंग (सम्) सं.—अकाशगंगा ।

अभ्रमणि (सम्) सं.—सूर्य ।

अभ्रमातंग (सम्) सं.—पेरावत । —अभ्रम (सम्) सं.—पेरावत की हथिनी ।

अम (क) अ.—वि. बो. प्र. जो आश्चर्य, आनंद और दुःख सूचक है । हा ! अरे ! बाप रे ! ओह ! हाय ! हाय !

अम (क) सं.—अमृ—माता । स्त्रियों के नामों के साथ प्रायः यह शब्द लगता है, जैसे—अमृ चेन्नम अथवा अमृ चेन्नम, अमृ चेन्नम अथवा अमृ चेन्नम ।

अमकरी, अमकरी, अमं गुर अमं गुर (क) सं.—असंगंध, औषध के लिए उपयोगी पौधा, अश्वगंधा ।

अमक, अमक (क) क्रि.—दबा, मसल, कुचल ।

अमक (क) सं.—कोलाहल, हलचल (तमिल शब्द—अमक अमक—समर-भूमि) ।

अमंगल (सम्) वि.—अशुभ, बुरा, खराब । —अं ले (सम्) सं.—विधवा ।

अमग (क) सं.—उपयुक्त समय ; अवसर, मौका ; लोहार ; मौसम, विशेष कर फलों के पकने का मौसम ।

अमगु (क) क्रि.—दे. अमक (मै. प्र.) ।

अमृ (क) क्रि.—दे. अमक (मै. प्र.) ।

अमृ (तद्) सं.—अम्बु । दे. अमृ ।

अमृ, अमृ (तद्) सं.—दे. अमृ ।

अमृ (सम्) सं.—समय, बीमारी, मृत्यु ।

अमृ (सम्) सं.—वर्तन, वासन, अर्थपात्र ।

अमृ (सम्) वि.—उदार, ईर्ष्या-रहित ।

अमृ (सम्) वि.—क्रियाशील, प्रतिभावान् ; उग्र, तेज, दृढ़, तीव्र ; अधिक, बड़ा, महत्वयुक्त ।

अमृ (क) क्रि.—मिल, एक रूप हो, हिल-मिल जा, गाढ़ा हो जा, संयुक्त हो, जुड़ जा ; उत्पन्न हो, उठ ; उपयुक्त हो, सुंदर हो ; प्रकट हो, प्रसिद्ध हो ; चढ़, उन्नत हो ; धिर, घेर, सता ; आलिंगन कर, कसकर बांध ।

अमृ (सम्) सं.—अविनाशी, देवता ; सोना, चाँदी ; एक लता (cocculus cordifolius), अमरवेल ; अमरकोश (व्या.भा.) ।

अमृ (सम्) सं.—सुरलोक का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

अमृ (सम्) सं.—अमरसिंह कृत कोश ग्रंथ ।

अमृ (सम्) सं.—देवताओं के गुरु, बृहस्पति ।

अमृ (सम्) सं.—अमरता, अविनश्वरता ; मोक्ष, मुक्ति ।

अमृ (सम्) सं.—कामधेनु ।

अमृ (सम्) सं.—अमरनागेंद्र (सम्) सं.—ऐरावत ।

अमृ (सम्) सं.—अमरपति, अमृ (सम्) सं.—इंद्र ।

अमृ (सम्) सं.—नारद ।

अमृ (सम्) सं.—अमराचल, अमराचल—देवगिरि, मेरुपर्वत ।

अमृ (सम्) सं.—देवताओं के शत्रु, राक्षस ।

अमृ (सम्) सं.—देव-नगरी, इंद्र की राजधानी ।

अमृ (सम्) सं.—देवता की स्त्री, देवी ; इंद्र की नगरी ।

अमृ (क) सं.—अमृ अमृ—उपयुक्तता, संगति, लगाव, संयोजन, मेल (मिलना) ।

अमृ (क) क्रि.—मिलना, बांधना ; दबाना, नाकों दम करना ; तैयार करना, बनाना ।

अमृ (क) क्रि.—दे. अमृ ।

अमृ (सम्) सं.—जो मर्त्य नहीं, देवता । —अमृ मार्ग (सम्) सं.—आकाश ।

अमृ (क) क्रि.—(अमृ+अमृ) कस कर बांध, आलिंगन कर ।

अमृ (तद्) सं.—अमृत (तद्) । इसका अन्य रूप—अमृ अवर्तु । देवताओं का पानीय ; दूध ; मोक्ष ।

अमृ (तद्) सं.—अमृत गिरि (तद्) सं.—(अमृ + चंद्र) —अमृत किरणोंवाला, चंद्रमा ।

अमृ (क) सं.—अमृत पीनेवाले, देवता ।

अमृ (क) सं.—मोक्षांगना, पार्वती ।

अमृ (सम्) सं.—असहनशीलता, ईर्ष्या, हठ, क्रोध, कोप ; एक संचारी भाव । —अमृ अमृ (सम्) वि.—उग्र, प्रचण्ड, क्रुद्ध, रूठा ।

अमृ (सम्) वि.—निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, सफेद, प्रकाशमान, चमकदार ।

अमृ (सम्) सं.—मलरहित, निष्कलंक, स्वच्छ, पवित्र ।

अमृ (अ. दे.) सं.—मद, नशा ; समय ; अधिकार, शासन । —अमृ अमृ (अ. दे.) सं.—दे. अमृ ।

अमृ (क) सं.—जोड़ी, युगल, दो, युग्म ।

अमृ (क) सं.—जुड़वे वच्चे ; अश्विनीकुमार ।

अमृ (क) सं.—साथ-साथ रहनेवाले चकवा-चकवी ।

ಅಮ್ಮನವರ ಪುಣ್ಯದ ಅಗ್ನಿನವರ ಪ್ರಸಾದ—ದೇವಿ
ಜಿ (ಅಥವಾ ಭಗವತಿಯ) ಪ್ರಸಾದ |

जी (अथवा भगवती) का प्रसाद ।

अनुष्ठी अम्मणि (क) सं.— स्त्रियों को
संबोधित करते समय आदर के लिए अनुष्ठी

का प्रयोग होता है, जैसे—
इल अम्मणि—नहीं, माता जी । बिरियों के

नामों के अंत में यह शब्द लगता है, जैसे—
 ದೇವೀರಸ್ಮಣಿ ದೇವೀರಸ್ಮಣಿ । छोटे बच्चों की

भाषा में अमृष्ण का अर्थ—माता का स्नान
या चूचुक है।
अमृष्ण अस्मि (क) सं.—दे. अमृष्ण (अंतिम अर्थ):

न्यावहारिक भाषा में (विशेषकर अनपढ़ लोग)
ಅನು के बदले ಅನ, का संबोधन के रूप में

प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ 'री' होता है, जैसे—

वेग—चल री जल्दी-जल्दी ।
 ಅಸುಖ, ಅಸುಖ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸಕ, (ಶಕ्य), ಸಮರ್ಥ

હા; સમિવ હા (અક. ક્રિ.); સાહસ કર; સ્વીકૃતિ દે; ઇચ્છા કર, અભિલાષા કર, ચાહ ।
 ಅન્મુ, અન્મુ (ક) સં.— ઇચ્છા, ચાહ ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अत्रातक (तद्) स. - अत्रातक (तत्) ॥

ಅಮೃತ (ಸಮ) ವಿ.—ಖಡ್ಗಾ । ಸಂ.—ಖಡ್ಗಾಃ ;
ಖಡ್ಗಾಃ ಸಮಾಃ ;

અવગ્નિ ન અમ્લાન (સમ્) વિ.—જો કુમ્હલાયા

७३३० अम्लिके (समू) सं.— इसली का

७०५ अय (क) वि.—(लिखते समय ७०५

के बदले ९ भी लिख सकते हैं।) पाँच की संख्या का संकेत चिह्न। ५००,५०० (५०० +

ಮೊಗ) ಅಯ್ಯಸೋಗ—ಪಾँಚ ಸಿರವಾಲಾ, ಅಯ್ಯಸೋಗ
ನೆಯಂ ಅಯ್ಯನೂರನೆಯಂ—ಪಾँಚ ಸೌವಾँ. ಉಪಸರ್ಗ,

जिसका अर्थ है—समीप जाना, पास जाना,
पहुँचना । अय्यन्द (अयम् + इन्द)
अयतन्द—पास आकर । पुरुषों को संबोधित

करते समय अय्य अय्, अय्य अय, अय्य ,
अय्य का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है—

ಅಯಿದು ಅಯಿದು (ಕ) ವಿ.—ಪಾँಚ ಕೊ ಸಂಖ್ಯಾ ।
 ಅಯಿದು ಇಂದ್ರಿಯ ಅಯಿದು ಇಂದ್ರಿಯ —ಪಾँಚ
 ಇಂದ್ರಿಯ ।

ಅಯ್ದಿಸು ಅಯ್ದಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಪಹುಚಾ, ಮಿಲಾ,
ಪಾಪ ಕರಾ (ಪೇ.) |

अय्याय् अय्वाय् (क) सं.— 'सिंह, शेर ।

अनिच्छा, घृणा ।

अर्थ (क) वि.— वेगवान, गतिमान ।
 अर्थ (सम्) सं.— समुद्र । — अर्थ
 (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 अर्थ (क) सं.— प्रीति, प्रेम, स्नेह ;
 इच्छा, कामना, चाह ; सुख, हर्ष, विनोद ।
 अर्थ (क) अर्थिकार, अर्थिकार (क)
 सं.— विट, विलासी, विनोद करनेवाला ।
 अर्थ (सम्) सं.— बड़ी बहन (नाट्य
 साहित्य में) ।
 अर्थ (सम्) सं.— पीड़ित व्यक्ति,
 संकट में पड़ा हुआ मनुष्य ; व्यापारी ।
 अर्थ (क) क्रि.— प्रेम या स्नेह कर;
 संतुष्ट हो, प्रसन्न हो ।
 अर्थ (सम्) अर्थिकार, (तद्) अर्थिकार (सम्)
 क्रि.— प्रार्थना कर, विनय कर, याचना कर,
 माँग ।
 अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ,
 अर्थ (क) कृ.— (अर्थ या अर्थ =
 समझ, धातु से) समझकर, जानकर ।
 अर्थ (सम्) सं.— याचना, माँग;
 उद्देश्य, मिश्रण; प्रयोजन, उपयोग;
 कारण, हेतु; पैसा; संपदा; व्यापार, व्यवहार;
 प्रार्थना, विनय; प्रकार, रीति, विधि;
 निषेध, मनाही; जीव; शब्दार्थ, शब्द-
 निरूपण; वस्तु; विष्णु का नाम । — अर्थ
 करि, अर्थ करि (सम्) वि.— उपयोगी,
 प्रयोजनकारी । — अर्थ दृक्, अर्थ दृश
 (सम्) सं.— न्यायाधीश । — अर्थ नाथ
 (सम्) सं.— कुवेर । — अर्थ नाथ अर्थ
 सख (सम्) सं.— शिव । — अर्थ न्यास
 (सम्) सं.— ऊहा से अर्थ बतलाना;
 अमानत । अर्थ वंत (सम्) सं.— धनवान ।
 — अर्थ व्यक्ति (सम्) सं.— अर्थ स्पष्ट
 करना, अर्थ की स्पष्टता । — अर्थ शास्त्र
 (सम्) सं.— अर्थशास्त्र (Economics) ।
 — अर्थ श्लेष (सम्) सं.— अलंकार
 विशेष ।
 अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र (सम्) सं.— संपर्कता,
 अर्थी ।

अर्थ (सम्) अ.— याने, या,
 अथवा; प्रसंगानुसार ।
 अर्थ (सम्) वि.— अर्थ
 के अनुसार ।
 अर्थ (सम्) अर्थतर, अर्थतर (सम्) अर्थतर-
 न्यास (सम्) सं.— दूसरा प्रसंग, अर्थ-
 भेद; एक अलंकार ।
 अर्थ (सम्) अर्थलंकार (सम्) सं.— काव्य
 में प्रयुक्त अर्थ से संबंधित अलंकार ।
 अर्थ (सम्) सं.— माँगनेवाला, याचक,
 इच्छुक, भिक्षुक, सेवक, नौकर, अनुयायी ।
 अर्थ (सम्) वि.— उपयुक्त, ठीक,
 उचित; धनवान; बुद्धिमान; गुणार्थ
 प्रकाशक । सं.— लाल खड़ियां, गेरू ।
 अर्थ (सम्) सं.— पीड़ा, कष्ट, चिंता,
 व्याकुलता ।
 अर्थ (सम्) सं.— हत्या, वध, चोट;
 याचना, माँग, भिक्षा । — अर्थ अर्थित
 (सम्) वि.— प्रार्थित, याचित; घायल,
 हत ।
 अर्थ (सम्) वि.— आधा खण्ड, टुकड़ा ।
 — अर्थ गोल (सम्) सं.— भूमि का आधा
 भाग । — अर्थ चंद्र (सम्) सं.— चंद्रार्ध,
 अष्टमी का चाँद; गलहस्त; अर्थ चंद्र आकार
 का बाण । — अर्थ चंद्रप्रयोग
 (सम्) सं.— गला पकड़कर बाहर निकालने
 की क्रिया । — अर्थ नारीश्वर (सम्)
 सं.— महादेव, हर-गौरीरूप शिव ।
 अर्थ (सम्) सं.— आधा शरीर ।
 — अर्थ (सम्) सं.— एक बीमारी ।
 अर्थ (सम्) सं.— पत्नी ।
 अर्थ (सम्) सं.— एक
 आयुध ।
 अर्थ (सम्) सं.— अर्थ चंद्र ।
 अर्थ (क) सं.— नखी, रेंती, पत्र परशु ।
 अर्थ (सम्) सं.— भेंट, नज़र, त्याग ।
 अर्थ (क) क्रि.— आलिंगन कर, छाती
 से लगा ।

अर्थ (क) सं.— निर्झर, जल प्रपात;
 बांध, पुल ।
 अर्थ (क) क्रि.— चिला, हला कर,
 गर्जन कर ।
 अर्थ (सम्) सं.— गर्जन, भयानक ध्वनि,
 उच्च स्वर या नाद । क्रि.— गर्जन कर,
 सिंहनाद कर, चिला ।
 अर्थ (सम्) सं.— साँप; सूजन,
 गुमड़ा; दस करोड़ की संख्या; बादल ।
 अर्थ (सम्) सं.— बालक, बच्चा;
 किसी पशु का बच्चा ।
 अर्थ (क) सं.— आँख
 की एक बीमारी ।
 अर्थ (सम्) सं.— वैश्य ।
 अर्थ (सम्) सं.— सूर्य ।
 अर्थ (सम्) सं.— वैश्य की
 पत्नी, वैश्य-स्त्री ।
 अर्थ (सम्) सं.—
 वैश्य ।
 अर्थ (क) सं.— मिट्टी । —
 अर्थ, अर्थ (क) सं.— मिट्टी का
 श्रम; मिट्टी होने का काम ।
 अर्थ (सम्) सं.— घोड़ा; हीन, नीच ।
 अर्थ (सम्) वि.— नीच, हेय ।
 अर्थ (सम्) सं.— घोड़ी, कुटनी ।
 अर्थ (सम्) वि.— आधुनिक,
 नया ।
 अर्थ (सम्) सं.— पहाड़ी नदी, निर्झर ।
 अर्थ (क) क्रि.— फैल, व्याप्त हो,
 विस्तृत हो ।
 अर्थ (सम्) सं.— बवासीर रोग ।
 अर्थ (सम्) वि.— योग्य, उपयुक्त,
 ठीक, मूल्यवान ।
 अर्थ (सम्) वि.— आदर के योग्य ।
 सं.— जैन यति, बुद्ध ।
 अर्थ (सम्) सं.—
 योग्यता ।
 अर्थ (सम्) अर्थ, अर्थ (सम्) अर्थ (सम्)
 सं.— जिन; बुद्ध; योग्य व्यक्ति ।

कर (या कर), छठ

ॐ अलिक, ॐ अलिक (सम्) सं.—
माथा । — ॐ अक्ष (सम्) सं.— फालनेत्र
शिव । — ॐ अक्ष (सम्) सं.— भ्रमर
के समान अलकावली वाली स्त्री ।

ॐ अलिनि (सम्) सं.— भ्रमरी, भ्रमरों
का समूह ।

ॐ अलिंद, ॐ अलिंदक (सम्)
सं.— घर के द्वार के सामने का चबूतरा ।

ॐ अलीक (सम्) सं.— झूठ, असत्य ।

ॐ अलुबु, ॐ अलुबु (क) क्रि.—
दे. ॐ अलुबु. (तमिल—अलुबु) ।

ॐ अले (क) क्रि.— हिल, चल, चंचल हो,
गमन कर, घूम, कंपित हो ; आघात कर ।
सं.— लहर, तरंग ; परदा ; कष्ट, संकट,
झंझट । — ॐ अले (क) क्रि.— तंग कर,
कष्ट दे ।

ॐ अलेत, ॐ अलेप (क) सं.— सैर,
घूम, घुमाव ।

ॐ अलोक (सम्) सं.— परलोक ।

ॐ अलौकिक (सम्) वि.— जो लौकिक
न हो ; पारलौकिक, असाधारण ।

ॐ अलगु (क) क्रि.— दे. ॐ अलगु.

ॐ अल्प (सम्) वि.— छोटा, क्षुद्र, तुच्छ,
हीन । — ॐ अल्प (सम्) सं.— पतला
शरीरधारी ।

ॐ अल्ल (क) अ. क्रि.— नहीं, न, निषेध
सूचक क्रियारूप । दे. ॐ अल्ल. सं.— अदरक,
हरी सोंठ ।

ॐ अल्लगळे (क) क्रि.— अस्वीकार कर,
तिरस्कार कर ; अमान्य कर ।

ॐ अल्लणि, ॐ अल्लणि (क) सं.—
हास्य, मज़ाक, विनोद ; हर्ष, प्रसन्नता ।

ॐ अल्लम (क) सं.— एक वीरशैव संत
और श्रेष्ठ वचनकार ।

ॐ अल्लर (क) सं.— वियोग, प्रेमी जनों से
बिछुड़ना ।

ॐ अल्लरि (क) सं.— तकलीफ, कष्ट, पीड़ा,
दर्द ।

ॐ अल्लवर् (क) अ.— हठात्, अकस्मात्,
अचानक ।

ॐ अल्लवर्णि (क) सं.— दे. ॐ अल्लवर्.

ॐ अल्लि (क) सं.— दे. ॐ अल्लि.— काष्ठा
कालग (क) सं.— प्रेम-कलह, झूठमूठ
का झगड़ा । — ॐ अल्लि (क) क्रि.— टुकड़ा
कर, खण्ड कर, तोड़ ।

ॐ अल्लिद (क) सं.— वहाँ का मनुष्य,
उधर का आदमी ।

ॐ अल्लिगारिग (क) सं.— धोबी ।

ॐ अल्लु (क) क्रि.— जोड़, बांध, मिला,
लगा ; सी (सीना) । सं.— कंपन, हिलने की
क्रिया ; घूम (घूमना) ।

ॐ अल्लोल, ॐ अल्लोल (क) वि.— चंचल, चपल, अस्थिर ;
तरंगयुक्त. जहाँ लहरें उठीं हों । सं.—
कोलाहल ; तरंगों की टकराहट ।

ॐ अव (सम्) उ.— दूर, नीचे, बुरा ; संकल्प,
विचार ; फैलाव, विस्तार ; अवज्ञा, अवहेला ;
अवलंब ; शोधन, निर्मलता ।

ॐ अवकर्णिसु (क) क्रि.— सुन,
ध्यान दे ।

ॐ अवकाश (सम्) सं.— स्थान, जगह ;
छुट्टी, फुरसत ; अवसर, मौका ; दूरी, अंतर ।

ॐ अवकीर्ण (सम्) वि.— विकीर्ण,
फैला, व्याप्त ।

ॐ अवकुंठन, ॐ अवकुंठन (सम्) सं.— बूँद, नकाब ; विराव,
खिचाव ; ओढ़ना ।

ॐ अवकृपे (सम्) सं.— असंतोष,
अपकार ।

ॐ अवकृष्ट (सम्) वि.— जो खींचा
गया हो, आकृष्ट ।

ॐ अवकेशि (सम्) म.— फल हीन वृक्ष ;
मरुभूमि ।

ॐ अवगड (अ. दे.) सं.— तंगी, कष्ट,
विपदा, तिरस्कार ; साहस, अपघात ।

ॐ अवगणित (सम्) वि.— तिरस्कृत,
घृणित, अमान्य ।

ॐ अवगत (सम्) वि.— समझा हुआ,
दूर हुआ ; जो अंतर्गत हुआ हो ।

ॐ अवगति (सम्) सं.— ज्ञान ; दृग्गति,
दुर्दशा ।

ॐ अवगविसु (क) क्रि.— भर, स्वीकार
कर ।

ॐ अवगहिसु (क) क्रि.— डूब, मग्न
हो ; स्नान कर ।

ॐ अवगाह, ॐ अवगाहन (सम्) सं.— डूबकी, स्नान, समझ, ज्ञान,
ग्रहण, स्वीकृति । — ॐ अवगाह (सम्) क्रि.—

डूब, डूबकी ले, नीचे उतर ; समझ, जान ।

ॐ अवगुण (सम्) सं.— बुरे गुण, दोष,
त्रुटि ; दुष्परिणाम ।

ॐ अवग्रह (सम्) सं.— दूर होना,
विग्रह ; बाधा, रोक, अड़चन ; अनावृष्टि,
बुरा ग्रह ; हाथी का समूह ; हाथी का माथा ;
शाप, दंड, सजा ।

ॐ अवघटन (सम्) सं.— संगठन,
समूह, संग्रह ।

ॐ अवघट्टन (सम्) सं.— ढकेलने,
दबाने या रगड़ने की क्रिया, हिलाना ;
संक्षोभ ।

ॐ अवघात (सम्) सं.— अपघात ;
कष्ट, पीड़ा, दर्द ।

ॐ अवचु, ॐ अविचु, ॐ अविचु
अवचु, ॐ अवसु, ॐ अविचु, ॐ अविचु,
ॐ अवसु (क) क्रि.— गुप्त रख, छिपा ;
ढक ; दबा ; बंद कर ; कसकर बंध ।

ॐ अवचूर्णित (सम्) वि.— पुड़िया
या चूर्ण से लगा हुआ या पूर्ण ।

ॐ अवच्छन्न (सम्) वि.— ढका हुआ,
बंद किया हुआ, भरा हुआ, पूर्ण ।

ॐ अवच्छिन्न (सम्) वि.— टूटा,
खंडित, विभजित, छेका हुआ, घेरा हुआ ;
मिला हुआ ।

ॐ अवच्छेदक (सम्) वि.— पृथक
करनेवाला, भेदकारी ।

ॐ अवज्ञे (सम्) सं.— उपेक्षा, तिरस्कार ;
अपमान ।

अवतंस

अवतंस (सम्) सं.— हार, माला;
कान की बाली; मुकुट, किरीट।

अवतरण (सम्) सं.— स्नान के लिए
नीचे (जल में) उतरने की क्रिया; पार होना,
उतरना; उद्घरण; प्रतिकृति; अनुवाद,
रूपांतर।

अवतार (सम्) सं.— देवताओं का
भूमि पर प्रादुर्भाव; उतरने की क्रिया;
आडंबर।

अवतारण (सम्) सं.— उतरने की
क्रिया; किसी भूत-प्रेत का आवेश; पूजा,
श्रृंगार; अनुवाद; भूमिका, उपोद्घात।

अवतारिके (सम्) सं.— भूमिका,
प्रस्तावना, उपोद्घात।

अवतीर्ण (सम्) वि.— नीचे उतरा
हुआ, अवतरित।

अवती (तद्) सं.— अवस्था (तत्)—
दुर्दशा।

अवदशे (सत्) सं.— दुर्दशा, दुर्भाग्य।
अवदात (सम्) वि.— शुद्ध, मनोहर;
सफेद, पीला।

अवदान (सम्) क्रि.— खण्ड या
टुकड़े करना। सं.— पवित्र कार्य, पवित्र
साधना, महान कार्य; टुकड़ा, भाग।

अवद्य (सम्) वि.— अधम, पापी,
निष्ठ; गहिरा, त्याग, कुरिस्त।

अवधिसु (सम्) क्रि.— ध्यान दे,
सावधानी से सुन, विचार कर।

अवधान (सम्) सं.— मनोयोग,
सावधानी, संलग्नता।

अवधारण, अवधारण (सम्) सं.— निश्चय, निर्णय, प्रमाण सहित
वचन।

अवधार (सम्) सं.— जागृति, ध्यान।
—असु (सम्) क्रि.— ध्यान दे,
सहन कर।

अवधि (सम्) सं.— सीमा, हद, पराकाष्ठा;
कालावधि, मीमांसा; नियुक्ति; भाग्य,
किस्मत; विभाग, खंड, जिला; रंभ, गड्ढा;
दुर्दैव, दुर्भाग्य, संकट।

अवधीरण, अवधीरण (सम्) सं.— तिरस्कार, निंदा। — असु
इसु (सम्) क्रि.— तिरस्कार कर।

अवधूत (सम्) सं.— विरक्त, त्यागी,
संन्यासी।

अवध्य (सम्) वि.— जो मारने योग्य
नहीं, पवित्र।

अवन (सम्) सं.— रक्षा, संरक्षण।
अवनत (सम्) वि.— झुका हुआ,
नमस्कृत।

अवनति (सम्) सं.— हीन दशा,
दुर्दशा।

अवनद्ध, अवनद्ध (सम्)
वि.— झुका हुआ, नमस्कृत।

अवनी (सम्) सं.—
भूमि, पृथिवी, नदी। —अ ज, अज जात
(सम्) सं.— वृक्ष, मंगल ग्रह। —अज
जाते, अज (सम्) सं.— सीता। —अ
धर (सम्) सं.— कुलपर्वत। —अ प, अ
पति, अ पाल (सम्) सं.— राजा, नृपति।
—अ रह (सम्) सं.— वृक्ष, पौधा।
—अ सुर (सम्) सं.— भू देवता,
ब्राह्मण।

अवनु (क) सर्व.— वह (पु. लिं.)
He.

अवध्य (सम्) वि.— जो वंध्या न हो।
प्रशंसा के अयोग्य; अच्छ, दुष्ट।

अवधूत, अवधूत (सम्)
सं.— यज्ञ के अंत में दोष परिहारार्थ किया
जानेवाला स्नान।

अवधो (सम्) सं.— जागृति,
तैयारी; ज्ञान; न्याय-निर्णय।

अवधो (सम्) सं.— नाश, कुचलने
की क्रिया।

अवमान (सम्) सं.— अपमान;
बदनामी, बेइज्जती।

अवयव (सम्) सं.— शरीर के अंग,
अंग।

अवयव (सम्) सं.— पूर्ण शरीर
धारी; पूर्ण वस्तु।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— नीच, हेय, कनिष्ठ;
पिछला, पश्चात् का। —अ ज (सम्) सं.—
छोटा भाई। —अ जे (सम्) सं.— छोटी
बहन।

अवयव (सम्) वि.— रुका हुआ।
चंद हुआ। अ.— पीछे, पीछे की ओर,
पिछला।

अवयव (तद्) सं.— अमरी (तत्), एक
अनाज।

अवयव (सम्) वि.— जो श्रेष्ठ न हो,
छोटा, नीचा, हेय, क्षुद्र।

अवयव (क) क्रि.— नखों से नीच,
चुटकी काट या ले। —सर्व.— वे (पु. लिं.)
और स्त्री. लिं.) (They).

अवयव (क) सं.— रोक, अड़चन,
बाधा; अंतःपुर, रनिवास।

अवयव (सम्) सं.— नीचे उतरना. उतार; जेल
जो वृक्ष की जड़ से फुनगी तक लिपटी रहती
है; स्वर्ग, आकाश; वट की डाली; संगीत
के सप्त स्वरों के उतार का क्रम।

अवयव (सम्) सं.— जो वर्णीय
न हो, जो वर्ण न हो। —अवयव व्यंजन
(सम्) सं.— य, र, ल, व आदि।

अवयव (सम्) वि.— जो छोड़ा न गया
हो, जो छोड़ा न जा सके।

अवयव (सम्) सं.— रंग रहित; बुरा,
कमीना; निंदा; आकार।

अवयव (सम्) सं.— वर्षा का
अभाव; कमी, न्यूनता।

अवयव (सम्) सं.— सफेद रंग।
अवयव (सम्) सं.— बुरा लक्षण,
अपशकुन।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अवयव (सम्) वि.— लटका हुआ।
सं.— कमर, कटि।

अष्टक (मम्) सं.— आठ दिशाओं के गज ।

अष्टदिक् अष्टदिक् (सम्) सं.—आठ दिशाएँ ।
—गज गज (सम्) सं.— आठ दिशाओं के गज ।

अष्टपद अष्टपद (सम्) सं.— आठ पैरवाले कीड़े—बिच्छू, शरभ आदि; कैलास; सुवर्ण सोना ।

अष्टमंगल अष्टमंगल (सम्) सं.— आठ प्रकार के मंगल; लक्षणयुक्त सफेद घोड़ा ।

अष्टमि अष्टमि (सम्) सं.— शुक अथवा कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि ।

अष्टमूर्ति अष्टमूर्ति (सम्) सं.— शिव जी के विभिन्न रूपों के नाम ।

अष्टमसु अष्टमसु (सम्) सं.— आठ प्रकार की संपदाएँ — आप, ध्रुव, सोम, ध्रुव, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभास ।

अष्टसिद्धि अष्टसिद्धि (सम्) सं.— आठ सिद्धियाँ — अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व ।

अष्टांग अष्टांग (सम्) सं.— शरीर के आठ मुख्य अवयव — मस्तक, हाथ, पैर, छाती, आँख, जाँघ, गला (वचन) और मन; वीरशैव आचार के अनुसार अष्टावरण, वे हैं — गुरु, लिंग, जंगम, पादोदक, प्रसाद, विभूति, रुद्राक्ष और मंत्र । — अष्टांग प्रणाम (सम्) सं.— आठ अंगों का प्रणाम ।

अष्टादश अष्टादश (सम्) वि.— अठारह । — अष्टादश उपपुराण (सम्) सं.— अठारह उपपुराण । — अष्टादश पुराण (सम्) सं.— अठारह महापुराण । — अष्टादश पर्व (सम्) सं.— महाभारत के अठारह पर्व ।

अष्टावक्र अष्टावक्र (सम्) सं.— जन्म से कुरूपी एक ब्राह्मण, कहोद ऋषि का पुत्र ।

अष्टावरण अष्टावरण (सम्) सं.— आत्मा पर घिरे आठ आवरण, वीरशैव आचार के अष्टावरण । दे. अष्टांग ।

अष्ट (क) अ.—उतना, उस परिमाण में ।
अष्टैश्वर्य अष्टैश्वर्य (सम्) सं.— दे. अष्टादश ।
अष्टोत्तरशत अष्टोत्तरशत (सम्) वि.— एक सौ आठ ।

अस (क) सं.— उपयुक्तता, योग्यता; आज्ञा, अनुज्ञा; बल, शक्ति; कोमलता ।
अ.— उतना, जितना की (मे.प्र.) । सं.— वेग, शीघ्रता ।

असंय असंय (तद्) वि.— अमल्य (तत्) ; जो सहन न किया जा सके, दुर्गंध (न्या.भा.) ।

असंय असंय (सम्) अ.— निस्संदेह ।

असकलि असकलि (क) क्रि.— हाथ से निकल जा; अतिक्रमण कर ।

असकृत् असकृत् (सम्) अ.— बारंबार, अकसर, निरंतर ।

असक्त असक्त (सम्) वि.— जो किसी में न लगा हो; प्रेम रहित ।

असग असग (क) सं.— धोवी : कन्नड के एक कवि का नाम ।

असंकीर्ण असंकीर्ण (सम्) वि.— जो संकीर्ण न हो, शुद्ध ।

असंख्य असंख्य, असंख्य अंश असंख्यात, असंख्येय (सम्) वि.— अनगिनत; बहुत अधिक ।

असंगत असंगत (सम्) वि.— अयुक्त, विषम, असंबद्ध ।

असि असि (क) सं.— मूर्ख स्त्री (मे. प्र.) ।

असि असि (क) सं.— मूर्खता; नटखटपन ।

असि असि (तद्) सं.— अश्रद्धा (तद्) ; तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा ।

असि असि (सम्) वि.— झूठा, गलत; दुष्ट, खराब ।

असि असि (सम्) सं.— जो सती या पतिव्रता न हो, बुरी पत्नी ।

असि असि (सम्) वि.— असाध्य, अशक्य, असह्य, अव्यवहृत ।

असि असि (सम्) सं.— उचित उपमा के द्वारा किसी की बुराई की घोषणा; बुरा प्रचार; एक कविसमय ।

असि असि (तद्) सं.— अशानि (तद्) ; दे. असि ।

असि असि, असि असि, असि असि (सम्) सं.— वृत्ति का अभाव, अप्रसन्नता ।

असि असि (सम्) वि.— अपात्र, असमाजिक. सभा या समाज के अयोग्य, खल, नीच ।

असि असि (सम्) वि.— असमान, बेजोड़, विषम ।

असि असि (सम्) वि.— असंगत, अवोधगम्य, मूर्खतापूर्ण ।

असि असि असि असि (सम्) सं.— विषम नेत्रवाले शिव; एक आँखवाला कौआ ।

असि असि (सम्) वि.— अयोग्य, अशक्य, बलहीन ।

असि असि (सम्) सं.— दे. असि ।

असि असि (सम्) सं.— शांति का अभाव, अतृप्ति, गड़बड़ी ।

असि असि (सम्) वि.— बेमेल, अनुचित, गलत ।

असि असि (सम्) वि.— दे. असि ।

असि असि (सम्) वि.— नासुमकिन, जो कभी न हो, अवोधगम्य, असाध्य ।

असि असि (सम्) वि.— जो उत्पन्न न हो, असंभव ।

असि असि (सम्) वि.— विरुद्ध, असमान्य । — ३ ति (सम्) सं.— अस्वीकृति ।

असि असि, असि असि (क) सं.— शीघ्रता, वेग, गड़बड़ी ।

असि असि, असि असि (क) क्रि.— विरक्त हो, उब जा; अंत हो; मर जा ।

असि असि (सम्) सं.— असहिष्णुता, ईर्ष्या; शत्रु ।

असि असि (सम्) वि.— जिसको किसी का साहाय्य न हो, एकाकी, अकेला । — असि असि (सम्) सं.— एकैक वीर, अद्वितीय योद्धा ।

असि असि (सम्) वि.— दे. असि ।
असि असि (सम्) सं.— अपूर्णता ।

ಅಸಾಹಸ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.—ಜಿಸ್ತೆ
ಮಾನ ನ ಹೊ, ಅಸಮ, ಅತುಲ್ಯ ।

ಅಸಾಧಾರಣ ಅಸಾಧಾರಣ (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ
ಸಾಧಾರಣ ನ ಹೊ, ವಿಲಕ್ಷಣ, ಅಸಾಮಾನ್ಯ,
ಅಪೂರ್ವ ।

ಅಸಾರ (ಸಮ್) ವಿ.—ಸಾರಹೀನ, ನಿರ್ವಿಜ್ಞಾನ,
ಅನುಪಯೋಗಿ ।

ಅಸಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಖಡ್ಗ, ತಲವಾರ ।

ಅಸಿ (ಕ) ವಿ.—ಕೃಶ, ಸುಖಾ, ಮಹೀನ,
ಪತಲ । ಸಂ.—ಕೃಶತಾ, ದುರ್ಬಲತಾ, ಕೊಮಲತಾ,
ಲಘುತಾ, ಸೂಕ್ಷ್ಮತಾ । ಕ್ರಿ.—ಕಾಂಪ, ಹಿಲ, ಡೋಲಾ-
ಮಾನ ಹೊ ; ಫೆಂಕ, ಫೆಲಾ, ಬಾಡ ।

ಅಸಿ, ಅಸಿಸಿ (ಕ) ವಿ. ಛೋ.—
ಛಿ! ಛಿ!; ಛಿಕ್! ಛಿಕ್!

ಅಸಿ (ಕ) ವಿ.—ಜೊ ಭೂಮಿ ಪರ ರಖಿ ಗಯಿ
ಹೊ । —ಅಸವೆ ಅಸುವೆ ಯಾ ಅಸವೆ ಅಸುವೆ
ಕಲ್ಲು (ಕ) ಸಂ.—ಪಿಸನೆ ಕಾ ಪತ್ಥರ (ತಮಿಲು
—ಅಸಿ ಅಸಿ) ।

ಅಸಿತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ ಸಫೆದ ನ ಹೊ,
ಕಾಲಾ, ನೀಲಾ । ಸಂ.—ಏಕ ಕ್ರಪಿ ಕಾ ನಾಮ ।
—ಕಂಠರ ಕಂಠರ, —ಗಲ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ನೀಲಕಂಠ, ಶಿವ । —ರಸೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಕಾಲಿ ಮಿಡಿವಾಲಿ ಭೂಮಿ ।

ಅಸಿತಾನನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಕಾಲೆ ಮುಂದೆ
ಕಾ ಬಂದರ ।

ಅಸಿತಾಂವರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಬಲರಾಮ ।

ಅಸಿತಾಹಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಕೃಷ್ಣಸರ್ಪ,
ಕಾಲಿಯ ನಾಗ ।

ಅಸಿಡು (ಕ) ವಿ.—ಕೃಶ, ಪತಲಾ, ಮಹೀನ,
ಛೊಡಾ, ಕೊಮಲ ।

ಅಸಿಧಾರಾ, ಅಸಿಧಾರೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ತಲವಾರ ಕಿ ಧಾರಾ । —ಸುತ
ವ್ರತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ತಲವಾರ ಕಿ ಧಾರ ಪರ
ಚಲನೆ ಕಿ ಕ್ರಿಯಾ. ಕಠಿಣ ಕಾಮ ।

ಅಸಿಧೇನುಕೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಖಡ್ಗ,
ತಲವಾರ ।

ಅಸಿನಡು (ಕ) ಸಂ.—ಕೃಶ ಕಡಿ, ಪತಲಿ
ಕಮರ ।

ಅಸಿಪತ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ದೇ. ಅಸಿಪತ್ರ.
—ಸುತ ವ್ರತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ದೇ. ಅಸಿಪತ್ರ;

ನವ ವಿವಾಹಿತ ದಂಪತಿ ಕಾ ಲೀನ ಮೆ ತಲವಾರ ರಖ
ಕರ ಸೋನೆ ಕಿ ಕ್ರಿಯಾ, ವ್ರಹ್ಮಚರ್ಯ ಕಾ ಪಾಲನ ।

ಅಸಿಯೆರಳು ಅಸಿಯೆರಳು (ಕ) ಸಂ.—ಪತಲಿ
ಲೆಂಚಿ ತಂಗಲಿ ।

ಅಸಿಯೆಳು ಅಸಿಯೆಳು (ಕ) ಸಂ.—ಪತಲಿ ಛಿ ;
ಕೊಮಲಾಂಗಿ ,

ಅಸಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಗಂಗಾ ಕಿ ಏಕ ಉಪನದಿ ।

ಅಸು (ಕ) ಸಂ.—ಶಿಖರತಾ, ವೇಗ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪ್ರಾಣ ; ಜೀವ । —ಕೂಡ
ಕುಡಿ (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಾಣ ಲೇ, ತೆಗ ಕರ ।

ಅಸುಕೆ, ಅಸುಗೆ ಅಸುಗೆ (ತದ್) ಸಂ.—
ಅಶೋಕ (ತದ್) ।

ಅಸುಕೊಳ್, ಅಸುಗೊಳ್ ಅಸುಗೊಳ್
(ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಾಣ ಲೇ, ಮಾರ, ವಧ ಕರ ; ವಶ
ಮೆ ಆ ।

ಅಸುಗಾವಲು (ಕ) ಸಂ.—ಪ್ರಾಣ-ರಕ್ಷಾ,
ಜೀವನ-ರಕ್ಷಾ ।

ಅಸುಗೋರೆ, ಅಸುಗೋರೆ (ಕ)
ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಾಣ ತ್ಯಾಗ ಕರ, ಮರ ।

ಅಸುಂಬು ಅಸುಂಬು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಚಾಲಿತ ಕರ,
ಉಭಾಡ, ಆಗೇ ಬಡಾ, ಉತ್ಸಾಹಿತ ಕರ, ಬಾಹರ
ನಿಕಾಲ ।

ಅಸುರ (ಕ) ಸಂ.—ಠಕಾವಡ, ಆಯಾಸ,
ಉದಾಡ ; ಅನಿಚ್ಛಾ, ಅಸಹ್ಯ ಕಾ ಭಾವ, ಅಜೀರ್ಣ ।

ಅಸುರು (ಸಮ್) ಸಂ.—ರಾಕ್ಷಸ ; ಸೂರ್ಯ ।
—ಗುರು ಗುರು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಶುಕ್ರಾಚಾರ್ಯ ।
—ರಘು ರಿಪು, ಅಂತಃಕ, ಅಂತರಿ, ಅಂತ
ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ರಾಕ್ಷಸೊ ಕೆ ಶತ್ರು ದೇವತಾ,
ವಿಷ್ಣು, ಶಿವ ಆದಿ ।

ಅಸುರಿ, ಅಸುರಿ ಅಸುರಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ರಾಕ್ಷಸಿ ।

ಅಸುಲಾಭ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪ್ರಾಣೊ ಕಿ
ರಕ್ಷಾ, ಬಾಲ-ಬಾಲ ವಚನಾ (ಮೈ. ಪ್ರ.) ।

ಅಸುವಡು, ಅಸುವಡಿ (ಕ)
ಕ್ರಿ.—ಮರ, ಪ್ರಾಣ ತ್ಯಾಗ ಕರ ।

ಅಸುಹವ್, ಅಸುಹವ್ ಅಸುಹವ್ (ಸಮ್)
ಸಂ.—ಅಮಿತ್ರ, ಶತ್ರು, ವೈರಿ ।

ಅಸುಯೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಇರ್ಯಾ, ಮಾತುಕ ;
ದ್ವೇಷ ।

ಅಸುಲಿತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ ಹಿಲೆ
ನಹೊ, ಸ್ಥಿರ, ಸಾಧನಾ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಫೆಂಕಾ ಹುಬಾ, ಡಾಲಾ
ಹುಬಾ, ತಾಗಾ ಹುಬಾ, ಹುಬಾ ಹುಬಾ, ಸಮಾಸ । —
ಅಸಿ, ಅಸಿ, ಅಸಿ ಗಿರಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪಶ್ಚಿಮ
ಪರ್ವತ । —ಮಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹವನಾ ।
—ರಾಗ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸೂರ್ಯ ಕೆ ಹುಬನೆ
ಕೆ ಸಮಯ ದಿವನೇವಾಲಿ ಲಾಲಿಮಾ । —ವಿಸು
(ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಹುಬ ಜಾ, ಅಸ್ತ ಹೊ, ಛೊಡಲ
ಹೊ ।

ಅಸುಸ್ತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಅನೈವಸ್ಥಿತ,
ತಿತ್ತರ-ವಿತ್ತರ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ಅ. ಕ್ರಿ.—ಹೊ, ವಿಧಿಮಾನತಾ ।
ಅಸು (ತದ್) ಸಂ.—ಅಸ್ಥಿ (ತದ್) ;
ಹಡ್ಡಿ ।

ಅಸುತ್ವ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಧಿಮಾನತಾ, ಸತ್ತ್ವ ।
ಅಸುತ್ವ (ಸಮ್) ಅಸ್ತಿತ್ವ, ಅಸುತ್ವ ಅಸ್ತಿತ್ವ
(ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ನಿರ್ವ. ಬುನಿಯಾದ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ಅ. —ಠೀಕ ಹೊ, ವೆಸಾ ಹೊ
ಹೊ, ಲೇರ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಅಭಿಮಂತ್ರಿತ ಹುಡುಗ
ಯಾ ಆಯುಧ, ಬಾಣ, ತಲವಾರ ಆದಿ । —ಅಸು
ಜೀವ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಯೋಧಾ, ಸಿಂಹಾಸಿ, ಅಸು
ವಿಧಿ ಸೆ ಹೊ ಆಜೀವಿಕಾ ಪಾನೇವಾಲಾ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಡ್ಡಿ । —ಅಸು
ಪಂಜರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಡ್ಡಿಯೊ ಕಾ ಪಿಂಜರಾ,
ಕಂಕಾಲ, ಠಠರಿ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಚಂಚಲ, ಅಸ್ಥಾಯಿ,
ಛುಟಾ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ ಚಿಕನಾ ನ
ಹೊ, ರುಕ್ತ, ಕರ್ಕಶ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ ಛುನೆ ಯೋಗ್ಯ
ನ ಹೊ, ಹರಿಜನ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಜೊ ಸಾಫ ನ ಹೊ,
ಸಂದಿಗ್ಧ, ಉಲಟಾ ಹುಬಾ, ಗಲತ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ಅಸ್ಪಷ್ಟ, ಸಂದಿಗ್ಧ ।
ಅಸು (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸಿರ ಕೆ ಬಾಲ ; ಬಾಲ್ಯ,
ರಕ್ತ । —ಪ (ಸಮ್) ಸಂ.—ರಕ್ತ ಪಿಂಚಿವಾಲಾ,
ರಾಕ್ಷಸ ।

ಅಸು (ಸಮ್) ವಿ.—ರೋಗಿ, ಬಿಮಾರ ।

अस्वाभाविक

अस्वाभाविक (सम्) वि.— जो स्वाभाविक न हो, कृत्रिम, बनावटी ।

अस्वारस्य (सम्) वि.— रसहीन, नीरस ।

अस्वार्थ (सम्) सं.— निःस्वार्थता, स्वार्थता का अभाव ।

अस्वास्थ्य (सम्) सं.— बीमारी, रोग ।

अह (क) वि.— वैसा, उस प्रकार का ।
अहवर्ग—वैसे लोग ।

अहगे (क) अ.— वैसे ।

अहंकार, अहंकार, अहंकार, अहंकार
अहंभाव, अहंभाव, अहंभाव (सम्)
सं.— गर्व, घमंड, स्वार्थता ।

अहंगे, अहंगे, अहंगे, अहंगे
(क) अ.— वैसे, उस तरह से ।

अहन् (सम्) सं.— दिन ।

अहत्य (सम्) वि.— अवध्य,
जो मारने योग्य न हो ।

अहमहमिके (सम्) क्रि.— 'मैं
मैं' कहना, स्वार्थ, अहंभाव ।

अहर्निश (सम्) अ.— दिन-रात ।

अहर्पति, अहर्पति, अहर्पति, अहर्पति
अहस्पति (सम्) सं.— दिनकर, सूर्य ।
अहलेकार (अ. दे.) सं.— अहल-
कार (अरबी, फ़ारसी); अधिकारी, जनता का
सेवक ।

अहल्ये (सम्) सं.— गौतम ऋषि की
पत्नी ।

अहार्य (सम्) वि.— जो चुराया न
जा सके ।

अहि (सम्) सं.— सांप; राहु; सूर्य;
वृत्रासुर; धोखेबाज़, दुष्ट मनुष्य; यात्री ।

अहिसे (सम्) सं.— मन, वचन, कर्म
से किसी प्राणी को पीड़ा न देना ।

अहिकटक (सम्) सं.— सर्पभूषण
शिव; सर्प समूह ।

अहिकंत (सम्) सं.— सर्पराज
बासुकी; पवन ।

अहिकुंडल (सम्) सं.— साँप ही
जिनके कर्णाभूषण हों, शिव ।

अहिच्छत्र (सम्) सं.— उत्तर पांचाल
देश ।

अहित (सम्) वि.— हानिकारी, प्रतिकूल ।
सं.— वैरी, शत्रु । — अहित (सम्) सं.—
शत्रुता ।

अहितुंडक (सम्) सं.— संपेरा,
साँप पकड़नेवाला ।

अहितबल (सम्) सं.— शत्रुसेना ।

अहिधर (सम्) सं.— सर्पधारण करने
वाले शिवजी ।

अहिप, अहिपति (सम्) सं.—
आदिशेष ।

अहिपकंकण (सम्) सं.— शिव ।

अहिपुर (सम्) सं.— नागलोक ।

अहिभुक् (सम्) सं.— सर्पभक्षक—
गरुड, मयूर ।

अहिभूषण (सम्) सं.— शिव ।

अहिमकर (सम्) सं.— सूर्य ।

अहिमकर (सम्) सं.— साँप
और मगर ।

अहिमहिले (सम्) सं.— नागकन्या ।

अह्नु (क) अ.— हँ ।

अहेतु, अहेतु (सम्)
वि.— अकारण, बिना कारण के ।

अहोरात्र, अहोरात्र, अहोरात्र
(सम्) अ.— अहर्निश, दिन-रात ।

अह्नु (सम्) सं.— दिन ।

अह्नु (क) क्रि.— डूब; रो । प्र.—
स्त्रीवाचक प्रत्यय अह्नु अथवा अह्नु । उदा.—
अह्नु इति, अह्नु इति—
प्रेमिका । अह्नु बंद, अह्नु बंद—
आयी ।

अहलक (सम्) सं.— अलक, घुँघराले
बाल ।

अहलकापुर (सम्) सं.— दे. अहलका ।

अहलकिसु, अहलकिसु (क)
क्रि.— डरा (प्रे.) ।

अहलकु, अहलकु (क) सं.— भय, डर ।

अहलकु (क) सं.— छेदने या काटने की
क्रिया । क्रि.— काटना, छेदना ।

अहलकु, अहलकु (क) सं.—
हिलने-डुलने, घूमने या कंपित होने की
स्थिति । — अहलकु (क) क्रि.—
हिल जैसे सिर पर रखे घड़े का पानी हिलता
है ।

अहलके (क) सं.— भय, डर ।

अहलक (तद्) सं.— अलक (तद्?), एक
जाति का घोड़ा ।

अहलगे, अहलगे (क) सं.— मापने
का बर्तन जो प्रायः लोहे या पीतल का
होता है ।

अहलके (क) सं.— वश, अधीन;
विघ्न ।

अहलत, अहलत (क) सं.— मापने
या मापा जाने की क्रिया ।

अहलते, अहलते (क) सं.— नाप,
माप, परिमाण । उदा.— अहलते रात्रिमास—
अनाज के ढेर को मापो ।

अहलदि (क) वि.— पीला (प्रा.) ।

अहलदु, अहलदु (क) कृ.— नापकर
या मापकर ।

अहलक (क) सं.— सामर्थ्य; माहात्म्य,
बढ़प्पन ।

अहलकु, अहलकु, अहलकु
अहलकु (क) सं.— मन में नाप-तोल
करना; विचार, विश्लेषण, इच्छा, कामना,
अभिलाषा ।

अहलके, अहलके, अहलके, अहलके,
अहलके, अहलके (क) सं.—
भूमि-छत्र, कुक्कुरसुता ।

अहलक, अहलक (क) सं.—
भय, डर, भीति; व्यग्रता; मनोव्यथा । —
अहलक— डरा, घमका, भय-
भीत कर ।

अहलक (क) सं.— भय, डर, भीति,
व्यग्रता ।

अष्टम अक्षर, अष्टमि अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— दुःख, व्यथा, पीड़ा, त्रिंता, व्याकुलता ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— बोधिदृष्ट, पीपल का वृक्ष ; गिलहरी ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नष्ट कर, हानि पहुँचा ; दुःख दे, पीड़ा दे, तंग कर ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— ठीक-ठीक मिलने, सजने, संयुक्त होने आदि का भाव ।
—अष्टम अक्षर (क) क्रि.— वश में हो, ठीक प्रकार से मिल, संयुक्त हो, घुल-मिल, संभव हो, तैयार हो । — अष्टम अक्षर (क) क्रि.— प्रेरणार्थक ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— नैक्य, सामीप्य ; उपयुक्तता, औचित्य ; संभावना ; बल, शक्ति ; युद्ध या लड़ाई के मैदान में द्वंद्व, कुश्ती, मलयुद्ध ; आशा, विश्वास ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— मित्र, दोस्त ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— दे. अष्टम. — अष्टम अक्षर (क) क्रि.— सीमहीन हो, हृद् पार कर, उल्लंघन कर । — अष्टम अक्षर (क) क्रि.— युद्ध कर, लड़ ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— करार या शर्त का पत्र जो किसान को दिया जाता है, पट्टा ; जल का उत्तार ।

अष्टम अक्षर (तद्) क्रि.— आलस्य (तत्) ; सुस्ती । — अष्टम गामिनि (तद्) वि.— संदगमना ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नाप या माप करा (प्रे.) ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नाप या माप ; नष्ट हो, समाप्त हो, मिट जा, मर जा ; खोल । वि.— खराब, बुरा । (सम्) सं.— अमर, मधुप ।
अष्टम अक्षर (तद्) सं.— अलिकं (तत्) ; माथा ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— विरोध कर, पीड़ा दे, दिक कर ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— दे. अष्टम.

अष्टम अक्षर (क) सं.— क्षुद्रकाय, अवर काय । — अष्टम (क) सं.— दुष्ट कवि ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— बुरी आँख ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— बुरा समय, अंतिम समय, मृत्यु ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— पानी या अनाज रखने का मिट्टी का बर्तन ।

अष्टम अक्षर (सम्) सं.— अमरी, मादा मधुप ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— लालसा, कामना, लालच, तीव्रच्छा । क्रि.— लालसा कर, ललचा जा, नष्ट हो ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— दामाद, जामाता ।
अष्टम अक्षर (क) सं.— अक्षर मुनिदरे मगल करकोंडु होदानु— दामाद क्रुद्ध होगा तो पुत्री (अपनी पत्नी) को ले जाएगा (कह.) । वि.— व्यर्थ, तुच्छ, हानि । — अष्टम अक्षर (क) वि.— भीरु, डरपोक । — अष्टम तन (क) सं.— दामाद होना ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— विनष्ट ग्राम या बस्ती ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— बुरी औरत ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— कामदेव ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नष्ट कर, मिटा ; रूला ।

अष्टम अक्षर (क) क.— गिलहरी ।

अष्टम अक्षर (तद्) सं.— अलीकं (तत्) ; झूठ, मिथ्या ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) क्रि.— डर जा, भयभीत हो ; मिट जा । सं.— भय, डर, भीति । — अष्टम अक्षर (क) क्रि.— डरा, धमका ।

अष्टम अक्षर (क) वि.— अधिक, महान, बहुत । अ.— खूब । सं.— आधिक्य, महा नता, बढ़ाई ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— व्याप्त हो, फैल, आवृत्त हो ; डरा ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— डर, भय ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— गिलहरी ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नाप, माप । सं.— मट्टा, छौंछ ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— ईर्ष्या, डाह, मात्सर्य ; प्रेम, स्नेह ; अन्याय ।

अष्टम अक्षर (क) अ.— तुरंत ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— अजीर्ण, डर ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— भय, (धा. प्र.) ; प्रीति ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— हिल, डुल ; पूर्णतः नष्ट हो ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— व्यग्रता या चिंता उत्पन्न कर ; नष्ट हो ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— डर, भयभीत हो ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— डर, भय ; रूलाई, विलाप, आलिंगन ।

अष्टम अक्षर (क) अ.— रुकझुक ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— नष्ट हो, लय हो, क्षीण हो ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— रसोई ।

अष्टम अक्षर, अष्टम अक्षर (क) सं.— प्रेम, प्रीति ; प्रसन्नता, संतोष ; आशा, विश्वास ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— डुबा, (किसी तरह पदार्थ में) निमज्जित कर ; जला, मिटा, नष्ट कर ; मर ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— आलिंगन ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— पूरा जला ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— कंपा, हिला, धमका, डरा ।

अष्टम अक्षर (क) क्रि.— हिल, डुल, कांप ; लटक ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— गिलहरी (मे. प्र.) ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— गिलहरी ; लटकनेवाला पदार्थ ; कोमलता, निर्बलता । वि.— लटकने वाला ।

अष्टम अक्षर (क) सं.— अश्वत्थ, पीपल ; एरंडी (व्या. भा.) ।

ॐ, ॐ अल्लेदे

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) सं.— कौपनेवाला सीना ; डर, भय ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) क्रि.— बहुत थक जा, श्रान्त हो ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) सं.— मृदु स्पर्श, संबंध ; धीरे से छूना ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) क्रि.— दे. ७५. — ७७०४

अल्लेदे (क) सं.— व्यग्रता, ध्यथा । ७७०४

अल्लेदे (क) वि.— ध्ययित, दुःखी ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) वि.— नाश करनेवाला ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) क्रि.— दे. ७५. — ७७०४

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) क्रि.— हज़म कर ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) सं.— प्रेम करनेवाला, प्रेमी ।

ॐ, ॐ अल्लेदे (क) क्रि.— नष्टकर, बरबाद कर, मिटा, मार ।

ॐ आ

ॐ आ — कन्नड वर्णमाला का दूसरा अक्षर । (क) वि. सर्व.— ७७० अहु—वह आदि के बदले आनेवाला आदेश । उदा.— ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

७७० अहु ग्लासु—वह गिलास है । ७७०

ॐ आः (क) अ.— विस्मय, दुःख या शोक प्रकट करनेवाला विस्मयादिबोधक ।

ॐ आंकि (क) अ.— अर्थात्, याने, यह कि (मै. प्र.) ।

ॐ आंके (क) सं.— आधार ; पकड़ने, धारण करने की क्रिया ; भार ठोने का साधन ।

ॐ आंके (क) क्रि.— पकड़, सामना कर ।

ॐ आंगिक (सम्) वि.— शारीरिक, दैहिक ; हाव-भाव से युक्त ।

ॐ आंगिर (तद्) सं.— आंगिरसः (तत्) ; आंगिरस के पुत्र, वृहस्पति ।

ॐ आंगिरस (सम्) सं.— दे. ७०१०.

ॐ आंजेय (सम्) सं.— अंजना के पुत्र, इनुमान ।

ॐ आंडे (सम्) सं.— अंड से उत्पन्न पक्षी, अन्य जीव ; ब्रह्मा ।

ॐ आंडारि (क) सं.— एक उपाधि जिसका अर्थ है—प्रभु, स्वामि, अधिकारी, हुजूर ।

ॐ आंडि (क) सं.— दैव धर्म का सन्यासी ।

ॐ आंत (क) वि.— धारण किया हुआ, पहना हुआ ।

ॐ आंतर (सम्) वि.— भीतर का, अंदरूनी, अत्यंत गुप्त ।

ॐ आंत्य (सम्) सं.— मन, हृदय ; रहस्य, गुप्त बात ।

ॐ आंतिका (सम्) सं.— बड़ी बहन ।

ॐ आंतु (क) कृ.— धारण कर, पहनकर, प्राप्त कर, स्वीकार कर ।

ॐ आंदेग (क) सं.— उल्लू ।

ॐ आंदोल, ॐ आंदोलन (सम्) सं.— पालकी, डोल ; झूलना, झूला ।

ॐ आंदोलक (सम्) सं.— बड़ी घड़ी का लंघर pendulum.

ॐ आंदोलिक, ॐ आंदोलिके (सम्) सं.— दे. ७०१०७.

ॐ आंदोलित (सम्) सं.— झूलने-वाला, लटकनेवाला, हिलनेवाला ।

ॐ आंधसिक (सम्) सं.— रसोइया, पाचक ।

ॐ आंध्र (सम्) सं.— तेलुगु, तेलुगु भाषा प्रदेश, तेलुगु भाषी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

ॐ आंध्र, ॐ आंध्र (तद्) सं.— आंध्र या आम्ल (तत्) ; उचित अनुपात में गोल मिर्च और इसली लगाया हुआ पानी ।

जाननेवाला, शास्त्रज्ञ ।

की व्यंजना की जाती है। उदा.—*ṣoḍāśat*

उंडाडिग ('उण्'-खा, धातु है) - खानेवाला (सुस्त या बेकार मनुष्य)। नाडाडिग ('नाडु'-ग्राम या बस्ती)-गाँव-गाँव (या जगह-जगह) घूमनेवाला।

६० आडिर (क) सं.— तकलीफ़, कष्ट।

६०० अडिसु (क) क्रि.— (खेल) खिला, क्रीडा करा; घुमा; नचा, अभिनय करा; (बोल) बुला; गतिमान कर (प्रे.)। ७००० अडिसु (क) सं.— अवतु कोति आडिसुत्ताने—वह बंदर से खेल करता है। इस शब्द के साथ ७००० अवतु (ए.व.) अथवा ७००० अवतु (व.व.) जोड़कर 'वाला' अर्थ की व्यंजना की जाती है, जैसे—७००० ७००० नचानेवाला; ७००० ७००० कोति आडिसुववरु—बंदर से क्रीडा करानेवाले। —७००० विक्के (क) सं.— क्रीडा कराने, नचाने आदि की क्रिया।

७००० आडु (क) क्रि.— खेल; क्रीडा कर; घूम, लटक, हिल; नाच, अभिनय कर; बोल, कह; ७००० नचकु ७०००, ७००० नचकु ७००० आडुव मक्कलु आडवेकु, वेडुव मक्कलु वेडवेकु—खेलनेवाले बच्चों को खेलना चाहिए, माँगनेवाले बच्चों को माँगना चाहिए (कह.)। ७००० ७००० नचकु आडुवलु—नर्तकी नाचगी। ७००० ७००० आ नाटकदवरु चेन्नागि आडुत्तारे—उस नाटक (कंपनी) वाले अच्छा खेलते (अभिनय करते) हैं। ७००० तिरुगाडु—घूम (१), ७००० अल्लाडु—हिल, ७००० नेताडु—लटक। ७००० नाडु नीनु मातनाडु—तू (तुम) बोल बोल (बोलो)।

७००० आडु (क) सं.— भेड़, बकरी; गीत, गाना (सं.प्र.)। क्रि.— गीत गा।

७००० आडुकुलि (क) सं.— खिलाड़ी, क्रीडाखत मनुष्य।

७००० आडुगुलि (क) सं.— दे. ७०००.

७००० आडुविके (क) सं.— खेल, क्रीडा; खेलने, क्रीडा करने आदि की क्रिया।

७००० आडुसोणे (तद्) सं.— दे. ७०००.

७००० आडुह (क) कृ.— खेलनेवाला, क्रीडा करनेवाला, नाचनेवाला आदि।

७००० आडेलु (क) सं.— उल्लू; आदि, पक्षी विशेष।

७००० आडुक (क) सं.— खँड या घैल का नथना।

७००० आडक (सम्) सं.— परिमाण विशेष, द्रोण नामक तौल का चतुर्थांश, लगभग 7 lbs. 11 ozs. का परिमाण। —७००० आडकि (सम्) सं.— अरहर, तुवरी।

७००० आड्य (सम्) वि.— धनी, धनवान, संपन्न। सं.— ऐश्वर्य, संपत्ति। ७००० ७००० विवेकके वनवास—मूढ़ता को ऐश्वर्य मिले तो विवेक को वनवास हो जाता है (कह.)।

७००० आण (क) सं.— पुरुष, पुंस्। ७००० आण मर—नर पेड़।

७००० आणक (क) वि.— नीच, हीन, छोटा। ७००० आणति (तद्) सं.— आज्ञा (तद्); दे. ७०००.

७००० आणति (क) सं.— गाना, गायन। —७००० माडु (क) क्रि.— गा, गान कर; प्रशंसा कर।

७००० आणव (क) वि.— बहुत छोटा।

७००० आणि (क) वि.— सर्व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, मूल्यवान; गोल। ७००० आणिसुत्तु—मूल्यवान या सर्व श्रेष्ठ मोती; गोलाकार मोती। —७००० कल्लु (क) सं.— ओला।

७००० आणि (सम्) सं.— गाड़ी की धुरी की चाबी या पिन, कीला; सीमा; तलवार की धार; घुटने के ऊपर का जंघा का भाग। —७००० कार (सम्) सं.— कीला बनाने-वाला।

७००० आणिसु (क) क्रि.— सूर्य की गरमी में (साधारणतया लकड़ी को) तड़कना या फाड़ना।

७००० आणे (क) सं.— शपथ, कसम।

७००० आणव, ७००० आणम, ७००० अल्लमक (क) सं.— शावक, प्रभु, स्वामी, मालिक, पति।

७००० आत (क) सर्व.— वह (पु.लिं.) के बदले ७००० का प्रयोग होता है जो आदर सूचक है। ७००० आत याह— वह कौन है? ७००० आतने इंद्र— वही इंद्र है।

७००० आतंक (सम्) सं.— रोक, विघ्न, अडचन; रोग, बीमारी; भय, भीति; घंटा, मृदंग आदि का नाद; दूत। —७००० शरीर (सम्) सं.— निर्बल, रोगी, कृब। —७००० (सम्) क्रि.— अडचन उत्पन्न कर।

७००० आतत (सम्) वि.— विस्तृत, फैला हुआ, छाया हुआ।

७००० आततायि (सम्) सं.— महापापी, अपराधी; चोर, हत्यारा।

७००० आतप (सम्) सं.— गरमी, घाम, सूर्य का प्रकाश। —७००० आत (सम्) सं.— छतरी, छाता। —७००० वारण (सम्) सं.— छाता, छतरी।

७००० आतपन (सम्) सं.— शिव।

७००० आतर (सम्) सं.— नाव की उतराई, महसूल, भाड़ा, मार्गव्यय।

७००० आतिथेय (सम्) सं.— अतिथि के योग्य, अतिथि का सत्कार।

७००० आतिथ्य (सम्) सं.— मेहमानदारी, अतिथि-सत्कार।

७००० (सम्) सं.— लकड़ी या लट्टों का वेड़ा; चौघड़ा।

७००० आतु (क) कृ.— 'अन्' 'आन्' धातु का भूतकालिक कृदंत रूप। दे. ७०००.

७००० आतुर (सम्) सं.— रोगी; गड़बड़ी, जल्दबाजी।

७००० आतुरिय (क) सं.— शीघ्रता, जल्द-बाजी।

७००० आतुष्टि (सम्) सं.— पूर्ण वृत्ति।

७००० आते (क) सं.— एक कीड़ा, टंडन Cockroach. (सं. प्र.)।

७३०९८ आतोद्य (सम्) सं.—मुरली, वीणा, मृदंग आदि वाद्य ।

७३० आत्त (सम्) वि.—लिया हुआ, प्राप्त, माना हुआ, आकर्षण किया हुआ, निकाला हुआ ।

७३००० आत्तगंध (सम्) वि.—सूँधा हुआ ; आक्रमण किया हुआ ; शत्रु से पराजित ।

७३००० आत्तगर्व (सम्) वि.—नीचा दिखलाया हुआ, अपमानित, तिरस्कृत, अधःपतित ।

७३००० आत्तदंड (सम्) वि.—राजदंड पकड़ा हुआ, अधिकारी ।

७३००० आत्तमनस्क (सम्) वि.—अत्यंत आनंद के कारण जो आत्मविस्मृति हो ।

७३० आत्म (सम्) सं.—आत्मा, जीव ; परमात्मा ; मन ; बुद्धि ; मननशक्ति ; स्फूर्ति ; मूर्ति, स्वरूप ; उद्योग, सावधानी ; पुत्र ; सूर्य ; अग्नि ; पवन ; विशेषता, लक्षण ; स्वभाव, प्रकृति । ७३००० आत्माराम

(सम्) सं.—सत्यज्ञान के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति । —७३००० उद्भव (सम्) सं.—

पुत्र, काम । —७३००० उपजीवि (सम्) सं.—अपने परिश्रम से जीवन निर्वाह करने-

वाला, नट । —७३००० गत (सम्) वि.—अपने मन में विचार करनेवाला । —७३००० घात

(सम्) सं.—आत्महत्या । —७३००० जन्म, प्रभव (सम्) सं.—पुत्र ।

७३००० जा, जाते (सम्) सं.—पुत्र । —७३००० ज्ञ, ज्ञ विद (सम्) सं.—

ऋषि, मुनि । —७३००० त्याग (सम्) सं.—स्वार्थ त्याग, अपना बलिदान, मृत्यु । —७३०००

त्राण (सम्) सं.—अपनी रक्षा । —७३००० द्रोहि (सम्) वि.—अपने ऊपर अत्याचार

करनेवाला । —७३००० निंदे (सम्) सं.—अपनी निंदा आप करना । —७३००० निवेदन

(सम्) सं.—आत्मसमर्पण, अपने आपको समर्पण करना । —७३००० निष्ठे (सम्) सं.—

आत्मज्ञान में आसक्ति । —७३००० प्रशंसे (सम्) सं.—अपनी प्रशंसा आप करना ।

—७३००० बांधव (सम्) सं.—नातेदार,

भास, मित्र । —७३००० बोध (सम्) सं.—आत्मज्ञान । —७३००० योनि (सम्)

सं.—ब्रह्मा, शिव, विष्णु, काम ; पुत्र । —७३००० लाभ (सम्) सं.—जन्म, उत्पत्ति ।

—७३००० वंचक (सम्) वि.—अपने आपको धोखा देनेवाला । —७३००० वश (सम्)

सं.—आत्मसंयम, आत्मशासन । —७३००० विद (सम्) सं.—बुद्धिमान, योगी । —

७३००० वीर (सम्) सं.—पुत्र ; साला (पत्नी का भाई) । —७३००० शक्ति (सम्) सं.—

स्वतंत्र शक्ति, अपनी सामर्थ्य । —७३००० स्तुति (सम्) सं.—अपनी प्रशंसा, अपनी

बढ़ाई । —७३००० संयम (सम्) सं.—अपने आप पर अधिकार, आत्मवशात् । —

७३००० संभवा (सम्) सं.—पुत्री ; बुद्धि । —७३००० हित (सम्) सं.—अपना लाभ,

अपना कल्याण ।

७३००० आत्मार्पण (सम्) सं.—अपना बलिदान, आत्मसमर्पण ।

७३००० आत्मिक, ७३००० आत्मक (सम्) वि.—अपना, अपने से संबंधित ।

७३००० आत्मीय (सम्) सं.—अपना, अपने से संबंधित, अत्यंत निकट का ।

७३००० आत्रेय (सम्) सं.—अत्रि के वंशज । —७३००० यी (सम्) सं.—अत्रि की पत्नी ;

रजस्वला स्त्री ।

७३००० आथर्वण (सम्) वि.—अथर्व वेद से संबंधित, अथर्व वेद का । सं.—जादूगर ।

७३० आद (क) अ.—संबंध सूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता है ('अग'—'हो',

धातु—मूल्य रूप) । ७३००० आत्मीय-राद—जो आत्मीय हैं, वे ; अगल-वाद—जो चौड़ा है, वह (अर्थात् चौड़ा) ।

७३० आदड़े, ७३० आदोड़े (क) अ.—होने पर ।

७३० आद (क) अ.—अधिकतर, विशेषकर, मुख्यरूपेण, फिर ।

७३० आदर, ७३० आदरणे (सम्) सं.—सम्मान, गौरव, इज्जत । ७३०००

आदरणीय (सम्) वि.—मान्य, सम्मान्य । ७३० आदरिसु (सम्) क्रि.—आदर

कर, सम्मान कर, इज्जत कर । ७३० आदरातिथ्य (सम्) सं.—आदर-

सुत्कार । ७३० आदरक (सम्) सं.—दुःखी या संकट में सहायता करनेवाला ।

७३० आदर्पिसु (सम्) क्रि.—घमंड चूर-चूर कर ; पीड़ा उत्पन्न कर, तंग कर ।

७३० आदर्श (सम्) सं.—नमूना, बानगी ; दर्पण, आईना ; ध्येय, लक्ष्य । —७३० आदि

(सम्) सं.—लक्ष्य या आदर्श के अनुसार चलनेवाला ।

७३० आदले (क) सं.—ललाट, माथा । ७३० आदानु (क) क्रि.रू.—(अग—हो,

धातु से) संदिग्धता का बोधक जिसका अर्थ है—हो सकता है, हो सकेगा आदि । उदा.—

अनसु अरसनादानु—वह राजा हो सकेगा (पु. लिं., ए. व.) ।

७३० आदाखु (स्त्री. लिं., ए. व.), ७३० आदीतु (न. लिं., ए. व.), ७३० आदारु

(पु. लिं., व. व.) तथा ७३० आदावु (न. लिं., व. व.) का प्रयोग भी द्रष्टव्य है । उदा.—

अनसु आदावु अवलु राणि आदाखु—वह (शायद) रानी होगी अथवा वह रानी हो सकेगी । ७३० आदेलु आ केलस

आदीतु—वह काम शायद (पूरा) होगा या वह काम पूरा हो सकेगा । अनसु आदेलु अवलु

आदारु—वे बड़े हो सकते हैं । ७३० आदेलु आदेलु अवलु हणुगलु आदावु—वे शायद फल होंगे ।

७३० आदाय (सम्) सं.—आमदनी, उत्पत्ति, लाभ ।

७३० आदि (सम्) वि.—प्रथम, प्रारंभिक ; मुख्य, प्रधान, प्रसिद्ध । सं.—मूल, प्रारंभ ।

—७३० कर्तृ (सम्) सं.—ब्रह्मा । —७३० कवि (सम्) सं.—प्रथम कवि, वाल्मीकि ।

—७३० ज (सम्) सं.—प्रथम उत्पन्न । —७३० पर्व (सम्) सं.—महाभारत का प्रथम

खण्ड । —७३० पुरुष (सम्) सं.—विष्णु ।

— ॐ म (सम्) वि.—प्रथम, आदिकालीन ।
— ॐ शक्ति (सम्) सं.—मायाशक्ति,
दुर्गा, पार्वती । — ॐ शेष (सम्) सं.—
नागराज, सर्पराज ।

ॐ ॐ ॐ आदिकारण (सम्) सं.—मूलकारण ।

ॐ ॐ ॐ आदिकेशव (सम्) सं.—विष्णु ।

कन्नड के प्रसिद्ध भक्त कवि कनकदास जी के
इष्टदेव आदिकेशव हैं । बेलूर के जगत् प्रसिद्ध
मंदिर के भगवान का नाम आदिकेशव है ।

ॐ ॐ ॐ आदिगर्भेश्वर (सम्) सं.—

जन्म से ही धनवान ; बहुत संपन्न परिवार में
उत्पन्न व्यक्ति ।

ॐ ॐ ॐ आदितेय (सम्) सं.—अदिति के

पुत्र, देवता ।

ॐ ॐ ॐ आदित्य (सम्) सं.—सूर्य, देवता ।

ॐ ॐ ॐ आदिष्ट (सम्) वि.—आज्ञापित,

कथित ।

ॐ ॐ ॐ आहुणिग (क) सं.—चुन-चुनकर

खानेवाला, भिक्षुक ; कृपण, कंजूस ।

ॐ ॐ ॐ आदेय (सम्) वि.—देने योग्य, दिया

जानेवाला (पदार्थ), स्वीकार योग्य ।

ॐ ॐ ॐ आदेश (सम्) सं.—आज्ञा ; हुक्म ;

समाचार, खबर ; सूचना, निर्देश ; एक अक्षर

के बदले दूसरे अक्षर का आगमन (व्याकरण

में) । — ॐ वादि (सम्) सं.—उपदेशक ;

भविष्य कहनेवाला ।

ॐ ॐ ॐ आदत्त (सम्) वि.—सम्मानित, मान्य,

स्वीकृत, जिसको आदर दिया गया हो ।

ॐ ॐ ॐ आद्य (सम्) वि.—प्रथम, प्रारंभ का,

पुरातन, प्राचीन ; बड़ा ; श्रेष्ठ । — ॐ कवि

(सम्) सं.—आदि कवि, वाल्मीकि ।

ॐ ॐ ॐ आद्योत (सम्) सं.—प्रकाश ;

चमक ।

ॐ ॐ ॐ आधान (सम्) सं.—हवन की अग्नि

का स्थापन ; रखना ; लेना, प्राप्त करना ;

भीतर डालना ; बंधक, धरोहर, अमानत ;

पैदा करना, तैयार करना ।

ॐ ॐ ॐ आधार (सम्) सं.—आश्रय, साहाय्य,
अवलंब, आसरा ; नींव, बुनियाद । — ॐ
पीठ (सम्) सं.—विग्रह, स्तंभ आदि रखने
का अवलंब या बुनियाद ।

ॐ ॐ ॐ आधि (सम्) सं.—व्यथा, चिंता, मनो-

रोग ।

ॐ ॐ ॐ आधिक्य (सम्) सं.—अधिकता,

बहुतायत ; उन्नति, श्रेष्ठता, उत्कृष्टता ।

ॐ ॐ ॐ आधिदैविक (सम्) वि.—देवताकृत,

देवताओं द्वारा प्रेरित ; प्रारब्ध से उत्पन्न ।

ॐ ॐ ॐ आधिपत्य (सम्) सं.—अधिकार,

शासन, प्रभुता, स्वामित्व ; राज्य ।

ॐ ॐ ॐ आधिभौतिक (सम्) वि.—पंच

भूतों से संबंधित ; जीव-जंतुओं से होनेवाली

पीड़ा ।

ॐ ॐ ॐ आधीन (सम्) वि.—हाथ में आया

हुआ, वशीकृत ।

ॐ ॐ ॐ आधुनिक (सम्) वि.—आजकल का,

नूतन, नवीन, वर्तमानकाल का ।

ॐ ॐ ॐ आधृत (सम्) वि.—रखा हुआ, ऊपर

उठाया हुआ, सहारा दिया हुआ ।

ॐ ॐ ॐ आधेय (सम्) सं.—बंधक, धरोहर,

गिरवी ।

ॐ ॐ ॐ आधोरण (सम्) सं.—महावत ।

ॐ ॐ ॐ आध्यात्म (सम्) वि.—आत्मा को

ही प्रधान किया हुआ, अपने में ही उत्पन्न ।

— ॐ इक (सम्) वि.—आत्मा से संबंधित ।

ॐ ॐ ॐ आध्यान (सम्) सं.—शोक-स्मृति ;

दुःख, चिंता ।

ॐ ॐ ॐ आध्यापक (सम्) सं.—अध्यापक,

शिक्षक, गुरु ।

ॐ ॐ ॐ आनु (क) क्रि.—हो,

(संभव) हो, (संयुक्त), हो मिल, ठहर, (पूरा)

हो, (सामना) हो, झुक, धारण कर । सर्व-

में (ह. क.) ।

ॐ ॐ ॐ आन (सम्) सं.—साँस लेना, वायु को

भीतर खींचना ।

ॐ ॐ ॐ आनक (सम्) सं.—नगाड़ा, बड़ा ढोल ;
गरजनेवाला वादल । — ॐ ॐ ॐ हुंदुभि
(सम्) सं.—नगाड़ा, भेरी ; वसुदेव,
श्रीकृष्ण के पिता ।

ॐ ॐ ॐ आनत (सम्) वि.—झुका हुआ, नमित,

प्रणमित, नमस्कृत । ॐ ॐ ॐ आनति-नमस्कार ।

ॐ ॐ ॐ आनद्ध (सम्) सं.—ढोल, नगाड़ा ।

ॐ ॐ ॐ आनन (सम्) सं.—मुख, चेहरा ।

ॐ ॐ ॐ आनंद (सम्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता ;

सुख, संतोष । — ॐ ॐ ॐ मय (सम्) वि.—

हर्षपूर्ण ; सं.—परब्रह्म । — ॐ ॐ ॐ कर (सम्)

वि.—प्रसन्न करनेवाला, तोष देनेवाला ।

— ॐ ॐ ॐ जल, ॐ ॐ ॐ बाष्प (सम्) सं.—

आनंद के कारण निकलनेवाले आँसू । —

ॐ ॐ ॐ तुंदिल (सम्) वि.—हर्ष से पूर्ण,

प्रसन्नता के आधिक्य के कारण आत्मविस्मृत ।

ॐ ॐ ॐ आनंदाश्रु (सम्) सं.—हर्षातिशय

के कारण निकलनेवाले आँसू ।

ॐ ॐ ॐ आनय, ॐ ॐ ॐ आनयन (सम्) सं.—

लाना ।

ॐ ॐ ॐ आनसु, ॐ ॐ ॐ आनिसु (क) क्रि.—

लगा, मिला, संयुक्त कर, झुका, स्पर्श कर,

संबंधित रह ।

ॐ ॐ ॐ आनिके (क) सं.—सहारा, आधार ;

भार ढोने का साधन ।

ॐ ॐ ॐ आनिल (सम्) सं.—वायु पुत्र हनुमान

या भीम ।

ॐ ॐ ॐ आनुकूल्य (सम्) सं.—अनुकूलता,

उपयुक्तता ; अनुग्रह, कृपा, दया ।

ॐ ॐ ॐ आनुगुण्य (सम्) सं.—अनुकूलता,

समानता, वरावरी ।

ॐ ॐ ॐ आनुपूर्वक, ॐ ॐ ॐ आनु-

पूर्वि (सम्) सं.—क्रम, रीति, परिपाटी ।

ॐ ॐ ॐ आनुपंगिक (सम्) वि.—संबंधित,

अनिवार्य, आवश्यक ; गौण ।

ॐ ॐ ॐ आने (क) प्र.—होसगन्ध (आधुनिक

कन्नड) में अन्य पुरुष सर्वनाम के पु.लि.,

पु.व. का सामान्य वर्तमान कालिक प्रत्यय ।

उदा.—ॐ ॐ ॐ ह्रुत्ताने-रहता है, ॐ ॐ ॐ

ॐ ॐ ॐ मादुत्ताने-करता है ; (प्रायः न्या.भा.

में) अन्य पुरुष सर्वनाम पु.लिं., ए.व. के आसन्न भूतकालिक प्रत्यय के रूप में इसका प्रयोग होता है, जैसे—*ಬಂದಾನೆ* बंदाने-आया है, *ಬಂದಾನೆ* होगयाने-गया है। सं.—*ಹಾಥಿ* हाथी। *ಅನೆ ನೋಡಿ ನಾಥಿ ಬೋळಿದ ಹಾणे-हाथी को देखकर जैसे कुत्ता भूकता है (कहा.)।* *ಅನೆ ಎತ್ತ, ಅಡ್ಡ ಎತ್ತ ?* आने एत्त, आडु एत्त—हाथी कहाँ, बकरी कहाँ ? (कह.)। —*ಹಾಲು* कालु (क) सं.—पील पौव, एक रोग (Elephantiasis)। —*ಹಾಸು* कासु (क) सं.—एक सिंका जिस पर हाथी का चिह्न रहता था, आजकल यह अप्रचलित है (मै. प्र.)। —*ಕಜ್ಜಿ* कज्जि, *ಗಜ್ಜಿ* गज्जि (क) सं.—बड़ी खुजली। —*ಗಡ್ಡು* गड्डु (क) सं.—हाथियों का समूह। —*ಗೊಲೆ* गोलें (*ಕೊಲೆ* कोले) (क) सं.—बड़ी हत्या ; हाथी को मारना। —*ಗೊಳ್ಳಿ* गोळि (क) सं.—हाथी को पकड़ने के लिए बनाया जानेवाला बड़ा गड़हा। —*ಜಂಟು* जंटु (क) सं.—हाथी दाँत। —*ಗುಂದಿ* गुंदि (क) सं.—हंपि (विजयनगर) के पास तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित नगर जो इतिहास प्रसिद्ध है। —*ತಲೆ* तले, *ದಲೆ* दले (क) सं.—हाथी का सिर। —*ಮಗ್ಗಣಿ* मग्गणि (क) सं.—एक प्राचीन सिंका। —*ದೋಟೆ ಕೋಲು* (गोले) दोटि कोलु (गोलु) (क) सं.—(महावत का) अंकुश (मै. प्र.)। —*ನಗ್ಗಲ ಮುಳ್ಳು* नेगल मुळु (क) सं.—एक पौधा-इक्षुगंधा, वन-शृंगार (The plant *Asteraentha longifolia*)। —*ಬಾಗಲು* (बागलु) बागलु (क) सं.—महल का प्रवेश-द्वार। —*ಮಯಿಲ್ಲ* मयिल्ल (क) सं.—एक बुरे प्रकार की चेचक की बीमारी। —*ಮರಿ* मरि, *ಮರಿ* मरि (क) सं.—हाथी का दन्त। —*ಮುಸುಡು* मुसुडु (क) सं.—हाथी का मुख। —*ಮೆಟ್ಟು* मेट्टु (क) सं.—हाथी का पद-चिह्न। —*ಮೊಗ* मोग (क) सं.—गणपति, गणेश। —*ಸೊಳ್ಳೆ* सोळ्ळे (क) सं.—बड़ा मच्छर (मै. प्र.)। *ಅನೆ* आने (क) सं.—*ಅನೆಕಲ್ಲು* आनेकल्लु—ओला।

ಅನೇಗುಲಿ आनेगुलि (क) सं.—हाथी को मारने-वाला। (मै. प्र.)। *ಅನೆಯ* आनेय (क) सं.—जाल। *ಅನೇಡು* आनेडु (सम्) वि.—समीपस्थ, निकट रहनेवाला। *ಅನೇಕ್ಷಿಕ* आन्वीक्षिकि (सम्) सं.—तर्क शास्त्र, न्याय दर्शन ; आत्मविद्या। *ಅಪ* आप, *ಅರ್ಪ* आर्प (क) वि.—समर्थ, शक्तिमान, संभव होनेवाला, सकनेवाला, गरजनेवाला। *ಅಪ* आप (सम्) सं.—जल, पानी ; धार्मिक उत्सव। —*ಗಾ* गा, *ಗೇ* गे (सम्) सं.—नदी, सरिता। *ಅಪಡೆ* आपडे (क) अ.—होने पर, संभव हो तो, सकने पर। *ಅಪಣ* आपण (सम्) सं.—दूकान, बाज़ार। —*ಇಕ* इक (सम्) सं.—दूकानदार, व्यापारी। *ಅಪದ್* आपद्, *ಅಪದ* आपद, *ಅಪದೆ* आपदे (*ಅಪಡು* आपटु, *ಅಪಡ್ತು* आपटु) (सम्) सं.—विपदा, विघ्न, संकट, दुःख, दर्द। *ಅಪತ್ತಿ* आपत्ति (सम्) सं.—प्राप्ति ; संकट, विघ्न, दुःख, दर्द। *ಅಪದ್ಧ* आपद्घत (सम्) वि.—विपदा में पड़ा या फँसा हुआ, संकटग्रस्त। *ಅಪದ್ಧರ್ಪ* आपद्घर्मे (सम्) सं.—साधारण समय में शास्त्रविरुद्ध होने पर भी संकट के समय किया जानेवाला आचरण या कार्य, प्रसंग के अनुसार रीति-नीति। *ಅಪನೇತು* आपनीतु (क) वि.—जितना संभव हो उतना, प्राप्ति या उपलब्धि के अनुसार। *ಅಪನ್ನ* आपन्न (सम्) वि.—प्राप्त, उपलब्ध, संकटग्रस्त। *ಅಪನ್ನತೆ* आपन्नतये (सम्) सं.—गर्भवती स्त्री। *ಅಪಸ್* आपस्, *ಅಪಃ* आपः (सम्) सं.—जल, पानी। *ಅಪಸ್ತಂಭ* आपस्तंभ (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम, कृष्ण यजुर्वेद के कर्त्ता।

ಅಪಾಟಿ आपाटि (क) सर्व.—उतना, उस परिमाण में। प्रायः आश्चर्यसूचित करने के लिए इसका प्रयोग होता। —*ಅಲ್ಲ ಅಪಾಟಿ ಬಾಳೆ ಹಣ್ಣು ಇವೆಯಾ !* अल्लि आपाटि बाळेहण्णु इदेया ! —क्या वहाँ उतने केले हैं ! *ಅಪಾತ* आपात (सम्) वि.—गिरना, पटकना ; आक्रमण ; अधःपतन ; संभावित। —*ತಃ* (सम्) अ.—प्रारंभ से अंत तक ; पूरा परीक्षा करके या ध्यान देकर देखना ; अकस्मात्, अचानक, अंत में। *ಅಪಾದ* आपाद (सम्) अ.—पैरों से लेकर। सं.—दुःख का कारण ; विपत्ति या संकट में फँसना। —*ಮಸ್ತಕ* मस्तक (सम्) अ.—पैरों से लेकर सिर तक। *ಅಪಾದನ* आपादन, *ಅಪಾದನೆ* आपादने (सम्) सं.—दोषारोपण ; प्राप्ति ; पहुँचना, लाना। *ಅಪಾದಿತ* आपादित (सम्) वि.—दोषी, अपराधी। *ಅಪಾನ* आपान (सम्) सं.—मद्यपों की मंडली ; कलारी की शराब की दूकान ; अधिक शराब पी जाना। *ಅಪಾರ* आपार (सम्) सं.—व्यस्तता। *ಅಪೀಡ* आपीड (सम्) सं.—सीसफूल, हार, माला ; दवाना, निचोड़ना ; तंग करना, घायल करना। *ಅಪೀನ* आपीन (सम्) सं.—थन। कृ.—हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा। *ಅಪು* आपु (क) सं.—हाथी को खाने के लिए दी जानेवाली घास (Elephant grass or *Typha Eliphantina*) बड़ी लंबी घास ; विरास या रुकने या ठहरने का स्थान, आधार, आश्रय ; आकार। *ಅಪುರ* आपूर (सम्) सं.—बहाव, धार ; पूर्णता, भरती (भरना)। *ಅಪೂರ್ಣ* आपूर्ण, *ಅಪೂರತ* आपूरित (सम्) वि.—भरा हुआ, पूर्ण। *ಅಪೋಶನ* आपोशन (सम्) सं.—*ಅಪೋಚನ* आपोचन (तद्) ; भोजन के प्रारंभ और अंत में पड़ा जानेवाला मंत्र विशेष, हथेली में

थोड़ा जल रखकर, भोजन के समय मंत्र पढ़कर पिया जानेवाला जल । — कच्छुपुदु हाकुवुदु (सम्) क्रि.— भोजन के लिए आये हुए अतिथि या अभ्यागत की हथेली में (भोजन करने के पूर्व) जल डालना (और तद्वारा भोजन करने की सूचना देना) ।

ॐ आस (सम्) वि.— प्राप्त, मिला हुआ ; घनिष्ठ, अंतरंग, सच्चा, गोप्य ; युक्तियुक्त, समझदार । — मित्र (सम्) सं.— अंतरंग मित्र, घनिष्ठ मित्र, दिली दोस्त ।

ॐ आसि (सम्) सं.— प्राप्ति, उपलब्धि ; मिलन, भेंट ; परिपूर्णता, समाप्ति ; योग्यता, सम्मान ।

ॐ आप्य (सम्) वि.— प्राप्य, मिलनेवाला, पाने योग्य ।

ॐ आप्यायन (सम्) सं.— संतुष्ट करने की क्रिया, पूर्ण करने की क्रिया ; संतुष्टि, तृप्ति, ऐश्वर्य, उन्नति ।

ॐ आप्लव, ॐ आप्लाव (सम्) सं.— स्नान, डुबकी ; पूर्णता । — व्रत (सम्) सं.— स्नातक ; वह गृहस्थ जिसने ब्रह्मचर्य आश्रम छोड़कर गृहस्थाश्रम स्वीकार किया हो ।

ॐ आपीमु (अ.दे.) सं.— दे.— ॐ आपीमु ।

ॐ आपंध, ॐ आपंधन (सम्) सं.— बंधन ; बांधने की रस्ती, बेल को बांधने का रस्ता ; गहना, शृंगार ।

ॐ आपरु (अ.दे.) सं.— ॐ आपरु, ॐ आप्रु, ॐ आपुरि, ॐ आप्रु, ॐ आपरु— दे. ॐ आप्रु ।

ॐ आपल् (क) सं.— लाल कुमुद ।

ॐ आपा (क) सं.— योग्यता, उत्साह, वीरता, साहस । — केडि, गेडि (क) सं.— अयोग्य मनुष्य ; अति साधारण व्यक्ति ।

ॐ आपास, ॐ आपासु (तद्) सं.— आभास (तद्) । तुच्छता, तिरस्कार, अशुद्धि (बोली की), कमी, दोष, खराबी ; हार, पराजय ।

ॐ आपाकारि (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपा. ॐ आपत्त (सम् ?) सं.— बहन का पति, बहनोई ।

ॐ आपाकारि (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपा. ॐ आपादि (सम्) सं.— श्राद्ध (मै.प्र.) । वि.— वार्षिक, सालाना ।

ॐ आपा (अ.दे.) सं.— दे. ॐ आपा. ॐ आपा (सम्) वि.— समान, तुल्य । सं.— प्रकाश, प्रतिबिम्ब ।

ॐ आपरण (सम्) सं.— गहना, आभूषण, शृंगार, जेवर ; पालन-पोषण की क्रिया । ॐ आपाव, ॐ आपावते (सम्) सं.— स्थिति, गति, रीति ।

ॐ आपावण (सम्) सं.— परस्पर कथोपकथन, बातचीत ; संबोधन ; चिल्लाना । ॐ आपास (सम्) सं.— चमक, दमक, झलक ; सिध्याज्ञान ; भावना, तात्पर्य, अभिप्राय ; सादृश्य, समानता ।

ॐ आपास्वर (सम्) सं.— चौंसठ देवगण का समूह ।

ॐ आपीर (सम्) सं.— अहीर, गोपालक । — पलि (तद्) सं.— अहीरों की बस्ती । ॐ आपीरि—अहीर स्त्री ।

ॐ आपील (सम्) सं.— भयंकर, भयावह, कठिन । — शील (सम्) सं.— भयंकर मनुष्य, उग्र प्रकृतिवाला मनुष्य ।

ॐ आपा, ॐ आपे (सम्) सं.— चमक, दमक, कांति, प्रकाश ; वर्ण, रंग, सौंदर्य ; प्रतिबिम्ब ; छाया, समानता ।

ॐ आपोग (सम्) सं.— भोगविलास, तृप्ति ; पूर्णता, विस्तार, चक्र, सीमा ; उद्योग, प्रयत्न ; झुकाना ; सांप का फैला हुआ फन । ॐ आपंतर (सम्) वि.— भीतरी, अंदर का, मध्यम ।

ॐ आपा, ॐ आपा (क) सर्व.— हम (ह.क.) ।

ॐ आपा (क) सं.— (कुम्हार का) भट्टा । ॐ आपा (सम्) सं.— रोग, बीमारी ; अजीर्ण ; भूसी ; पृथक् किया हुआ अनाज । — गंधि (सम्) सं.— कच्चे मांस की

या मुर्दे के जलने की गंध । — गंधि (सम्) सं.— कच्चे मांस की गंध ।

ॐ आपा (तद्) सं.— एरण्डः (तद्) ; अरंडि का पौधा ।

ॐ आपा (अ.दे.) सं.— आमद ; आमदनी ।

ॐ आपा (सम्) सं.— भूख ; खराबी, गदगी ।

ॐ आपा (सम्) सं.— दर्द, पीड़ा । ॐ आपा, ॐ आपा, ॐ आपा (सम्) सं.— बुलावा, दावत, भोज, न्योता, स्वागत ।

ॐ आपा (सम्) सं.— रोग, बीमारी ; एक संचारी भाव (नागवर्मा के 'काव्यावलोकन' के अनुसार) । — भेद (सम्) सं.— एक प्रकार की बीमारी । ॐ आपा (सम्) वि.— बीमार, रोगी ।

ॐ आपा (सम्) सं.— अमरकोश (प्रा.) । ॐ आपा (सम्) सं.— आमानिसार, पेचिश ।

ॐ आपा, ॐ आपा (सम्) सं.— मृत्यु तक, मरण पर्यंत ।

ॐ आपा, ॐ आपा (सम्) सं.— कुचलने, पीसने, रगड़ने या मसलने की क्रिया ।

ॐ आपा (सम्) सं.— क्रोध, अशांति ; मात्सर्य ।

ॐ आपा (सम्) सं.— आँवले का वृक्ष ; आँवला ।

ॐ आपा (सम्) सं.— दे. ॐ आपा. ॐ आपा (सम्) सं.— मंत्री, सचिव, अमात्य ; सेनापति ।

ॐ आपा (सम्) सं.— अपक्व स्थान, उदरस्थ एक प्रकार की थैली, पेट ।

ॐ आपा (सम्) सं.— मट्टा, छौंछ ; गरम दूध में मट्टा डालकर उसे जमाना ।

ॐ आपा (सम्) वि.— मिला हुआ, जुड़ा हुआ, संलग्न ।

अमिष आमिष (सम्) सं.— मींस; घूस, रिश्वत; इनाम; पुरस्कार; भोगविलास, प्रिय या मनोहर वस्तु; अमिलाषा, लालच; संभोग, कामेच्छा। अमिषाणि आमिषाणि (सम्) सं.— मींस खानेवाला।

अमिष आमिष (तद्) सं.— आमिष (तत्)।

अमिष आमिष (अ.दे.) सं.— अमीन।

अमिष आमिष (सम्) सं.— एक प्रकार का बड़ा खट्टा आम (मै.प्र.)।

अमिष आमिष (सम्) वि.— मुक्त, छूटा; शिथिल; धारण किया हुआ; फेंका हुआ।

अमिष आमिष (सम्) वि.— परलोक से संबंधित, परलोक का।

अमिष आमिष (सम्) सं.— सत्कुल प्रसूत संतान।

अमिष आमिष (सम्) अ.— मूल से, जड़ सहित, पूरा-पूरा। अमिषाग्र आमिषाग्र— आदि से अंत तक, शुरू से आखिर तक।

अमिष आमिष (क) सं.— कछुवा, कच्छप, कूर्म।

अमिष आमिष (सम्) सं.— मित्रता, स्नेह, हित।

अमिष आमिष (सम्) सं.— हर्ष, प्रसन्नता; सुगंधि। —अमिष इक्षु (सम्) क्रि.— प्रसन्न रह।

अमिष आमिष (सम्) सं.— कालक्रमानुसार सदाचार या परंपरा; वेद; सद्देशज।

अमिष आमिष (सम्) सं.— आम का वृक्ष, आम; आमल। —अमिष कूट (सम्) सं.— एक पर्वत। —अमिष वन (सम्) सं.— आम का बगीचा।

अमिष आमिष (सम्) सं.— द्विरुक्ति, दो बार कहना।

अमिष आमिष (सम्) सं.— इमली का पेड़, इमली। अमिष आमिष आमिषजनक (सम्) सं.— प्राणवायु, आक्सीजन।

अमिष आयु, अयं आयु (क) क्रि.— मिला, चुन, ढूँढ़, तलाश कर। अयं आयु (क) सं.— चुनाव, चयन।

अयं आयु (सम्) सं.— आमदनी, लाभ, उत्पत्ति, कमाई।

अयं आयु (क) सं.— मर्म, रहस्य; विवरण; परिमिति, नाप, माप; उपयुक्तता; तैयारी; आकार, स्वरूप; विस्तार; एकांत; सामर्थ्य; ठीक; वस्तु; ब्रह्मा। (सम्) सं.— कर, लगान; लाभ, उत्पत्ति, आय। —अयं कटु (क) सं.— उचित, उपयुक्त या ठीक स्थान, उपयुक्तता; बुनियाद, नींव; कुछ निश्चित रकम। —अयं कटुगार (क) सं.— ठीक प्रकार से काम करनेवाला व्यक्ति। —अयं गार (क) सं.— बुद्धिमान या कुशल मनुष्य। —अयं गारि, अयं गार्ति (क) सं.— बुद्धिमान या कुशल स्त्री।

अयं आयु (सम्) वि.— परिश्रमी, अध्यवसायी। सं.— अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए जोरदार उपायों से काम लेनेवाला मनुष्य।

अयं आयु (सम्) वि.— विस्तृत, लंबा; बड़ा; मुड़ा हुआ, रुढ़, घुमा हुआ; आकर्षित, सुंदर; योग्य, उपयुक्त। सं.— इष्ट लिंग-दीक्षा (वीरशैव-संप्रदाय के अनुसार)।

अयं आयु (सम्) सं.— स्थान, घर, आश्रय; विश्राम स्थल, ठहराव; यज्ञशाला; मंदिर।

अयं आयु (सम्) सं.— विशाल नेत्रवाला पुरुष। —अयं इ (सम्) सं.— विशाल नयना स्त्री।

अयं आयु (सम्) सं.— विशाल नेत्रवाली स्त्री।

अयं आयु (सम्) सं.— लंबाई, विस्तार; प्रताप, महिमा, गौरव; उन्नति, वृद्धि; भविष्य, भविष्यत् काल; योग्य साधन विशेष, कर्म।

अयं आयु (सम्) सं.— श्रेष्ठता, महिमा, वैभव, संपन्नता।

अयं आयु (सम्) वि.— प्राप्त, सिद्ध, आश्रित, अधीन, वश में आया हुआ। (क) सं.— तैयारी।

अयं आयु (सम्) सं.— सामर्थ्य, सीमा, मर्यादा।

अयं आयु (सम्) सं.— आयास (तत्); थकावट, श्रान्ति; तकलीफ।

अयं आयु (सम्) वि.— लोहे का, इस्पात का, धातु का।

अयं आयु (सम्) सं.— आगमन; विघ्न, कष्ट।

अयं आयु (सम्) सं.— लंबाई, विस्तार, फैलाव।

अयं आयु (सम्) सं.— थकावट, श्रान्ति, कष्ट।

अयं आयु, अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर। अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

अयं आयु (क) क्रि.— चुन, एक-एक करके (अपेक्षित वस्तु को) ले, ठीक कर।

७०० अराम (सम्) सं.— विश्राम, हर्ष; प्रसन्नता; वाग, बगीचा, फुलवारी; विश्राम स्थान।

७०० अरालिक (सम्) सं.— पाचक, रसोदया।

७०० अरिद्र (सम्) सं.— छठवाँ नक्षत्र, नक्षत्रविशेष; एक बरसाती कीड़ा; इन्द्रगोप, बीरबहूदी।

७०० अरिय (तद्) सं.— आर्य (तत्); योग्य पुरुष।

७०० अरिवाल = ७०० अरिवाल (क) सं.— कवृत्तर (भै. प्र.)।

७०० अरिस् (क) क्रि.— चुन, ढूँढ, तलाश कर, बाहर निकाल; शांत कर, बुझा; सुखा, शुष्क कर; नृस कर।

७०० अरु (क) क्रि.— सूख जा, बुझ, शांत हो; ऊँची आवाज़ से पुकार, चिल्ला; सक, समर्थ हो। वि.—अधिकता, पूर्णता। (संख्या) परिमाण वाचक विशेषणों के अंत में ७०० लगाकर इस अर्थ का बोध कराया जाता है। उदा.— ७०० नूरु-सैकड़ों, ७०० साविरारु-हज़ारों। सर्व.— कौन (व. व.) दे. ७००.

७०० अरु (क) सं.— नदी। सं.— सुअर, केकड़ा, कर्कट। (क) वि.—छः की संख्या। ७०० अरुणि (सम्) सं.— एक मुनि का नाम।

७०० अरुड (सम्) वि.— सवार, चढ़ा हुआ, बैठा हुआ। सं.— मुक्ति, परम पद।

७०० अरु (क) सं.— वृक्ष विशेष, अग्निज्वाला या आँवले का पेड़। अ.— पूर्ण, भर का अर्थसूचक अव्यय जो शब्द के अंत में होता है। उदा.— ७०० (७०० + ७०) ७०० कणारे नोडु — आँखें भर (कर) देख। ७०० मनसार माहु — पूर्ण मन से कर। दे. ७००.

७०० अरु (सम्) सं.— मोची की रॉपी, चाक।

७०० अरुकर (क) सं.— पालक, रक्षक, पोषक।

७०० अरुदे (क) सं.— बरपोक, भीरु।

७०० अरुके (क) सं.— दे. ७०० अरुके.

७०० अरु (क) क्रि. = ७०० अरु — ढूँढ, तलाश लर, अन्वेषण कर, सोच, विचार कर।

७०० अरुगिसु, ७०० अरुगिसु (क) क्रि.—भोजन कर, खाना खा, खा।

७०० अरुगण, ७०० अरुगण (क) सं.— भोजन, खाना।

७०० अरुग्य (सम्) सं.— स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती; कुशल, क्षेम।

७०० अरुप, ७०० अरुपण, ७०० अरुपणे (सम्) सं.— स्थापन, लगाना, मढ़ना; शिकायत, दोषारोपण; रोपना, बैठाना; धनुष पर रोदा चढ़ाना।

७०० अरुपि (सम्) सं.— वह, जिसपर दोष लगाया गया हो। — ७०० सु (सम्) क्रि.— दोषारोपण कर, शिकायत कर, निंदा कर; धनुष पर डोरी चढ़ा।

७०० अरुह, ७०० अरुहण (सम्) सं.— सवार होने या ऊपर चढ़ने की क्रिया; चढ़ने का साधन, निसेनी, सीढ़ी; संगीत के सप्त-स्वरों का चढ़ाव; स्त्री की कमर।

७०० अरुहिसु (सम्) क्रि.— सवारी कर, चढ़, ऊपर चढ़।

७०० अरुहक (सम्) सं.— चढ़नेवाला, सवारी करनेवाला।

७०० अरुट, ७०० अरुट (क) सं.— बीमार व्यक्ति की व्याकुलता या चिंता।

७०० अरुके (क) अ.— [७०० अरुके] उत्पन्न होने, सूखने या अधिक होने की स्थिति। उदा.— ७०० अरुके — प्यास (प्यास के कारण मुँह का सूख जाना)।

७०० अरिसु (क) क्रि.— दे. ७००.

७०० अरिसु (क) क्रि.— डाल, लगा; उड़ा। उदा.— ७०० गुंडारिसु — गोली उड़ा।

७०० अरु (क) क्रि.— निकल, बाहर आ, बुझ, नष्ट हो; ठंडा हो, शांत हो, चुप हो; सूख जा, दूर हो। सं.— शक्ति; सामर्थ्य; साहस, श्रुति; दृढ़ता, दृढ, विरोध. वैर।

७०० अरु (क) वि.— छः की संख्या। क्रि.— उड़ (ग्रा.)।

७०० अरुकि (सम्) सं.— अर्क का पुत्र — शनिग्रह; यम; राजा कर्ण; सुग्रीव; वैवस्वत मनु। ('शनिग्रह' ही प्रचलित अर्थ है।)

७०० अरुकि (क) सं.— ७०० अरुकि — चिल्लाना, चिल्लाहट। ७०० अरु (क) क्रि.— पुकार, चिल्ला, ज़ोर से रो। ७०० अरुसु (क) क्रि.— उच्च ध्वनि करा, रला (प्रे.)।

७०० अरुजित (सम्) वि.— दे. ७००.

७०० अरुसु (सम्) क्रि.— दे. ७००.

७०० अरुण (सम्) सं.— दे. ७००.

७०० अरुति (सम्) वि.— अस्वस्थ, पीड़ित, दुःखित। — ७०० स्वर (सम्) सं.— दुःख या दर्द का स्वर या ध्वनि। ७०० अरुति (सम्) सं.— दुःख, पीड़ा।

७०० अरुति (सम्) सं.— दुःख, पीड़ा, दर्द, क्लेश; मानसिक चिंता; बीमारी, रोग।

७०० अरुति (तद्) सं.— आरति: (तत्); आरती।

७०० अरुतु (क) अ.— पराक्रम से, सामर्थ्य से, सामने।

७०० अरुज्य (सम्) सं.— ऋत्विज का पद।

७०० अरुसु (क) क्रि.— डरा, धमका; गर्जन कर।

७०० अरु (क) क.— डूबकर; झाड़कर; गर्जन करके।

७०० अरु (सम्) वि.— नम, तर, भीगा हुआ, गीला; हरा, रसीला; ताज़ा, नया; कोसल, नरम।

७०० अरुद्रक (सम्) सं.— अदरक, हरी सोंठ।

७०० अरुद्रा (सम्) सं.— छठवाँ नक्षत्र।

७०० अरु (क) सं.— सामर्थ्य, शक्ति, बल, साहस।

७०० अरुपि, ७०० अरुपु (क) क्रि.— बलहीन हो, तेजोहीन हो।

७७ आले (क) सं.— वटवृक्ष ; ओला ; कान
का निचला भाग ; ईख का रस निकालने
का यंत्र, कोल्हू । — ७८ मने (क) सं.—
गुड़ बनाने का घर या स्थान ।

ॐ आहुति (तद्) सं.—आहुति (तत्) ; दे. ७५३.

ॐ आहुति (क) सर्व.—कौन, कौन-सा (न. लिं.) ।

ॐ आवृत (सम्) वि.—घिरा हुआ, घूमा हुआ, चकरा खाया हुआ, झुका हुआ ।

ॐ आवृत्ति (सम्) सं.—प्रत्यावर्तन, परिक्रमा, चक्र ।

ॐ आवृष्टि (सम्) सं.—वर्षा, (सम्) फुहार, बरसात ।

ॐ आवे (क) सं.—कच्छप, कछुवा ।

ॐ आवेग (सम्) सं.—वेचैनी, चिंता, व्यग्रता, उद्वेग, गड़बड़ी ।

ॐ आवेश (सम्) सं.—व्याप्ति, संचार, प्रवेश ; अनुरक्ति ; गर्व, अहंकार ; चित्त-चांचल्य, उत्तेजना ।

ॐ आवेशन (सम्) सं.—व्याप्ति, संचार, प्रवेश ; चित्तचांचल्य, उत्तेजना ।

ॐ आवेशिक (सम्) सं.—अतिथि, अभ्यागत । —ॐ आवेशिकि (स्त्री. लिं.) ।

ॐ आवेष (सम्) सं.—प्रवेश, अतिथि या अभ्यागत बनकर जाना ।

ॐ आवेष्टन (सम्) सं.—ओढ़नी, पर्दा ; बैठन, बंधन ; ढक्कन ; घेरा ।

ॐ आवोलिसु (क) क्रि.—जंभाई ले ।

ॐ आवोडु (क) क्रि.—झुक ; खींच ।

ॐ आव्यान (सम्) वि.—ढका हुआ, बंद ।

ॐ आशंसन (सम्) सं.—प्रतीक्षा, अभिलाषा, कथन, घोषणा ।

ॐ आशंस (सम्) सं.—अभिलाषा, आशा, कथन, घोषणा ।

ॐ आशंके (सम्) सं.—अभिप्राय, मत, आधार ; समूह ; संपत्ति, समृद्धि ; इच्छा, अभिलाषा ; शयन, शय्या ; कटहल का पेड़ ; आराम का स्थल ; उद्देश्य ; जल, पानी ; भाग्य ; कंजूस ; पेट, आमाशय ; मन, हृदय ।

ॐ आशा, ॐ आशे (सम्) सं.—इच्छा, अभिलाषा ; तीव्रेच्छा ; दिशा । —ॐ आश (सम्) सं.—आशा (रूपी) रस्सी, लालच का फंदा । —ॐ पिशाचे (सम्) सं.—आशा राक्षसी, अत्यधिक लालच । —ॐ भंग (सम्) सं.—आशा का टूटना, निराशा, नाखुशी । ॐ आशांबर (सम्) सं.—दिगंबर, शिवजी । ॐ आशासन (सम्) सं.—शुभाकांक्षा, मंगल-कामना, शुभाशीर्वाद ।

ॐ आशित (सम्) वि.—खाया हुआ, खाने को दिया हुआ ; अघाया हुआ, संतुष्ट । ॐ आशी (सम्) सं.—सर्प का विषदंत, विष, जहर । ॐ आशीर्वचन, ॐ आशीर्वाद (सम्) सं.—आशिष, दुआ । ॐ आशीविष (सम्) सं.—सांप, सर्प । ॐ आशु (सम्) अ.—जल्दी, शीघ्र, तुरंत, फौरन । सं.—धान विशेष । —ॐ कवि सं.—शीघ्र कविता करनेवाला, अपनी इच्छा मात्र से तुरंत कविता करनेवाला । ॐ आशुग, ॐ आशुगति (सम्) वि.—शीघ्रगामी, जल्दी जानेवाला, तेज चलनेवाला । सं.—हवा, पवन ; बाण, तीर ; सूर्य । ॐ आशुतोष (सम्) वि.—शीघ्र ही संतुष्ट होनेवाला । सं.—शिवजी की एक उपाधि । ॐ आशुक्षणि (सम्) सं.—आग, हवा । ॐ आशौच (सम्) सं.—अपवित्रता, अशुद्धि, जन्म या मरण का सूतक । ॐ आश्चर्य (सम्) वि.—विस्मय, अचरज । ॐ आशम (सम्) वि.—पथर का बना हुआ, पथरीला । ॐ आश्रम (सम्) सं.—साधु संतों के रहने का स्थान, कुटि, पर्णशाला, गुफा ; ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास—

ये चार अवस्थाएँ ; विद्यालय, पाठशाला ; वन, उपवन ।

ॐ आश्रय (सम्) सं.—आधार, सहारा, आसरा ; विश्रामस्थल, शरण, भरोसा । —ॐ इसु (सम्) क्रि.—आधार या सहारा पा, शरण में जा ।

ॐ आश्रयाश, ॐ आश्रयाशन (सम्) वि.—समीप आये हुए को खाने-वाला । सं.—आग ।

ॐ आश्रयि (सम्) वि.—आश्रित, शरण में आया हुआ, संबंध युक्त ।

ॐ आश्रव (सम्) सं.—सरिता, नदी, सोता ; प्रतिज्ञा, वादा ; नम्रता ; दोष, अपराध ।

ॐ आश्रित (सम्) वि.—शरणागत, सहायता के लिए आया हुआ, अवलंबित । सं.—नौकर, चाकर, अनुयायी । —ॐ राज्य (सम्) सं.—दूसरे के अधीन में रहनेवाला राज्य, छोटे-छोटे राज्य ।

ॐ आश्रुत (सम्) वि.—सुना हुआ ; प्रतिश्रुत ; स्वीकृत ।

ॐ आश्लेष (सम्) सं.—आलिंगन, चिपटना, घनिष्ठ संबंध ; नक्षत्र विशेष, नौवाँ नक्षत्र ।

ॐ आश्व (सम्) वि.—घोड़े से संबंधित ।

ॐ आश्वयुज (सम्) सं.—आश्विन मास, क्वार का महीना ।

ॐ आश्वलायन (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।

ॐ आश्वस (सम्) सं.—स्वतंत्र रूप से साँस लेना ; साँत्वना, प्रसन्नता ; किसी पुस्तक का अध्याय या काण्ड ।

ॐ आश्वसन (सम्) सं.—दिलासा, तसल्ली, आशाप्रदान ।

ॐ आश्वसिसु (सम्) सं.—साँस ले ; साँत्वना दे ।

ॐ आश्विन (सम्) सं.—आश्वयुज, क्वार का महीना । वि.—घोड़े पर सवार होकर यात्रा करनेवाला ।

७३, १००० आश्विन (सम्) सं.— आश्विनी कुमार ; नकुल-सहदेव ।

७३, १००० आश्विन (सम्) सं.— घोड़े के लिए एक दिन की यात्रा ।

७३, १००० आषाढ (सम्) सं.— वर्षा ऋतु का प्रारंभिक मास, आषाढ ; पलाश का दंड ।

७३, १००० आषाढभूति (सम्) सं.— एक व्यक्ति का नाम ; अविश्वासपात्र, ठग, धोखे-बाज़ ।

७३, १००० आश्व (क) वि.बो.— क्रोध, दुःख आदि का सूचक ; हा ! हा !, हाय ! हाय ! आदि ।

७३, १००० आश (सम्) सं.— फेंकना, ढालना ; कमान, धनुष ।

७३, १००० आसक्त (सम्) वि.— अनुरक्त, लीन, लुब्ध, मुग्ध ।

७३, १००० आसक्ति, ७३, १००० आसक्तते (सम्) सं.— अनुरक्ति, लिप्तता, लीनता ; प्रेम, चाह ।

७३, १००० आसंग (सम्) सं.— अनुराग, स्नेह ; संगति ; बंधन ।

७३, १००० आसह (तद्) सं.— आषाढ (सम्) सं.— आषाढ (तद्) ।

७३, १००० आसत्तु (क) कृ.— श्रम करके, परिश्रम करके, प्रयास करके ।

७३, १००० आसन (सम्) सं.— बैठना, बैठने की रीति विशेष ; बैठक, बैठकी, साधारणतया कोई भी बैठने की वस्तु ; हाथी पर महावत के बैठने का स्थान ।

७३, १००० आसनाङ्कुर (सम्) सं.— बवासीर ।

७३, १००० आसनोपकरण (सम्) सं.— बैठने के उपकरण, जैसे कुरसी, तिपाई आदि ।

७३, १००० आसंद (सम्) सं.— विष्णु ।

७३, १००० आसंदि (सम्) सं.— कोच, वेत्तासन ।

७३, १००० आसन्न (सम्) वि.— समीपस्थ ; निकट का, प्राप्त, उपस्थित ।

७३, १००० आसर्, ७३, १००० आसरु (७३, १००० आसर्, ७३, १००० आसरु) (क) क्रि.— थक जा, श्रान्त हो । सं.— थकावट, श्रान्ति, आयास ।

७३, १००० आसर, ७३, १००० आसरु, ७३, १००० आसरे, ७३, १००० आसरिके (क) सं.— आधार, सहारा, आश्रय ; अवकाश ।

७३, १००० आसर्, ७३, १००० आसरु, ७३, १००० आसरु, ७३, १००० आसरिके (क) सं.— थकावट, श्रान्ति, निरुत्साह, शिथिलता ।

७३, १००० आसर्गळे (क) क्रि.— थकावट दूर कर, आराम कर ।

७३, १००० आसव (सम्) सं.— शराव, मद्य ।

७३, १००० आसवास्तकते (सम्) सं.— मद्य या शराव पी जाने की क्रिया ; शराव पीने का स्थान । ७३, १००० आसवासक्ति (क) सं.— वही ।

७३, १००० आसाडि (तद्) सं.— आषाढ (तद्) ।

७३, १००० आसाद, ७३, १००० आसादन (सम्) सं.— नीचे रखना, नीचे उतारना, आक्रमण, उपलब्धि, प्राप्ति ।

७३, १००० आसादित (सम्) वि.— पास बैठा हुआ, प्राप्त, उपलब्ध ।

७३, १००० आसार (सम्) सं.— मूसलधार वर्षा ; आक्रमण, चढ़ाई ; शत्रु राजा की सेना ; भोज्यपदार्थ, रसद ।

७३, १००० आसारक (सम्) सं.— मूसलधार वर्षा ।

७३, १००० आसारमहालु (अ.दे. ?) सं.— बड़ा हॉल (Hall), बड़ा कमरा ।

७३, १००० आसिगे (क) सं.— शय्या, विस्तर (ग्रा.) ।

७३, १००० आसीन (सम्) वि.— बैठा हुआ, उपविष्ट ।

७३, १००० आसु (क) क्रि.— ऊपर से गिरा, ढाल, लगा, फैला । सं.— सालवृक्ष ; ताना (जुलाहे का) । व.— उतना, उस परिमाण में ।

७३, १००० आसुकरं (सम्) अ.— अधिक, अतिशय । सं.— भयंकर स्थिति ।

७३, १००० आसुति, ७३, १००० आसुती (सम्) सं.— सोमरस को निकालना ।

७३, १००० आसुर (क) सं.— अधिकता, वृद्धि, अपरिमिति ; श्रेष्ठता ; हठ, जिद्द ; आवेश, उद्वेग ; बल, शक्ति ; कष्ट, पीड़ा ।

७३, १००० आसुर (सम्) वि.— असुरों का. असुर संबंधी, राक्षसी । सं.— एक विवाह पद्धति (मै.प्र.) ।

७३, १००० आसे (तद्) सं.— आशा (तद्) ; इच्छा, अभिलाषा ; दिशा । — गार (तद्) सं.— लालची पुरुष । — गारि, गारि गारि (तद्) सं.— लालची स्त्री । — तारे (तद्) क्रि.— इच्छा या कामना का त्याग कर ।

७३, १००० आसेचन (सम्) सं.— उड़ेलना, ढालना, तर करना ।

७३, १००० आसेदन (सम्) सं.— कार्य में लगना ; व्यापार ; स्त्री-संभोग ।

७३, १००० आस्कंदन (सम्) सं.— युद्ध, लड़ाई, समर ।

७३, १००० आस्तर, ७३, १००० आस्तरण (सम्) सं.— फैलाव, विस्तार ; विछौना, चादर ; शय्या, विस्तर ।

७३, १००० आस्ति (तद्) सं.— अस्ति (तद्) ; विद्यमानता ; ऐश्वर्य, संपत्ति ।

७३, १००० आस्तिक (सम्) सं.— ईश्वर और धर्म पर विश्वास रखनेवाला ।

७३, १००० आस्तिक्य (सम्) सं.— ईश्वर और परलोक में विश्वास, विश्वास, श्रद्धा ।

७३, १००० आस्तिमित (सम्) वि.— कोमल ; नरम ; सुंदर, स्थिर ; प्रसन्न ।

७३, १००० आस्तीक (सम्) सं.— एक प्राचीन ऋषि जो जरत्कारु के पुत्र थे । इन्हीं के प्रयत्न से जनमेजय का सर्प-यज्ञ बंद हुआ था ।

७३, १००० आस्था, ७३, १००० आस्थे (सम्) सं.— श्रद्धा, पूज्यभाव ; प्रबल अभिलाषा, आशा, भरोसा ; सभा, समारोह ; उद्योग, प्रयत्न ।

७३, १००० आस्थान (सम्) सं.— स्थान, जगह, समारोह ; राजसभा, दरबार । — कवि (सम्) सं.— दरबारी कवि ।

७३, १००० आस्थानिक (सम्) सं.— राजसभा या दरबार का सदस्य ।

७३, १००० आस्थायिका, ७३, १००० आस्थायिके (सम्) सं.— राजसभा, दरबार ।

५० अस्थित (सम्) वि.—निवास किया हुआ, ठहरा हुआ, स्थिर, संलग्न, गिरा हुआ।
 ५० अस्पत्रि, ५० अस्पत्रे (अ.दे.) सं.—(अंग्रेजी शब्द Hospital से), अस्पताल।

५० अस्पद (सम्) सं.—स्थान, जगह; बैठक, कमरा, आवास स्थान; पद, गौरव, मर्यादा; प्रताप, अधिकार; सामंजस्य; सहारा, आश्रय; बुनियाद, नींव (मै.प्र.)।

५० अस्फालन (सम्) सं.—अस्फुट अस्फुटिके (तद्)—आवाज करना, ताली बजाना, रगड़ना, मलना, पछाड़ना।

५० अस्फुरण (सम्) सं.—आगे बढ़ना, उछलना, प्रकाशमान।

५० अस्फोट, ५० अस्फोटन (सम्) सं.—फटफटाना; थर थर काँपना; फूँकना; फुलाना; ताल ठोकना, आवाज करना, हाथ और जाँघ ठोककर आवाज करना जैसे कुश्ती लड़नेवाले करते हैं; तोप, बंदूक आदि से दागने की आवाज।

५० अस्य (सम्) सं.—मुँह, मुख, चेहरा।
 —अस्य पत्र (सम्) सं.—कमल।
 —अस्य लांगल (सम्) सं.—शुकर, सुअर।
 —अस्य लोम (सम्) सं.—दाढ़ी।

५० आस्ये (सम्) सं.—बैठना, आश्रय पाना; आसन, सिंहासन, गद्दी।

५० आस्येयु (सम्) सं.—चंद्र (के समान) मुख।

५० आस्त्रव (सम्) सं.—पीड़ा, दर्द; बहाव, दौड़।

५० आस्वाद, ५० आस्वादन (सम्) सं.—रुचि, रस, सुखाद; चखा लेना।

५० आह (क) वि.बो.—धिक्! धिक्!, तोबा।

५० आह, ५० आहा (क) वि.बो.—ऐ!, अहा!

५० आहक (सम्) सं.—नाक की एक बीमारी।

५० आहत (सम्) वि.—पिटा हुआ, चोट खाया हुआ, मारा हुआ, घायल, चोटिल।

५० आहति (सम्) सं.—आघात, प्रहार, चोट।

५० आहर (सम्) सं.—ग्रहण, पकड़; परिपूर्णता, बलिदान।

५० आहरण (सम्) सं.—ग्रहण, पकड़; छीनना, हरण, चोरी, लूट।

५० आहरिसु (सम्) क्रि.—छीनकर ले, चोरी कर, अपहरण कर।

५० आहव (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई; ललकार, चुनौती; यज्ञ, याग, होम, हवन।

५० आहवनीय (सम्) वि.—हवन करने योग्य। सं.—हवन की अग्नि।

५० आहवि (सम्) सं.—योद्धा, सैनिक, सिपाही।

५० आहार (सम्) सं.—खाद्य पदार्थ, अन्न, भोजन; लाना, समीप लाना, हरण।

५० आहाव (सम्) सं.—पशुओं को जल पिलाने के लिए कुएँ के पास बनाया हुआ गड्ढा या हौद।

५० आहिक (सम्) वि.—दैनिक। सं.—पाणिनि का नाम।

५० आहित (सम्) वि.—रखा हुआ, जमा किया हुआ, स्थापित; शत्रु से संबंधित।

५० आहितिक (सम्) सं.—संपेरा।

५० आहु (सम्) क्रि.—बुला, चिन्हा। सं.—चावल, धान; सूक्ष्मता, परमाणु।

५० आहुत (सम्) वि.—बलिदान किया हुआ।

५० आहुति (सम्) सं.—होम, हवन, किसी देवता के उद्देश्य से मंत्र पढ़कर अग्नि में साकल्य का डालना।

५० आहूति (सम्) सं.—बुलावा, आह्वान, आमंत्रण।

५० आहत (सम्) वि.—लाया हुआ, दिया हुआ।

५० आह्य (सम्) सं.—सांप, सांप का विष।

५० आहो (क) वि.बो.—अहा! (आश्चर्य सूचक)।

५० आहो (सम्) अ.—संदेह; विकल्प और संदेह सूचक वि.बो. शब्द।

५० आहिक (सम्) वि.—दैनिक, नित्य का, रोज का। सं.—संध्यावंदन, जप; दैनिक भोजन।

५० आह्लाद (सम्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता, आनंद। —हर्षकर (सम्) वि.—हर्षदायक, आनंद देनेवाला। —हर्षकारि (सम्) वि.—आनंददायक।

५० आह्वय (सम्) सं.—नाम, संज्ञा; पुकार।

५० आह्वान (सम्) सं.—निमंत्रण, बुलावा, आमंत्रण। —ह्वइसु (सम्) क्रि.—बुला, निमंत्रण दे।

५० आळ, ५० आळु (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर; उपलब्ध कर; शासन कर, अधिकार कर, हुकूमत कर; रक्षा कर, बचा; डूब; पकड़, वश में कर, देखरेख कर। सं.—सेवक, नौकर, चाकर; दूत; योद्धा, सिपाही।

५० आळ (क) सं.—गहराई, गंभीरता; गड्ढा; दैन्य।

५० आळति (क) सं.—गाना, गायन।

५० आळवाल (तद्) सं.—आलवाल। दे. अलवाल।

५० आळ (क) अ.—अधिक; व्यर्थ; अगाध।

५० आळबर (तद्) सं.—आडंबर (तद्)।

५० आळबु, ५० आळबे (क) सं.—कुक्कुरमुत्ता।

५० आळपिसु (क) क्रि.—सामना कर, निंदा कर।

५० आळवाडु (क) क्रि.—दूषण कर, निंदा कर।

५० आळाप (तद्) सं.—आलाप (तद्); संभाषण; दुःख।

५० आळि, ५० आळ, ५० आळु (क) सं.—किले के चारों ओर की दीवार; युक्ति,

चमत्कार; कपट; अपमान, तिरस्कार;
रुक्ष; कठोर।

७१ आळि (क) प्र. — 'वाला' अर्थबोधक
प्रत्यय। उदा. — ७१००१ ओदाळि-हमेशा
पढ़नेवाला, ७१००२ माताळि-अधिक बोलने-
वाला (वाचाल)।

७१ आळि (सम्.) सं. — दे. ७१.

७१००० आळिकार (क) सं. — सत्कुलज,
अभिजात कुल में उत्पन्न व्यक्ति।

७१००१ आळिके, ७१००२ आळिके, ७१००३ आळिके
(क) सं. — शासन, प्रभुत्व, अधिकार,
शासनाधिकार।

७१००४ आळिगोळ (क) क्रि. — वश में कर,
अधिकार में ले; सामना कर।

७१००५ आळिदकि (क) सं. — गिलहरी।

७१००६ आळिदाळि (क) सं. — शोर गुल,
गडबडी, हल्ला।

७१००७ आळिनेरिके (क) सं. — बच्चों का
एक खेल।

७१००८ आळिपोगु (क) क्रि. — डूब जा,
निमजित हो जा।

७१००९ आळिसु (क) क्रि. — प्राप्त कर; अधिकार
करा, शासन करा (प्रे.)।

७१०१० आळु (क) क्रि. — राज्य कर, शासन कर;
प्रबंध या व्यवस्था कर; डूब; डुबा; प्राप्त
करा। सं. — सेवक, दूत, सिपाही। ७१०११
माळुवुदु माळु आळु माळुवुदु हाळु-सेवक
का किया (कार्य) खराब (होता है) (कह.);
किले के चारों ओर की दीवार।

७१०१२ आळुतन, ७१०१३ आळुतन (क) सं. —
दे. ७१६.

७१०१४ आळुमट (क) सं. — एक मनुष्य
की ऊँचाई।

७१०१५ आळुवेरि, ७१०१६ आळुवेरि (क)
सं. — किले के चारों ओर की दीवार।

७१०१७ आळुके (क) सं. — दे. ७१६.

७१०१८ आळु, ७१०१९ आळुम (क) सं. — शासक,
अधिकारी, प्रभु, स्वामी।

७१०२० आळुबले (क) सं. — मनुष्य की
शक्ति।

७१०२१ आळुवेस (क) सं. — नौकरी, सेवावृत्ति,
स्वयं-सेवा।

७१०२२ आळुवेलि (क) सं. — बाड़, ऊँची बाड़
(जो मनुष्य की ऊँचाई तक हो)।

७१०२३ आळाक्कु (क) सं. — एक सेर का
१/८ भाग।

७१०२४ आळि (क) सं. — माप-तोल की गहराई
या गंभीरता। — ७१०२५ कोडु, ७१०२६ गोडु
(क) क्रि. — धोखा दे, चकमा दे।

७१०२७ आळि (क) सं. — गोलाई, घुत्त, मंडल,
चंद्राकार; शोर-गुल, हलचल, कोलाहल।

७१०२८ आळुदु (क) क्रि. — जल या तरल पदार्थ
में मज्जित होना या डूबना।

७१०२९ आळुवर् (क ?) सं. — ['आळुवार्' —
तमिल] — बारह प्रसिद्ध आळुवार् या वैष्णव
भक्त।

अ इ

अ इ — कन्नड-वर्णमाला का तृतीय अक्षर।
प्र. — खी.लिं. बोधक; जैसे— ७१०३० हुडुग
(लड़का) — ७१०३१ हुडुगि (लड़की); ७१०३२
तिरुक् (भिखारी) — ७१०३३ तिरुकि (भिखारिन)।
संस्कृत तद्धित प्रत्यय; उदा. — ७१०३४ धन
(धन) — ७१०३५ धनि (धनवान्), ७१०३६ गुण
(गुण) — ७१०३७ गुणि (गुणवान्), ७१०३८ रूप
(रूप) — ७१०३९ रूपि (रूपवान्)। कृ —
पूर्वकालिक कृदंत; जैसे— ७१०४० आडि ('आडु'
से) — खेलकर, माडि माडि ('माडु' से)
— करके; अधिकरण कारक का चिह्न 'में';
जैसे— ७१०४१ बनदि — धन में (ह.क.), ७१०४२
यल्ल मनेयलि — घर में; खी.लिं. तद्
शब्दों के अंत में अ इ का प्रयोग होता है,
जैसे— ७१०४३ लक्षिम (लक्ष्मी के बदले),
७१०४४ सरस्वति (सरस्वती के बदले)।

अ० इ — करण (या अपादान) कारक का चिह्न;
उदा. — ७१०४५ कणिण (या ७१०४६ कणिणि)
— आँखों से, ७१०४७ अवरिं — उनसे;
७१०४८ अत्तणि — उस तरफ से (ह.क.)।

अ० इ, अळ इड्, (क) वि. = (अळ
इन्, अळ इन्, अळ इम्; अळ ईड्,
अळ ईन्, अळ इम्) — मीठा, अच्छा,
सुंदर, मनोहर। ७१०४९ इंकडल (या
अ० ग० इंकडल) — दूध का समुद्र
(दुग्धाब्धि)। ७१०५० इंगडलकुवरि
— दुग्धाब्धि की पुत्री (लक्ष्मी)। ७१०५१
इंकदिर — सुंदर किरणवाले, चंद्रमा। ७१०५२
इंकोरल् (या अ० ग० इंकोरल्) —
सुंदर (या मनोहर) स्वर (या ध्वनि)।

अ० ग० इंकार् (अ.दे.) सं. — इनकार (हि.);
अस्वीकृति, अवहेलना।

अ० ईं ईंके (क) सं. — जल या तरल पदार्थ में
भिगोने या मज्जित करने की क्रिया; सुखाने
की क्रिया।

अ० उं इंक (क) वि. — छोटा; कुछ, थोड़ा;
बंधा।

अ० ग० इंग (क) सं. — चिह्न, निशान, इशारा;
गति, चाल।

अ० ग० इंगड (क) सं. — पृथकता, भिन्नता,
एकांतता। ७१०५३ इंगडिगड — पृथक्-
पृथक्, भिन्न-भिन्न। ७१०५४ इंगडिसु (क)
क्रि. — पृथक् कर, अलग-अलग कर, विभाग
कर।

अ० ग० ईं ईंगलिक, अ० ग० ईं ईंगलीक, अ० ग०
ईं ईंगलीक (क) सं. — शुद्ध लाल रंग;
एक प्रकार का नीला औषध।

अ० ग० ईं ईंगल, अ० ग० ईं ईंगाल (तद्) सं. —
अंगार (तत्); अंगार, आग। — ७१०५५
कण्ण, ७१०५६ गण्ण (क) सं. — शिव। —
७१०५७ कोळ, ७१०५८ गोळ (क) क्रि. —
आग का जलना। — ७१०५९ मग (क) सं. —
कार्तिकेय। (तद्) सं. — इंगुदः (तत्);
इंगुदी, हिंगोट का वृक्ष, मालकैंगनी।

अ० ग० ईं ईंगलीक (क) सं. — दे. अ० ग० ईं.

अ० ग० ईं ईंगलेखर (क) सं. — एक स्थान का
नाम जहाँ महात्मा बसवेश्वर का जन्म हुआ
था। (अ० ग० ईं ईंगलेखर — अ० ग० ईं ईंगलेखर
बागवाडि नाम से यह प्रसिद्ध है।)

वारण (सम्) सं.— ऐरावत । —
 सुत (सम्) सं.— अर्जुन ; जयंत ।

अ० द० ई० इंद्राणि (सम्) सं.— इंद्र की पत्नी शची ; कामदेव की पत्नी रति ; ब्रह्मा की पत्नी सरस्वती, भारती ; शिव की पत्नी दुर्गा, पंचेन्द्रिय ; किरण, रश्मि, कांति ; इंद्रायन वृक्ष ।

अ० द० ल० इंद्रानुज, अ० द० ल० इंद्रावरज (सम्) सं.— उपेंद्र ; विष्णु, कृष्ण ।

अ० द० य० इंद्रायुध (सम्) सं.— वज्रायुध ; इंद्रधनुष ; एक घोड़े का नाम ।

अ० द० ० इंद्रारि (सम्) सं.— इंद्र का शत्रु ; राक्षस ।

अ० द० इंद्रिय (सम्) सं.— बल, शक्ति, जोर ; ज्ञान, कर्मेन्द्रिय तथा ज्ञानेन्द्रिय ; वीर्य ; पाँच की संख्या का संकेत । — ग० ग्राम (सम्) सं.— इंद्रियों का समूह । — ग० निग्रह (सम्) सं.— इंद्रियों का दमन ।

अ० द० इंद्रे (तद्) सं.— इंद्र की पत्नी शची ।

अ० द० इंद्रेभ (सम्) सं.— इंद्र का हाथी, ऐरावत ।

अ० द० इंद्र (सम्) सं.— जलाने की लकड़ी, जलावन, काष्ठ ।

अ० द० इंद्र (क) सं.— माधुर्य, सुंदरता, रम्यता, मनमोहकता । — ष० पड़े (क) क्रि.— सुंदर हो, मनोहर हो, मधुर हो । — २० एखे (क) क्रि.— मनोहर दिखाई दे ।

अ० द० इंब (क) सं.— विस्तार, चौड़ाई, वृहत्ता ।

अ० द० इंबने (क) अ.— अच्छी रीति से, सुंदर ढंग से ।

अ० द० इंबुवरु (क) क्रि.— अच्छा लगा, ठीक ठीक हो ।

अ० द० इंबल (क) सं.— पृथिवी, ज़मीन ।

अ० द० इंबलिके (क) अ.— तत्पश्चात् ।

अ० द० इंबागु (क) क्रि.— आधार या सहारा हो, सहायता कर ।

अ० द० इंबिसु (क) क्रि.— फैला, विस्तार कर ।

अ० द० इंबु (क) सं.— रहने या ठहरने का स्थान, स्थान, जगह ; घर, मकान ; विस्तार,

चौड़ाई । — ७० अरि (क) क्रि.— आश्रय को पहचान । — ७० आगु (क) क्रि.— आश्रय हो । — २० एने (क) अ.— सुंदर ढंग से । — २० केयु (क) क्रि.— जगह बना ; कहे अनुसार चल ; मान । — २० कोडु (क) क्रि.— शरण में जा, आश्रय पा ।

ग० गेयसु (क) क्रि.— रख, धर । — ष० पड़े (क) क्रि.— फैला, विस्तार कर, बढ़ा हो, आश्रय पा ; दिख ; ठहर । — ष० पेंत (क) वि.— सहारा पाया हुआ, सुंदर, मनोहर ।

अ० द० इंबेलेसु (क) सं.— अच्छी फसल या उपज ।

अ० इके (क) प्र.— भाववाचक संज्ञा का प्रत्यय । उदा. — ष० होलिके — समानता, २० केलिके — कथन, वचन ; संप्रदान कारक का चिह्न 'के लिए' का अर्थघोतक । उदा. — ष० माडलिके — करने के लिए, ७० आडलिके — खेलने के लिए ।

अ० इको ; अ० इको ; अ० इको, अ० इगो, २० एको, २० एको (क) वि.बो.— अहा ! देख !

अ० इकु (क) सं.— स्थानाभाव, तंगी, कष्ट, दोनों ओर की तंगी । — अ० इकु, २० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट ।

अ० इकु (क) सं.— स्थानाभाव, तंगी, कष्ट, दोनों ओर की तंगी । — अ० इकु, २० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट । अ० इकु, २० इकु — अनेक विघ्न या संकट ।

अ० इकु (क) सं.— दोनों तरफ, दोनों किनारे ।

अ० इकु (क) क्रि.— मार, पीट ; हिंसा कर, तंग कर, कष्ट दे ; वध कर ; 'सर सर' आहत कर ; इधर-उधर फैला, विकीर्ण कर ; विभाग कर, दो टुकड़े कर ।

अ० इकु (क) सं.— चीमट, चिमटा, सैंडसी ।

अ० इकु (क) सं.— हथौड़ा, हथौड़ी ।

अ० इकु (क) क्रि.— रख, धर ; दे ; मार, पीट ; वध कर, मार डाल ; त्याग, त्याग दे, दान कर ; टुकड़े कर ; बंद कर ; पोंछ ; फेंक । सं.— दान । — ष० पडु (क) क्रि.— चोट या आघात सह । — ष० ह (क) सं.— देना, दान ।

अ० इकु (क) सं.— निकटता, सामीप्य ; सकरा ; संकट ।

अ० इकु, अ० इकु, अ० इकु (क) सं.— दे. अ० इकु.

अ० इकु (क) सं.— इक्ष्वालिका (तद्) ; काँस ।

अ० इकु (क) प्र.— संप्रदान कारक 'के लिए' का अर्थघोतक ; उदा. — ष० माडलिके — करने के लिए, २० आडलिके — जाने (के लिए) को । सं.— स्थान, जगह, आश्रय ।

अ० इकु (क) अ.— दोनों ओर, दोनों दिशाओं में ।

अ० इकु (क) सं.— विदुनूर राजाओं की राजधानी ; एक प्राचीन सोने का सिक्का (लगभग पाँच रुपये) ।

अ० इकु (क) वि.बो.— दे. अ० इकु.

अ० इकु (सम्) सं.— ईख, गन्ना ; पौड़ा । अ० इकु, २० इकु, २० इकु — कामदेव । — ष० दंड (सम्) सं.— गन्ना । — ष० मेह (सम्) सं.— एक बीमारी, मधुमेह । — २० शरासन (सम्) सं.— कामदेव ।

अ० इकु (सम्) सं.— सूर्यवंशी एक राजा जो वैवस्वत मनु के पुत्र थे ; माहाराज इक्ष्वाकु का वंशज ; कड़वी तूँड़ी, तितलौकी ।

अ० इकु (सम्) सं.— दे. अ० इकु.

अ० इकु (ल) क्रि.— सूख, निरस हो, शुष्क हो, बाष्प हो । सं.— अंकुर ; किसलय, पल्लव ; मसूड़ा ।

अ० इकु (अ.दे.) सं.— चर्च (Church) गिरिजा घर ।

अब्ज इहु (क) क्रि.— रख, धर; फेंक, पटक;
माय, पीट; छिपा; खाना परोस (या दे) ।

(8-11)

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — है (न. लिं., ए.व.) ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — हो (मध्यमपुरुष ए.व.) ।
सं. — मधुक ; महुआ ; लोध्र पुष्प ; चबाना ।
अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — एक
वृक्ष विशेष जिसकी लकड़ी काली होती है
(*Dalbergia latifolia*) ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — दोनों ओर, दोनों
तरफ ।

अशुभ इष्ट (क) सं. = अशुभ इष्ट-
हिम, तुषार, कोहरा ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — दो व्यक्ति (या जन) ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — खरबूजे का
पौधा ।

अशुभ इष्ट (सम्) सं. — हाथी, गज । — गति,
गति, गमन (सम्) सं. — हाथी के
समान मंद गति वाली (त्री) । — शूर पुर,
नगर नगर (सम्) सं. — हस्तिनापुर । —
मृग, दैत्य, मरु सुर (सम्) सं. — गजासुर ।
— मूख, मूक, वक्त्र (सम्) सं. —
गणेश । — वाहन, (सम्) सं. —
इन्द्र । — मृग वैरि, (सम्) सं. — सिंह,
शेर । — मृग हस्त (सम्) सं. — हाथी की
खंड ।

अशुभ इष्ट (सम्) सं. — हथिनी ।

अशुभ इष्ट (सम्) वि. — धनवान, संपन्न,
अमीर ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — बुझा ; सुखा ;
निरस बना ; बाष्प बना ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — सूख, शुष्क हो ;
बुझ ; बाष्प हो ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — बुझा ; सुखा ;
निरस बना ; बाष्प बना ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — सूख, शुष्क हो ;
बुझ ; बाष्प हो ।

अशुभ इष्ट (क) वि. — दुगुना, द्वितीय,
दूसरा ।

अशुभ इष्ट (क) अ. — भली भाँति, सुंदर ढंग
से ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — रसाल, आम ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — सुंदर स्त्री ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — दे ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) अ. — दो बार ।
अशुभ इष्ट (क) सं. — दो शरीर, दो
अंग ; दुधारी तलवार ।

अशुभ इष्ट (क) सं. —
शरीर के दो अंगों का दिखावा ।

अशुभ इष्ट (क) सं. —
कवच, जिसमें दो ओढ़ना या तह हो ।

अशुभ इष्ट (सम्) वि. — इतना, इतना
बड़ा, इतने विस्तार का ।

अशुभ इष्ट (सम्) सं. = अशुभ इष्ट, इष्ट
— सीमा, परिमाण, माप ; वर्ग, श्रेणी ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — हो, विद्यमान हो, रह,
बच, ठहर ; हिच किचा, देर कर । प्र. — स्त्री
लिंग शब्दों के अंत में लगनेवाला ब. व.
प्रत्यय ; उदा. — अशुभ इष्ट - स्त्रियाँ
अशुभ इष्ट - दासियाँ ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) प्र. — संबोधन में
शब्दों के अंत में लगता है, जैसे—
अशुभ इष्ट (रा) ! मुनिगिरि (रा) !
मुनियो !, अशुभ इष्ट (रा) ! देवियरि (रा) !
— देवियो ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — दबा, जोर से पकड़
या बांध ; दुविधा में पड़ । सं. — दुविधा,
संकट । — अशुभ इष्ट (क) क्रि. — दुविधा
में डाल, कष्ट में फँसा ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट,
अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — धुरी,
(गाड़ी की) लोहे की छड़ या लकड़ी ।
अशुभ इष्ट (क) सं. — बूढ़ाबूढ़ी, वर्षा
की बूढ़ जो आड़ न रहने पर घर के अंदर
पड़ जाती है ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट,
अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — रात्रि,
रात, निशा (अशुभ इष्ट - तमिल) ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (सम्) सं. —
लुनही ज़मीन ; मरुभूमि, मरुस्थल ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — स्थिति,
अधिष्ठान, आश्रय ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — रह, जीवित हो ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — नवमालिका,
नवमलिका ।

अशुभ इष्ट (सम्) सं. — बिजली की
कौंध, वज्राग्नि ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. — खजाने में रकम जमा करना ।

अशुभ इष्ट (अ.दे.) सं. — इरादा (अरबी);
इच्छा, विचार, अस्मिप्राय ।

अशुभ इष्ट (अ.दे.) सं. — दे ।

अशुभ इष्ट (सम्) सं. — पृथिवी ; वाणी ;
सरस्वती ; जल ; अन्न, भोज्य पदार्थ ; मद्य,
शराब । — अशुभ इष्ट (सम्) सं. — वरुण,
विष्णु, गणेश । — अशुभ चर (सम्) सं. —
उपलब्धि, ओला ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — चुभ, भोंक, ठोंक ; मार,
पीट ; मार डाल ; लड़ । प्र. — मध्यम पुरुष
ब. व. — आज्ञार्थ का बोधक ; जैसे— अशुभ इष्ट
तोलगिरि—हट जाइए, अशुभ इष्ट कुल्लिरि—
बैठिए, अशुभ इष्ट नोडिरि—देखिए ; आदर-
सूचक प्रत्यय जैसे—अशुभ इष्ट बन्निरि—आइएगा,
अशुभ इष्ट एनिरि—क्या है, जी ? , अशुभ इष्ट हौदिरि—
जी हाँ ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — वह, जिसमें
चुभने या भोंकने का गुण हो ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — लपेट, साँप का चक्राकार
बनना ।

अशुभ इष्ट (क) क्रि. — ठूस, नोच, कुचल,
दबा ।

अशुभ इष्ट, अशुभ इष्ट (क) सं. —
दे. अशुभ इष्ट.

अशुभ इष्ट (क) सं. — चुभने या ठोंकने की
क्रिया ।

अशुभ इष्ट (क) सं. — सेवा, नौकरी ।

०६८० इरिविडु (क) क्रि.— दूध की धारा या बूँद का धीरे-धीरे गिराना ।

०६८० इरिसिलु (क) सं.— हाथी, शेर आदि जानवरों को पकड़ने का स्थान, गड़ढा ।

०६८० इरिसु (क) क्रि.— रख, स्थापित कर, ठहरा ; मरवा डाल ; लीख को कंघी करके निकालना ।

०६८० इरिसुह (क) क्रि.— रखवा, थमा, ठहरवा (प्रे.) ।

०६८० इरु, (क) क्रि.— रह, विद्यमान या वर्तमान रह, निवास कर, जीवित रह ।

०६८० इरुकु, ०६८० इरुं (क) क्रि.— दबा, नोच, कुचल, पकड़ । सं.— तंगी ; तकलीफ, कष्ट ; छेद, फटा ।

०६८० इरुगुडि (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुपे, ०६८० इरुपे (क) सं.— चींटी ।

०६८० इरुबु, ०६८० इरुबु (क) सं.— गड़ढा, दे. ०६८०.

०६८० इरुवे (क) सं.— समूह, गिरोह, भीड़ ।

०६८० इरुबु (क) सं.— संकीर्ण स्थान, तंग जगह, गली ; रुक्षता, शुष्कता ; संकट ।

— ०६८० कोळु (क) क्रि.— संकट या दुःख में पड़ ।

०६८० इरुवार (क) सं.— दो भाग, उपज के दो सम भाग जो भूस्वामी और कृषक को प्राप्य हैं ।

०६८० इरुविके (क) सं.— विद्यमानता, उपस्थिति, वर्तमानता ।

०६८० इरुह (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुल्, ०६८० इरुलु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरे (सम्) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इर (क) सं.— संकीर्णता, तंगी ; कष्ट, संकट ।

०६८० इरुकु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुचलु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुत (क) सं.— चुभने, भोंकने, ठोंकने आदि की क्रिया ।

०६८० इरुवे, ०६८० इरुवे (क) सं.— चींटी ।

०६८० इरि (क) क्रि.— दे. ०६८०.

०६८० इरिक्कु, ०६८० इरिक्कु (क) क्रि.— अपने आपको छुरा भोंक, आत्महत्या कर ।

०६८० इरित (क) सं.— दे. ०६८०. — ०६८० इरितकार-मारने, पीटने, चुभने, भोंकने-वाला मनुष्य ।

०६८० इरिपु, ०६८० इरिपु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरिसिल, ०६८० इरुबु, ०६८० इरुसल्, ०६८० इरुसुल् (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरिसु (क) क्रि.— रख, स्थापित कर ।

०६८० इरु (क) क्रि.— रह, ठहर, हिचकिचा ।

०६८० इरुकु, ०६८० इरुं (क) क्रि.— दे. ०६८०.

०६८० इरुपे, ०६८० इरुबु, ०६८० इरुवे (क) सं.— चींटी । ०६८० इरुवेय भार इरुवेगे, आनेय भार आनेगे—चींटी का भार चींटी को हाथी का भार हाथी को (कह.) ।

०६८० इरुसल्, ०६८० इरुसुल् (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुहे (क) सं.— चींटी, पिपीलिका ।

०६८० इरुक्कु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुसु (क) क्रि.— फँसा, रखा ; मार, वध कर ।

०६८० इरु (क) क्रि.— फँस, रख ; मार, पीट ; वध कर, नाश कर ।

०६८० इरु (क) सं.— रहने का स्थान, रहना ; स्थान, ज़मीन ।

०६८० इरुलु (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुविके (क) क्रि.— दोनों ओर फैल ; दोनों ओर खींच ।

०६८० इरु (क) क्रि.— रख, धर, स्थापित कर ।

०६८० इरुत (क) सं.— दे. ०६८०.

०६८० इरुत (क) सं.— दो श्रेणियाँ । दो पंक्तियाँ ।

०६८० इरुत (क) सं.— दो रीतियाँ, दो पद्धतियाँ, दो प्रकार ।

०६८० इरु (क) सं.— रहना ; रस ; माधुर्य, मिठास ।

०६८० इरु, ०६८० इरु (क) क्रि.— सुख जा, शुष्क हो, निरस हो ।

०६८० इरु (क) सं.— दोनों तरफ की सेनाएँ ।

०६८० इरु (क) सं.— ०६८० इरु-घाव ।

०६८० इरुकार (क) सं.— नाई, हजाम ।

०६८० इरु (क) सं.— सौंदर्य, रमणीयता, इच्छा ; दो बार ।

०६८० इरु, ०६८० इरु (क) क्रि.— दो (पु.लिं., स्त्री.लिं.) ।

०६८० इल, ०६८० इल (क) सं.— घर, स्थान, जगह ।

०६८० इला (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी ; धन ; शब्द । — ०६८० अधिप (सम्) सं.— भूमि के अधिपति, राजा । — ०६८० तल (सम्) सं.— भूतल, भूमि । — ०६८० पुत्रि (सम्) सं.— सीता ।

०६८० इलाभृत (सम्) सं.— राजा, पर्वत ।

०६८० इलावृत (सम्) सं.— पुराण युग में प्रसिद्ध भूखंड ।

०६८० इलावृदारक (सम्) सं.— ब्राह्मण ।

०६८० इलि (क) सं.— चूहा, चुहिया । प्र.— रहित ।

०६८० इलिकु (क) क्रि.— दब जा, कुचला जा ।

०६८० इलिकि (क) सं.— बेर ।

०६८० इलिदेर (क) सं.— गणेश ।

०६८० इलिमिचि (क) सं.— नीबू, नींबू का पेड़ ।

०६८० इलुका (क) क्रि.— सिकोड़, मरोड़, घेंठ ।

अथवा इल्लु (क) सं.— हड्डी, अस्थि ।
 अथवा इल्ले (सम्) सं.— दे. अथवा. अथवा
 इल्ले (सम्) सं.— राजा, नृपति ।
 अथवा इल्ल (क) अ.क्रि.— नहीं, न (निषेध सूचक
 अ.क्रि.) ।
 अथवा इल्लण (क) सं.— छत पर की काली
 गंदी वस्तु (Soot), धुआँ ।
 अथवा इल्लतन (क) सं.— अभाव, हीनता;
 गरीबी, दरिद्रता ।
 अथवा इल्ले, अथवा इल्ले (क) सं.—
 अभाव, नहीं की स्थिति; समाप्ति । अथवा
 अथवा इल्ले इल्ल—बिलकुल नहीं ।
 अथवा इल्ला (क) अ.क्रि.— नहीं, न ।
 अथवा मल्लि (क) सं.— चुगली, निंदा,
 आक्षेप । —अथवा मल्लितन (क) सं.—
 चुगली, आक्षेप या निंदा करने की प्रकृति ।
 अथवा इल्लि (क) अ.— यहाँ, इधर, इस स्थान
 में । —अथवा यवन (क) सं.— यहाँ का
 आदमी । —अथवा तनक, अथवा वरं (क)
 अ.— यहाँ तक ।
 अथवा इल्लल (सम्) सं.— एक राक्षस ।
 अथवा इव (क) सर्व.— यह (निश्चय वाचक
 सर्वनाम पु.लिं., ए.व.— अन्यपुरुष)
 अथवा इव (सम्) अ.— जैसा, गोया, कुछ-
 कुछ, थोड़ा, शायद, कदाचित् ।
 अथवा इवल्, अथवा इवल्ल (क) सर्व.— यह
 स्त्री.लिं., ए.व.— अन्य पुरुष) ।
 अथवा इवु, अथवा इवुगलु (क) सर्व.— ये
 (न.लिं., अ.व.—अन्यपुरुष) अथवा इवु (यह)
 —अथवा इवु या अथवा इवुगलु (ये) ।
 अथवा इवे (क) क्रि.— हैं (अ.व.) ।
 अथवा इवारे, अथवा इवारे (अ.दे.) सं.—
 इशारा (अरबी); संकेत, सैन; सूचना,
 पहचान ।
 अथवा इवीके, अथवा इवीके (सम्) सं.—
 नरकुल, सीक; बाण ।
 अथवा इपु (सम्) सं.— बाण, अस्त्र । —अथवा
 आसन (सम्) सं.— धनुष ।
 अथवा इपुषि (सम्) सं.— तरकस, तूणीर ।

अथवा इष्ट (सम्) वि.— इच्छित, वांछित ।
 सं.— इच्छा, वांछा; प्रियतम, पति ।
 अथवा इष्टके (सम्) सं.— ईंट ।
 अथवा इष्टगंध (सम्) वि.— सुगंधित,
 खुशबूदार ।
 अथवा इष्टदेवते (सम्) सं.— कुलदेवता,
 आराध्य देव ।
 अथवा इष्टमित्र (सम्) सं.— बंधु-मित्र ।
 अथवा इष्टरु (सम्) सं.— मित्र, बंधु, आस
 जन ।
 अथवा इष्टलिंग (सम्) सं.— वह लिंग,
 जिसे वीरशैव लोग धारण करते हैं ।
 अथवा इष्टव (सम्) सं.— उपद्रव, उरपात ।
 अथवा इष्टसिद्धि (सम्) सं.— मन की
 इच्छा की पूर्ति ।
 अथवा इष्टानिष्ट (सम्) सं.— अभीलापा-
 अनभिलाषा ।
 अथवा इष्टाप्ति (सम्) सं.— मनोरथ
 की पूर्ति, उद्देश्य की साधना ।
 अथवा इष्टार्थ (सम्) सं.— मन की वांछा,
 वांछित वस्तु ।
 अथवा इष्टि (सम्) सं.— अभिलाषा, कामना;
 प्रवृत्ति; यज्ञ, दर्श-पौर्णमास; गड़बड़ी;
 आमंत्रण; आज्ञा, अनुमति । —अथवा (सम्)
 वि.— इच्छित, वांछित; यज्ञ किया हुआ ।
 अथवा इष्टु (क) वि.— इतना, इतने परिमाण
 का, थोड़ा । सं.— अस्त्र, बाण ।
 अथवा इष्टे (सम्) सं.— प्रिया, प्रियतमा ।
 अथवा इष्टोत्तु (क) अ.— (अथवा+अथवा)
 —इतना समय, इतनी देर ।
 अथवा इष्टम्, अथवा इष्ट्य (सम्) सं.— वसंत
 ऋतु; कामदेव ।
 अथवा इष्टवास, अथवा इष्टवासन (सम्)
 सं.— शरासन, धनुष ।
 अथवा इस् (क) वि.बो.— छि: ! छि: !, छि: ।
 अथवा इस् (क) वि.— दे. अथवा.
 अथवा इस्सु (क) सं.— एक प्रकार का चर्म-
 रोग ।
 अथवा इस्सुगोलु (अ.दे.) सं.—
 इसबगोल, एक दवाई विशेष ।

अथवा इस्सु (अ.दे.) सं.— व्यक्ति ।
 अथवा इस्सु (अ.दे.) सं.— इसवी ।
 अथवा इस्सु, अथवा इस्सु (क) क्रि.— ले, खींच ले, छीन ले ।
 अथवा इस्सु (क) क्रि.— तीर चला. बाण-प्रयोग
 कर । प्र.— प्रेरणार्थक प्रत्यय । उदा.—
 माडु माडु (कर) — माडु माडु
 (करा) ।
 अथवा इस्सुवेस (क) सं.— आज्ञा कार्य ।
 अथवा इस्सुवेस (अ.दे.) सं.— स्वागत-
 सत्कार, आदर-सत्कार ।
 अथवा इस्सु, इस्सु (अ.दे.) सं.—
 इस्तिरी (हि.) ।
 अथवा इह (क) वि.— रहनेवाला, विद्यमान,
 वर्तमान । अथवा इहु—है, वर्तमान है ।
 अथवा इह (सम्) अ.— यहाँ, इस स्थान में, इस
 समय । —अथवा लोक (सम्) सं.— यह
 लोक, यह भूमि ।
 अथवा इहगे, अथवा इहगे, अथवा इहगे,
 अथवा हीगे, अथवा हीगे (क) अ.— इस
 प्रकार, इस भाँति ।
 अथवा इहत्तु (सम्) अ.— यहाँ, इस लोक में ।
 अथवा इहेतु (क) क्रि.— हूँ (उत्तम पुरुष
 ए.व.) ।
 अथवा इल् (क) क्रि.— खींच ।
 अथवा इल्लकलु, अथवा इल्लकलु (क)
 सं.— फिसलन; जल, पानी ।
 अथवा इल्लानाडि (सम्) सं.— दाईं तरफ
 की नाक, नथना ।
 अथवा इल्लिके (क) क्रि.— तिरस्कार कर,
 नीचा दिखा ।
 अथवा इल्लिके पड़े (क) क्रि.— तिरस्कृत हो,
 हीन हो, अपमानित हो ।
 अथवा इल्लिके, अथवा इल्लिके, अथवा इल्लिके,
 अथवा इल्लिके, (क) सं.— हीनता, क्षीणता,
 अवनति, अपमान, गरीबी ।
 अथवा इल्लित, अथवा इल्लित (क) सं.— अथवा
 इल्लत, अथवा इल्लत—उतराई, अवनति,
 कमी ।

५० इच्छि (क) कृ.— नीचे उतर कर ।
वि.— क्षीण, खराब ।

५०० इच्छिमुल्लु (क) क्रि.— पूरा-पूरा
इब, निमज्जित हो ; नष्ट हो, बरबाद हो ।

५०० इच्छिपु, ५०० इच्छिपु, ५०० इच्छिसु,
५०० इच्छिसु, ५०० इच्छिहु, ५०० इच्छिहु,
५०० इच्छिहु, ५०० इच्छिहु, ५०० इच्छिहु,
(क) क्रि — नीचे उतार, उतार दे, क्षीण
या हीन कर, निंदा कर ।

५०० इच्छिहु (क) सं.— अपराह,
तीसरा प्रहर ।

५० इच्छि (क) क्रि.— चुभ, भोंक ।

५० इच्छि (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी । —
५० आणम (तद्) सं.— राजा, भूपति ।

५० इच्छि (क) सं.— दे. ५००.

५०० इच्छिदुवरि (क) क्रि.— खींचकर जा,
बह ।

५०० इच्छिकुलि (क) सं.— खिंचाव, आकर्षण ।

ई

ई—कन्नड वर्णमाला का चौथा अक्षर; सर्व.—
निर्देशवाचक ; उदा.— ई पुस्तक—
यह पुस्तक, ई बालक—यह बालक
ई हेंगसु—यह औरत ; मध्यम
पुरुष ब.व. प्रत्यय-आज्ञार्थ में ; उदा.—
नदीरि-चलिए, नदीरि-होलीरि-
मारिए ।

ई, ईयु (क) क्रि.— दे ; सौंप दे ;
अनुमति दे ; करने दे ; जन्म दे (पशुओं का
बच्चों को जन्म देना) ।

ई (सम्) क्रि.— जाना ; चमकना, व्याप्त
होना ; इच्छा करना ; फेंकना ; रवाना होना ;
माँगना ; गर्भवती होना । स.— कामदेव ;
दुःख, पीड़ा, दर्द ; उदासी ; क्रोध ; विवेक ;
आह्वान ; आवाहन ।

ई (क) वि.— मीठा, मधुर ।

ईगडल् (क) सं.— क्षीर-समुद्र ।

ईचर (क) सं.— सुंदर स्वर, मधुर
ध्वनि ।

ईदिसु (क) क्रि.— पिला ।

ईदु (क) क्रि.— पी ।

ईके (क) सर्व.— यह (आदर सूचक
शब्द—स्त्री. लिं. ब. व.) उदा.— ईके
यारु—यह स्त्री कौन है ?

ईक्षक (सम्) सं.— देखनेवाला, प्रेक्षक ।

ईक्षण (सम्) सं.— दृष्टि, दृश्य, नेत्र ।

ईक्ष (सम्) सं.— भविष्य-कथन करने-

वाला । — ईक्षे (सम्) सं.— भविष्य-

कथन करनेवाली स्त्री ।

ईक्षण (क) अ.— अभी, तुरंत, फौरन ।

ईक्षित (सम्) वि.— देखा हुआ, ग्रहण

किया हुआ ।

ईक्षे (सम्) क्रि.— देख, अवलोकन

कर ; ध्यान दे ।

ईक्षे, ईक्षा (सम्) सं.— दृष्टि,

चितवन ; विचार, ज्ञान ।

ईक्ष्य (सम्) वि.— देखा जानेवाला,

देखने योग्य, ध्यान देने योग्य ।

ईग, ईगडु (क) अ.— अब, इस

समय, इस वक्त ।

ईगल्, ईगलु (क) अ.—

अभी, तुरंत ।

ईगल् (क) अ.— अब, इस समय ।

ईगलु (क) अ.— अब, इस समय ।

ईगे (क) क्रि.— दे, प्रदान करे, दया

करे (विधि या आज्ञार्थ) ।

ईगे, ईगिगे (क) अ.— अब,

इस समय, संप्रति ।

ईगे (क) अ.— दे. ईगे.

ईचल्, ईचलु (क) सं.—

एक ताल वृक्ष विशेष जिसके फल खजूर के

जैसे होते हैं और जिससे मदिरा निकाली जाती

है ; पंखोंवाली दीमक ।

ईचल् (क) सं.— दे. ईचल्.

ईचलगार (क) सं.— ताड़ी

बनाने और बेचनेवाला ।

ईचले, ईचल् (क) सं.—
दे. ईचल्.

ईचु, ईचु, ईचु (क) वि.—

रूखा, सूखा, मुरझाया हुआ, झड़ा हुआ ।

सं.— हल की लकड़ी या छड़ी, गाड़ी का

अग्र भाग (मै.प्र.) ।

ईचुवोगु (क) क्रि.— रसहीन

हो, सूख जा ।

ईचे (क) अ.— इस तरफ, इस ओर,

इस किनारे पर । — ईचे—इस किनारे

पर । ईचेगे, ईचेगे—इस

तरफ, इस किनारे पर । ईचेगे

—आजकल ; आगे चलकर । ईचेगे

ईचेगे—इस तरफ या इधर का किनारा ।

ईजिसु (क) क्रि.— तैरा (प्रे.) ।

ईजु (क) क्रि.— ईजु, ईजु

हीजु—तैर । — ईजु बीलु (क) क्रि.—

तैरना प्रारंभ करना । — ईजु आट (क)

सं.— तैरना । — ईजु ईजाडु (क)

क्रि.— तैर, ईजाडिसु (क) क्रि.—

तैरा ।

ईटिंगि, ईटि (क) सं.— भाला,

बरछा, नौकदार आयुध ।

ईटिंगि (तद्) सं.— इटिका (तद्) ;

ईट ।

ईदु (क) वि.— इतना, इतने परिमाण

का, थोड़ा (ग्रा.) ।

ईडागु (क) क्रि.— पड़, बन । उदा.—

अबनू अल्लु कालु ईडागु अवनु

एल्लर कारुण्यक्के ईडागु—वह सभी की

करुणा का पात्र बना । अबनू अल्लु

ईडागु नीनु असुरेगे ईडागवेड—तुम

असुरा में न पड़ ।

ईडाडु (क) क्रि.— फेंक, फैला, विकीर्ण

कर, त्याग ।

ईडि (क) सं.— ताड़ी, मदिरा ।

ईडिग (क) सं.— ताड़ी बनानेवाला

पुरुष ।

ईडिगिति (क) सं.— 'ईडिग' स्त्री ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— स्तुति किया हुआ, प्रशंसित ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— ज़ोर से मार, आघात कर; वेग से आगे बढ़; बलपूर्वक खींच ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— लक्ष्य, उद्देश्य; समता; प्रोहर, बंधक, गिरवी; पशुओं का चारा; बंदूक की गोली आदि; शक्ति, ऐश्वर्य; उपयुक्तता; अधिकता, वृद्धि, माध्यम; जुड़ना, मिलना; रक्षण; फेंकना; खींचना, भट्टी में मिट्टी के बर्तन रखना । — ऊ० उ० इ० इति (क) सं.— बलवान या शक्तिमान पुरुष ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— ठीक जोड़ी, अच्छी जोड़ी ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— प्रशंसा, स्तुति ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— सफल कर, पूर्ण कर, समाप्त कर ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— सफल हो, पूर्ण हो ।

अ० उ० इ० इति (तद्) सं.— चीणा (तत्) (मै.प्र.) ।

अ० उ० इ० इति (क) सर्व.— यह (अंदर सूचक— अन्य पुरुष पु.लिं. ए.व.) । — ग० गल्-वे (ब.व.) । सं.— जन्म देने की क्रिया, प्रसूति ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— संदिग्ध वर्तमान न.लिं., ए.व. प्रत्यय । उदा.— थो०००००० बंदीतु— जाता (या जाती) हो, मार०००००० मारीतु— करता (या करती) हो ।

अ० उ० इ० इति (क) अ.— इस तरफ, इधर, इस दिशा में ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— प्रसूति, जन्म देना ।

अ० उ० इ० इति (क) अ.— इस तरफ, इधर, इस दिशा में ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— प्रसूति, जन्म देना ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— ऐसा, इस प्रकार का, इसके सदृश्य, इसके बराबर ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— जन्म दे, गर्भ मोचन कर । वि.— मधुर, अच्छा, सुंदर । उदा.— अ० उ० इ० इति—मधुर अधर, अ० उ० इ० इति—सुंदर बाहू, अ० उ० इ० इति—वह मनुष्य जिसकी बाहुएँ सुंदर हो ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— मक्खियों का मल या गंदगी, जूँ, लीख ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— वांछित, चाहा हुआ । सं.— इच्छा, चाह ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— मन की इच्छा, वांछित वस्तु ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— इच्छा अपेक्षा, चाह ।

अ० उ० इ० इति (अ.दे.) सं.— (अरबी शब्द 'ऐब' से)—भेद, अंतर, असमानता ।

अ० उ० इ० इति (तद्) सं.— विभूति (तत्) ; भस्म ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— दिला; प्रसव करा (प्रे.) ।

अ० उ० इ० इति (क) वि.— दो की संख्या । उदा.— अ० उ० इ० इति—दो फुट, अ० उ० इ० इति—दस भुजाओं वाले (शिव), अ० उ० इ० इति—दस सिरवाला, दशशिर रावण । अ० उ० इ० इति—बारह ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— खींच, अपनी ओर लगा, लीख (कंधी करके) निकालना ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— गीलापन, आर्द्रता, नमी; शीतलता ।

अ० उ० इ० इति (तद्) वि.— वीर (तत्) ; अ० उ० इ० इति—वीरभद्र । अ० उ० इ० इति—वीरभद्र के सामने बसवण (वृषभ) (कह.) ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— हवा; गमन; आंदोलन, प्रोत्साहन ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— लीख निकालने की कंधी ।

अ० उ० इ० इति (क) प्र.—मध्यम पुरुष ब.व. प्रत्यय । उदा.— अ० उ० इ० इति—माडुत्तीरि—करते हैं,

अ० उ० इ० इति—जाते हैं, अ० उ० इ० इति—रहते हैं । अ० उ० इ० इति—प्रश्नसूचक; जैसे—अ० उ० इ० इति? माडुत्तीरि?—करते हैं क्या?, अ० उ० इ० इति? आडुत्तीरि?—खेलते हैं क्या ?

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.—रेगिस्तान, मरुभूमि ऊसर भूमि ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— फेंका हुआ, त्यक्त, भेजा हुआ, मारा हुआ, पीटा हुआ ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.—कंधी से लीख निकाल ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— अ० उ० इ० इति, नीरुळि —प्याज़ ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— लीख निकालने की कंधी ।

अ० उ० इ० इति (क) क्रि.— खींच, शक्ति लगाकर खींच ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— अ० उ० इ० इति—तुरई (ग्रा.) ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— मसूडा ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— उदित; उन्नत; गया हुआ ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— घाव ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— इधर-उधर घूमना-फिरना ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— ककड़ी (Cucumis utilisissimus) ।

अ० उ० इ० इति (सम्) वि.— डाही, मात्सुर्य रखनेवाला ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— डाह, मात्सुर्य ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— हसिया, छोटी तलवार ।

अ० उ० इ० इति (सम्) सं.— छोटी तलवार, घास काटने का आयुध विशेष; तरकारी आदि काटने का आयुध, हसिया ।

अ० उ० इ० इति (क) सं.— संबंध या रिश्ता, जैसे पशुओं का मनुष्यों के साथ और बच्चों का माता-पिताओं के साथ होता है ।

५२० ईवर, ५२०० ईवर (क) अ.—अभी-
अभी, कुछ ही देर पहले ।
५२०० ईवाग (क) अ.—अब, संप्रति ।
५२००० ईवोत्तु (क) अ.—अब, इस समय,
आज ।
५२ ईश (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु; राजा;
ईश्वर, भगवान, शिव । —५२ त्व (सम्)
सं.—प्रभुता, ईश्वरत्व ।
५२० ईशान (सम्) सं.—शिव, अष्टदिक्-
पालकों में एक, सूर्य; शमी वृक्ष ।
५२० ईशानि (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ।
५२०० ईशान्य (सम्) सं.—पूर्व और उत्तर
के बीच की दिशा; शिव ।
५२००० ईशावास्य (सम्) सं.—ईशावास्य
उपनिषद् ।
५२००० ईशितव्य (सम्) वि.—पूजा के योग्य,
शासित ।
५२००० ईशित्य (सम्) सं.—राजा, प्रभु,
शासक, अधिकारी ।
५२००० ईशित्व (सम्) सं.—प्रभुता, अधिकार ।
५२०० ईश्वर (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु,
शिव, भगवान । —५२ गण—शिवगण ।
—५२ सन्न (सम्) सं.—मंदिर, देवालय ।
५२०० ईश्वरि (सम्) सं.—स्वामिनी; पार्वती,
दुर्गा; एक विपैली जड़ी ।
५२०० ईक्षण (सम्) सं.—इच्छा; आकांक्षा,
पाश; खोज । —५२ त्रय (सम्) सं.—
तीन पाश—पुत्र, पत्नी, और धन का पाश ।
५२०० ईषत् (सम्) अ.—थोड़ा, कुछ, छोटा ।
५२० ईषे, ५२० ईषा (सम्) सं.—गाड़ी का
बम, हल का वाँस ।
५२ ईस, ५२० ईसु (क) सं.—कुम्हड़ा ।
५२ ईस (तद्) सं.—ईश (तत्) ।
५२० ईसर (तद्) सं.—ईश्वर (तत्) ।
५२० ईसु (क) क्रि.—तैर । —५२ आट (क)
सं.—तैरना । —५२०००० कुंबलकायि
(क) सं.—सूखा कुम्हड़ा जो तैरना सीखने
के लिए काम में लाया जाता है ।

५२० ईसु (क) क्रि.—दिला, दिलवा, मजबूर
कर, अनुमति दे; बचा जना (प्रे.) ।
५२० ईसु (क) वि.—इतना, इस परिमाण
का । ५२०० ईसीसु—इतना-इतना (अनुरणन
शब्द) ।
५२ ईह (क) सं.—देना ।
५२० ईहा (सम्) सं.—चाह; अभिलाषा;
उद्योग, क्रियाशीलता । —५२० मृग (सम्)
सं.—भेड़िया; रूपक का एक भेद ।
५२० ईहित (सम्) वि.—वांछित, अभि-
लषित ।
५२ ईहे (सम्) सं.—दे. ५२००.
५२ ईहे (क) सं.—नारंगी, संतरा, मुसम्बी
आदि फल ।
५२ ईह्य, ५२०० ईह्येय (क) सं.—५२०
वीलय—तांबूल ।
५२० ईह्ये (क) सं.—जो सुलझा हुआ
हो; निश्चिन्ता; स्वतंत्रता ।

७० उ

७० उ—कन्नड-वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर ।
कई शब्द उकारांत ही होते हैं, जैसे—ऊँ
कर (बछड़ा), ऊँ माडु (कर), ऊँ
कोंबु (सींग), ऊँ नोडु (देख) आदि;
प्राचीन कन्नड (ह.क.) में जो शब्द व्यंजनांत
होते हैं वे आधुनिक कन्नड (होसगन्नड) में
उकारांत होते हैं; उदा.—ऊँ कल् (पथर)
—ऊँ कल्लु, ऊँ तिन् (खा)—ऊँ
तिन्नु; कुछ तद्भव शब्दों के अंत में 'उ'
लगता है; उदा.—ऊँ मनस्सु (मन),
ऊँ यशस्सु (यश), ऊँ मेघस्सु (मेघा); कर्त्ताकारक का चिह्न; जैसे—
ऊँ रामन्नु (राम), ऊँ अंविक्क्यु
(अंविक्का), ऊँ पक्षियु (पक्षी), ऊँ
हेडियु (भीरु) आदि ।
७० उं (क) अ.—और, तथा, एवं (संयोजक);
उदा.—ऊँ रामन्नु उँ लक्ष्मन्नु—राम और लक्ष्मण; वि.बो.—

हुं (असंतोष का सूचक); बीमार आदमी के
मुँह से या नींद के उच्छ्रित जाने पर निकलने-
वाला शब्द 'उं' ।
७० उंकि, ७० उंके, ७० उंके (क)
सं.—फैलाया हुआ ताना ।
७० उंकि (क) क्रि.—देख, अवलोकन
कर, परीक्षा कर, ध्यान दे, विचार कर ।
७० उंकुण (तद्) सं.—उत्कुण (तत्);
खटमल ।
७० उंगर, ७० उंगुर (क ?) सं.—
अंगूठी (इसकी व्युत्पत्ति संभवतः 'अंगुलीय'
से है) ।
७० उंगुट (तद्) सं.—अंगुष्ठ (तत्);
पैर का अंगूठा ।
७० उंगुट (तद्) सं.—दे. ७० उंगु ।
७० उंगुरकदल (क) सं.—धुंध-
राले बाल ।
७० उंगुरेरलु (क) सं.—अंगूठी
पहनने की उंगली, अनामिका ।
७० उं (क) सं.—दे. ७० उं.
७० उंच (क) सं.—बाँस की छेददार
टोकरी जो मुर्गी, बतख आदि पर ढका
जाता है ।
७० उंच (तद्) वि.—उच्च (तत्); ऊँचा,
श्रेष्ठ, महान् ।
७० उंच (सम्) सं.—अनाज के दानों का
संग्रहकार्य । —७० उंचि (सम्) सं.—
पेड़े-पौधों के नीचे पड़े हुए अनाज के दानों
का संग्रह करके ही निवाह करना ।
७० उंज (सं)—उंज पुंज, उंज हुंज—
मुर्गी, कुक्कुट ।
७० उंउं (क) क्रि.—वर्तमान है (द. क)
७० उंउं उंउं=७० उंउं उंउं उंउं—
हुं—होगा । ७० उंउं उंउं—हो,
उत्पन्न हो । ७० उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं
—उत्पन्न करना, होने देना । ७० उंउं उंउं
उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं उंउं
देवरु उंउं कोडलारनो—जिस भगवान् ने
उत्पन्न किया (जन्म दिया), वह भोजन
नहीं दे सकेगा ! (कह.) ।

७०६३ उंहु (क) क्रि. = ७०६३ उंहुडा—
हुक, एक ओर से दूसरी ओर गतिमान
हो।

७०६३ उंहुल्लो (क) सं. — एक प्रकार की
कमीन खाने की चीज़ जो चावल से बनाई
जाती है, एक प्रकार का दोसा।

७०६३ उंहुडि, ७०६३ उंहुडिग (क)
सं. — केवल खा-पीकर समय बितानेवाला,
बेकार मनुष्य।

७०६३ उंहुग (क) सं. — एकाकी पुरुष
जिसके माता-पिता या कोई रिश्तेदार न हो।

७०६३ उंहुगे (क) सं. — मुहर, छाप; विना
किसी रोक के जाने-जाने या यात्रा करने के
लिए दिया जानेवाला आज्ञा-पत्र; एक छोटा
छेद, जो फल में बनाया जाता है, यह देखने
के लिए कि वह पका है या नहीं।

७०६३ उंहु (क) कृ. — [‘७०६३ उण्’ (खा)
धातु से] — खाकर।

७०६३ उंहु (क) सं. — किसी वस्तु (शकर,
भुना हुआ चूड़ा, इसली, मिट्टी, गोबर
आदि) की गोलाकृति।

७०६३ उंहु (क) अ. — इस प्रकार, यह,
इसमें; बीच में; मध्यम रीति से।

७०६३ उंहु (क) अ. — अकारण, यों ही।

७०६३ उंहु (क) सं. — संग्रह, राशि, ढेर।

७०६३ उंहु (क) अ. — अब, इस समय।

७०६३ उंहु, ७०६३ उंहु (सम्) सं. —
चूड़ा, घूस।

७०६३ उंहुलि, ७०६३ उंहुलिगे,

७०६३ उंहुलि, ७०६३ उंहुलि,

७०६३ उंहुलिगे, ७०६३ उंहुलि,

७०६३ उंहुलिगे, ७०६३ उंहुलिगे,

७०६३ उंहुलिगे (क) सं. — दान,

निःशुल्क दिया हुआ स्थान, मुफ्त की ज़मीन-

वापदाद आदि। — गार (क) सं. —

वह आदमी, जिसको दान की भूमि प्राप्त

हो।

७०६३ उंहु (क) क्रि. — खा, भोजन कर

(प्र.)।

७०६३ उः (क) वि.बो. — (तिरस्कार सूचक)
— छिः!, धतः!

७०६३ उःपु (क) वि.बो. — (दुःख या निराशा
का सूचक) — हाय!, ओह!

७०६३ उक (क) प्र. — संज्ञार्थक प्रत्यय; उदा. —
७०६३ कटुक — वांधनेवाला, ७०६३ तटुक —
मारने या पीटनेवाला।

७०६३ उकाल् (अ.दे. ?) सं. — वमन,
उलटी (मै. प्र.)। — ७०६३ जुलाव —
है (Cholera).

७०६३ उकड (क) सं. — चुंगी या महसूल
वसूल करने का स्थान (Octroi); सुरक्षित
स्थान, ढेर के बाहर का खूँटा, सुरक्षा, पहरा;
एक छोटी रस्सी, जो बड़ी रस्सी के साथ
जुड़ाकर कुँ से पानी खींचने के लिए उपयोग
में लायी जाती है। — ७०६३ मने (क) सं. —
चुंगी-धर। — ७०६३ होल (क) सं. —
बाहरी सीमा में रहनेवाला खेत।

७०६३ उकंद (क) वि. — अधिक, बहुत,
विशिष्ट, दृढ़। सं. — घर की छत से लगी
हुई छोटी तख्ती या बाँस का टुकड़ा जिसपर
कपड़े आदि लटकाते हैं। ऐसे दो टुकड़े पास-
पास हो तो वे अलमारी (Shelf) के सरीखे
होते हैं।

७०६३ उकलिसु (क) क्रि. — हाथ से
निकल; सीमा से बाहर हो; डर, भयभीत
हो।

७०६३ उकलु (क) सं. — आराम, विश्राम;
स्थान; समय।

७०६३ उकलिके (तद्) सं. — उत्कलिका
(तत्); उत्कंठा, चिंता, विकलता, वियोग;
डर, भय; कली, मुकुल; लता; कमंडलु।

७०६३ उक्का (अ.दे.) सं. — हुक्का (अरबी)।

७०६३ उक्किव, ७०६३ उक्केव (क) सं. —
घोखा, ठगई, कपट, छल।

७०६३ उक्किसु (क) क्रि. — उबाल, औटा।

७०६३ उक्कु, ७०६३ उक्कु (क) क्रि. — अधिक
हो, उबल, औट, छलक, उछल (जल आदि

का बर्तन से बाहर आना) सं. — मद, नशा;
गर्व; घमंड; शक्ति, बल; फौलाद, पक्का
लोहा।

७०६३ उक्कुल (क) सं. — वृद्धि, अधिकता,
उफान, छलक।

७०६३ उक्कुविके (क) सं. — छलकने,
उछलने की क्रिया।

७०६३ उक्के (क) सं. — जोताई, हल चलाना।
— ७०६३ होड़े (क) क्रि. — जोत, हल चला।

७०६३ उक्के (क) सं. — शेष भाग, बचत।

७०६३ उक्केरु (क) क्रि. — अधिक हो,
उछल, छलक जा (अक्. क्रि.)।

७०६३ उक्त (सम्) वि. — कहा हुआ, कथित।
सं. — शब्द, बात।

७०६३ उक्ति (सम्) सं. — कथन, बात, शब्द,
वचन। — ७०६३ क्रम (सम्) सं. — उचित
रीति से वचन कहना। — ७०६३ विद (सम्)
सं. — शब्द जाननेवाला, वैयाकरण।

७०६३ उक्तिसु (सम्) क्रि. — कह, बोल;
घोषणा कर।

७०६३ उक्ते (सम्) सं. — एक वृत्त का नाम।

७०६३ उक्थे (सम्) सं. — कथन, वचन;
प्रशंसा; एक वृत्त का नाम।

७०६३ उक्ष (सम्) सं. — बैल, साँड़। — ग
ग, गमन, गमन, गमन, गमन, गमन
(सम्) सं. — शिव।

७०६३ उक्षण (सम्) सं. — छिड़काव, प्रोक्षण,
मार्जन।

७०६३ उक्षतर (सम्) सं. — बलवान या बड़ा
बैल या साँड़।

७०६३ उक्षपति (सम्) सं. — शिव।

७०६३ उक्षराज (सम्) सं. — शिव।

७०६३ उक्षित (सम्) वि. — छिड़का हुआ,
प्रोक्षित।

७०६३ उक्षेश्वर (सम्) सं. — महादेव।

७०६३ उखे (सम्) सं. — घड़ा, बटलोई,
डेगची।

७०६३ उख्य (सम्) वि. — बटलोई में उबाला
हुआ।

ग उग (क) प्र.— संबंधित, वाला ; उदा.—
७७७७७७—बस्ती या ग्राम से संबंधित
(व्यक्ति) ग्रामीण, (या ग्रामवाला) ।

ग उग (तद्) सं.— युग (तत्) ; ७७७७७
उगादि-युगादि ।

ग७७ उगनि (क) सं.— एक लता विशेष
(Cocculus cordifolius, Lettsomia
aggregata) ।

ग७७ उगम (तद्) सं.— उद्गम (तत्) ;
उत्पत्ति स्थान, निकास ; मूल ।

ग७७ उगरिसु (क) क्रि.— कठिनाई से
साँस ले ।

ग७७ उगळ, ७७७ उगळ, ७७७
उगळ, ७७७ उगळ (क) क्रि.— थूक,
थूक फेंक । सं.— थूक, खखार ।

ग७७ उगळिसु, ७७७ उगळिसु,
७७७ उगळिसु, ७७७ उगळिसु,
(क) क्रि.— थुका (प्रे.) ।

ग७७ उगादि (तद्) सं.— दे. ७७७
७७७ उगादिहव्व-वर्षादि का त्योहार ।
ग७७ उगाभोग (सम्) सं.— एक
प्रकार का गेय काव्य ।

ग७७ उगि (क) क्रि.— खींच, शक्ति लगाकर
खींच, उठा ले, चुरा ले ; विदीर्ण कर, चीर ;
बाहर निकाल (जैसे म्यान से तलवार
निकालना) ; नख से क्षत कर, आघात कर,
नोच ; फाड़, टुकड़े कर ; डर, भीत हो ;
लौंघ, पार कर ; गिर, पड़, चूर-चूर हो ;
प्रवेश कर ; गाड़ । सं.— वाष्प, भाफ ।

ग७७ उगित (क) सं.— गाड़ने की क्रिया
(मै.प्र.) ।

ग७७ उगिपद् (क) सं.— लट्, अपहरण ।

ग७७ उगिवगि, ७७७ उगिवगि (क)
क्रि.— विदीर्ण कर, चीर, फाड़ ।

ग७७ उगिबंदि (क) सं.— वाष्प से चलने-
वाली गाड़ी, रेल ।

ग७७ उगिसु (क) क्रि.— गिरा, चोरी करा,
लट्ट करा, निकाल, थुका (प्रे.) ।

७७७ उगु (क) क्रि.— डाल, छोड़, निकल,
शिथिल हो, बह, दौड़, गिर ; घिरा, लगा,
फेंक, उल्टा कर, चू ।

७७७ उगुनि (क) सं.— वृक्ष विशेष, पीलु
सहस्रांगी ।

७७७ उगुर, ७७७ उगुरु (क) सं.—
७७७ उगुर-नख, पंजा । ७७७ ७७७
७७७ ७७७ उगुरलि होगुदक्के
क्रोडलिये-नाख से जो कार्य संभव है, उसके
लिए कुल्हाड़ी की आवश्यकता है ? (कहा.) ।
— ७७७ ७७७—इतना गरम कि नख को
गरमी लगे । — ७७७ ७७७—घाव को नख से
नोचने से खून में होनेवाली खराबी (या
विष) । — ७७७ सुत्तु-नख का घाव । —
७७७ ७७७-नख-क्षत के कारण उत्पन्न घाव ।
— ७७७ ७७७-नख की नोक ।

७७७ उगुरिसु (क) क्रि.— नोच, नख से
क्षति कर, घायल कर ।

७७७ उगुल् (क) क्रि.— थूक, मुँह से पानी
गिरा, खखार ; तिरस्कार कर, धिक्कार ।
सं.— थूक ।

७७७ उगुळिसु, ७७७ उगुळिसु
(क) क्रि.— दे. ७७७ ।

७७७ उगे (क) क्रि.— उत्पन्न हो, जन, बाहर
आ, निकल, दिख । सं.— वाष्प, भाफ ।

७७७ उगग (क) सं.— रस्सी, जो बर्तन आदि
गले में बांधी जाती है ।

७७७ उगगट, ७७७ उगगड (तद्) सं.—
उत्कट (तत्) ; दे. ७७७ ।

७७७ उगगड, ७७७ उगगडने (क) सं.—
पुनरुक्त ध्वनि ; ध्वनि, शोर-गुल ; संगीत या
नृत्य में बार-बार उच्चरित किये जानेवाले
स्वर ; प्रशंसा ।

७७७ उगगडिसु (क) क्रि.— बारंबार किसी
बात को कह, ध्वनि कर, गुणगान कर (जैसे
'वदी-मागध करते हैं') ।

७७७ उगगार (तद्) सं.— उद्गार (तत्) ;
अभिप्राय व्यक्त करना, मत ।

७७७ उगिग (क) वि.— जलने योग्य । —
७७७ ७७७, ७७७ ७७७ (क)
सं.— जलनेवाला तेल, जलने के योग्य तेल ।

७७७ उगिग (क) सं.— ७७७ ७७७-पानी में
उवाला गया चना (या मूँग), जिसमें नमक,
मिर्च-मसाला डालकर खाया जाता है ।

७७७ उगु (क) क्रि.— फेंक, पानी फेंक,
फैला ; अटक-अटक कर बोल । सं.— अटक-
अटक कर बोलना, तोतली बोली, तुतलाहट ।

७७७ उग्र (सम्) वि.— भयंकर, भयावह,
भीकर, क्रूर ; गरम ; तीव्र, तीक्ष्ण ; क्रुद्ध ।
सं.— क्षत्रिय पिता और शूद्र माता की
संतान ; शिवजी । — ७७७ गंधे (सम्)
सं.— चंपा का वृक्ष, चमेली, लहसन, हींग ।
— ७७७ चंडि (कम्) सं.— दुर्गा का नाम ।

७७७ उग्रते (सम्) सं.— हिंसा, उद्वेग,
क्रोध, क्रूरता ।

७७७ उग्रत्व (सम्) सं.— दे. ७७७ ।
७७७ उग्रदंड (सम्) सं.— राजदंड ;
निर्दयता ।

७७७ उग्रधन्व (सम्) सं.— इंद्र ।
७७७ उग्रलोचन (सम्) सं.— शिवजी ।
७७७ उग्रशक्ति (सम्) सं.— एक राजा
का नाम ।

७७७ उग्रशासन (सम्) सं.— कठोर
शासन, कठोर आज्ञा ।

७७७ उग्रसेन (सम्) सं.— कंस के पिता
का नाम ।

७७७ उग्राक्ष (सम्) सं.— महादेव, शिव ।
७७७ उग्राण (क) सं.— सामान आदि रखने
का स्थान, गोदाम, भंडार ; खजाना ।

७७७ उग्राणि (क) सं.— भंडार घर का
रक्षक, भंडार घर के रक्षक का नौकर
(मै.प्र.) ; ग्रामीण सेवक (द.क.) ।

७७७ उग्राणिक (क) सं.— भंडार घर या
गोदाम का रक्षक ।

७७७ उग्राणिसु (क) क्रि.— ढेर होना,
असंख्य होना, असीम होना ।

७७७ उग्रांशक (सम्) सं.— शिव ।

७७७७७ उग्राहि (सम्) सं.— निशाचर, क्रूर सर्प ।

७७७७७ उग्रि (सम्) सं.— एक प्रकार का विष ।

७७७७७ उवे (क) वि. बो.— वाह ! वाह !, शबाश ! — ७७७७७ उवे (दुहराना) ।

७७७७७ उचायिसु, ७७७७७ उचायिसु (क ?) क्रि.— पार कर, उलंघन कर, लांघ, सीधे प्रवेश कर, समय को लांघ ।

७७७७७ उचित (सम्) वि.— योग्य, ठीक, मुनासिब ; मुफ्त, निःशुल्क ; प्रचलित, आदी, अभ्यस्त ; श्लाघ्य, प्रशंसनीय । सं.— पुरस्कार, मुफ्त में दी गयी वस्तु ।

७७७७७ उचितज्ञ (सम्) सं.— वह मनुष्य जो औचित्य को जानता हो, विवेकी पुरुष ।

७७७७७ उच्च (सम्) वि.— ऊँचा, श्रेष्ठ, महान ।

७७७७७ उच्चंगि (क) सं.— एक ग्राम का नाम । — ७७७७७ अम्म, ७७७७७ दुर्गि (क) सं.— उस ग्राम की देवी का नाम ।

७७७७७ उच्छटे (सम् ?) सं.— एक प्रकार की खुशबूदार घास ।

७७७७७ उच्छंड (सम्) वि.— तेज़, तीव्र, फुर्तीला ; भयंकर, भयावह, क्रुद्ध, कुपित ।

७७७७७ उच्छय (सम्) सं.— संग्रह, ढेर, समूह, संमुदाय ; नीवी, स्त्री के वस्त्र की ग्रंथि ।

७७७७७ उच्छरण (सम्) सं. = ७७७७७ उच्छरणे—उच्चारण, कथन ; ऊपर या बाहर जाना ।

७७७७७ उच्छरिते (सम्) वि.— उच्चारण किया हुआ, ऊपर गया हुआ ।

७७७७७ उच्छरिसु (सम्) क्रि.— उच्चारण कर, कह, बोल ।

७७७७७ उच्चल (सम्) सं.— मन ; समझ ।

७७७७७ उच्चलित (सम्) वि.— चलने को तैयार, जाने को उद्यत ; दूर गया हुआ, ऊपर उड़ा हुआ, छलका हुआ, पृथक ।

७७७७७ उच्चलिसु, ७७७७७ उच्चलिसु (सम्) क्रि.— जा, दूर हो, ऊपर जा, छलक, पृथक हो, टुकड़े टुकड़े कर, भेदकर जा, तुरंत निकल ।

७७७७७ उच्चव (तद्) सं.— उत्सव (तत्) ।

७७७७७ उच्चाटन, ७७७७७ उच्चाटने (सम्) सं.— विश्लेषण, निकास ; वियोग, बिछोह ; तांत्रिक षट् कर्मों में एक ।

७७७७७ उच्चापति, ७७७७७ उच्चापत (क ?) सं.— वस्तुएँ उधार लेना ।

७७७७७ उच्चारणे (सम्) सं.— कथन, निरूपण, बोलना, उच्चारण, कंठस्थ करना, अक्षरों को स्पष्ट कहना ।

७७७७७ उच्चालिसु (सम्) क्रि.— पार कर, लांघ ।

७७७७७ उच्चावच (सम्) सं.— असंबद्ध प्रलाप, बड़बड़ना, मूर्ख वचन । वि.— ऊँचा-नीचा, अनियमित ।

७७७७७ उच्चासन (सम्) सं.— ऊँचा आसन या बैठने का स्थान, सिंहासन, चवूतरा ।

७७७७७ उच्चि (क) सं.— कुत्तों को संबोधित करने का शब्द ।

७७७७७ उच्चि (क) सं.— सिर का अग्र भाग, शिखा, चोटी ।

७७७७७ उच्चिके (क) सं.— अतिसार, संग्रहणी रोग, पेट की पीड़ा ।

७७७७७ उच्चिसु (क) क्रि.— खोल, मुक्त कर ।

७७७७७ उच्चु, ७७७७७ उच्चु (क) क्रि.— खींच, बाहर निकाल ; खोल, बंधन शिथिल कर, सुलझा, ग्रंथि खोल ; खुल जा (जैसे पुस्तक खुल जाती है) ; अलग हो, पृथक हो, मुँह खोल ; मुक्त हो ; स्वतंत्र हो ; सीधे प्रवेश कर, विध जा । सं.— बाहर निकलने, खुलने, सुलझाने आदि की स्थिति ।

७७७७७ उच्चूड, ७७७७७ उच्चूल (सम्) सं.— ध्वज-चिह्न, ध्वज का फहरेरा, पताका ।

७७७७७ उच्चे (क) सं.— पेशाब, मूत्र । ७७७७७ उच्चैः शिरः किरणः ? उच्चैः शिरः मीनु हिडियबहुदे ?—पेशाब में क्या मछली पकड़ सकते हैं (कह.) । — ७७७७७ पीडे (क) सं.— मूत्रातिसार, मधुमेह । — ७७७७७ बुरुक (क) सं.— बार-बार पेशाब करनेवाला पुरुष । —

७७७७७ बुरुकि (स्त्री.लि.) । — ७७७७७ रोग (क) सं.— मूत्रातिसार, मधुमेह ।

७७७७७ उच्चेस् (सम्) अ.— ऊँचा, ऊपर, ऊपर की ओर, जोर की आवाज़ के साथ, बहुत अधिक, बहुतायत ।

७७७७७ उच्चैः श्रव (सम्) सं.— दीर्घ कर्ण-वाला, इंद्र का घोड़ा ।

७७७७७ उच्चैस्तर (सम्) वि.— असाधारण, श्रेष्ठ, दैविक, अत्यंत ऊँचा ।

७७७७७ उच्चैर्ध्वनि, ७७७७७ उच्चैर्ध्वनि (सम्) सं.— ऊँची आवाज़ से घोषणा करना ।

७७७७७ उच्छादन (सम्) सं.— शरीर को सुगंधित वस्तु या तेल से मालिश करना ।

७७७७७ उच्छसन (सम्) वि.— अदम्य, दुरंत, दुष्ट ।

७७७७७ उच्छिष्ट (सम्) सं.— जूठा, बचा हुआ ।

७७७७७ उच्छीर्षक (सम्) वि.— तकिया, सिर ।

७७७७७ उच्छृङ्खल (सम्) वि.— बेलगाम का, असंयत, असंयमी, स्वेच्छाचारी, डँवा-डोल ।

७७७७७ उच्छोषण (सम्) सं.— सुखाने-वाला, कुम्हालनेवाला ।

७७७७७ उच्छ्रय, ७७७७७ उच्छ्रय (सम्) सं.— ऊँचाई, उठान, उन्नति, विकास, सघनता ।

७७७७७ उच्छ्रित (सम्) वि.— उठा हुआ, उच्च, उन्नत, ऊपर गया हुआ, गर्वीला ।

७७७७७ उच्छ्रवास (सम्) सं.— ऊपर को खींची हुई साँस, उसाँस, निःश्वास ।

७७७७७ उज्जाडु (अ.दे.) सं.— उजाड़, उजार, निर्जन स्थान, अरण्य ।

७७७७७ उजूरु (अ.दे.) सं.— गौरव ; भेद, अंतर ।

७७७७७ उज्जनित (सम्) वि.— उत्पन्न, जनित, प्राप्त, उपलब्ध, निकला हुआ ।

७७७७७ उज्जवणे (तद्) सं.— उद्यापनम् (तत्) ; समाप्ति, अवसान ।

७५५ उज्जल (तद्) वि.—उज्जल (तद्); प्रकाशमान, कांतियुक्त ।

७५५ उज्जलिके (तद्) सं.—उज्जलता (तद्); प्रकाश, कांति ।

७५५ उज्जसन् (सम्) सं.—हत्या, मारण, घात, मार डालना ।

७५५ उज्जिसु (क) क्रि.—लगवा, रगड़ा (प्रे.) ।

७५५ उज्जीव (सम्) सं.—फिर से जीवित करना, पूर्व रूप में लाना ।

७५५ उज्जीविसु (सम्) क्रि.—फिर से जीवित कर, जीवन-दान कर ।

७५५ उज्जु (क) क्रि.—रगड़, लगा । —

७५५ उज्जु (क) सं.—लकड़ी या काठ को चिकना करने का आयुध ।

७५५ उज्जुग (तद्) सं.—उद्योग (तद्); काम, नौकरी ।

७५५ उज्जुगिसु (तद्) क्रि.—७५५ उज्जुगिसु—काम कर, काम में लग; प्रयत्न कर ।

७५५ उज्जुमित (सम्) वि.—विकसित; खुला; उत्पन्न; खिला, प्रफुल्लित; विस्तृत; मुँह खुला, जंभाई लिया हुआ ।

७५५ उज्जेणि (तद्) सं.—उज्जयिनी (तद्) ।

७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल, ७५५ उज्जल (सम्) वि.—चमकीला, कांतिमान, मनोहर, सुंदर, स्वच्छ, प्रकाशमान । — ७५५ इषु (सम्) क्रि.—प्रकाशमान हो । — ७५५ ते (सम्) सं.—कांति, चमक, शोभा ।

७५५ उज्जलन (सम्) सं.—प्रदीप्त, चमकीला, चमक, कांति ।

७५५ उज्जलविद्ये (सम्) सं.—सुंदर और अच्छी विद्या ।

७५५ उज्जलित (सम्) वि.—चमकदार, शोभायुक्त ।

७५५ उज्जाल (सम्) सं.—ज्वाला, दीप्ति, लौ ।

७५५ उज्जित (सम्) वि.—त्यक्त, त्यागा हुआ, छूटा, छोड़ा हुआ ।

७५५ उट (सम्) सं.—पत्ते, घास आदि जो झोंपड़ी या कुटी बनाने में काम आते हैं ।

— ७५५ ज (सम्) सं.—कुटी, पर्णशाला ।

७५५ उटायिसु (अ.दे.) क्रि.—(‘उठाना’ से) उठा, ऊँचा कर ।

७५५ उट्ट, ७५५ उट्ट, ७५५ उरट्ट, ७५५ उरट (क) सं.—मोटापन, गाढ़ापन (जैसे कपड़े, धागे आदि का होता है) ।

७५५ उट्टर (क) सं.—७५५ उट्ट—नीवी, कमर में बांधी हुई साड़ी की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे ढोरी से या यों ही बांधती हैं ।

७५५ उट्टि (क) सं.—गाली, बुरे वचन, दुर्भाषा; ताक, ताखा, आला; छत्ता ।

७५५ उट्टु (क) सं.—गोलाकार वस्तु; लंगर; छोटा डंडा, नाव खेने का डंडा ।

७५५ उट्टु (क) क्रि.—जन्म ले । सं.—जन्म (प्रे.) ।

७५५ उट्टु (तेलुगु) सं.—ताक (७५५ का ब.व.) । — ७५५ उट्टु (क) सं.—दे. ७५५ ।

७५५ उठाउठी (हिं. ?) अ.—शीघ्र, तुरंत, फौरन ।

७५५ उड, ७५५ उडु (क) सं.—गिरगिट, छिपकली की जाति का एक प्राणी ।

७५५ उड (क) सं.—कमर, कटि । — ७५५ दार (क) सं.—कटिसूत्र, मेखला, मौंजी ।

७५५ उडगिसु (क) क्रि.—झाड़-बुहार करा, साफ़ करा; कम करा, निर्बल करा (प्रे.) ।

७५५ उडगु, ७५५ उडगु (क) क्रि.—झाड़-बुहार कर, झाड़ना; कम हो, दुर्बल हो, सिकुड़, ठिठुर; दबा, प्रतिबंध कर ।

७५५ उडपु, ७५५ उडपु (क) सं.—पहनावा, पोशाक ।

७५५ उडलु (क) सं.—दे. ७५५ ।

७५५ उडसु (क) क्रि.—पहना (प्रे.) ।

७५५ उडाफे (अ. दे.) सं.—विरोध, अस्वीकृति; उपेक्षा, गाली ।

७५५ उडायिसु (हिं.) क्रि.—उपेक्षा कर, अस्वीकार कर (मै. प्र.) ।

७५५ उडाल (क) सं.—चंचलचित्त, सुस्त, बेकार मनुष्य ।

७५५ उडि (क) क्रि.—काट, टुकड़े-टुकड़े हो, टुकड़े होकर विकीर्ण हो (अ. क्रि.); दबा, कुचल, तोड़, फाड़, टूँस । सं.—टुकड़ा, अंश; एक बीमारी; कटि, नितंब; धोती या साड़ी में सामान या छोटी-छोटी वस्तुएँ रखने के लिए बनी थैली या थैली का आकार । — ७५५ कूसु, ७५५ गूसु (क) सं.—नन्हा बच्चा जो माता की गोद (या साड़ी की थैली—‘७५५’) में रहता है, वह बच्चा जिसका पालन-पोषण सावधानी से करना पड़ता है । — ७५५ कल्लि, ७५५ गल्लि (क) सं.—सुपारी रखने की छोटी थैली जो कमर में बाँदी जाती है । — ७५५ दार (क) सं.—दे. ७५५ ।

७५५ उडि (क) क्रि.—पहन, वस्त्रादि धारण कर । सं.—एक पौधा विशेष, अजश्रुंगी (Odina wodier) ।

७५५ उडिके, ७५५ उडिगे, ७५५ उडुगु (क) सं.—पहनावा, पोशाक । — ७५५ गण (क) सं.—वह मनुष्य जिसने विधवा से विवाह किया हो । ७५५ गंडन ७५५ उडिके गंडन उपद्रव बहल—विधवा को व्याहा पुरुष बहुत तंग करता है (कह.) । — ७५५ माडु (क) क्रि.—विधवा को चोली या साड़ी देना और इस प्रकार उसे अपनी पत्नी बनाना । — ७५५ यवळु (क) सं.—विधवा, जिसने दूसरा विवाह किया हो ।

७५५ उडिगु (क) क्रि.—झाड़ना, झाड़-बुहार करना ।

७५५ उडिल् (क) सं.—दे. ७५५ (अंतिम अर्थ) ।

७५५ उडिसु (क) क्रि.—चूर-चूर कर, टुकड़े कर; पहना, धारण करा (प्रे.) ।

ಉಡುಂಬರಿಕೆ ಉಡುಂಬರಿಕೆ (ಸಮ) ಸಂ.— ಉಡುಂಬರಿ.

७७६ उत्त (सम्) अ.— अथवा, या, और ।

७७७७७ उत्कोच (सम्) सं.— रिश्तत,
घूस ।

१०३२ म उत्क्रम (सम्) सं.— प्रस्थान ; नियमविरुद्धता ; उछाल, फलांग ।
 १०३२ म उत्क्रमण (सम्) सं.— निकास, उछाल, प्रस्थान ; मृत्यु । — १०३२ इ सु (सम्) क्रि.— पार हो, प्रस्थान कर ।
 १०३२ ०३ उत्क्रांति (सम्) सं.— उछाल, प्रस्थान, बाहर निकलना ।
 १०३२ १३ उत्क्रोश (सम्) सं.— शोरगुल, कोलाहल ; घोषणा, ढिंढोरा ; कुररी ।
 १०३२ १३ उत्क्षेप (सम्) सं.— फेंकना, विकीर्ण करना ।
 १०३२ १३ उत्खात (सम्) वि.— निकाला हुआ, खोदा हुआ, पदभ्रष्ट ।
 १०३२ उत्त, १०३२ उत्ता (क) प्र.— वर्तमान कालिक कृदंत का सूचक ; उदा.— १०३२ १३ नगुत्ता-नगुत्ता—हँसते-हँसते ।
 १०३२ उत्तंस (सम्) सं.— मुकुट का रत्न, सीसफूल ; कान की बाली या झुमका ।
 १०३२ उत्तंड (सम्) सं.— सोने का हार, (मै.प्र.) ।
 १०३२ ०३ उत्तंडाल (सम्) सं.— दे. १०३२ ०३.
 १०३२ उत्तत्ति, १०३२ उत्तुत्ते, १०३२ उत्तुत्ते (क) सं.— सूखा खजूर ।
 १०३२ उत्तस (सम्) वि.— बहुत गरम ; रुष्ट, क्रुद्ध । सं.— सूखा मांस ।
 १०३२ उत्तम (सम्) वि.— श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । सं.— ध्रुव के भाई का नाम ; अच्छा आदमी । १०३२ म सु १३ १३ १३ १३ १३ उत्तमनु एत होदरु शुभवे—अच्छा आदमी जहाँ भी जाता है, शुभ ही होता है (कह.) ।
 १०३२ १३ उत्तमर्ण (सम्) सं.— कर्ज देनेवाला, साहुकार ।
 १०३२ १३ उत्तमश्लोक (सम्) सं.— पुण्यपुरुष, कीर्तिमान्, प्रशंसा का पात्र ।
 १०३२ १३ उत्तमांग (सम्) सं.— सिर, मस्तक ।
 १०३२ १३ उत्तमाधम (सम्) वि.— श्रेष्ठ-कनिष्ठ, उच्च-नीच ।

१०३२ उत्तमिके (सम्) सं.— श्रेष्ठता, महानता, अच्छाई ।
 १०३२ १३ उत्तमोत्तम (सम्) वि.— अत्यंत श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।
 १०३२ उत्तर (सम्) वि.— उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ, अच्छा, संपन्न ; पीछे का, पिछला, अगला, बाद का । सं.— उत्तर दिशा ; भविष्य ; पार होना, उतरना ; शिव का नाम, विराट के पुत्र का नाम । — १०३२ क्रिये (सम्) सं.— क्रिया-कर्म, मृतक के निमित्त होने-वाला कर्म । — १०३२ क्रोड (सम्) क्रि.— जवाब दे ; विरुद्ध बचन कह । — १०३२ निहिसु (सम्) क्रि.— निरुत्तर कर, मौन कर (मुह.) ।
 १०३२ उत्तरंग (सम्) सं.— द्वार का चौखट । वि.— लहरों से डूबा हुआ, कंपायमान ।
 १०३२ उत्तरच्छद (सम्) सं.— चादर, पलंगपोशा ।
 १०३२ उत्तरण (सम्) सं.— पार होना ।
 १०३२ उत्तरणि, १०३२ उत्तरणे, १०३२ ०३ उत्तराणि, १०३२ ०३ उत्तरेणे (क) सं.— अपामार्ग, एक घास विशेष ।
 १०३२ १३ उत्तरदिग्वर (सम्) सं.— कुबेर ।
 १०३२ १३ उत्तरदेश, १०३२ १३ उत्तरदेस (सम्) सं.— उत्तरभारत ।
 १०३२ १३ उत्तरपक्ष (सम्) सं.— कृष्णपक्ष ; प्रतिवादी ।
 १०३२ १३ उत्तरपूजे (सम्) सं.— अंतिम पूजा ; अपमान करना (धा. प्र.) ।
 १०३२ १३ उत्तरमीमांस (सम्) सं.— वेदांत दर्शन ।
 १०३२ १३ उत्तरवयस्सु (सम्) सं.— बुढ़ापा, बुढ़ावस्था ।
 १०३२ १३ उत्तरवादि (सम्) सं.— प्रतिवादी, प्रतिपक्षी ।
 १०३२ १३ उत्तरसाधक (सम्) सं.— सहायक, मददगार ।
 १०३२ उत्तरा (सम्) सं.— नक्षत्र विशेष ; विराट की पुत्री का नाम ।

१०३२ उत्तराधिकारि (सम्) सं.— वारिस, संपत्ति पाने का हकदार ।
 १०३२ १३ उत्तराभिमुख (सम्) वि.— उत्तर की ओर मुख किया हुआ या मुड़ा हुआ, उत्तर दिशा में गया हुआ ।
 १०३२ १३ उत्तरायण (सम्) सं.— वे छ मास, जिनमें सूर्य की गति उत्तर की ओर झुकी हुई होती है ; उत्तरी मार्ग ।
 १०३२ १३ उत्तराधि (सम्) सं.— जो निंदन करता हो, परकीय ।
 १०३२ १३ उत्तराशपति (सम्) सं.— कुबेर ।
 १०३२ १३ उत्तरासंग (सम्) सं.— ऊपर पहनने का वस्त्र, चादर ।
 १०३२ १३ उत्तरिणे (तद्) सं.— उत्तरीयं (तत्) ; उत्तरीय ।
 १०३२ १३ उत्तरिसु (सम्) क्रि.— उत्तर दे जवाब दे ; हुक्म दे ।
 १०३२ १३ उत्तरीय, १०३२ १३ उत्तरीयं (सम्) सं.— ऊपर पहनने का वस्त्र ।
 १०३२ १३ उत्तरे (सम्) सं.— दे. १०३२ ०३.
 १०३२ १३ उत्तरेद्युः (सम्) अ.— कल अगला दिन ।
 १०३२ १३ उत्तरोत्तर (सम्) अ.— अधिक-अधिक, सदा बढ़नेवाला । सं.— विजय, सुख ।
 १०३२ उत्त, १०३२ उत्तल् (क) अ.— उधर वहाँ, बहुत दूर ।
 १०३२ १३ उत्तवळिके (क) सं.— प्रयत्न कोशिश ।
 १०३२ उत्तान (सम्) वि.— फैला हुआ बिछा हुआ, प्रसारित ; स्पष्ट, साफ । — (सम्) सं.— कुश्ती लड़ने का एक दाँव — १०३२ पाद (सम्) सं.— ध्रुव के पित का नाम । — १०३२ शय (सम्) सं.— दुधमुँह बच्चा ।
 १०३२ उत्तानित (सम्) वि.— ऊपर कँ मुँह किया हुआ या मुड़ा हुआ, मिला य जुड़ा हुआ ।

७७० उत्तर (सम्) सं.—उतारा, ढुलाई, नाव पर लदे माल का उतरना । (क ?) सं.—लौटाना, वापस देना, ऋण चुकाना (मै.प्र.); ग्राम के अधिकारी को उसकी सेवा के बदले मुफ्त में दी हुई सरकार की जमीन जिसके लिए भू-कर नहीं देना पड़ता है ।

७७० उत्तरण (सम्) सं.—उतारा, रक्षण ।

७७० उत्ताल, ७७० उत्ताल (सम्) वि.—बड़ा, बलवान, तेज़, ऊँचा, चपल, कष्टकर ।

७७० उत्तीर्ण (सम्) वि.—उतरा हुआ, पार किया हुआ, आगे बढ़ा हुआ, रक्षित, मुक्त, कृतज्ञता से मुक्त ।

७७० उत्तु (क) कृ.—('७७० या ७७०' = 'जोत' धातु से) —जोतकर, बीज बोकर ।

७७० उत्तुंग (सम्) वि.—उन्नत, श्रेष्ठ, उत्तम, ऊँचा ।

७७० उत्तुम (तद्) वि.—उत्तम (तत्) ।

७७० उत्ते (क) प्र.—अन्य पुरुष न.लिं. का प्रत्यय ; उदा.—'७७० इरुत्ते-है, ७७० बरुत्ते-आता है, ७७० आडुत्ते-खेलता है ।

७७० उत्तेजक (सम्) वि.—प्रेरक, उभाड़नेवाला, उकसानेवाला ।

७७० उत्तेजन (सम्) सं.—प्रोत्साहन, उत्साह, उल्लास, बढ़ावा ।

७७० उत्तेजित (सम्) वि.—प्रेरित, उल्लसित ।

७७० उत्तेलनदंड (सम्) सं.—भारी चीज़ को उठाने के लिए काम में लाया जानेवाला लकड़ी या लोहे का डंडा ।

७७० उत्थ (सम्) वि.—उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ, निकला हुआ ।

७७० उत्थान (सम्) सं.—उदय, उत्पत्ति; उद्योग, प्रयत्न; युद्ध के लिए प्रस्थान; आंगन; अच्छी औपधि; प्रसन्नता; पुस्तक । —७७० द्वादश (सम्) सं.—कार्तिक शुक्ल १२ ।

७७० उत्थापन (सम्) सं.—उठाना, जगाना; प्रतिष्ठा, स्थापना ।

७७० उत्थित (सम्) वि.—उठा हुआ, खड़ा हुआ, स्थापित, उत्पन्न; प्रयत्न किया हुआ ।

७७० उत्पत्तन (सम्) सं.—उड़ान, उछाल, फलांग, कुदान ।

७७० उत्पत्ति (सम्) सं.—जन्म; उत्पादन, उद्गम; लाभ, प्रयोजन ।

७७० उत्पथ (सम्) सं.—बुरा मार्ग, असन्मार्ग; अपराध, पाप; आकाश ।

७७० उत्पन्न (सम्) कृ.—पैदा हुआ, निकला हुआ; कमाया हुआ ।

७७० उत्पल (सम्) सं.—नील कमल, कुमुदिनी । —७७० माले (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम । —७७० मित्र, ७७० सख (सम्) सं.—चंद्रमा । —७७० आसाश्म (सम्) सं.—चंद्रकांत पत्थर ।

७७० उत्पवन (सम्) सं.—शुद्धीकरण, पवित्र, करना, साफ़ करना ।

७७० उत्पाटन (सम्) सं.—जड़ से उखाड़ डालना, नष्ट करना ।

७७० उत्पात (सम्) सं.—उछाल, उड़ान; अपशकुन, भूकंप आदि अशुभसूचक घटनाएँ ।

७७० उत्पातक (सम्) सं.—दे. ७७० दुष्ट, हठीला ।

७७० उत्पाद, ७७० उत्पादन, ७७० उत्पादना (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म, प्राकट्य, प्रादुर्भाव; पैदा करना । —७७० इसु (सम्) क्रि.—पैदा कर, उत्पन्न कर ।

७७० उत्पिज, ७७० उत्पिजल (सम्) वि.—अव्यवस्थित, उलझा हुआ, गड़बड़ ।

७७० उत्पिहित (सम्) वि.—ढका हुआ, बंद ।

७७० उत्पुलक (सम्) वि.—उल्लसित, आनंदित ।

७७० उत्पास (सम्) सं.—अट्टहास; उमार, उठान; हिंसा ।

७७० उत्प्रेक्षण (सम्) सं.—चितवन, अवलोकन, ऊहा; ऊपर की ओर देखने की क्रिया ।

७७० उत्प्रेक्षे (सम्) सं.—ऊहा, संभावना, एक अलंकार ।

७७० उत्प्रेखत् (सम्) वि.—ऊपर तैरता हुआ ।

७७० उत्प्लवन (सम्) सं.—उछाल, छलांग, कुदान; ऊपर तैरना ।

७७० उत्फल, ७७० उत्फुल (सम्) वि.—पूर्णतः विकसित, खुला हुआ, खिला हुआ ।

७७० उत्स (सम्) सं.—चश्मा, सोता, झरना, स्रोत ।

७७० उत्संग (सम्) सं.—मिलन, संयोग; गोद, अंक; ढाल, उतार ।

७७० उत्सर्ग (सम्) सं.—त्याग, न्यास; गिरना, उड़ेलना; भेंट, दान; साधारण नियम ।

७७० उत्सर्जन, ७७० उत्सर्जने (सम्) सं.—न्यास, त्याग, परित्याग; भेंट, पुरस्कार, दान; (वैदिक) अध्ययन को स्थगित करना । —७७० उत्सर्जिसु (सम्) क्रि.—छोड़, परित्याग कर ।

७७० उत्सर्पण (सम्) सं.—ऊपर जाना या सरकना, फैलाना, उभरना, फिसलना ।

७७० उत्सव (सम्) सं.—जलसा; समारोह, मंगल-कार्य, त्योहार, मेला । —७७० इसु (सम्) क्रि.—मज़ा कर, आनंद मना ।

७७० उत्सह (तद्) सं.—उत्साह (तत्); त्योहार; उत्सव; आनंद ।

७७० उत्सादन (सम्) सं.—नाश, विनाश; सुगंधि; खेत को अच्छी तरह जोतना; चढ़ना, उठना ।

७७० उत्सरित (सम्) वि.—बाहर करनेवाला, दूर करनेवाला, मारनेवाला । सं.—सिपाही, चौकीदार, द्वारपाल ।

७७० उत्सारित (सम्) वि.—दूर किया हुआ, निकाला हुआ, त्यक्त, मुक्त ।

७७० उत्साह (सम्) सं.—उमंग, जोश, हौसला; शक्ति, सामर्थ्य; दृढ़ संकल्प ।

७७० उत्साहि (सम्) सं.—उत्साही पुरुष, फुर्तीला मनुष्य ।

७८० उदिर

७८० उदिर (सम्) वि.— छिड़का हुआ, अभिमानी, क्रोधी, अकड़बाज़।

७८० उदिर (सम्) वि.— उत्कंठित, फुर्तीला, अत्यंत इच्छावान, उद्विग्न; व्याकुल, विकल।

७८० उदिर (सम्) सं.— उत्साह, उत्कंठा, शीघ्रता, उल्लास।

७८० उदिर (सम्) वि.— त्यक्त, छोड़ा गया, मुक्त।

७८० उदिर (सम्) सं.— अहंकार, गर्व; हठ; क्रोध।

७८० उदिर (सम्) सं.— उच्च स्थान, मोटापन; शरीर; अच्छा काम; लाभ; हत्या।

७८० उदिर (सम्) अ.— उपसर्ग, जो निम्नांकित अर्थ का है—ऊपर, बाहर; अलग, पृथक; लाभ, अर्जन; लोक प्रसिद्धि; कौतूहल; चिंता; मुक्ति; अनुपस्थिति; बढ़ाना, खोलना; मुख्यता, शक्ति।

७८० उदिर (सम्) सं.— जल, पानी।

७८० उदिर, ७८० उदिर (सम्) वि.— उत्तरदिशा का, ऊपर का।

७८० उदिर (सम्) सं.— रजस्वला स्त्री।

७८० उदिर (सम्) सं.— सूर्य का उत्तर की ओर गमन, उत्तरायन।

७८० उदिर (सम्) वि.— ऊँचा, आगे बढ़ा हुआ; भयंकर; उत्तेजित; बड़ा, श्रेष्ठ।

७८० उदिर (सम्) सं.— जल में उत्पन्न, कमल।

७८० उदिर (सम्) सं.— प्रगतिगामी, लक्ष्य तक पहुँचनेवाला।

७८० उदिर (सम्) सं.— डोल, वाल्टी; ढकन, ओढ़नी।

७८० उदिर (सम्) वि.— ऊपर की ओर घूमा हुआ, निकाला हुआ।

७८० उदिर (सम्) सं.— जलराशि, समुद्र।

७८० उदिर (सम्) सं.— समाचार, खबर; वर्णन, इतिहास; साधु पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— समुद्र, सागर।

७८० उदिर (सम्) सं.— कृप, कुर्बानी।

७८० उदिर (सम्) सं.— जन्म, उगना, उत्पत्ति, उपज; उठना, ऊँचा होना;

उदयगिरि, उन्नति; अभ्युदय; परिणाम; पूर्णता, परिपूर्णता; लाभ, नफ़ा; आमदनी;

आय; व्याज, सूद; कांति, चमक। — ७८० उदिर (सम्) सं.— सूर्योदय का समय।

— ७८० राग (सम्) सं.— सूर्योदय के समय की लालिमा।

७८० उदिर (सम्) सं.— पूर्वदिशा का पर्वत।

७८० उदिर (सम्) सं.— उदित होनेवाला सूर्य; चंद्रवंश के एक राजा का नाम।

७८० उदिर (सम्) क्रि.— उदय हो; उत्पन्न हो, निकल, प्रकट हो।

७८० उदिर (सम्) सं.— पेट, गर्भ। — ७८० उदिर (सम्) सं.— जीवन-निर्वाह, जीवनोपाय। — ७८० उदिर (सम्) सं.— पेट भरना, जीवन-निर्वाह।

७८० उदिर (सम्) सं.— जटराग्नि। — ७८० उदिर (सम्) सं.— पेट का दर्द।

७८० उदिर (सम्) सं.— केवल पेट भरने के निमित्त जीवित रहनेवाला।

७८० उदिर (सम्) सं.— नाभि। ७८० उदिर (सम्) सं.— बड़े पेट या तोंद वाली।

७८० उदिर (क) क्रि.— गिर (पत्तों का गिरना)। — ७८० उदिर (क) क्रि.— गिर (प्रे.)।

७८० उदिर (सम्) सं.— भविष्य, भविष्य का फल।

७८० उदिर (सम्) सं.— उमड़ आनेवाले आँसू।

७८० उदिर (सम्) सं.— घर, मकान, निवास स्थान।

७८० उदिर (सम्) सं.— समुद्र; समुद्र में रहना।

७८० उदिर (सम्) सं.— समान रूप से मिला हुआ पानी और मट्टी।

७८० उदिर (सम्) सं.— समान रूप से मिला हुआ पानी और मट्टी।

७८० उदिर (सम्) सं.— समान रूप से मिला हुआ पानी और मट्टी।

७८० उदिर (सम्) सं.— समान रूप से मिला हुआ पानी और मट्टी।

७८० उदिर (सम्) वि.— फेंका हुआ, उड़ाया हुआ।

७८० उदिर (सम्) वि.— श्रेष्ठ, उन्नत, प्रख्यात, कुलीन, दानी, महिमान्वित। सं.— दान, भेंट; वाद्य यंत्र विशेष। — ७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७८० उदिर (सम्) सं.— कुलीन, उदार गुणवाला पुरुष।

७०३०० उदिर्चु, ७०३०० उदिरिसु, ७०३०० उदुरुसु (क) क्रि.— नीचे गिरा, (पत्तों को) गिरा ।

७०३०० उदिसु (सम्) क्रि.— उदित हो, पैदा हो, निकल ।

७०३०० उदीचि, ७०३०० उदीची (सम्) सं.— उत्तर दिशा ।

७०३०० उदीचीन (सम्) सं.— औत्तरेय, उत्तर का आदमी ।

७०३०० उदीच्य (सम्) वि.— उत्तर का, उत्तर दिशा से संबंधित ।

७०३०० उदीरण (सम्) सं.— कथन, उच्चारण, प्रकटन । वि.— बड़ा हुआ, भागे किया हुआ ।

७०३०० उदीर्ण (सम्) वि.— बढ़ा हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न हुआ, उदार, महान, बड़ा, खिंचा हुआ ।

७०३०० उदु (क) सर्व.— 'यह' और 'वह' के बीच का सूचक सर्व. । प्र.— अन्य पुरुष न.लि., ए.व. प्रत्यय, उदा.— बंधु—आया, बंधु—आगुवुदु—होगा । बंधु—आया, बंधु—आगुवुदु (बंधु+आया) —करना, बंधु—आगुवुदु (बंधु+आया) —कहना ।

७०३०० उदुगरिसु (तद्) क्रि.— ('उद्गार' से)—कह ; वमन कर ; छोट ; छोड़ ।

७०३०० उदुभव (तद्) सं.— उद्भव (तत्) ; जन्म ; उत्पत्ति, उद्भव स्थान । — इस (तद्) क्रि.— जन्म ले, उत्पन्न हो ।

७०३०० उदुंबर (सम्) सं.— औदुंबर, उदुंबर, गूलर का पेड़ ; ताम्र ; देहली, इयोही । — मशक (सम्) सं.— उदुंबर के फल के अंदर का फीड़ा ।

७०३०० उदुखल (सम्) सं.— उल्लखल, ओखली ।

७०३०० उदो, ७०३०० उधो (क) वि.बो.— ओहो ! ओहो (देवी के नाम पर किया जाने वाला जयघोष) ।

७०३०० उद्गत (सम्) वि.— उठा हुआ, चढ़ा हुआ, निकला हुआ ।

७०३०० उद्गति (सम्) सं.— उठान, उगना, निकास, उद्गम ।

७०३०० उद्ग्रथ (सम्) वि.— अत्यधिक सुगंधित, खुशबूदार ।

७०३०० उद्गम (सम्) सं.— उदय, आविर्भाव, उत्पत्ति का स्थान, निकास ; फूल, कली ; वमन । — मंजरि (सम्) सं.— फूलों का गुच्छा । सार (सम्) सं.— मधु, पराग ।

७०३०० उद्गमन (सम्) सं.— उदय, आविर्भाव, उत्पत्ति ।

७०३०० उद्गमनीय (सम्) वि.— चढ़ा हुआ, ऊपर गया हुआ ।

७०३०० उद्गमिसु (सम्) क्रि.— चढ़, ऊपर आ, उठ ।

७०३०० उद्गलित (सम्) वि.— पड़ा, पड़ा हुआ ।

७०३०० उद्गातृ (सम्) सं.— उद्गाता, यज्ञ में सामवेद का गान करनेवाला ।

७०३०० उद्गार (सम्) सं.— उबाल, उफान ; वमन, थूक, खखार ; डकार ; कथन, अपने अभिप्राय का प्रकटन ।

७०३०० उद्गीर्ण (सम्) वि.— वमन किया हुआ, उगला हुआ, उड़ेला हुआ, बाहर निकला हुआ ।

७०३०० उद्ग्रथ (सम्) सं.— बड़ा ग्रंथ, बड़ी पोथी ।

७०३०० उद्गीव (सम्) वि.— सिर ऊपर उठा हुआ, गर्दन ऊपर उठा हुआ ।

७०३०० उद्घ (सम्) सं.— शक्ति ; आनंद ; प्रधानता ; आदर्श नमूना ।

७०३०० उद्घट (सम्) सं.— बड़ा बर्तन, एक प्रकार का बर्तन ।

७०३०० उद्घटन (सम्) सं.— खोलना, बंधन या ग्रंथि को खोलना ; स्पष्ट रूप से कहना । — इस (सम्) सं.— स्पष्ट हो, प्रकट हो, प्रकाशित हो ।

७०३०० उद्घटन, (सम्) सं.— रगड़, ताड़न ।

७०३०० उद्घाट (सम्) सं.— चौकी, रक्षा का स्थान ।

७०३०० उद्घाटक (सम्) सं.— खोलने-वाला ; चाबी, कुंजी ; कुएं पर की रस्सी और डोल ।

७०३०० उद्घाटन (सम्) सं.— खोलना, प्रकाशन, प्रकटन, प्रारंभ करना ।

७०३०० उद्घात (सम्) सं.— आरंभ, प्रारंभ ; ताड़न ; आयुध ; प्रकरण, परिच्छेद ; झटका, जो गाड़ी में बैठने पर लगता है, प्राणायाम । ७०३०० उद्घासि (सम्) सं.— अच्छी तलवार, उत्तम खड्ग ।

७०३०० उद्घृष्ट (सम्) वि.— अच्छी तरह रगड़ा हुआ, घोंटा हुआ ।

७०३०० उद्घोषण, (सम्) सं.— घोषणा, हिंदोरा, जोर से चिल्लाना, गर्जन । — ७०३०० उद्घोषिसु (सम्) क्रि.— जोर से चिल्ला, गर्जन कर, घोषणा कर ।

७०३०० उद् (तद्) सं.— ऊर्ध्व (तत्) ; ऊँचाई, लंबाई, गहराई, (गर्व) । ७०३०० उद्गल (७०३०० + ७०३००) — लंबाई-चौड़ाई ऊँचाई-चौड़ाई । — ७०३०० उरुदु (क) वि.— ठीठ, घट । ७०३०० उरुदु (क) वि.— उरुदुतनकके गुदे महु—घटता का दंड थप्पड़ ही है (कह.) ।

७०३०० उद्गंश (सम्) सं.— खटमल ; चिल्ला ; मच्छर ।

७०३०० उद्गंड (सम्) वि.— डंडुल सहित ; डंडा उठाए हुए ; उठा हुआ, उच्च ; साहसी, गर्वीला ; भयानक, क्रूर ; घट, ठीठ । — उद्गंश (सम्) सं.— घटता, ठिठाई, गर्वपूर्ण व्यवहार । — उद्गंश (सम्) सं.— ऊँचाई, महानता । — उद्गंश (सम्) सं.— गर्व, गर्वपूर्ण व्यवहार, घटता । — इस (सम्) क्रि.— ठिठाई कर, गर्वपूर्ण-व्यवहार कर ।

७०३०० उद्गन, ७०३०० उद्गन (तद्) वि.— ऊँचा, लंबा ।

७०३०० उद्गमि, ७०३०० उद्गमि (तद्) सं.— उद्यम (तत्) ; नौकरी, व्यवहार ।

७७५७ उद्यत् (सम्) वि.— उत्पन्न होनेवाला,
शोभित, ऊँचा, महान ।

ಉದ್ಯುತಃ ಉದ್ಯತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಲಗಾಹು, ಉಪರ,
ಉಠಾ ಹು, ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ ; ಚಪಲ, ತುಲಾ ಹು ।
ಉದ್ಯುಮಃ ಉದಮ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪರಿಶ್ರಮ, ಉದ್ಯೋಗ,
ಅಭ್ಯವಸಾಯ, ನೌಕರೀ, ಕಾಮ ; ಉತ್ಯಾನ,
ಉತ್ಯಯನ ।

ಉದ್ಯುಮಿ ಉದಮಿ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉದಮ ಕರ್ತವ್ಯವಾಳಾ,
ಪ್ರಯತ್ನಶೀಲ, ಸಾಹಸಿ, ಕಾಮ ಕರ್ತವ್ಯವಾಳಾ ।—
ದಾರ ದಾರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ದೇ. ಉದ್ಯುಮಿದಾರಃ ।
ಉದ್ಯಾನಃ ಉದ್ಯಾನ, ಉದ್ಯಾನವನಃ ಉದ್ಯಾನವನ
(ಸಮ್) ಸಂ.—ಉಪವನ, ಬಾಗ ; ಗಮನ,
ಬಹಿರ್ಗಮನ ।

ಉದ್ಯಾಪನಃ ಉದ್ಯಾಪನ, ಉದ್ಯಾಪನೆ
(ಸಮ್) ಸಂ.—ಸಮಾಪ್ತಿ, ಅವಸಾನ ; ಕಿಸಿ
ವ್ಯೋಹಾರ, ಪರ್ವ ಯಾ ಉತ್ಸವ ಕೀ ಸಮಾಪ್ತಿ ।

ಉದ್ಯುಕ್ತಃ ಉದ್ಯುಕ್ತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಲಗಾ ಹು, ತಯಾರ ;
ಫುರ್ತಿಲಾ, ಉತ್ಕೇಜಿತ ।

ಉದ್ಯೋಗಃ ಉದ್ಯೋಗ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಕಾಮ, ಕಾಮ-
ಭಂಧಾ, ಉದಮ, ನೌಕರೀ ; ಪರಿಶ್ರಮ ; ವ್ಯಾಪಾರ,
ಕಾರ್ಯಾಲಯ, ಆಫೀಸ ; ಸ್ಥಾನ, ಸ್ಥಿತಿ । —
ಇ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಕಾಮ ಕರ್ತವ್ಯವಾಳಾ । —
ಇಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಕಾಮ ಮೇಲೆ ಲಗ । —
ಸ್ಥ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಹ, ಜಿಸಕೋ ನೌಕರೀ
ಹೊ, ನೌಕರ ।

ಉದ್ರಃ ಉದ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಜಲ ಕೀ ವಿಲಿ, ಉದ್ರಿಲಾಬ ।

ಉದ್ರಿಕ್ತಃ ಉದ್ರಿಕ್ತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಬಡಾ ಹು, ಅತ್ಯಧಿಕ,
ಉತ್ಕೇಜಿತ, ವಿಪುಲ ।

ಉದ್ರೇಕಃ ಉದ್ರೇಕ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವೃದ್ಧಿ, ಬಡ್ತಿ,
ಅಧಿಕತಾ, ವಿಪುಲತಾ, ಉತ್ಕೇಜನಾ-ಭೋಗ, ಭುಕ್ತಿ ।
—ಇಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಉದ್ರ, ಕ್ರೋಧ
ಉತ್ಪನ್ನ ಕರ ।

ಉದ್ವರ್ತಃ ಉದ್ವರ್ತ, ಉದ್ವರ್ತನಃ ಉದ್ವರ್ತನ (ಸಮ್)
ಸಂ.—ಉಪರ ಜಾನಾ, ನಿಕಲನಾ, ಬಾಡ (ಪೌರೋ
ಕೀ) ; ಸಮೃದ್ಧಿ, ಉತ್ಪನ್ನ ; ಬಹು ; ಸುಗಂಧ-
ಲೇಪನ, ತೆಲ-ಫುಲೆಲ ಕೀ ಮಾಲಿಶ । —
ಉದ್ಯಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸ್ನಾನ-ಘರ ।

ಉದ್ವಹಃ ಉದ್ವಹ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಆನಂದ, ಹರ್ಷ ।

ಉದ್ವಹನಃ ಉದ್ವಹನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉಪರ ಉಠಾನಾ,
ಲೇ ಜಾನಾ ; ಸಹಾರಾ ; ವಿವಾಹ ।

ಉದ್ವಹಃ ಉದ್ವಹ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸಹಾರಾ ;
ಪರಿಣಯ, ವಿವಾಹ ।

ಉದ್ವಹನಃ ಉದ್ವಹನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ದೇ. ಉದ್ವಹನಃ ।
—ಉದ್ವಹನಃ ಉದ್ವಹನ (ಸಮ್) ವಿ.—
ವಿವಾಹ ಸೇ ಸಂಬಂಧಿತ ।

ಉದ್ವಹಿಸುಃ ಉದ್ವಹಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ವಿವಾಹ
ಕರ, ಪರಿಣಯ ಕರ ।

ಉದ್ವಿಗ್ನಃ ಉದ್ವಿಗ್ನ (ಸಮ್) ವಿ.—ದುಃಖಿ, ಸಂತಪ್ತ,
ಉದಾಸ, ವಿಗ್ನ ।

ಉದ್ವೃತ್ತಃ ಉದ್ವೃತ್ತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉಠಾ ಹು, ಜಾ,
ಉಚ್ಛಾ ಕಿಯಾ ಹು, ಉತ್ಪತ್ತ, ಉಠಾ ಹು ;
ಗರ್ವಿಲಾ, ಉದ್ವೃತ್ತ ।

ಉದ್ವೃತ್ತಿಃ ಉದ್ವೃತ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಗರ್ವ, ಹಠ,
ಉದ್ವೃತ್ತ ।

ಉದ್ವೇಗಃ ಉದ್ವೇಗ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಭಯ, ಆಶಂಕಾ ;
ಉದ್ವೇಗ, ಚಿಂತಾ ; ಕಂಪನ, ಉದ್ವೇಗಾಹ ; ಆಶ್ಚರ್ಯ ।

ಉದ್ವೇಗಿಸುಃ ಉದ್ವೇಗಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ವೇಗ ಸೇ ಜಾ ।

ಉದ್ವೇಜಿಸುಃ ಉದ್ವೇಜಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಉದ್ರಾ,
ಭಯಭೀತ ಕರ, ಕಂಪಾ, ಉದ್ವೇಜಾ ।

ಉದ್ವೇಲಃ ಉದ್ವೇಲ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮರ್ಯಾದಾ ಕಾ
ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಸೀಮಾ ಕೋ ಪಾರ ಕರ ಬಹನಾ ।

ಉನಿಃ ಉನಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜಲ ಸೇ ಸಿಂಚಿತ ಹೊ,
ಸಿಂಚ । ಉನಿಯಾಹುಃ ಉನಿಯಾಹುಃ—ಜಲ ಸೇ
ಸಿಂಚ । ಉನಿಸುಃ ಉನಿಸುಃ—ಸಿಂಚ ।

ಉನಿತಃ ಉನಿತು (ಕ) ವಿ.—ಉನಿತಾ, ಇಸು ಪರಿಮಾಣ
ಕಾ ; ಉನಿತಾ ।

ಉನ್ನಃ ಉನ್ನ (ಸಮ್) ವಿ.—ತರ, ಆದ್ರ್ವ, ಗಿಲಾ ;
ಕರುಣ । ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉಠಾ ಹು, ಉನ್ನತ,
ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ । —ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್)
ಸಂ.—ಉನ್ನತ ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತನಃ ಉನ್ನತನ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ-
ನಿನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಿಃ ಉನ್ನತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ,
ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಿಕಃ ಉನ್ನತಿಕ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ,
ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತೋನ್ನತಃ ಉನ್ನತೋನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ
ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತಃ
ಉನ್ನತ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಕ) ಸರ್ವ.—ಉನ್ನತ (ಲೋಗ) ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

ಉನ್ನತಃ ಉನ್ನತ (ಸಮ್) ವಿ.—ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ, ಉನ್ನತ ।

७७६९०९ उन्मीलन (सम्) सं.— (नेत्रों का) खोलना, जागना ; विकसित होना, खिलना ।

७७६९०९ उन्मीलित (सम्) वि.— खुला, मुक्त, विकसित ।

७७६९०९ उन्मुक्ति (सम्) सं.— मोक्ष, खोलना, छोड़ना ।

७७६९०९ उन्मुख (सम्) वि.— ऊपर मुँह किए, ऊपर ताकता हुआ ; घमंडी, अभिमानी, उत्कंठित, उत्सुक, उद्यत, तैयार ।

७७६९०९ उन्मूलन (सम्) सं.— जड़ सहित निकालना, निर्मूलन ।

७७६९०९ उन्मेषण (सम्) सं.— खुलन, (नेत्रों का) खोलना, जागृति ; विकसित होना, खिलना ।

७७६९०९ उप (सम्) अ.— निम्नांकित अर्थों का बोधक उपसर्ग— सामीप्य, नैकट्य ; बल, योग्यता ; व्याप्ति ; उपदेश ; मृत्यु, नाश ; थोड़ा, कुछ ; त्रुटि, दोष ; उद्योग, क्रिया ; अध्ययन ; सम्मान, पूजन ; सादृश्य ; वशत्व ।

७७६९०९ उपकंठ (सम्) सं.— सामीप्य, पड़ोस में, गर्दन के ऊपर ।

७७६९०९ उपकथे (सम्) सं.— छोटी कहानी, गल्प ।

७७६९०९ उपकरण (सम्) सं.— सामान, सामग्री, साधन, उपस्कर ।

७७६९०९ उपकरिषु (सम्) क्रि.— उपकार कर, सहायता कर ।

७७६९०९ उपकार, ७७६९०९ उपकृति (सम्) सं.— सहायता, हित, मदद ; अनुग्रह, कृपा, सहायभूति ।

७७६९०९ उपकारिके (सम्) सं.— उपकार करनेवाली स्त्री ; महल, राजप्रसाद ।

७७६९०९ उपकुर्वाण (सम्) सं.— ब्रह्मचर्य से गृहस्थाश्रम में प्रवेश करनेवाला ।

७७६९०९ उपकुल्ये (सम्) सं.— नहर, खाई, गंदे पानी का नाला ।

७७६९०९ उपक्रम (सम्) सं.— प्रारंभ, आरंभ, श्रीगणेश ।

७७६९०९ उपक्रमि (सम्) सं.— आरंभ

७७६९०९ उपक्रोश (सम्) सं.— फटकार, डाँट-डपट, भर्त्सना ।

७७६९०९ उपक्षम (सम्) सं.— सहनशीलता, क्षमा ।

७७६९०९ उपख्यात (सम्) सं.— देखा हुआ, प्रसिद्ध ।

७७६९०९ उपगत (सम्) वि.— गया हुआ, समीप आया हुआ ; घटित, प्राप्त ।

७७६९०९ उपगम, ७७६९०९ उपगमन (सम्) सं.— गमन, समीप गमन, परिचय, ज्ञान, प्राप्ति ।

७७६९०९ उपगिरि (सम्) सं.— पर्वत के समीप का टीला, पर्वत की तलहटी ।

७७६९०९ उपगृह (सम्) सं.— घर का कमरा ।

७७६९०९ उपग्रह (सम्) सं.— बड़े ग्रह से संबधित छोटा ग्रह ; ग्रहण ; बंदी ; अनुग्रह । ७७६९०९ उपग्रहण (सम्) सं.— कैद करना, वेदों का अध्ययन ।

७७६९०९ उपग्राम (सम्) सं.— ग्राम, बस्ती ।

७७६९०९ उपग्राह्य (सम्) सं.— स्वीकार्य, स्वीकार करने योग्य ; अत्यंत पूज्य ।

७७६९०९ उपग्न (सम्) सं.— आश्रय, आधार, सहारा, संरक्षण ।

७७६९०९ उपघात (सम्) सं.— चोट, घाव ; नाश ।

७७६९०९ उपचय (सम्) सं.— संचय, संग्रह ; वृद्धि, उन्नति ।

७७६९०९ उपचरण, ७७६९०९ उपचार, ७७६९०९ उपचर्ये (सम्) सं.— समीप गमन, अतिथि-सेवा, आदरोपचार, चिकित्सा, इलाज ।

७७६९०९ उपचरिषु (क) क्रि.— आदर प्रकट कर, स्तुति कर, विनय प्रकट कर, करुणा कर ।

७७६९०९ उपचित (सम्) वि.— संग्रहीत, जमा किया हुआ, उन्नत ।

७७६९०९ उपजिह्वे (सम्) सं.— और एक जिह्वायुक्त, सांप ।

७७६९०९ उपजीवक (सम्) सं.— दूसरे के आधार पर रहनेवाला, परतंत्र, अनुचर ।

७७६९०९ उपजीवन (सम्) सं.— जीविका, रोजी, जीविकासाधन, निर्वाह ।

७७६९०९ उपजीवि (सम्) सं.— अनुचर, सेवक ।

७७६९०९ उपजोष, ७७६९०९ उपजोषण (सम्) सं.— स्नेह ; भोगविलास, वृत्ति ; मौन । अ.— मौन रूप से, शांति से ।

७७६९०९ उपज्ञ (सम्) वि.— स्वतंत्र ज्ञानवाला । — उपज्ञे (सम्) सं.— स्वतंत्र विचारशीलता, प्रतिभा ।

७७६९०९ उपटल (क) सं.— कष्ट, तकलीफ, पीड़ा ; उपद्रव ।

७७६९०९ उपतंड (क) सं.— छोटी टोली । ७७६९०९ उपताप (सम्) सं.— दर्द ; पीड़ा ; रोग, बीमारी ; विपदा, उपद्रव ।

७७६९०९ उपत्यक, ७७६९०९ उपत्यका, ७७६९०९ उपत्यके (सम्) सं.— पहाड़ के नीचे की भूमि, तलहटी ।

७७६९०९ उपदंश (सम्) सं.— प्यास या भूख को भड़कानेवाली वस्तु ; डसना, डंक मारना ; गर्मी की बीमारी, मेद रोग ।

७७६९०९ उपदान, ७७६९०९ उपदानक (सम्) सं.— दान, बलि, चढ़ावा, रिश्वत । ७७६९०९ उपदष्ट (सम्) सं.— उदाहरण, देखा हुआ ।

७७६९०९ उपदेश (सम्) सं.— शिक्षा, नसीहत, हितवचन ; दीक्षागुरुमंत्र, सविशेष विवरण । ७७६९०९ उपदेश (सम्) सं.— उपदेश सुनने के बाद भी उपद्रव कम नहीं हुआ (कह.) ।

— उपदेश देनेवाला ।

७७६९०९ उपद्र (तद्) सं.— उपद्रव (तद्) । ७७६९०९ उपद्रव (सम्) सं.— उत्पात, बाधा, संकट, कष्ट, विपदा, हिंसा, दुःख ।

७७६९०९ उपद्वीप (सम्) सं.— द्वीप ; छोटा द्वीप ।

७०८६०८ उपधान (सम्) सं.— जिस पर रखकर सहारा लिया जाय, तकिया; विशेषता; व्यक्तित्व; धार्मिक अनुष्ठान; विष, जहर।
— ७०८६०८०० उपधानीय (सम्) सं.— तकिया।

७०८६०८ उपधि (सम्) सं.— धोखेवाजी, धेड़मानी, कपट, छल; भय, घमकी; पहिया या पहिये का विशेष स्थान।

७०८६०८ उपधति (सम्) सं.— शोभा, कांति, चमक, रश्मि।

७०८६०८ उपधे (सम्) सं.— कपट, छल, सत्य का अपलाप; सच्चाई की परीक्षा।

७०८६०८ उपध्मान (सम्) सं.— अधर, होंठ। — ७०८६०८०० उपध्मानीय (सम्) सं.— होंठ से उच्चरित होनेवाले अक्षर।

७०८६०८ उपनगर (सम्) सं.— उपपुर, नगर, प्रांत; नगर का बाहरी भाग।

७०८६०८ उपनत (सम्) वि.— झुका हुआ, नमस्कृत, अवलंबित, आया हुआ, प्राप्त।

७०८६०८ उपनदि (सम्) सं.— छोटी नदी, बड़ी नदी की शाखा।

७०८६०८ उपनदन (सम्) सं.— उद्यान, आराम, बाग।

७०८६०८ उपनयन (सम्) सं.— यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञोपवीत-संस्कार, गुरु के पास ले जाना।

७०८६०८ उपनाम (सम्) सं.— कल्पित नाम, संक्षिप्त नाम, चिढ़ाने का नाम।

७०८६०८ उपनाह (सम्) सं.— धीटा, बंडल, मलहम, लेप; सितार की खूँटी।

७०८६०८ उपनिधि (सम्) सं.— मुहर लगाकर रखी हुई अमानत, गिरवी रखी हुई वस्तु, धरोहर, बंधक।

७०८६०८ उपनिपत्, ७०८६०८ उपनिपत्तु (सम्) सं.— उपनिपद्, वेद की शाखा के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग, जिनमें आत्मा-परमात्मा का विचार तत्त्व है, वेदों के गुप्तार्थ प्रकाशक ग्रंथ, ज्ञान, रहस्य, ग्रहज्ञान।

७०८६०८ उपनिष्कर (सम्) सं.— राजमार्ग, प्रधान मार्ग।

७०८६०८ उपनीत (सम्) वि.— समीप लाया हुआ, यज्ञोपवीत धारण कराया हुआ।

७०८६०८ उपन्यास (सम्) सं.— भाषण, सूचना, विवरण; परिचय प्राप्त करना, चर्चा; धरोहर, बंधक, अमानत; शासन, नियम।

७०८६०८ उपपत्ति (सम्) सं.— जार।

७०८६०८ उपपत्ति (सम्) सं.— उत्पत्ति, प्राप्ति, सिद्धि, प्रतिपादन; संगति, युक्ति; हेतु, प्रमाण; योग्यता, उपयुक्तता।

७०८६०८ उपपत्ति (सम्) सं.— जारिणी।

७०८६०८ उपपद् (सम्) सं.— प्रधान शब्द के साथ अर्थांतर उत्पन्न करनेवाला दूसरा शब्द, उपाधि, प्रशस्ति।

७०८६०८ उपपन्न (सम्) वि.— लब्ध, प्राप्त, मिला हुआ, उपयुक्त, उचित, योग्य, पर्याप्त, उदाहृत, उत्पन्न।

७०८६०८ उपपातक (सम्) सं.— छोटा पाप, पंच महापातकों के अतिरिक्त पातक।

७०८६०८ उपपादन (सम्) सं.— सिद्धि, निश्चय, ठहराव, निर्णय, परीक्षा, अवगति।

७०८६०८ उपपादित (सम्) वि.— सिद्ध किया हुआ, सावित।

७०८६०८ उपपुराण (सम्) सं.— अठारह महापुराणों के अतिरिक्त अन्य छोटे पुराण।

७०८६०८ उपप्लव (सम्) सं.— कष्ट, संकट, विपत्ति, क्लेश; अशुभ घटना, सूर्य या चंद्र-ग्रहण, उल्कापात; राज्यक्रांति।

७०८६०८ उपवर्ह, ७०८६०८ उपवर्हण, ७०८६०८ उपवर्ह (सम्) सं.— तकिया।

७०८६०८ उपभक्ति (सम्) सं.— भक्ति से संबंधित व्रत-नियम।

७०८६०८ उपभाग (सम्) सं.— उपशाखा, छोटा भाग; नगर का समीप भाग।

७०८६०८ उपभोग (सम्) सं.— भोगविलास, सुख का अनुभव, आनंद, संतोष। — ७०८६०८ इसु (सम्) क्रि.— आनंद का अनुभव कर, मज़ा कर।

७०८६०८ उपम, ७०८६०८ उपमा (सम्) सं.— समानता, सादृश्य, तुलना; एक अलंकार विशेष।

७०८६०८ उपमर्द, ७०८६०८ उपमर्दन (सम्) सं.— रगड़, कुचलन, निचोड़; दर्द, पीड़ा; भर्त्सना, गाली।

७०८६०८ उपमातृ (सम्) सं.— सौतेली माँ, दाई माँ।

७०८६०८ उपमान (सम्) सं.— वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय, समानता का सूचक; छोटी माप।

७०८६०८ उपमित (सम्) वि.— जिसके साथ तुलना की गई हो, तुलना किया हुआ। — ७०८६०८ उपमिसु (सम्) क्रि.— तुलना कर, समानता का अवलोकन कर।

७०८६०८ उपमेय (सम्) सं.— मापने की वस्तु; तुलना करने की वस्तु।

७०८६०८ उपयम, ७०८६०८ उपयाम (सम्) सं.— विवाह, परिणय।

७०८६०८ उपयुक्त (सम्) वि.— योग्य, ठीक, उचित, उपयोगी।

७०८६०८ उपयोग (सम्) सं.— काम, व्यवहार, प्रयोग, इस्तेमाल।

७०८६०८ उपरक्त (सम्) वि.— पीड़ित, संतप्त, ग्रस्त, रंगीन, अंधकार से पूर्ण। सं.— राहु-केतु ग्रस्त, चंद्र-सूर्य।

७०८६०८ उपरत (सम्) वि.— बंद किया हुआ, मारा हुआ, मृत।

७०८६०८ उपरति (सम्) सं.— बंद करना, समाप्ति, विरति, त्याग, वैराग्य; स्त्री-संभोग, सुरत; उदासीनता।

७०८६०८ उपरम, ७०८६०८ उपरमण (सम्) सं.— स्त्री-संभोग से विरति, विराम।

७०८६०८ उपराग (सम्) सं.— सूर्य या चंद्र का ग्रहण।

७०८६०८ उपरि (सम्) अ.— ऊपर, पश्चात्, बाद में।

७०८६०८ उपरिम (सम्) सं.— ऊँचा स्थान।

७०८६०८ उपरिलोक (सम्) सं.— ऊपर का लोक, स्वर्ग।

७०८६०८ उपरोचि (सम्) सं.— रहस्य, गुप्त बात, बंद करना।

उपरोध उपरोध (सम्) सं.— रोकटोक, बाधा, अड़चन, विरोध ; उत्पात, आफत ।
— इसु (सम्) क्रि.— रोक, बाधा डाल ।
उपल उपल (सम्) सं.— पत्थर, चट्टान ; रत्न ।
उपलक्षण उपलक्षण (सम्) सं.— अवलोकन, ईक्षण ; पहचान, चिह्न ; पदवी ।
उपलक्ष्य उपलक्ष्य (सम्) सं.— लक्ष्य, ध्येय, गम्यस्थान ।
उपलब्ध उपलब्ध (सम्) वि.— प्राप्त ; ज्ञात ; कल्पित ।
उपलब्ध उपलब्ध (सम्) सं.— प्राप्ति, उपलब्धि, पहचान, खोज ।
उपलालन उपलालन (सम्), उपलालने उपलालने (सम्) सं.— आलिंगन, दुलार, करना ; प्रशंसा करना ।
उपले उपले (सम्) सं.— मिश्री, शुद्ध चीनी ।
उपलेपन उपलेपन (सम्) सं.— मालिश, लेप, उबटन, मलहम ।
उपवन उपवन (सम्) सं.— उद्यान, बाग, पार्क ।
उपवर्तन उपवर्तन (सम्) सं.— प्रांत, प्रदेश, राज्य ।
उपवस्त उपवस्त (सम्) सं.— उपवास, निराहार-व्रत ।
उपवास उपवास (सम्) सं.— उपवास उपास (तद्)— निराहार रहना, व्रत, उपोषण ।
उपवाह्य उपवाह्य (सम्) सं.— राजा की सवारी—हाथी, घोड़ा, रथ आदि ।
उपविष्ट उपविष्ट (सम्) वि.— बैठा हुआ, विद्यमान ।
उपवीत उपवीत (सम्) सं.— यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
उपवृत्ति उपवृत्ति (सम्) सं.— छोटा काम, प्रधान नौकरी के अतिरिक्त अन्य नौकरी ।
उपवेद उपवेद (सम्) सं.— वे विद्याएँ जिनका मूल वेद में है, वे चार हैं—धनुर्वेद,

गंधर्ववेद, आयुर्वेद, स्थापत्य ।
उपवेश उपवेश, उपवेशन उपवेशन (सम्) सं.— बैठना, जमना, स्थित होना, एकाग्रता ।
उपवेष्ट उपवेष्ट (सम्) वि.— आवृत्त, घिरा हुआ, वस्त्र-भूषित ।
उपशम उपशम, उपशमन उपशमन (सम्) सं.— निस्तब्धता, शांति, विराम, अवसान, निवृत्ति ; इंद्रियनिग्रह ।
उपशल्य उपशल्य (सम्) सं.—नगर या ग्राम का बाहरी मैदान ।
उपशाख उपशाखे (सम्) सं.—छोटी शाखा, डाली, विभाग ।
उपशांत उपशांत (सम्) वि.— शांत, बुझा हुआ, निस्तब्ध, निवृत्त ।
उपशांति उपशांति (सम्) सं.— विराम, शांति ; हास, बुझना ।
उपश्रुत उपश्रुत (सम्) वि.—कानों से सुना हुआ, वचन दिया हुआ । उपश्रुति (सम्) सं.— प्रतिज्ञा, वचन, स्वीकृति ।
उपसंग्रह उपसंग्रह (सम्) सं.—भीतरी पहनावा, कुर्ता, वनियन आदि ।
उपसंहार उपसंहार (सम्) सं.— समाप्ति, अंत ; नाश, मृत्यु । — इसु (सम्) क्रि.— समाप्त कर, वापस ले ले, नष्ट कर, अंत कर ।
उपसन्न उपसन्न (सम्) वि.— मिला हुआ, जुड़ा हुआ, लगा हुआ, समीप आया हुआ ।
उपसंपन्न उपसंपन्न (सम्) वि.— प्राप्त, आगत, कमाया हुआ ।
उपसर उपसर (सम्) सं.— समीप जाना, फूल के खिलने का समीप-काल, गौ का प्रथम गर्भ ।
उपसर्ग उपसर्ग (सम्) सं.— सामीप्य, मिलना ; विपत्ति, संकट ; दुर्दैव, अपशकुन, उत्पात ; उपसर्ग ; शब्दों के पूर्व आनेवाला अक्षर-समुदाय ।
उपसर्जन उपसर्जन (सम्) सं.— विपत्ति, संकट, दैवी उत्पात ; विसर्जन ; ग्रहण ; हिंसा ; शुभाशुभ शकुन ; वह शब्द, जो

दूसरे शब्द के साथ रहने पर अपनी स्वतंत्रता खोकर दूसरे का अर्थबोध करता है ।
उपसर्प उपसर्प, उपसर्पण उपसर्पण, उपसर्पण उपसर्पण (सम्) सं.— समीप जाना, आगे बढ़ना ।
उपसाक्ष उपसाक्ष, उपसाक्ष उपसाक्ष (सम्) सं.— सहायक साक्षी, छोटे साक्षी ।
उपस्कर उपस्कर (सम्) सं.— उपकरण, सामान, मसाला ; अधूरी वस्तु को पूर्ण करना, पूर्ति ।
उपस्थ उपस्थ (सम्) वि.— समीप का, निकट का । सं.— स्त्री की योनि, पुरुष का लिंग ।
उपस्थित उपस्थित (सम्) वि.— प्राप्त, प्रस्तुत, विद्यमान ।
उपस्पर्शन उपस्पर्शन (सम्) सं.— मज्जन, स्नान ; स्पर्श करना ; कुछा करना ; आचमन ।
उपहत उपहत (सम्) सं.— हत्या, वध ; प्रहार ; चोट ; कष्ट, संकट, विपत्ति ।
उपहसित उपहसित (सम्) वि.— चिढ़ाया हुआ, मज़ाक उड़ाया हुआ, हास्य का कारण भूत ।
उपहार उपहार (सम्) सं.— भेंट, चढ़ावा ; दान, पुरस्कार ; पूजा, बलिदान ।
उपहास उपहास (सम्) सं.— हँसी, दिखगी, मज़ाक ; तिरस्कार, निंदा ।
उपांशु उपांशु (सम्) अं.— गुप्त रूप से, रहस्य रूप से ।
उपाकरण उपाकरण (सम्) सं.— उपक्रम, तैयारी, अनुष्ठान, समीप बुलाना ।
उपाकर्म उपाकर्म (सम्) सं.— संस्कार, विशेष, प्रतिवर्ष यज्ञोपवीत धारण करने का पर्व, जो श्रावण पूर्णिमा के दिन होता है ; तैयारी, प्रारंभ ।
उपाकृत उपाकृत (सम्) वि.— समीप लाया हुआ, आरंभ किया हुआ, बलिदान किया हुआ ;
उपाख्यान उपाख्यान (सम्) सं.— पुरानी कहानी, किसी मूल कथा से संबंधित अन्य कथा ।

ಉಪಾಗಮ ಉಪಾಗಮ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಮೀಪ
ಆಗಮನ, ಪಹುಣಾ ; ಸಂಭಾವನಾ, ಘಟಿತ ಹೊನಾ ;
ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ಸ್ವೀಕೃತಿ ।

ಉಪಾಗ್ರ ಉಪಾಗ್ರ (ಸಮ್) ವಿ. — ನಿम्ನ ಶ್ರೇಣಿ ಕಾ,
ಹೀನ, ಅಂತಿಮ ।

ಉಪಾಂಗ ಉಪಾಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಛೋಟೆ ಛೋಟೆ ಅಂಗ.
ಅವಯವ. ಉಪಭಾಗ ।

ಉಪಾತ್ಮ ಉಪಾತ್ಮ (ಸಮ್) ವಿ. — ಪ್ರಾಪ್ತ, ಸ್ವೀಕೃತ,
ಪಾಪಾ ಹುಡಾ, ಲಿಯಾ ಹುಡಾ ।

ಉಪಾತ್ಮಯ ಉಪಾತ್ಮಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸೀಮಾ ಕಾ
ಅತಿಕ್ರಮಣ, ಮರ್ಯಾದಾ ಕಾ ಉಲ್ಲೇಖನ ; ತಿರಸ್ಕಾರ ।

ಉಪಾಧಾನ್ ಉಪಾಧಾನ್ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಗ್ರಹಣ
ಕರನಾ, ಮಿಷಾ ।

ಉಪಾದೇಯ ಉಪಾದೇಯ (ಸಮ್) ವಿ. — ಅಂಗೀಕಾರ
ಕರನೇ ಯೋಗ್ಯ, ಸ್ವೀಕಾರ ಯೋಗ್ಯ, ಅತ್ಯುತ್ತಮ,
ಉಪಯುಕ್ತ ।

ಉಪಾಧಿ ಉಪಾಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಪದವಿ, ಪ್ರತಿಷ್ಠಾ-
ಸೂಚಕ ಶಬ್ದ ; ಧೋರಾ, ಜಲ, ಚಾಲಾಕಿ ; ಕಪಟ ;
ವಿಘ್ನ । — ನಂಠ ವಂತ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸದಾ
ಕಾಮ ಕರನೇವಾಲಾ, ಮಾನನೀಯ, ಪದವಿ ಪ್ರಾಪ್ತ ।

ಉಪಾಧ್ಯ ಉಪಾಧ್ಯ, ಉಪಾಧ್ಯಯ ಉಪಾಧ್ಯಯ
(ಸಮ್) ಸಂ. — ಪುರೋಹಿತ, ಗುರು, ಶಿಕ್ಷಕ,
ಉಪದೇಶಕ ।

ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್ ಉಪಾಧ್ಯಯಿನಿ (ಸಮ್) ಸಂ. —
ಶಿಕ್ಷಿಕಾ, ಪುರೋಹಿತ ಯಾ ಗುರು ಕೀ ಪತ್ನಿ ।

ಉಪಾಧ್ಯಯಿ ಉಪಾಧ್ಯಯಿ, ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್
ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್, ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್ ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್ (ಸಮ್)
ಸಂ. — ದೇ. ಉಪಾಧ್ಯಯಿನ್.

ಉಪಾನ್ತಿ ಉಪಾನ್ತಿ, ಉಪಾನ್ತ ಉಪಾನ್ತ,
ಉಪಾನ್ತ ಉಪಾನ್ತ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಚಪ್ಪಲ,
ಪಾಡುಕಾ, ಖಡಾಜ ।

ಉಪಾಂತ ಉಪಾಂತ, ಉಪಾಂತ ಉಪಾಂತ (ಸಮ್)
ಅ. — ಸಮೀಪ ಕಾ, ನಿಕಟ ಕಾ, ಅಂತ ಅಕ್ಷರ
ಕೇ ಸಮೀಪ ಕಾ ಅಕ್ಷರ ; ದೃಢಿಕೋಣ ।

ಉಪಾಯ ಉಪಾಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಾಧನಾ, ಯುಕ್ತಿ,
ತಂತ್ರ, ವಿಧಾನ ; ರಾಜನೈತಿಕ ತಂತ್ರ ।

ಉಪಾಯನ್ ಉಪಾಯನ್ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಮೀಪ
ಗಮನ, ಧರ್ಮಾನುಷ್ಠಾನ ; ಭೆಂಟ, ಪುರಸ್ಕಾರ ।

ಉಪಾರ್ಜನ್ ಉಪಾರ್ಜನ್ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಪ್ರಾಪ್ತಿ,
ಕಮಾಡ್, ಉಪಲಬ್ಧಿ । — ಇಸು (ಸಮ್)
ಕ್ರಿ. — ಪ್ರಾಪ್ತ ಕರ, ಕಮಾ ।

ಉಪಾರ್ಜನ್ ಉಪಾರ್ಜನ್ (ಸಮ್) ವಿ. — ಚಡ್ಡಾ ಹುಡಾ,
ಉಪರ ಗಯಾ ಹುಡಾ, ಅಧಿಕ ಹುಡಾ, ಬಡ್ಡಾ ಹುಡಾ ।
ಉಪಾಲಂಛನ್ ಉಪಾಲಂಛನ್ ಉಪಾಲಂಛನ್
(ಸಮ್) ಸಂ. — ಪ್ರಾಪ್ತ ಕರನಾ, ಪ್ರಾಪ್ತಿ ; ಉಲಾಹನಾ,
ನಿರ್ದಾ, ತಿರಸ್ಕಾರ ।

ಉಪಾಶ್ರಯ ಉಪಾಶ್ರಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಆಧಾರ,
ಆಶ್ರಯ, ವಿಶ್ವಾಸ ಪಾತ್ರ ; ತಕ್ಕಿಯಾ ।

ಉಪಾಸಂಗ ಉಪಾಸಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಮೀಪತಾ,
ನೈಕತ್ಯ ; ತರಕಸ ।

ಉಪಾಸನ್ ಉಪಾಸನ್, ಉಪಾಸನ್ ಉಪಾಸನ್ (ಸಮ್)
ಸಂ. — ಪೂಜಾ, ಸೇವಾ, ಆರಾಧನ ; ಧನುರ್ವಿಜ್ಞಾ,
ಬಾಣ ಚಲಾನೇ ಕಾ ಅಭ್ಯಾಸ, ಸಮೀಪ ಉಪಸ್ಥಿತ
ರಹನಾ ।

ಉಪಾಸಿತ ಉಪಾಸಿತ (ಸಮ್) ವಿ. — ಪೂಜಿತ,
ಅರ್ಚಿತ ।

ಉಪಾಸ್ತಿ ಉಪಾಸ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಪೂಜಾ, ಸೇವಾ,
ಪೂಜಾ, ಆಧ್ಯಾನ ।

ಉಪಾಹಾರ ಉಪಾಹಾರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಅಲ್ಪ ಆಹಾರ,
ಜಲಪಾನ, ಥೊಡ್ಡಾ ಖಾನಾ ಖಾನಾ ।

ಉಪಾಹಿತ ಉಪಾಹಿತ (ಸಮ್) ವಿ. — ಸ್ಥಾಪಿತ,
ಜಮಾ ಕರಾಯಾ ಹುಡಾ, ಸಂಬಂಧಯುಕ್ತ, ಸಂಯೋಜಿತ ।
ಸಂ. — ಟುಟತಾ ತಾರಾ, ಉಲ್ಕಾಪಾತ ।

ಉಪೇಕ್ಷ ಉಪೇಕ್ಷ, ಉಪೇಕ್ಷ ಉಪೇಕ್ಷ (ಸಮ್) ಸಂ. —
ತಿರಸ್ಕಾರ ಉದಾಸೀನತಾ, ಲಾಪರವಾಹಿ, ವಿರಕ್ತಿ ।
ಉಪೇತ ಉಪೇತ (ಸಮ್) ವಿ. — ಯುಕ್ತ, ಸಂಪನ್ನ,
ಸಂಬಂಧಿತ, ಉಪಸ್ಥಿತ ।

ಉಪೇಂದ್ರ ಉಪೇಂದ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಇಂದ್ರ ಕಾ ಛೊಟಾ
ಭಾಡ್, ವಾಮನ ಯಾ ವಿಷ್ಣು ಭಗವಾನ್ ; ರಾಜಾ,
ಸರ್ಪ ।

ಉಪೇಂದ್ರ ಉಪೇಂದ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಪ್ರಾರಂಭ,
ಆರಂಭ, ಭೂಮಿಕಾ ; ಉದಾಹರಣ, ನಮೂನಾ ।

ಉಪೇಷಣ ಉಪೇಷಣ, ಉಪೇಷಣ ಉಪೇಷಣ
(ಸಮ್) ಸಂ. — ಉಪವಾಸ, ನಿರಾಹಾರ ರಹನಾ,
ವ್ರತ ।

ಉಪ್ಪ ಉಪ್ಪ (ಸಮ್) ವಿ. — ಬೀಜ ಬೋಯಾ ಹುಡಾ ।

ಉಪ್ಪಿ ಉಪ್ಪಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಬೀಜ ಬೋನಾ ।

ಉಪ್ಪಿ ಉಪ್ಪಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — ರಾತ್ ।

ಉಪ್ಪಗಚಿ ಉಪ್ಪಗಚಿ, ಉಪ್ಪಗಚಿ ಉಪ್ಪಗಚಿ
ಉಪ್ಪಚಿ, ಉಪ್ಪಗಚಿ ಉಪ್ಪಗಚಿ (ಕ)
ಸಂ. — ಏಕ ಕಾಂಡೇದಾರ ವೃಕ್ಷ ।

ಉಪ್ಪಡ ಉಪ್ಪಡ (ಕ) ಸಂ. — ನಮಕ ಮೆಲ್ಲಾಗರ
ಸುಖಾಯಿ ಗಯಿ ತರಕಾರಿ । (ತದ್) ಸಂ. — ಉಪ್ಪಡ
(ತದ್) — ವಸ್ತ್ರ ।

ಉಪ್ಪಯಣ ಉಪ್ಪಯಣ (ಕ) ಸಂ. — ನಿರ್ಯಾಣ ; ಯಾತ್ರಾ
ರೋಕನಾ ।

ಉಪ್ಪರ ಉಪ್ಪರ (ತದ್) ವಿ. — ಉಪರಿ (ತದ್) ;
ಉಚ್ಚ, ಕೆಂಚಾ, ಉಪರ ಕಾ । — ಛೊಡ್ಡ ಕುಡಿ, ಗುಡಿ
ಗುಡಿ (ತದ್) ಸಂ. — ಉಪರ ಉಡಾಯಾ ಗಯಾ ಇಂಡಾ ।
— ಮೂಡು ಮಾಡು (ತದ್) ಕ್ರಿ. — ಕೆಂಚಾ (ದಿವಾರ
ಆದಿ ಕೊ) ಉಡಾನಾ ।

ಉಪ್ಪರಮ ಉಪ್ಪರಮ, ಉಪ್ಪರಮ ಉಪ್ಪರಮ (ತದ್)
ಕ್ರಿ. — ಉಲಂಗ ಮಾರ, ಕೂದ, ಉಪರ ಜಾ, ಚಡ್ಡ,
ಅಧಿಕ ಹೊ ; ಜಾಗ, ಆವರಣ ನಿಕಾಲ ; ಜಗಾ ;
ವಿಸ್ತಾರ ಕರ ।

ಉಪ್ಪರಪ್ಪ ಉಪ್ಪರಪ್ಪ (ತದ್) ಸಂ. — ಉಪರ ಕಾ
ವಸ್ತ್ರ, ಉತ್ತರಿಯಾ ।

ಉಪ್ಪರಪ್ಪಯಣ ಉಪ್ಪರಪ್ಪಯಣ (ತದ್) ಸಂ. — ಉಪರ
ಕಾ ಆಘಾತ, ಪ್ರಹಾರ ।

ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಉಪ್ಪರಿಗೆ (ತದ್) ಸಂ. — ಉಪಕಾರಿಕೆ
(ತದ್) ; ಮಹಲ್, ಅಡಾಲಿಕಾ, ಸೌಧ, ಮಂಜಿಲ್ ।

ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಉಪ್ಪರಿಗೆ (ಕ) ಸಂ. — ನಮಕ ಬನಾನೇ-
ವಾಲಾ ; ಮಡುಬಾ ।

ಉಪ್ಪರಿಗೆ ಉಪ್ಪರಿಗೆ (ಕ) ಸಂ. — ಏಕ ಛೊಟಾ ವೃಕ್ಷ
(Macaranga Indica.)

ಉಪ್ಪವಡ ಉಪ್ಪವಡ (ಕ) ಸಂ. — ಉದಯಗಾಂ, ರಾಜಾ
ಆದಿ ಕೊ ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಜಗಾನೇ ಕಾ ಗೀತ । —
ಇಸು (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಜಗಾ, ಜಾಗೃತ ಕರ ।

ಉಪ್ಪಳ ಉಪ್ಪಳ (ತದ್) ಸಂ. — ಉತ್ಪಲ (ತದ್) ;
ವಿಶಾಲತಾ, ಫೆಲಾವ ।

ಉಪ್ಪಾರ ಉಪ್ಪಾರ (ಕ) ಸಂ. — ರಾಜ, ಘರ-ಮಕಾನ
ಬನಾನೇವಾಲಾ ।

ಉಪ್ಪಾಟಿ ಉಪ್ಪಾಟಿ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಉಪ್ಪಾರ ;
ನಮಕ ಬನಾನೇವಾಲಾ, ಜೊ ತರಕಾರಿ ಮಿ ಉತ್ಪನ್ನ
ಕರತಾ ಹೆ ।

ಉಪ್ಪಾಟಿ ಉಪ್ಪಾಟಿ (ಕ) ಸಂ. — ರಾಜ ಕೀ ಸ್ತ್ರೀ,
ನಮಕ ಬನಾನೇವಾಲೆ ಕೀ ಸ್ತ್ರೀ ।

ಉಬ್ಬಸ, ಉಬ್ಬಸ, ಉಬ್ಬಸ (ಕ) ಸಂ.—
 ದೇ. ಉಬ್ಬಸ.

ಉಬ್ಬಳಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಉಬ್ಬಳಿಸು.
 ಉಬ್ಬಳಿ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮಿ, ಉಷ್ಣತಾ ; भाप,
 वाष्प ; वर्षा, बरसात । —सुन मने (क)
 सं.—वह घर या स्थान जहाँ धोबी गंदे
 कपड़ों को भाप में डालता है ।

७७. उब्बे (तद्) सं.—एक नक्षत्र, दे. ४७.
 ७७. उब्बेग (तद्) सं.—उद्देग ; विकलता,
 व्याकुलता, भय ; दुःख ।

७७५३ उभय (सम्) वि.— दो, दोनों । —
 ७७५४ कर्म (सम्) सं.— दो पाप । — ७
 ७७५५ त्र (सम्) अ.— दोनों ओर, दोनों जगह,
 दोनों लोकों में, इह तथा पर में । —
 ७७५६ संकट (सम्) सं.— धर्मसंकट, दोनों
 ओर का संकट ।

लघुयुक्ते उभयकवि (सम्) सं.— कन्नड
 और संस्कृत दोनों भाषाओं में कविता करने-
 वाला कवि ।

लुभयानुमत (सम्) वि.—
 दोनों पक्षों के लिए मान्य ।

७म् उम् (क) क्रि. = ७ङ्—उण्-खा,
उपभोग कर ।

ಉಮದಾ ಉಮದಾ (ಅ. ದೇ.) ವಿ.—ಉಮದಾ
(ಅರವಿ); ಶ್ರೇಷ್ಠ, ಉತ್ಕೃಷ್ಟ, ಸುಂದರ, ಅಚ್ಛಾ ।

ಉಮರಾವ್ ಡಮರಾವು (ಅ.ದೇ.) ಸಂ.— ಡಮರಾವ
(ಅರವಿ); ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ವ್ಯಕ್ತಿ ।

ಉಮರು ಉಮರು (ಕ) ಸಂ.— ಗರಮಿ, ಉಮಸು ।
ಉಮಾ ಉಮಾ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪಾರ್ವತಿ । —ಛಂ

धव, षष्ठि पति (सम्) सं.— शिव । —
 षष्ठि पुत्र, षष्ठि सुत (सम्) सं.— पण्डित,

गजानन । — ऋषे प्रवर (सम्) सं.—
शिव । — माहेश्वर महेश्वर, रमण रमण,

७० वर, नल्लु वल्लम (सम्) सं.— शिव ।
 ७१ उमि, ७२ उमि (क) सं.— धान,

७०५५ उमु (क) झ. — और, तथा, एवं ।
७०५६ नरे (क) ए. — संज्ञार्थक प्रत्ययः तदा.

३६५ मं त्वक्कुमे—योग्यता, उपयुक्तता ।

गव, दप, अत्यधिक अभिमान ।
 लब्धुर्दिग उच्चुदिग (क) सं. = लब्धुर्दिग
 उच्चुदिग ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

लुपुडर उरुतर (सम्) वि.— बहुत बड़ा, विस्तृत, बहुत श्रेष्ठ।

लुपुड उरुपु (क) सं.— दे. लुपुड.

लुपुड उरुडु, लुपुड उरुडु (क) क्रि.— चढ़ भा. आक्रमण कर। सं.— बलात्कार; शीघ्रता।

लुपुड उरुडे (क) सं.— आधिक्य; राशि, समृद्धि; बलात्कार; भीषणता।

लुपुड उरुमिडे, लुपुड उरुमिडे (क) सं.— आधिक्य, अधिकता।

लुपुड उरुथु (सम्) सं.— घोड़ा।

लुपुड उरुलु (क) सं.— दे. लुपुड.

लुपुड उरुलुगोले, लुपुड उरुलु बले (क) सं.— फौसी।

लुपुड उरुव (क) वि.— श्रेष्ठ, अधिक. उत्तम, बलशाली।

लुपुड उरुवणिसु (क) क्रि.— दे. लुपुड नलस.

लुपुड उरुवलु (क) सं.— ईधन, समिधा।

लुपुड उरुवु (क) सं.— दे. लुपुड; राशि, समूह, गोमा, बड़प्पन।

लुपुड उरुसु (क) क्रि.— दे. लुपुड.

लुपुड उरुलु. लुपुड उरुलु (क) क्रि.— लुढ़क, गोल हो. घूम, चकर काट, गिर, उल्टा हो। सं.— दे. लुपुड; धुरी। — लुपुड इसु (क) क्रि.— गिरा, घुमा, गोल कर। — लुपुड केडहु (क) क्रि.— फौसी पर लटका, संकट में डाल। — लुपुड लु (क) क्रि.— दे. लुपुड.

लुपुड उरुलि (क) सं.— गोला, गोलाकार पिंड, काँसे का बर्तन; मैना। — लुपुड कोळ (क) क्रि.— गोलाकार हो, वृत्त हो। — लुपुड के (क) सं.— गोल या वृत्त होना, लपेट।

लुपुड उरुलुक (क) सं.— लपेटने की चीज़, वेलन।

लुपुड उरे, लुपुड उरे (क) अ.— वि.बो.— अच्छा हुआ!, शबास!, बहुत अच्छा!

लुपुड उरोज (सम्) सं.— स्नन, पयोधर।

लुपुड उरोरुह (सम्) सं.— दे. लुपुड उरोरुह, लुपुड उरुडे, लुपुड उरुलुड, लुपुड उरुलुबडि, लुपुड उरुलुडे, लुपुड उरुलुडे (क) सं.— एक क्रीड़ा जिसमें नारियल. फल आदि उपर लटकाकर खेलनेवाले व्यक्ति गोपों का वेप धारण कर उन्हें पाने का प्रयास करते हैं—यह खेल साधारणतया श्रीकृष्णजन्माष्टमी के बाद के दिन मनाया जाता है।

लुपुड उरुलि (क) सं.— राशि, ढेर. पुंज।

लुपुड उरि (क) सं.— तक, आला, ताखा।

क्रि.— लुपुड उरित—सूँघ; चूस, सोख।

लुपुड उरिसु (क) क्रि.— खड़ा कर. रोक; सह, सहन कर, बर्दाश्त कर।

लुपुड उरु, लुपुड उरु (क) क्रि.— हो, विद्यमान हो, रह; रुक; हिचकिचा; डगमगा. लहरा. आगे-पीछे हिल; जुड़ जा।

लुपुड उरुकु (क) सं.— खड़े रहना, रुकना, स्थिरता।

लुपुड उरुगिसु (क) क्रि.— वक्र कर, तिरछा कर, मोड़।

लुपुड उरुगु (क) क्रि.— वक्र हो, तिरछा हो, झुक. मुड़। सं.— वक्रता। — लुपुड (क) सं.— वक्र पद, टेढ़ा पैर। — लुपुड बेरुलु (क) सं.— टेढ़ी उँगली।

लुपुड उरुपु (क) सं.— रुकना, स्थिर रहना; स्थायी भाव।

लुपुड उरुवु (क) सं.— संयुक्तता; राशि, ढेर. पुंज; आधिक्य, अधिकता; बड़ा होना, बड़प्पन, महानता; सुंदरता, मनोहरता।

लुपुड उरे (क) वि.— अधिक, बहुत, पूर्णतः, सुंदर, अच्छा। सं.— राशि, समूह. ढेर; आधिक्य, बड़ा होना।

लुपुड उरु (क) क्रि.— अधिक हो, (बर्तन से) बाहर निकल, उमड़. उभर. सं.— गर्व, अभिमान; औद्धत्य; शूरता। — लुपुड उरु

आलगल (क) सं.— पराक्रमी योद्धा, शूर सैनिक। — लुपुड उरि (क) क्रि.— हिम्मत हार, अधीर हो।

लुपुड उरुके (क) सं.— विरोध, प्रति-कूलता।

लुपुड उरु (क) क्रि.— खींच (किसी को अपनी ओर खींचना, तलवार को म्यान से निकालना आदि), बाहर निकाल; शिथिल कर; शुद्ध कर; शिथिल हो, ढीला हो; शुद्ध हो (अक्. क्रि.)।

लुपुड उरुणि, लुपुड उरुणि (क) सं.— दे. लुपुड.

लुपुड उरु (क) क्रि.— लगा, डाल, जुड़ा, मिला, संयुक्त कर।

लुपुड उरुके (क) सं.— रगड़, घिसाव।

लुपुड उरु (क) क्रि.— रगड़, घिस। सं.— उड़द।

लुपुड उरु (तद्) सं.— वृद्धि (तत्)।

लुपुड उरु (क) क्रि.— दे. लुपुड और लुपुड.

लुपुड उरु (क) सं.— दे. लुपुड.

लुपुड उरुस (क) सं.— दे. लुपुड. — लुपुड गोळिसु (क) क्रि.— दूसरों की साँस में बाधा डाल।

लुपुड उरुनि (क) वि.— बड़ा, महान्, अच्छा, सुंदर।

लुपुड उरुसु (क) क्रि.— दे. लुपुड. (प्रे.)।

लुपुड उरु (क) क्रि.— दे. लुपुड. (अक्. क्रि.)।

लुपुड उरु (क) सं.— आधिक्य, बहुतायत।

लुपुड उरु (क) सं.— दे. लुपुड और लुपुड.

लुपुड उरु (क) वि.— श्रेष्ठ, महान, अधिक।

लुपुड उरु, लुपुड उरु (सम्) सं.— उपजाऊ भूमि।

लुपुड उरु, लुपुड उरु (सम्) सं.— भूमि, पृथिवी; मैदान; एक छंद का नाम।

—७ ज (सम्) सं.— भूमिजा ; पेड़ । —
 —७ तल (सम्) सं.— भूतल । —
 ध्र (सम्) सं.— राजा ; पर्वत । —
 पति (सम्) सं.— राजा ; नृपति । —
 रुह (सम्) सं.— वृक्ष, पौधा, लता ।
 ७००० उर्विनं (क) वि.— दे. ७०००.
 ७००० उर्विसु (क) क्रि.— दे. ७०००.
 ७००० उर्विद्र (सम्) सं.— भूपति,
 राजा ।
 ७००० उर्वु (क) क्रि.— उभर, उमड़, अधिक
 हो ।
 ७००० उल् (क) क्रि.— गरम हो ।
 ७००० उलक, ७००० उलके (तद्) सं.—
 उल्का (तद्) ।
 ७००० उलकु (क) क्रि.— उठ ; हिल ;
 निकल ; विचार कर ; कंप, कंपित हो ; मन
 को गोचर हो, स्फुरण हो (अक्. क्रि.) ।
 सं.— मरोड़, ऐंठ ।
 ७००० उलटा (अ.दे.) सं.— दे. ७०००.
 ७००० उलि (क) क्रि.— ध्वनि कर, चिला, कह,
 बोले । सं.— रव, ध्वनि, शब्द, चिलाहट,
 चिल्लाना, चहचहाना ।
 ७००० उलिप, ७००० उलिपु, ७००० उलिवु,
 ७००० उलुवु, ७००० उलुहु (क) सं.—
 दे. ७०००.
 ७००० उलिव (क) सं.— एक छोटी चिड़िया
 जिसकी पूँछ लंबी होती है, उच्चपुच्छ ।
 ७००० उलुकु (क) क्रि. और सं.— दे.
 ७०००.
 ७००० उलुद (क) क्रि.— दे. ७०००.
 ७००० उलुक (सम्) सं.— उल्लू ।
 ७००० उलुखल (सम्) सं.— ओखली ।
 ७००० उलुपि (सम्) सं.— नागराज की
 एक कन्या का नाम, जो अर्जुन को ब्याही
 थी ।
 ७००० उलुक, ७००० उल्का (सम्) सं.— नक्षत्र;
 लुक, प्रकाश, तेज ; अग्नि, अंगारा । —
 पात (सम्) सं.— नक्षत्र का गिरना ।
 ७००० उल्कु (क) क्रि. और सं.— दे.
 ७०००.

७००० उल्के (तद्) सं.— दे. ७०००.
 ७००० उल्बण, ७००० उल्बणे, ७०००
 उल्बणे, ७००० उल्बणे, ७००० उल्बण
 (सम्) वि.— गाढ़ा, गांठोंदार ; अधिक,
 विपुल ; दृढ़, बड़ा ।
 ७००० उल्मुक (सम्) सं.— मशाल,
 दीवट ।
 ७००० उल्गि (क) सं.— टिट्ठिभ पक्षी,
 टिट्ठिरी चिड़िया ।
 ७००० उल्घन, ७००० उल्घने (सम्)
 सं.— अतिक्रमण, लौघना ; विरुद्धाचरण ।
 ७००० उल्डे (क) सं.— दे. ७०००.
 ७००० उल्स, ७००० उल्सा (सम्) सं.—
 हर्ष, आनंद ; चमक, आभा, दीप्ति ।
 ७००० उल्सत् (सम्) वि.— चमकदार,
 प्रकाशमान ; रोमांचकर ।
 ७००० उल्सन (सम्) सं.— हर्ष, आनंद ;
 रोमांच ।
 ७००० उल्सित (सम्) वि.— चमकीला,
 दमकदार, उत्फुलित ; हर्षित ।
 ७००० उल्घ (सम्) वि.— चतुर, कुशल,
 शुद्ध ; रोग से छूटा हुआ ; संतुष्ट ।
 ७००० उल्पा (सम्) सं.— वाणी, शब्द ;
 अपमानकारक शब्द, आक्षेप ।
 ७००० उल्हार (क) सं.— ७००० उल्हार—
 सावधानी से बैठने का आसन ; छोटी
 खिड़की, गवाख ।
 ७००० उल्हि (क) अ.— स्थान का सूचक, वहाँ,
 बीच में, मध्य ।
 ७००० उल्लु (तद्) सं.— उल्लूक (तद्) ;
 उल्लू (हि.), मूर्ख, बेवकूफ ।
 ७००० उल्लुठन, ७००० उल्लुठे (सम्)
 सं.— श्लेष वाक्य, व्यंग्योक्ति, विपरीतार्थक
 वाक्य ।
 ७००० उल्लुठित (सम्) वि.— चलित,
 हिलता हुआ, घूमता हुआ ।
 ७००० उल्लेख (सम्) सं.— वर्णन, चर्चा ;
 जिक्र, लेख ; एक अलंकार विशेष । —
 इसु (सम्) क्रि.— लिख ।

७००० उल्लेखन (सम्) सं.— वर्णन, चर्चा,
 लेख, चित्रण ; खुदाई, छीलन, खुरचन,
 रगड़ ।
 ७००० उल्लोच (सम्) सं.— राजछत्र,
 मण्डप ; जंभाई ।
 ७००० उल्लोल (सम्) सं.— लहर, तरंग,
 हिलोर, ऊर्मि ।
 ७००० उल्लवण (सम्) वि.— दे. ७०००.
 ७००० उल्हास (तद्) सं.— उल्हास (तद्) ।
 ७००० उव (क) सर्व.— बीच का, यह (आदमी)
 प्र.— वाला या योग्य अर्थसूचक प्रत्यय
 उदा.— ७००० आगुव—होनेवाला, ७०००
 तिननुव—खाने योग्य, ७००० कोल्लुव
 खरीदने योग्य ।
 ७००० उवनु (क) सर्व.— बीच का (आदमी)
 ७००० उवळु (क) सर्व.— बीच की (स्त्री)
 यह स्त्री ।
 ७००० उवाले (क) सं.— दे. ७०००.
 ७००० उव्वाले (क) सं.— दे. ७०००.
 ७००० उशन, ७००० उशनस् (सम्) सं.—
 शुक्राचार्य, शुक्र ग्रह ।
 ७००० उशीर (सम्) सं.— खस, वीरनमूल
 ७००० उश्वास (तद्) सं.— उच्छ्वास (तद्)
 ७००० उष, ७००० उषस्, ७००० उषा (सम्)
 सं.— प्रातः, सवेरा, सुबह ।
 ७००० उषःकाल (सम्) सं.— उषःकाल
 सवेरा ।
 ७००० उषण (सम्) सं.— काली मिर्च
 सोंठ ।
 ७००० उष्वुध (सम्) सं.— अग्नि
 आग ; बच्चा ।
 ७००० उषापति (सम्) सं.— उषा के
 अनिरुद्ध ।
 ७००० उपित (सम्) वि.— जला हुआ
 बसा हुआ ।
 ७००० उप (सम्) वि.— प्रकाशमान, कांति
 युक्त ; रहनेवाला ।
 ७००० उप (सम्) सं.— ऊँट ।
 ७००० उपक्षि (सम्) सं.— आफ्रीका का
 एक बड़ा पक्षी ।

७७ उष्ण (सम्) सं. — गरमी, ताप ;
ग्रीष्म ऋतु, घाम ।

७७ उष्ण उष्णरश्मि (सम्) सं. — सूर्य ।

७७ उष्ण उष्णीष (सम्) सं. — पगड़ी, फेंटा,
साफा ।

७७ उष्ण उष्णोदक (सम्) सं. — गरम
पानी ।

७७ उष्ण, ७७ उष्णम्, ७७ उष्णे
(सम्) सं. — गरमी, ताप ; ग्रीष्म ऋतु ।

७७ उष् (क) अ. — थकावट के समय
निकलने वाली ध्वनि 'उष्' ; जानवरों को
चलाते समय उच्चरित करनेवाली ध्वनि ।

७७ उष्कने, ७७ उष्कने (क) अ. —
चुपचाप, मौन रूप से ; गुप्त रूप से ।

७७ उष्कने (क) अ. — तुरंत, फौरन,
शीघ्रता से ।

७७ उष्क, ७७ उष्कने, ७७ उष्कने,
७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क
उष्क, ७७ उष्क (क) सं. — सैकत,
रेत ।

७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क
उष्क, (क) क्रि. — ध्वनि करना, कहना,
बोलना ; (साँस लेना) ।

७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क
७७ उष्क, ७७ उष्क (क) सं. —
साँस, श्वास, जीवन ; साँस लेना, यति,
विराम ।

७७ उष्क (क) क्रि. — बक बक कर ।
७७ उष्क, ७७ उष्क (क?) सं. —
भीने अनाज (चना, मूँग आदि) से बनाई
गई रसोई, उवाला गया अनाज (विशेषकर
चना या मूँग) जिसमें नमक, मिर्च मिलाकर
खाया जाता है ।

७७ उष् (सम्) सं. — प्रकाश, किरण ;
साँझ ।

७७ उष् (सम्) सं. — गाय ।

७७ उष् (क) अ. — संबोधन और निषेध
सूचक अव्यय ।

७७ उष् (क) अ. — सर्दों के कारण
ठिठुरते समय निकलनेवाली आवाज़ ।

७७ उष् (क) अ. — दे. ७७ उष् ; पशुओं
को चलाते समय कहा जानेवाला शब्द ।

७७ उष् (क) क्रि. — हो, रह, वर्तमान रह,
युक्त हो ; हल चला । अ. — अंदर, भीतर

में, अच्छी तरह । — ७७ उष् अंजिसु (क)
क्रि. — मन को डरा । — ७७ उष् अलर (क)

क्रि. — भीतर में खिल ।

७७ उष्क (क) सं. — काठ की गुड़िया जो
पहियों के सहारे चल सकती हो ।

७७ उष्क (क) क्रि. — छिप जा, गुप्त रह ; बंद
हो ; छोड़ ; अधिक हो ; पार हो । सं. —
छिपना, चोर के छिपने का स्थान, ताक में
बैठी रहनेवाली सेना, शिकारियों की झोंपड़ी ;
छेनी, रुखानी ।

७७ उष्क, ७७ उष्क (क) सं. —
बचत, बची रकम, लाभ ।

७७ उष्क (क) सं. — छिपनेवाला मनुष्य ।

७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क

उष्क, ७७ उष्क (क) सं. — बचना,
बचत, कमाई, लाभ ।

७७ उष्क (क) क्रि. — हल चला, जोत ; रह ।

— ७७ उष् (क) सं. — हल चलाना, जोताई ;

विद्यमानता, लाभ ; संपन्नता ।

७७ उष्क (क) सं. — दे. ७७ उष्क ।

७७ उष्क (क) सं. — शेष, बचत ;
बासी भात ।

७७ उष्क (क) सं. — अच्छे वस्त्र ।

७७ उष्क (क) क्रि. — प्रकाशित हो, चमक ।

— ७७ उष्क (क) क्रि. — छिप, अगोचर
हो ।

७७ उष्क (क) सं. — जोताई, हल चलाना ।

७७ उष्क (क) सं. — उड़द ।

७७ उष्क (क) सं. — संपन्नता, रहने की
स्थिति ।

७७ उष्क (क) सं. — चमक, दीप्ति ;
समझना ।

७७ उष्क (क) क्रि. — युक्त, सहित, रहनेवाला,
जिसके पास हो । — ७७ उष् (क) सं. —
धनवान ।

७७ उष्क (क) सं. — प्याज़ ।

७७ उष्क (क) सं. — भीतरी
उपसंख्यान ।

७७ उष्क (क) क्रि. — डर, हिम्मत
हार ।

७७ उष्क (क) सं. — बडवाझि,
समुद्र की भाग ।

७७ उष्क (क) क्रि. — हल चला, जोत ।

७७ उष्क (क) वि. — बचा हुआ, शेष,
अवशिष्ट ; छोड़, त्याग, चला जा, निकल ।

७७ उष्क (क) वि. — शेष, बचा हुआ,
अवशिष्ट । — ७७ उष्क (क) सं. — शेष
लोग ।

७७ उष्क (क) सं. — जोताई ; बचत, जो
बचा हो ।

७७ उष्क (क) सं. — जो बचा हो
(चावल, धान आदि या पैसा), लाभ ।

७७ उष्क (क) सं. — बचत, अवशेष ; लाभ ।

७७ उष्क (क) सं. — जोताई ।

७७ उष्क (क) सं. — जोताई । क्रि. —

धूम, चक्कर काट, चंचल हो, मुक्त होकर
उड़ ।

७७ उष्क (क) सं. — जो बचा हुआ,
अवशेष ।

७७ उष्क (क) वि. — बचा हुआ, अवशिष्ट ।

७७ उष्क, ७७ उष्क (क) क्रि. —
जोताई करना ; बचाना ।

७७ उष्क (क) सं. — दे. ७७ उष्क.
(मै.प्र.) ।

७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क, ७७ उष्क
उष्क, ७७ उष्क (क) क्रि. — बचा,
रक्षित कर ।

७७ उष्क (क) क्रि. — दे. ७७ उष्क ; मुक्त हो,
जीवित हो ; बच, रक्षित हो ; पीछे रह ।
वि. — छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ, बचा
हुआ, अवशिष्ट ।

उळि (क) सं.— अवशेष, बचत, बचा
श; एक तपस्या-विधि, एक व्रत ।

उळिकि (क) सं.— दे. ७७६३.

उळिगु. ७७६० उळुगु (क) क्रि.—
न लगा. प्रसन्न हो, प्रेम कर । सं.—
सुकता, वासना ।

उळित (क) सं.— दे. ७७६४.

उळिताय (क) सं.— दे. ७७६५.

उळिमे (क) सं.— दे. ७७६६.

उळिसु (क) क्रि.— जोताई करा;
रक्षा कर, जीवित रख, मुक्त कर ।

उळु (क) क्रि.— दे. ७७६७.

उळुमे, ७७६८ उळुविके (क) सं.—
जोताई, हल चलाना ।

उळुसु (क) क्रि.— दे. ७७६९.

उळुके (क) सं.— जोताई ।

उळुगे (क) सं.— एक प्रकार की तपस्या,
एक व्रत ।

उळुगु (क) सं.— ७७६० उळुगु—
मन लगा, प्रसन्न हो, प्रेम कर ।

उळुगे (क) सं.— प्रेम, प्रीति. स्नेह ।

७७ उ

उ—कन्नड वर्णमाला का छठा अक्षर ।
अ.— और, तथा, एवं; उदा.— रामनू
गोपालनू—राम और
गोपाल.... ।

उके (क) सं.— ताना-बाना, बुनाई ।

उकार—७७ उ अक्षर ।

उके (क) सं.— दे. ७७७० । सर्व.—

यह (स्त्री.लिं.), यह (बीच की) स्त्री ।

उख्य (सम्) वि.— ७७७१ उख्य—

बटलोई या मिट्टी में उवाला हुआ ।

उगाडु (क) क्रि.— हिल, हिल-डुल;
लटक; चिला; पुकार ।

उच, ७७७२ उचु (तद्) वि.— उच
(तत्) ।

उचनीच (तद्) वि.— उच-नीच,
ऊँचा-नीचा ।

उचि (क) सं.— ७७७३ उचिहुल्लु
—एक प्रकार की घास जिससे झाड़ू बनाया
जाता है ।

उचु (क) सं.— गिरना, पतन (जैसे
बीमारी के कारण बालों का गिरना) ।

उचु (क) क्रि.— चाट, रसास्वाद ले ।
सं.— रसास्वाद लेने की वस्तु ।

उजे (क) सं.— अनाज को खराब करने-
वाला एक कीड़ा ।

उट (क) सं.— भोजन, खाना, भक्षण;
भोजन करना । ७७७४ उटवके इल्लद उप्पिनकायि
यातवकू वेड—जो अचार भोजन के समय
नहीं होता, वह (और) किसी काम का नहीं
(कह.) । — ७७७५ गीट (क) सं.— खाना-
वाना । — ७७७६ माडु (क) क्रि.— खाना
खा । — ७७७७ माडिसु (क) क्रि.—
खाना खिला ।

उटगार, ७७७८ उटगार (क)
सं.— खूब खानेवाला । ७७७९ उट-
गार्ति (स्त्री.लिं.) ।

उटले (क) सं.— गर्व, घमंड, अभि-
मान ।

उटि, ७७८० उटे (क) सं.— मोता;
फुवारा, फुहार ।

उडक (क) सं.— बहरा; खाऊ, बेकार
मनुष्य ।

उडलु (तद्) सं.— आमंड (तत्);
रेंडी का वृक्ष ।

उडिकोल्लु (क) क्रि.— विकीर्ण
कर, फैला, फेंक ।

उडिसु (क) क्रि.— खाने को दो,
खाना दिला ।

उडु (क) क्रि.— खाना खा, भोजन कर,
आहार लो; लगा, संयुक्त कर, मिला, लेपन
कर; साहाय्य कर, सहारा दे ।

उडुगु (क) सं.— अंकोल. पिश्टे का
पेड़ ।

उडे (क) सं.— केले के पेड़ की हिलती
हुई जड़ ।

उडु (सम्) वि.— ढोया हुआ, ढोकर ले
जाया गया, लिया गया; विवाहित ।

उडे (सम्) सं.— वधू, विवाहिता स्त्री,
प्रौढ़ा ।

उण वि.— (तद्) उन (तत्); कम,
न्यून ।

उणते (तद्) सं.— ऊनता, न्यूनता,
कमी ।

उणु (क) क्रि.— ७७८१ उणु—गाड़,
मिट्टी में छिपा ।

उण्य (सम्) सं.— न्यूनता, कमी,
ऊनता ।

उणु (क) क्रि.— बड़ा हो, भारी
हो ।

उत (क) सर्व.— यह (बीच का) मनुष्य ।
सं.— दृढ़ता, स्थिरता, दृढ़चित्तता; फूंकना ।

उत (सम्) वि.— बुना हुआ ।

उति (सम्) सं.— बुनना, सीना; गति ।
उतु (क) सं.— आधार, सहारा,

अवलंब ।

उद (क ?) सं.— धूप, गुग्गुलु, अगर ।
— ७७८२ उदु (क) सं.— अगरबत्ती ।

उदरे (क) सं.— धान और गेहूँ के
खेत में उगनेवाली एक प्रकार की घास ।

उदलु (क) सं.— उभर, उमड़,
उफन; फूंकना ।

उदा, ७७८३ उदि (क ?) सं.— भूरा
रंग; बैंगनी रंग; लाल और नीले रंग का
मेल; श्यामवर्ण ।

उदिके (क) सं.— दे. ७७८४.

उदिसु (क) क्रि.— उमड़ा, उभार,
उभाड़, हवा भर (प्रे.) ।

७०० अट्ट (क) क्रि.— फूंक, हवा भर ; उभार, श्वास छोड़, (श्वास छोड़कर किसी बाजे को) बजा । सं.— फूंकना ; अगर बत्ती ; — ७०० किवि (क) क्रि.— शिकायत कर, चुगली खा । — ७०० कामाले (क) सं.— एक रोग । — ७०० कोळवे (क) सं.— हवा फूंकने की नाली । — ७०० बत्ती (क) सं.— अगरबत्ती ।

७०० अथ. ७०० अथ (सम्) सं.— थन । ७०० अथ— दूध, क्षीर ।

७०० अन (सम्) वि.— दे. ७००.

७०० अनते (सम्) सं.— दे. ७००.

७०० अजल. ७०० अजल (क) सं.— उभर, बढ़ा होना ।

७०० अजु (क) क्रि.— फूंक, हवा भर, पंखा झल । सं.— जौ के बाल, कांटेदार घास ।

७०० अजु (क) वि. बो.— क्रोध का सूचक ।

७०० अज, ७०० अजे (क) सं.— बहरा ; मूर्ख मनुष्य ; चुप रहनेवाला मनुष्य (मै. प्र.) । स्त्री. लि.— बही. ।

७०० अजिसु, ७०० अजिसु (तद्) क्रि.— ('जहा' से) — कल्पना कर, अंदाज कर ।

७०० अज, ७०० अज (क) सं.— रहने का स्थान, ग्राम, नगर, बस्ती ।

७०० अजय (सम्) सं.— वैश्य ।

७०० अजके (क) सं.— टेकने का साधन, टेकने की लकड़ी, टेकना ।

७०० अजिसु (क) क्रि.— टिका, झुका, लगा; चला, हटा ।

७०० अज (क) क्रि.— टेक, लगा, थाम । सं.— दे. ७००, ७०० अजसु मनुष्य ।

७०० अज (क) सं.— जांघ, जंघा । ७०० अज (क) सं.— ग्रामीण ; मूर्ख ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (सम्) सं.— क्षत्रिय ।

७०० अज (क) सं.— ग्रामों को सुफ्त में देना या दान ।

७०० अज, ७०० अजके (क) सं.— टेक, सहारा ।

७०० अजिसु (क) क्रि.— लगा, टिका, झुका. नीचे रखा ; सुखा, सूखने दे ।

७०० अज (क) क्रि.— हो. रह, वर्तमान हो, स्थिर रह ; रख, स्थिर कर, लगा, थाम ।

७०० अज (क) क्रि.— फूट, बाहर निकल (जैसे पानी का स्रोत) ; सूख, शुष्क हो ; टिके रह । वि.— टिका हुआ । — ७००

कोलु, ७०० गोलु (क) सं.— टेकने की लकड़ी ।

७०० अज (क) सं.— ग्राम का रक्षक, संतरी ।

७०० अज (सम्) सं.— शक्ति, बल ; प्रयत्न. कौशिल्य ; कार्तिकमास ।

७०० अज (सम्) वि.— शक्तिमान, बलवान् ।

७०० अज (सम्) सं.— बलशाली, बलवान पुरुष ।

७०० अज (सम्) वि.— प्रसिद्ध, श्रेष्ठ, अधिक, बढ़ा हुआ, प्रचलित ।

७०० अज, ७०० अजा, ७०० अजे (सम्) सं.— ऊन, ऊनी वस्त्र ।

७०० अज (सम्) सं.— मकड़ी ; जाल बिछानेवाला । — ७०० जाल (सम्) सं.— मकड़ी का जाल ।

७०० अज (सम्) सं.— मकड़ी ।

७०० अज (सम्) सं.— मेघ, मेढ़ा ; मकड़ी ; कंवल, ऊनी वस्त्र ।

७०० अज (सम्) वि.— ऊपर का, उठा हुआ, उन्नत । — ७०० गत (सम्) वि.—

ऊपर गया हुआ । — ७०० गति (सम्) सं.— मोक्ष, मुक्ति । — ७०० गामि (सम्) सं.—

ऊपर जानेवाला, मोक्षकामी । — ७०० पुंडू (सम्) सं.— सीधा लगाया गया तिलक ।

— ७०० रेत, ७०० रेतम् (सम्) सं.—

संयमी, इंद्रिय निग्रह करनेवाला, जितेंद्रिय, संन्यासी । — ७०० श्वास (सम्) सं.— दमा. एक बीमारी ।

७०० अज (सम्) सं.— लहर, तरंग ; धार. प्रवाह ; गति, गति की शीघ्रता ।

७०० अज (सम्) सं.— लहर. तरंग ; अंगूठी ; खेद, शोक ।

७०० अज (सम्) सं.— लक्ष्मण की पत्नी का नाम । — ७०० पति (सम्) सं.— लक्ष्मण ।

७०० अज (सम्) सं.— बड़वाग्न ।

७०० अज (सम्) सं.— ७०० अज (सम्) सं.— एक अप्सरा. देवलोक की नर्तकी ।

७०० अज (सम्) सं.— लवण-भूमि, क्षार ।

७०० अज (सम्) सं.— लवणमय भूमि, ऊसर भूमि ।

७०० अज, ७०० अजे (सम्) सं.— गरमी, ग्रीष्म ऋतु, घाम ; भाफ ।

७०० अज (सम्) सं.— गिरगिट, छिपकली की जाति का एक प्राणी ।

७०० अज, ७०० अजा, ७०० अजे (सम्) सं.— कल्पना, अनुमान, अटकल ; समझ, युक्ति ; विचार, तर्क ।

७०० अज (सम्) सं.— ऊहा करनेवाला, कल्पना या विचार करनेवाला ।

७०० अज (सम्) सं.— तर्क-वितर्क, सोच-विचार ।

७०० अज (सम्) वि.— कल्पित, तर्क किया हुआ ।

७०० अज (सम्) सं.— समूह, समुदाय ; सेना ।

७०० अज (क) क्रि.— पुकार, बुला ; चिल्ला, गर्जन कर । सं.— चिल्लाहट, गर्जन ।

७०० अज (सम्) सं.— जोर की चिल्लाहट, सियार की पुकार ।

७०० अज (सम्) सं.— काम, नौकरी, व्यवहार, सेवा ।

लघुगणित उल्लिखित, लघुगणित उल्लिखित
(क) सं.— सेविका, दासी ।
लघुगणित उल्लिखित (क) सं.— सेवक, नौकर ।
लघुगणित उल्लिखित (क) क्रि. = लघुगणित हल्लु—गाड़,
मिट्टी में बंद कर ।

००० क

०० क—कन्नड-वर्णमाला में सातवाँ अक्षर ।
०० कक, ०० ककु, ०० कके (सम्) सं.— वेदमंत्र, ऋग्वेद ।
०० ककथ (सम्) सं.— संपत्ति, ऐश्वर्य ।
०० कक्ष (सम्) सं.— रीछ, भालू; नक्षत्र,
तारा; एक पर्वत का नाम; राशिचक्र की
एक राशि । — ०० पति (सम्) सं.—
जांबवान; चंद्रमा । — ०० राज (सम्)
सं.— चंद्रमा; जांबवान; रीछों के राजा ।
०० कवेद (सम्) सं.— ऋग्वेद. वेदों में
पहला वेद । — ०० इ (सम्) सं.— ऋग्वेद
माननेवाले, ऋग्वेद पढ़े हुए व्यक्ति ।
०० कच्छे (सम्) सं.— इच्छा, चाह,
अभिलाषा ।
०० कजु (सम्) वि.— सीधा, सच्चा, ईमान-
दार, सरल, सहज, अनुकूल ।
०० कण (सम्) सं.— उधार, कर्ज, ऋण ।
०० कणत्रय (सम्) सं.— तीन कण—
देव कण, ऋषि कण और पितृ कण ।
०० कणमुक्त (सम्) वि.— उधार से
मुक्त ।
०० कणविमोचने (सम्) सं.—
उधार से मुक्त करना ।
०० कणानुबंध (सम्) सं.—
पूर्व जन्म के कण का संबंध ।
०० कणि, ०० कणिक (सम्) सं.—
कर्जदार, वह जिसने उधार लिया हो ।
०० कत (सम्) वि.— सरल; सच्चा, सीधा;
ठीक, उचित; पूज्य, सम्मानित । सं.—
सत्य, प्रिय वचन; दानों को चुनना या जमा

करना; सूर्य, चंद्रमा, हंस, मराल, जल,
पानी, अंधकार ।
०० कति (सम्) सं.— गमन, मार्ग; गाली;
उन्नति ।
०० कतु (सम्) सं.— मौसम, वसंतादि
छे ऋतुएँ, छे की संख्या का संकेत; प्रकाश;
योग्य समय, निश्चित समय; रजस्, स्त्रियों
का मासिक धर्म ।
०० कतुपर्ण (सम्) सं.— एक राजा
का नाम ।
०० कतुमति (सम्) सं.— रजस्वला ।
०० कतुराज (सम्) सं.— ऋतुओं में
श्रेष्ठ, वसंत ।
०० कतुशांति (सम्) सं.— जब पहली
बार स्त्री रजस्वला होती है तब किया जाने-
वाला एक धार्मिक समारोह ।
०० कतुस्नाने (सम्) सं.— रजोदर्शन
के बाद स्नान की हुई स्त्री ।
०० कतुस्नान (सम्) सं.— रजोदर्शन
के बाद का स्नान ।
०० कत्तिक, ०० कत्तिज, ०० कत्तिकु,
०० कत्तिज, (सम्) सं.— यज्ञ-पुरोहित, यज्ञ-याग के
कार्यों में भाग लेनेवाला ।
०० कद (सम्) वि.— बढ़ा हुआ, उन्नत ।
सं.— संपत्ति, धन-दौलत; समृद्धि, राशि ।
०० कद्वि (सम्) सं.— वृद्धि, समृद्धि,
अभिवृद्धि; कुशलता-क्षेम ।
०० कभु (सम्) सं.— देव, देवता, स्वर्ग
में उत्पन्न ।
०० कभुक्ष, ०० कभुक्षिन् (सम्)
सं.— इन्द्र ।
०० कश्य (सम्) सं.— सफेद पैरों का
बारहसिंगा ।
०० कश्यकेतु (सम्) सं.— अनिलद्व ।
०० कषभ (सम्) सं.— वृषभ, साँढ;
संगीत के सप्त स्वरों में से दूसरा; एक पर्वत;
आदितीयकर । — ०० कध्वज (सम्) सं.—
शिव । — ०० कवाहन (सम्) सं.—
शिव ।

०० कपि (सम्) सं.— तपस्वी, योगी,
संन्यासी, वैदिक मंत्र-द्रष्टा । — ०० पुत्रि
(सम्) सं.— एक पुष्प, अजजटी (The
flower Artemisia Indica).
०० कपिल्या (सम्) सं.— एक नदी
विशेष ।
०० कपि (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।
०० कप्य, ०० कप्यक (सम्) सं.—
मृगभेद, काले रंग का हिरन ।
०० कप्यमूक (सम्) सं.— एक
पर्वत विशेष ।
०० कप्यभृंग (सम्) सं.— एक ऋषि
का नाम, ये विभांडक ऋषि के पुत्र थे ।
रामायण में इनका उल्लेख मिलता है ।

००० क

०० क— कन्नड-वर्णमाला का आठवाँ अक्षर ।
०० ककार—क अक्षर ।

२ ए

२ ए—कन्नड-वर्णमाला का नौवाँ अक्षर । इसका
उच्चारण प्रायः '०० ये या ०० य' के रूप में
होता है । कुछ संज्ञाओं, क्रियाओं और
क्रियाविशेषणों के अंत में 'ए' होता है,
उदा.— ०० आने—हाथी, ०० मने—घर,
०० तेगे—खोल; ०० मेलने—धीरे-धीरे,
०० मत्ते—पुनः । संस्कृत आकारांत स्त्रीलिंग
शब्द कन्नड में एकारांत होते हैं, उदा.—
०० माला—०० माले, ०० शाला—
०० शाले; संबोधन में '२ ए' का प्रयोग
होता, उदा.— २ ए राम—हे राम!,
२ ए अक—ऐ बड़ी बहन!; प्रत्यय,
जिसका अर्थ साधारणतया 'पर, से' होता है,
उदा.— ०० माले, ०० माले, ०० माले.
गायक पाड़े देव सेविदं— गायक के गाने पर
प्रभु प्रसन्न हुए ।

फेंक, उलीच (जैसे पानी को नाँद से उलीचा जाता है)।

७७० ताकु (क) क्रि.— बार-बार आ-जा ।

कमी, छोटाई। — क्यू कहु, ग्यू गहु

ಎಣ್ಣೆ ಕೆಂಪು ಉಣ್ಣೆಕೆಂಪು (ಕ) ಸಂ.—ಭೂರ ರಂಗ जिसमें थोड़ा कालापन भी हो ।

ॐ कौमुदी एणकोपरिगे, ॐ गौमुदी एणकोपरिगे (क) सं.— तेल की बड़ी कड़ाही ।

ॐ डीं एणगे तेगे (क) क्रि.— तेल निकाल ।

ॐ ठाठु एणगे हाकु (क) क्रि.— तेल डाल ;

दूसरों के काम को बरबाद कर (मुह.) ।

ॐ एणवर (क) सं.— आठ व्यक्ति ।

ॐ एतन, ॐ एत (तद्) सं.— यत्न (तत्) ; प्रयत्न वश ।

ॐ एति, (तद्) सं.— यति (तत्) ।

ॐ एत्त (क) अ.— कहाँ, किधर, किस ओर ; कैसे । ॐ एत्तण—कहाँ, कहाँ का ॐ एत्तिद—उठा हुआ ; ॐ एत्तु, ॐ एत्तुद—किस स्थान का, कहाँ का, किधर का ; ॐ एत्तुनुं—कहीं भी, कहीं-कहीं ; ॐ एत्तुलुं, ॐ एत्तुलुं—हर कहीं, सर्वत्र ।

ॐ एत्त (क) सं.— उठाना, ऊपर करना ; निकालना, निकलना, प्रारंभ ; पहुँचना, मिलना, पाना ; पता लगाना ; (हिसाब में) धोखा, कपट, चालाकी ।

ॐ एत्तन (तद्) सं.— दे. ॐ एत्तु.

ॐ एत्तर (क) सं.— ऊँचाई, लंबाई । उदा.— ॐ एत्तर इत्तु बहल एत्तर—यह बहुत ऊँचा है, तंगीन मुरगण अरवत्तु ॐ एत्तर इत्तुवे—नारियल के पेड़ साठ फुट ऊँचे होते हैं ।

ॐ एत्तरु (क) सं.— दे. ॐ एत्तरु ; ॐ एत्तरु

(अनुरणन शब्द) —अम । ॐ एत्तल (क) अ.— कहाँ, किधर, किस ओर ; कैसे ।

ॐ एत्तिके (क) सं.— उठाना ; निकालना ; पहुँचना, मिलना ; धोखा, चालाकी ।

ॐ एत्तिसु (क) क्रि.— उठवा, ऊपर उठवा ऊँचा करा, खड़ा करा, सीधा करा (प्रे.) ।

ॐ एत्तु (क) क्रि.— उठा, ऊपर उठा, ऊँचा कर, सीधा कर, खड़ाकर ; निकाल ; पा, प्राप्त कर ; निंदा कर ; चुरा ; मिला ; कह, बोल ; प्रदर्शित कर ; बड़ा हो (अक्. क्रि.), काट, चुभ, भोंक । सं.— बैल, सांड ।

ॐ एत्तुगडे (क) सं.— प्रयत्न ; उपाय ; उद्धार ।

ॐ एत्तुवलि, ॐ एत्तुवलिक्क, ॐ एत्तुविके (क) सं.— उठाना, ऊँचा करना ; ले जाना, चुराना ; मिलना, जमा करना ।

ॐ एत्तुवुदु (क) क्रि.— ॐ एत्तुवुदु उठाना । सं.— बैल के जैसे पढ़ना ।

ॐ एत्तु (तद्) सं.— यत्न (तत्), प्रयत्न । — ॐ इत्तु—प्रयत्न कर ।

ॐ एत्तु (क) अ.— किधर, किस तरफ, कहाँ ।

ॐ एत्तुरिसु, ॐ एत्तुरिसु (क) क्रि.— ॐ एत्तुरिसु—सामना कर, विरोध कर ; सामने आ, आगे खड़े हो ।

ॐ एत्तु, ॐ एत्तु, ॐ एत्तु (क) अ.— सामने, आगे, सम्मुख । — ॐ एत्तु (क) सं.— विशेषी, शत्रु, प्रतिस्पर्धा करने-वाला । — ॐ एत्तु, ॐ एत्तु (क) क्रि.— स्वागत कर, सामने आ । — ॐ एत्तुगडु (क) क्रि.— सामने कह या बोल । — ॐ एत्तुगडु ॐ एत्तुगडु ॐ एत्तुगडु हिंदाडु—निंदा (या शिकायत) सम्मुख कर, प्रशंसा (पीठ) पीछे कर (कह.) ।

ॐ एत्तु (क) क्रि.— सामना कर, सामने आ, सामना कर ।

ॐ एदे, ॐ एदे (क) सं.— छाती, हृदय, उर, वक्षस्थल ; धैर्य, साहस । — ॐ एदे

अदिर, ॐ एदे (क) क्रि.— हिम्मत हार, साहस खो ; हृदय का कांपना । — ॐ एदे (क) क्रि.— किसी बीमारी के कारण छाती का कमजोर होना ; छाती का धक् धक् करना, साहस खोना । — ॐ एदे (क) क्रि.— हिम्मत कर । — ॐ एदे (क) क्रि.— साहस खो, भयभीत हो । — ॐ एदे (क) क्रि.— साहस खो, विमनस्क हो । — ॐ एदे (क) क्रि.— दे. ॐ एदे ॐ एदे — ॐ एदे करगु (क) क्रि.— दया या करुणा उत्पन्न हो (अक्. क्रि.) । — ॐ एदे (क) क्रि.— हिम्मत हार । — ॐ एदे (क) सं.— हृदय की ज्वाला, हृदय का दर्द ; ईर्ष्या, मात्सर्य । — ॐ एदे (क) सं.— गड़बड़ी, जल्द-बाजी, उतावलापन । — ॐ एदे (क) क्रि.— हिम्मत हार, डर । — ॐ एदे (क) सं.— अत्यधिक धैर्य या साहस, दृढ़ता । — ॐ एदे (क) क्रि.— साहस खो । — ॐ एदे (क) क्रि.— डरा, साहस का हरण कर । — ॐ एदे (क) क्रि.— दे. ॐ एदे — ॐ एदे (क) सं.— डरानेवाला, भयंकर व्यक्ति ; अविश्वासपात्र । — ॐ एदे (क) क्रि.— गर्व से बोल, घमंड कर, आत्मश्लाघा कर । — ॐ एदे (क) सं.— साहस, धैर्य ; बल । — ॐ एदे (क) सं.— हृदय । — ॐ एदे (क) सं.— दिल की धड़कन । — ॐ एदे (क) सं.— छाती पर की मणि । — ॐ एदे (क) सं.— ॐ एदे (क) सं.— डरपोक । — ॐ एदे (क) सं.— छाती का दर्द, हृदय-पीड़ा । — ॐ एदे (क) क्रि.— भावना रहित हो । — ॐ एदे (क) क्रि.— छाती आगे कर, साहस कर । — ॐ एदे (क) क्रि.— छाती का धक् धक् करना (भय के कारण) ।

ॐ एदे (क) सं.— देदे—धनुष की डोर । ॐ एदेगार, ॐ एदेगार (क) सं.— साहसी पुरुष, निडर आदमी ।

ಮೇಲೆ ಮೇಲೆ ಬಂದ ಹಾಗೆ ಉಮ್ಮೆ ಸೇಲೆ ಸಲೆ ಬಂದ

हगो—जैसे भैंस पर पानी बरसे (कह.)—
तुलनीय— भैंस के आगे ब्रीन बजाना (हि.)।

એમ્મે એમ્મે (ક) સં. = હેમ્મે હેમ્મે—ગર્વ,
અભિમાન ।

ಎಂಝ್ ಣ್ಯ (ಕ) ಪ್ರ.— ಮಧ್ಯಮ ಪುರುಷ ಉ.ವ.
ಸಾಮಾನ್ಯ ಭೂತಕಾಲಿಕ ಪ್ರತ್ಯಯ, ಉದಾ.—
ಪೇಳಿದೆಯ್ ಪೆಂಡಿದೆಯ್—(ತುನೇ) ಕಹಾ. ಮಾಡಿದೆಯ್
ಮಾಡಿದೆಯ್—(ತುನೇ) ಕ್ರಿಯಾ, ಬಂದೆಯ್ ಬಂದೆಯ್
—(ತು) ಆಯಾ ।

ಎಯ್ಯರ್ ಘತ್ತರ್, ಎಯ್ಯರು ಘತ್ತರ್ (ಕ) ಕ್ರಿ.—
 ಆ, ನಿಕಟ ಆ, ಪಧಾರ ।

ಎಯ್ಯು ಏಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಾ; ಸರ | ವಿ. =
ಐದು ಏಡು—ಪೈಚ ।

ಎಯ್ಯವಿಗ್ ಏಯ್ಯಮಿಗ (ಕ) ಸಂ.—ಜಂಗಲಿ ಭಾಲ್.

२४ एर (क) सं.— एक वृक्ष विशेष, कर्कधु ;
कर्ज, उधार, ऋण ; धुरी ।

ಎರಕ ಫುಕ (ಕ) ಸಂ.— ಢಲಾಣ್ಣೆ । — ಹೊಯ್
 ಹೊಯಿ. ಹೊಯ್, ಹೊಯ್ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಢಾಲನಾ ।
 ಎರಕ ಹೊಯ್, ನರಕ ತಪ್ಪದು ಫುಕ ಹೊಯ್
 ನರಕ ತಪ್ಪದು—(ಸಾಣ್ಣೆ ಮೆ) ಢಾಲನೆ ಪರ ಹಿ ನರಕ
 ಸೆ ಛುಡಕಾರಾ ನಹಿ (ಕಹ.) ।

ಎರಕಲ ಪುರಕಲ (ಕ) ಸಂ.— ಎರಕಲಕಾಂಬೋದಿ
 ಪುರಕಲಕಾಂಬೋದಿ—ಒಕ ರಾಗವಿಶೇಷ ।

२००३० एरकिसु (क) क्रि.— ढाल, ढलाई के
जैसे जुड़ ।

ಎರಡೆಂಟು ಉರಗಿಲು (ಕ) ಸಂ.— ಟಪ್ಪರ ।

ಎರಡು ಏಕೆ, ಎರಡು ಏಕೆ (ಕ) ಸಂ. — ಪಂಚ, ಪರ ;
 ಭಜಾ ।

२०१२ प्रश्नावि (क) सं.— वे कान् जो दूसरों की शिकायत सुनते हैं ।

२०१० पुरुष (क) क्रि.— झुक, नमस्कार कर;
शरण में जा; इच्छा कर; झपट, घेर;
उतर, नीचे उतर, हवा कर; ढाल; मार।

ಎರಡು ಪುಸ್ತಕ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಫೆಕ, ಫೆಲಾ, ಟಿಟಕಾ,
ವಿಕೀರ್ಣ ಕರ ।

२०८७ एरड्ड (क) वि.— दो की संख्या. उभय.

युगम. युग। - ७३०० अनेय. ७३९ अने-दूसरा।

ಎರಡಂಬಗೆ ಉಡಂಬಗೆ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೊ ರೀತಿ ಸೆ
ವಿಚಾರ ಕರ, ಛಲ ಯಾ ಕಪಟ ಕರ | —ಅನುಂ
ಆನುಂ —ಕಮ ಸೆ ಕಮ ದೊ | —ಮೂರು ಮೂರು
ದೊ-ತೀನ | —ನರೆ ಬರೆ (ಅರೆ ಅರೆ) ಡಾई,
ಅಡಾई | —ಹೊತ್ತು ಹೊತ್ತು (ಕ) ಸಂ.— ಪ್ರಾತ:-
ಸಾಯಂ | ಎರಡು ದಾಸರಿಗೆ ನಂಬಿ ಕುರುಡು ದಾಸ
ಕಟ್ಟು—ಉಡು ದಾಸರಿಗೆ ನಂಬಿ ಕುರುಡು ದಾಸ
ದೊ ದಾಸೊಂ ಪರ ಬರೊಸಾ ರಖಕರ ಅಂಧಾ ದಾಸ
ಬರಬಾದ್ ಹುಡಾ (ಕಹ.) । ಸಂ.—ಛಲ, ಕಪಟ |
ಎರಡೆಣಿಸು ಉಡೆಣಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೆ. ಎರಡಂ
ಬಗೆ.

ಎರಣ ಫುಣ, ಎರಣಿ ಫುಣ (ಕ) ಸಂ.— ಬಳ್ಳಿ ಕಾ
 ಗೋಬರ ; ಗಿರಗಿಡ ।

ಎರಡು ಅಕ್ಷರ, ಎರಡು ಅಕ್ಷರ (ಕ) ಕೃ.— (ಎರಡು—

गुरे—सींच, डाल) —सींच कर, डालकर ।

ಎರವು ಉಪು, ಎರವು ಉವು (ಕ) ಸಂ.— ಕರ್ಜೆ,
ಉಧಾರ, ಕೃಣ |

ಎರಲ್ ಫಲ್, ಎರಳ್ ಫಲ್, ಎಲಲ್ ಫಲ್,
ಎಲಲ್ ಫಲ್, (ಕ) ಸಂ.— ಹವಾ, ವಾಯು,
ಅನಿಲ ।

ಎರಲ್ ಫುಲ್, ಎರಲು ಫುಲು (ಕ) ಸಂ=ಹೆರಲ್
ಹೇರ್ಲ್, ಹೆರಳ್ ಹೇರ್ಲ್, ಹೆರಳು ಹೇರ್ಲು—ಸ್ತ್ರಿಯों
के बालों का जुड़ा ।

ಎರಲ್ ಪುಲ್ (ಕ) ಸಂ.— ಖೆಲ, ಕ್ರೀಡಾ, ನಾಚ,
ತಮಾಷಾ ।

ॐ एरले (क) सं.— कृष्णमृग, एक प्रकार का हिरन ।

ಎರನು ಉಪ (ಕ) ಸಂ.— ಕರ್ಜ, ಉಧಾರ, ಯಾಚನಾ ;
— ವನಮಾನ್ಯಸ ।

ಎರವಣಿಗೆ ಪೂರ್ವಣಿಗ (ಕೆ) ಸಂ.— ಕರ್ಜೆ ಯಾ ತ್ತುಣ
 ಲೇನೇವಾಳಾ ।

ಎರವಲ್ ಉಪವ್ಯು, ಎರವು ಉಪವು (ಕ) ಸಂ.—
 ಇಚ್ಛಿತ ವಸ್ತು ; ಕರ್ಜ, ಉಧಾರ, ಋಣ ; ಕರ್ಜೆ ಯಾ
 ಉಧಾರ ಲೇನೇ ಕೀ ಕ್ರಿಯಾ ; ದೂರ ಕಾ ಸಂಬಂಧ ; ಸ್ನೇಹ

या प्रेम की न्यूनता, तिरस्कार ; हानिप्रद गुण, हानि । ಎರವಿಕ್ಕು, ಉರಿವಿಕ್ಕು, ಎರವೀ ಉರಿವಿ, ಎರವುಕೊಡು ಉರಿವುಕೊಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಇಚ್ಛಿತ ವಸ್ತು ದೊ, ಉಧಾರ ದೊ । ಎರವುಮುಟ್ಟು, ಉರಿವುಮುಟ್ಟು (ಕ) ಸಂ.— ಉಧಾರ ಕೀ ವಸ್ತು । ಎರವುಮುಟ್ಟು, ಕೊಡು ಉರಿವುಮುಟ್ಟು ಕೊಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೆ. ಎರವಿಕ್ಕು. ಎರವುಮುಟ್ಟು ತೆಕ್ಕೊಳ್ಳು, ಉರಿವುಮುಟ್ಟು ತೆವಕೊಣ್ಣು (ಕ) ಕ್ರಿ,— ಉಧಾರ ಲೊ । ಎರವುಮುಯಿ ಮುಟ್ಟು, ಉರಿವುಮುಯಿ ಮುಟ್ಟು (ಕ) ಸಂ.— ಉಧಾರ ದೇನೆ ಖೌರ ಲೇನೆ ಕೀ ವಸ್ತು । ರವಿಗ ಉರಿವಿಗ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಎರವಣಗ.

ಎರವೆಟ್ಟು, ಉವೇಡು (ಕ) ಸಂ.—ಜೈನ ಸ್ಥಾನ, ಟಿಲಾ,
ಪಹಾಡಿ ।

ॐरुण एरु (क) वि.— समस्त पदों में ॐरुण
का रूप ॐरुण होता है, उदा.— ॐरुणतद
एरुतर—दो पंक्तियाँ, ॐरुण नाथी एरु
नालिगे—दो जिह्वाएँ, साँप ।

ಎರಡು ಉಣ್ಣೆ (ಕ) ಸಂ.— ದ್ವ. ಎರಡು.

ಎರಲ್ ಎರಲ್, (ಕ) ಚಿ.— ದೊ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ
 ಸೂಚಕ ಶಬ್ದ । ಉದಾ. ಎರಲ್ ಎರಲ್—ದೊ
 ಹಾಥ, ಎರಲ್ ಎರಲ್—ದೊ ಘೋಡೆ,
 ಎರಲ್ ಎರಲ್—ದೊ ಹಥಿಯಾರ, ಎರಲ್
 ಎರಲ್—ದೊ ಪ್ರಕಾರ ।

ಎರಡು ಉದಾ (ಕ) ಸಂ.— ಗೋವರ, ಕೂಡಾ-ಕರಕಡ!
ಹಳು ಹುಳು, ಹುಳುವು ಹುಳು (ಕ) ಸಂ.—
ಕೆಂಚು (An Earthworm or Muck
worm).

२० पुरे (क) सं.— भूरा रंग, मिश्रित भूरा और काला रंग, धुँधला या काला रंग ; काली मिट्टी, काली मिट्टीवाली भूमि ; जूठन या उच्छिष्ट में रहनेवाला कीड़ा ; पशु-पक्षियों का आहार (पक्षियों का आहार, साँपों का आहार आदि) साँप की केंचुली । क्रि.— माँग, याचना कर, उधार ले ; सींच, डाल, प्रदान कर ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—प्रभु, स्वामी, अधिकारी;
पति, प्रियतम ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—आश्रय-स्थान,
आधार; घर ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु. प्रेम, प्रीति,
स्नेह ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—छप्पर, फूस ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु
ॐरुयु (क) सं.—पंखा, पर, पक्ष, पत्र ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—झुका, मोड़ ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—झुका, मुड़, नीचे की

ओर आ, प्रणत हो, नमस्कार कर; घेर,

आक्रमण कर; प्रवेश कर, मिल । सं.—
प्रणति, नमस्कार; सरलता, सादगी ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—झुकना, नीचे की
ओर आना, प्रणिपात करना ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—छिटकाना,
फँकना, फैलाना, विकीर्ण करना ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—पत्नी, कामदेव की पत्नी
रति ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—एक पहाड़ी जाति ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—समग्रता, पूर्णता ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—पति या स्वामी होना,
प्रभु, कर्तृ । क्रि.—किसी तरल पदार्थ को
ढाल या सींच. पानी सींच; ढाल ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—ॐरुयु ँरुयु
ॐरुयु—अपूप, अँदरसा ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—ढलवा,
मिंचा (प्रे.) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—ॐरुयु ँरुयु—अर्क (तत्)
अर्कवृक्ष ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) वि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (तद्) वि.—व्यर्थ (तत्) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु. —ॐरुयु गोल्

(क) क्रि.—धैर्य या साहस कर; समग्र,
जान । —ॐरुयु पत्तु (क) क्रि.—समग्र में

आ, मन में आ (अकृ.क्रि.) । —ॐरुयु

यापम (क) सं.—हृदयेश्वर, प्राणप्यारा ।

—ॐरुयु वलाके (क) अ.—मन का

आंदोलन, अशांति । —ॐरुयु वला (क)

सं.—मानसिक चिंता, व्यथा, पीडा, अधैर्य ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—रे, अरे, हे

(संबोधन-पुरुषों के लिए); अहा! हे!

(आश्चर्यसूचक) ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—री, अरी

(संबोधन-स्त्रियों के लिए) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—उन्नाव, केनिल, घेर ।

ॐरुयु ँरुयु (तद्) सं.—गुला (तत्);

हलायची (हि.) ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु

(क) सं.—हड्डी ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—ॐरुयु ँरुयु—वायु,

हवा, अनिल । —ॐरुयु उणि (क) सं.—

सांप, हवा खानेवाला । —ॐरुयु बट्टे (ॐरुयु

बट्टे) —हवा का मार्ग, आकाश ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—स्फूर्ति दे, चैतन्य

प्रदान कर, सजग कर ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—शाल्मली वृक्ष, सेंमर

का पेड़ ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—

हे!, अरे! (संबोधन ए.व.—पुरुषों के लिए) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) वि.वो.—अहा!, शवास!,

भला! ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—ॐरुयु इलि—चूहा, मूषक ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—हड्डी ।

ॐरुयु ँरुयु (क) क्रि.—हिल, हिल-डुल,
काँप ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—री, अरी

(संबोधन स्त्रियों के लिए) । ॐरुयु ँरुयु—

किसी बात का स्मरण करते समय या संबोधन

में इसका प्रयोग होता है ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—पत्ता, पर्ण, पत्र; पान;

तलवार, चाकू आदि की नोंक । —ॐरुयु

अंबु (क) सं.—पर्ण जैसा बाण । —ॐरुयु

अडिके (क) सं.—पान-सुपारी । —ॐरुयु

नागर (क) सं.—पत्तों में होनेवाला छोटा

सांप । —ॐरुयु पनि, ॐरुयु हनि (क) सं.—

पत्तों पर से गिरनेवाली ओस । —ॐरुयु मने

(क) सं.—पर्णशाला । —ॐरुयु वस्त्र (क)

सं.—रंगीला रुमाल ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु (क)

सं.—पान बेचनेवाला ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—पान बेचने-

वाली स्त्री ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु

(क) अ.—हे!, अरे!, रे!

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) सं.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) सर्व.—सब, समग्र, पूरा,

सकल, अखिल ।

ॐरुयु ँरुयु, ॐरुयु ँरुयु (क) सर्व.—

सभी (पु.लिं. और स्त्री.लिं., व.व.) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सर्व.—सभी (न.लिं.

व.व.) ।

ॐरुयु ँरुयु (क) सर्व.—दे. ॐरुयु.

ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—हमेशा, सदा,

सर्वदा ।

ॐरुयु ँरुयु (क) अ.—कहाँ, किधर, किस स्थान

या जगह पर? ॐरुयु ँरुयु—कहाँ से,

२४७, एलु (क) सं.—तिल । —अमृत अमृत
(क) सं.—भाद्रपद मास की अमृतवास्या ।
—अमृत अष्ट (क) अ.—तिल भर । —
२४८, कालु (क) सं.—तिल का दाना ।
—अमृत चट्टिन (क) सं.—तिल की चट्टनी ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— दो में एक, दूसरा, अनेक में एक ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एकाग्रता, एक चित्तता ; एक लक्ष्य ; एक स्थान ; एक राग, बार-बार एक ही राग का आलाप, एक ही बात को बार-बार कहना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— ऐक्य, समस्वर ; गान, नृत्य और वाद्य की संगति ; एक ताल का नाम । — ॐ ईं ईं रगळे (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— ऐक्य, एकता, समता ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) अ.— एक स्थान में, एक पक्ष में, इकट्ठा ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही दौत-वाला, गणेश ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक लता, सरस्वती लता ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) अ.— एक बार, एक ही बार ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— कौआ ; शिवजी । वि.— एक आँख-वाला, अत्युत्तम दृष्टिवाला ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक भाग, एक टुकड़ा ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही देश, एक ही देश या भाग से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— एक ही देश या भाग से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही शरीर-वाले ; मित्र, दोस्त ; बुध नक्षत्र ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— केवल एक काम करने योग्य, एक ही जुगु में जोते जाने योग्य ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— जिसका एक ही प्रभु या स्वामी हो ; एक ही प्रभु या अधिकारी ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— परम पतिव्रता ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही पत्नी-वाला ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही पत्नी, सच्ची पत्नी, पतिव्रता । — ॐ ईं ईं व्रत (सम्) सं.— केवल अपनी पत्नी पर ही अनुरक्ति, आत्मसंयम । — ॐ ईं ईं व्रतस्थ (सम्) सं.— एक पत्नी-व्रत का आचरण करनेवाला ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— एक पत्तावाला, एक पंखवाला ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक कदम ; वर्तमान समय, एक ही समय ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक मार्ग, पगडंडी, चरण पर चरण ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक चरण, एक ही चरण, एक ही चरण पर खड़े रहना । — ॐ ईं ईं गति (सम्) सं.— एक ही चरण से चलना ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक ही प्रकार की पोशाक, समान रंग-रंग ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं. ॐ ईं ईं ईं ईं एकलिंगदेव (सम्) सं.— कुबेर, यक्षराज ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— कौआ । ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एकवचन, एक संख्यावाची ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— सामंजस्य, एकता ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक मात्र अवशिष्ट, द्वंद्व समास का एक भेद ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक बार पढ़ने या सुनने मात्र से समझने या स्मरण रखनेवाला ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं. ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— मिला हुआ, एक में एक मिला हुआ ; एकाकी ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक स्थान, वही स्थान ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— दे. ॐ ईं ईं. ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— एक स्थान से संबंधित या उसी स्थान से संबंधित ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक हाथ ; एक ही हाथवाला ; सिद्धहस्त या अद्वितीय कलाकार ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) अ.— सहसा, अकस्मात् ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— अकेला, एक ही । — ॐ ईं नी (सम्) वि.— अकेली (स्त्री) ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— एक आँखवाला ; अद्वितीय नेत्रवाला । सं.— कौआ ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) सं.— एक अक्षर का (शब्द), ओंकार ।

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— दे. ॐ ईं ईं.

ॐ ईं ईं एकतर (सम्) वि.— एक ओर ध्यान लगाए हुए, ध्यानावस्थित ; एक ही नौक वाला ।

७३४, एकाग्र

७३४, एकाग्र (तद्) सं.— एक ही ओर ध्यान लगाना, एक चित्तता ।

७३४, एकांग (सम्) सं.— एक व्यक्ति या भाग ; शरीर रक्षक ; बुधग्रह ; मंगलग्रह ; विष्णु ; चन्दन ।

७३४, एकांगि (सम्) सं.— एकाकी, अकेला-एक ही आदमी ।

७३४, एकांगि (सम्) सं.— एक ही पैर वाला, लंगड़ा ।

७३४, एकांक (सम्) सं.— एक ही अंक का नाटक, छोटी नाटिका ।

७३४, एकादश (सम्) वि.— ग्यारह, ग्यारहवाँ ।

७३४, एकादशी (सम्) सं.— ग्यारहवाँ तिथि, एकादशी (स्मार्त और वैष्णव एकादशी के दिन उपवास-व्रत करते हैं) ।

७३४, एकाधिपति (सम्) सं.— सम्राट, चक्रवर्ती ।

७३४, एकाधिपत्य (सम्) सं.— साम्राज्य, संपूर्ण राज्य पर एक ही का शासन ।

७३४, एकांत (सम्) सं.— सुनसान स्थान, गुप्त स्थान ; एक ही लक्ष्य या उद्देश्य ; रहस्य, रहस्य-पूर्ण व्यवहार । ७३४, एकांत लोकांत-वायितु—रहस्य का तो पर्दापाश हुआ । ७३४, एकांत, मूलरिहरे लोकांत—दो व्यक्तियों तक रहस्य रहस्य रहता है, पर तीन व्यक्तियों तक पहुँचे तो वह लोक की बात हो जाता है (कह.) । — ७३४, वास (सम्) सं.— एकांत में रहना, एकाकी रहना । — ७३४, वासि (सम्) सं.— संन्यासी, तपस्वी ।

७३४, एकाग्र (सम्) सं.— एक विषय पर ध्यान लगाना ; एकांत स्थान ; एकमत ।

७३४, एकाग्र (सम्) सं.— एक ही अर्थ या प्रयोजन, एक ही लाभ ।

७३४, एकावलि, ७३४, एकावलि (सम्) सं.— इकहरा मोतियों का हार ; एक काव्यालंकार विशेष ।

७३४, एकाग्र (सम्) सं.— एक ही का आश्रय, अनन्य शरणागति ।

७३४, एकाह (सम्) सं.— एक दिन की अवधि ।

७३४, एकाभाव (सम्) सं.— ऐक्य, समता, संमिश्रण । — ७३४, एकाभिवसु (सम्) कि.— मिल, सम्मिलित हो, एक हो ।

७३४, एक (क) सं.— हिचकी ।

७३४, एक (क) अ.— याके—क्यों, किसलिए ?

७३४, एकोक्ति (सम्) सं.— एक ही शब्द, एक ही कथन, एक ही संख्या-सच्चाई ।

७३४, एकोदर (सम्) सं.— एक ही गर्भ से उत्पन्न, भाई । — ७३४, इ वहन ।

७३४, एग (क) अ.— हमेशा, सदा ; निश्चित रूप से, सचमुच ।

७३४, एगल्, ७३४, एगलु, ७३४, एगलुं (क) अ.— सदा, हमेशा ।

७३४, एगु (क) कि.— हिचकी ले ; संभव कर, अपना ।

७३४, एगुवुदु (क) सं.— किंकर्तव्यविमूढता ।

७३४, एगोल् (क) कि.— मान, स्वीकार कर ।

७३४, एटु (क) सं.— चोट, आघात, प्रहार, घाव । वि.— कितना, किस परिमाण का । — ७३४, गार (क) सं.— मारनेवाला, ठीक प्रहार या गोली ।

७३४, एड (सम्) सं.— बहरा ; एक प्रकार की भेड़ ।

७३४, एडक (सम्) सं.— एक प्रकार की भेड़ ; जंगली बकरा ।

७३४, एडके (सम्) सं.— भेड़ी ।

७३४, एडमूक (सम्) सं.— बहरा और गूँगा ; मूर्ख ।

७३४, एडि (क) सं.— केकड़ा ।

७३४, एडि (क) सं.— ढेरि हेडि—डरपोक, भीरु ।

७३४, एडिसु, ७३४, एडिसु (क) कि.— परिहास कर. मज़ाक कर ; दुर्वचन कह, गाली दे ।

७३४, एण, ७३४, एणु (क) सं.— नोंके, सिरा-अग्र, छोर, मोड़ ।

७३४, एण. (सम्) सं.— ७३४, एणक—लाल हिरन । — ७३४, धर (सम्) सं.— चंद्रमा । — ७३४, धरधर (सम्) सं.— चंद्रशेखर । — ७३४, रिपु (सम्) सं.— बाघ ; सिंह, शेर । — ७३४, लांछन (सम्) सं.— चंद्र, शिवजी । — ७३४, वाहन (सम्) सं.— वायुदेव ।

७३४, एणाक्षि (सम्) सं.— मृगाक्षि, हिरन की आँख के समान आँखवाली ।

७३४, एणांक (सम्) सं.— चंद्रमा ।

७३४, एणाजिन (सम्) सं.— मृगचर्म, काले हिरन का चमड़ा ।

७३४, एणाधिनाथ, ७३४, एणाधिनायक (सम्) सं.— शिवजी ।

७३४, एणि (सम्) सं.— काली हिरनी ।

७३४, एणि (क) सं.— चढ़ने की सीढ़ी, निसेनी ।

७३४, एणवार (क) सं.— साथी, मित्र ।

७३४, एत (क) सं.— यात—उठना, चढ़ाव ; कुएँ से पानी खींचने का साधन (एक लंबी बाँस की लकड़ी के अंत में बाल्टी बांधकर खींचा जाता है) ; बाँस का मूसल जिससे धान कूटा जाता है । — ७३४, कोलु (क) सं.— बाँस की लकड़ी जिसमें बाल्टी बांधी जाती है ।

७३४, एतके (क) अ.— क्यों, किसलिए, किस हेतु ।

७३४, एतत्, ७३४, एतद् (सम्) सर्व.— यह ।

७३४, एतद्देशीय (सम्) वि.— एक ही देश से संबंधित ।

७३४, एतर्, ७३४, एतु (क) सर्व.— क्या, किसका, कौन-सा ।

७३४, एतर्हि (सम्) अ.— अब, इस समय, संप्रति ।

०७७८७८ एतादृश (सम्) वि.— इस प्रकार का, ऐसा, इस रीति का ।

०७७८७८ एतावत् (सम्) वि.— इतना, इतना बड़ा, इस परिमाण का ।

०७७८७८ (क) क्रि.— प्रयास कर, प्रयत्न कर, साहस कर ; हाँफ, दीर्घ उच्छ्वास ले । सं.— जंगली भालू ।

०७७८७८, ०७७८७८ (सम्) सं.— इंधन, काष्ठ, जलने की लकड़ी ।

०७७८७८ (सम्) सं.— समृद्धि, आनंद, हर्ष ।

०७७८७८, ०७७८७८ (क) सर्व.— क्या, क्यों, कैसे, कौन, कौन-सा ।

०७७८७८ (सम्) सं.— पाप, अपराध, दोष ।

०७७८७८ (क) अ.— कुछ भी हो ।

०७७८७८ (क) सर्व.— दे. ०७७८७८ (मै.प्र.) ।

०७७८७८ (क) सर्व.— कुछ, कोई । सं.— कुछ होने का भाव ।

०७७८७८ (क) सर्व.— दे. ०७७८७८ ।

०७७८७८ (क) प्र.— संदिग्ध वर्तमान कालिक प्रथम पुरुष ए. व. प्रत्यय ; उदा.— ०७७८७८ कोट्टेनु—देता हूँगा (शायद देता हूँ), ०७७८७८ होट्टेनु—जाता हूँगा (शायद जाता हूँ), ०७७८७८ माट्टेनु—करता हूँगा (शायद करता हूँ) ।

०७७८७८ (क) प्र.— वर्तमान कालिक प्रथम पुरुष ए. व. प्रत्यय ; उदा.— ०७७८७८ ओट्टेत्तेने—पढ़ता हूँ, ०७७८७८ बरेयुत्तेने—लिखता हूँ ।

०७७८७८ (क) सं.— महोगनी वृक्ष (Shorea robusta) ।

०७७८७८ एवंडं (क) सं.— क्या हिसाब, क्या पैसा, क्या संपत्ति ।

०७७८७८ एवंडु (क) सं.— कैसी दिक्कित, कैसा अपमान ।

०७७८७८ एवज (क) सं.— इंद्रगोप, वीरबहूटी ।

०७७८७८ एवासि (क) सं.— ०७७८७८ एवासि—दे. ०७७८७८ ।

०७७८७८ एय (क) क्रि.— ढाल, लगा, फेंक ; ढाल ।

०७७८७८ एय (क) अ.— छोटे या नीच जाति के लोगों के लिए प्रयुक्त संबोधन ।

०७७८७८ एर, ०७७८७८ एर (क) क्रि.— चढ़, उठ, ऊपर पहुँच, अधिक हो, आरोहण कर ।

०७७८७८ एरका, ०७७८७८ एरके (सम्) सं.— वृण विशेष, एक प्रकार की घास ।

०७७८७८ एरंड (सम्) सं.— एरंडी का पौधा ।

०७७८७८ एरल (क) सं.— पीड़ा, आसन, तख्ता ।

०७७८७८ एरलिकु (क) क्रि.— आसन लगा, आसन दे ।

०७७८७८ एराट (क) सं.— चढ़ना, सवारी करना ; चढ़ाई ; रोप ; क्रोध ।

०७७८७८ एराळि (क) सं.— अच्छा घुड़सवार ; चढ़ाई करनेवाला, आक्रमणकारी ।

०७७८७८ एरि (क) सं.— तालाब या सरोवर के पास ऊँचा स्थान, ऊँची जगह, तटाक बंधन ।

०७७८७८ एरिरि (क) क्रि.— घायल कर, प्रहार कर, चुभ । सं.— नदी का किनारा ।

०७७८७८ एरिहोगु (क) क्रि.— चढ़ आ, आक्रमण कर ।

०७७८७८ एरिळित (क) सं.— चढ़ाव-उतार, उवार-भाटा, उन्नति-अवनति ।

०७७८७८ एरु (क) सं.— गोबर ; हल ।—०७७८७८ कंदाय—हल का कर ।

०७७८७८ एरुं (क) वि.— चढ़नेवाला (वाली) ।—०७७८७८ बळिळ—चढ़नेवाली लता ।

०७७८७८ एरु (क) सं.— घाव । क्रि.— हो, उपयुक्त हो, लग, संभव हो, सक, समर्थ हो ; सामना कर, विरोध कर, चढ़ाई कर ; चुन, चयन कर, उठा ले, बटोर, अलग कर ।

०७७८७८ एराळि (क) सं.— दे. ०७७८७८ ।

०७७८७८ एरि (क) सं.— चढ़नेवाला ।

०७७८७८ एरिके (क) सं.— चढ़ना, चढ़ने की क्रिया, सवारी करना, अधिक होना, आधिक्य ।

०७७८७८ एरिसु, ०७७८७८ एरिसु (क) क्रि.— उठा, ऊँचा कर, चढ़ा, फहरा, आरोहित कर ।

०७७८७८ एरिसि भारतद वावुट—भारत के झंडे को (ऊँचा) फहराए ।

०७७८७८ एरु (क) क्रि.— उठ, ऊँचा उठ, ऊपर पहुँच, चढ़, सवार हो, आरोहण कर ; अधिक हो । सं.— चढ़ना, ऊँची भूमि, टीला ; घाव, प्रहार, दर्द, पीड़ा ।

०७७८७८ एरुत (क) सं.— दे. ०७७८७८ ।

०७७८७८ एरुविके (क) सं.— दे. ०७७८७८ ।

०७७८७८ एरुवु (क) क्रि.— उत्पन्न हो, व्यवस्थित हो ।

०७७८७८ एरुवु (क) सं.— ०७७८७८ एरुवु, ०७७८७८ एरुवु—प्रबंध, इंतजाम ।

०७७८७८ एरुवु (क) सं.— ककड़ी ; खरबूजा ।

०७७८७८ एरुवु (क) सं.— युद्ध की तैयारी, समर का प्रबंध ।

०७७८७८ एरुविक (तद् ?) सं.— ०७७८७८ एरुविक, ०७७८७८ एरुविक—इलायची, एला (तद्) ।

०७७८७८ एला, ०७७८७८ एले (सम्) सं.— इलायची ।

०७७८७८ एलावालुक (सम्) सं.— कैसे की छाल, सुगंध द्रव्य विशेष ।

०७७८७८ एलापत्र (सम्) सं.— सर्पराज ।

०७७८७८ एलां (क) सं.— नीलाम ।

०७७८७८ एलु (क) क्रि.— लटक, हिल, हिल-डुल ।

०७७८७८ एव (क) सं.— घृणा, तिरस्कार, उबाई, विरक्ति ।

०७७८७८ एव (सम्) अ.— इस प्रकार ; और ; सचमुच ; भी ।

०७७८७८ एवागलू (क) अ.— ०७७८७८ एवागलू, ०७७८७८ एवागलू—हमेशा ।

०७७८७८ एवु (क) प्र.— ०७७८७८ एवु का बहुवचन ; उदा.— ०७७८७८ बंदेवु—आते होंगे, ०७७८७८ इहेवु—रहते होंगे । (दे. ०७७८७८) ।

०७७८७८ एवु (क) प्र.— ०७७८७८ एवु का ब.व. ; उदा.— ०७७८७८ बरुत्तेवे—आते हैं, ०७७८७८ ओट्टेत्तेवे—पढ़ते हैं । (दे. ०७७८७८) ।

०७७८७८ एवु (क) सं.— ०७७८७८ आमे—कमठ, कर्म, कछुआ ।

०७७८७८ एवण (सम्) सं.— ०७७८७८ एवण—इच्छा, अमिमान, चाह ; लोहे का बाण ;

ॐ ऐ

अन्वेषण, खोज । — उ० त्रय — स्त्री, पुत्र और संपत्ति की लालसा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — फेंक, डाल, चला ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — फेंक, बाण चला । वि. — कितना, किस परिमाण का ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — क्रोध, रोष ; बुराई ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — निंदा, निरस्कार ; मजाक, परिहास ; गाली, कोसना ; परिहास या निंदा करनेवाला ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — निरस्कार कर, निंदा कर ; हटा, फेंक, दूर कर, छिपा, ढँक ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — उठ, खड़े हो, जागृत हो, तैयार हो (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय — आधुनिक कन्नड) ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — उठना ; उन्नति, वृद्धि, प्रगति, अधिकता, महानता, श्रेष्ठता, कीर्ति ; दुष्टता ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — उठा, जगा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — उठ, खड़े हो, जागृत हो, तैयार हो । सात की संख्या का सूचक ; उदा. — ॐ नमो भगवते वासुदेवाय सात दिन — सात दिन, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नूरु — सात नौ, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय चौदह (७ × २) सं. — ॐ नमो भगवते वासुदेवाय — कह, बोल, बना (ग्रा.) ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — उठना, जागना, तैयार होना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — ॐ नमो भगवते वासुदेवाय [ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय] सं. — सात जन, सात लोग ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दे. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय.

ॐ ऐ — कन्नड वर्णमाला का ग्यारहवाँ अक्षर । माधारणतया इसका उच्चारण ॐ ऐ अय्, ॐ ऐ अयि के जैसे होता है । वि. बो. = ॐ ऐ अयि — ऐ ! हे ! (संबोधन में) ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — ('इंगुद' से) — इंगुद या हिंगोट का फल ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — इंदु या चंद्रमा से संबंधित । — ॐ ऐ कले (क) सं. — चंद्रकला ; मृगशिरा नक्षत्र ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — आइंदा, आगे ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — इंद्र से संबंधित ; जेष्ठा नक्षत्र । — ॐ ऐ जाल (क) सं. — जादू, टोना । — ॐ ऐ जालिक (क) सं. — जादूगर । — ॐ ऐ धनु (क) सं. — इंद्रधनुष । — ॐ ऐ शर (क) सं. — इंद्रास्त्र ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — गंजा सिरवाला आदमी ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — इंद्र का पुत्र — जयंत, वाली, अर्जुन ; कौआ ; पूर्व दिशा ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — इंद्रियों से संबंधित ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — एकमत, एकता, एक अभिप्राय ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — चोर, लुटेरा ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — एकाग्रता, एकचित्तता, स्थिरता ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — एकांत से संबंधित, एक ही एक, केवल एक ; एक पत्नी व्रताचरण करनेवाला ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — हिम, तुषार ; जाड़ा, सर्दी । — ॐ ऐ बेट (क) सं. — हिमपर्वत, हिमाद्रि ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — एकता, लीनता ; एकमत, असेद, एकरूपता । — ॐ ऐ भाव

— एक होना, मिल जाना । — ॐ ऐ वर्ण मिला हुआ रंग ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — इक्षु या ईख से संबंधित ; शकर, गुड़ ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — इक्ष्वाकु वंश का ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — पाँच बाणवाला, कामदेव ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिव ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — अध्यापक, गुरु ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — कामदेव ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — अपनी इच्छा का ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. = ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय ऐलविल — कुबेर ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — असुंदर दीवार ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — काले हिरन से संबंधित ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — काली हिरन से संबंधित ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — आ, पहुँच, पधार ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — परंपरागत वृत्तान्त, दंतकथा, किंवदंती ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — पाँचवाँ ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — पाँच की संख्या । क्रि. — जा ; पा ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — सुहागिन, सुमंगली, सधवा । — ॐ ऐ तन (क) सं. — सौभाग्य, सौभाग्य, सुहागिन होना ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — आईना (फ़ारसी), दर्पण ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — ऐन (हिं.) ; मुख्य, योग्य, उचित ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — सुहाग, मांगल्य ।

ॐ ऐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — मालिक, स्वामी, हुज़ूर (ग्रा.) ।

८७७ ऐवु (अ.दे.) सं.— ऐव (अरबी); दोषः

अवगुण, न्यूनता, कमी।

८७७० ऐमोग (क) सं.— शिव।

८७७०७ ऐयंव (क) सं.— कामदेव।

८७७० ऐरण (क) सं.— सैधव, लवण।

८७७०७ ऐरदालि, ८७७०७ ऐरेदालि (क) सं.— मांगल्य, सुहाग।

८७७०७ ऐरावण (सम्) सं.— इंद्र का हाथी, ऐरावत, पूर्व दिशा का गज; सर्पों का एक प्रधान पुरुष; एक राक्षस का नाम।

८७७०७ ऐरावत (सम्) सं.— इंद्र का हाथी।

८७७०७ ऐरावति (सम्) सं.— इंद्र की हथिनी; विजली, मेघ; संतरे का पेड़; इरावती नदी से संबंधित।

८७७०७ ऐरीय (सम्) सं.— शराव, मद्य।

८७७ ऐल (सम्) सं.— इला और बुध से उत्पन्न पुरुष।

८७७०७ ऐलेय (सम्) सं.— सुगंध द्रव्य विशेष।

८७७० ऐवजि (अ.दे.) अ.— एवज (अरबी); के बदले, के स्थान पर।

८७७० ऐवजु (अ.दे.) सं.— संपत्ति, धन, ऐश्वर्य। — ८७७० दार—धनवान, धनी।

८७७०७ ऐवाय् (क) सं.— सिंह, शेर।

८७७०७ ऐश्वर्य (सम्) सं.— संपत्ति, धन-दौलत, विभूति। — ८७७० वंत (सम्) सं.— धनवान।

८७७० ऐसले, ८७७० ऐसे (क) अ.— नहीं क्या? ऐसा नहीं क्या? और क्या?

८७७० ऐसिर (तद्) सं.— ऐश्वर्य (तत्), संपत्ति।

८७७० ऐहिक (सम्) वि.— इह या इस लोक से संबंधित, लौकिक, भौतिक।

८ ओ

८ ओ—कन्नड वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर।

प्र.—क्रियाओं के अंत में प्रश्न का सूचक; उदा.—८०८०० बंदनो—आया क्या? ८०८०० माडिदो—किया क्या?; विधि

या आज्ञार्थ में; उदा.—८०८०० बारो—आ रे!, ८०८०० माडो—कर रे!; संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है, उदा.—८०८०० ओ रामि—हे रामि!, ८०८०० ओ केंपेगौड!—हे केंपेगौड!

८०८ ओंकि (क) सं.—८०८ वंकि—कुलावा-काँटा (Hook); एक सोने का आभूषण विशेष जो टेढ़ा होता है।

८०८ ओंगु (क) सं.—स्तन का अग्रभाग, चूचक।

८०८ ओंगे (क) सं.—८०८ होंगे—तिनिश, नेमि, रथद्रु (वृक्ष विशेष)।

८०८ ओंदि (क) वि.—एक, केवल, एक मात्र, अकेला। — ८०८ (८०८) गणु (कणु) — एक आँख। ८०८ (८०८) गेय्य (केय्य) — एक हाथवाला मनुष्य।

८०८ ओंदि (क) सं.— एक प्रकार के बड़े कर्णकुंडल, कानों की बाली।

८०८ ओंदि, ८०८ ओंटे (तद्) सं.— उष्ट्र (तत्); ऊँट।

८०८ ओंदिग (क) सं.— अकेला या एकाकी मनुष्य। — ८०८ तन (क) सं.— अकेलापन, एकाकी रहने का भाव, तनहाई। ८०८ ओंदिगार, (८०८ गार)—अकेला आदमी (से.प्र.)। ८०८ ओंदिगिति—अकेली स्त्री।

८०८ ओंदिग (क) सं.— दे. ८०८ ओंदिग।

८०८ ओंदि (क) क्रि.— लग (तवीयत को लगाना), स्वास्थ्यकर हो।

८०८ ओंटे (तद्) सं.— उष्ट्र (तत्), ऊँट।

८०८ ओंदिगार (८०८ ओंदिगार) (क) सं.— दे. ८०८ ओंदिगार।

८०८ ओंदि (क) सं.— किनारा, तट।

८०८ ओंदि (क) सं.— कीचड़, पंक, नदी तालाब की मिट्टी; कीचड़पन।

८०८ ओंतु (क) सं.— बारी (turn), चक्र, समय; हिस्सा, भाग।

८०८ ओंदरि (क) सं.— ८०८ ओंद्रि, ८०८ वंदरि, ८०८ वंदरे, ८०८ वंदे—चलनी, छलनी।

८०८ ओंदिके, ८०८ ओंदिगे (क) सं.— मिलना, मेल, संयोग, संयोजन।

८०८ ओंदिगलु (क) सं.— गृहिणी, कुटुंबिनी (साधारणतया) '८०८ ८०८ मक्कल ओंदिगलु—बाल-बच्चोंवाली स्त्री' का प्रयोग होता है।

८०८ ओंदिसु (क) क्रि.— एक कर, मिला, जोड़, लगा, संयुक्त कर। (तद्) क्रि.— नमस्कार कर।

८०८ ओंदु (क) सं.— एक की संख्या। ८०८ ओंदने, ८०८ ओंदनेय—पहला, ८०८ ओंदेडे—एक स्थान पर, ८०८ ओंदरे—डेढ़, एक या आधा, एकाध, कई (अनिश्चित)।

८०८ ओंदुगे (तद्) सं.— अंदुक (तत्); पायल, मंजीर, नूपुर।

८०८ ओंबत्तु (क) वि.— नौ की संख्या। ८०८ ओंबत्तनेय—नौवाँ। ८०८ ओंबत्तु—नौ सौ। ८०८ ओंबत्तु साविर—नौ हजार।

८०८ ओंयि (क) सं.— भैंसों के चिलाने की ध्वनि; मार खाने पर बच्चे इस ध्वनि के द्वारा अपनी बेचैनी प्रकट करते हैं।

८७७ ओक् (क) वि.— एक की संख्या का सूचक (समस्त पदों में); उदा.—८७७ ओक्कु—एक होना, एकता, ऐक्य, एकमत। ८७७ ओक्कुडे—एक तरफ या जगह। ८७७ ओक्कण—एक आँखवाला आदमी। ८७७ ओक्केय्—एक हाथ। ८७७ ओक्केय्य—एक हाथवाला मनुष्य। ८७७ ओक्कुवु—एक शाखा या डाल।

उमङ्ग, उमंग, आधिक्य । — अतः मित्रं
(अनुरणन शब्द) — बहूत, अधिक ।

७१ ओगे (क) क्रि.—उत्पन्न हो, निकल, बाहर आ, दिखाई पड़; कपड़े धो, साफ़ कर; दूर हटा, फेंक; मार, पीट, पटक।

७१० ओगटु (क) सं.—दे. ७१० (७१ में)।

७१० ओगगर (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, समुदाय, गिरोह, टोली।

७१० ओगगरणे (क) सं.—छोंक। — ७१० हाकु (क) क्रि.—छोंक डाल; किसी बात को मिर्च-मसाला मिलाकर या बढ़ा-चढ़ाकर कह।

७१० ओगगरिसु (क) क्रि.—छोंक डाल; (किसी बात को) मथुर बना, प्रभावशाली बना।

७१० ओगा (क) सं.—बहुत बीज एक ही स्थान पर बोना। — ७१० हाकु (क) क्रि.—एक ही स्थान पर बहुत बीज बो दे।

७१० ओगिसु (क) क्रि.—सरल या साधु बना, सीधे मार्ग पर ला, अपने वश में कर अपने स्वभाव के अनुकूल बना; पाल (पालतू बना)।

७१० ओगु (क) क्रि.—७१० ओलुगु—एक हो, मिल, संयुक्त हो, जुड़, हिल-मिल, लग (अक्. क्रि.); मिला, जोड़, लगा; हवा, पानी आदि (स्वास्थ्य के लिए) लग, अच्छा लग। सं.—समूह, समुदाय, राशि, ढेर; एकता, मेल, मिलन।

७१० ओगु (क) क्रि.—७१० उलुगु—झुक, ऎठ, मुड़; नम्र हो, विनीत हो।

७१० ओच (क) वि.—एक की संख्या का सूचक (समस्त शब्दों में); उदा.—७१० ओचर—एक हार। ७१० ओचवडि—जोड़ी; मिलन। ७१० ओचारे—एक हथेली। ७१० ओचुटु—अंगुष्ठ और तर्जनी के बीच का नाप या अंतर। ७१० ओचोस्तु—एक समय, एक बार।

७१० ओच (क) वि.—सुंदर, अच्छा, सुप्रसिद्ध।

७१० ओचत (क) सं.—समानता, समरसता, अनुकूलता; आनंद, हर्ष; संतोष, संतुष्टि।

—७१० कोलु (क) क्रि.—एक साथ या एक बार लो।

७१० ओचय (क) सं.—अपमान, बेइज्जती; तिरस्कार, निंदा; परिहास, मज़ाक, खिल्ली।

७१० ओचोस्तु (क) सं.—असमय, अनुचित समय।

७१० ओच्ये, ७१० ओच्ये (क) सं.—दे. ७१०।

७१० ओजन (अ.दे.) सं.—वजन (अरबी); भार, बोझ; इज्जत, मर्यादा।

७१० ओजर (क) सं.—फवारा, उत्स, वारिप्रवाह, निर्झर। (तद्) सं.—वज्र (तत्)।

७१० ओज्जे (अ.दे.) सं.—वजन (अरबी), दे. ७१०।

७१० ओट (क) अ.—७१० वट—एक निरर्थक शब्द। — ७१० ओट (दुहराना)—टर टर; जैसे—७१० ७१० ७१० कप्पे ओट ओट एनुत्तदे—मेंढक टर टर करता है। — ७१० ओट माताडु (क) क्रि.—अधिक बोल, बढ़बढ़ कर। ७१० ओटगुटु (क) क्रि.—दे. ७१० ओटगुटु।

७१० ओटार (क) सं.—७१० वठार—घर के चारों ओर की चहारदीवारी; वह चहार दीवारी या परिधि जहाँ चार-पाँच घर हो। ७१० ओटज (क) सं.—कर, शुल्क, उपहार, भेंट। ७१० ओटजे (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, गिरोह, समुदाय; आधिक्य, बहुतायत; श्रेणी, पंक्ति। — ७१० गिडु (७१० किडु) क्रि.—तोड़, फोड़, हटा।

७१० ओटण (क) सं.—समूह, सम्मेलन, संघ।

७१० ओटयिसु, ७१० ओटयसु (क) क्रि.—एक कर, मिला, जोड़, ढेर कर; टोली बना; स्पर्धा कर, सामना कर; जीत, विजयी हो; कुचल डाल, व्याकुल कर।

७१० ओटलु (क) सं.—राशि, ढेर; समूह, समुदाय।

७१० ओटविसु (क) क्रि.—एक कर, एक साथ मिला, मिला, जोड़।

७१० ओटारे (क) अ.—कुल मिलाकर, बात यह है कि, सारांश यह कि।

७१० ओटि (क) वि.—हठीली, मूर्ख, ज़िद्दी स्त्री।

७१० ओटिके (क) सं.—ढेर या राशि लगाने की क्रिया।

७१० ओटिल्, ७१० ओटिलु (क) सं.—अंजली भर; दे. ७१०।

७१० ओटिसि (क) क्रि.—राशि या ढेर लगा; ढेर लगवा (प्रे.)।

७१० ओटु (क) क्रि.—एक कर, मिला, एक साथ, लगा, जोड़, ढेर लगा; एक हो, राशि या ढेर हो; पड़े रह। सं.—मिलन, संयोजन; राशि, ढेर; कुल रकम या वस्तु; अंकुर, कीटाणु; मिट्टी का पिंड। ७१० ओटिगे—कुल मिलाकर। ७१० ओटि बार-सरकार और काश्तकार का अनाज, जो अविभक्त हो। ७१० ओटारे—दे. ७१०। ७१० ओटगुडिसु—एक साथ मिला, एक कर, एकता उत्पन्न कर। ७१० ओटोटिल्—बड़ी राशि या ढेर।

७१० ओटु (क) सं.—कसम, शपथ। ७१० ओटिटुकोलु (क) क्रि.—कसम खा।

७१० ओट्टे (क) सं.—रंघ, छेद। — ७१० बीलु (क) क्रि.—छेद हो, छेद पड़।

७८८ ओडिसे (क) सं.— कखौरी ।

७८८ ओडुचु (क) सं.— कखौरी ।

७८८ ओडे (क) क्रि.— दे. ७८८; नाश कर ।

७८८ ओडेदु—तोड़कर । ७८८ ओडेय

ओडेय होय—तोड़, टुकड़े-टुकड़े कर, चूर-चूर कर । ७८८ ओडेयिक्कु—दे. ७८८

ओडेयिक्कु—दे. ७८८ ओडेयिक्कु—टुकड़े करा, चूर-चूर करा (प्रे.) । ७८८ ओडेवडि—

दे. ७८८ ओडेवडि. सं.— खंड, टुकड़ा, अंश ; फटा दूध । अ.— यदि, अगर ; उदा.— ७८८ ओडेवडि नीनु बंदोडे—यदि तुम आओ तो, ७८८ ओडेवडि अवनु बंदोडे—अगर वह आवे तो — ।

७८८ ओडे (क) सं.— स्वामित्व, प्रभुता, अधिकार, ज़मीन-मकान आदि का अधिकार होना ।

७८८ ओडेगारु, ७८८ ओडेगारि (क) सं.—स्वामिनी, मालकिन, अधिकारिणी ।

७८८ ओडेतन (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओडेय (क) सं.— प्रभु, स्वामी, अधिकारी ; शासक, नेता, नायक ; राजा ।

७८८ ओडेयतन (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओडेसु (क) क्रि.— दे. ७८८.

७८८ ओडु (क) सं.— ओडू ; पत्थर तोड़ना, तालाब खोदना आदि काम करनेवाले एक जाति के लोग जो ग्रामीण तेलुगु बोलते हैं । इनमें कुछ लोग, जो उत्तर कर्नाटक में रहते हैं, सोलापुर के सिद्धरामेश्वर के उपासक हैं । राशि, ढेर, समूह ; सेना ; पण, दौंव, बाजी, खेल या क्रीड़ा का साधन । ७८८ ओडुदेश—ओडूदेश, उडीसा ।

७८८ ओडुण, ७८८ ओडुणे (क) सं.— राशि, ढेर ; समूह, गिरोह, संघ ; सेना ।

७८८ ओडुण, ७८८ ओडुयाण (क) सं.— मेखला, करधनी, किंकिणी ।

७८८ ओडुति (क) सं.— ओडु जाति की स्त्री ।

७८८ ओडुयिसु (क) क्रि.— एक साथ मिलकर सामना कर ; हरा, पराजित कर ।

७८८ ओडुव (क) सं.— शब्दों का उचित चयन, शब्द-सौंदर्य, शैली ।

७८८ ओडुवणे (क) सं.— क्रमिकता, सजावट ; तैयारी ।

७८८ ओडुडि (क) सं.— ओडु जाति से संबंधित, उडीसा । ७८८ ओडुडि जगन्नाथ— उडीसा (पूरी) के भगवान जगन्नाथ ; दौंव, पण, बाजी । अ.— सामने, सम्मुख, विरोध में ।

७८८ ओडुडिके (क) सं.— राशि या ढेर लगाना, रखना ।

७८८ ओडुवाण (क) सं.— मेखला, करधनी, किंकिणी ।

७८८ ओडुसु (क) क्रि.— रखवा (प्रे.) ।

७८८ ओडु (क) क्रि.— रख, धर, प्रस्तुत कर, पेश कर ; (किसी वस्तु को) पकड़ ; (हाथ) पसार ; लगा, डाल ; क्रम से रख, सजा ; अलंकृत कर ; दौंव या बाजी लगा ; विरोध कर, विरोधी बन ; प्रतिकार ले, बदला ले ; राशि या ढेर लगा । सं.— राशि, ढेर, समूह ; दौंव, बाजी ; तड़क-भड़क, वैभव, गोपनीय ; व्यूह, सेना ; (गणित में) गुना या भाग करने की मूल संख्या । — ७८८ ओडु (क) क्रि.— राशि या ढेर हो । ७८८ ओडुगल (क) सं.— चटान, पत्थर । ७८८ ओडुगु (क) क्रि.— सेना में प्रवेश कर । ७८८ ओडुगल (क) सं.— दरबार, बड़ी सभा, आस्थान ।

७८८ ओडुवले (क) सं.— डाल, ढार ।

७८८ ओडुविके (क) सं.— सामने रखना, प्रस्तुत करना, हवा लगने देना, निष्पाव ।

७८८ ओडुवेरे (क) क्रि.— सेना में मिल ।

७८८ ओडुयाण, ७८८ ओडुयाण (क) सं.— मेखला, करधनी, किंकिणी ।

७८८ ओडुवाण (क) सं.— दे. ७८८.

७८८ ओण (क) वि.— सूखा हुआ, मुरझा हुआ, शुष्क, नीरस ; प्रयोजनहीन, खाली । — ७८८ कैयु (क) सं.— शुष्क या खाली हाथ । — ७८८ कैलस (क) सं.— प्रयोजनहीन या बेकार काम । — ७८८ (क) गायि (कायि) सं.— शुष्क फल । — ७८८ गिड (क) सं.— सूखा वृक्ष । — ७८८ ज्वर (क) सं.— वह ज्वर, जो हानिकर न हो । — ७८८ तिडि (क) सं.— शुष्क आहार (दालों से बना हुआ), एक प्रकार की खुजली या चमड़े की बीमारी । — ७८८ दोगल, ७८८ दोगल (क) सं.— सूखा चमड़ा । ७८८ नेल (क) सं.— सूखी भूमि, ऊसर भूमि । — ७८८ मातु (क) सं.— शुष्क वचन, निरर्थक बात । — ७८८ रगळे (क) सं.— व्यर्थ की बात । — ७८८ सुगणि (क) सं.— सूखा गोबर । — ७८८ हरटे (क) सं.— निरर्थक बातचीत, गपशप । — ७८८ हेम्मे, ७८८ जंब (क) सं.— शुष्क गर्व, निरर्थक असिमान, दिखावटी बड़प्पन ।

७८८ ओणक (क) सं.— क्षीण या दुर्बल मनुष्य । वि.— दे. ७८८.

७८८ ओणकल, ७८८ ओणकल (क) वि.— दे. ७८८.

७८८ ओणकु (क) क्रि.— काँप, कंपित हो, हिल, हिल-डुल ।

७८८ ओणगिल्, ७८८ ओणगिल् (क) सं.— शुष्क या नीरस रहने की स्थिति, सूखापन, नीरसता ।

बोलीसो ओणगिसु (क) क्रि.— सुखा, निरस कर (प्रे.) ।

बोलीसो ओणगु (क) क्रि.— सुख, शुष्क हो, नीरस हो, सुरक्षा ; क्षीण हो, दुर्बल हो ।
बोलीसो ओणगिद एले—सूखा पत्ता,
बोलीसो ओणगिद कायि—सूखा फल (कच्चा फल), बोलीसो ओणगिद मर—
सूखा पेड़ । बोलीसो ओणगिद ओणगिद मर
रुठे नगुत्तदे ओणगिद एले उदुरुवाग
हसरेले नगुत्तदे—जब सूखा पत्ता (पेड़ से)
नीचे गिरता है, तब हरा पत्ता हँसता है
(कह.) । सं.—शुष्कता, नीरसता, सूखापन ।

बोलीसो ओणर (क) क्रि.— ('बोलीसो उणर'=
जान, समझ' तमिल) — जान, समझ ;
अनुभव कर, विचार कर ।

बोलीसो ओणे, बोलीसो ओने (क) क्रि.— ओसा,
फटक, पछोर (winnow) ।

बोलीसो ओत् (क) वि.— (समस्त शब्दों में)—
एक की संख्या का सूचक ; उदा.— बोलीसो
ओत्तहु—एक तरफ, एक ओर । बोलीसो
ओत्तड—एक समूह या गिरोह । बोलीसो
ओत्तर—एक दल, खंड या अंश । बोलीसो
ओत्तोल्—एक बाहु ।

बोलीसो ओत्त, बोलीसो ओत्तड (क) सं.—
दवाव, कुचलन, गरम जल से सेंकने की
क्रिया ।

बोलीसो ओत्तवर (क) सं.—बहुत उतावलापन,
जलदवाजी ; बहुत दवाव ।

बोलीसो ओत्तर (क) सं.— दवाव, जलदवाजी,
बहुत तीव्रता, प्रचंडता ।

बोलीसो ओत्तरिसु (क) क्रि.— हटा, ढकेल,
(दूसरे के स्थान के) पास-पास आ ; अधिक
हो, बहुत हो, बहुतायत हो ; दवा ; कुचल,
तीव्रता कर, प्रचंड हो, उतावला हो, शीघ्रता
कर ।

बोलीसो ओत्तल, बोलीसो ओत्तल (क) सं.—
दे. बोलीसो ।

बोलीसो ओत्ताय (क) सं.—दवाव, बलात्कार
तीव्रता, शीघ्रता, जलदवाजी, उतावलापन ।

बोलीसो ओत्तासर, बोलीसो ओत्तासे (क)
सं.— साहाय्य, सहायता, मदद ।

बोलीसो ओत्ति (क) कृ.— ('बोलीसो ओत्तु' से)—
दवाकर, मसल कर, कुचल कर आदि (दे.
बोलीसो) ।

बोलीसो ओत्तिके (क) सं.— दे. बोलीसो ।

बोलीसो ओत्तिगे (क) अ.— पास, समीप, एक
साथ । सं.— पुस्तक, किताब ।

बोलीसो ओत्तिविडि (क) क्रि.— दवा, कुचल,
नोच, मसल ।

बोलीसो ओत्तिसु (क) क्रि.— दवाव, कुचला,
मसला (प्रे.) ।

(१) बोलीसो ओत्तु (क) क्रि.— दवा, कुचल,
मसल, नोच ; रगड़ ; मोहर लगा, छाप
डाल, प्रभाव डाल ; लगा ; हटा, ढकेल,
किसी पर बल प्रयोग कर, बलात्कार कर ;
अधिकार कर, शासन कर ; तंग कर, कष्ट दे ;
कपड़े से धीरे-धीरे दवा (जैसे घाव पर
मलहम लगाकर किया जाता है), लेपन कर ;
असाधारण बल या तीव्रता का प्रयोग कर ;
किसी बात पर जोर दे, एक श्वास से उच्चारण
कर (जैसे अक्षर का उच्चारण) । बोलीसो ओत्ति
(क) कृ.— दृढ़ता से ; जोर देकर, जोर से ;
बलपूर्वक, शुष्कता से ; दवाकर, कुचलकर,
नोचकर, दवाव डालकर ; धीरे-धीरे दवाकर ;
लगाकर, छाप डालकर, प्रभावित करके ;
हटा कर, ढकेलकर ।

(२) बोलीसो ओत्तु (क) सं.— स्थान दे, रास्ता
दे, हट ; गरम जल से सेंक ; सुपारी काट ।

(३) बोलीसो ओत्तु (क) सं.— दवाव, कुचलन,
नोचने की क्रिया ; जुड़ जाना, मिलन,

संयोजन, एकता ; राशि, ढेर ; सामीप्य,
निकटता ; अधिकत, गाढ़ापन, निविडता,
पास-पास होना ; आधार ; नदी-तट ;
नुकीला लट्ठा ; ज्वार ; छाप, मुहर ; द्वित्व,
गुना होना (गुणित) ; स्निग्धता, एक के
पास-पास दूसरा होना (जैसे एक अक्षर के
बहुत पास दूसरा अक्षर लिखा जाता है) ।

(४) बोलीसो ओत्तु (क) सं.— बोलीसो होत्तु—
समय, काल (बोलीसो ओत्तु—इष्टोत्तु—इतना
समय, बोलीसो ओत्तु—उत्तना समय) ।
कृ.— उठाकर, ढोकर ।

बोलीसो ओत्तुकागद (क) सं.— बोलीसो ओत्तु
ओत्तुकरडु—स्याही सोख, सोखता ।

बोलीसो ओत्तुग, बोलीसो ओत्तुयंत्र (क)
सं.— दवाने का यंत्रविशेष ; मुद्रणयंत्र ।

बोलीसो ओत्तुविके, बोलीसो ओत्तुह (क)
सं.— दवाव, कुचलन, रगड़, मर्दन ।

बोलीसो ओत्ते (क) सं.—बंधक, गिरवी ; वेश्याओं
को दिया जानेवाला धन । बोलीसो ओत्तिडु
(क) क्रि.— गिरवी रख । बोलीसो ओत्ते
ओत्ते हरिसु (क) क्रि.— बोलीसो ओत्ते ओत्ते
है, बोलीसो ओत्ते ओत्ते ओत्ते (क)
क्रि.— गिरवी रख । बोलीसो ओत्ते सूले
(क) सं.— वेश्या, जो धन लेती है । बोलीसो
ओत्ते तेगे, बोलीसो ओत्ते हिडि (क)
क्रि.— गिरवी या बंधक ले ।

बोलीसो ओत्ते (क) सं.— एक होने की स्थिति,
अकेलापन ।

बोलीसो ओत्तेगोवल्, बोलीसो ओत्तेगोडल् (क) सं.— वेश्या, वारांगना ।

बोलीसो ओदगिसु (क) क्रि.— बोलीसो
ओदगिसु—सुलभ कर, किस वस्तु को प्राप्त
करा (प्रे.) ; दे, प्रदान कर, तैयार कर,
उत्पन्न करा (प्रे.) ; परिपूर्ण कर, मिला,
जोड़ ; लगवा ; संचय कर ।

बदगु ओदगु (क) क्रि.— साथ-साथ रह, अनुगमन कर; मिल, प्राप्त हो; तैयार हो, उपयोग में आ; हो, उत्पन्न हो, संभव हो; सुलभ हो; परिपूर्ण हो; शक्तिपूर्ण हो, समर्थ हो, वृद्धि पा, समृद्ध हो; अधिक हो, बहुतायत हो। सं.— प्राप्ति, परिपूर्णता, सौलभ्य, समृद्धि, आधिक्य, (किसी वस्तु का) मिलना, जो हाथ में हो।

बदगु ओदगु (क) सं.— बदगु ओदरु, बदगु ओदगु—होंठ, अधर।

बदगु ओदरु (क) सं.— दे. बदगु।

बदगु ओदरिसु (क) क्रि.—आवाज़ उत्पन्न करा, टंकार करा; चिल्लाने दे, पुकारने दे; हिलाने या झड़ने दे (प्रे.)।

बदगु ओदरु (क) क्रि.— हिला, झाड़, टंकार कर, आवाज़ उत्पन्न कर (ताली बजाकर या भुजाओं को ठोंककर जैसे मलयुद्ध करनेवाले करते हैं), चिल्ला, पुकार, जोर की आवाज़ दे, जोर से चिल्ला, गर्जन कर। वि.— हिलनेवाला, कांपनेवाला। बदगु ओदरु-दले [डल तले] (क) सं.— हिलनेवाला सिर (जैसे बूढ़ों का सिर हिलता है)।

बदगु ओदरुविके (क) सं.— चिल्लाहट, पुकार, जोर की आवाज़, गर्जन; हिलना; झाड़ना; टंकार।

बदगु ओदरिसु (क) क्रि.— दे. बदगु।

बदगु ओदगु (क) क्रि. और सं.— दे. बदगु।

बदगु ओदसु, बदगु ओदिसु (क) क्रि.— पादप्रहार करा, लात लगवा (प्रे.)।

बदगु ओदगु (क) सं.— दे. बदगु।

बदगु ओदगु (क) सं.— दे. बदगु।

बद ओदे (क) सं.— लात, पादप्रहार। क्रि.— लात मार, पादप्रहार कर, पैरों से मार। बदगु ओदगु ओदरु ओदरु ओदरु ओदरु

ओद ओदु होगु अंदरे ओदु होगुतेने अंद— (एक ने कहा)—उठकर चले जा, (दूसरे ने कहा)—लात मारकर जाता हूँ (कह.)। बदगु ओदगु (क) सं.— परस्पर लात मारना; तकलीफ़, कष्ट, कठिनाई, मुश्किल; संघर्ष। बदगु ओदगु (क) क्रि.— संघर्ष कर, जूझ, कष्ट का सामना कर, तकलीफ़ उठा।

बद ओदि (क) क्रि.— दे. बद।

बद ओदे (तद्) सं.— आर्द्र (तत्); गीला, भीगा हुआ।

बद ओन् (क) वि.— एक की संख्या का सूचक (समस्त-पदों में), उदा.— बद ओन् ओन्दिन, बद ओन्दिनस — एक दिन, बद ओन्दिसे एक ओर, किसी निश्चित दिशा में।

बद ओनके (क) सं.— बद ओनिके—मूसल, मूसर। — बद पाहु (क) सं.— कृत्ये समय गाया जानेवाला गीत।

बद ओनपु, बद ओलपु (क) सं.— नाज़, हाव-भाव, सुंदर चाल। — बद गार्ति (क) सं.— बद ओलपुगाति— नाज़नी, हाव-भाव दिखाने वाली स्त्री, सुंदर चालवाली स्त्री।

बद ओनल, बद ओनलु (क) सं.— अत्यधिक क्रोध। क्रि.— अंगार उगल, आँखें लाल कर।

बद ओनलि (क) सं.— दे. बदगु।

बद ओनसु, बद ओनिसु (क) क्रि.— 'बद ओने—ओसा, पछोर' का प्रेरणार्थक रूप।

बद ओने (क) क्रि.— दे. बद।

बद ओप् (क) वि.— एक की संख्या का सूचक (समस्त-पदों में) उदा.— बद ओप्

ओप्पस्तु—एक जून, एक समय, एक बार। बदगु ओप्पारु—नीत्र, नीध्र, छप्पर और छत्त की ओलती। बदगु ओप्पिदि—एक मुट्ठी, मुट्ठी भर।

बद ओप्प (क) सं.— उपयुक्तता, योग्यता; शुद्धता, सफ़ाई, पवित्रता; सौंदर्य, मनोहरता; गहना, आभरण; चमक, कांति, आभा; ठीक होना; समानता, आपसी समझौता, अनुमोदन, स्वीकृति। बदगु ओप्पिदि—जो गलती करता है वह शुद्धता का विचार नहीं करता है (कह.)। बदगु ओप्पगुदु (क) क्रि.— सौंदर्य या आभा कम हो। बदगु ओप्पगेदिसु (क) क्रि.— सौंदर्य नष्ट कर, खराब कर। बदगु ओप्पगेय (क) क्रि.— ठीक कर, सुधार। बदगु ओप्पमाहु (क) क्रि.— मृत व्यक्ति का अंतिम क्रिया-कर्म कर। बदगु ओप्पबदे, बदगु ओप्पवेह (क) क्रि.— सौंदर्य या आभा प्राप्त कर। बदगु ओप्पविकु, बदगु ओप्पविहु (क) क्रि.— सौंदर्य या आनंद सूचित कर; चमका, आभायुक्त कर, लेपन कर। बदगु ओप्पविहुविके (क) सं.— परिकर्म, अंगसंस्कार, लेपन। बदगु ओप्पहाकु (क) क्रि.— हस्ताक्षर कर।

बद ओप्पचि, बद ओप्पच्चि, बद ओप्पटि (क) वि.— थोड़ा, कुछ, बहुत कम।

बद ओप्पचि, बद ओप्पे (क) सं.— छोटे वच्चों का पेट (मै.प्र.)।

बद ओप्पंद (क) सं.— मानना, स्वीकृति, अनुमोदन, संविदा, सट्टा, पट्टा, संधि।

बद ओप्पयिसु (क) क्रि.— दे. बदगु।

बद ओप्पर (क) सं.— आँखों का पर्दा या आवरण।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — उपयुक्ता, योग्यता, ठीक होना, शुद्धता, पवित्रता, सौंदर्य, आभा (मै.प्र.) ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — समानता, समता, एकरूपता, एकात्मक संबंध ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ, ॐॐॐॐ ओॐॐॐ, ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — मानना, स्वीकार करना, स्वीकृति, अनुमोदन ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — मानी हुई या स्वीकृत बात । ॐॐॐॐ नमो तस्मै नमः । ओॐॐॐॐ मातु तपिसवारदु—मानी हुई बात से विचलित नहीं होना चाहिए (कह.) । — ॐॐॐॐ हाकु (क) क्रि. — हस्ताक्षर कर ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) क्रि. — मना, स्वीकार करा; सौंप, (किसी वस्तु को) दे दे, प्रस्तुत कर; (कंठस्थ किये हुए या पढ़े हुए पाठ को) कह, दुहरा; चमका, आभायुक्त कर (मै.प्र.) ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) क्रि. — लग, ठीक हो, उपयुक्त हो, योग्य हो; सुंदर हो, चमक, अच्छा हो, कांतियुक्त हो; अंगीकार कर, मान, स्वीकार कर; उपयोग में आ । सं. — उपयुक्ता, योग्यता, ठीक होना; स्वीकृति, अंगीकार; सौंदर्य, मनोहरता; चमक, आभा, कांति । ॐॐॐॐ ओॐॐॐ, ॐॐॐॐ ओॐॐॐ—उचित ढंग से, उपयुक्त रीति से, मानने के जैसे । ॐॐॐॐ ओॐॐॐॐ (क) क्रि. — मान, स्वीकार कर । ॐॐॐॐ ओॐॐॐॐ (क) क्रि. — स्वीकार करा, मना । ॐॐॐॐ ओॐॐॐॐ [ॐॐॐॐ वज्र] (क) सं. — आभायुक्त हीरा ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — मानना, स्वीकार करना ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) वि. = ॐॐॐ ओॐॐ, ॐॐॐ ओॐॐ—एक (पु.लिं. तथा स्त्री.लिं.) । ॐॐॐ ॐॐॐ ओॐॐॐ मनुष्य—एक आदमी, ॐॐॐ ॐॐॐ ओॐॐॐ हंगसु—एक स्त्री, ॐॐॐ ओॐॐॐ—एक पुरुष ('सु' पु. लिं. का सूचक), ॐॐॐ ओॐॐॐ—एक स्त्री ('सु' स्त्री. लिं. का सूचक प्रत्यय) ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. = ॐॐॐॐ ओॐॐॐ—अकेला या एकाकी पुरुष ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एक प्रकार की मिठाई, खाने की वस्तु; चपत, थप्पड़ (लाक्ष.) ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एक बारी (turn), एक समय ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. = ॐॐॐॐ ओॐॐॐ कुल; राशि, समुच्चय, समुदाय; छुंड । — ॐॐॐ (क) क्रि. — मिला, जोड़, समुच्चय कर । — ॐॐॐ गड्ड (क) क्रि. — एक हो, मिल, समुच्चय हो ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — झाड़ी; एक बार डाली गई वस्तु, एक बार की वस्तु (घी या तेल में भूनते समय कड़ाही में (कोई पदार्थ) एक बार जितना डाला जाता है उतना ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एकमत, एक ही अभिप्राय, एक ही निर्णय, एक ही आचार-विचार ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एक ही मन, एक ध्यान, एकचित्तता ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) क्रि. — मिल, जुड़, लग, एक हो, एकरूप हो, योग्य या उपयुक्त हो, मन, स्वीकार कर । सं. — मानना, स्वीकृति, एक होना, एकता ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) अ. = ॐॐॐ ओॐॐ—एक बार, एक समय, एक दफ़े; उसी समय ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एक देह; एकाकीपन, तनहाई ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐॐ (क) अ. — एक-एक बार, कभी-कभी, जब-तब, कभी ।

ॐॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — एक मुख; एक-मत, एकरूपता, एक ही ओर ।

(१) ॐॐॐ ओॐॐ, ॐॐॐ ओॐॐ, ॐॐॐ ओॐॐ, ॐॐॐ वय्, ॐॐॐ वय्यु, ॐॐॐ वय् (क) क्रि. — ले जा, उठा ले जा, पकड़कर ले जा, बढ़ा, पहुँचा; (अपहरण कर) । — ॐॐॐ गोड्ड (क) क्रि. — ले जाने दो, उठा ले जाने दो (प्रे.) ।

(२) ॐॐॐ ओॐॐ (क) क्रि. = ॐॐॐ वय्—रख, धर, एक ओर रख, गुप्त रख, थाती रख ।

ॐॐॐ ओॐॐॐ, ॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — वमन करते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

ॐॐॐ ओॐॐ (क) क्रि. — दे. ॐॐॐ (१). = ॐॐॐ ओॐॐ—डाल, किसी तरल पदार्थ को डाल; मार, पीट, पटक, धक्का दे ।

ॐॐॐ ओॐॐॐ (क) अ. — सीधे, ठीक-ठीक, उचित रीति से ।

ॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. — धरोहर, थाती, निक्षेप, निधि ।

ॐॐॐ ओॐॐ (क) सं. — ले जाने या उठाने की क्रिया ।

ॐॐॐ ओॐॐॐ (क) अ. — धीरे-धीरे, सावधानी से, आराम से, जान-बूझकर ।

ॐॐॐ ओॐॐॐ (क) सं. = ॐॐॐ वय्यार — चमक, चमक-दमक, नाज़-नज़ाकत, शौक, गर्व, अभिमान । — ॐॐॐ गाति, ॐॐॐ गिति (क) सं. — शौकीन औरत, विलासिनी । — ॐॐॐ गार् [ॐॐॐ गार] (क) सं. —

शौकीन पुरुष, विलासी पुरुष । — ॐॐ तन (क) सं. — दिखावटीपन, विलास ।

ॐॐॐॐ ओय्यारि (क) वि. — शौकीन, विलासी (स्त्री या पुरुष) ।

ॐॐॐॐ ओय्याळि (तद्) सं. = ॐॐॐॐॐ वैयाळि, ॐॐॐॐ वैहाळि — घोड़े पर सवारी करना । — ॐ ग (क) सं. — घोड़े पर सवारी करनेवाला ।

ॐॐॐॐ ओय्यिके (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओय्यु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरगल्लु (क) सं. — कसौटी ।

ॐॐॐॐ ओरगु (क) क्रि. — सहारा ले, आश्रय ले, पीठ लगाकर (किसी आसन पर) बैठ ; झुक, आराम ले ; ऊँच, सो जा ।

ॐॐॐॐ ओरगे (क) सं. — एकता, अद्वैत-भाव, संपूर्णता ।

ॐॐॐॐ ओरटु (क) वि. — मोटा, गाढ़ा, कड़ा, अकोमल ; गँवार, असभ्य । — ॐॐ तन (क) सं. — मोटापन ; असभ्यता ।

ॐॐॐॐ ओरत (क) सं. = ॐॐॐॐ ओरत — रगड़, घिसन ।

ॐॐॐॐ ओरयिसु, ॐॐॐॐ ओरयिसु (क) क्रि. — रगड़ा, घिसा (प्रे.), खिंचा, कर्षित करा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु [ग्रा.] (क) सं. — [पत्थर या काठ की] ओखली ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) क्रि. — रुला, चिल्लाने दे, विलाप करा, कराहने दे (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) सं. — उत्स, चश्मा, सोना, जल का स्थान, क्षरणा, फौवारा ।

ॐॐॐॐ ओरवारि (क) सं. — छोटी कुदाली ।

ॐॐॐॐ ओरसिसु (क) क्रि. — रगड़वा, घिसवा (प्रे.), स्पर्श करा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐ ओरसु (क) क्रि. — पोंछ, स्पर्श कर, कपड़े से पोंछ । सं. — रगड़, घिसन, घर्षण ; तंग करना, कष्ट देना, चिढ़ाना ; नष्ट करना, मारना, हिंसा ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु, ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) सं. — ओखली ।

ॐॐॐॐ ओरिसु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरुप, (तद्) सं. = ॐॐॐॐ वरुप — वर्ष (तत्) ।

ॐॐ ओरे (क) सं. — समानता, साम्य, एकरूपता ; म्यान ; वचन, बात, वर्णन । क्रि. — खींच, बाहर निकाल, कर्षण कर ; लगे रह, संयुक्त रह ; छू, स्पर्श कर ; रगड़, घिस, लेपन कर, कस (जैसे कसौटी पर कसना) परीक्षा कर, जाँच ; पीस, कूट ; चिल्ला, पुकार, कह, बोल, उपदेश दे, वर्णन कर ; छील (जैसे पेंसिल को छीलना) ।

ॐॐॐॐ ओरगु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ. — ॐॐॐॐ इसु — प्रेरणार्थक रूप ।

ॐॐॐॐ ओरगु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरल्ले, ॐॐॐॐ ओरल्ले (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरपु (क) सं. — सौंदर्य ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) सं. — स्नेह, प्रेम ; कराह, चीख, चिल्लाहट । क्रि. — स्नेह कर, प्रेम कर ; कराह, चीख, चिल्ला ।

ॐॐॐॐ ओरलिसु, ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरल्लुह (क) सं. — चीखना, कराहना, चिल्लाना ।

ॐॐॐॐ ओरल्ले (क) वि. — गीला, भीगा, तर, फूला हुआ (जलरोग के कारण शरीर के किसी

अंग का फूलना) । — ॐॐॐॐ कणु (क) सं. — क्लिबाक्ष, चुंधा । — ॐॐॐॐ गाल्लु [ॐॐॐॐ काल्लु] (क) सं. — पीलपौव ।

ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओरल्लु (क) क्रि. — कराह, चीख, चिल्ला ।

ॐॐॐॐ ओरे (क) क्रि. — गीला हो, तर हो, भीग, आर्द्र हो ; बह, रसकर बह, टपक, स्ववित हो । सं. — म्यान, शस्त्रकोश ।

ॐॐॐॐ ओरेगार (क) सं. — म्यान या शस्त्रकोश बनानेवाला ।

ॐॐॐॐ ओर्काल (क) सं. — एक समय, एक काल ।

ॐॐॐॐ ओर्कुडिते (क) सं. — जल का उतना परिमाण जो एक बार पिया जा सके, अंजलि भर ।

ॐॐॐॐ ओर्कैसु (क) क्रि. — धर, पकड़ ; आलिंगन कर ।

ॐॐॐॐ ओर्गु (क) सं. = ॐॐॐॐ ओर्गु — राशि, ढेर, समूह, समुदाय, श्रेणी ; अतिपरिचय, नैकट्य संबंध, स्नेह ।

ॐॐॐॐ ओर्दु (क) वि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओर्पु (क) सं. — दे. ॐॐॐॐ ; बल, शक्ति ; टिकाऊ होना, उपयुक्तता, मोटापन (कपड़े का) ।

ॐॐॐॐ ओर्व (क) सं. = ॐॐॐॐ ओर्व — एक पुरुष ।

ॐॐॐॐ ओर्वुळि (क) सं. = ॐॐॐॐ ओर्वुळि । — ॐॐॐॐ इसु (क) क्रि. — दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ ओर्मे (क) अ. — एक बार, एक समय ।

ॐॐॐॐ ओर्व, ॐॐॐॐ ओर्व (क) — एक आदमी ।

ॐॐॐॐ ओर्सु (क) क्रि. — (व्या. भा.) दे. ॐॐॐॐ.

७४० ओळ

७४० ओळ (क) सं.— (व्या. भा.) दे.
७४०.

७४० ओळ (क) क्रि.— इच्छा कर, कामना
कर, चाह, पसंद कर, प्रेम कर; आनंदित
हो, संतुष्ट हो। सं.— चाह, अपेक्षा, समता,
साम्यता। अ.— ७४० वोल, ७४०
वोल— के समान, के जैसे, की तरह।

७४० ओळ, ७४० ओळवु (क) सं.— प्रेम,
प्रीति; करुणा, सहायभूति; झुकाव।

७४० ओळके (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओळगार (क) सं.— रमणीय पुरुष,
प्रियदर्शन, सबका प्यारा। — ७४०
ओळगारि (स्त्री.लि.)।

७४० ओळणो (क) सं.— कोल्हू।

७४० ओळत, ७४० ओळेत (क) सं.— झुकाव,
हिलना-डुलना; प्रेम, स्नेह।

७४० ओळपु (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओळवर (क) सं.— ७४० वलवर—
आनंद, हर्ष, चित्ताकर्षक व्यक्ति या वस्तु।
७४० ओळवर कोळ (क) क्रि.—
आनंद उठा, प्रसन्नता का अनुभव कर;
किसी ओर झुक, पक्ष स्वीकार कर।

७४० ओळवु (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओळसे (क) सं.— ७४० ओळसे, ७४०
वलसे, ७४० वलसे— पलायन, शत्रु-सेना
के भय से घर-बार छोड़कर भागना,
स्थानांतरिकरण।

७४० ओळहु (क) सं.— प्रेखोलन, दोल,
झूला, हिंडोला।

७४० ओलि (क) क्रि.— प्रसन्न हो, अनुकूल हो;
आनंदित हो, संतुष्ट हो; चाह, इच्छा कर,
पसंद कर; ठीक हो, उपयुक्त हो, योग्य हो।
— ७४० इसु— प्रेरणार्थक रूप।

७४० ओलिपु (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओलिमे (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओलिसे (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओलुमे (क) सं.— ७४० ओलिमे,
७४० ओलुवे, ७४० ओलुमे— आनंद, हर्ष;
स्नेह, प्रेम, अनुराग; कृपा, करुणा, सहाय-
भूति; (राजा का) प्रसाद या मेहरबानी।

७४० ओले (क) सं.— चूल्हा; हिलना-डुलना,
लहरना। क्रि.— हिल, डुल, लहर; कांप,
कंपित हो, डोलायमान हो; लटक, झुक;
हिलते हुए गतिमान हो, दिखावट, रूप के
साथ गतिमान हो; प्रकट हो, दिखाई पड़।

७४० ओलेत (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओलुमे (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओलुने (क) अ.— दे. ७४०.

७४० ओलि (क) सं.— जरीवाली छोटी धोती,
उत्तरीय।

७४० ओल्ले, ७४० ओल्ले (क) क्रि. रू.—
मुझे नहीं चाहिए, मैं नहीं चाहता।

७४० ओसगे (क) सं.— हर्ष, आनंद, प्रसन्नता;
उत्सव, त्योहार; गौना; भापण; रपट,
समाचार; कीर्ति। — ७४० कलुहिसु
(क) क्रि.— समाचार भेज।

७४० ओसडि, ७४० ओसडु, ७४० वसडु,
(क) सं.— मसूड़ा, दाँतमांस।

७४० ओसर, ७४० ओसरु (क) क्रि.—
धीरे बह, खवित हो, रस होकर बह, टपक;
बहने दे, टपकने दे, खवित होने दे। वि.—
खवित होनेवाला। — ७४० गल् (क) सं.—
एक प्रकार का पत्थर जिससे जल खवित होता
है, चंद्र-शिला।

७४० ओसलु (क) सं.— ७४० ओसलु—
देहली, देहरी।

७४० ओसि (क) अ.— ७४० वसि— थोड़ा (ग्रा.)।

७४० ओसिगे (क) सं.— दे. ७४०.

७४० ओसे (क) क्रि.— आनंदित हो, प्रसन्न हो,
हर्षचित्त हो, उपयुक्त हो; पसंद कर; प्रेम
कर; मान, स्वीकृति दे।

७४० ओसेगे (क) सं.— भेंट, उपहार,
पुरस्कार।

७४० ओल् (क) क्रि.— हो, रह। वि.—
अच्छा, सुंदर। अ.— में, अंदर, भीतर।

७४० ओळ (क) वि.— भीतर का, अंदर का,
भीतरी। ७४० ओळकके— भीतर (या
घर में)।

७४० ओळकय, ७४० ओळक्ये (क)
क्रि.— हाथ में ले, अपने अधिकार में कर,
वश में कर।

७४० ओळकुरुव (क) सं.— भीतरी
द्वीप।

७४० ओळकै (क) सं.— गुप्त मार्ग, रहस्य-
पथ।

७४० ओळकोळु (क) क्रि.— अपने वश
में कर, (किसी वस्तु से) युक्त हो।

७४० ओळकोट्टे, ७४० ओळकोट्टे
(क) सं.— किले का भीतरी भाग

७४० ओळगागु (क) क्रि.— अधीन हो,
दूसरे की अधीनता स्वीकार कर; ऋण में
पड़।

७४० ओळगुडि (क) सं.— मंदिर का गर्भ-
गृह; बीच का घर; बीच की झोंपड़ी।

७४० ओळगुदोरु (क) क्रि.— रहस्य
प्रकट कर, गोपनीय बात कह।

७४० ओळगुमाडु (क) क्रि.— स्वागत
कर, अपने दल में मिला।

७४० ओळगे, ७४० ओळगु (क) अ.— में,
के अंदर, के भीतर।

ॐ ओलगे (क) क्रि.— प्रसन्न कर, संतुष्ट कर, वश में कर । सं.— गुप्तचर, जासूस ।

ॐ ओलतु, ॐ ओलितु (क) सं.— अच्छी बात, ठीक है, अच्छा ।

ॐ ओलहु (क) सं.— भीतरी भाग, वह जो अंदर हो ।

ॐ ओलदेगे (क) क्रि.— पीछे हट, हिचकिचा ; भीतर पहुँच ।

ॐ ओलपडु (क) क्रि.— अधीन हो, वश में आ ।

ॐ ओलपुगु (क) क्रि.— भीतर पहुँच, अंदर जा ।

ॐ ओलमातु (क) सं.— अंदरूनी बात, रहस्य ।

ॐ ओलमुख (क) सं.— अंतर्मुख, आत्मदर्शन, आत्मज्ञान ।

ॐ ओलमुच्चक (क) सं.— ॐ ओलमुच्चक ओलमुच्चक—एक कोमल पौधा, स्पर्श करते ही जिसके पत्ते मंद पड़ जाते हैं ।

ॐ ओलर्, ॐ ओलर् [ॐ ओलर्, ॐ ओलर्] (क) क्रि.— कह, बोल, बड़बड़ा, चिल्ला, गर्जन कर, आवाज कर ।

ॐ ओलले (क) सं.— बच्चों को दूध दिलाने का एक छोटा-सा (प्रायः चाँदी का) बर्तन ।

ॐ ओलवगे (क) सं.— भीतरी शत्रु, घर का भेदी ; काम, क्रोधादि ।

ॐ ओलवरते (क) सं.— ॐ ओलवरते ओलवरते—आनंद, प्रसन्नता ; प्रेम ।

ॐ ओलवु (क) सं.— भीतर, रहस्य ; अधीनता, किसी के वश में होना ।

ॐ ओलसंचु (क) सं.— अंदर ही अंदर मंत्रणा करना, षड्यंत्र ।

ॐ ओलसरि, ॐ ओलसार (क) क्रि.— पीछे हट, असफल हो, हार ।

ॐ ओलसोरु (क) क्रि.— हिम्मत हार ।

ॐ ओलहु (क) सं.— धन, दौलत ; सत्य, अच्छाई, श्रेष्ठता ; वश में करना ।

ॐ ओलहोरगु (क) सं.— अंदर और बाहर, अंतरंग और बहिरंग ।

ॐ ओलगर (सम्) सं.— भीतरी भाग ; बाग, बगीचा ।

ॐ ओलितु, ॐ ओलितु (क) वि.— अच्छा, शुभ, मंगलकर, सुंदर । ॐ ओलितुकेडकु—अच्छाई और बुराई ।

ॐ ओलु (क) वि.— अच्छा, सुंदर, श्रेष्ठ ।

ॐ ओलु नारि (क) सं.— सुंदर स्त्री ।

ॐ ओलुडि (क) सं.— अच्छी या सुंदर बात । ॐ ओलुडिकार (क) सं.— वाग्मी, सुंदर बात करनेवाला ।

ॐ ओलुमोग (क) सं.— सुंदर मुखड़ा ।

ॐ ओलुपेसर् (क) सं.— अच्छा नाम ।

ॐ ओलु (क) सं.— प्रियतम के साथ सरस संभाषण, विभ्रम ।

ॐ ओलपु, ॐ ओलहु (क) सं.— दे. ॐ ओलु.

ॐ ओलतन, [ॐ ओलतन] (क) सं.— अच्छाई ।

ॐ ओलपु (क) सं.— ॐ ओलु.

ॐ ओलवरलु (क) सं.— श्रेष्ठ रत्न, असूक्ष्म मणि ।

ॐ ओलिल (क) सं.— ॐ ओलिल—प्याज ।

ॐ ओलिलतु (क) वि.— अच्छा, शुभद, मंगलकर, सुंदर, मनोहर, श्रेष्ठ ।

ॐ ओलिलतु (क) वि.— दे. ॐ ओलु.

ॐ ओलिलद (क) सं.— अच्छा, भाग्यवान, ॐ ओलिलु (क) सं.— ॐ ओलिल (प्रा.) दे. ॐ ओलिल ; बूढ़ा सियार ।

(१) ॐ ओलले (क) सं.— ॐ ओललेतन —अच्छाई । ॐ ओललेय, ॐ ओलले (क) वि.— अच्छा, सुंदर । ॐ ओललेयवतु अच्छा आदमी, ॐ ओललेयवतु—अच्छी स्त्री, ॐ ओललेयवतु—अच्छी वस्तु । ॐ ओललेयवरु —अच्छे लोग ।

(२) ॐ ओलले (क) सं.— एक निर्विष सर्प विशेष, हुंडुभ ।

ॐ ओललेतन, ॐ ओललेतन (क) सं.— दे. ॐ (१).

ॐ ओलुकु (क) क्रि.— प्रवाहित हो, बह । सं.— धारा, प्रवाह ।

ॐ ओलुगल् (क) सं.— मिले रहने या जुड़े रहने की स्थिति ।

ॐ ओलुगु (क) क्रि.— आ, मिल, जुड़, लग, सम्मिलन हो, एक हो, एकत्रित हो । सं.— समूह, समुदाय, संघ ।

ॐ ओ

ॐ ओ—कन्नड वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर । कहीं-कहीं (सुदृढ़दोष अथवा अशुद्धि के कारण) ॐ के बदले ओं अथवा ओ का प्रयोग दृष्टिगत होता है ; उदा.— वोकरिके वाकरिके—ओकाई, वमन । अ.—प्रश्नसूचक अव्यय, उदा.— ओदोदोदो एडविदो—टोकर खाया क्या ? (अन्य पुरुष, पु.लिं., ए.व.) ओदोदो ओदोदो—लिखा क्या ? (अन्य पुरुष, पु.लिं., ए.व.) ओदोदो ओदोदो—आयी क्या ? (अन्य पुरुष पु.लिं.,

झुल्ले ओढ़े (क) सं.— चक्कर, (मिट्टी का जला हुआ) पट्टा जो कुँ या किसी घेरे के अंदर दीवार में एक के ऊपर दूसरा रखा जाता है ; बनाज रखने का मिट्टी का भाण्ड ।

६८ ओट, ६८ ओट (सम्) सं.— उडीसा ।

६८ ओट (सम्) सं.— उडुपुण्ड्र, जवाकुसुम (The china rose or the shoe flower).

६८ ओट (क) सं.— ६८ ओटि—पंक्ति, कतार, श्रेणी ; रास्ता, राह, गली ।

६८ ओट (क) सं.— पढ़ना ।

६८ ओट (सम्) वि.— बुना हुआ, सूत से एक छोर से दूसरे छोर तक सिला हुआ ।

६८ ओट (सम्) वि.— सब ओर फैला हुआ, अंतर्व्याप्त, एक में एक बुना हुआ, गुथा हुआ ; समता, समानता ; अंतर ।

६८ ओटि, ६८ ओटिकेत, ६८ ओटिकाट (क) सं.— गिरगिट, सरट ।

६८ ओटु (क) सं.— पढ़ना, पढ़ी हुई चीज़ ; वेद ।

६८ ओटु (सम्) सं.— बिछी ।

६८ ओदन (सम्) सं.— भोजन, भात, पकाया हुआ चावल ।

६८ ओदाळि (क) सं.— पढ़नेवाला, हमेशा पढ़नेवाला, अध्ययनशील व्यक्ति, पाठक ; विद्वान ।

६८ ओदिके (क) सं.— पढ़ना, पढ़ाई ।

६८ ओदिसु (क) क्रि.— पढ़ा, सिखा ; शिक्षा दे, अध्यापन कर ।

६८ ओटु (क) क्रि.— पढ़, पठन कर, ज़ोर से वाचन कर, सीखी हुई बात को दुहरा, उच्चारण कर । ६८ ओटु शास्त्र, इवकोटु गाळ — पढ़ना तो शास्त्र है, (पर) करना तो मत्स्यबंधन (अर्थात् बुरा काम) ; ६८ ओटु मरुजाद ६८ ओटु मरुजाद कूचभट्ट— पढ़ पढ़कर कूचभट्ट मूर्ख हुआ ! (कह.) । सं.— पढ़ना, पढ़ाई । — ६८ गार, ६८ गार, ६८ गार, ६८ गार (क) सं.— पढ़नेवाला, पाठक, विद्यार्थी, बुद्धिमान पाठक ।

६८ ओटुविके (क) सं.— पढ़ना, पाठ, पढ़ाई ।

६८ ओनाम (सम्) सं.— वह मंत्र जिसका प्रारंभ ओ से होता है, अक्षराभ्यास के समय पहले सिखाया जानेवाला अक्षर ओ (या ओं) ।

६८ ओप (क) सं.— रक्षक, पालक, प्रेमी, प्रिय, पति, स्वामी, प्रभु ।

६८ ओपल (क) सं.— पत्नी, प्रियतमा, प्रेयसी ।

६८ ओपादि (क) अ.— जैसा, जैसे, (के) समान, भाँति, तरह ।

६८ ओविकाल, ६८ ओविकाल ओवि-रायनकाल (क) सं.— बहुत प्राचीनकाल ।

(१) ६८ ओम (क) सं.— ६८ ओमु, ६८ ओव. ६८ ओवु, ६८ ओवु वादकि, ६८ ओव वाम, ६८ ओव वीम—दीप्य, लोचमस्तक (Bishops weed).

(१) ६८ ओम (सम्) सं.— दया, कृपा, सहानुभूति, सहायता ।

६८ ओयि (क) वि.बो.— अरे !, रे !, रे !

६८ ओर (क) वि.— (समस्त-पदों में) एक की संख्या का सूचक ; उदा.— ६८ ओरडि — एक फुट, ६८ ओरडे—एक के जैसे, ६८ ओरेले—एक पत्ता ।

६८ ओर, ६८ ओरु (क) सं.— छेद, रंध, (मे. प्र.) ।

६८ ओर, ६८ ओरे (क) सं.— ढाल, उतार, एक ओर, तरफ़, अंत, नोक, सिरा ।

६८ ओरगिति, [६८ ओरगिति वारगिति] (क) सं.— पति के भाई की पत्नी, जिठानी, देवरानी (यातृ) ।

६८ ओरगे, (क) सं.— ६८ ओरगे, ६८ ओरगे वारगे—(आयु की) समानता, समता, जोड़ा या जोरी । — ६८ यव (क) सं.— सम-वयस्क ।

६८ ओरडि (क) सं.— दे. ६८ ; असमता, अंतर, भिन्नता ।

६८ ओरण (क) सं.— पंक्ति, कतार, श्रेणी । — ६८ इसु (क) क्रि.— पंक्ति में हो या पंक्ति में रख ।

६८ ओरगे (क) सं.— दे. ६८ ओ.

६८ ओरु (क) क्रि.— सोच, विचार कर, विश्लेषण कर ; पूछताछ कर ; — ६८ ओरु होरु—लड़, जूझ, संघर्ष कर, युद्ध कर ।

६८ ओरे (क) सं.— एक तरफ़ या ओर, ढाल, उतार, टेढ़ापन, वह जो झुका हुआ हो, तिरछा ; वक्रता, अशुद्धि, गलती ; असमता । — ६८ कै (क) सं.— टेढ़ा हाथ । — ६८ किवि—टेढ़ा कान । — ६८ कटु, ६८ गटु (क) क्रि.— एक तरफ़ झुकाकर बांध । ६८ कण्णु, ६८ गण्णु (क) सं.— टेढ़ी या तिरछी आँख, एक ओर झुकी हुई आँख, पक्षपात । — ६८ मूगु (क) सं.— वक्र नाक । — ६८ मो (क) सं.— ऐंठा हुआ चेहरा, असुंदर मुख ।

६८ ओरे (क) सं.— घर की दीवारों के निचले भाग में लाल रंग लगाना । — ६८ गार [६८ गार] (क) सं.— रंग ढालनेवाला, चित्रकार ।

६८ ओल् (क) अ.— के जैसे, के समान, की भाँति ।

६८ ओल्, ६८ ओलु (क) क्रि.— झुक, आकर्षित हों, (किसी के प्रति प्रेम के कारण) खिंच जा, प्रेम कर ; जलक्रीड़ा कर, स्नान कर, नहा । — ६८ ओलाट (क) सं.— लटकना ; स्नेह, प्रेम, मेल । ६८ ओलाडु (क) क्रि.— पसंद कर, प्रेम कर ; नहा-जलक्रीड़ा कर । ६८ ओलाडिसु (क) क्रि.— नहला, स्नान करा, जलक्रीड़ा करा (प्रे.) ।

६८ ओलग (क) सं.— सेवा, प्रभुभक्ति ; दरबार, राजसभा ; दर्शक, श्रोतागण ; शहनाई, वाद्यविशेष । — ६८ ई (क) क्रि.— राजसभा कर ; सेवा कर ; उपस्थित रह । ६८ ओलगोडु (क) क्रि.— दे.

ಒಲಗಾರ್ತಿ. ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ರಾಜಸಭಾ ಯಾ ದರ್ಬಾರ ವಿಸರ್ಜಿತ ಕರ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ರಾಜ-
ದರ್ಬಾರ, ರಾಜಸಭಾ-ಮಂದಿರ, ಬಡ್ಡಾ ಹಾಲ್ (Hall).
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಸೇವಾ ಕರ್ನ-
ವಾಲಾ, ಪ್ರಭುಭಕ್ತಿ ಕರ್ನವಾಲಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಸೇವಕ,
ಅನುಚರ, ಸಹಾಯಕ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ. ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲ
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಸೇವಾ ಕರ,
ಅನುಗಮನ ಕರ; ಏಕತ್ರಿತ ಹೊ, ಏಕ ಸ್ಥಾನ ಮೆ
ಮಿಲ; (ಕಿಸಿ ಕಿ ಅರ) ಶ್ರುಕ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ. = ಒಲಗಾರ್ತಿ ಪೊಲಿಸು
—ತುಲನಾ ಕರ, ಉಪಮಾ ಕರ, ಮಿಲಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಗಿರವಿ ರಖ, ಬಂಧಕ
ರಖ; ಸತ್ಕಾರ ಕರ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— (ಕಿಸಿ ವಸ್ತು ಕೆ)
ಸಮಾನ ಹೊ; ಶ್ರುಕ, ತಿರಣಾ ಹೊ, ಅಸಮ ಹೊ;
ಲಡಕ, ಫಲ. ಸಂ.— ಜಾಮಿನ, ಜಮಾನತ,
ಪ್ರತಿಭೂ (Security); ಜಮಾನತ ಯಾ ಪ್ರತಿಭೂ ಕೆ
ರೂಪ ಮೆ ಶತ್ರು ಕೊ ಪ್ರದತ್ತ ವ್ಯಕ್ತಿ; ಬಂಧಕ,
ನ್ಯಾಸ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಜಮಾನತ ದೇನೆ-
ವಾಲಾ, ಉತ್ತರದಾಯಿ, ಜಮೀನದಾರ; ಜಮಾನತ ಕೆ
ರೂಪ ಮೆ ಶತ್ರು ಕೊ ಪ್ರದತ್ತ ಪುರುಷ | ಒಲಗಾರ್ತಿ
ಅಲಗಾರ್ತಿ—ಫಿ. ಲಿ. |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ತಾಡ ಕಾ ಪತ್ತಾ ಜೊ ಲಿಖನೆ
ಕೆ ಕಾಮ ಮೆ ಆತಾ ಹೆ, ತಾಲಪತ್ರ; ಫಿರಿಯೆ ಕೆ
ಪಹನನೆ ಕಾ ತಾಡ ಕೆ ಪತ್ತೆ ಕಾ ಕರ್ಣಾಭರಣ,
ಕರ್ಣಿಕಾ; ಸೋನೆ ಕಾ ಕರ್ಣಾಭೂಷಣ, ಬಾಲಿಯೆ;
ಛತರಿ ಕೆ ಆಕಾರ ಕಾ ಶಕಟ (ಗಾಡಿ) ಕಾ
ಪದವಾ. —ಫಿ. ಪುಸ್ತಕ (ಕ) ಸಂ.—
ತಾಲಪತ್ರ ಕೆ ಪುಸ್ತಕ | ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ-
ಮರ (ಕ) ಸಂ.— ತಾಡ, ತಾಲಪತ್ರ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ [ಕಾರ್ ಕಾರ] (ಕ) ಸಂ.—
ತಾಲಪತ್ರ ಲೆ ಜಾನೆವಾಲಾ ಸೇವಕ, ಪತ್ರವಾಹಕ,
ಸಂಪದವಾಹಕ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಕರ್ಣಾಭೂಷಣ

ಪಹನನೆ ಕಾ ಸೌಭಾಗ್ಯ, ಸುಹಾಗ, ಸುಹಾಗಿನ
ರಹನಾ |
(೧) ಒಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಒಲ.
(೨) ಒಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಒಲ (೧).
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರ.— ಪ್ರೇಮ ನ ಕರ, ರೋಷ ಯಾ
ಕ್ರೋಧ ಸೆ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ತದ್) ಸಂ.— ಉಪಗೃಹ (ತದ್);
ಗರ್ಭಗೃಹ, ಘರ ಕಾ ಮಿತ್ತರಿ ಭಾಗ, ಕಮರಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಒಲ (೧) ಕ್ರಿ.—
ಪಾಲನ ಕರ, ರಕ್ಷಾ ಕರ, ದೆಖರೆಖ ಕರ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಪೌಡಾ, ಗುಲಮ; ದವಾಡೆ, ದವಾ; ಪೌಡಾ-ವಿಶೇಷ
ಜೊ ಪಕನೆ ಪರ ಸುಖ ಜಾತಾ ಹೆ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ
(ಸಮ್) ಸಂ.— ಚಂದ್ರಮಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಅಧರ, ಹೆಂಟ | —ಫಿ.
ಪಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಚುಂಬನ, ಚುಮನಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಅಧರ ಕೆ
ಸಮಾನ ಲಾಲ ಪುಷ್ಪ, ಬಂಧುಕ ಕುಸುಮ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಸಮ್) ವಿ.— ಅಧರ ಕಾ |
ಸಂ.— ಅಧರ ಕೆ ಸಹಾಯತಾ ಸೆ ಉಚ್ಚರಿತ ಹೋ-
ವಾಲೆ ಅಕ್ಷರ— ಉ, ಊ, ಫ, ವ, ಭ, ಮ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ವಾಸರ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ವಾಸರ,
ಒಲಗಾರ್ತಿ ವಾಸರ (ಕ) ಸಂ.— ಏಕ ಅರ ಶ್ರುಕನಾ,
ಶ್ರುಕಾವ, ಉತ್ತಾರ, ಡಾಲ, ಅಸಮತಾ, ಅಸಮ (ಏಕ
ಅರ ಶ್ರುಕಾ ಹುಡಾ) ಬೋಜಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಏಕ ಅರ ಶ್ರುಕ
ರಹನೆ ಕಿ ಸ್ಥಿತಿ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಶ್ರುಕ, ಏಕ ಅರ
ಹೊ, ಏಕ ಅರ ಸುಡ; ಪಿಣೆ ಹಡ, ವಾಪಸ ಲೆ;
ರಾಸ್ತಾ ದೆ, ಜಗಹ ದೆ, ಹವಾಲೆ ಕರ, ಸ್ವೀಕಾರ
ಕರ; ದೂರ ಹೊ, ಹಡ, ನಿಕಲ, ಅಲಗ ಹೊ;
ಪ್ರತ್ಯಕ ಕರ; ಹಿಚಕಿಚಾ; ರೊಕ, ಟೊಕ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ವಿ.— ಉತ್ತನಾ, ಉತ್ತ ಪರಿಮಾಣ
ಕಾ; ಸವ, ಸಾರಾ, ಪೂರಾ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ
ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಅ.— ಕೆ ಲಿಫ, ಕೆ ವಾಸ್ತೆ, ಕೆ
ಅರ್ಥ, ಕೆ ನಿಮಿತ್ತ, ಕೆ ಕಾರಣ |

ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ವಿ.ಬಿ.—
ಅಹಾ!, ಏ!; ಏಏ!, ಝಝ! ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ
ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಹುಡುಗನಾ) |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— [ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ-ತಮಿಲು]
—ನಿಧುವನ, ಮೆಥುನ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಕ್ರಮಿಕ ಶ್ರೇಣಿ ಯಾ ಪಂಕ್ತಿ,
ಗುನಾ, ಸಂಖ್ಯಾ, ಕುಲ, ಸಮೂಹ |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ವಿ.— ಸಾತ ಕಿ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ
ಸೂಚಕ (ಸಮಸ್ತ-ಪದೊ ಮೆ) |
ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಅಲಗಾರ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಒಲಗಾರ್ತಿ
ಪೊಲ್, ಒಲಗಾರ್ತಿ ಪೊಲ್ (ಒಲಗಾರ್ತಿ ಹೊಲ್—
ಆಧುನಿಕ ಕಣ್ಣ) —ಝಕಡಾ, ಅಂಶ, ಖಣ್ಣ |

ಒಲ

ಒಲ—ಕಣ್ಣ ವರ್ಣಮಾಲಾ ಕಾ ಚೌದಹವೆ ಅಕ್ಷರ |
ಒಲ ಕೆ ಬದಲೆ ಅಲ ಅಲ ಯಾ ಅಲ ಅವ ಕಾ
ಮಿ ಪ್ರಯೋಗ ಧೃವ್ಯ ಹೆ (ಉದಾ.— ತಾಯಮನೆ
ತಾಯಮನೆ—ತಾಯಮನೆ ತಾಯಮನೆ=ಮಾಯಕಾ) |
ಒಲ ಅಲ, ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಬೆಲೆ ಕಾ ಛುಂಡ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಸ್ತೋಮ, ಸಮೂಹ,
ಸಮುದಾಯ |
ಒಲ ಅಲ, ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಯೋಗ್ಯತಾ, ಉಪಯುಕ್ತತಾ, ಲೇಲಿನತಾ, ಸಚಾಡೆ;
ಸಂತೋಷ, ನ್ಯಾಯ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಜೈನ ಮುನಿಯೆ ಕಾ
ಏಕ ವ್ರತ—ಮೌನವ್ರತ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ವಿ.— ಉತ್ತರ ದಿಶಾ
ಸೆ ಸಂಬಂಧಿತ | ಸಂ.—ಉತ್ತರಾ ಕಾ ಪುತ್ರ ಪರಿಕ್ಷಿತ್ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಾಜಾ
ಉತ್ತಾನಪಾದ ಕೆ ಪುತ್ರ, ಭುವ, ಭುವನಕ್ಷತ್ರ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಉತ್ಸುಕತಾ,
ಉತ್ಕಂಠಾ; ಚಿಂತಾ, ವ್ಯಾಕುಲತಾ, ವೇಚಿನಿ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ರಸೋದಯ |
ಒಲ ಅಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— ಪೆಡ್, ಭೋಜನ-
ಮಡ |

छेरुं औरस (सम्) वि.— छाती से उत्पन्न,
विहित । सं.— विहित पुत्र ।

द्विसद्व औसद (तद्) सं.— औपधम् (तत्) ।

ङं कं (क) सं. = ङङ् कण्—आँख । ङंगङ्
 कंगल् (क) सं. — आँखें (ङङ् का व.व.) ।
 ङंङङ् कंकण (क) सं. — आँसू । ङंगळ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ककमाल (सम्) स. -- एक बाजा,

वाद्यविशेष ; ताली बजने का समय ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकमुख (सम्) सं.— चिमटा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकर (सम् ?) वि.— दुष्ट, नीच, बुरा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकरि (तद्) सं.— खंकरि (तत्) ; बड़ा चाबुक ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकरिके (तद्) सं.— कंकणिका (तत्) ; दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकर (अ.दे.) सं.— कंकड़ (हिं.) ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकल (तद्) सं.— कंकण (तत्) ; दे. ॐॐॐॐॐॐ (१) ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐॐ, कंकल, ॐॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐॐ कंकल [ॐॐॐॐॐॐ कंकल, ॐॐॐॐॐॐ कंकल—आधुनिक कन्नड] (क) सं.— काँख ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकाल (सम्) सं.— ठठरी, अस्थि-पंजर, हड्डियों का ढाँचा । — ॐॐॐॐॐॐ (सम्) सं.— शिव । — ॐॐॐॐॐॐ पाणि (सम्) सं.— शिव । — ॐॐॐॐॐॐ मालि (सम्) सं.— शिव ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकालि (सम्) सं.— शिव जी के एक अनुचर का नाम ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकि, ॐॐॐॐॐॐ कंकु (क) सं.— भूसा अलगाया हुआ ज्वार या कोई अनाज ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकेलि, ॐॐॐॐॐॐ कंकेलि (सम्) सं.— अशोक वृक्ष ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंकोष्टि (सम्) सं.— लता विशेष ; पटुपर्णि, हैमवती पौधा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगने (क) अ.— अधिक, बहुत, समृद्ध रूप से ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगल, ॐॐॐॐॐॐ कंगल (क) सं.— अंधा मनुष्य ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगार, ॐॐॐॐॐॐ कंगाल, ॐॐॐॐॐॐ कंगु (क) सं.— असंतुष्टि, असंतोष ; क्रोध ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगाल (अ.दे.) वि.— कंगाल (हिं), दरिद्र, गरीब ; खराब ; निर्बल, असार (जैसे भूमि) । ॐॐॐॐॐॐ कंगाल—दरिद्र, मिश्रुक या निर्बल पुरुष (मै.प्र.) ।

ॐॐॐॐॐॐ कंगालतन (अ.दे.) सं.— दारिद्र्य, गरीबी ; दीनता, विपत्ति ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगालि (अ.दे.) सं.— दीनता, विपत्ति ; दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगालु (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगाल (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंगालि (अ.दे.) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 (१) ॐॐॐॐॐॐ कंगु (क) सं.— बड़ा विस्मय, अत्यंत आश्चर्य ; दे. ॐॐॐॐॐॐ ; अरुचि (साधारणतया इसका प्रयोग तेल के जलते समय उसकी दुर्गंध को सूचित करने के लिए किया जाता है) ; ज्वलनि या ज्योतिष्मति (cardispermum halicacabum) ।
 (२) ॐॐॐॐॐॐ (तद्) सं.— क्रमुक (तत्) ; सुपारी का पेड़ ; प्रियंगु (The Indian Millet).
 ॐॐॐॐॐॐ कंगुगे, ॐॐॐॐॐॐ कंगोगे, ॐॐॐॐॐॐ कंगोदि (क) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ (२) ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंच, ॐॐॐॐॐॐ कंचु (तद्) सं.— कांस्य (तत्) ; काँसा । — ॐॐॐॐॐॐ मिंचागु (क) क्रि.— अचानक चमक, प्रकाशित हो या दिखाई पड़ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंचुक (सम्) सं.— कवच ; चोली, जाकट ; सर्पचर्म, केंचुली ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंचुकांग (सम्) सं.— एक प्रकार की चोली ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंचुकि (सम्) सं.— कवचधारी ; चोली पहनी हुई (स्त्री) ; जनानी ड्योदी का रक्षक, शयन गृह का परिचारक, अंतःपुर का रक्षक ; सांप ; चोली ; कवच ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंचुकित (सम्) वि.— कवचधारी, चोली पहनी हुई (स्त्री) ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंचुगार, ॐॐॐॐॐॐ कंचगार [गार गार] (तद्) सं.— ठठरा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंज (सम्) सं.— कमल, पद्म ; ब्रह्मा । — ॐॐॐॐॐॐ गर्भ (सम्) सं.— विष्णु । — ॐॐॐॐॐॐ ज (सम्) सं.— ब्रह्मा । — ॐॐॐॐॐॐ जात (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ — (ॐॐॐॐॐॐ) ॐॐॐॐॐॐ

(कं) जौझव (सम्) सं.— नारद । — ॐॐॐॐॐॐ नाम (सम्) सं.— विष्णु । — ॐॐॐॐॐॐ नाल (सम्) सं.— कमल का डंडा । — ॐॐॐॐॐॐ नेत्र (सम्) सं.— कमल (के समान) नेत्र-वाली स्त्री । — ॐॐॐॐॐॐ वाण (सम्) सं.— कामदेव । — ॐॐॐॐॐॐ भव (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजर (सम्) सं.— उदर, पेट ; हाथी ; सूर्य ; ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजरीट (तद्) सं.— खंजरीट (तत्) ; खंजन पक्षी ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजलोचन (सम्) सं.— कमल नेत्रवाले, विष्णु ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजवैरि (सम्) सं.— चंद्रमा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजशर (सम्) सं.— कामदेव ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजसख (सम्) सं.— सूर्य ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजसधे (सम्) सं.— लक्ष्मी ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजात (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजाह (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजारि (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजासन (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजास्ये (सम्) सं.— कमलमुखी (स्त्री) ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजोदय, ॐॐॐॐॐॐ कंजोद्व (सम्) सं.— ब्रह्मा ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंजोदर (सम्) सं.— विष्णु ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंठ (तद्) सं.— कंठ (तत्) ; तालपत्र पर लिखने के लिए प्रयुक्त लोहे की लेखनी ; बर्तन का कंठ ; कंठक ।
 ॐॐॐॐॐॐ कंठक (सम्) सं.— काँटा, सूई या आलपिन की नोक ; पुलक, रोमांच ; तकलीफ देनेवाला, शत्रु ; व्याकुलता, व्यग्रता या चिन्ना का कारण, पाप ; युद्ध, खतरा ; लुब्धक, व्याध, शिकारी । — ॐॐॐॐॐॐ छेद्य (सम्) सं.— काँटे काटनेवाला आयुध । — ॐॐॐॐॐॐ द्वार (सम्) सं.— विघ्नदायक द्वार (दरवाजा) । — ॐॐॐॐॐॐ फल (सम्) सं.— कटहल ।

कंठक (सम्) सं.— चुभनेवाली वस्तु, तंग करनेवाली स्त्री, एक पौधा विशेष ।

कंठक, कंठक (क) सं.— डरना, भीत होना, पीछे हटना ।

कंठक, कंठक (क) क्रि.— डर, भीत हो, हिम्मत हार, व्याकुल हो ।

कंठक (सम्) सं.— कांटेदार वृक्ष । (तद्) सं.— कंठिका (तत्); गले में पहनने का सोने का हार ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— दे. कंठक-
कंठक ।

कंठक, कंठक, कंठक (क) सं.— लपेटा गया धागा, वेम, करघा ।

कंठक, कंठक (तद्) सं.— कंठिका (तत्) ।

कंठक (क) क्रि.— दुःख दे, कष्ट दे ।

कंठक (क) सं.— कुएँ की दीवार पर लगा आँखुआ ; कुएँ की सीढ़ियों का नीचे उतरने का डंडा ; बर्तन का कोर या किनारा ; बर्तन का तल ।

कंठक (सम्) सं.— गला, गर्दन ; बर्तन का गर्दन ; लोहे की लेखनी ; स्वर, नाद, ध्वनि ; शरीर, देह ; सामीप्य, पड़ोस ; तट, किनारा । — गंठ गत (सम्) वि.— गले में स्थित, गले में आया या अटका हुआ । — गंठ गरल (सम्) सं.— शिव । — गंठ पाठ (सम्) सं.— कंठस्थ करना । — गंठ भूष (सम्) सं.— गले में पहनने की छोटी माला । — गंठ माल (सम्) सं.— गले में पहनने का हार । — गंठ लज्ज (सम्) वि.— गले में लगा हुआ, आलिंगित । — गंठ शोष (सम्) सं.— कंठशोषण— गला सूखना, निरर्थक बात, व्यर्थ की अभिव्यक्ति । — गंठ सूत्र (सम्) सं.— मांगल्य, मंगलसूत्र ।

कंठक (सम्) सं.— गले में पहनने का हार ।

कंठक (सम्) सं.— एकावली, गुंज ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— कंठ से गर्जन करनेवाला. सिंह, शेर ; हाथी ; कवूतर । — कंठक (सम्) सं.— मैसूर के एक राजा का नाम । कंठक, कंठक = कंठक, कंठक ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— दे. कंठक.

कंठक, कंठक (सम्) सं.— ७, ७ और ७ वर्ण ।

कंठक (तद्) सं.— खंड (तत्), मांस-खंड ; टुकड़ा, काटना, काटना या तोड़ना । कांड दे. कंठक.

कंठक (क) सं.— मांस, गोश्त । क्रि.रू.= कंठक, कंठक, कंठक—देखा क्या (तूने या तुमने) ।

कंठक, कंठक, कंठक, कंठक (क) सं.— नापविशेष, लगभग २८ मन (एक मन=४८ सेर) का परिमाण ।

कंठक, कंठक (क) सं.— अंतिम निर्णय, सुलह ; संधि ।

कंठक, कंठक (क) सं.— दे. कंठक (मै-प्र.) ।

कंठक, कंठक (तद्) सं.— काण्डपट (तत्) ; कनात, पर्दा ।

कंठक, कंठक (तद्) सं.— काण्डपट (तत्) ; दे. कंठक.

कंठक, कंठक (क) सं.— शिल्पकलाकृति, शिल्पकला का काम, नक्काशी ।

कंठक, कंठक (क) क्रि.— अंकित कर, चित्रित कर, नक्काशी कर, काट, खंडित कर ।

कंठक, कंठक (तद्) सं.— कंठक (तद्) ; नस, कंठ की प्रधान नस ।

कंठक, कंठक (क) सं.— चीर फाड़ करने का आयुध विशेष, एक प्रकार का चिमटा ।

कंठक, कंठक, कंठक (क) सं.— छोटी खिड़की, रंध्र, छेद, खुला स्थान ।

कंठक, कंठक (क) सं.— टुकड़ा, खंड ; नाल, कांड ; वेम, करघा, वायदण्ड ।

कंठक, कंठक (क) अ.— कंठक खंडित— विलकुल, नितांत, सचमुच, दृढ़ रूप से । — कंठक (क) सं.— वह, जो न्याय और सत्य की बात कहता है ।

कंठक, कंठक (क) क्रि.— निश्चित कर (साधारणतया किसी वस्तु का मूल्य निश्चित करना) ।

कंठक, कंठक (क) सं.— वेम, वायदण्ड, करघा । कं.— ('कंठ' काण् अथवा कंठ काणु = देख' से) देखकर ।

कंठक, कंठक (क) सं.— दे. कंठक.

कंठक, कंठक (सम्) सं.— खुजलन, खुजली, खाज ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— मलना, खुजलना ; खुजली ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— मलना, खुजलना ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— दे. कंठक.

कंठक, कंठक (क) सं.— एक प्रकार का खड्ग ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— बाँस की टोकरी जिसमें अनाज रखा जाता है ; जूट ।

कंठक, कंठक (क) सं.— किश्त (Instalment), ऋणभाग ।

कंठक, कंठक (क) सं.— तेल और काली पुड़िया का मिश्रण जो शिवलिंग तथा नंदी पर लेपन करने के काम में आता है ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— कन्नड की एक प्राचीन कवयित्री का नाम ; संन्यासिनी, भिक्षुकी (भिक्षुणी) ।

कंठक, कंठक (क) सं.— दे. कंठक. क्रि.— अस्त हो, डूब ।

कंठक, कंठक (सम्) सं.— प्रसन्नता ; कामदेव ; हृदय ; धान्यागार, खत्ती ।

कंठक, कंठक, कंठक (सम्) सं.— गेंद ।

कंठुपिड (सम्) सं.— विष्णु ।

कंठुपिड कंतुमर्दन, कंठुपिड कंतुवैरि,

कंठुपिड कंतुहर (सम्) सं.— शिवजी ।

कंठु कंते (क) सं.— गहरी (घास आदि की) ।

कंठु कंते (तद्) सं.— कथा (तत्); व्यर्थ की

वस्तु या बात । — कंठु विसाडु (तद्)

क्रि.— पुराने कपड़े फेंक; मर जा (मुह.) ।

— कंठु पुराण (तद्) सं.— निस्सार बात

या विवरण ।

कंठु कंतेग (तद्) सं.— कथाधारिन् (तत्);

कथरी पहननेवाला, योगी, भिक्षुक ।

कंठु कंथे (सम्) सं.— कथा, कथरी, कथड़ी;

दीवार । कंठु कंथे कंथेयलि

कलिनाथय्य — दीवार में कलिनाथय्या

(भगवान्) ! (कह.) ।

कंठु कंद (क) सं.— छोटा शिशु, मुन्ना, मुन्नी,

लाल; एक वृत्त का नाम । कंठु

कंदय्य=कंठु. (सम्) सं.— कंदमूल,

खाने योग्य जड़; मेघ, बादल, गाँठ,

गुमड़ी; लहसन; गर्दन का निचला भाग ।

कंठु कंदक (अ.दे.) सं.— खंदक, गड्ढा,

किले के चारों ओर की खाई ।

कंठु कंदणिके (क) सं.— खाली बोरा ।

कंठु कंदमूल (सम्) सं.— मूली,

शकरकंद आदि जड़ें ।

कंठु कंदर (सम्) सं.— गुफा, घाटी,

खुखाल ।

कंठु कंदरि, कंठु कंदरा, कंठु कंदरे

(सम्) सं.— गुफा, घाटी ।

कंठु कंदर्प (सम्) सं.— कामदेव, मन्मथ ।

— कंठु जनक (सम्) सं.— विष्णु । —

कंठु जात (सम्) सं.— एक वृत्त का

नाम । — कंठु रिपु (सम्) सं.— शिव ।

— कंठु वैरि, कंठु अरि (सम्) सं.—

शिव ।

कंठु कंदल, कंठु कंदलु, कंठु कंदलु

(क) सं.— मिट्टी का छोटा बर्तन ।

कंठु कंदल (सम्) सं.— गाल, गाल और

कनपुटी; कपाल, खोपड़ी; अंकुर, अंकुश;

युद्ध, लड़ाई; सुवर्ण, सोना ।

कंठु कंदलि (सम्) सं.— एक जाति का

हिरन; केले का पौधा; झंडा, ध्वज, पताका ।

कंठु कंदवाहन (सम्) सं.— मेघवाहन-

इंद्र ।

कंठु कंदार (सम्) सं.— सेना,

पुलिस, सिपाही ।

कंठु कंदाय (सम्) सं.— कर, लगान;

मकान, भूमि आदि से संबंधित कर; (ज्योतिष

में) चार मास का अंतर ।

कंठु कंदि (क) सं.— व्यायी गाय; बछड़ा ।

(सम्) सं.— सफेद और भूरे रंग का

मिश्रण, धूसर वर्ण ।

कंठु कंदिके (क) सं.— कांतिहीन होना,

मंद पड़ना, सूखना, मुरझाना ।

कंठु कंदिल, कंठु कंदील (अ.दे. ?)

सं.— कंठु कंदील, कंठु खंदील —

लालटेन, दीपक, कंडील ।

कंठु कंदिसु (क) क्रि.— कांतिहीन कर,

मंद कर, सुखा, मुरझा (प्रे.) ।

कंठु कंदु (क) क्रि.— मुरझा, सूख, कांति-

हीन हो । सं.— पशुओं का बच्चा, बछड़ा;

छोटे-छोटे केले के पौधे; पीसने का पत्थर ।

कंठु कालिमा, आभाहीनता; निरत्नाह,

दुःख, पीड़ा ।

कंठु कंदु (सम्) सं.— बटलोई; तंदूर

चूल्हा; तवा ।

कंठु कंदुक (सम्) सं.— गेंद ।

कंठु कंदुगार [कंदु गार] (क) सं.—

वह जिसकी आँखें मंद हो ।

कंठु कंदोटि, कंठु खंदोटि (अ.

दे. ?) सं.— धन को रक्षित रखने की वस्तु-

थैली, पेटी आदि ।

कंठु कंध (सम्) सं.— मेघ, बादल; गर्दन ।

कंठु कंधर (सम्) सं.— गर्दन; मेघ,

बादल ।

कंठु कंधरे (सम्) सं.— गर्दन ।

कंठु कंधि (सम्) सं.— समुद्र; गर्दन ।

कंठु कंध (सम्) सं.— हिलना, काँपना,

थरथराना ।

कंठु कंधण (तद्) सं.— कंधन (तत्);

एक आयुध विशेष ।

कंठु कंधन (सम्) सं.— दे. कंध; कंधण.

कंठु कंधणिक (क) सं.— रक्षक, द्वारपाल,

नौकर ।

कंठु कंधाग (क) सं.— सागौन

(Teak) ।

कंठु कंधायमान (सम्) वि.—

हिलनेवाला, काँपनेवाला, थरथरानेवाला,

डरा हुआ, भीत ।

कंठु कंधित (सम्) वि.— हिलता हुआ,

काँपता हुआ ।

कंठु कंधिल, कंठु कंधिल, कंठु कंधिल,

कंठु कंधिल (सम्) सं.— एक पौधा

विशेष ।

कंठु कंधिसु (सम्) क्रि.— कंधित हो,

थरथरा, हिल-डुल । (क) क्रि.— सुगंधित

हो, सुगंध फैला ।

कंठु कंधु (क) सं.— दुर्गंध, बदबू; सौरभ,

सुगंध, महक । — कंधु गान्ति (क) सं.—

सुगंध फैलानेवाला स्त्री ।

कंठु कंधुग, कंठु कंधुग कंधुग (क)

क्रि.— सुगंध फैला, सुगंधित हो ।

कंठु कंध (सम्) वि.— हिलता हुआ, डुलता

हुआ, काँपता हुआ ।

कंठु कंध, कंठु कंध (तद्) सं.— स्तंभ

(तत्); खंभा ।

कंठु कंधनि (क) सं.— आँसू, अश्रु ।

कंठु कंधल, कंठु कंधलि (सम्) सं.—

ऊनी कंधल, कमरी, गलथ्या ।

कंठु कंधल (क) सं.— कूली, दैनिक पारि-

श्रमिक (जो प्रायः अनाज के रूप में दिया

जाता है) । — कंधु गार [कंधु गार] (क)

सं.— मजदूर, कूली, श्रमिक ।

कं०१०१ कंबलि (तद्) सं.— दे. कं०१०१.
 कं०१०२ कंबार (तद्) सं.—कम्मर—(कर्मकार)
 —लोहार । —११ गिति (तद्) सं.—
 लोहार की स्त्री ।
 कं०१०३ कंबारिके (सम्) सं.— लोहार का
 पेशा ।
 कं०१०४ कंबि (क) सं.— तार ; शलाका, लोहे
 की सलाई ; नाक की हड्डी ; धोती, साड़ी
 आदि में बीच-बीच में या अंत में लगनेवाली
 पट्टी ; भारयष्टि, भारी वस्तुओं को ढोने की
 (कंधे पर रखकर) बाँस की लकड़ी ; गदा,
 लाठी । सं.— चमच, कछली ; बाँस की
 शाखा या मिलाव ।
 कं०१०५ कंबिकार [कं०१०५ कार] (क) सं.—
 कंधे पर बाँस की लकड़ी रखकर उसके
 सहारे सामान ढोनेवाला, कहार ।
 कं०१०६ कंबिकीलु (क) क्रि.— भाग,
 चंपत हो ।
 कं०१०७ कंबिग (क) सं.— गदाधारी, द्वारपाल,
 द्वाररक्षक ।
 कं०१०८ कंबु (सम्) सं.— शंख ; रंगबिरंगा रंग,
 सफेद रंग ; कंकण, वलय ; गज, हाथी ;
 जल, पानी ; गर्दन ; एक अनाज । —कं०९
 कंठि (सम्) सं.— शंख जैसी गर्दनवाली
 स्त्री ।
 कं०१०९ कंबुक (सम्) सं.— शंख ; कंकण,
 वलय ; नीच या तुच्छ पुरुष ।
 कं०११० कंबुगे (क) सं.— रथगुप्ति, वरुथ, रथ
 के किनारे या चारों ओर लंगा हुआ काठ या
 लोहे का ढाँचा जो रथ को दूसरे रथ से
 टकराने से बचाता है ।
 कं०१११ कंबुकंठ, कं०११२ कंबुगल, कं०११३
 कंबुग्रीव (सम्) सं.— शंख के समान
 गर्दन ।
 कं०११४ कंब (तद्) सं.— दे. कं०११४.
 कं०११५ कंबि (क) सं.— कम्ब—कडुआपन,
 कटुः ।
 कं०११६ कंस (सम्) सं.— काँसा ; धातु का
 बर्तन, जल पीने का पात्र, गिलास, घंटी,
 कटोरा ; मथुरा का राजा कंस, जिसे श्रीकृष्ण

ने मारा था । —३३ जित् (सम्) सं.—
 श्रीकृष्ण । —३४ ताल (सम्) सं.—
 काँसे का झाँझ या मंजीरा । —३५ हर
 (सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।
 कं०११७ कंसांतक, कं०११८ कंसाराति,
 कं०११९ कंसारि (सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।
 कं०१२० कंसाळ (तद्) सं.— कांस्यताल (तत्) ;
 एक प्रकार का झाँझ या मंजीरा ।
 कं०१२१ कंसाळक (सम्) सं.— सोना-चांदी
 का काम करनेवाला, सोनार । (कं०१२२ कंसाळवाडु—तेलुगु) ।
 कं०१२३ कंसाळगिति (सम्) सं.— सोना-
 चांदी का काम करनेवाला, सुनारिन ।
 कं०१२४ कक् (क) सं.— का—जंगल, वन ।
 कं०१२५ कक्वाडे (क) सं.— कक्वाड़े कायि—इंद्रवारुणि
 (colocynth) ।
 कं०१२६ ककलाते, कं०१२७ ककुलते, कं०१२८
 ककुलाते, कं०१२९ ककुळते, कं०१३०
 ककलाते, कं०१३१ ककुलते, कं०१३२
 ककुळते (क) सं.— प्रेम, प्रीति ; इच्छा,
 कामना, व्यर्थ की कामना ।
 कं०१३३ ककुस्थ (सम्) सं.— इक्ष्वाकु वंश का
 एक राजा ।
 कं०१३४ ककुस्थज (सम्) सं.— राम ।
 कं०१३५ ककुद्, कं०१३६ ककुद (सम्) सं.—
 चोटी, शिखर ; बैल का कुन्ब ; सींग ;
 सांड ; प्रधान, मुख्य ; राजकीय चिह्न ;
 कृपाण, खड्ग ; बैल या सांड का थूथन ;
 आकाश, गगन ।
 कं०१३७ ककुद्, कं०१३८ ककुद् (सम्)
 सं.— बैल, सांड ।
 कं०१३९ ककुद्गति (सम्) सं.— जघन,
 कूल्हा ।
 कं०१४० ककुम्, कं०१४१ ककुभ (सम्) सं.—
 दिशा ; चोटी, शिखर ; कांति, सौंदर्य ; प्रधान,
 मुख्य, श्रेष्ठ ; वीणा की झुकी हुई लकड़ी ;
 अर्जुनवृक्ष ; गीत, गीतविधि ।
 कं०१४२ ककुलते, कं०१४३ ककुलाते, कं०१४४
 ककुळते (क) सं.— दे. कं०१४४.

कं०१४५ ककोक, कं०१४६ ककोक, कं०१४७
 ककुफ, कं०१४८ कोक (सम्) सं.— एक
 पंडित का नाम ।
 कं०१४९ कक (अ.दे.) सं.— काका (हिं) ; चाचा ।
 कं०१५० कक, कं०१५१ ककरि, कं०१५२ ककोरि,
 कं०१५३ कोंग, कं०१५४ कोंग, कं०१५५
 कोंगु, कं०१५६ कोंगरि (क) वि.— वक्र,
 टेढ़ा । कं०१५७ ककविकरि, कं०१५८ कक
 ककरि-विकरि—टेढ़ा-मेढ़ा ।
 कं०१५९ ककड (क?) सं.— दीवट, मशाल ।
 कं०१६० ककडे (क) सं.— एक आयुध विशेष,
 खड्ग, बरछी ।
 कं०१६१ ककलाते (क) सं.— दे.— कं०१६१.
 कं०१६२ ककस (तद्) सं.— ककश (तत्) ;
 थकावट, सौंस लेने में कठिनाई का अनुभव,
 दमा ; दर्द, पीड़ा ; कठिनता, क्रूरता ।
 कं०१६३ ककसगार [कं०१६४ गार] (क) सं.—
 क्रूर पुरुष ।
 कं०१६५ ककसते (तद्) सं.— ककशता (तत्) ।
 कं०१६६ ककसु, कं०१६७ ककोसु, कं०१६८
 ककसु (क?) सं.— संडास, शौचगृह,
 पायखाना ।
 कं०१६९ कका (क) वि.— घबराया हुआ, कातर,
 भीरु । — कं०१७० कक (क) सं.— भीरु या
 कातर पुरुष । — कं०१७१ कककि, कं०१७२ कककि,
 कं०१७३ कककु (क) सं.— घबराहट, कातरता,
 भीरुता ; भयध्वनि ।
 कं०१७४ ककि (क) सं.— कं०१७५ ककके—वृक्ष विशेष,
 राजतरु, सुवर्ण पुष्पी ।
 कं०१७६ ककि (अ.दे.) सं.— काकी (हिं) ।
 कं०१७७ ककिसु (क) क्रि.— वमन करा,
 उगला, (पेट के अंदर से) बाहर निकलवा ;
 बुरी रीति से खायी गयी किसी चीज़ (पैसा
 आदि) को बाहर निकलवा दे या वापस
 ले ले ।
 कं०१७८ कककु (क) क्रि.— वमन कर, उगल,
 (पेट के अंदर से) बाहर निकाल । सं.—

= कच्ची कचकु, कच्ची कचकु, कच्ची कचकु, कच्ची कचकु, कच्ची कचकु, कच्ची कचकु—किसी आयुध का नुकीला भाग, तीक्ष्णता, आरे की धार या नोक ; नुकीलापन, असम (टेढ़ा-मेढ़ा) सतह या भाग ; कठोरता, अकोमलता ; खण्ड, टुकड़ा ; औकाई, घमन की हुई चीज । वि. = कच्ची कच्चा—दे. कच्ची. कच्ची कच्ची कचकुवेककु = कच्ची कच्ची कच्चा विक्कु ।

कच्ची कचकुदरि (क) सं.— दाँतोंवाला आयुध विशेष, आरे जैसा आयुध ।

कच्ची कचकुल (सम्) सं.— बकुल वृक्ष ।

कच्ची कचकुलते, कच्ची कचकुलिते (क) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचकुलितेकार (क) सं.— प्रेम-करनेवाला पुरुष ।

कच्ची कचकुलक (सम्) सं.— एक सुगंध द्रव्य ।

कच्ची कचकुसु (क) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचकुत (सम्) वि.— सख्त, कड़ा, कठोर, ठोस ।

कच्ची कक्ष (सम्) सं.— कच्ची कच, कच्ची कच्चे (तद्) — धोती का छोर, काछनी, कछवा ; कौपीन ; कमरबंद, कांची ; घास, सूखी घास ; लता, बेल विशेष ; राजा का अंतःपुर, प्रांगण ; काँख, बगल ; कांतार, जंगल का भीतरी भाग ; (तर्क-वितर्क में) आपत्ति उठाना ; दलदलवाली जमीन ; मैस ; फाटक ; तारा ; पाप ; कक्षा, कमरा । — बाएँ पाल, बाएँ पालिके, बाएँ पुट (सम्) सं.— काँख या बगल में दवाने की थैली । — बाएँ अंतर (सम्) सं.— प्रकोष्ठ ।

कच्ची कक्षपट (सम्) सं.— कच्ची कचट, कच्ची कचटु (तद्) — काछनी, धोती बांधना, कछवा ; लंगोट ।

कच्ची कक्षि (क) सं.— विरोधी पक्ष ; विरोध, आपत्ति । — गार गार या गार गार = वकील के पास मुकद्दमा ले जानेवाला ।

कच्ची कक्षे, कच्ची कक्षा (सम्) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कक्षेसु (सम्) सं.— एक प्रकार का बाण ।

कच्ची कक्षे, कच्ची कक्ष्या (सम्) सं.— हाथी या घोड़े का कमरा ; मकान के सामने की खाली जगह ; प्रांगण ; हाता ।

कच्ची कच्ची (क) वि = कच्ची कच, कच्ची कच— कठोर, कठिन, कड़ा, बलवान, अधिक, घना, उलझा हुआ । कच्ची कचगुदु, (क) सं. = कच्ची कचगुदु गंदु, कच्ची कचगुदु— बहुत उलझी हुई गांठ । कच्ची कचगुदु (क) सं.— घना अंधकार, गाढ़ांधकार । कच्ची कचगुल्लु, कच्ची कचगुल्लु— बहुत कठोर पत्थर (Granite) । कच्ची कचगुडु (क) सं.— घना या घोर जंगल, निविड अरण्य । कच्ची कचगुयि (क) सं.— बिलकुल कच्चा फल । कच्ची कचगुसु (क) सं.— मूसलधार वर्षा, अतिवृष्टि । कच्ची कचगुसु (क) सं.— अधिक सूखापन, अनावृष्टि । कच्ची कचगुल (क) सं.— अकाल । कच्ची कचगुल्लु कचगु कुंवल (क) सं. = कच्ची तुंबी या कड़ा कच्ची ।

कच्ची कचगु (क) सं.— लंबा, नीरस भाषण ; नीरस साहित्यिक रचना ।

कच्ची कचगुने (क) अ.— दे. कच्ची।

कच्ची कचगु (क) सं.— दे. कच्ची (१)

कच्ची कच (सम्) सं.— सिर के केश, बाल ; जटा ; जड़ा ; सूखा और पूरा हुआ घाव ; वादल ; बृहस्पति के पुत्र का नाम ; बांधना, नत्थी करना ; चमकना ; शब्द करना, चिल्लाना, शोर मचाना ; कपड़े का किनारा (अंचल) ।

कच्ची कचकने (क) अ.— अचानक, जल्दी, तेजी से ; वह ध्वनि जो पत्थर के मिट्टी पर गिरने से निकलती है ।

कच्ची कचप (सम्) सं.— घास, पत्ता ।

कच्ची कचपक्ष (सम्) सं.— केशराशि, अलकावलि, अलंकृत केश या बाल ।

कच्ची कचपाश (सम्) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचपु (क) सं.— पकाकर नमक-मसाला मिलाया हुआ चावल ।

कच्ची कचबंध (सम्) सं.— वालों का जुड़ा ।

कच्ची कचमाला (सम्) सं.— धुआँ, धूम ।

कच्ची कचरा (अ.दे.) सं.— कचरा, गंदगी ; बुरा काम ।

कच्ची कचवायिसु (अ.दे.?) क्रि.— थक जा, श्रान्त हो ।

कच्ची कचवायिसु (अ.दे.?) क्रि.— सावधान रह, होशियार रह, ठीक प्रकार से काम कर, तेज हो ।

कच्ची कचूर, कच्ची कचूर, कच्ची कचूर, कच्ची कचूर, कच्ची कचूर, कच्ची कचूर, कच्ची कचूर (तद्) सं.— खजूर : (तत्), खजूर ।

कच्ची कच, कच्ची कच (तद्) सं.— कक्ष (तत्) दे. कच्ची।

कच्ची कच, कच्ची कच (अ.दे.) वि.— कच्चा (हि.), अपक्व, अधूरा, मोटा, कड़ा ; कोमल ।

कच्ची कचट, कच्ची कचटु, कच्ची कचडि (तद्) सं.— कक्षपट, (तत्) ; दे. कच्ची। कच्ची कचड (अ.दे.) सं.— कचड़ा, कचरा, गंदगी ।

कच्ची कचडि (क) सं.— एक प्रकार का व्यंजन या साग ।

कच्ची कचर (अ.दे.) सं.— दे. कच्ची।

कच्ची कचरि (क) सं.— व्यंजन विशेष, साग, चटनी ।

कच्ची कचने (क) अ.— दे. कच्ची।

कच्ची कचचि (क) सं.— उपाधि का सूचक कंकण ।

कच्ची कचिके (क) सं.— (दाँतों से) काटना, काट ।

कच्ची कच्चिरि, कच्ची कच्चिरि (क) क्रि.— मिला, जोड़, दो वस्तुओं को किसी धातु के सहारे एक कर ।

चं० कटकु (तद्) सं. = चं० कडक, चं० कडकु, चं० कडुक, चं० कडुकु—
(कटक-तत्)—रत्नकुंडल, कर्णाभरण विशेष
जिसके बीच में रत्न जड़े रहते हैं।

म ल जाया जानवाला भात ।

कटारु (क) क्रि.— नियम के अनुसार हो, ठीक हो; कृष्ण कटारि—नियमबद्ध होकर, ठीक प्रकार से, ठीक-ठीक। कृष्ण कटारिणि (क) सं.— सोने का (मणियों का) हार। कृष्ण कटारुगोळिसु (क) क्रि.— दृढ़ या स्थिर कर। कृष्ण कटारुपट्ट (क) क्रि.— बंधित हो, नियमबद्ध हो। कृष्ण कटारुमाडु (क) क्रि.— दे. कृष्ण कटारुमाडु। कृष्ण कटारुबीलु (क) क्रि.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारुमिणि (क) सं.— चमड़े की रस्सी जो बांधने के काम में आती है। कृष्ण कटारुसुट्टु (क) सं.— अधिक आवश्यकता; बल (मै.प्र)। कृष्ण कटारु [कटारु पड़े] कटारुवड़े (क) क्रि.— मन का निरोध या निग्रह कर। कृष्ण कटारुवड़े (क) क्रि.— नियम तोड़, वचन भंग कर; किसी संघ या संस्था को विसर्जित या भंग कर। वि.— बंधा हुआ, रोका हुआ; घोर, घना, गाढ़ा; बना हुआ; कल्पित, रचित; बड़ा, अधिक। कृष्ण कटारु (क) सं.— घोर युद्ध। कृष्ण कटारुवि (क) सं.— घना जंगल। कृष्ण कटारुणक (क) सं.— बड़ी शक्ति या सामर्थ्य। कृष्ण कटारुण्य (क) सं.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारुसु (क) सं.— सन्नाट, अमिषिक्त राजा। कृष्ण कटारु (क) सं.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (क) सं.— गाढालिंगन। कृष्ण कटारुलिके (क) सं.— अत्यंत दुःख, वियोग। कृष्ण कटारुलिक (क) सं.— बहुत प्रेम या आनंद। कृष्ण कटारु (क) सं.— कड़ी आज्ञा। कृष्ण कटारु (क) सं.— दृढ़ता, स्थिरता, दृढ़ निर्णय या शासन, अनिवार्यता; हिंसा। कृष्ण कटारुकथे (क) सं.— कल्पित कहानी, झूठी कथा। कृष्ण कटारुमुडि (क) सं.— बंधे हुए बाल, गुथी हुई चोटी, जूड़ा, कबरी। कृष्ण कटारुमोसरु (क) सं.— दही, जो छानकर कपड़े में बांधकर लटकाया हुआ हो। कृष्ण कटारुहावु (क) सं.— एक सांप विशेष (Ophiophagus elaps)।

कृष्ण कटारु (क) सं.— अनाज या तरकारी पकाते समय निकाला जानेवाला पानी या रस (decoction), पक्कान्य रस। कृष्ण कटारुक (क) सं.— बांधनेवाला, झूठी कल्पना करनेवाला, झूठ बोलनेवाला; झूठी कथा, कल्पित कथा, झूठा। कृष्ण कटारुकडि (क) क्रि.— नियम का उल्लंघन कर सीमा पार कर; व्याकुलचित हो। कृष्ण कटारुवास (क) सं.— ऊपर धारण करने का वस्त्र, ओढ़नी। कृष्ण कटारुविके (क) सं.— बांधना, बनाना, रचना, बंधन, बनावट, निर्माण। कृष्ण कटारुशब्द (क) सं.— सांकेतिक बात, रहस्य वचन। कृष्ण कटारुह (क) सं.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (क) सं.— मिट्टी या पत्थर का बना ऊँचा (स्थान), आसन या बेंच जिसपर बैठा जाता है, टीबा, टीला; रक्षा का स्थान; तालाब या कुएँ के चारों ओर की (मिट्टी या पत्थर की) दीवार, जगत; बांध, पुल, सेतु; आलवाल, थाला; (भोजन की थाली या पत्तल पर) भात से बीच में बनाया गया छोटा गड्ढा जिसमें रस, सब्जियाँ आदि डाला जाता है; गड्ढा, ताल, तलैया; झाड़ू, बुहारी; बाँस की वह स्थिति जब कि वह सूख जाता है, बाँस का वृद्धत्व। कृष्ण कटारुसक (क) सं.— महत्वपूर्ण कार्य; सौंदर्य, कांति। कृष्ण कटारुसुगे (क) सं.— बाणों की वर्षा या बौछार। कृष्ण कटारुकांत (क) सं.— अत्यंत रहस्य, अति गोप्य विषय। कृष्ण कटारुके (क) सं.— अधिक प्रगति, बहुत विकास। कृष्ण कटारुलिके (क) सं.— बहुत कराहना, बहुत पीड़ा। कृष्ण कटारुले (क) सं.— बहुत ममता या प्रेम।

कृष्ण कटारु (क) सं.— भवन, इमारत, महल; स्वाद, रस, सुस्वाद। कृष्ण कटारु (क) सं.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (सम्) वि.— घृणास्पद, घृणा के योग्य। कृष्ण कटारु (सम्) सं.— एक मुनि का नाम जो वैशंपायन के शिष्य थे; एक उपनिषद् का नाम—कठोपनिषद्। कृष्ण कटारु (क) सं.— बहुत सुंदर या मूल्यवान होने की स्थिति; बढ़िया, श्रेष्ठ पदार्थ। कृष्ण कटारु (अ.दे.) सं.— दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (सम्) सं.— तुलसी का पौधा। कृष्ण कटारु (तद्) वि.— कठिन (तत्); कड़ा, सख्त, कठोर। कृष्ण कटारु (तद्) सं.— कठिनता। कृष्ण कटारु (तद्) सं.— कठिनत्व, कठोरता। कृष्ण कटारु (सम्) वि.— दे. कृष्ण कटारु कठिनत्वे—दे. कृष्ण कटारु कठिनत्व—दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (सम्) वि.— कठोर हृदयवाला, क्रूर, दयारहित। सं.— कठोर हृदय। कृष्ण कटारु (सम्) सं.— कनिष्ठिका, छिगुनिया; चोंक (chalk), खडिया मिट्टी। कृष्ण कटारु (तद्) वि.— कठिन (तत्); दे. कृष्ण कटारु। कृष्ण कटारु (सम्) वि.— कृष्ण कटारु (तद्)—कड़ा, सख्त, ठोस; निष्ठुर, निर्मम, दयाहीन, क्रूर; तीक्ष्ण, तेज, पैना; पूरा, पूरा-पूरा।—उत्तम तन (सम्) सं.— कठोरता, क्रूरता, तीक्ष्णता, कर्कशता।—उत्तर (सम्) वि.— असाधारण रूप से कठोर, निर्दयी, क्रूर। कृष्ण कटारु (क) सं.— कर्जा, उधार, ऋण।—कर्जा या उधार ले; नदी का छिछला भाग घाट। वि.—(समस्त-पदों में) (कृष्ण कटारु)।

ಕಡವೊಡ ಕಡವೊಡ (ತಡ್) ಸಂ.— ಕದಂಬ (ತತ್)।

कड़ियाँ कड़ियाँ, कड़ियाँ कड़ियाँ (क) सं. — पौधा विशेष, शृंगी ।
 कड़ु कड़ु (क) सं. — वह गाय या भैंस जो ब्यानेवाली हो, बड़ी बछड़ी । क्रि. — दे. कड़ुयाँ ।
 कड़ु कड़ु (क) सं. — मंथन, मथना ; दे. कड़ु ।
 कड़ु कड़ु (तद्) सं. — कड़ु ।
 कड़ु कड़ु कड़ाकड़ि (क) अ. — ठीक, ठीक-ठीक, बराबर ।
 कड़ु कड़ाणि (क) सं. = कड़ुयाँ कड़ियाँ — लगाम, संयम, गाड़ी की धुरी (की खूँटी) ।
 कड़ुयाँ कड़ाया, कड़ुयाँ कड़ाया (तद्) सं. — कड़ाह (तत्) — कड़ाह, बड़ी कड़ाही (पीतल, काँसे या लोहेकी) ।
 कड़ुयाँ कड़ायासु (क) क्रि. — कड़ुयाँ चड़ायासु, कड़ुयाँ जड़ायासु — (खूँटी) ठोक, मार, पीट, लगा ; शोर कर, बड़ी आवाज़ कर, गर्जन कर ।
 कड़ु कड़ार (सम्) वि. — साँवला, धौला, पिंगल ; अकड़वाज़, क्रोधी, अहंकारी, घमंडी ।
 कड़ुयाँ कड़ाविगे, कड़ुयाँ कड़ाहु कड़ुयाँ कड़ावुगे (अ.दे.?) सं. — खड़ाऊ, पाटुका ।
 कड़ुयाँ कड़ास (अ.दे.) सं. — फटे रहने की स्थिति ; थैला ।
 कड़ुयाँ कड़ासु (क) सं. — दे. कड़ुयाँ ।
 कड़ु कड़ि (क) क्रि. — काट, दाँतों से काट, काट दे, काट मार, डँक मार, डस ; खुजली या खुजलन हो ; दर्द कर या पीड़ा दे, (दाँतों में) कड़कड़ा हो ; गिरा ; काटकर गिरा, खंडन कर, खोद, बना ; मार, पीट, खींच ; मथ, मंथन कर (जैसे दही को मथना) ।
 कड़ुयाँ कड़िदाट (क) सं. — परस्पर मारना या काटना, झगड़ा । कड़ुयाँ कड़िदाहु (क) सं. — परस्पर मार-पीट कर, लड़-झगड़ । वि. — बड़ा, मोटा, अधिक, बहुत, कठोर । कड़ुयाँ कड़िकोप (क) सं. — अत्यधिक क्रोध । कड़ुयाँ कड़िगंड (क) सं. — बड़ा खतरा । कड़ुयाँ कड़िनुडि (क) सं. — कठोर वचन । कड़ुयाँ कड़ियं (क)

सं. — बड़ा बलवान पुरुष । सं. — छोर, किनारा, कोना ; खंड, अंश, टुकड़ा, कटा हुआ पदार्थ ; कड़ी, दही में नमक-मिर्च आदि मिलाकर बनाया गया एक व्यंजन (जो भात में मिलाकर खाया जाता है) ; लच्छा, पेचक, तागे की गोली ।
 कड़ु कड़िक, कड़ु कड़िग (क) सं. — मारने-वाला, कसाई, हत्यारा ।
 कड़ु कड़िकु, कड़ु कड़ुकु (क) सं. — खण्ड, टुकड़ा, अंश ।
 कड़ु कड़िकु (क) क्रि. — दे. कड़ु ।
 कड़ु कड़िके (क) सं. — खलियान, धान्य-संग्रह ।
 कड़ु कड़ित (क) सं. — दे. कड़ु ।
 कड़ु कड़ितले (क) सं. — खड्ग, चमड़े का ढाल ; साहस का काम । — काँस का [काँस का] गार [गार] गार (क) सं. — सिपाही, योद्धा ।
 कड़ु कड़िति (क) सं. — हिरन विशेष, सांब नामक हिरन ।
 कड़ु कड़िदु (क) सं. — दे. कड़ु ।
 कड़ु कड़िपु (क) सं. = कड़ुयाँ कड़ुपु, कड़ुयाँ कड़ुहु — दृढ़ता, स्थिरता, तेज़ी, वेग, तीव्रता ; उत्साह ; पराक्रम, बल, साहस ; गर्व, घमंड ।
 कड़ुयाँ कड़िमे (क) वि. — दे. कड़ुयाँ ।
 कड़ुयाँ माहु (क) क्रि. — कम कर । — कड़ुयाँ बीलु (क) क्रि. — कम हो, घटा हो ।
 कड़ुयाँ कड़िय, कड़ुयाँ कड़ियं (क) वि. — दृढ़, स्थिर, सीधा, कठोर ।
 कड़ुयाँ कड़ियण, कड़ुयाँ कड़ियाण, कड़ुयाँ कड़िवण, कड़ुयाँ कड़िवाण (क) सं. — लगाम ; संयम ।
 कड़ुयाँ कड़ियाल (क) सं. — पौधा विशेष, शंखिनी या चोरपुष्पी (Andropogon aciculatum) ।
 कड़ुयाँ कड़ियासु (क) क्रि. — दे. कड़ुयाँ ।
 कड़ुयाँ कड़ियुविके (क) सं. — काटना ; काट, डंक ; खुजलन ; छेदन ।

कड़ु कड़िल् (क) अ. — दृढ़ता से, ज़ोर से, कठोरता से ।
 कड़ुयाँ कड़िवण, कड़ुयाँ कड़िवाण (क) सं. — दे. कड़ुयाँ ।
 कड़ुयाँ कड़िसु (क) क्रि. — कटा, (दाँतों से) कटा, कटवा, डसा ; मंथन करा (प्रे.) ।
 कड़ु कड़ु (क) वि. — स्थिर, दृढ़, बली, कठोर, कर्कश ; मोटा, गाढ़ा ; तेज, तीक्ष्ण, तीखा ; चपल, वेगवान ; बड़ा, ज्यादा, बहुत, अति, अधिक, महान । कड़ुयाँ कड़ुकुंगेडु (क) क्रि. — बहुत डर, अधिक भीत हो । कड़ुयाँ कड़ुकुण (क) सं. — अधिक दयावान । कड़ुयाँ कड़ुकार्पण्य (सम्) सं. — बहुत दरिद्रता । कड़ुयाँ कड़ुकावलि (क) सं. — बड़ी कड़ाही । कड़ुयाँ कड़ु कै (क) क्रि. — तीव्रता कर, जल्दी कर । कड़ुयाँ कड़ुकोप, कड़ुयाँ कड़ुगोप (क) सं. — अत्यधिक क्रोध ; कड़ुयाँ कड़ुगोप बंदाग तड़कोँडवने जान — जब अत्यधिक क्रोध आता है तब जो उसका संयम कर लेता है वही बुद्धिमान है (कह.) । कड़ुयाँ कड़ुकुत्तले = कड़ुयाँ कड़ुकुत्तले (क) सं. — गाढ़ांधकार । कड़ुयाँ कड़ुगाय [कड़ुयाँ काय] (क) क्रि. — बहुत अधिक गरम हो या उबल । कड़ुयाँ कड़ुगासि (क) सं. — बड़ा संकट । कड़ुयाँ कड़ुगाळि (क) सं. — तेज़ हवा, अधिक हवा । कड़ुयाँ कड़ुगुज (क) वि. — बहुत छोटा । कड़ुयाँ कड़ुगुदुरे [कड़ुयाँ कुदुरे] (क) सं. — तेज़ दौड़नेवाला घोड़ा । कड़ुयाँ कड़ुगुं (क) सं. — विलकुल लाल रंग । कड़ुयाँ कड़ुगुं (क) क्रि. — दे. कड़ुयाँ । कड़ुयाँ कड़ुगुलसि (क) सं. — कठोर परिश्रम करनेवाला । कड़ुयाँ कड़ुगुडुग [कड़ुयाँ कड़ुगु] (क) सं. — बड़ा नटखट या दुष्ट पुरुष । कड़ुयाँ कड़ुगुं (क) क्रि. — बहुत मोटा हो । कड़ुयाँ कड़ुगुप (क) सं. — दे. कड़ुयाँ । कड़ुयाँ कड़ुगुपि (क) सं. — बड़ा क्रोधी पुरुष । कड़ुयाँ कड़ुचेलुव (क) सं. —

कडेकणु, कडेगणु (क) सं.—आँख का कोना या छोर; कटाक्ष; अर्द्ध दृष्टि, तिरछी दृष्टि । कडेगंति, कडेगंदि (क) सं.— वह गाय जो अंतिम बार व्याती है; अंतिम बछड़ा । कडेगाणु (क) क्रि.—तिरस्कार या उपेक्षा की दृष्टि से देख । कडेगाल [गाल काल] (क) सं.— अंतिम समय, मृत्यु का समय । कडेगीलु [केलु कीलु] (क) सं.— अक्ष, धुरी । कडेगूसु (क) सं.— (सबसे) अंतिम बच्चा । कडेवीलु (क) क्रि.— बाहर आ, बाहर हो । कडेगु माणिसु (क) क्रि.— निकाल, तुड़ा । कडेगोळिसु (क) क्रि.— अंत कर, समाप्त कर । कडेनोट (क) सं.— एक दृष्टि, झाँकी । कडेयण (क) सं.— अंतिम मनुष्य; किसी एक पक्ष का मनुष्य । कडेवगल [वगल पगल] (क) सं.— सायंकाल, सूर्यास्त का समय । कडेवडु [वडु पडु] (क) सं.— अंत में हो । कडेवह्लि [वह्लि हल्लि] (क) सं.— अंतिम ग्राम । कडेवाय [वाय हाय] (क) सं.— एक तरफ़ हो जा, (किसी के ज़रिए) जा, पार कर । कडेवेळगु [वेळगु वेळगु] (क) सं.— दे. कडेवगल. कडेसरि, कडेसार् (क) क्रि.— एक तरफ़ हो । कडेहायिसु (क) क्रि.— पार करा, जाने दे, रक्षित कर, बचा ।
 कडे कडे (सम्) सं.— पहुँची, कंगन ।
 कडेगोल, कडेगोलु (क) सं.— मथानी ।
 कडेचलु (क) सं.— मथने का साधन ।
 कडेड कडेड (क) सं.— मथना; मथने का साधन ।
 कडेय (क) सं.— दे. कडे (क) ।
 (तद्) सं.— कटक (तत्); शिंजिनी, पैर का आभूषण विशेष ।

चण्डोऽयं कणजु, चण्डो कणजु (क) सं.—
 प्रवाल या मूंगे को तोलने का तौल विशेष ।
 चण्ड कणप, चण्डो कणय, चण्डो कणय
 (सम्) सं.— भाला, साँग ।

कंठ्य कणव (क) सं.— सफेद खुरवाला घोड़ा ।
कंठ्य कणवे (क) सं.— लता विशेष, रौद्री
नामक लता ।

कंठ्य कणमे, कंठ्य कणिमे, कंठ्य कणवे,
कंठ्य कणिवे (क) सं.— घाटी, पहाड़ों के
बीच का तंग रास्ता ।

कंठ्य कणय (क) सं.— नीवी, नारा, उच्चय ।
(तद्) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणलिमे (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणवे (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणसु (क) सं.— देखना, अवलोकन,
दृष्टि ।

कंठ्य कणा, कंठ्य काणा (क) क्रि. रू.— नहीं
क्या, देखा नहीं ?

कंठ्य कणाद (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम
जो वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक हैं । सोनार
(कलाद) ।

कंठ्य कणि (क) सं.— चर्मवाद्य विशेष, डफ,
डफली ; गौठ, बंधन ; दृष्टि, भविष्य-दृष्टि,
दिव्य-दृष्टि, शुभाशुभ शकुन, सत्य, यथार्थता,
पत्थर, शिला, स्थान, जगह ।

कंठ्य कणि (तद्) सं.— कण, अणु ; खनि (तत्) ;
खान, आकर, गड्ढा, छिछली कटेरी या
तश्तरी ।

कंठ्य कणिक (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणिके, कंठ्य कणिकु (क) सं.— अनाज
अलगया हुआ डौंठ, डंठल । (तद्) सं.—
कण, अणु, स्वल्प परिमाण ; बूंद ; एक
पौधा विशेष ।

कंठ्य कणिगल्, कंठ्य कणिगलु (क)—
दे. कंठ्य.

कंठ्य कणिगार्ति (क) सं.— भविष्य कहने
वाली स्त्री ।

कंठ्य कणिरिनु, कंठ्य कणिगिल् (क)
सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणिगिल्, कंठ्य कणिगिल्, कंठ्य
कणिगिल् (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणितले (क) सं.— कनपटी ।

कंठ्य कणिति (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणिमे, कंठ्य कणिवे (क) सं.— दे.
कंठ्य.

कंठ्य कणिश (सम्) सं.— अनाज की बाल ।

कंठ्य कणिस (क) सं.— उचित तौल या माप ।

कंठ्य कणिसु, कंठ्य कणचु, कंठ्य कळिसु
(क्रि.)— (दिखाई पड़), देख, विचार कर ।

कंठ्य कणियस्, कणियस् (सम्) वि.—
बहुत छोटा, छोटा ।

कंठ्य कणु (क) सं.— आँख, दे. कंठ्य.

कंठ्य कणुक (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणुकपटे (क) सं.— दे. कंठ्य.
कंठ्य.

कंठ्य कणुकु (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणे (क) सं.— छड़ी, डंडा ; बाण ;
नीवी, नारा, हज़ारबंद ; कोलहू का
बड़ा रोलर या बेलन ; शकर की मिल में काम
आनेवाले इस प्रकार के रोलर का जोड़ा, यष्टि ;
पीपल ।

कंठ्य कणैगिल् (क) सं.— कंठ्य कणगल —
दे. कंठ्य.

कंठ्य कणैय (क) सं.— कथा, कहानी,
उपकथा ; प्रारंभ ; न्याय ।

कंठ्य कणैय कणकपटे, कंठ्य कणैय कणकपड़े
(क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणचु (क) क्रि.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणैय कणकपटि (क) सं.— दे. कंठ्य.
कंठ्य.

कंठ्य कणि (क) सं.— रस्ता, रस्सी, डोरी ।

कंठ्य कणु (क) सं.— दे. कंठ्य.

कंठ्य कणैय कणुकपटे, कंठ्य कणैय कणु-
कपट, कंठ्य कणैय कणुकपटे (क) सं.—
दे. कंठ्य.

कंठ्य कणे (क) सं.— करणे—थका, पिंड ।
कंठ्य कणव (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम ;
अपराध, पाप (मै.प्र.) । — सुता सुता
(सम्) सं.— शकुंतला ।

कंठ्य कत् (क) सं.— पत्थर, शिला । कंठ्य
कत्तले (क) सं.— एक पौधा विशेष जिसका
रस कड़ुआ होता है, बोल, मुसब्बर ।

कंठ्य कत (क) सं.— कारण, हेतु (कृत-तत् ?)
एक अनुकरण-ध्वनि, जैसे — कंठ्य कंठ्य
कतकतकत्—जल के उबलते समय उत्पन्न
होनेवाली ध्वनि ।

कंठ्य कतक (सम्) सं.— निर्मली वृक्ष जिसके
फल से पानी साफ़ किया जाता है । (तद्)
वि. कृतक— (तत्) ।

कंठ्य कतबा (अ. दे.) सं.— कतब, अंगीकार
पत्र, कनूनी स्वीकृति पत्र ।

कंठ्य कतवे, कंठ्य कदवे (अ. दे. ?) सं.—
विवाह, झगड़ा, कलह ।

कंठ्य कति [या कति] (क) सं.— क्रोध, रोष,
गुस्सा ।

कंठ्य कतिपय (सम्) वि.— कुछ, थोड़ा,
कुछक ।

कंठ्य कते (तद्) सं.— कथा (तत्) । — गार
(क) सं.— कथा कहनेवाला ।

कंठ्य कतैय कतगालिन इंडु (क) सं.—
अटरूप, अडूसा ।

कंठ्य कत्तरि (तद्) सं.— कर्त्ती या कर्त्तनी, (तत्)
कैंची, चाकू, छोटी तलवार । — कंठ्य
कळळ, कंठ्य गळळ (तद्) सं.— गिरहकट,
ठग । — कंठ्य कोलु, कंठ्य गोळु (क)
सं.— कैंची । — कंठ्य बावुलि (तद्)
सं.— कान के ऊपरी भाग में पहनने का
आभूषण विशेष । कंठ्य कत्तरिसु (तद्)
क्रि.— काट, टुकड़े कर ।

कंठ्य कत्तल्, कंठ्य कत्तल् कंठ्य कत्तल्,
कंठ्य कत्तले (क) सं.— अंधेरा,
अंधकार । — कंठ्य इसु (क) क्रि.— अंधेरा
या अंधकार हो । — कंठ्य गणि (क) क्रि.—
अंधेरा छा । — कंठ्य मणि (क) सं.—
अंधेरे की मणि, चंद्रमा ।

कंठ्य कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

कंठ्य कत्ति (तद्) सं.— कर्त्ती (तत्) ; तलवार,
छोटी तलवार, चाकू, छुरी । कंठ्य
कत्तळ (अ. दे.) सं.— कतल (अरबी) ;
हत्या ; हिंसा ।

क०. ग० क०. ग० (तद्) सं.—क०. ग० (तत्); खड्ग, तलवार, छुरी; कैची ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.— (दिया) जला, प्रज्वलित कर ।
 क०. क०. (क) — क०. ग० । क्रि. उत्ते-
 जित कर, प्रज्वलित कर, जला, (दिया)
 जला, चिला, चीख, जोर से पुकार; रेंक,
 काँव काँव कर आदि ।
 क०. क०. (अ. दे.) सं.—खत (अरबी); पत्र,
 लेख, लिखी हुई चीज़; एक प्रकार का हस्त-
 लेख ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.— झगड़ा, कलह ।
 क०. ग० क०. ग० (तद्) सं.—
 कस्तूरी (तत्); मृगनाभि, मुस्क । — मृग
 मिग (तद्) सं.— कस्तूरीमृग (तत्) ।
 क०. क०. क०. क०. (क) सं.— गधा,
 गर्दभ । क०. ग० क०. ग० क०. ग० क०. ग०
 कुदुरे सोदरमावने ! — क्या घोड़ा गधे का
 मामा है ! (कह.) ; क०. ग० क०. ग० क०. ग०
 कुरुब, ग०. ग० गिरुब, ग०. ग० गुरुब (क) सं.—
 लकड़बाधा ; एक जाति का हिरन ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.— प्रशंसा, आत्मस्तुति ।
 क०. क०. (तद्) सं. = क०. ग० ।
 क०. क०. (सम्) अ.—कैसे ? किस प्रकार ?
 क०. ग० क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.— भाषण
 या संलाप का संबंध; बोलना, संभाषण;
 कथा का प्रसंग, कथा ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) — संभाषण,
 वर्णन ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) क्रि.— कह, वर्णन कर ।
 क०. क०. क०. क०. (सम्) सं.— कहानी,
 गाथा, किस्सा ।
 क०. क०. (क) सं.— कालिमा, कालापन;
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.— एक वृक्ष विशेष
 जिसका छाल काला होता है ।
 क०. क०. क०. क०. (क) सं.— दरवाज़ा, द्वार, कपाट ।
 क०. क०. (क) सं.— चोर, धोखेबाज़, कपटी

पुरुष । (सम्) सं.—चंदवा, मंडप, वितान ।
 — क०. तन (क) सं.—चोरी ; छल ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.— हिला, जगह
 बदल, मंथन कर, उत्तेजित करा, भ्रम में
 डाल, सता ; कलुषित कर, गंदा कर, पंक-
 युक्त कर ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.— हिल, मथित हो;
 उत्तेजित कर, भ्रम में डाल, सता ; पंकिल
 हो, कलुषित हो, हिला, गंदलाकर । सं.
 — पंकिल या गंदा होना, कलुषितता,
 गंदलापन, उत्तेजना, हलचल, कोला-
 हल ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.—बुरा मार्ग ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई; नाश,
 हत्या ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.—बुरा भोजन, अरुचि-
 कर भोजन ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.—गाल,
 कपोल ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.— कदम्ब वृक्ष,
 राशि, समूह ; सरसों ; हल्दी, हरिद्रा ;
 तरकारी, मिर्च-मसाला आदि मिलाकर
 पकाया गया चावल ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.— सरसों का
 पौधा ; राशि, समूह ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.—कदंब
 वृक्ष ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.— सफ़ेद लजाधुर या
 छुई मुई का पौधा ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—दे. क०. ग० क०. ग० ;
 सं=क०. ग० क०. ग० — टेकुई ; चमक ;
 प्रकाश, कांति ।
 क०. ग० क०. ग० (अ. दे. ?) सं.—दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० क०. ग० (सम्) सं—
 तंग करना, सताना ; हल्का उपहास, मज़ाक,
 तिरस्कार ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) वि.— नीच, तुच्छ,
 लोभी, कृपण ।

क०. ग० क०. ग० (सम्) सं— केला, केले का
 वृक्ष ; पताका, ध्वज, ध्वजा जो हाथी
 की पीठ पर रखकर आगे बढ़ायी जाती है ।
 एक जाति का हिरन ; एक वृक्ष
 (भूर्ज ?) ; शिव ; गगन, आकाश ; गज,
 हाथी ; जड़ी-बूटी को बेचनेवाला ; अंधेरा
 अंधकार ; तम ; वनांतर, जंगल का मध्य
 भाग ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) सं.—दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं— गति, हिलना,
 डुलना ; स्थान से अलग होना ; गंदलापन ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—हिला, डुला आदि,
 दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं—भीड़,
 समूह, झुंड, राशि, ढेर ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.—दे. क०. ग० ।
 क०. ग० क०. ग० (अ. —कब, किस समय ।
 क०. ग० क०. ग० (सम्) अ.— शायद ;
 कभी ।
 क०. ग० क०. ग० (अ. — कभी, कभी भी ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—चोरी कर, चुरा । क०. ग०
 क०. ग० क०. ग० ; क०. ग० क०. ग० क०. ग०
 क०. ग० क०. ग० क०. ग० क०. ग० क०. ग०
 बारदु—माँगकर खा सकते हैं, पर चोरी कर
 नहीं खाना चाहिए (कह.) ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.—चोरी करनेवाली स्त्री ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.—अनाज
 की बाल ; टेकुई ; किरण, रश्मि, कांति ।
 क०. ग० क०. ग० (अ. दे.) वि.—
 कदीम (अरबी) ; पुराना, प्राचीन । सं.—
 गाँव का पुराना निवासी ; पुराना नौकर ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—दबा, मसल ; कुत्रला
 क०. ग० क०. ग० (क) सं— भीड़, समूह, गिरोह,
 झुंड ।
 क०. ग० क०. ग० (क) क्रि.—दबा, कुचल, मसल,
 जोर से पकड़ ; बलात्कार कर, कष्ट दे, सता,
 हिंसा कर ।
 क०. ग० क०. ग० (क) सं.—दे. क०. ग० ।

कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु, कंदु. कंदु. कंदु. (क) क्रि.—चोंच मार, चंचुघात कर।
कंदु कंदु (क) क्रि.—मिल, जुड़, संयुक्त हो, पास जा, दब, मसला जा, संकुचित हो।
कंदु कंदु कंदु (क) सं.—रोमांच, पुलक।
कंदु कंदु (क) सं.—इच्छा, चाह।—कंदु कार [कंदु कार] (क) सं.—इच्छुक।
कंदु कंदु कंदु (क) क्रि.—इच्छा कर, कामना कर, पसंद कर, चाह।
कंदु कंदु (क) वि.—धौला, भूरा। सं.—कश्यप की एक पत्नी का नाम जो सर्पों की माता थी।
कंदु कंदु कंदु (क) क्रि.—दे. कंदु कंदु
कंदु कंदु (क) सं.—(दृश्य), सपना।
कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—सोना; धतूरा; पलाश वृक्ष।—१० गिरि (सम्) सं.—मेरु पर्वत।
कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—कन्नड के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि।
कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—दे. कंदु कंदु
कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—सोने की वर्षा।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—मेरु पर्वत, सुरगिरि।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—कोशाध्यक्ष।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—गुरु, कवि या बड़े व्यक्ति का, उनके सिर पर या चरणों में सोने की मुद्राओं की वर्षा कर सम्मान करना।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—हेम वर्ण का कमल।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—सोने का कलश या पात्र।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—चश्मा, ऐनक।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—दर्पण, आईना।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—अपक्व

फल, कच्चा फल, अपक्वरस, कड़वी रुचि; अरुचिकर गंध (तेल के जलने से निकलनेवाली गंध)।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—क्रोध, रोष। क्रि.—क्रुद्ध हो, गुस्से में आ।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—क्रोध, रोष, गुस्सा।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—सपना, स्वप्न।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) क्रि.—सपना देख, किसी एक वस्तु में ही ध्यान लगा।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) क्रि.—चमक, प्रकाशमान हो। सं.—दया, करुणा, सहायभूति, दयालु होना। कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—दया सहायभूति।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) वि.—सब से छोटा, सब से कम, बहुत छोटा।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—छिगुनिया, हाथ की सबसे छोटी उंगली।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—दे. कंदु कंदु.
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—छिगुनिया; आँख की पुतली।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) वि.—छोटा, कम। सं.—छोटा भाई। कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सम्) सं.—छोटी बहन।
(१) कंदु कंदु (क) सं.—(चोरों से दीवार में बनायी जानेवाली) सेंध; झरोखा, दरार (मै. प्र.)।—कंदु कंदु, कंदु कंदु, कंदु कंदु (क) सं.—सेंध मारनेवाला, चोर। कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—सेंध मारकर चोरी करने का अपराध।
(२) कंदु कंदु (क) सं.—कंदु कंदु—गाल, कपोल (मै. प्र.)।
(३) कंदु कंदु (तद्) सं.—कर्ण (तद्); कान। कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—सेंध मारकर चोरी करनेवाला।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—कन्नड भाषा जो कर्नाटक में बोली जाती है; कन्नड भाषा प्रदेश, कर्नाटक।

कंदु कंदु कंदु (क) सं.—दे. कंदु.
कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—कन्नड भाषी पुरुष।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—कन्नड भाषी स्त्री।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) क्रि.—प्रतिबिंबित हो; प्रतिबिंबित कर, प्रकट कर, अनुवाद कर, भाषांतर कर।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (क) सं.—दीवार जो दर्पणों से आवृत हो।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—कर्णपूर (तद्); कर्णाभरण।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (तद्) सं.—कन्यका (तद्); लड़की, अविवाहित लड़की।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (तद्) सं.—कन्या (तद्); दे. कंदु कंदु.
—कंदु तन (तद्) सं.—कन्या रहना, बचपन।—कंदु माड (तद्) सं.—अंतःपुर।
—कंदु वेणु (तद्) सं.—अविवाहिता लड़की।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—दे. कंदु कंदु.
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—छिगुनिया, सब से छोटी उंगली।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—दे. कंदु कंदु.
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—कन्याकुमारि (सं) सं.—दुर्गा जो कुमारी ही रही; एक नदी का नाम, जिसके तट पर, कह जाता है कि पार्वती ने तप किया था; कुमारी अंतरीप।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—(शुल्क लिए बिना) कन्या को (विवाह में) दान देना।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—दामाद, जामाता।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—बुद्धि मति लड़की या कन्या।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—कन्यापुत्र, कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—अविवाहिता लड़की से उत्पन्न लड़का, कानीन।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—वह पुरुष जो विवाह में कन्या को माँगता हो, वर।
कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु कंदु (सं) सं.—आजीवन कन्या ही रहने का दृढ़ संकल्प या व्रत।

कठ००० कबंध (सम्) सं.—सिर-रहित घट

(विशेषकर वह धड जिसमें प्राण शेष हो)
पेट ; पानी ; जल ; मेघ ; बादल ; राहु का
नाम ; इंद्र के शत्रु एक राक्षस का नाम ;
रामायण में वर्णित एक राक्षस ।
कंठर कवर (अ. दे.) सं— कव (अरबी) ;
मुसलमानों की समाधि ।— मूस स्थान
(अ. दे.) सं— कब्रिस्तान (अरबी),
स्मशान ।
कंठर कवरि, कंठर कवरि (सम्) सं—जूड़ा;
शुथी हुई चोटी ।
कंठर कवर (अ. दे.) सं— खबर (अरबी) ;
समाचार, जानकारी ।— दार (अ. दे.)
सं—खबरदार (अरबी, फ़ारसी) ; होशि-
यार रहनेवाला या नियमबद्ध पुरुष ।—
दार (अ. दे.) सं— खबरदारी,
जागृति, होशियारी ।
कंठर कवल, कंठर कवल, कंठर कवल, कंठर
कवल, कंठर कवल, (सम्) सं—मुखभर,
कौर ।
कंठर कवलन (सम्) सं—मुखभर या
कौर खाना ।
कंठर कवल (क) सं—शिकारी व्याध । (तद्)
सं—दे. कंठर ।
कंठर कवलसु (तद्) क्रि.— खा, निगल ।
कंठर कवल (अ. दे.) सं— स्वीकृति,
अंगीकार, मानना (कवल-अरबी) ।
कंठर कवल (अ. दे.) सं— ग्रहण, दे.
कंठर ।
कंठर कवलाति (अ. दे.) सं—लिखित
या मौखिक स्वीकृति (बंधन) ।
कंठर कवोजि (क) सं— अंधा पुरुष ।
कंठर कव (तद्) सं—काव्य (तद्), काव्य,
कविता ।
कंठर कवदे (क) सं—चमगादड़ पक्षी ।
कंठर कवण, कंठर कवण, कंठर कवण (क)
सं— लोहा ।
कंठर कवलि (क) सं—दे. कंठर ।
कंठर कवारे (क) सं—सारस ; बगुला ।
कंठर कवि (क) सं—लगाम ; संयम ।
कंठर कविग (तद्) सं—कवि, काव्य-प्रणेता ।

कंठर कविग कैपिडि—एक
प्राचीन कन्नड-शब्द-कोश का नाम ।
कंठर कविग (क) सं—दे. कंठर ।
कंठर कविल (क) सं—(दे. कंठर) शिकारी,
व्याध ।
कंठर कविलग (क) सं—मलाह; मछुआ ।
कंठर कविलिगिति, कंठर कविलिति
(क) सं—मलाह या मछुआ जाति की स्त्री ।
कंठर कवु, कंठर कवु, कंठर कवु (क) सं—
ईख, जल । कंठर कवु कविलहालु—
ईख का रस । कंठर कवु कविलहालु—
कवु डोंकादरे सवि डोंके— ईख टेढ़ी हो
तो क्या उसकी मधुरता भी टेढ़ी है ? अन-
यागी कंठर मेलुयुवदकंठर अरुनयागी
सकुर मेलुयुवदु लैसु आनेयागि कवु
मेयुवदकित इरुयेयागि सकरे मेयुवदु लेसु—
हाथी होकर ईख चबाने की अपेक्षा चींटी
होकर शकर उड़ाना बेहतर है (कह.) । कंठर
कवु कवु कवु कवु कवु कवु कवु
कवु (क) सं—कामदेव ।
कंठर कवुन (क) सं—दे. कंठर ।
कंठर कवुय (क) सं—दे. कंठर ।
कंठर कम् (क) वि.—काला; कंठर कम्मडु,
कम्मडु कामिडु (क) सं— काली नदी—
यमुना । कंठर कम्मडुविन अण्ण
(क) सं—यम । कंठर कम्मति (क) सं—
शाल वृक्ष । कंठर कम्मर (क) सं—
लकुच, कटहल ।
कंठर कमटि, कंठर कमटि, कंठर कमटि क्या-
मेटि (अ. दे.) सं— Committee
(अंग्रेजी) ; समिति, सभा, संघ ।
कंठर कमटु, कंठर कमटु, कंठर कमर
(क) सं—अरुचिकर गंध, दुर्गंध, बदबू
(खराब नारियल, मैले कपड़े या जलनेवाले
तेल की दुर्गंध) ।
कंठर कमठ (सम्) सं— कछुआ ; घड़ा ।
कंठर कमंडल, कंठर कमंडलु (सम्)
सं—मिट्टी या लकड़ी का जलपात्र ।
कंठर कमन (सम्) वि.—विषयी, लंपट ;
सुंदर, मनोहर । सं—कामदेव; अशोकवृक्ष ।

कंठर कमनीय (सम्) वि.—मनोहर,
सुंदर, वांछनीय ।
कंठर कमर, कंठर कमर (क) सं—किसी
पदार्थ की जल जाने या झुलस जाने की
स्थिति ; तेल, घी, बाल आदि के जलने से
उत्पन्न दुर्गंध ।
कंठर कमरि, कंठर कमरि (क) सं—
ढार, उतार, प्रपात, तट ; चट्टान ; कंदरा,
खड्ड ।
कंठर कमरि, कंठर कमरि (क) सं—
दे. कंठर ।
कंठर कमर (क) क्रि.—जल जा, झुलस जा
सं—दे. कंठर ।
कंठर कमल (सम्) सं—कमल पुष्प,
जलज ; जल ; तौबा ; किरण, रश्मि ;
चंद्रमा ; मृग (हिरन) विशेष ; सारस
पक्षी ; एक छंद का नाम ।—मंडल खंड
(सम्) सं— कमलों का समूह ।—गंध
गंधि (सम्) सं—स्त्री, जो कमल के समान
सुगंध से युक्त हो ।—गंध गर्भ (सम्) सं—
ब्रह्मा ।—ज (सम्) सं—ब्रह्मा ।—
जांड (सम्) सं— संसार, विश्व ।
—नाभ (सम्) सं—विष्णु ।—सं
पेटे (सम्) सं— वस्त्र का एक प्रकार का
अलंकृत किनारा ।—बाण (सम्) सं—
कामदेव ।—बाण बांधव (सम्) सं—
सूर्य ।—भव (सम्) सं—ब्रह्मा ।—
मित्र (सम्) सं—सूर्य ।—सुख
मुखि, नदनी वदने (सम्) सं—कमल के
समान मुखवाली स्त्री ।—सख (सम्)
सं— सूर्य ।—संभव (सम्) सं—
ब्रह्मा ।
कंठर कमला (सम्) सं—लक्ष्मी ; सर्वो-
त्तम स्त्री ।—कमार (सम्) सं—
प्रद्युम्न, मन्मथ ।
कंठर कमलाक्ष (सम्) सं— विष्णु,
कृष्ण ।
कंठर कमलाक्षि (सम्) सं— कमल के
समान नेत्रवाली स्त्री ।

लिं. ।
कम्मा७ कम्मर (तद्) सं.—दे. कंबार.

परकाल (compasses) कायसन
(क) सं.— हाथ का इशारा ।

कमंडलु ।
 करंगंदुग (तद्) सं.— हाथ में

ଚଠଢ଼ାଁ କରଢ଼ିଂ ଚଠଢ଼ାଁ କରଢ଼ିଂ, ଚଠଠଢ଼ାଁ କରଢ଼ିଂ,
 ଢ଼ିଂ, ଚଢ଼ଢ଼ାଁ କରଢ଼ିଂ (ତଦ୍) ସଂ— କରଢ଼ିଂ

ಕರಂಡ ಕರಂಡ, ಕರಂಡಕ, ಕರಂಡಕ, ಕರಂಡಗಿ ಕರಂ

ಕರಮೆ ಕರಮೆ (ಕ) ವಿ.—ದೇ. ಕರಂ.

कंठोन्ध करंभ (सम्) वि. — मिश्रित, मिला हुआ, रंगबिरंगा ।

कंठोन्ध करंभ (सम्) सं. — आटा या अन्य भोज्य पदार्थ जिसमें दही मिला हो ।

कंठोन्ध करंभक (सम्) सं. — दे. कंठोन्ध ; दे. कंठोन्ध.

कंठोन्ध कररुह (सम्) सं. — हाथ की उंगली का नख ।

कंठोन्ध करवल्लय (सम्) सं. — चूड़ी; मल-विद्या के कुछ दौंव-पेच ।

कंठोन्ध करवाल कंठोन्ध करवाल कंठोन्ध करवाल (सम्) सं. — दे. कंठोन्ध.

कंठोन्ध करवीर (सम्) सं. — एक पुष्प (वृक्ष) विशेष ; तलवार, एक देश का नाम ।

कंठोन्ध करवूर (क) सं. — बड़ा नगर ; एक नगर का नाम ।

कंठोन्ध करशाखे (सम्) सं. — उंगली ।

कंठोन्ध करशीकर (सम्) सं. — हाथी की सूँड से टपकाया हुआ जल ।

कंठोन्ध करसीकर (सम्) सं. — दे. कंठोन्ध करसु (क) क्रि. — कंठोन्ध करसु, कंठोन्ध करसु, कंठोन्ध करसु — बुलवा ; भून, भुनवा ; (दूध) दुहा ।

कंठोन्ध करह, कंठोन्ध करेह (क) सं. — बुलावा, निमंत्रण, आह्वान ; दुहना ।

कंठोन्ध कराग्र (सम्) सं. — हाथ का अग्र भाग, उंगली, हाथी की सूँड का अंतिम भाग ।

कंठोन्ध कराट (सम्) सं. — दे. कंठोन्ध.

कंठोन्ध कराल, कंठोन्ध कराल (सम्) वि. — भयंकर, भयानक, बड़ा, लंबा, ऊँचा; विषम, विकृत ।

कंठोन्ध करालि (सम्) सं. — शिवशक्ति, दुर्गा ।

कंठोन्ध करावलि (क) सं. — समुद्र-तट या नदी तट का स्थान ।

कंठोन्ध करावु (क) सं. — दूध दुहना ।

कंठोन्ध करासि (तद्) सं. — खर असि, तीक्ष्ण तलवार ।

(१) कंठ करि (सम्) सं. — हाथी ; आठ की संख्या ।

(२) कंठ करि (क) क्रि. — भून, घी या तेल में

भून; कुछ जला, झुलसा; जलाकर काला कर। सं. — भुने रहने की स्थिति ; कालापन, काला रंग ; कोयला । कंठोन्ध करिय, कंठोन्ध करी — काला । कंठोन्ध करिगुड्डु (क) सं. — आँख की पुतली । कंठोन्ध करिगुड्डि (क) सं. — नीलकंठ पक्षी । कंठोन्ध करिजालिमर (क) सं. — बबूल का पेड़ । कंठोन्ध करिजिगि (क) सं. — कपास के वृक्ष को होने वाली एक बीमारी । कंठोन्ध करिजीरिगे (क) सं. — काला जीरा । कंठोन्ध करि-तुलसीगिड (क) सं. — तुलसी पौधा विशेष, कृष्ण-तुलसी । कंठोन्ध करिदिंगलु (क) सं. — कृष्ण पक्ष । कंठोन्ध करिदिंगलु (सम्) सं. — बुरा दिन, ग्रहण के बाद का दिन, अशुभ दिन । कंठोन्ध करिवेवु (क) सं. — मीठा नीम ; एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते सुगंधित होते हैं, वे रस, सांवार आदि में (सुगंधि के लिए) डाले जाते हैं । कंठोन्ध करिमणि (क) सं. — काली मणि, काली मणियों की माला जो सुमंगलियाँ पहनती हैं । कंठोन्ध करिय (क) सं. — काला पुरुष । कंठोन्ध करियकण (क) सं. — काली आँख । कंठोन्ध करियकंबलि (क) सं. — काली कमली (कंबल) कंठोन्ध करिय जीरिगे (क) सं. — दे. कंठोन्ध करिय, कंठोन्ध करिय बदनेकायि (क) सं. — काले (भूरे) रंग के बैंगन । कंठोन्ध करियबाळ (क) सं. — एक सुगंधि द्रव्य । कंठोन्ध करिय ब्राह्मण (क) सं. — काला ब्राह्मण ; कंठोन्ध करिय नंबबारदु, बिली होलेयन नंबबारदु — काले ब्राह्मण और गोरे अछूत पर विश्वास नहीं करना चाहिए (कहो) । कंठोन्ध करियळ (क) सं. — काली स्त्री । कंठोन्ध करियळवे (इरुवे) (क) सं. — काली चींटी । कंठोन्ध करियुप्पु (क) सं. — काला नमक । कंठोन्ध करिहत्ति (क) सं. — काली कपास (The American Cotton Plant) । कंठोन्ध करिकळु ; कंठोन्ध करिकळु (क) सं. — काली ईख जो बहुत मीठी होती है । कंठोन्ध करिचेळु (क) सं. — काला बिच्छू ।

(३) कंठ करि (क) क्रि. — कंठ करि — बहुत दूर जा, अंत हो, मर जा, हाथ से निकल जा ; निकल जाने दे ; = कंठ करे — बुला, पुकार, आह्वान कर, निमंत्रण दे ।

कंठ करिक, कंठ करिग (क) सं. — काला आदमी ।

कंठ करिकर (सम्) सं. — हाथी की सूँड ।

कंठ करिकु, कंठ करिकु (क) सं. — दे. कंठ.

कंठ करिग (क) सं. — दे. कंठ.

कंठ करिगमने (सम्) सं. — हाथी की चाल-सी चालवाली स्त्री ।

कंठ करिगजित (सम्) सं. — हाथी का गर्जन ।

कंठ करिगाल (क) सं. — बुरे या अशुभ लक्षणवाला पुरुष । कंठ करिगालि — स्त्री. लिं. ।

कंठ करिगि (क) सं. — काली स्त्री ।

कंठ करिगिसु (क) क्रि. — दे. कंठ करिगोरल (तद्) सं. — नीलकंठ, शिव ।

कंठ करिघटे (सम्) सं. — गज-समूह, हाथियों का झुंड ।

कंठ करिचर्मधारि, कंठ करिचर्मधारि (सम्) सं. — शिव ।

कंठ करिचु, कंठ करिचु (क) क्रि. — पकड़, धर, छीन ले, जूँट कर ।

कंठ करिदु, कंठ करिदु, कंठ करिदु (क) सं. — काली चीज़, जो काला हो वह; कालापन ।

कंठ करिदंत (सम्) सं. — हाथीदाँत ।

कंठ करिप (सम्) सं. — महावत ।

कंठ करिपोत (सम्) सं. — हाथी का बच्चा ।

कंठ करिप्रास (सम्) सं. — तुक का एक भेद ।

क०म०५ करिमुख (सम्) सं.— गणेश जी ।
क०र० करिर, क०र० करीर (सम्) सं.— घड़ा,
जलकुंभ ; हाथीदाँत का मूल ; बाँस का
अंशुआ ; करील (एक कंटीला झाड़) ।
क०र० करिरिपु, क०र० करिवैरि (सम्)
सं.— शेर, सिंह ।

क०म०५ करिवदन (सम्) सं.— दे. क०म०५.
क०र० करियंति (सम्) करिवैजयंति सं.—
हाथी की पीठ पर रखा हुआ झंडा ।
क०र० करिशावक (सम्) सं.— दे. क०
र०र०.

क०र० करिणु (सम्) वि.— करने का
इच्छुक, कर्तव्य-प्रिय ।

क०र० करिसु (क) क्रि.— दे. क०र०.
क०र० करीर (सम्) सं.— दे. क०र०.

क०र० करीरक (सम्) सं.— झगड़ा, लड़ाई ।
क०र० करीरि (सम्) सं.— हाथीदाँत का मूल ।

क०र० करीप (सम्) सं.— सूखा गोबर ।

क०र० कर (क) वि.— बड़ा, महान्, ऊँचा ; क०
म० करमाड (क) सं.— बड़ा या ऊँचा

भवन । सं.— बछड़ा, गाय-भैंस का
बच्चा ; पुतली, गुड़िया, ठली हुई वस्तु ।

क्रि.— लक्ष्य कर, निशान लगा ; विचार
कर ; अनुमान कर ; क०र० करविडु (क)
क्रि.— डाल, लेप्य-कर्म कर ।

क०र० करकु (क) सं.— दे. क०र०.

क०र० करण, क०र० करणे (सम्) सं.—
दया ; रहम, अनुकंपा ; सहानुभूति ; तपस्वी ;
काव्य करसों में एक ; करुणाभाव ; दयालु,
कृपालु ; कोमलता ।

क०र० करणकर, क०र० करणे करुणानिधि,
क०र० करणे करुणाविधि (सम्) सं.— अत्यंत
दयावान् ।

क०र० करणं करुणां (सम्) सं.— करुणा
के आँसू ।

क०र० करणं करुणां (सम्) सं.— दया-
सागर ।

क०र० करणं करुणालवाल (सम्) सं.— करुणा
-जलाशय (अत्यंत दयावान्) ।

क०र० करणं करुणालु (सम्) सं.— दयालु,
दयावान् । सं.— तन (सम्) सं.—
दयालुता, कारुण्य ।

क०र० करणं करुणावंत (सम्) सं.— दयालु ।
क०र० करणं करुणाशरनिधि. क०र०
करणं करुणासमुद्र, क०र० करुणा
सागर, क०र० करुणासिंधु (सम्)
सं.— दया-समुद्र (अत्यंत दयावान्) ।

क०र० करुणि (सम्) सं.— कृपालु, दयालु ।

क०र० करुणिसु (सम्) क्रि.— दया कर,
अनुकंपा कर ; सहानुभूति दिख ।

क०र० करुतिरि (क) क्रि.— निशान लगा,
लक्ष्यपूर्वक मार या वेध ।

क०र० करुपु (क) सं.— ईर्ष्या, मात्सर्य ;
तिरस्कार ।

क०र० करुव (क) सं.— ईर्ष्यालु पुरुष ।

क०र० करुवु (क) क्रि.— ईर्ष्या कर, डाह
कार । सं.— ईर्ष्या, मात्सर्य, डाह ।

क०र० करुवु (अ. दे.) सं.— दे.
क०र०.

क०र० करुमाड, क०र० करुमाड (क)
सं.— ऊँचा या बड़ा भवन अट्टालिका ।

क०र० करुडु (क) सं.— दे. क०र०.

क०र० करल, क०र० करलु, क०र० करलु,
क०र० करलु, क०र० करलु (क) सं.— ;
आँत, अंतर्द्विर्भा ; प्रेम, प्रीति, वात्सल्य,
ममता ।

क०र० करे (क) क्रि.— बुला, पुकार, आह्वान
कर, निमंत्रण दे ; बरस. बरसा, (आँसू)
बहा ; (दूध) दुह ; छिपा । सं.— बुलावा,
निमंत्रण ; तट, किनारा, छोर ; काला,
कालापन ; कालिम, कलंक, दोष ; गो-कुल,
गजशाला ; हरी गोल मिर्च ; हरी इलायची ।

क०र० करे कमल (सम्) सं.— कैरव, कुमुद ।
क०र० करे नेल (क) सं.— काली मिट्टी-
वाली भूमि । क०र० करे नेल (क) सं.—

काली बिली । क०र० करे कदल (क)
सं.— काले बाल । क०र० करे जीरिगे
(क) सं.— काला जीरा । क०र० करे मद्दू

(क) सं.— बारुद । क०र० करे मेणसु

(क) सं.— काली मिर्च । क०र० करे हल्लि

(क) सं.— काली छिपकली ।

क०र० करे कलुहु (क) क्रि.— बुला, पुकार ;
कह ।

क०र० करे गणु (क) सं.— सीमा का
अतिक्रमण कर, लौंघ, उलंघन कर ।

क०र० करे गार (क) सं.— एक जाति विशेष

का व्यक्ति ।

क०र० करे गालि (क) सं.— भूमि से समुद्र की
और बहनेवाली, हवा ।

क०र० करे गोरल (क) सं.— शिव ।

क०र० करे दु, क०र० करिदु (क) सं.— काला
पदार्थ ।

क०र० करे यिसु, क०र० करे सु (क) क्रि.—
दे. क०र०.

क०र० करे युविके, क०र० करे ह (क) सं.—
बुलाना, बुलावा, आह्वान ; (दूध) दुहना ।

क०र० करेणु (सम्) सं.— हाथी, हथिनी,
बड़ा भीरु, बड़ा डरपोक ; रज, धूल ;

कर्णिकार, कठचंपा या वनचंपा का पेड़ ।
क०र० करोटि (सम्) सं.— खोपड़ी ;

कटोरा, बर्तन ।

क०र० करे रोध (सम्) सं.— हाथ का पिछला
भाग ।

क०र० करेलु (अ. दे.) सं.— करौली
(तुर्की) ; पिस्तौल ।

क०र० कर, क०र० कर (क) सं.— बछड़ा । वि.—

काला ; क०र० कर करने-बिलकुल काला ।

क०र० करकु (क) सं.— दे. क०र०.

क०र० करके, क०र० करिके, क०र० करके,

क०र० करके, क०र० गरके, क०र० गरिके,

क०र० गरके (क) सं.— दूर्वा, एक प्रकार की

घास (Huriallee grass) ।

क०र० करंगु (क) सं.— कालापन ।

क०र० करल, क०र० करलु, क०र० करलु (क)

वि.— खारा, लवणमय, ऊसर । —

कर्म करसु

धूम्र भूमि (क) सं.— ऊसर भूमि ।

कर्म करसु (क) क्रि.— दूध बहा, दूध दुहा ; वर्षा करा (प्रे.) ।

कर्म करसु (क) सं.— (दूध) दुहना ।
कर्म करि (क) क्रि. = कर्म करे — दुह ;

बहने दे ; छोड़, निकाल ; पानी बरस ;
आसू बहा, रो । सं.— तरकारी ; साग ;
मांस, शोरबा । वि.— काला ; (कलंक,
दोष) ; कर्म करिगोरलव (क)
सं.— वह जिसका कंठ काला हो, शिव ।

कर्म करिके (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर (क) सं.— दे. कर्म.— गाह
गाहि (क) सं.— बछड़ों की देखरेख करने-
वाला लड़का । क्रि.— दे. कर्म (क्रि.) ।

कर्म करके कर्म करके (क) सं.— दे.
कर्म.

कर्म करसु, कर्म करसु (क) सं.—
असूया, ईर्ष्या, शत्रुता । क्रि.— ईर्ष्या
कर, द्वेष कर । कर्म करसु । करसुतन
(क) सं.— असूया करना, शत्रुत्व (शत्रुता) ।

कर्म करसु (क) सं.— बछड़ा ।

कर्म करे (क) क्रि.— दे. कर्म (क्रि.) । वि.
— दे. कर्म (वि.) ।

कर्म करिगे कर्म करिगे (क) वि.— काला ।

कर्म कर्क (सम्) वि.— सफेद । अच्छा,

सुंदर । सं.— सफेद घोड़ा ; अग्नि ।

कर्म कर्कट (सम्) वि.— कठोर, दृढ़,

बलवान, मजबूत । सं.— केकड़ा, कर्कराशि ।

कर्म कर्कटक (सम्) सं.— केकड़ा ।

कर्म कर्कटि (सम्) सं.— ककड़ी विशेष ;

केकड़ी ; साँप (कर्कोट ?) ।

कर्म कर्कटिके (सम्) सं.— तरबूज ।

कर्म कर्कड (तद्) वि.— कर्कट (तत्) ।

कर्म कर्कडे (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्कधु (सम्) सं.— उन्नाव, बेर

(पेड़ और फल) ।

कर्म कर्कर (सम्) वि.— कठोर, कड़ा, ठोस ।

कर्म कर्करि (सम्) सं.— जलपात्र, जिसकी

पौदी में छलनी की तरह छिद्र हो ।

कर्म कर्कलगिड (क) सं.— पीले
फूलवाला एक पौधा (Grewia Pilosa
Lamk) ।

कर्म कर्कश (सम्) वि.— कड़ा, कठोर, सर्व्व,
रूखा । — उँ ते (सम्) — सं.— कठोरता,
रूखापन । — कर्म यौवन (सम्) सं—
जवानी का कठोर समय ।

कर्म कर्कल (तद्) सं.— कर्क (तत्) ;
सफेद घोड़ा ।

कर्म कर्कर (सम्) सं.— एक प्रकार की
लौकी ; कुम्हड़ा ।

कर्म कर्कु (क) सं.— दे. कर्म, दे. कर्म

कर्म कर्कोचे (तद्) सं.— कर्कोच (तत्) ;
कुरर पक्षी ।

कर्म कर्कोट, कर्म कर्कोटक (सम्)
सं.— एक सर्प का नाम (आठ मुख्य
सर्पों में एक) ।

कर्म कर्कोटिकि (सम्) सं.— करेला,
करेले का पौधा ।

कर्म कर्गिगु (क) क्रि.— दे. कर्म.

कर्म कर्गु (क) क्रि.— दे. कर्म ; = कर्म

कलगु — काला हो । सं.— कालापन ।

कर्म कर्चि, कर्म कर्चिकायि (क) सं.—
दे. कर्म, कर्म कर्चि, कर्म कर्चु, कर्म
खर्चु (अ. दे.) सं.— खर्च, (फारसी) ;
व्यय ; साधारण ; छोटा ।

कर्म कर्चु (क) क्रि.— दे. कर्म ; धो,

प्रक्षालन कर । सं.— काटना, (दाँतों से)
काटना, पकड़ना, पकड़, लगाना, धोना, ।
धुलाई ।

कर्म कर्जि, कर्म कर्जिकायि (क) सं.—
दे. कर्म,

कर्म कर्जिगे (क) सं. = कर्म
कडजीरिगे—दे. कर्म.

कर्म कर्जूर (तद्) सं.— खजूर ; (तत्)
खजूर ।

कर्म कर्जिगे (तद्) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्जु (क) सं.— दे. कर्म.

कर्म कर्ण (सम्) सं.— कान ; बर्तन के कड़े

या कान ; सूरज ; महाभारत में वर्णित कर्ण
जो अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध है ;
डॉंड, पतवार ; समकोण त्रिभुज की वह
रेखा जो समकोण के सामने होती है ।

कर्म कर्णकठोर (सम्) वि.— सुनने के
लिए कठोर, बहुत कर्कश, अमधुर ।

कर्म कर्णकुंडल (सम्) सं.— कानों में
पहनने का आभूषण ।

कर्म कर्णगत (सम्) वि.— कान से संबं-
धित, ज्ञात—मादा मादु (सम्) क्रि.—
कह, बोल सुना ।

कर्म कर्णचालन, कर्म कर्णताल
(सम्) सं.— हाथी के कानों का फटफट
शब्द ।

कर्म कर्णज, कर्म कर्णजात, कर्म कर्णतनय,
कर्म कर्णसूनु (सम्) सं.— कर्ण का पुत्र वृषकेतु ।

कर्म कर्णजलौके (सम्) सं.— गोजर,
कनखजूरा ।

कर्म कर्णधार कर्म कर्णधारक (सम्)
सं.— पतवारी, माँझी, नौका-वाहक ।

कर्म कर्णपत्र (सम्) सं.— कानों में आभ-
रण के रूप में रखा जानेवाला ताड़ का
पत्ता, ताड़ के पत्ते का कर्णभरण ।

कर्म कर्णपरंपरे (सम्) सं.— सुनी सुनाई
बात ।

कर्म कर्णपलिके (सम्) सं.— कान का
लटकता हुआ भाग (The lobe of ear) ।

कर्म कर्णपाश (सम्) सं.— सुंदर नाक ।

कर्म कर्णपिशाच, कर्म कर्णपि-
शाचि (सम्) सं.— मंत्र-प्रभाव से वशीभूत
पिशाच जो (कानों में) बाँधित समाचार सुना
देता है ।

कर्म कर्णपूर (सम्) सं.— कर्णफूल, कानों
का आभूषण ।

कर्म कर्णभूषण कर्म कर्णभूषण
(सम्) सं.— कान का गहना ।

कर्म कर्ममोति (सम्) सं.— चायुंटी
(दुर्गा) ।

ಕರ್ನಾಟಕ ಕರ್ಮಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಕಾಯಕುಶಲ
ಕಾರಿಗರ ಯಾ ಮಜದ್ದೂರ ।
ಕರ್ನಾಟಕ ಕರ್ಮಣ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಕೂಲಿ, ಮಜದೂರಿ ।

कर्मदोष (सम्) सं.—दोषपूर्ण कार्य, दोष, अपराध, पाप ; मानवोचित कर्मों का शोच्य परिणाम ।

कर्मधारय (सम्) सं.—एक समास का नाम ।

कर्मदि (सम्) सं.—ब्राह्मण यति या संन्यासी ।

कर्मपरिपाक (सम्) सं.—पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय, कर्मों से छुटकारा कर्मविपाक ।

कर्मफल (सम्) सं.—कर्म से प्राप्त शुभ या अशुभ फल ; पूर्व जन्म के कर्मों का फल ; प्रारब्ध ।

कर्ममार्ग (सम्) सं.—कर्मयोग, कर्म का मार्ग, धार्मिक विधि-विधान ; पाप का मार्ग ।

कर्मवादि (सम्) सं.—वह जो कर्ममार्ग का आचरण करता है या उपदेश देता है ।

कर्मविपाक (सम्) सं.—पूर्व जन्म में किए हुए कर्मों के फल की प्राप्ति का समय ।

कर्मशाले (सम्) सं.—करीगर का घर, काम करने का स्थान लोहार का घर ।

कर्मशील (सम्) वि.—कार्य में निरत, सतत परिश्रम करनेवाला, कार्यकुशल ।

कर्मसाक्षि (सम्) सं.—सभी कर्मों का साक्षी, सूर्य ।

कर्मसान (सम्) सं.—कील, लगाम में ठोंकी गई कील ।

कर्मसिद्धि (सम्) सं.—कार्य सफलता, मनोरथ का साफल्य ।

कर्मधिकार (सम्) सं.—कर्म अथवा वैदिक धर्माचरण का अधिकार ।

कर्मतर (सम्) सं.—क्रिया-कर्म, मृत व्यक्ति के प्रति किये जाने वाले कर्म ।

कर्मयुक्त (सम्) सं.—कर्मों का फल ।

कर्मर (सम्) सं.—कारीगर ; लोहार ; बाँस ।

कर्मि (सम्) वि.—क्रियाशील, कार्य-तत्पर, कार्य करनेवाला, कार्य में व्यस्त ; पापी ।

कर्मिष्ठ (सम्) वि.—चतुर, परिश्रमी, व्यापारपटु ; बड़ा पापी ।

कर्मद्रिय (सम्) सं.—वे इंद्रियाँ जो कर्म करें, आँख-कान, हाथ-पैर आदि ।

कर्म (क) वि.—दे. कर्म ।

कर्म (सम्) सं.—मंडी ; किसी प्रांत का ऐसा नगर जिसके अंतर्गत कम से कम २०० से ४०० तक ग्राम हों ।

कर्म (क) सं.—दे. कर्म ।

कर्म (सम्) सं.—तनाव, खिंचाव, आकर्षण ; सोलह माशा की सोने-चाँदी की तौल ।

कर्म (सम्) सं.—किसान, कृषक ।

कर्म (सम्) सं.—खींचना, तानना ; हल चलाना, जोतना ।

कर्म (सम्) सं.—कसौटी ।

कर्म (क) सं.—दे. कर्म ।

कर्म (क) क्रि.—कर्म कलि—सीख, अभ्यास करा सं.—सीखना, शिक्षा ; पत्थर, शिला ; जड़ता, मन का चलत्व । कर्म कलकुटिग (क) सं.—कर्म कलकुटिग—पत्थर तोड़नेवाला ; राज । कर्म कलकुंड (क) सं.—कर्म कलकुंड—पत्थर की गोली । कर्म कलगान (क) सं.—कर्म कलगान—पत्थर का कोल्हू । कर्म कलकुलि (क) सं.—पत्थर तोड़नेवाले की छेनी ।

कर्म (क) सं.—घड़ा, बर्तन । अ.—सतत, सदा, हमेशा ; कर्म कलकाल—सदा काल, स्थिर रूप से ।

कर्म (सम्) वि.—अस्पष्ट मधुर धीमी और कोमल ; निर्बल ; कच्चा ; रुन-झुन शब्द करनेवाला । सं.—अस्पष्ट धीमी कोमल ध्वनि ; छोटा मुद्गर ; सोना (स्वर्ण) ; संगीत का ताल ; ताड़ का पेड़ । कर्म कलकल (सम्) सं.—कल कल ध्वनि, मधुर ध्वनि ।

कर्म कलक (क) सं.—मिश्रण, मिलावट, मिला हुआ या घुला हुआ पदार्थ (औषध में) ।

कर्म कलकंठ (सम्) सं.—कोयल, मधुर कर, हंस, कवृतर ; मधुर स्वर या गान ।

कर्म कलकिसु (क) क्रि.—हिला, कंपा, मंथन करा, गंदा करा ; पंकिल करा ; व्यग्र करा (प्रे.) ।

कर्म कलकु (क) क्रि.—हिला, अस्थिर कर, विचलित कर, कंपा, उत्तेजित कर ; व्यग्र कर ; गंदा कर, पंकिल कर ; हिल, अस्थिर हो, व्यग्र हो, पंकिल हो (अक्. क्रि.) । सं.—हिलने या अस्थिर होने की स्थिति, पंकिलता, गंदलापन ।

कर्म कलकट्टर, कर्म कलकट्टर (अ. दे.) सं.—Collector (अंग्रेजी) ; जिला-धीश ।

कर्म कलंक (सम्) सं.—कर्म कलंक, कर्म कलंकु—धब्बा, काला दाग, चिह्न, कालिमा ; दोष, पाप, त्रुटि ; अपयश, अपकीर्ति, बदनामी ; लोहे का मुर्चा ; मेघ, बादल ।

कर्म कलंकु (क) क्रि.—दे. कर्म ।

कर्म कलंकु (तद्) सं.—कलंक (तत्), दे. कर्म ।

कर्म कलंगडि, कर्म कलंगडि (क ?) सं.—खरबूज (water melon) ।

कर्म कलज्जि, कर्म कूलज्जि, कर्म कूलज्जे, कर्म कूलज्जि (क) सं.—बहुत बूढ़ी स्त्री, बुढ़िया ; रसोई बनानेवाली बुढ़िया ।

कर्म कलजि, कर्म कलजि (सम् ?) सं—अनाज रखने की बड़ी टोकरी ।

कर्म कलडु (क) क्रि.—हिल, कलुषित हो, अस्थिर हो ।

कर्म कलत्र (सम्) सं.—कर्म कलत्र—जघन ; पत्नी ।

कर्म कलधौत (सम्) सं.—सोना, हेम ; रजत, चाँदी ; सफेद रंग, धवल ; भटूरा ।

कल कलन (सम्) सं.—ग्रहण, ग्रास, पकड़ ;
मिलाना, जोड़ना ; कलंक, धब्बा, दाग ;
भ्रूण ।

कल कलपु (क) सं.—जुड़े या मिले रहने की
स्थिति, मिश्रण, समूह, गिरोह ।

कल कलवत्त, कल कलपत्तु, कल कल
कलवत्तु (क ?) सं.—पत्थर (या किसी
धातु) की बनी छोटी-सी ओखली और
मूसल ।

कल कलभ (सम्) सं.—हाथी का बच्चा ;
ऊँट का बच्चा ।

कल कलमु, कल कलम, कल कलं,
कल कलामु (अ. दे.) सं.—कलम
अरबी) ; लेखनी ; तूलिका, कूँची ।

कल कलदानी, कल कलदानी, कलमुदानी
(अ. दे.) सं.—कलमदान (अरबी, फ़ारसी) ।

कल कलंब (सम्) सं.—[कल कलं कलंब,
कल कलं कलंब, कल कलं कलंबु, कल कलं
कलंब (तद्)]—तीर, बाण ; हंस, मराल ;
चक्रवाक ; लाल कमल ; कदंब वृक्ष) —
कल कलसन (सम्) सं.—धनुष, शरासन ।

कल कलंबु (तद्) सं.—कलंब (तद्)—
कदंब वृक्ष ।

कल कलरव (सम्) सं.—धीमी मधुर कोमल
ध्वनि ; कोयल, कव्तर ।

कल कलल (सम्) सं.—योनि, गर्भ की
झिल्ली ।

कल कललु (अ. दे.) सं.—खलल (अरबी) ;
नुकसान, नाश ।

कल कलविक (सम्) सं.—गौरैया पक्षी ।

कल कलवे, कल कलवे (क) सं.—कुवलय,
नील कमल ।

कल कलश (सम्) सं.—[कल कलस, कल
कलश, कल कलस—तद्]—कलसा,
घड़ा ; देवालय के गोपुर का अग्रभाग
(धातु-निर्मित), शुभद ।—कल कल पूजे (सम्)
सं.—विवाहादि में की जानेवाली कलसा
की पूजा ।

कल कलकुचे, कल कलकुचे, कल कलस्तनि
(सम्) सं.—कलश के समान कुचवाली स्त्री,

युवती ।

कल कलसु (क) क्रि.—[कल कलसु]—
मिला, मिश्रित कर । सं.—मिश्रण, सम्मि-
श्रण ।

कल कलह (सम्) सं.—झगड़ा ; लड़ाई-
युद्ध, झूठ, छल ; दौंवपेच ; मारपीट ।

कल कलहंस (सम्) सं.—एक प्रकार का
हंस जिसके पर भूरे रंग के होते हैं ।

कल कलहंसि, कल कलहंसि, कल कलहंसि
(सम्) सं.—झगड़ा, झगड़ा करनेवाला ।

कल कलहंसि, कल कलहंसि (सम्) सं.—कल-
हांतरिता नायिका, अपने प्रेमी से झगड़ा
कर उससे वियुक्त स्त्री ।

कल कलहंसि, कल कलहंसि (सम्) सं.—झगड़ा, लड़ाई ।

कल कलहंसि, कल कलहंसि (सम्) सं.—नारद ।

कल कलहंसि (सम्) क्रि.—झगड़ा कर,
लड़ ।

कल कला (सम्) सं.—(कुछ विद्वानों के मता-
नुसार कलश शब्द 'कल् = पत्थर' से
कला शब्द की व्युत्पत्ति हुई है)—कला,
ललित कलाएँ तथा अन्य कलाएँ, कोई
धंधा ; किसी वस्तु का छोटा अंश : चंद्र-
मंडल का १६वाँ अंश ; समय विभाग ;
व्याज, सूद ; अणु ; चातुर्य, प्रतिभा ; छल,
कपट ; नौका ; रजोदर्शन ; अस्वीकृति,
छोड़ना ; १६ की संख्या ; नूतनता, चमक,
कांति ; रजोदर्शन ।—कल कला (सम्)
सं.—चंद्रमा ।—कल कला कौशल (सम्)
सं.—कला, (गाना, नाचना आदि) में निपु-
णता ।—कल कला धर, कल कला निधि (सम् सं—
चंद्रमा ।

कल कलाद (सम्) सं.—सोनार ।

कल कलाद (सम्) सं.—व्याज, सूद ;
लाभ ।

कल कलाप (सम्) सं.—झगड़ा, कलह,
विवाद ; गट्टा, गठरी ; समुदाय, संग्रह ;
मयूरपुच्छ ; करधनी, मेखला ; आभूषण ;
तरकस, तणीर ; चंद्रमा ; तीर, बाण ; एक
ग्राम का नाम ।

कल कलाप (सम्) सं.—
चंद्रशेखर, शिव ।

कल कलापि (सम्) सं.—मोर, मयूर ।

कल कलापु, कल कलावतु
(अ. दे.) सं.—कपड़ों के किनारे पर की
ज़री ।

कल कलामु (अ. दे.) सं.—दे. कलामु.

कल कलाय (सम्) सं.—मटर आदि
बीज ।

कल कलाय, कल कलायि (अ. दे.)

सं.—कलाई (अरबी) बर्तनों के अंदर त्रपु
या टीन से किया जाने वाला लेप-कार्य ।

—कल कलाय (अ. दे.) सं.—ऐसा लेप-
कार्य करनेवाला ।

कल कलाल (अ. दे.) सं.—शराब बेचने
वाला ।

कल कलावकु, कलावकुत्र (सम्) सं.—सोलह
सुखवाला ग्रन्थ ।

कल कलावति (सम्) सं.—दुर्गा ; स्त्रियों
का नाम ।

कल कलाविद, कल कलाविद (सम्)
सं.—ललित कलाएँ जाननेवाला, कलाकार ।

कल कलासि (अ. दे.) सं.—[खलासी—
अरबी] मल्लाह ।

कल कलाहीन (सम्) सं.—जिसमें सब
कलाओं में एक कला कम हो, चंद्रमा ।

कल कलि (क) क्रि.—सीख ; मिल, हिल-
मिल, संयुक्त हो, पास-पास हो । सं.—
शिक्षित, निपुण, शक्ति और साहस में
प्रसिद्ध पुरुष, वीर, योद्धा ; पुराने घाव का
बचा चिह्न, चेचक का चिह्न ; मिट्टी, तेल
आदि का धब्बा ; चरित्र में कलंक ।

कल कलि (सम्) सं.—शूर, वीर, योद्धा ;
विभीतिका वृक्ष, बहेड़ा का पेड़ ; चौथा युग,
कलियुग ; कलि (पुरुष), जिसने राजा नल
को सताया था ; युद्ध, लड़ाई, समर ; कली
अविकसित पुष्प ; किसी श्रेणी का सर्वनिकृष्ट ।
—कल काल (सम्) सं.—कष्ट और पाप
का समय ।—कल कल मन (सम्) सं.—वीर

हृदय ।

कलिका (सम्) सं.—अविकसित फूल।

कलिके (क) सं.—सीखना, शिक्षा ; कौशल, चातुरी ।

कलिंग (सम्) सं.—[कलिंग कलिंग]

—एक देश का नाम (वर्तमान उड़ीसा) ;

चातक : सारंग ; एक प्रकार की चिड़िया

जो अपने शिकार को काँटों में बंद कर देती

है (Lanius forficatus) : इंद्रिय, अनाज विशेष : दीर्घतमस के पुत्र का नाम ।

वि.—होशियार, चतुर ; सुंदर ।

कलिंग (सम्) सं.—अनाज रखने का स्थान, खत्ता, खत्ती ।

कलित (क) सं.—सीखना, विद्या, पांडित्य ।

कलित (सम्) वि.—लगा हुआ, जुड़ा

हुआ, मिला हुआ, पकड़ा हुआ, लिया हुआ, गृहीत ।

कलितन (क) सं.—भौतिक विद्याओं

में पाण्डित्य ; वीरता, बहादुरी ।

कलिकुल (सम्) सं.—बहेड़ा

पेड़ ।

कलिनाशन (सम्) वि.—कलियुग

के कलुषसंकट को नष्ट करनेवाला ।

कलिकुल (सम्) सं.—कलिकुल, एक पर्वत का नाम जिससे

यमुना नदी निकलती है।—कलिकुल (सम्)

सं.—यमुना । —कलिकुल नदिनि (सम्)

सं.—यमुना ।

कलियुग (सम्) सं.—चौथा युग—

(यह ४३२००० वर्षों का माता जाता है,

इसका प्रारंभ ई. पू. ३१०२ फरवरी १८

तारीख को हुआ) ।

कलियुगिके (क) सं.—सीखना,

सीखने की क्रिया, विद्याभ्यास ।

कलिसु (क) क्रि.—कलिसु कलिसु—

मिला, मिश्रित कर ; = कलिसु कलिसु—

सिखा, पढ़ा, शिक्षा दे ।

कलु, कलु (क) सं.—पत्थर, शिला,

कंकड़ । कलुकुटिग (क) सं.—

पत्थर तोड़नेवाला । कलुकुंभ,

कलुकुंभ (क) सं.—पत्थर का

खंभा, शिला-स्तंभ । कलुंडु (क)

सं.—पत्थर जो पीसने के काम में आता है,

पानी से घिसा हुआ चिकना गोल पत्थर ।

कलुमद (क) सं.—शिलाजीत

(राल) ; लाल खड़िया ।

कलुंबु (क) क्रि.—हिला ; अस्थिर

कर, गंदला कर, कलुपित कर, व्याकुल कर,

भ्रम में डाल । सं.—कलुष, गंदलापन,

कलंक, दोष ; धब्बा, दाग ।

कलुवे (क) सं.—दे, कलुवे

कलुष (सम्) सं.—मैलापन, गंदला-

पन ; पाप । वि.—मटीला, गंदला, मैला,

खराब, भद्दा ।

कलुसु (क) क्रि.—दे, कलुसु

कलुहे (क) सं.—मैलापन, गंदलापन,

कलुष ।

कलु (सम्) सं.—दे, कलु

कलु (क) सं.—दे, कलु (क) ; ध्वनि

करना, ध्वनि, शोर-गुल, हल्ला । क्रि.—

एक हो, मिल, मिल-जुल ।

कलेवर (सम्) सं.—शरीर, देह ;

कलक (क) सं.—कलक कलक—मिश्रण,

औषध का मिश्रण, मिश्रित पदार्थ ।

(सम्) सं.—घी या तेल की तलछट ;

लेही या लेही की तरह चिपकनेवाला कोई

पदार्थ ; मैला, कूड़ा, विष्टा ; पाप ; दंभ,

कपट, नीचता ; पीसा हुआ चूर्ण ।

कलिक (सम्) सं.—विष्णु के दस अव-

तारों में अंतिम अवतार ।

कलप (सम्) सं.—धर्मशास्त्र की आज्ञा,

आदेश, निर्दिष्ट-नियम, ऐच्छिक नियम ; छः

वेदांगों में से एक ; ब्रह्मा जी का एक दिवस

अथवा १००० युगव्यापी काल ; निश्चय,

संकल्प ; प्रस्ताव, सूचना ; पद्धति, ढंग,

विधान ; प्रलय ; बीमार की चिकित्सा

।—कलु कुज, उरु तरु, कलु हुम,

कलु वृक्ष (सम्) सं.—कल्पतरु, स्वर्ग का

एक वृक्ष ।—कलु लते (सम्) सं.—स्वर्ग

की एक लता ।

कलु (अ. दे.) सं.—दे, कलु

कलु (सम्) सं.—दे, कलु

काटना ।

कलु कलुना, कलु कलुने (सम्) सं.—

बनाना, करना ; तरकीब में लाना ; सजाना,

हाथी की सजावट ; मानसिक कलुना,

विचार, आविष्कार ; युक्ति ।—कलु कलु

(सम्) सं.—काल्पनिक कथा, झूठी कहानी

में प्र.) ।

कलु कलुपाल, कलु कलुपाल

(सम्) सं.—[कलु कलुपाल—

तदु]—कलार, शराब खींचनेवाला ।

कलु कलुभूज, कलु कलुभूजात,

कलु कलुभूह (सम्) सं.—दे,

कलु (कलु में) ।

कलु कलु (सम्) सं.—प्रलयकाल की

अग्नि, भयंकर आग ।

कलु कलु (सम्) सं.—प्रलयकाल, नाश ।—

कलु कलु (सम्) सं.—प्रलयकाल में

उत्पन्न होनेवाली अग्नि ।

कलु कलु (सम्) सं.—प्रलयकालीन

मेघावलि ।

कलु कलु (क) सं.—सीखना, विद्या,

पांडित्य ।

कलु कलु (सम्) वि.—बना हुआ,

कृत्रिम, निर्मित, आविष्कृत, खोजा हुआ ;

सुव्यवस्थित, सजा हुआ, सज्जित । सं.—

विचार, भाव ; युद्ध के लिए सज्जित हाथी ।

कलु कलु (क) क्रि.—मिला, जोड़, लगा,

संयुक्त कर ।

कलु कलु (क) क्रि.—कलुना कर,

अनुमान कर ; आविष्कार कर ; विचार कर ;

निर्मित कर ; सज्जित कर, व्यवस्थित कर ।

कलु कलु (अ. दे.) सं.—दे, कलु

कलु (सम्) सं.—मैल ; पाप ;

धब्बा ।

कलु कलु (सम्) सं.—सफेद और

काले रंग का मिश्रण, भूरा रंग, चितक-
बरा रंग ; काला रंग ।

कल्य (सम्) वि. — तंदुरुस्त, स्वस्थ ;
तैयार, तत्पर ; शुभ, अनुकूल ; बहारा,
गूंगा ; शिक्षाप्रद, सीख देनेवाला । सं.—प्रातः-
काल, सुबह ; कल, पूर्वदिन ; शराब, मद्य ;
शत्रुता, द्वेष, परस्पर बंधन ।

कल्यण (सम्) वि.—शुभ, मंगलकर,
सुखी, भला ; सौभाग्यशाली, भाग्यवान् ;
सुंदर, प्रिय, मनोहर ; सर्वोत्तम ; गौरवान्वित
सं.—भाग्य, सुख, सुख-संतोष ; उत्सव,
विवाह ; एक वृत्त का नाम ; एक नगर का
नाम ; सोना, सुवर्ण ।

कल्याणि (सम्) वि.—शुभ, समृद्धि-
शाली, धन्य, सुखी, भाग्यशाली, मंगल या
शुभकारी । सं.—लक्ष्मी ; पार्वती ; सरस्वती ;
चतुर्भुजाकार सरोवर जिसके चारों ओर
उतरने के लिए सीढ़ियाँ हों ; एक राग का
नाम ।

कल (सम्) वि.—बहरा, बधिर ।

कलंगडि (क) सं.—खरबूजा ।

कलंचि (क) सं.—अबांवील चिड़िया
(Swallow) ।

कलमूक (सम्) सं.—[कलमूक
कलमूक—तद्व]—बहरा और गूंगा ।

कलरे (क) सं.—शिला राशि, पत्थरों
का ढेर ; चट्टान ।

कल्य कल्य (क) सं.—गुरु, आचार्य,
विद्वान्, पंडित ।

कल (क) सं.—एक प्रकार का जाली का
काम, जाल जैसी थैली ; कुर्ता ; गठरी ।

कल (क) सं.—पत्थर, शिला ; कंकड़ ;
पाषाण । कलणवे (क) सं.—चट्टानों
पर उगनेवाला कुकरमुत्ता । कलति-
गिड (क) सं.—अंजीर का पेड़ । कलदा-
रि (क) सं.—पथरीला रास्ता । कल-
नंदि (सम्) सं.—नंदि की मूर्ति ।

कलसकरे (क) सं.—मिश्री ।

कलकुटिग (क) सं.—पत्थर

तोड़नेवाला ; राज । कलकलस

(क) सं.—पत्थर का काम, पत्थर की दीवार
आदि । कलगालि (क) सं.—

पत्थर का पहिया । कलनारु,

कलनारु (क) सं.—अदह धातु
(Asbestos) । कलनेल (क) सं.—

पथरीला फर्श या जमीन । कलबंड़े

(क) सं.—चट्टान । कलमावु

(क) सं.—एक लता या पौधा विशेष ;
जंगली आम का पेड़ । कलमकरे

(क) सं.—मिश्री । कलहाकु (क)

क्रि.—पत्थर नीचे रख या गिरा, पत्थर (या
कंकड़) मार ; दूसरों के कार्य या व्यवसाय

को खराब कर । कलदे (क) सं.—
दृढ़चित्त ; धैर्यपूर्ण हृदय । कलसे (क)

क्रि.—पत्थर मार । कलदे (क) सं—
पत्थर से लगी चोट । कलुत्त (क)

सं.—पद तल में होनेवाला घाव । कलु

कलोरु (क) सं.—पत्थर की
ओखली ।

कल [कल कल, कल, कल] (क)

सं.—मद्य, आसव, शराब ।

कलसु (क) सं.—ध्वनि, स्वर ;
गुकार ।

कलोल (सम्) सं.—विशाल लहर ;
शत्रु ; प्रसन्नता, हर्ष ।—कलोल (सम्)

सं.—लहरों की पंक्ति ।

कलोलिनि, कलोलिनी (सम्) सं.—सरिता, नदी ।

कलह (सम्) सं.—लाल कनेर ;
लाल कमल ; सफेद कमल ।

कव (क) सं.—क्रोध के समय व्यक्त
होनेवाला शब्द । कवकव (दुह-

जल्दी-जल्दी ।

कवच (सम्) सं.—कवच, वर्म, जिरह,
बख्तर ; कंचुक, चोली ; यंत्र, तावीज़, कंचुली
ढोल ; उच्च ध्वनि, घोषणा ; कुट वृक्ष ।

कवचु, कविचु, कविसु,
कवचु (क) क्रि.—उलटा, ऊपर-
नीचे कर, ओंधा रख, विपरीत कर, उलट-
फेर कर ; प्रेरणार्थक रूप ।

कवटे, कवड़े, कवाड़े
(क) सं.—कवचकायि, कवड़े
कायि—इंद्रायण, एक प्रकार
का कहुआ सेव ।

कवड (तद्) सं.—कपट (तद्) ।—
कवड (तद्) । सं.—बड़ा कपटी या
धोखेवाज़ ; बड़ा धोखा ।

कवडि, कवड़े (तद्) सं.—
कपट : (तद्) ; कौड़ी ।

कवडिके (क) सं.—धोती का एक
प्रकार का अलंकृत किनारा ; एक प्रकार का
बाण । (तद्) सं.—कपर्दिका, (तद्) ;
कौड़ी ।

कवडिग (क) सं.—एक प्रकार का
घटिया चावल जो लाल होता है ।

कवडु (क) सं.—कवडिके
—धोती का एक प्रकार का अलंकृत किनारा ;
कवडु कवडु—विभाग,
शाखा, विभक्त रहने की स्थिति ; जोड़ा,
युगल ।

कवडे (क) सं.—कवडि,
कवड़े (सम्) सं.—कवडि,

कवणे (क) सं.—ढेलवाँस, पत्थर मारने
या फेंकने के काम में आनेवाली रस्ती ।—
कल (क) सं.—ढेलवाँस का पत्थर ।

कवते, कवटे (क) सं.—लुभाना ;
बलात्कार पूर्वक लेना, लूटना, अपहरण ।—
कव (क) क्रि.—अपहरण कर, लूट ;
लुभा, मोहित कर ।

कवदि, कविदि, कवुदु
(क) सं.—गद्दा, तोशक ; रजाई, कंथा ।

कवन (सम् ?) सं.—पद्य, कविता,

(अ. दे.) सं.—कसीदा (हिं.); कसीदे का काम ।

कसु कसु (क) वि.—कच्चा, अपक्व ।—
गायि (क) सं.—कच्चा या अपक्व फल ।

कसुकोल्लु (क) क्रि.—[कसुकोल्लु, कसुकोल्लु] — छीन, हड़प ले, हथिया, झपट कर ले, अपहरण कर ।

कसुक (क) सं.—दे. कसु.

कसुरु (क) सं.—दे. कसु (१) (अ. दे.) सं.—दे. कसु (२).

कसुवु (अ. दे.) सं.—दे. कसु (२).

कसुति, कसुदि (अ. दे.) सं.—दे. कसु.

कसे (तद्) सं.—कशा (तत्) ; डोरी, रस्सी, सुतली । — गोल् (तद्) क्रि.—चाबुक पकड़ या छीन । — पावाड़े (क) सं.—लहंगा जिसमें डोरी लगी हो ।

कसेरु (तद्) सं.—दे. कसे.

कस्ति (अ. दे.) सं.—हिंसा, जोर ; छेड़-छाड़ ।

कस्तु (अ. दे.) सं.—दर्द, पीड़ा, कष्ट ; छीना-झपटी, औद्धत्य । — गा (अ. दे.) सं.—कष्ट देनेवाला, सतानेवाला । — तगाड़े (अ. दे.) सं.—पैसे (ऋण) वापस देने की बार-बार माँग करना ।

कस्तुरि, कस्तुरि (सम्) सं.—मुश्क ; कस्तूरी । — कस्तुरि कस्तुरि (के समान सुगंधित) है (कह०) ।

कस्वर (सम्) वि.—जानेवाला, चलित, सीमाहीन । सं.—संपदा, वित्त, धन ; परमात्मा, क्षेत्रज्ञ ।

कहकह (क) सं.—सारस पक्षी की ध्वनि ।

कहलारव (सम्)—सींगे (बाजा) की ध्वनि ।

कहला, कहले, काळे (तद्) सं.—काहला (तत्), सींगा, धातु का

बना सींगा (भोंपा) । — कार, काळ कार (तद्) सं.—सींगा बनानेवाला ।

कहि (क) सं.—कटुः, कटुभाषण, तिक्तता ।

कहिपु (क) सं.—कहि (मै. प्र.) ।

कहलार (सम्) सं.—कहलार कहलार सफेद कमल ।

(१) कल्, कल, गल्, गल (क) प्र.—ब. व. प्रत्यय, उदा.—मगु (बच्चा—मकु मकल या मकु मकल (बच्चे), नायि (कुत्ता)—नायि (कुत्ते) ।

(२) कल् (क) क्रि.—चोरी कर, चुरा, अपहरण कर । कलंगडले [कलंगडले कलंगडले]—(क) सं.—एक झाड़ी-दार पौधा । कलचु (क) सं.—झूठा साँचा (नमूना) । कलट (क) सं.—चोरी का खेल या व्यवहार । कलडले (क) सं.—चोरी के गहने या चोरी का माल ।

(३) कल् (क) सं.—कल, कल, कल, शराब, ताड़ी ; तागे का लच्छा ।

(१) कल (क) सं.—कुछ निश्चित परिमाण, लगभग पाँच सेर (नाप) ; = कल—चोर ; धूर्त, शठ ; = कल—चोरी ; = कल—प्रकाश, चमक ; कलकलसु, कलकलसु—प्रकाशमान हो, चमक ; = कल—कल, कल—(राशि या ढेर से) ले लेना ; कलगल, कलगल—कलगल—पुलाक, कदन्न, भात (जो राशि या ढेर से निकाला गया हो) ।

(२) कल (क) सं.—रुलाई के समय आनेवाली ध्वनि, सिसकी ; कलकल (दुहराना) ; कलकल—कलकलने अलु (क) क्रि.—रो, सिसकी भर ; चावल के उबलते समय आनेवाली ध्वनि ; कलकल—कलकल—कल (क) क्रि.—‘कल’ कर ; व्यग्रता, व्याकुलता या मन की अशांति का सूचक शब्द ; कलकल,

कलकल (क) सं.—व्यग्रता, मानसिक अशांति, चिंता कलकल, कलकल (क) क्रि.—व्यग्र हो, चिंतित हो, आकुल हो ; कलकल (कलकल पद) (क) क्रि.—कलकल ; कलकल कलकलसु, कलकल कलकलसु (क) क्रि.—व्यग्र कर, आकुल कर ; जोर से हँसते समय निकलनेवाली ध्वनि ; कलकल (क) क्रि.—‘कलकल’ करके अर्थात् जोर से हँस ।

(३) कल (तद्) सं.—खलः (तत्) ; खलिहान ; भूमि ; युद्धभूमि । (तद्) सं.—कल (तत्) ; मूक पुरुष गूंगा ।

कलकल (तद्) सं.—कलकल (तत्) ; कलकल ; शोर गुल ; मधुर स्वर ; पक्षियों का स्वर ।

कलकलके (क) सं.—व्यग्रता, आकुलता ।

कलकुल (क) क्रि.—डर, भीत हो । सं.—विकीर्ण होना ।

कलकुल (क) सं.—कलकुल (तद्) सं.—कलकुल (तत्) ; धब्बा, दाग ।

कलकुल (क) क्रि.—निकाल ; मुक्त कर, छोड़, डीला कर, अलग कर, गिरा ; हिला ; खींच ले, बाहर कर ; शिथिल हो, मुक्त हो, (अक. क्रि.) ।

कलकुल (सम् ?) सं.—दे. कलकुल.

कलकुल, कलकुल, कलकुल (क) सं.—चोरी ।

कलकुल (सम्) सं.—पत्नी, भार्या ।

कलकुल (क) सं.—एक पौधा विशेष जो औषधि में काम आता है, अशोक-रोहिणी पौधा ।

कलकुल, कलकुल (तद्) सं.—कलकुल (तत्) ; धान, चावल ।

कलकुल (तद्) सं.—कलकुल (तत्) ; तीर, बाण ।

कलकुल (क) क्रि.—बोल, कह ; सता, तंग कर ।

Euphorbia tirukalli); बग आदमी ।

(२) कं, कल्लि, कं, कल्ले (क) सं—चोरी-
करनेवाली, चोर-स्त्री ।
कं, कल्लु (क) सं—ताड़ी, शराब ; =
कं, कल्लु—प्रेम, ममता ।
कं, कल्ले (क) सं—दे. कं ; दे. (१) कं.
कं, कल्लु, कं, कल्लु (क) सं—हाथी के कान
को छेदने का एक औजार ।
कं, कल्लु (क) सं—दे. कं ; = कं
कल्लु—व्याकुलता (स्थान या पद की) ; कं
कल्लु, कं, कल्लु कल्लु—(दुह-
राना)—स्थान-व्याकुलता, पहले रूप या
स्थिति की हानि ।
कं, कल्लु (क) सं—अतिसार रोग ।
कं, कल्लु, कं, कल्लु, कं, कल्लु
तद् सं—कलमः (तत्) ; धान, चावल ।
कं, कल्लु (क) क्रि.=कृश हो, पतला
हो, महीन हो, तेजोहीन हो ; निराश हो ;
व्यग्र हो ; धबड़ा ; चू पड़ ; टपक ; फिसल ;
नीचे गिर, शिथिल हो ; ढीला हो ; फेंक दे,
हटा । सं.—कृशता, पतला या महीन
होना ; निराशा ; दही, मट्ठा, छाँड़ ; मंजीर,
पायल, नूपुर ।
कं, कल्लु (क) क्रि.—शिथिल कर, ढीला
कर ; निकाल, बाहर निकाल, (जैसे म्यान
से तलवार को निकालना) । सं.—ईख का
टुकड़ा ; ईख का अरोचक (या वेस्वाद का)
ऊपरी अंश ।
कं, कल्ले (क) सं—एक छोटी काँटेदार
डाल या टहनी ; = कं, कल्ले = बाँस
के वृक्षों के बीच में उगनेवाला छोटा पौधा
या अंकुर, वंशांकुर ।
कं, कल्लु, कं, कल्लु (क) क्रि.=
अलग कर, पृथक् कर, निकाल, हटा ; दूर,
कर ; ढीला हो, मुक्त हो ; अंत हो ।
कं, कल्ले (तद्) सं—दे. कं.
कं, कल्लि (क) क्रि—दूर हट, बहुत दूर जा ;
चल बस, अंत हो, मर ; हाथ से निकल
जा ; अधिक हो ; मुक्त हो ; मुक्त कर ; पार
करा, गमन करा ; शुद्ध कर, पाप हटा (मैं-

प्र.) । सं—बहुत दूरी, बहुत दूर जाना ;
माँड, काँजी ।
कं, कल्ले (क) सं—दे. कं.
कं, कल्लु (क) सं—अंत, समाप्ति,
मुक्ति ।
कं, कल्लिह (क) सं—अधिक होना, अधि-
कता, वृद्धि ।
कं, कल्लु (क) सं—दे. कं और कं.
कं, कल्लु, कं, कल्लु (क) अ.=कं, कल्लु—अक-
स्मात्, अचानक, सहसा ।
कं, कल्लु (क) क्रि.—चमन कर, ओकाई
कर, ओक ।
कं, कल्लु (क) क्रि.=कं, कल्लु—काला
हो ।
कं, कल्लु, कल्लु (क) क्रि.—तम हो,
अंधेरा छा ।
कं, कल्ले (क) सं—अंधकार, तम ।
—कं, कल्ले (क) सं—चंद्रमा ।
कं, कल्ले (क) सं.=कं, कल्ले—गंधा,
गर्दभ ।
(१) कं, कल्ले (क) क्रि.=कं, कल्ले—काय-
रक्षा कर, बचा, रख, पहरा दे, चौकसी कर ।
सं.—=कं, कल्ले, कं, कल्ले—वन,
जंगल ; कौए का 'का का' करना ।
(२) कं, कल्ले (सम्) उ.—बुरा, खराब,
कुत्सित ।
कं, कल्ले (क) सं—(किसी प्रकार की)
गरमी, उष्णता ।
कं, कल्ले कांक्षित (सम्) वि.—इच्छित,
अभिलषित । सं.—इच्छा, अभिलाषा ।
—कं, कल्ले (सम्) क्रि.—इच्छा या
अभिलाषा कर, कामना कर ।
कं, कल्ले कांक्षे (सम्) सं.—कामना, इच्छा,
अभिलाषा ; आँख की एक बीमारी । —कं, कल्ले
तीरिसिकोळु (सम्) क्रि.—
अभिलाषा पूर्ण कर ।
कं, कल्ले कांचण (तद्) सं—(तद्) ; कांचन
सोना ; धन । कं, कल्ले कांचन प्रसर
(सम्) सं—बकुल ; नागकेसर वृक्ष ।

कं, कल्ले कांचनमंच (सम्) सं—
सोने का पलंग ।
कं, कल्ले कांचनमाले (सम्) सं—
एक वृत्त का नाम ।
कं, कल्ले कांचनवर्ण (सम्) सं—सोने
का रंग, हेमवर्ण ।
कं, कल्ले कांचनवाद (सम्) सं—
सुवर्णवाद, अच्छा वाद या रपट ।
कं, कल्ले कांचनाद्रि (सम्) सं—सोने
का पर्वत (मै.प्र.) ।
कं, कल्ले कांचनारका (सम्) सं—
कोविदार या कचनार का पेड़ ।
कं, कल्ले कांचनाल (सम्) सं—दे.
कं, कल्ले.
कं, कल्ले कांचनि (सम्) सं—हरिद्रा, हलदी ।
कं, कल्ले कांचाण (तद्) सं—कांचन (तद्) ;
धन ।
कं, कल्ले कांचाल, (कं, कल्ले कांचिवाल),
कं, कल्ले कांचिवाल (तद्) सं—
कांचनाल (तद्) ; दे. कं, कल्ले.
(१) कं, कल्ले कांचि (क) सं—मालातृण, एक
सुगंधित तृण विशेष ।
(२) कं, कल्ले कांचि, कं, कल्ले कांची (सम्)
सं.—करधनी ; एक पौधा विशेष
(Abrus Precatorius) ; दक्षिण भारत
का प्रसिद्ध नगर कांची नगर ।
कं, कल्ले कांचिक, कं, कल्ले कांजि, कं, कल्ले
कांजिक, कं, कल्ले कांजि (सम्) सं—खट्टी
महेरी या काँजी ।
कं, कल्ले कांचित (सम्) वि.—अर्चित,
समाहित ।
कं, कल्ले कांचिवाल (तद्) सं—दे. कं, कल्ले.
कं, कल्ले कांचीपद (सम्) सं—कूल्हा
और कमर ।
कं, कल्ले कांजि, कं, कल्ले कांजिक (सम्) सं—
दे. कं, कल्ले.
कं, कल्ले कांजिर, कं, कल्ले कांजीरगे (क)
सं.—कुचला नामक पौधा (Nux Vom-
ica) ।

४००५० कांजु (तद्) सं.— काचः (तत्),
काँच, शीशा ।

४००५० कांड (सम्) सं.— भाग, अंश,
एक पोरुए से दूसरे पोरुए तक का (पौधे
का) भाग ; बाण, तीर ; पुस्तक का भाग,
परिच्छेद या अध्याय ; तना, डंठल, डाली,
शाखा ; समूह, गुच्छा, गट्ठा ; मौका,
अवसर ; पानी, जल ; गगन, आसमान,
नभ ; निंदा, गाली ; पर्दा ; रहस्य स्थान ;
मिलन, संयोग ; वेग, गति ; बँत,
नरकुल ; छड़ी, डंडा ; बुरा, दुष्ट, पापी
(समस्त-पदों में) ; घोड़ा । — ४०५० (सम्)
सं.— कमला । — ५ धि (सम्) सं.—
समुद्र । — ४०५० पट (सम्) सं.— पर्दा,
ढेरे का कपड़ा । — ४०५० पृष्ठ (सम्)
सं.— सैनिक, बाण ले जानेवाला ।

४००५० कांडव (तद्) सं.— खांडव (तत्) ;
खाण्डव नामक वन ।

४००५० कांडवत्, ४००५० कांडवत्
(सम्) सं.— बाणधारी, सैनिक ।

४००५० कांडवृष्ट (सम्) सं.— योद्धा,
सिपाही ; वह ब्राह्मण जो सैनिक वृत्ति पर
जीवित है ।

४००५० कांडाल (सम्) सं.— नरकुल की
बनी टोकरी, अनाज रखने की टोकरी ।

४००५० कांडीर (सम्) सं.— धनुषधारी,
सैनिक ।

४००५० कांत (सम्) वि.— इच्छित, प्रिय,
प्यारा ; सुंदर, मनोहर, निर्मल, आकर्षक ।
सं.— प्रेमी प्रेमपात्र, पति ; पत्थर, शिला ;
घर, मकान, लोहा ; चंद्रमा ; कृष्ण,
स्कंद ; रत्नविशेष ; कविता-रचना का एक
गुण । ४००५० अयस्कांत, ४००५०
लोहकांत (सम्) सं.— चुंबक (Magnet) ।

४००५० कांतलक (सम्) सं.— तुन का वृक्ष
(Credela Toona) ।

४००५० कांता, ४००५० कांते (सम्) सं.—
प्रेमिका, प्रेमपात्री स्त्री, पत्नी, भार्या ; प्रियगु
लता ; पृथिवी ; बड़ी हलायची ।

४००५० कांतार (सम्) सं.— जंगल, बड़ा

वन ; दुर्गम पथ ; खराब रास्ता ; एक प्रकार
की ईख । — ४००५० चरिगे (सम्) सं.—
जंगल या जंगलों में घूमना ।

४००५० कांतारक (सम्) सं.— एक प्रकार
की ईख ।

४००५० कांति (सम्) सं.— मनोहरता, सौंदर्य ;
आभा, प्रकाश, चमक ; कामना, इच्छा,
चाह ; व्यक्तिगत शृंगार । ४००५० वंत (सम्)
सं.— सुंदर या प्रकाशमान पुरुष । ४००५०
स्तंभ (सम्) सं.— दीपस्तंभ, दीप ।

४००५० कांते (सम्) सं.— दे. ४००५०.

४००५० कांदविद (सम्) सं.— हलवाई
(baker) ।

४००५० कांदिशीक (सम्) वि.— भगोड़ा,
भागनेवाला ; भयभीत, डरा हुआ ।

४००५० कांपिल्य, ४००५० कांपिल (सम्)
सं.— गुंडारोचना नामक लता ।

४००५० कांवल (सम्) सं.— कंबल या ऊनी
वस्त्र से ढका हुआ, कंबल या ऊनी वस्त्र से
ढकी हुई गाड़ी ।

४००५० कांवलिक (सम्) सं.— शंख का
व्यापारी ।

४००५० कांब, ४००५० कांबुव (क) वि.—
(कांब काण = प्रकट हो) — प्रकट होने-
वाला, प्रकटित, व्यक्त ।

४००५० कांबोज (सम्) सं.— कंबोडिया
देशवासी ; पुत्राग वृक्ष ; कांबोज देश की
घोड़ों की एक जाति विशेष ।

४००५० कांबोजि (सम्) सं.— दे. ४००५०
कांबोज.

४००५० कांबोदि (सम्) सं.— एक
(कर्नाटक) राग का नाम ।

४००५० कांबु (सम्) सं.— तना ; डौंठ, डंठल ;
दस्ता, मुठिया ।

४००५० कांसुकि (सम्?) सं.— तेजस्वी
नामक पौधा (The Plant Sida indica) ।

४००५० कांस्य (सम्) सं.— काँसा ; काँसे
का घड़ियाल ; पीतल का जलपात्र, गिलास ।

४००५० कांस्यताल (सम्) सं.— (४००५०
कंसाळ (तत्) — मंजीरा, झांझ ।

४००५० कांस्यतोरण (सम्) सं.—
काँसे का बना तोरण ।

४००५० काक (सम्) सं.— कौआ ; नीच, बुरा
आदमी ; एक राक्षस का नाम ; एक वृक्ष
का नाम । — ४००५० ज्वर (सम्) सं.—
एक प्रकार का ज्वर जिसके कारण शरीर
काला हो जाता है । — ४००५० पोक (सम्)
सं.— कामुक या लंपट । — ४००५०

ताळिन्याय (सम्) सं.— अचानक या
अकस्मात् होनेवाली घटना (कथा यह है —
एक बटोही एक ताल वृक्ष के नीचे पड़ा था ।

वृक्ष पर एक कौआ भी बैठा था । कौआ ज्यों
ही वृक्ष को छोड़कर उड़ा त्यों ही वृक्ष से
एक पका फल गिरा । यद्यपि कौए के
उड़ने और वृक्ष से कल के गिरने में कोई
संबंध नहीं था, तथापि संबंध की कल्पना की
गई) । — ४००५० तिंदुक (सम्) सं.—

कोविदार, आवनूस । — ४००५० तुंड (सम्)
सं.— कौए का मुख ; एक राक्षस ; एक पौधा
विशेष । — ४००५० तुंडि, ४००५० तुंडे
(सम्) सं.— तमाल वृक्ष । — ४००५०

तुंडिके (सम्) सं.— तमाल वृक्ष, तापिच्छ । —
४००५० पक्ष (सम्) सं.— एक प्रकार की
जुलफें, पट्टे, शिखा, शिखंडिका । — ४००५०

पीलुक (सम्) सं.— एक प्रकार का
कोविदार । — ४००५० बलि (सम्) सं.—
कौओं को दिया जानेवाला अन्न । ४००५०

बुद्धि (सम्) सं.— नीच बुद्धि, तुच्छता ।
— ४००५० भाजन (सम्) सं.— कौए को
दिया जानेवाला अन्न, पिंड ; खराब, व्यर्थ ।

— ४००५० भीरु (सम्) सं.— उल्ल ।

४००५० कांकवि, ४००५० कांकवि (सम्) सं.—
ईख का रस, खोब, गुड़ ।

४००५० काकलि (सम्) वि.— धीमा मधुर स्वर,
कोमल मधुर स्वर ।

४००५० काकवि (सम्) सं.— दे. ४००५० ।
४००५० काकलिपि (सम्) सं.— अस्पष्ट
लिखावट ।

४००५० काकबंध (सम्) सं.— वह स्त्री
जिसके केवल एक ही संतान होता है ।

- (१) कठक काका (अ.दे.) सं. = कठक कक—
काका, पिता का छोटा भाई ।
- (२) कठक काका (क) सं.— बिच्छू की
पूछ ; भाजी ; लाल लाक्षा (लाख) ; एक
झाड़ी जिसमें छोटे-छोटे रसदार गोल काले
या लाल फलते हैं ।
- कठक काकारि (सम्) सं.— उल्लू ; काका-
सुर के शत्रु राम ।
- (१) कठक काकि (तद् ?) सं.— काक (तत्) ;
कौआ ।
- (२) कठक काकि (सम्) सं.— मादा कौआ ।
- कठक काकिणि (सम्) सं.— कौड़ी ; सिका
विशेष जो चौथाई पण या २० कौड़ियों के
बराबर होता है ; चौथाई माशा ; माप का
एक अंश विशेष ।
- (१) कठक काकु (क) सं.— दे. कठक ; प्याज़
बड़ी तीखी गंध ।
- (२) कठक काकु (सम्) सं.— वक्रोक्ति ; भय,
शोक, क्रोध के समय की स्वर-विकृति ;
अस्वीकारोक्ति जो इस प्रकार कहना कि
सुननेवाले को स्वीकारोक्ति जान पड़े ; गुन-
गुनाहट ; जोर देकर कहना ; बोली, बोल-
चाल का शब्द ; जिह्वा ।
- कठक काकुद (सम्) सं.— तालु ।
- कठक काकुस्थ (सम्) सं.— राम लक्ष्मण
आदि ।
- कठक काके (तद् ?) सं.— कौआ ।
- कठक काकेदु (सम्) सं.— एक प्रकार का
कोविदार ।
- कठक काकोडुबरिके (सम्) सं.—
अंजीर, गूलर ।
- कठक काकोदर (सम्) सं.— साँप,
सर्प ।— कठक शायि (सम्) सं.— विष्णु,
शेषशायी ।
- कठक काकोल (सम्) सं.— कौआ, काला
कौआ ; शत्रुता, विरोध ; एक प्रकार का
विष, जहर ; दावाग्नि ।— कठक धर (सम्)
सं.— शिवजी ।
- कठक काकोलि (सम्) सं.— एक प्रकार के
पौधे का रस जो औषधि के रूप में काम में

- लाया जाता है, स्वादु रस ।
- कठक काग (सम्) सं.— कौआ ।
- कठक कागज, कठक (अ.दे.) सं.— कागज
(फ़ारसी) ।
- कठक कागडि, कठक कावडि (क) सं.—
ताक ; एक प्रकार का हिंडोला जो छत से
नीचे की ओर लटकाया जाता है (मै. प्र.)
पर्याहार, विवध, जुआडा ।
- कठक कागि (तद् ?) कौआ ।— कठक कण्णु
(क) सं.— छोटी आँख जो कौए की आँख
जैसी हो । कठक बण (क) सं.— बिल-
कुल काला रंग ।
- कठक कगिद, [कठक कागद] (अ.दे.) सं.—
कागज (फ़ारसी)
- कठक कागु (क) सं.— बिलकुल काला या
नीला रंग ।
- कठक कागुणित (क) सं.— बारहखड़ी ।
- कठक कागुणित बारदवनिगे काव्य हेळुवुदु
हेगे ?— जिसको बारहखड़ी मालूम नहीं
उसको काव्य कैसे पढ़ावे ? (कह.) ।
- कठक कागे (तद् ?) सं.— कौआ ; एक पौधा
विशेष ।
- कठक काच, कठक काजु, कठक कांजु, कठक
कासु, कठक, कठक गास (तद्) सं.— दे.
कठक ; ताक ; एक नेत्ररोग ।
- कठक काचभूषण (सम्) सं.— चूड़ी ।
- कठक काचमणि (सम्) सं.— कठक
गाजुमणि— काँच की मणि, स्फटिक ।
- कठक काचवलय (सम्) सं.— दे.
कठक काचवलय ।
- कठक काचा (अ.दे.) सं.— काछ (हिं.),
कूल्हे पर बांधने का कपड़ा ।
- कठक काचि, कठक कांचि, कठक कासंच,
कठक कामंचि, कठक कावंचि (क)
सं.— दे. कठक (१) — कठक गिड (क) सं.—
एक पौधा जिसमें छोटे-छोटे रसदार गोल
(लाल या काले) फल फलते हैं ।
- कठक काचु (क) सं.— खदिरसार, कथा ।
- (१) कठक काजवार, कठक काजिवाँर,

- कठक कांजिर, कठक कासर, कठक
कासक, कठक कासरिके, कठक कासारक,
कठक कास (क) सं.— दे. कठक ।
- (२) कठक काजवार (तद्) सं.— कासारः
(तत्) ; भैंसा ।
- कठक काजि (अ.दे.) सं.— काजी (अरबी) ;
फकीर ; जज, न्यायाधीश ।
- कठक काजिवार (क) सं.— दे. कठक ।
- कठक काजु (तद्) सं.— काचः (तत्) ; काँच,
शीशा ।
- कठक काट (क) सं.— कट, पीड़ा, तंग
करना, सताना ;= कठक काटक, कठक
काडु— वनचर, शिकारी ; लाल मिर्च,
तमाखू आदि की तीखी गंध ।
- कठक काटक (क) सं.— दे. कठक ; तंग
करने या सतानेवाला पुरुष ; लुटेरा (मै.प्र.) ;
कट, पीड़ा, सताना ।
- कठक काटकतन (क) सं.— सताना,
पीड़ा देना ।
- कठक काटकाय, कठक काटकायि,
कठक काटगायि (क) सं.— लट-मार,
लट ।
- कठक काटि (क) सं.— बाजरा विशेष ; बाजरे
या रागी की काँजी (बाजरे या रागी को भूनकर
आटा बनाया जाता है, उसमें मट्टा डालकर
पिया जाता है) ।
- कठक काटु (क) सं.— दाँत काटने का चिह्न,
तलवार, चाकू आदि की चोट का चिह्न ।
- कठक काटे (क) सं.— दे. कठक
- कठक काठिन्य (सम्) सं.— कठक, काठिन्य
(तद्) ; कठिनता, कठोरता कड़ापन,
सख्ती ; कट तकलीफ़ ।
- कठक काड कठक काडु (क) सं.— जंगल, वन ।
- कठक काडगिच्छु, कठक काडगिच्छु ।
(क) सं.— दावाग्नि । कठक कडकोण,
कठक काडकोण (क) सं.— जंगली
भैंसा । क्रि.— सता, पीड़ा दे, कट दे,
तंग कर, दिक् कर ; सख्ती कर, अनादर
कर ।
- कठक काड (क) वि.— जंगल का, वन का ।

काठिन (क) सं.— दावाग्नि ।
 काठिन काठवे (क) सं.— (कठिन कठवे)
 —एक प्रकार का बड़ा बारहसिंगा ।
 काठिन काठाडि (क) सं.— जंगल का
 निवासी, चंचु नामक जाति के लोग ।
 काठिन काठि (क) सं.— जंगल में रहनेवाली
 स्त्री, चंचु जाति की स्त्री ।
 काठिन काठिके (क) सं.— सताना, पीड़ा देना,
 दिक् करना ; पीड़ा, दुःख ।
 काठिन काठिग (क) सं.— सतानेवाला, पीड़ा
 देनेवाला ; जंगल का निवासी ।
 काठिन काठिगे (क) सं.— काजल, कजल ।
 काठिन काठिसु (क) क्रि.— सता, दिक् कर ।
 काठिन काठु (क) क्रि., सं.— दे. काठिन ;
 काला, कालापन ; स्याही. अधकार ; बादल ।
 काठिन काठुह (क) सं.— दे. काठिन.
 (१) काठिन काठे (क) सं.— दे. काठिन.
 (२) काठिन काठे (क) सं.— काढ़ा (हिं.) ;
 क्वाथ (Decoction))
 (३) काठिन काठे (तद्) सं.— काण्ड (तत्) ;
 तना, डंठल ।
 काठिन काण (क) क्रि.— देख, अवलोकन कर,
 दर्शन कर ; दिख, दिखाई पड़, प्रकट हो ।
 काठिन काणवरु (क) वि.— दिखनेवाला ;
 प्रकटित । काठिन काणवहुट्टु (क) क्रि.
 रु.— देखा जा सकता है । काठिन काण
 बाह (क) वि.— दिखाई पड़नेवाला, गोचर
 होनेवाला काठिन काणल्वरु (क)
 क्रि.— देख सक ; दिख ।
 (१) काठिन काण (क) सं.— वह जो देख नहीं
 सकता, अंधा ।
 (२) काठिन काण (सम्) सं.— काना ; कौआ ।
 (१) काठिन काणि (क) सं.— किसी सिके का
 १/६४ भाग ; २४ भू-परिमाण ; पुरस्कार,
 उपहार ; संपत्ति, अधिकार ।
 (२) काठिन काणि (क?) सं.— तराजू की
 असमता, तौल में कमी, समतोल करना ।
 काठिन काणिके, काठिन कणके (क) सं—

देखना, दृष्टि ; दर्शन ; उपहार, भेंट,
 उपायन ।
 काठिन काणिसु (क) क्रि.— दिखा, दर्शन
 करा, प्रकट करा ; व्यक्त हो, प्रकट हो ;
 मन को गोचर हो ।
 काठिन काणु (क) क्रि.— दे. काठिन. काठिन
 काणगोडु (क) क्रि.— देखने दे ; दिखा ।
 काठिन काणवरु (क) क्रि.— दिखाई पड़,
 दृष्टि में आ, प्रकट हो । काठिन काण
 काणु (क) क्रि.— देख ! देख !
 काठिन काणविके (क) सं.— देखना ;
 दिखाई पड़ना ।
 काठिन काणके (क) सं.— दे. काठिन.
 काठिन काणमे (क) सं.— बड़ी बहादुरी, बड़ी
 वीरता ।
 काठिन कातर (सम्) वि.— भीरु, डरपोक ;
 उत्साहहीन, दुःखित, शोकान्वित, भीत ;
 व्याकुल, आकुल, घबड़ाया हुआ ।— त्ते
 (सम्) सं.— विह्वलता, व्याकुलता ; भय ।
 काठिन कातरि (अ.दे.) सं.— खातिरी (अरबी) ;
 भरोसा. विश्वास, दृढ़ता ।
 काठिन कातल (तद्) सं.— कातर (तत्) ; दे.
 काठिन.
 काठिन कातलिंग (तद्) सं.— व्याकुल या
 भीत पुरुष ।
 काठिन काति (क) सं.— क्रोध, रोष ; नारियल
 की जटा जो रस्सी, चटाई आदि बनाने के
 काम में लायी जाती है, ऐसी रस्सी या
 डोरी ।
 काठिन कात्यायनि (सम्) सं.— दुर्गा-
 पार्वती ; मध्य वयस्का विधवा ।
 काठिन कात्यायनिके (सम्) सं.— दे.
 काठिन.
 काठिन कात्यायनीपुत्र (सम्) सं.—
 गणेश ; कार्तिकेय ।
 काठिन कादंब (सम्) सं.— कलहंस ; कदंब
 वृक्ष, कदंब के फूल ।
 काठिन कादंबक (सम्) सं.— दे. काठिन
 काठिन कादंबरि (सम्) सं.— कदंब के
 फूलों से खींची गई मदिरा, शराब ; वाणभट्ट

का प्रसिद्ध संस्कृत गद्य-ग्रंथ ।
 काठिन कादंबिनि (सम्) सं.— मेघमाला,
 बादलों की पंक्ति ।
 काठिन कादल् कादल्मे (क) सं.— प्रेम,
 स्नेह ।
 काठिन कादि (अ. दे.) सं.— खादी (हिं.) ।
 काठिन कादिसु (क) क्रि.— लड़ा, युद्ध कर,
 समर कर. जूझ ।
 काठिन कादुह (क) सं.— युद्ध करना, युद्ध,
 लड़ाई ।
 काठिन काद्वेय (सम्) सं.— सांप,
 सर्प ।
 (१) काठिन कान (क) सं.— लड़कों का एक
 खेल (एक लड़का दूसरे के चरणों के पास
 कूदता है और इस प्रकार खेल होता है) ।
 (२) काठिन कान (तद्) सं.— कर्ण (तत्) ;
 काठिन कानवावुलि (तद्) सं.— कानों
 की बालियाँ ।
 काठिन कानक (सम्) वि.— कनक का, सोने
 का ।
 काठिन कानगु (क) सं.— एक वृक्ष विशेष
 जिसकी लकड़ी उपयोगी होती है (Dalbe-
 rgia arborea) ।
 काठिन कानन (सम्) सं.— वन, जंगल ।—
 धरं चर (सम्) सं.— शिकारी, व्याध ।
 काठिन कानीन (सम्) सं.— अविवाहिता
 स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।
 काठिन कानू, काठिन कानून (अ.दे.) सं.—
 कानून (अरबी) ; कायदा, नियम, धर्म ।
 काठिन काने (अ. दे.) सं.— खाना (फ़ारसी) ;
 घर, कमरा, विभाग ।
 काठिन कान्मिग (क?) सं.— काननमृग,
 जंगली हिरन ।
 काठिन कापटिक (सम्) वि.— ('कपट' से)
 कपटी, झूठा, धोखेबाज़, अविश्वासी ;
 परनिर्भर ; चापलूस (मै.प्र.) ।
 काठिन कापथ (सम्) सं.— कपट, धोखा,
 छल ।
 काठिन कापथ (सम्) सं.— बुरा मार्ग, बुरी
 सड़क ।

कामादि कर्मादि (तद्) सं.— कर्मादि (तत्) ; धोखेबाज, कपटी ; बाजीगर ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— कपाल या खोपड़ी से संबंधित ; संन्यासी ; वामाचारी, एक उपसंप्रदाय (जो शैव-संप्रदाय के अंतर्गत है) — इस उप संप्रदाय के लोग अपने पास खोपड़ी रखते हैं और उसी में रींघ कर या रखकर खाते हैं ।

(१) कामादि कर्मादि (अ.दे.) सं.— (Coffee) (अंग्रेजी), काफ़ी, कहवा । — गिड गिड = कहवा का पौधा ।

(२) कामादि (अ. दे.) सं.— Copy (अंग्रेजी) ; नकल । — माडु माडु (अ. दे.) क्रि. — नकल कर, उतार ।

(३) कामादि (क?) सं.— (कर्नाटक) राग का नाम ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— एक प्रकार की मदिरा, शराब ।

कामादि कर्मादि (क) सं.— रक्षा, रक्षण, रक्षास्थिति, चौकसी ; बच्चे के जन्म के सातवें दिन मनाया जानेवाला 'रक्षा' का चिह्न ; (दृष्टिदोष से बचाने के लिए) बच्चों के एक गाल या दोनों गालों पर लगाया जानेवाला काजल का चिह्न ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— बुरा पुत्र, बुरा बेटा, कपूत ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— भीरु, डरपोक, तुच्छ या नीच पुरुष ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— बंदर के उपाय और कृत्य ।

कामादि कर्मादि (सम्) वि.— भूरे धुमैले सफ़ेद रंग का । सं.— भूरा रंग ; रोड़ा, पोटास आदि, खटापन हटाने का पदार्थ, सज्जी-खार ; सु. ना ।

कामादि कर्मादि (सम्) सं.— आँख में लगाने का सुरमा ।

कामादि कर्मादि (क) वि.— दे. कामादि.

कामादि कर्मादि (क) सं.— व्याकुलता, घबराहट, मन में आंदोलन, चिंता, गड़बड़ी ।

कामादि कर्मादि (तद्) सं.— काव्य (तत्) ।

कामादि काम (सम्) सं.— कामना, अभिलाषा ; अभिलषित पदार्थ, प्रेम, स्नेह ; पुरुषार्थ विशेष ; कामदेव, प्रद्युम्न ; कामुकता, मैथुनेच्छा । कामादि कामण (सम्) सं.— कामदेव । कामादि कामनबिल्लु (सम्) सं.— इद्र धनुष । कामादि कामन हुण्णुमे (सम्) सं.— फाल्गुण मास की पौर्णिमा, होली । कामादि कामकर (सम्) सं.— अपनी कामना के अनुसार करना ; गर्व, अहंभाव । कामादि कामकस्तूरि (सम्) सं.— तुलसी पौधा विशेष । कामादि कामकूट (सम्) सं.— व्यभिचार, वेश्यावृत्ति । कामादि कामगामि (सम्) सं.— अपनी इच्छानुसार करनेवाला । कामादि कामचारि (सम्) सं.— दे. कामादि. कामादि कामज (सम्) सं.— काम से उत्पन्न, अनिरुद्ध । कामादि कामजनक (सम्) सं.— कृष्ण, विष्णु । कामादि कामज्वर (सम्) सं.— प्रेम ज्वर, विरहताप । कामादि कामतंत्र (सम्) सं.— कामशास्त्र, प्रेम-कला । कामादि कामद (सम्) वि.— अभिलाषा पूर्ण करनेवाला । कामादि कामदहन (सम्) सं.— कामादि कामादि कामन सुडुबुडु — काम को जलाना, होली त्योहार के समय लकड़ी को जलाना । कामादि कामदुघा, कामादि कामदुह (सम्) सं.— कामधेनु । कामादि कामधेनु (सम्) सं.— गाय, सभी कामनाएँ पूर्ण करनेवाली गाय । कामादि कामपति (सम्) सं.— रति, काम की स्त्री । कामादि कामपाल (सम्) सं.— वलराम । कामादि कामप्रध्वंसि, कामादि कामध्वंसि (सम्) सं.— शिव । कामादि कामभक्ष (सम्) सं.— सब कुछ खा जानेवाला । कामादि कामरिपु (सम्) सं.— कामदेव का शत्रु, शिव । कामादि कामरूप (सम्) सं.— इच्छित रूप धारण करनेवाला । कामादि कामवाद (सम्) सं.— विनोद की बात, स्वेच्छा से कुछ भी कहना । कामादि कामविकार (सम्) सं.— अस्वाभाविक इच्छा, कामुकता ।

कामादि कामवैरि, कामादि कामहर (सम्) सं.— शिव ।

कामादि कामगारि (अ. दे.) सं.— काम-काज (हिं.) ; काम, कारीगरी ; मरम्मत । कामादि कामंच, कामादि कामंचि (क) सं.— दे. कामादि (१) ।

कामादि कामणि, कामादि कामनि ; कामादि कामले (क) सं.— पांडुरोग, कामला रोग । कामादि कामन (सम्) वि.— इच्छा करने वाला ।

कामादि कामयितृ (सम्) वि.— इच्छा करनेवाला, रसिक ; लंपट ।

कामादि कामले (क) सं.— दे. कामादि.

कामादि कामाक्षि (सम्) सं.— दुर्गा, कांची की कामाक्षी देवता ; एक प्रकार का कमल । कामादि कामांकुश (सम्) सं.— हाथ की उंगली का नख ।

कामादि कामंग (सम्) सं.— आम का वृक्ष ; एक वृत्त का नाम ; मदिरा, शराब ।

कामादि कामाट, कामादि कामादि (अ. दे.) सं.— श्रम, मजदूरी, काम ।

कामादि कामादिके (अ. दे.) सं.— मजदूरी, श्रम ।

कामादि कामातुर (सम्) सं.— काम या प्रेम से पीड़ित व्यक्ति, अपनी इच्छा को पूर्ण करने में तत्पर । कामादि कामातुरी — स्त्री. लिं. ।

कामादि कामांतक (सम्) सं.— शिव ।

कामादि कामांध (सम्) सं.— काम या प्रेम का अंधा ।

कामादि कामार्त (सम्) सं.— कामपीड़ित, प्रेमविह्वल ।

कामादि कामाले (क) सं.— कामादि.

कामादि कामास्त्र (सम्) सं.— काम बाण ।

कामादि कामि (सम्) वि.— कामुक, कामी, रसिक ; अभिलाषी, इच्छुक ; स्त्रैण ।

कामादि कामिणि, कामादि कामिणी (क) सं.— दे. कामादि.

कामादि कामित (सम्) वि.— इच्छित, अभिलषित । सं.— इच्छा

अमिलापा ।
 कर्मशास्त्र का मितार्थ (सम्) सं.—इच्छित वस्तु ।
 कर्मशास्त्र का मिति (सम्) सं.—प्यार करनेवाली स्त्री; सुंदर स्त्री; स्त्री; भीरु स्त्री ।
 कर्मशास्त्र कामु, कर्मशास्त्र कावु, कर्मशास्त्र कावु (क) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कामुक (सम्) सं.—अमिलापी, चाह करनेवाला, ऐयाश; लंपट पुरुष ।
 कर्मशास्त्र कामुकि (सम्) सं.—अमिलापा या चाह करनेवाली स्त्री, वैश्या ।
 कर्मशास्त्र कामुके (सम्) सं.—किसी वस्तु (खाना, पैसा आदि) की कामना करनेवाली ।
 कर्मशास्त्र कामोद्भव (सम्) सं.—प्रेम से उत्पन्न; एक वृत्त का नाम ।
 कर्मशास्त्र काम्य (सम्) वि.—वांछनीय; अच्छा, सुंदर, मनोहर; ऐच्छिक । सं.—अमिलापा, इच्छा ।
 कर्मशास्त्र काम्यदान (सम्) सं.—वांछित वस्तुओं को देना, स्वीकार करने योग्य उपाहार या भेंट ।
 कर्मशास्त्र काम्यार्थ (सम्) सं.—विशेष प्रकार का लाभ जिसकी पूर्ति की कामना की जाती है ।
 कर्मशास्त्र काय (क) क्रि.—फल उत्पन्न हो, फललगा, फलफल; फल पक्व हो; = कर्मशास्त्र कायु—गरम हो, गरम किया जा, जलकर लाल हो; क्रुद्ध हो; आंखें लाल कर; कर्मशास्त्र कायि, कर्मशास्त्र कायु—रक्षण कर, बचा, रक्षा कर । सं.= कर्मशास्त्र काय, कर्मशास्त्र कायि, कर्मशास्त्र कायु—कच्चा फल, पक्व फल; बोड़ी, फली; चौसर के खेल में उपयोगी छोटे-छोटे टुकड़े; कड़ापन; सख्ती ।
 (१) कर्मशास्त्र काय (क) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 (२) कर्मशास्त्र काय (सम्)—शरीर, देह; समुदाय, समारोह; पेड़ का धड़ या तना; पूंजी, मूलधन, घर; देरा, तारों को छोड़कर धीणा का समस्त काठ का ढाँचा; स्वभाव; चिह्न ।
 कर्मशास्त्र काय (अ. दे.) वि.—स्थिर, निश्चित,

स्थापित, (कायम—अरबी) ।
 कर्मशास्त्र कायक (सम्) वि.—शरीर से संबंधित, शरीर संबंधी, शरीर से किया जानेवाला । सं.—काम, पेशा, नौकरी; अभ्यास, उद्योग; आचार; नियम ।
 कर्मशास्त्र कायज (सम्) सं.—शरीर में उत्पन्न; पुत्र; काम, मदन । — कर्मशास्त्र पित (सम्) सं.—श्रीकृष्ण (विष्णु) ।
 कर्मशास्त्र कायजात (सम्) सं.—काम, मन्मथ ।
 कर्मशास्त्र कायजातक कर्मशास्त्र कायजारी (सम्) सं.—शिव ।
 कर्मशास्त्र कायत (तद्) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कायभव (सम्) सं.—मदन, मन्मथ । — कर्मशास्त्र रिपु (सम्) सं.—शिवजी ।
 कर्मशास्त्र कायस्थ (सम्) सं.—कर्मशास्त्र कायत (तद्)—मुनीमी करनेवाला व्यक्ति, लेखक, हिसाब लिखनेवाला, मुनीम; मुनीमी करनेवाले ब्राह्मणों की एक उपजाति ।
 कर्मशास्त्र कायि (क) सं., क्रि.—दे० कर्मशास्त्र । — कर्मशास्त्र कडुवु (क) सं.—एक प्रकार की खाने की चीज़ (इडली) जिसके अंदर गुड़ और नारियल रखा जाता है । — कर्मशास्त्र पल्य, कर्मशास्त्र पल्ये (क) सं.—तरकारी, भाजी-तरकारी । — कर्मशास्त्र हालु (क) सं.—नारियल का रस (क्षीर) । — कर्मशास्त्र हणु (क) सं.—नारियल और केले ।
 कर्मशास्त्र कायिकावृद्धि (सम्) सं.—पूँजी या धरोहर से प्राप्त सूद या व्याज; वह सूद या व्याज जो किसी धरोहर रखे हुए का उपयोग करने के बदले प्राप्त हो ।
 कर्मशास्त्र कायिके (क) सं.—रक्षण, रक्षा, देखरेख, बचाना, चौकसी ।
 कर्मशास्त्र कायिदे (अ. दे.) सं.= कर्मशास्त्र कायदे—कायदा (अरबी); नियम, क्रम, विधान, व्यवस्था ।
 कर्मशास्त्र कायिले (अ. दे.) सं.—काहिली (अरबी); रोग, अस्वस्थता, बीमारी ।
 कर्मशास्त्र कायिसु (क) क्रि.= कर्मशास्त्र कासु—

गरम कर, उवाल; रक्षण करा, रक्षा करा, चौकसी करा; प्रतीक्षा करने दे (प्रे.) ।
 कर्मशास्त्र कायु (क) क्रि.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कायु (क) सं.= कर्मशास्त्र कावु, कर्मशास्त्र काहु—गरमी, उष्णता, ताप; क्रोध, रोष । कर्मशास्त्र कडुकायु—अत्यधिक क्रोध । कर्मशास्त्र कायिपडि (क) क्रि.—क्रोध अधिक हो ।
 कर्मशास्त्र काय्य (तद्) सं.—दे० कर्मशास्त्र ।
 कर्मशास्त्र कार (क) वि.दे.—काला । कर्मशास्त्र कारिडु (क) क्रि.—काला हो । कर्मशास्त्र कारिरुल (क) सं.—काली रात्रि, अंधकारपूर्ण रात । कर्मशास्त्र कारेरुल (क) सं.—शरीर पर का छोटा काला चिह्न, पहचान का चिह्न । कर्मशास्त्र कारेरुल (क) सं.—काला शरीरवाला, कृष्ण । सं.—कालापन; बादलों का आगमन, वर्षाकाल, बरसात का समय । कर्मशास्त्र कारमुगिल् (क) सं.—वर्षाकाल के बादल । क्रि.—बरस, वर्षा कर; बरस कर, ओक; दाँतों से काट खा ।
 (१) कर्मशास्त्र कार (तद्) सं.—क्षार (तद्); तीखापन, मिर्चे का तीखापन; तीखा पदार्थ; तीखी; दवा; सोड़ा, पोटाश आदि; जलानेवाली वस्तु; क्रोध, गुस्सा ।
 (२) कर्मशास्त्र कार (सम्) सं.—(कर्मशास्त्र कार—(तद्)—समासांत में यह शब्द लगता है जिसका अर्थ है—करनेवाला, बनानेवाला, संपादन करनेवाला आदि; जैसे कर्मशास्त्र कुंभकार=कुम्हार, कर्मशास्त्र ग्रंथकार=किसी पुस्तक का रचयिता, लेखक; अक्षरों की ध्वनि का सूचक, जैसे—कर्मशास्त्र अकार, कर्मशास्त्र मकार आदि; = कर्मशास्त्र कारा—बंधन, जेलखाना, बंदीगृह ।
 कर्मशास्त्र कारक (सम्) वि.—करनेवाला, बनाने वाला सं.—वह जो कुछ बनाता या उत्पन्न करता है; प्रतिनिधि, कारिंदा, मुनीम; (व्याकरण में) कारक, जो वाक्य में क्रिया के साथ संज्ञा का संबंध सूचित करता है ।—कर्मशास्त्र दिपक (सम्)

सं.— एक प्रकार का दिया ।
 ॐॐॐॐ कारकून (अ.दे.) सं.— कारकून
 (फ़ारसी) ; मुनीम ; चूंगी वसूल करनेवाला
 (मै.प्र.) ।
 ॐॐॐॐ कारखाने, ॐॐॐॐ कारखाने,
 ॐॐॐॐ कारखाने— (अ.दे.) सं.— कार-
 खाना (फ़ारसी) ।
 ॐॐॐॐ कारगृह (तद्) ; जेल, बंदीखाना ।
 ॐॐॐॐ कारगे (क) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारंजि (क?) सं.— फ़व्वारा, सोता ।
 ॐॐॐॐ कारण (सम्) सं.— कारण, हेतु,
 वजह ; साधन, ज़रिया ; उत्पादक कर्ता,
 जनक ; तत्त्व ; देवता ; पिता ; इंद्रिय ;
 शरीर ; चिह्न ; टीप, प्रमाण ; अधिकार
 किसी नाटक की मूल घटना ; मारना,
 वध करना ; आघात करना, चोट करना
 पीड़ा, क्लेश— ॐॐॐॐ पुरुष (सम्) सं.—
 महापुरुष, देवता, वह पुरुष जो किसी कार्य
 का मूल हो । — ॐॐॐॐ पुरुषरत्न (सम्)
 सं.— महापुरुषों में रत्न । — ॐॐॐॐ योगि
 (सम्) सं.— महायोगी, वह योगी
 जिसको प्राधान्य दिया जा सके ।
 ॐॐॐॐ कारणांत (सम्) अ.— बिना
 कारण के, अकस्मात्, आकस्मिक रूप से,
 अचानक ।
 ॐॐॐॐ करणांतर (सम्) सं.— अन्य
 कारण या उद्देश्य ।
 ॐॐॐॐ कारणिक (सम्) सं.— परीक्षक,
 जाँच करनेवाला ; नैमित्तिक ; क्रिया, व्यापार ।
 ॐॐॐॐ कारणे (सम्) सं.— घर की दीवारों के
 निचले भाग पर लाल रंग से (अलंकार के
 लिए) खींची गई रेखा ।
 ॐॐॐॐ कारण (तद्) सं.— कारण (तद्) ;
 पीड़ा, क्लेश ।
 ॐॐॐॐ कारंड, ॐॐॐॐ कारंडव (सम्) सं.—
 एक प्रकार की बतख ।
 ॐॐॐॐ कारभार (अ. दे.) सं.— कारोबार
 (फ़ारसी) ; व्यापार, व्यवहार ।
 ॐॐॐॐ कारभारि (अ. दे.) सं.— व्यापारी ;

प्रबंधक ।
 ॐॐॐॐ कारंभे (सम्) सं.— प्रियंगु वृक्ष ।
 ॐॐॐॐ कारव (सम्) सं.— कौआ, काक ।
 ॐॐॐॐ कारवि, ॐॐॐॐ कारिवि, ॐॐॐॐ कारवे
 (अ.दे.?) सं.— एक प्रकार का लाल कपड़ा ।
 ॐॐॐॐ कारसिके, ॐॐॐॐ कारसिके (क) सं.—
 एक प्रकार का खीरा या ककड़ी ।
 ॐॐॐॐ कारसे (क) सं.— दवा के काम में
 आनेवाला आलू या धतूरे की जाति का
 पौधा (The Plant Solanum) ।
 ॐॐॐॐ कारागार, ॐॐॐॐ कारागृह (सम्)
 सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ काराच (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारांजि (क?) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारावर (सम्) सं.— एक संकर
 जाति का पुरुष ; नीच जन्मा [ॐॐॐॐ गवरिग
 (तद्)] ।
 ॐॐॐॐ कारि (क) सं.— फटी ज़मीन, वह भूमि
 जो पानी के बहाव के कारण छछिली बनी
 हो ; खाड़ी ; नदी का छिल्ला भाग जो
 हलकर पार किया जा सके ; बादलों का
 आगमन, वर्षाकाल ।
 ॐॐॐॐ कारि (सम्) वि.— करनेवाला, बनाने-
 वाला, कारणभूत । सं.— कर्म, क्रिया
 कलाकार, कारीगर ; यंत्रज्ञ ; अभिनेता,
 नट ।
 ॐॐॐॐ कारिके, (सम्) सं.— [ॐॐॐॐ कारिके,
 ॐॐॐॐ कारिके—तद्]— (कार्य) करनेवाली
 या अभिनय करनेवाली, नटी ; कारोबार,
 व्यापार, व्यवसाय ; व्याख्यान ; टिप्पणी ।
 ॐॐॐॐ कारिणि, ॐॐॐॐ कारिणी (सम्) वि.—
 करनेवाली, बनानेवाली ।
 ॐॐॐॐ करिय (तद्) सं.— कार्य (तद्) ।
 ॐॐॐॐ कारिवि (अ. दे.?) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारीप (सम्) सं.— उपलों का ढेर ।
 ॐॐॐॐ कारु (क) क्रि., सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 संदृसी, चिमटा, कंकमुख ।
 ॐॐॐॐ कारु (सम्) सं.— कर्ता, करनेवाला
 कलाकार, कारीगरी ।
 (१) ॐॐॐॐ कारुक (सम्) सं.— कारीगर,

कलाकार, यंत्रज्ञ ।
 (२) ॐॐॐॐ कारुक (क) सं.— काला आदमी ।
 ॐॐॐॐ कारुकृत्य (सम्) सं.— कारीगरी ।
 ॐॐॐॐ कारुखाने (सम्) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारुणिक (सम्) सं.— कोमल
 हृदयवाला, दयालु, करुणाकर ।
 ॐॐॐॐ कारुण्य (सम्) सं.— करुणा, दया ।
 — ॐॐॐॐ निधि, ॐॐॐॐ सागर, ॐॐॐॐ सिंधु
 (सम्) सं.— दयासागर, अत्यंत दयालु ।
 ॐॐॐॐ कारुबारि (अ. दे.) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारुबारु (अ. दे.) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारुवे (अ. दे.?) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 (१) ॐॐॐॐ कारे (क) सं.— तिक्तकी नामक
 पौधा (The Spinous shrub webera
 Tetandra) ।
 (२) ॐॐॐॐ कारे (सम्) सं.— जेल, बंदीगृह ; पीड़ा,
 क्लेश, कष्ट ; सोने का कंठाभरण विशेष ।
 (३) ॐॐॐॐ कारे (तद्) सं.— कार्य (तद्) ।
 ॐॐॐॐ कारेगार (अ. दे.) सं.— कारीगर,
 काम करनेवाला ।
 ॐॐॐॐ कारोत्तर (सम्?) सं.— खमीरा,
 शराब का फेन, झाग ।
 ॐॐॐॐ कारु (क) क्रि.—ओक, बमन कर,
 उलटी कर ।
 ॐॐॐॐ कार (तद्) सं.— दे. ॐॐॐॐ ; ॐॐॐॐ
 कारि — स्त्री. लिं. ।
 ॐॐॐॐ कारिके (क) सं.— उलटी, ओकाई ।
 ॐॐॐॐ कारिके (तद्) सं.— दे. ॐॐॐॐ ।
 ॐॐॐॐ कारिसु (क) क्रि.— वमन करा ;
 प्रत्यर्पण करा (प्रे.), छिनी हुई वस्तु को ले ।
 ॐॐॐॐ कारु (क) क्रि.— दे. ॐॐॐॐ । सं.—
 ओकाई, वमन ; हल की धार, फार ।
 ॐॐॐॐ कारुह (क) सं.— वमन, उलटी ।
 ॐॐॐॐ कारुह्य (सम्) सं.— कर्कशता,
 कठोरता, सख्ती, मोटापन, कठोरपन ।

४) ठण्ड काल (सम्) वि.—काला, काले रंग
का । ५०६ कंठ (सम्) सं.—मोर ; गौरैया,

शिवजी । — कर्णिका, कर्णिका (सम्) सं. — दुर्भाग्य, विपत्ति । सं. — विष्णु; शिव; ब्रह्मा, दक्ष (ब्रह्मा); राजकुमार; एक राजकुमार का नाम; उन्नाव, फेनिल; सर्पविशेष ।

फाल्गुन कालक (सम्) सं. — कलेजा, यकृत; शरीर पर का काला धब्बा या चिह्न ।

फाल्गुन कालकंधर (सम्) सं. — शिव, रुद्र ।

फाल्गुन कालकर्म (सम्) सं. — मृत्यु ।

फाल्गुन कालकाल (सम्) सं. — मृत्यु के लिए मृत्यु, मृत्युंजय, शिव ।

फाल्गुन कालकूट (सम्) सं. — एक भयंकर विष, हालाहल । — ग्रीव (सम्) सं. — नीलकंठ, शिव ।

फाल्गुन कालक्रियामान (सम्) सं. — (संगीत में) समय की अवधि का माप ।

फाल्गुन कालक्षेप (सम्) सं. — समय विताना, समय नष्ट करना; विलंब, देरी ।

फाल्गुन कालखंड (सम्) सं. — हृदय, लीवर (Liver) ।

फाल्गुन कालगति (सम्) सं. — समय या युग की परिस्थिति; समय का बीत जाना ।

फाल्गुन कालचक्र (सम्) सं. — समय का पहिया, युग ।

फाल्गुन कालजित्, फाल्गुन कालजितु (सम्) सं. — शिव; राम ।

फाल्गुन कालज्ञ (सम्) सं. — उचित समय या अवसर जाननेवाला, ज्योतिषी; रसो-इया ।

फाल्गुन कालज्ञान (सम्) सं. — समय का ज्ञान, परिस्थितियों का ज्ञान ।

फाल्गुन कालत्रय (सम्) सं. — भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल; प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल । — वेदि (सम्) सं. — तीनों कालों को जाननेवाला ।

फाल्गुन कालदर्शि (सम्) सं. — वह जो समय के बारे में जानता हो और बतलाता हो ।

फाल्गुन कालदूत (सम्) सं. — यम का

सेवक, मृत्यु की सूचना ।

फाल्गुन कालधर्म (सम्) सं. — मृत्यु ।

फाल्गुन कालनेमि (सम्) सं. — एक राक्षस जिसे हनुमान जी ने मारा था ।

फाल्गुन कालपुरुष (सम्) सं. — मृत्यु-देवता ।

फाल्गुन कालपृष्ठ (सम्) सं. — कर्ण के धनुष का नाम ।

फाल्गुन कालभेद (सम्) सं. — निश्चित समय, भिन्न भिन्न काल, ऋतु, मौसम ।

फाल्गुन कालभैरव (सम्) सं. — भयंकर (मृत्यु को लानेवाला) भैरव, प्रलयंकर रुद्र ।

फाल्गुन कालमान (सम्) सं. — समय की माप, परिस्थिति के अनुरूप, समय की अनुरूपता ।

फाल्गुन कालमुख (सम्) सं. — कौआ, अगरु ।

फाल्गुन कालमेघ (सम्) सं. — मंजिष्ठा नाम का पौधा ।

फाल्गुन कालरात्रि, फाल्गुन कालरात्रि (सम्) सं. — भयंकर रात, प्रलयकाल की रात ।

फाल्गुन कालरुद्र (सम्) सं. — दे. फाल्गुन ।

फाल्गुन कालवश, फाल्गुन कालाधीन (सम्) सं. — समय के अधीन, मृत्युके वश में होना ।

फाल्गुन कालसूत्र (सम्) सं. — एक नरक का नाम; समय या मृत्यु की डोरी ।

फाल्गुन कालवह्नि, फाल्गुन कालाग्नि (सम्) सं. — प्रलय के समय की आग ।

फाल्गुन कालवेले (सम्) सं. — समय (दुहराना) ।

फाल्गुन कालव्यापि (सम्) वि. — सार्वकालिक, स्थिर ।

फाल्गुन कालसूत्र (सम्) सं. — एक नरक का नाम; समय या मृत्यु की डोरी ।

फाल्गुन कालस्कंध (सम्) सं. — तमालवृक्ष ।

फाल्गुन कालहर (सम्) सं. — शिव ।

फाल्गुन कालहरण (सम्) सं. — समय को व्यर्थ करना; देरी, विलंब ।

फाल्गुन कालागुरु (सम्) सं. — काला अगरु ।

फाल्गुन कालाग्नि (सम्) सं. — दे. फाल्गुन ।

फाल्गुन कालांगि (सम्) सं. — इलायची, पुला ।

फाल्गुन कालातिक्रम (सम्) सं. — उपयुक्त या उचित समय का अतिक्रमण, समय का अधिक बीत जाना ।

फाल्गुन कालाधीन (सम्) सं. — दे. फाल्गुन ।

फाल्गुन कालानुकूल (सम्) सं. — समय पर, प्रत्येक वर्ष; कभी न कभी ।

फाल्गुन कालानुकूलते (सम्) सं. — अनुकूल समय, शुभ समय ।

फाल्गुन कालांतक (सम्) सं. — समय जो मृत्यु देवता माना जाता है; यम । — कृत् (सम्) सं. — शिव ।

फाल्गुन कालांतर (सम्) सं. — मध्यांतर; (Interval) समय का विधान, अवधि; दूसरा या आगामी समय ।

फाल्गुन कालायस (सम्) सं. — लोहा ।

फाल्गुन कालारि (क) सं. — टिटिहरी ।

फाल्गुन कालावाधि (सम्) सं. — उपयुक्त या निश्चित समय ।

फाल्गुन कालास, फाल्गुन कालास (सम्) सं. — ध्वज, पताका ।

फाल्गुन कालाहि (सम्) सं. — काला नाग ।

(१) फाल्गुन कालि (क) सं. — पैरोंवाली स्त्री ।

(२) फाल्गुन कालि, फाल्गुन काली, फाल्गुन कालि (सम्) सं. — दुर्गा, कालीमाता; कालारंग ।

फाल्गुन कालिक (सम्) वि. — समय संबंधी, समय पर निर्भर, समयानुसार ।

फाल्गुन कालिका, फाल्गुन कालिके (सम्) सं. — काला रंग, स्याही; बादलों का समूह; मुर्चा; दुर्गा, कालीमाता ।

फाल्गुन कालिङ्ग, फाल्गुन कालिङ्ग (सम्) वि. — कालिङ्ग देश में उत्पन्न या उससे संबंधित । सं. — कालिङ्ग-राजा; कालिङ्ग देश

कालिदास कालिदास

का सर्प ; कालियनाग ; एक विषैला पौधा, एक प्रकार की ककड़ी । — कालिदास मर्दन (सम्) सं. — श्रीकृष्ण ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (सम्) सं. — संस्कृत के प्रख्यात कवि ।
कालिदास कालिदास कालिदास (सम्) सं. — यमुना नदी । — कालिदास वैरि (सम्) सं. — बलराम । — कालिदास सहजात (सम्) सं. — यमराज । — कालिदास कर्षण, धीरेन्द्र भेदन (सम्) सं. — बलराम । — कालिदास सोदर (सम्) सं. — यमराज ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — कालिमा, कालापन, स्याही ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — नाला, नहर ।
कालिदास कालिदास (सम्) वि. — सामयिक, किसी विशेष समय का ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ; कालिदास कालिदास (क) सं. — पायजामा । कालिदास कालिदास (क) सं. — एक प्रकार की बेंच । कालिदास कालिदास (क) सं. — पायल, नूपुर, मंजीर । कालिदास कालिदास (क) सं. — जल्दी-जल्दी चलने-वाला । कालिदास कालिदास (क) सं. — पैदल (चलना) । कालिदास कालिदास (क) सं. — अधिक घूमना या चलना । कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास की बोल, कालिदास कालिदास (क) सं. — पैरों में पड़ या गिर ; प्रार्थना कर, गिड़गिड़ा । कालिदास कालिदास (क) सं. — पैर बांध ; दूसरों में लग या पड़, गिड़गिड़ा ; विवाह, शादी । कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास कालिदास (क) सं. — बांधने (या पकड़ने) की रस्सी । कालिदास कालिदास (क) सं. — पैर का मोजा । कालिदास कालिदास (क) सं. — भाग जा, नौ दो ग्यारह हो । कालिदास कालिदास (क) सं. — पगडंडी । कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास कालिदास (क) सं. — कर, आरंभ कर, शुरू कर । कालिदास कालिदास (क) सं. —

चप्पल ; परस्पर पैरों से मारना, आपस में झगड़ा ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — ग्रामीण व्यक्ति, गँवार या असभ्य पुरुष ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — कलुपता, गंदगी गंदलापन ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास कालिदास (क) सं. — पैर रख, स्थिर हो । सं. — छोटा ग्राम ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — नील का पौधा, पीपल ; काला जीरा ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — पैर घसीट कर चल, धीरे चल ; समय व्यर्थ कर ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — केशर, कुमकुम ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — हल्दी का पौधा ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — समय के अनुसार, मौके पर, उचित समय पर ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — कृष्णसर्प, काला नाग ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — हल्दी का पौधा ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — चप्पल, पाद-रक्षा ; पदाति ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — पदातियों की सेना ; पद का निचला भाग, तलवा ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास कालिदास (क) सं. — पैदल (चलना) ।
कालिदास कालिदास (सम्) वि. — समय से, सामयिक, अवसर के अनुसार ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — छोटी गठरी, छोटा गट्टा ।
कालिदास कालिदास (सं. — काम (तत्) ; मन्मथ ।
कालिदास कालिदास (तत्) सं. — काम के पिता, विष्णु ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — कवचधारी पुरुषों का समूह ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास (१)
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास (२) ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — मंडप, पंडाल ;

सूर्य से आंठ की जगह, छाया, छोटी पशु-शाला या मालगोदाम ।
कालिदास कालिदास (अ. दे.) सं. — खारिद (फारसी) ; प्रभु, स्वामी, मालिक ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (क) सं. — मानसिक उन्नता, उत्कंठा भाव, लालसा ; क्रोध, रोष ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (क) सं. — रक्षा करना, रक्षा, रक्षण, चौकसी, संरक्षण, संरक्षण का स्थान (किसी चीज़ या पशुओं का) ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (क) सं. — रक्षक, पहरेदार, अंगरक्षक ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास = कालिदास कालिदास — तवा, (भूतने का) लोहे का बर्तन ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (क) सं. — पहरेदार, द्वाररक्षक ; गुप्तचर, जासूस ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ; नहर, धारा ।
कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास, कालिदास कालिदास (क) सं. — तिमिर, अंधकार ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — इंद्रायण, एक प्रकार का कहुआ सेब ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — लाल मिट्टी, लाल मिट्टी कर रंग, कापाय, कापायवस्त्र ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — गरमी, ताप ; दाहने की क्रिया ; दे. कालिदास ; एक अनुकरण मूलक शब्द ; कालिदास कालिदास कालिदास — कौए की 'काव काव' ध्वनि ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — कालिदास (१)
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ।
कालिदास कालिदास (क) सं. — दे. कालिदास ।
कालिदास कालिदास (अ.दे.) सं. — कावा (फारसी) ; घोड़े को तीव्र वेग से मोड़-मोड़कर चलाना ।
कालिदास कालिदास (सम्) सं. — दक्षिण भरत की एक प्रसिद्ध नदी ।

काव्य (सम्) सं. — उशनस् या शुक्र ; पद्यमय-रचना, कविता या कविता का विभाग, कवि । — कर्त्तार (सम्) सं. — कवि, रचनाकार । — कर्त्तृ (सम्) सं. — कवि । रचने (सम्) सं. — कविता की रचना । — समय (सम्) सं. — कवि समय ।

काव्यावलोक, काव्यावलोकन (सम्) सं. — कन्नड कवि नागवर्मा की प्रसिद्ध काव्यशास्त्र रचना ।

काश (सम्) सं. — चमकना, चमक, प्रकाश ; एक प्रकार की घास जो चटाई बनाने और छत छाने के काम में आती है ।

काशकर्पटि (सम्) सं. — कौपीन ; जाँघिया ।

काशि, काशी (सम्) सं. — सप्त मोक्षपुरियों में एक, बनारस ; चमक, प्रकाश । — कागद = अच्छा सफेद कागज । — तलि = मांगल्य । — भागीरथि (सम्) सं. — काशी से लाया गया गंगा-जल ।

काशिका, काशिके (सम्) सं. — बनारस ।

काशिनाथ, काशिनाथ काशि विश्वनाथ (सम्) सं. — विश्वनाथजी, शिव ।

काशिराज (सम्) सं. — काशी के एक राजा का नाम, अनुसालव के पिता का नाम ।

काश्मिर (सम्) सं. — गांधारी नामक पौधा ।

काश्मीर (सम्) सं. — कश्मीर ; कश्मीर से संबंधित पदार्थक ; केसर, जाफ़ान । — ज, जन्म (सम्) सं. — केसर, जाफ़ान ।

काश्यप (सम्) सं. — एक प्रसिद्ध ऋषि । काश्यपि — गरुड़, अरुण ।

काषाय (सम्) सं. — गेरुआ वस्त्र । — धारी (सम्) सं. — संन्यासी । — वसन (सम्) सं. — गेरुआ वस्त्र धारी ।

काष्ठ (सम्) सं. — लकड़ी का

टुकड़ा, लट्ठा, छड़ी, ईंधन ; मूख, बेवकूफ ; कृश होना, पतला होना ; नापने का एक औज़ार । तक्ष, तट् (सम्) सं. — बढ़ई । — व्यसन (सम्) सं. — व्यर्थ की चिंता ।

काष्ठानुवाहिनि (सम्) सं. — लकड़ी की बाल्टी ।

काष्ठिके (सम्) सं. — काष्ठ, लकड़ी का टुकड़ा, ईंधन ।

काष्ठभूत (सम्) सं. — काठ के समान या काठ होना ।

काष्ठिके (सम्) सं. — कदली वृक्ष, केले का पेड़ ।

काष्ठे (सम्) सं. — दिशा ; सीमा, चरमसीमा ; जगह ; मैदान ; समय का परिमाण ; अठारह बार पलकें मारने का समय ; उत्कृष्टता, शुद्धता, स्पष्टता ; अनुकूलता ; विकास, उन्मीलन ।

कास (तद्) सं. — काश (तत्) ; चमक प्रकाश, कांति ; विकास, खिलना ।

कास (सम्) सं. — खाँसी ; दमे की बीमारी (मै.प्र.) ।

कासगि (अ.दे.) वि. — खाँस (अरबी) ; अपना, स्वकीय ।

कासगि (सम्) सं. — दवा के काम में आनेवाला आलू या धतूरे की जति का पौधा (Solanum) ।

कासदार (अ.दे.) सं. — (कासगार) — सईस, अश्वपालक ।

(१) कासर, कासक (क) सं. — दे. कासर और कासक ।

(२) कासर (सम्) सं. — भैंसा । कासरि (सम्) सं. — भैंस ।

कासरिके (क) सं. — दे. कासर ; दे. कासर ।

कासा (अ.दे.) वि. — खाँस (अरबी) ; अच्छा, सुंदर, मनोहर ; अपना ।

कासाय (तद्) सं. — काषाय (तत्) ।

कासार (सम्) सं. — तालाव, खरोवर पुष्करिणी ।

कासारक (क) सं. — कासर ।

कासि (तद्) सं. — काशी (तत्) । (तद्) सं. — काशा (तत्) — कौपीन ; दे. काशा, कासिकेचडि = काशा, कासिगण्ड (तद्) सं. — काशाकर्पट (तत्) ; दे. काशकर्पट ।

कासित (सम्) वि. — भेजा हुआ, दूर किया हुआ, हटाया गया ।

कासिसु (क) क्रि. — गरम करा, उष्ण करा (प्रे.) ।

कासु (क) क्रि. = कासु कासिसु — गरम कर, उबाल, औटा, ताप । सं. — बहुत छोटा सिक्का, कौड़ी, पैसा ।

कासु, काशू (सम्) सं. — एक प्रकार का भाला ; अस्पष्ट भाषण ; दीप्ति, कांति, चमक ; रोग ; भक्ति ।

कासुलि (सम्) सं. — दे. कासुलि कासे (तद्) सं. — काशा (तद्) ; कौपीन काष्ठ ; जाँघिया ।

कासुति (सम्) सं. — पगड़ी, गुप्तमार्ग ।

कास्तार (अ.दे.) सं. — दे. कास्तार कास (क) सं. — दे. कासर (१)

काहक (क) सं. — रक्षक, संरक्षक, पालक ; चौकसी करनेवाला ।

काहल (सम्) सं. — विह्वल ; मुर्गा ; काक, कौआ ; रव, ध्वनि ; पंचमहावायु, सींगा ।

काहि (क) सं. — दे. काह ।

काहले, [काहले] (तद्) सं. — काहल ; (तत्) ; सींगा ।

काहि (क) सं. — दे. काहल ।

काहिले (अ.दे.) सं. — दे. काहिले, काहिले (क) सं. — दे. काहिले ।

काहु (क) सं. — दे. काहु, काहु ।

काहुर, काहुरे (क) सं. — दे. काहुर ।

काहेरु (क) क्रि. — गरम हो, जल हो ; ताप अधिक हो ।

काहोनल् काहोनल्, काहोनल् काहोनल्
(क) सं.— वन में बहनेवाली धारा, नदी
की बाढ़ ।

काह काह, काह काह (क) सं.— दाना ;
धीज, अनाज ।

काह काह (तद्) सं.— काल : (तद्) ; काह
यम काहयम— मृत्युदेवता यम । (तद्)
सं.— काल (तद्) ; काला ; काहकाह
काहकाह— गाढांधकार, काहकाह काह—
जीरिगे— काला जीरा, काहकाह काहकाह
—अंधेरी रात ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (क) सं.— युद्ध,
समर, लड़ाई ।

काहकाह काहकाह (अ. दे.) सं.— काहकाह काहकाह
—काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह, काहकाह
काहकाह— कलेजा, यकृत ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (क) सं.—
पीकदानी ; सुगंधित जल छिटकाने का
सोने, चाँदी या पीतल का बर्तन विशेष,
रसपात्र ; एक प्रकार का चैवर या पंखा ।

(१) काह काह (क) सं.— दे. काह.

(२) काह काह (तद्) सं.— एक नाम
(स्त्रियों का) ; दुर्गा की उपाधि — काह
नाथ = शिव — काहकाह मथन = कृष्ण ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्) सं.—
काहकाह, काहकाह ।

काहकाह काहकाह (तद्) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्) सं —
काहकाह नाग, काला सपे ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (अ. दे.)
सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (तद्)
सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काह (तद्) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (क) सं — दे. काहकाह.

काहकाह काह (क) सं.— वन, जंगल, अरण्य
रुक्षता, जंगलीपन ; बलात्कार, दुष्टता,
बुराई-बुरा आदमी, शत्रु ; दे. काहकाह
कालापन ; काहकाह काहकाह (क) सं.—
काली भैंस ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— मन की कठोरता ;
हठ, प्रतीपता ; अहंकार, गर्व ।

काहकाह काह (क) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह (काहकाह काहकाह) (क) सं.—
अनाज बेचनेवाला ।

काह काह, काहकाह किम् (सम्) सर्व., अ.— क्या ;
कैसे ; या— तो ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— सेवक, दास,
नौकर । — काह काह, काहकाह (सम्) सं.—
सेवा-भाव, दासता ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— नौकर की स्त्री ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— नौकरानी, दासी ।

काहकाह काहकाह, काहकाह काहकाह (क) सं.—
संकीर्णता, तंगी, भीड़ का होना ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— छोटी घंटियों से
निकलने-वाली ध्वनि, पायल की ध्वनि ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— धूँवर, छोटी-
छोटी घंटियाँ ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— घोड़ा ; कोयल,
कोकिल ; मधुकर, अमर ; कामदेव ; लाल
रंग ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— तोता ;
कोयल ; कामदेव ; अशोकवृक्ष ; महासहा,
अखिल पुष्प ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— दे. काहकाह.

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.—
असहाय स्थिति, किंकाहकाहकाहकाहकाह, जब कि
मालूम न हो कि क्या करना चाहिए ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— हिंसा ; पीड़ा,
कष्ट, संकट ।

काहकाह काहकाह (सम्) सर्व.— कुछ, थोड़ा ;
कुछ हद तक, और नहीं ।

काहकाह काहकाह (सम्) सर्व.— कुछ, थोड़ा ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.— वह
स्त्री जिसका विवाह बहुत काल के बाद भी
न हुआ हो ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.— केंचुआ ;
गहूँपद ।

काहकाह काहकाह (सम्) सं.— कमल पुष्प का

रेशा, कमल का फूल ; किसी वृक्ष का फूल
या रेशा ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— झरोखा, थोड़ा खुला
स्थान, छिद्र ।

काहकाह काहकाह (सम्) अ.— लेकिन, परंतु,
मगर ।

काहकाह काहकाह (सम्) वि.—अपक्व, कच्चा ;
लड़कपन स्वभाव का ; मूर्ख । सं.—
कद्दू, कुम्हड़ा ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.—किन्नर, देवता-
ओं के गायक— इनका मुख घोड़े जैसा
और शरीर मनुष्य जैसा होता है ; 'कैसे
मनुष्य हैं' यह आंति उत्पन्न होती है ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.— दंतकथा ;
अफवाह ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.—अनाज की बाल ;
बाण, तीर ; सारस, बगुला ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.— पलाश वृक्ष ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.— अनेक श्रेणीवाली
माला ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (सम्) सं.—
चातक पक्षी ; नीलकंठ पक्षी ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (क) कि.— छोटा कर,
कम कर, एक साथ मिला, सटा ; भीड़ हो,
संकीर्ण हो, तंग हो, स्थानाभाव हो, निविड
या घना हो ।

काहकाह काहकाह किंकाहकाह (क) सं.—
तंगी, संकीर्णता, संकुचितता ; भीड़ ; दबाव ।

काहकाह काहकाह (क) कि.— काहकाह काहकाह
— संयुक्त हो, अत्यधिक निकट हों, निविड
या घना हों, भीड़ हो, जन-समूह हो, संकीर्ण
हो । सं.— भीड़, अधिकता, संकीर्णता, तंगी,
जन-समूह, स्थानाभाव ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— चीख, पुकार, चिल्लाहट ।

काहकाह काहकाह (क) वि.—छोटा, लघु । काहकाह

काहकाह (क) सं.— छोटी गठरी, छोटा गट्टा

काहकाह काहकाह (क) सं.— छोटी आँख ।

काहकाह काहकाह (क) वि.— हीन, तुच्छ,

मूल्यरहित ।

काहकाह काहकाह (क) सं.— छोटी गठरी ।

सं.— कुबेर ।

ॐॐॐॐ किप्परि (क) क्रि.—कूद, छलांग मार।

कृष्णायति किरायति (अ. दे.) सं.—किरा
(अरवी) नफा ; — लाभ ।

कृष्ण किरवडि, कृष्ण किरवरि, कृष्ण
किरदि, कृष्ण किरदि (क) सं.—जंतु या
मनुष्य का मांसल पाश्र्व, पेट ।

कृष्ण किरवसिर, कृष्ण किरवसुर (क)
सं.—पेट का निचला भाग, नाभि के नीचे
का भाग ; वस्ति ।

कृष्ण किरि, कृष्ण किरि (क) सं.—पहाड़ का
ढाल प्रदेश, पहाड़ के मूल की भूमि या
स्थान ।

कृष्ण किरि (क) सं.—छोटी उंगली,
छिगुनिया ।

कृष्ण किमि (तद्) सं.—कान (ग्रा.) ।

कृष्ण किमिचु (क) क्रि.—हाथ से दबा या
कुचल ; मसल, मर्दन कर ।

कृष्ण किमुक् (क) सं.—थोड़ा शोर-गुल ।
कृष्ण किमुक्केन्नु — थोड़ा शोर-गुल
कर ।

कृष्ण किमुल्, कृष्ण किमुल् (क) सं.—
कुचला या मसला जाने के बाद की स्थिति ;
संकुचितता, सिकुड़न ।

कृष्ण किमुल्चु [कृष्ण किमुल्चु] (क)
क्रि.—दे. कृष्ण ; झुरी पड़, सिकुड़ ;
—हस्तमर्दन, मसलन ; सिकुड़न ।

कृष्ण किम्मत्तु (क) सं.—कीमत (अरवी) ;
मूल्य, भाव ।

कृष्ण किम्मीर (तद्) सं.—किर्मीर : (तद्) ।
—कृष्ण वैरि (तद्) सं.—भीमसेन ।

कृष्ण किर (सम्) सं.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरण (सम्) सं.—किरण, रश्मि ।

कृष्ण किरय (तद्) सं.—क्रय (तद्) ; मूल्य,
मोल ; बेचना ।

कृष्ण किरमंजि (क ?) सं.—लाल रंग
और काले रंग का मिश्रण ।

कृष्ण किराणि (अ. दे.) सं.—किराना (हिं.) ।

कृष्ण किरात (सम्) सं.—एक पहाड़ी जंगली
जाति, शबर, व्याध ; जंगली, चर्वर ; बामन,

बौना, नाटा आदमी ; साईस, घुड़सवार ।

कृष्ण क (सम्) सं.—शबर जाति का व्यक्ति ।

कृष्ण किराति (सम्) सं.—किरात जाति की
स्त्री ।

कृष्ण किराते (सम्) सं.—कृष्ण.

कृष्ण किराय (अ. दे.) सं.—किराया,
भाड़ा ।

(१) कृष्ण किरि (क)—क्रि.—हजामत कर,
क्षौर कर ; दाँत दिखा, मूर्खता, या पीड़ा से
हँस ।

(२) कृष्ण किरि (सम्) सं.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरिकिरि (अ. दे.) सं.—कृष्ण
किर्किरि — किरकिरी पीड़ा, कष्ट ।

कृष्ण किरिचु (क) क्रि.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरिट (सम्) सं.—मुकुट, ताज,
कलंगी ।—कृष्ण चाप (सम्) सं.—एक
पक्षी विशेष ।

कृष्ण किरिटी (सम्) सं.—मुकुटधारी ;
अर्जुन का नाम ।

कृष्ण किरुटिग (क) सं.—एक प्रकार का
पक्षी जो अपने शिकार को काँटों में बंद कर
देता है ।

कृष्ण किरि (क) सं.—कृष्ण कीरे—साग-भाजी ।

कृष्ण किर, कृष्ण किर (क) क्रि.—ढक, बंद
कर ; रोक ; बाड़ लगा, रक्षित रख ; मौन
रह, चुप रह ; घेर, आवृत कर ।

कृष्ण किर [कृष्ण किर] (क) वि.—छोटा
लघु । कृष्ण किरकुल (क) सं.—पीड़ा,
तंग करना । वि.—छोटा, न्यून, तुच्छ ।

कृष्ण किरकु (क) सं.—एक अनुकरण मूलक
शब्द ; कृष्ण कृष्ण किरकु किरकु—बाँस
के वृक्षों से (हवा के चलने पर) निकलने-
वाली ध्वनि ।

कृष्ण किरचु (क) क्रि. = कृष्ण किरिचु,
कृष्ण किरचु, कृष्ण किर्चु — चीख,
चिल्ला, जोर से पुकार ।

कृष्ण किरचुकि [कृष्ण किरचुकि]

(क) सं.—चिल्लाना, चिल्लाहट, पुकार, चीख ।

कृष्ण किरदु, कृष्ण किरिदु [कृष्ण किरदु,
कृष्ण किरिदु] (क) वि.—छोटा ।

कृष्ण किरव [कृष्ण किरव] (क) सं.—चीता,
तेंदुआ ; लकड़बग्घा ।

कृष्ण किरवु (क) सं.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरि (क) वि.—छोटा, लघु, कम,
न्यून, नीच । कृष्ण किरिकुल (सम्)

सं.—नीच कुल ; नीचजन्मा । कृष्ण गंभी
किरिगंटे (तद्) सं.—छोटी घंटी । कृष्ण

गंभी किरिगणु (क) सं.—छोटी बाँख ।
कृष्ण काल किरिदु काल (सम्) सं.—

कम समय, कुछ देर । कृष्ण दिन किरिदु
दिन (सम्) सं.—कुछ दिन ।

कृष्ण किरकि (क) सं.—दे. कृष्ण. कृष्ण
किरकिजोडु (क) सं.—चरचराहट

उत्पन्न करनेवाले जूते ।

कृष्ण किरिगे (क) सं.—लड़कियों के पहनने
की छोटी साड़ी ; दे. कृष्ण.

कृष्ण किरिचु (क) क्रि.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरिदु (क) वि.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरु (क) वि.—दे. कृष्ण. सं.—एक

अनुकरण मूलक शब्द ; कृष्ण किरु-
गुटिसु (क) सं.—बच्चों की रुला या

उनको चिल्लाने दे । कृष्ण किरुगूसु
(क) सं.—छोटा बच्चा । कृष्ण किरुगुसुतन

(क) सं.—बचपन, शैशव ।
कृष्ण किरुगणे (क) सं.—लहंगा । कृष्ण

गंभी किरुगेजे (क) सं.—किंकणी । कृष्ण
नंभी किरुनेल्लिकायि (क) सं.—छोटा-

आंवला ।

कृष्ण किरुकु (क) क्रि.—खुरच, खुजला ;
छील ।

कृष्ण किरुचु (क) क्रि.—दे. कृष्ण.

कृष्ण किरव (कृष्ण किरव) (क) सं.—दे.
कृष्ण.

कृष्ण किरिने (क) अ.—खड़खड़ाहट के
साथ ; जोर-जोर से ।

कृष्ण किरिगे (क) सं.—दे. कृष्ण.

ಕೆಂಪುಡಿಕೆ ಕಿರುಡಿಕೆ (ಕ) ಸಂ.— ಬಹರಾಪನ ।

ಕೆಎಫ್‌ಡಿ ಕಿಬ್ಬುಡು (ಕ) ಸಂ.- ಬಹರಾಪನ ;

आदमी ।

ಕೆಎಡ್‌ಒತನ ಕಿವುಡುತನ (ಕ) ಸಂ.— ಕೆಎಡ್‌ಕೆ.

ಕಿವುಟಾ ಕಿವುಟ (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಕಿವುಟ.

ಕೆವೆಲ್ಲು ಕಿರುಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಢ.—ಕೆಮುಲ್ಲು.

ॐ श्रीगणेशाय नमः, ॐ श्रीगणेशाय नमः

सं.—बच्चा, नाबालिग : किसी जानवर का

वच्चा ।

८३५०८ किष्किंद (क) सं.—दे. ३५५८.

ॐ किङ्किण्डे (सम्) सं. = किङ्किण्डा—

वाली-सुग्रीव की राजधानी का नाम ।

ॐ किकु (सम्) वि. — दुष्ट, बुरा,

घृणित, तिरस्कार करने योग्य । सं.—

बाह ; बारह अंगुल का माप ।

विष्णु किङ्क (सम्) स.— एक बदर का नाम
विष्णु का नाम 'किङ्किण' नाम पञ्चदश

हस्ता।

ॐ३ किस, ॐ३ किसि, ॐ३ किस (क) वि.—

खुला हुआ, निकाला हुआ, दाँत बाहर

निकाला हुआ, व्यर्थ हांसता हुआ । ३२७०

किसबायि, कसबायि किसवायि (क) सं.—

(व्यर्थ) हंसनेवाला मुख (जो दुबलता का)

चिह्न ह), क्षुद्रमात; काष्ठद्वय काष्ठार चन्द्रमा

— ताम-ताम भूमी गीत गाओगे ते श्रद्धमति

(अनादि) गायक ! (कहः) ।

०३५१ किरकने (क) अ. — बड़ी जोर की

आवाज़ के साथ ; अचानक, सहसा ।

ಕೆಸಮು ಕಿಸಮು (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—(ಕಿಸಮ ಅರಬಿ);

नमूना, जाति, वर्ग, श्रेणी ।

८८७०३३ किसलय (सम्) स.— पल्लव, कामल

पत्ता ।
 सं० निम्नि (२) कि — खोलना निकालना

दांव बाहर दिखाना : बढ़ाना । वि. = ३४

किसु ; ८५८५ नगु किसिकिसि नगु (क)

क्रि.—खिलखिला कर (हंस) ।

ಕೆಳದಿ ಕಿಸಿದು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಖಾಲಿ ; ದಾಂ

बाहर दिखाकर ।

४२० किसु

(१) रैऌ किमु (क) सं.— लाल रंग, अरुणिमा,
तान्न वर्ण । — रैऌ कण्णु (क) सं.—
लाल आंख । — रैऌ कण्णु (क) क्रि.—
आंखों लाल कर, क्रुद्ध हो । — रैऌ कण्णु
कणगिल् (तद्) सं.— लाल कनेर । —
रैऌ कल् (क) सं.— लाल पत्थर, 'लाल'
रत्न । — रैऌ कुल (क) सं.— पीड़ा,
आफत, तकलीफ । — रैऌ होन्नु (तद्)
सं.— अरुण हेम ; पुराना तांबा । — रैऌ
संजे (क) सं.— सूर्यास्त के समय की
अरुणिमा ।

(२) ऊँसु किसु (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; ऊँसुगुडू, किसुगुडू (क) क्रि.— कानाफूसी कर ।

किसुर (क) सं.— बर्दाश्त न करने का भाव, असह्यता, अरुचि, अप्रसन्नता ; घृणा ; कलह, झगडा ; बुरी आंख, बुरी दृष्टि ; हानि, बुराई । क्रि.— असह्य हो, अरुचिकर या अप्रसन्न करनेवाला हो ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. = ३४० किरा—
आंखों का पानी, आंसू ।

ಕೆ.ಎಂ.ಎಸ್. ಕಿಸುರ (ಕ) ಸಂ.— ದೆ. ಕೆ.ಎಂ.ಎಸ್.

ॐ॥ किसे (अ. दे.) सं. — खीसा (हिं.); जेब।
 कस्यलि अयुधनिदु नस्येन्दु अयु
 बसुद ? किसेलि आयुधनिदु नसेयुद
 तिलियबहुदे ? — जेब में आयुध हो तो उसे
 खाने की चीज कैसे समझे ? (कह.) ।

ॐ॒ कि॒स्तु (अ. दे.) सं.— कि॒स्त (अरबी) ;
 ऋण-भाग ।

ठंठंठंठं किलकिला (तद्) सं— किलकिला
(तद्) ; वानरों की किलकारी ।

(क) क्रि.— ध्वनि कर, निनाद कर; घोड़े का हिनहिनाना, (हयघोष); बहुत क्रुद्ध हो।

ँक्ल किल् (क) वि.—नीचे का, नीच, तुच्छ,
 हीन, निम्न, कम, न्यून । — ँक्ल कुट्ट (क)
 सं.— नीचे का ढाँचा या वनावट । —
 ँक्ल कडल् (क) सं.— पश्चिमी समुद्र ।
 — ँक्ल कणे (क) सं.— निम्न श्रेणी का

बाण । — चङ्गी कच्चिग (तद्) सं.—
निग्न श्रेणी का कवि । — क्वथ कवल् (क)
सं. — नीचे की ओर झुकी हुई डाली ।
— ಪಡಿಸು ಪಡಿಸು, ಮಾಡು ಮಾಡು (क)
क्रि.— वशीभूत कर, अधीन कर, जीत । —
ಪಡು ಪಡು (क) क्रि.— वशीभूत हो, (किसी
के) नीचे या वश में हो ।

ಕೆಲಸ ಕಿಲ್ಲು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೇ. ಕರ್ನಾಟ.

ॐ की (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द
 ॐ ॐ की की — पक्षियों का चहचहाना ।
 क्रि.— पीब हो, मवाद हो ।

०१०८८ कोकस (सम्) सं.—हड्डी, अस्थि ।

ॐ१३४ कीचक (सम्) सं. — खोखला
बाँस, पोला बाँस, हवा के चलने पर
सनासनाहट उत्पन्न करनेवाला बाँस ; विराट
राजा का साला और उसका प्रधान सेनापति
जिसे भीमसेन ने मारा था; एक वृक्ष विशेष,
मार्गेण नामक वृक्ष । — ७०३ अंतक,
७०३ आराति (सम्) सं— भीमसेन ।

कीचकिक (क) सं—क्रौंचपक्षी ।

ॐ कीट (सम्) सं.—कीड़ा; जंतुओं का
मल; तिरस्कार सूचक शब्द ।

ॐ१७३८ कीटक (सम्) सं.—कीड़ा ।

ॐॐॐॐॐ कीटकतन (क) सं.—दूसरों को तंग करने, पीडा देने या चिढ़ाने का स्वभाव ।

ૐ૧૭૭ કોટલે (ક) સં.— તંગ કરના, પીડા
 દેના, ચિઢાના, છેઢના ; છેડછાડ ।

ॐ१७७०५३ कीटालय (सम्) सं. — मज्जन
गृह, स्नान-घर, गुस्लखाना ।

ॐ॥ कीदु (क) वि. इतना, थोड़ा । सं—
तिरस्कार, घृणा, असह्यता, अनादर, उपेक्षा ।

ॐ१४३ कीटले (क) सं.=दे. ॐ१४३.

ॐ६ कीडि, ॐ६ कीडे (तद्) सं. — कीटः
(तत्) ।

ॐ६० कीडिकि (क) सं.—दुष्ट या अधम स्त्री ।
ॐ६१ कीण (क) सं.—मात्सर्य, शत्रुता, बैर ;

बदला ; रोष, क्रोध ; स्थिर विचार,
विश्लेषण ; प्रतिरोध, बाधा ।

ॐ३ कीत (क) सं.—पीब, मवाद ।

ॐ७ कीतु (क) सं.—टुकड़ा, भाग, अंश
(फल या मांस का) ।

ॐ कीन (क) सं.—छोटापन, छोटी या न्यून वस्तु ।

ॐ॥७७ कीनाश (सम्) सं.—यमराज ; वानर
विशेष ; सेवक ; बीमारी । वि. — भूमि
जोतनेवाला ; गरीब, दरिद्र ; कंजूस ; थोड़ा,
अल्प ।—७७० नगरी (सम्) सं. — यम-
पुरी ।—७७७ नाश (सम्) शिवजी ।

ॐ१२ कीनि (क) वि.—खुला, बाहर निकाला हुआ ।—बल्लु (क) सं.—व्यर्थ—हँसी के समय दिखनेवाले दाँत ।

ॐ१२० कीनिके (क) सं.—व्यर्थ या मूर्खता
से हँसना ।

ॐॐॐ कीमु, ॐॐ कीवु (क) सं. — पीब,
मवाद ।

(१) ठंठ कीर (क) सं.—नकुल, न्योला ।

(२) कै० कीर (सम्) सं — तोता, शुक्र, सुग्गा; मांस; (तद्) सं. क्षीर (तत्); दूध । — कै० कीरार, कै० कीलार (तद्) सं. — क्षीरागार (तत्) ।

ॐ कीरु (अ. दे.) सं.—खीर (हिं.) ।

ॐ१० कीरे (क) सं.—साग-भाजी ।

ॐ९७७ कीरू (क) क्रि.—दुःख या पीड़ा से चिल्ला; चीख, कराह; क्रोध कर, लाल-पीला हो, आँखों से अंगारा उगल; रगड़कर निकाल, मिटा; [रगड़कर चमका, पालिश कर]; नौच, खुरच ।

ॐ८८८ कीर्ण (सम्) वि. — फैला हुआ,
विखरा हुआ, फेंका हुआ ; ढका हुआ, भरा
हुआ ।

ॐॐॐ कीर्तन (सम्) सं. — कहना, वर्णन करना, वर्णन, कथन, पाठ ; कीर्ति, महिमा ; भगवान् की महिमा का वर्णन करनेवाले गीत या पद ।

०१७८ कीर्ति (सम्) सं.— प्रसिद्धि, प्रख्याति,
यशः ; प्रशंसा, सराहना ; प्रकाश, कान्ति,
आभा ; आवाज, भाषण ।

ॐॐॐ कीर्ति (सम्) वि.—प्रशंसा किया हुआ, प्रशंसित ; वर्णित ।
 ॐॐॐॐ कीर्तिवत, ॐॐॐॐ (सम्) वि.—यश या कीर्ति पाया हुआ कीर्तिमान् ।
 ॐॐॐॐ कीर्तिसु (सम्) क्रि.—वर्णन कर, गान कर, प्रशंसा कर ।
 ॐॐॐॐ कीर्त्य (सम्) वि.—फैला हुआ, फैलाने योग्य ।
 ॐॐॐ कील, ॐॐॐ कीलि; ॐॐॐ कीलु (तद्) सं.—कीलः (तत्) ।
 ॐॐॐ कील (सम्) सं.—कील, पिन, खूँटी, सेख, बर्छी; खंवा. स्तूप, खूटा; आग, ज्वाला; पर्वत, पहाड़; लाख, लाक्षा ।
 ॐॐॐ कीलक (सम्) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कीलाल (सम्) खून, रक्त; पानी; लाल रंग, लालिमा; जानवर, पशु; ज्वाला; अमृत के समान पेय पदार्थ, शहद, मधु ।
 ॐॐॐ कीलि (तद्) सं.—कील; ताला; घड़ी । बहुत महीन बाल या कमानी ।
 ॐॐॐ कीलिके (सम्) सं.—कीलिका, धुरी की कील ।
 ॐॐॐ कीलिमु (सम्) क्रि.—कील लगाना, ठोकना, लगाना, जोड़ना, स्थिर या दृढ़ करना ।
 ॐॐॐ कीलु (तद्) सं.—दे. ॐॐॐ; लकड़ी की चूल (जो छेद में बैठाई जाती है), जोड़ा, मिलाव, कपट-मोजना, आविष्कार, उपाय, रहस्य साधन. रहस्य; ताली, चाभी. कुंजी, कुंड़ी । — ॐॐॐ बोंबे (सम्) सं.—चाभी देने पर घूमने या नाचनेवाली गुड़िया ।
 ॐॐॐ कीलुक (तद्) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कीले (सम्) सं.—ज्वाला, लौ ।
 ॐॐॐ कीव, ॐॐॐ कीवु (क) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कीश (सम्) सं.—वानर, बंदर ।
 ॐॐॐ कीसर (क) सं.—जोर से बोलने, चिल्लाने, रोने आदि का शोर, शोर-गुल, हल्ला ।
 ॐॐॐ कीमु (क) क्रि.—खिंच, खिंचा जा, कर्षित हो; खिंचवा, कर्षण करा; खींच;

पतला कर; कृश कर, रगड़कर चमकाना, रगड़ । सं.—रगड़कर चमकाना या पालिश करना; कानों में पहनने का ताड़ के पत्ते के आभरण, कर्णपत्र ।
 ॐॐॐ कीसुलि (क) सं.—रगड़कर चमकाने-वाला आयुध, रुखानी, छेनी ।
 ॐॐॐ कील, ॐॐॐ कीलु (क) सं.—नीच या हेय पदार्थ या व्यक्ति; बछड़. गाय का बच्चा बरामदा । क्रि.—तोड़ (फल आदि); निकाल खींच ले, लूट ।
 ॐॐॐ कीलिल (क) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कील (क) सं.—दे. ॐॐॐ; लगाम, घोड़े के मुँह का लोहा । क्रि.—(फल आदि) तोड़, खींच ले, (बाहर) निकाल, उलटा; लूट ।
 ॐॐॐ कील (क) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कीलतन, ॐॐॐ कीलतन ॐॐॐ कीलतन, ॐॐॐ कीलतन (क) सं.—नीचता, तुच्छता, नीचे होना क्षुद्रता ।
 ॐॐॐ कीलिसु (ॐॐॐ कीलिसु) (क) क्रि.—(फल आदि) तुड़वा, निकलवा, खिंचवा (प्रे.) ।
 ॐॐॐ कीलु (क) क्रि.—दे. ॐॐॐ. सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐ कु (सम्) अ.—हास, खराबी, कमी, पाप, धिक्कार, घिसावट, स्वल्पता आदि का बोधक अव्यय ।
 ॐ कु, ॐ कुं (क) प्र.—अन्य पुरुष ए. व. और ब. व. (सभी काल और लिंगों में) सूचक प्रत्यय; उदा.—ॐकु, अकु, ॐकु० अकु—होता है, ॐकु हकु—है ।
 ॐॐॐ कुंकुम (सम्) सं.—ॐॐॐ कुंकुव (तद्)—कुंकुम; केसर, जाफ़ान । — ॐॐॐ केसरि (सम्) सं.—केसर का फूल ।
 ॐॐॐ कुंकुमांक (सम्) वि.—कुंकुमक से लिप्त, कुंकुम लगाया हुआ ।
 ॐॐॐ कुंके [ॐॐॐ गोंके] (क) सं.—गर्दन का पिछला भाग; कंधा ।

ॐॐॐ कुंग (क) सं.—मछुआ ।
 ॐॐॐ कुंग (क) सं.—मौन, चुप्पी, खामोशी क्रि.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कुंच (तद्) सं.—कूचः (तत्) — गुच्छा (गाँठ, ग्रंथि), समूह; कोंछ; झब्बा, फुदन; कूँची; पंखा. चामर, चँवर ।
 ॐॐॐ कुंचक (सम्) वि.—झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र ।
 ॐॐॐ कुंचटिग ॐॐॐ कुंचिग (क) सं.—शूद्रों की एक उपजाति जो प्रायः अरहर की दाल का व्यापार करते हैं ।
 ॐॐॐ कुंचडिंग (क) सं.—दे. ॐॐॐ.
 ॐॐॐ कुंचवडिंग (अ. दे.) सं.—कूचा से मखियों को भगानेवाला आदमी ।
 ॐॐॐ कुंचि, ॐॐॐ कुंचिगे ॐॐॐ कुंचिगे (क) सं.—अंगरखा, बच्चों की टोपी ।
 ॐॐॐ कुंचिके, [ॐॐॐ कुंचिका] (सम्) सं.—ताली, कुंजी, चाभी ।
 ॐॐॐ कुंचिगे (तद्) सं.—कूचिका (तत्) चित्र लिखने की कूँची या पेंसिल, तूलिका ।
 ॐॐॐ कुंचित (सम्) वि.—झुका हुआ, टेढ़ा, वक्र । — ॐॐॐ अंगुलि (सम्) सं.—झुकी हुई या टेढ़ी उंगली ।
 ॐॐॐ कुंचु, ॐॐॐ कुंगु, ॐॐॐ कुंगु, ॐॐॐ कुंगु (क) क्रि.—डूब, झुक, नीचे हो, दब, कम हो, न्यून हो; रुढ़ हो, अवरुद्ध हो, रुंध जा (जैसे कंठ की ध्वनि) । ॐॐॐ कुंचदव (क) सं.—वह आदमी जो किसी के सामने नहीं झुकता, निर्भीक पुरुष ।
 ॐॐॐ कुंज (सम्) सं.—लतागृह, लतामंडप; जवड़ा; हाथी के दाँत ।
 ॐॐॐ कुंजर (सम्) सं.—हाथी; श्रेष्ठार्थ वाचक; गजासुर नामक राक्षस । — ॐॐॐ कर (सम्) सं.—हाथी की सूड़ ।
 ॐॐॐ कुंजरारि (सम्) सं.—सिंह; शेर; शरभ; शिवजी ।

क०६३ कुटु (क) क्रि. — लंगड़ा कर चल,

जन्मकुण्डली । — ८१३ दीक्षित (सम्)
सं—वह मनुष्य जो याग या यज्ञ करने के

ऊँ०ड० कुंतल (सम्) सं—सिर के बाल ;
बालों का एक प्रकार का अलंकार ; देश

ಕುಂಭೀರ ಕುಂಭೀರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮಗರ, ನಕ್ರ ।
 ಕುಂಭೋದಯ ಕುಂಭೋದಯ, ಕುಂಭೋದ್ಭವ ಕುಂಭೋದ್ಭವ
 (ಸಮ್) ಸಂ.—ದೇ. ಕುಂಭಜ.

क००००० कुंयि (क) सं. = क०००० कुयि, क००००००
कोयि—मारने पर कुत्ते के मुँह से निकलने-
वाली ध्वनि ।

क००००० कुकभ (सम्) सं. — एक प्रकार की
मदिरा ।

क००००० कुकर (सम्) सं.—बुरा या टेढ़ा हाथ ।

क००००० कुकवि (सम्) सं.—बुरा कवि ।

क००००० कुकाल (सम्) सं.—बुरा समय या
मौसम ।

क००००० कुकिल् (क) क्रि. — कोयल के जैसे
बोल ; कोयल की कूक । सं.—कोयल ।

क००००० कुकिल (क) सं.—पक्षी विशेष ।

क००००० कुकिलु (क) सं.—कोयल ।

क००००० कुकुंदर (सम्) सं.—जवन कूप ।

क००००० कुकूल (सम्)—सं. भूमी, चोकर ;
चोकर की आग ; सुराख, छेद, गड्ढा,
गर्त ; डालुवा भूमि ; सानु । वि.—उत्कृष्ट,
अच्छा, श्रेष्ठ ।

क००००० कुकुटि (क) सं. — कांटेदार पूँछवाली
एक चिड़िया, कलिंग नामक पक्षी ।

क००००० कुकुडि (सम्?) सं.— निकालकर
लपेटे गये धागे का एक परिमाण विशेष ।

क००००० कुकुरिसु (क) क्रि.— (किसी चीज
को) तीव्र गति या जोर से रख ; नष्ट या
खराब कर (लाक्ष.) ; भूमि में सटकर बैठ,
पालथी लगाकर बैठ ।

क००००० कुकि (क) सं.— गायों का मुख-बंधन;
टोकरी (वाँस की) ।

क००००० कुकिसु (क) क्रि.— धुला, साफ़ करा;
चोंच मारने दे, पलक मारने दे, दबा,
शक्ति लगवा (लाक्ष.) ; टीका लगा ;
चौंधा ; हिलवा ।

क००००० कुकु (क) क्रि.— चंचुघात कर, चोंच
मार ; डेढ़ मार (चुभने के जैसे)
चुभ, छेद कर ; मिट्टी को कुदाली से खोद;
दबा, शक्ति लगा ; जल्दी-जल्दी खोल
और बंद कर, पलक मार ; चौंध ; धीरे-
धीरे कपड़े को (धोते समय) पीट ; हिला,
डुला । सं.— सारस, बगुला ।

क००००० कुकुट (सम्) सं.— मुर्गा ।

क००००० कुकुटासन (सम्) सं.— मुर्गी के
आकार जैसा एक योगासन ।

क००००० कुकुटि (सम्) सं.— मुर्गी ; दंभ,
माया ।

क००००० कुकुभ (सम्) सं.— जंगली मुर्गा ।

क००००० कुकुर (सम्) सं.— कुत्ता ; एक
सुगंध द्रव्य ; एक देश विशेष का नाम ।

क००००० कुकुरिसु (क) क्रि.— (भय से)
सिकुड़, ठिठक, लाचारी सूचित करने के
लिए कंधे सिकोड़ ; गिर पड़, ऐसा गिर कि
कुचल जा, चूर-चूर हो या नष्ट हो जा ;
जमीन पर पटक ।

क००००० कुक्कुल (क) सं.— अधिक पीड़ा या
संकट । क००००० कुदियिषु (क) क्रि.—
अधिक पीड़ा दे या सता ।

क००००० कुक्के (क) सं.— क०००—टोकरी ।

क००००० कुक्षि (सम्) सं.—पेट, गर्भाशय । —
क (सम्) सं.—एक पक्षी का नाम ।

क००००० कुम्माटे (क) सं.— क०००० कूगटे —
शिककाई का वृक्ष (Soap nut tree) ।

क००००० कुगिसु, क००००० कुगिसु, क०००००
कुगिसु, (क) क्रि.—कम कर, नीचे कर,
घटा, छोटा कर, न्यून कर, (आवाज़) बंद
करा या रोक ।

क००००० कुगु (क) क्रि.— क०००० कुंगु, क००००
कुंगु, क०००० कुंगु—दे. क००००.

क००००० कुग्रह (सम्) सं.—अशुभ या बुरा
ग्रह ।

क००००० कुग्राम (सम्) सं.— बुरा गांव ;
छोटा गांव ।

क००००० कुच (सम्) सं.—स्तन, स्तन का अग्र-
भाग, चूचुक । — अग्र अग्र, न्यून मुख
(सम्) सं.—चूचुक ।

क००००० कुचंदन (सम्) सं.—लाल चंदन ।

क००००० कुचर (सम्) वि.— धीरे-धीरे जानेवाला,
बुरा व्यवहार करनेवाला ; दुष्ट, अधम ;
दोष निकालनेवाला, निंदा करनेवाला ।

क००००० कुचाळि (सम्?) सं.—बुरी चाल,
कुचाल ; उपहास (करना), खिल्ली (उड़ाना);
बुरा व्यवहार करनेवाला पुरुष ।

क००००० कुचित्त (सम्) सं.—बुरा मन, बुरा
विचार ; बुरे विचारवाला मनुष्य ।

क००००० कुचु (क) सं.— एक अनुकरणमूलक
शब्द ; क०००० कचु कुचु—पिस-पिस
या फुसफुस ।

क००००० कुचेल (सम्) सं.—बुरा वस्त्र, फटे
पुराने वस्त्र, ऐसे वस्त्रधारी ; सुदाम का
नाम ।

क००००० कुचेष्टक (सम्) सं.— बुरा कार्य
या व्यवहार करनेवाला ।

क००००० कुचेष्टे (सम्) सं.—बुरी क्रिया या
योजना, (नटखटी, होहल्ला करना आदि) ।

क००००० कुचोद्य (सम्) सं.— छेड़छाड़,
उपहास करना, किसी का अनुकरण कर
हँसना, मज़ाक करना ; बुरा विचार, बुरा
व्यवहार ।—क००० गार (क००० गार) सं.—
उपहास करनेवाला, मज़ाकिया ।

क००००० कुच (क) सं.—विलकुल (पूर्ण रूप से)
अंधा ।

क००००० कुचित्त (तद्) वि.—कुतिसत (तत्) ।
(१) कुचु (क) क्रि.— क०००० कुदसु, क००००
कुदिसु — उबाल सं.— एक प्रकार की
मछली ।

(२) क०००० कुचु (तद्) सं.—क०००० कुंच,
क०००० कुचु — [कृचः (तत्)] — दे.
क००००.

क००००० कुज(सम्) सं.—वृक्ष, पौधा ; मंगलग्रह ;
किरात, पुलिंदक, बुरी चीज ; बुरी बुद्धि
या मन ।

क००००० कुजन (सम्) सं.—बुरा व्यक्ति, बुरे
लोग ।—उ० ते (सम्) सं.—बुराई, नीचता ।

क००००० कुजवार (सम्) सं.—मंगलवार ।

क००००० कुजात (सम्) सं.—वृक्ष ; मंगलग्रह ;
स्यंदन या तिनिश का पेड़ ।

क००००० कुजे (सम्) सं.—नीच या अधम स्त्री ।

क००००० कुजे (क) सं.—कच्चा कटहल ।

- (१) कंठ कुट (क) वि.— (कंठ कुट = कूट, मार) — मारनेवाला, (डंक मारनेवाला), कूटनेवाला ।
- (२) कंठ कुट (सम्) सं. = कंठ कूट, कंठ कूट (तत्) — जलपात्र, गागरी, घड़ा, कलसा ।
- (१) कंठ कुटक (क) सं. — मारनेवाला, कूटनेवाला, तोड़नेवाला (जैसे कंठ कुटक कलकुटिक — पत्थर तोड़नेवाला); देनेवाला, दाता; पीनेवाला ।
- (२) कंठ कुटक (सम्) सं. — हल जिसमें बांस न लगा हों ।
- कंठ कुटकु, कंठ कुलकु (क) क्रि. — ठूस, मुँह तक भर, (थैली आदि में) हिला-हिला कर भर ।
- कंठ कुटग (क) सं. — दे. कंठ (१).
- कंठ कुटक (सम्) सं. — छत; झोंपड़ी ।
- कंठ कुटज, कंठ कुटजक (सम्) सं. — दवाई में उपयोगी एक वृक्ष विशेष (Wrightia antidysenterica) ।
- कंठ कुटनट (सम्) सं. — सरो का वृक्ष; लवंग, लौंग ।
- कंठ कुटर (सम्?) सं. — डेरा, तंबू ।
- कंठ कुटायिसु, कंठ कुटायिसु (क?) क्रि. — मिला, कलखुल के सहारे मिला ।
- कंठ कुटि (सम्) सं. — मोड़, झुकाव; झोंपड़ी, घर; एक प्रकार का वर्तन; नथ, नथनी; फूलों का गुच्छा ।
- कंठ कुटिक (क) सं. — दे. कंठ (१)
- कंठ कुटिके, कंठ कुटिके (क) सं. — मारनेवाला, (पीड़ा देनेवाला), स्पंदित करनेवाला ।
- कंठ कुटिग (क) सं. — दाता, देनेवाला ।
- कंठ कुटिल (सम्) वि. — टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा, घूसा हुआ, घुमाव का; बनावटी; कपटी; झूठा, बेईमान; दुःखदायी, पीड़ाकारक । — गार्ति (सम्), सं. — झूठी या बेईमान स्त्री ।

- डन तन, डे ते (सम्) सं. — कुटिलता, वक्रता, बेईमानी । — ड, त्व (सम्) = कंठ डन.
- कंठ कुटिलंग (सम्) सं. — झूठा या बेईमानी के साधन ।
- कंठ कुटिले (सम्) सं. = कंठ कुटिल (दे. कंठ).
- कंठ कुटीर (सम्) सं. — छोटा घर, कुटिया, झोंपड़ी, कुटी ।
- कंठ कुटु (क) सं. — एक अनुकरणमूलक ध्वनि; कंठ कुटु कुटु — चूहे का अनाज खाते समय निकलनेवाली ध्वनि ।
- कंठ कुटुक (क) सं. — दे. कंठ (१) — कंठ कुटुकु (क) क्रि. — निगल, जल्दी से निगल, गट गट निगल ।
- कंठ कुटुकु (क) क्रि. — काट, डंक मार (बिच्छू का डंक मारना) । सं. — घूट; टुकड़ा, कौर, ग्रास ।
- कंठ कुटुंगक, कंठ कुटुंगक (सम्) सं. — लताओं से बनाया गया मंडप, छत, पंडाल, झोंपड़ी, मढ़ैया ।
- कंठ कुटुंब (सम्) सं. — कुटुम्ब, परिवार, परिवार के जन; गृहिणी, गृहस्वामिनी, पत्नी । — कंठ कुटुंब (सम्) सं. — परिवार का पालन-पोषण करने वाला । — कंठ कुटुंब (सम्) सं. — बाल-बच्चों वाला पुरुष ।
- कंठ कुटुंबि (सम्) सं. — घर का स्वामी, गृहस्वामी; वह जो देख भाल करे; किसी कुटुंब का एक व्यक्ति ।
- कंठ कुटुंबिनी, कंठ कुटुंबिनी (सम्) सं. — गृहिणी, घर के स्वामी की पत्नी; स्त्री ।
- कंठ कुट (सम्) क्रि. — (समासांत में) — काटना, चूर्ण करना, पीसना ।
- कंठ कुटक (सम्) सं. — पीसनेवाला, कूटनेवाला ।
- कंठ कुटग (क) सं. — दे. कंठ.
- कंठ कुटण (क) सं. — ओखली, किसी धातु की बनी छोटी ओखली जो पान-सुपारी कूटने के काम में आवे । कंठ कुटणद अक्कि — (हाथ से) कूटा चावल ।

- (१) कंठ कुटणि (क) सं. — दे. कंठ.
- (२) कंठ कुटणि (तद्) सं. — दे. कंठ.
- कंठ कुटहारिके, [कंठ कुटहारि] (सम्) सं. — नौकरानी ।
- (१) कंठ कुटिके, कंठ कुटुविके (क) सं. — कूटने या चूर्ण करने की क्रिया ।
- (२) कंठ कुटिके (सम्) सं. — बैलों का झुण्ड ।
- कंठ कुटिग (क) सं. — एक प्रकार का खेल ।
- कंठ कुटिचात (क) सं. — वनदेवता; भूत, पिशाच । — कंठ कुटिचात (क) सं. — जादू करने की विद्या ।
- कंठ कुटित (सम्) वि. — कटा हुआ, पीसा या चूर्ण किया हुआ; समतल किया हुआ ।
- कंठ कुटिति (सम्) सं. — दे. कंठ.
- कंठ कुटिम (सम्) सं. — पलस्तर लगाया और चिकना फर्श ।
- कंठ कुटिसु (क) क्रि. — कूटा, चूर्ण कर, ताड़न कर, पुड़िया करा (प्रे.) ।
- कंठ कुट (क) क्रि. — कूटा, चूर्ण कर, पुड़िया कर : चोट कर, आघात कर; फेंक, (तीर चला); छेद, चुभ; डंक मार, पीड़ा दे; (समासांत में) कह, बोल; कर (कंठ कुटिगुटु — अस्पष्ट रूप से बोल, कंठ कुटिगुटु — (रोष के मारे) सांप के जैसे 'बुस्-बुस्' कर । सं. — मार, ताड़न, डंक; मल के अबरोध (कंठ) के कारण होनेवाला पेट का दर्द; बुकन, बुकनी ।
- कंठ कुटुविके, कंठ कुटुह (क) सं. — दे. कंठ (१).
- कंठ कुट्टे (क) सं. — कीड़ों के लगने से उत्पन्न वृक्ष की बुकनी ।
- कंठ कुटण, कंठ कुटिण (क) सं. — दे. कंठ.
- कंठ कुटमल (तद्) सं. — कुडमलः (तद्) कली, नयी कली ।
- कंठ कुटमल्य (तद्) सं. — दे. कंठ.

क०६३७ कुट्टर, क०६३७ गुट्टु (क) सं.—गुटक
(कनूतर का गुटकना) ।

क०६३७ कुट (सम्) सं.—वृक्ष, पेड़ ।

क०६३७ कुट्टर [क०६३७ कुट्टर, क०६३७ कुटक] (सम्)
सं.—खंभा जिसमें मथानी की रस्सी
लपेटी जाय ।

क०६३७ कुशकु (तद्) सं.—काष्ठकूट (तद्)
कटफोड़वा ; एक पक्षी ।

क०६३७ कुठार (सम्) सं.—परशु, कुल्हाड़ी ।

क०६३७ कुठारक (सम्) सं.—कुल्हाड़ी ;
परशुराम ।

क०६३७ कुठारि (सम्) सं.—कुल्हाड़ी ; कुल्हाड़ी
धारण करनेवाला, प्रधान द्वारपाल ।

क०६३७ कुठारु (सम्) सं.—वृक्ष, पेड़ ;
बंदर ।

क०६३७ कुड (क) क्रि. रू.—दे ; नहीं देता ; नहीं
देगा । सं.—खुरचने का (लोहे का)
औजार ; लोहे की छड़ी जैसा रोलर जो
कपास के बीज को निकालने में काम आता
है ; दागने की क्रिया में उपयोगी लोहा ;
(लाख से) सुहर लगाने की लोहे की छड़ी ।

क०६३७ कुडक, क०६३७ कुडिक (क) सं.—शराबी,
मद्यप, पियकड ।

क०६३७ कुडत, क०६३७ कुडित (क) सं.—पीना ;
घूंट ।

क०६३७ कुडतर्गनयडिळ (क) सं.—
मल्लिका की एक जाति ।

क०६३७ कुडता, क०६३७ कुडति, क०६३७ कुड्ता
(अ. दे.) सं.—('कुर्ती' से ?) —चोली,
जाकट ।

क०६३७ कुडते ; क०६३७ कुडिते, क०६३७ कुडुते
(क) सं.—हथेली, जुड़ी दोनों हथेलियां,
अंजलि ।

क०६३७ कुडलु, क०६३७ कुडलु, क०६३७ कुडलु
कुडगोलु (क) सं.—छोटी तलवार जो
लकड़ी आदि काटने के काम में आवे ।

(१) क०६३७ कुडि (क) सं.—क०६३७ कुडि. दे.
क०६३७.

क०६३७ कुडि (क) क्रि.—पी, पान कर ; सांस
खींच । वि.—पीने का, पीने योग्य ; क०६३७

क०६३७ कुडिनीरु—पीने का पानी । सं.—
नौक, अग्र, लता का अग्रभाग, बांस का
अग्र भाग, (दिये की) बत्ती का सिर या
अग्र, ज्वाला का ऊपरी भाग ; चोटी, शृंग ;
ध्वज, पताका ; घर ; गृहस्थी ; रहनेवाला
निवासी ; नागरिक ; काश्तकार ; क०६३७
कुडिय (क) सं.—शूद्र, किसान ।

क०६३७ कुडिक (क) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडिके (क) सं.—मिट्टी का छोटा
वर्तन जिसमें तेल, घी आदि रखे जाते हैं
(क०६३७ कुडिके सुणद कुडिके—चूना रखने
का मिट्टी का वर्तन) ; (मिट्टी), लकड़ी या
धातु के अत्यंत छोटे-छोटे वर्तन-भाण्ड
जिन्हें रखकर छोटी लड़कियां खेला करती
हैं। क०६३७ कुडिके अन्नुनवन्नं क०६३७ दण
सालदु क०६३७ कुडिके तिननुवनिगे कुडिके हण
सालदु—जो यों ही बैठकर खाता रहता है
(अर्थात् बेकार बैठा रहता है), उसको
मिट्टी के वर्तन में रखा (जमा किया हुआ)
धन पर्याप्त नहीं होता (कह.) ।

क०६३७ कुडिगु, क०६३७ कुडिनु (क) सं.—
हल का एक भाग, कर्णी ।

क०६३७ कुडित (क) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडिते, क०६३७ कुडुते (क) सं.—दे.
क०६३७.

क०६३७ कुडिन (क) सं.—हल जिस में बांस न
लगा हो, निरीश, हल का फाल ।

क०६३७ कुडिय (क) सं.—शूद्र, किसान ।

क०६३७ कुडियुकि (क) सं.—पीना, पान
करना ।

क०६३७ कुडिलु (क) सं.—पल्लव, किसलय ।

क०६३७ कुडिसु (क) क्रि.—पिला, पान करा ;
दिला (प्र.) ; झुक, टेढ़ा या वक्र हो (अक्.
क्रि.) ।

क०६३७ कुडु (क) क्रि.—दे, प्रदान कर, दान
कर ; बजा, (ताड़न कर । सं.—झुके रहने,
टेढ़ा होने की स्थिति, वक्रता ; असमता,
टेढ़ा-मेढ़ा होना) । वि.—पीने का ; क०६३७
कुडु नीरु—पीने का पानी ।

क०६३७ कुडुकु (क) क्रि.—क०६३७ कुकुकु—

चंचुघात कर, चोंच मार ; धीरे-धीरे कपड़े
को पीट या साफ़ कर । सं.—अनाज आदि
द्रव्य ।

क०६३७ कुडुंगक (तद्) सं.—दे. क०६३७ कुडुंगक.

क०६३७ कुडुते (क) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडुतु (क) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडुपु, क०६३७ कुडुतु (क) सं.—

ढोल, नगाड़ा आदि बजाने की लकड़ी या
छड़ी, सारंगी का कमान ; कपास को साफ़
करने का एक साधन ।

क०६३७ कुडु (क) सं.—क०६३७ कुडु — अंधा
(व्या. भा.) ।

क०६३७ कुडिड (क) सं.—अंधी स्त्री (क०६३७
कुडिडि) ।

क०६३७ कुडु (क) सं.—क०६३७ कुडु—अंधता ।

क०६३७ कुडुता (अ. दे.) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडुमल (सम्) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुडुय (सम्) सं.—दीवाल, दीवार ।
—विशेष विशेष (सम्) सं.—एक प्रकार
की दीवार ।

क०६३७ कुडुलु (क) सं.—दे. क०६३७.

क०६३७ कुणत, क०६३७ कुणित (क) सं.—नाचना,
नाच, नृत्य ।

क०६३७ कुणप (सम्) सं.—शव, लाश ।

क०६३७ कुणव (क) सं.—एक पौधा (Ama-
rantus oleraceus) ।

क०६३७ कुणि (क) सं.—टुकड़ा, अंश ; चिथड़ा,
लत्ता ; कपड़ा ; छेद, गड्ढा, गर्त । क्रि.—
नाच, नृत्य कर, नर्तन कर । क०६३७ कुणित
कुणिकुणिदाडु (क) क्रि.—नाच नाच ; क०६३७
कुणितकुणिकु (क) सं.—नाचने की-सी
चाल ; कुदान, छलांग ।

क०६३७ कुणिक (सम्) सं.—वह जिसके हाथ-
पैर कट गये हों या सूख गये हों ।

क०६३७ कुणिके (क) सं.—छेद, बिल, खोह ;
पोला होना, खोखलापन ; फंदा ; दरार ;
चक्र, घेरा ; कड़ी, संधि, मेल, गांठ,
अंगली ; कोना, कोण, कोया ।

क०६३७ कुणित (क) सं.—दे. क०६३७.

गड्ढा, नदी की पार्श्व भूमि ; नदी का द्वीप ; नदी ।

ಕುದರೆ ಕುದರೆ (ಕ) ಸಂ.—ಘೋಡಾ, ಆಶ್ವ ।

ಕೃದರ್ಶನ (ಸಮ) ಸಂ.—ಬುರಾ ದರ್ಶನ ;
ಬುರಾ ದೃಶ್ಯ ।

ಕುದುಸಲ್ ಕುದಸಲ್ (ಕ) ಸಂ.—ಢೆ. ಕುದಕಲ್.
ಕುದಸು ಕುದಸು, ಕುದಿಯಿಸು ಕುದಿಯಿಸು, ಕುದಿಸು

कुदिसु (क) क्रि.—उबाल; पका; झौटा।
 क० कुदि (क) क्रि.=उबल, झौटा; जल,

हृदय में जलन या पीड़ा हो, दग्ध हो, मन-
स्ताप हो । सं.—उबाल, उफान ; जलन,

ଶିଖା, ଦୁଃଖ ।
 ଶାନ୍ତି କୁଦିଗେ (କ) ସଂ.—ଶାନ୍ତି (ସଂ) ।

ಕೌದಿಯಿಸು ಕುದಿಯಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ದೆ, ಕೌದಿಸು,
ಕೌದಿರ್ ಕುದಿರ್ (ಕ) ಸಂ.—ಧಾನ್ಯಕೊಷಕ, ಧಾನ್

(या अनाज) रखने की बांस की बड़ी
टोकरी या मिट्टी के भाण्ड ।

ಕುಡುರೆ (ಕ) ಸಂ.—೩. ಕುಡುರೆ.
ಕುಡುರೆ (ಕ) ಸಂ.—೩. ಕುಡುರೆ.
ಕುಡುರೆ (ಕ) ಸಂ.—೩. ಕುಡುರೆ.

ಕುದಿಹ (ಕ) ಸಂ— ಉಬಾಲನಾ, ಉಬಾಲ,
ಉಪಾನ |

कदमक कुदुकु (क) क्रि. = कलक कुलुक-
दलकी चल, इतराते हणु चल. ठमक कर

चल, तेज़ चल, । सं.—दुलकी, (घोड़े की)
दुलकी चाल, ठमक ।

ಕುದುಪಲ್ ಕುದುಪಲ್ (ಕ) ಸಂ.—ಢೆ, ಕುಡಕಲ್.
ಕುದುಲ್ ಕುದುಲ್ (ಕ) ಸಂ.—ದೀವಾಲ್, ದೀವಾರ ।

कन्दुरु कुदुरु (क)क्रि.—चंगा हो, स्वस्थ हो,
समथ जा ; स्थिर हो, ठीक हो. व्यवस्थित

हो; ठीक तरह से लग, एकीकरण हो,
मिल; हाथ लग, अच्छा हो, सुधारित हो,

(किसी के) उपयुक्त ; चुप हो, शांत हो ;
दृढ़ हो, लगे रह ; अभिवृद्ध हो, बढ़, विक-

सित हो, सफल हो । सं.—स्थिरता, ठीक होना, सुझौलपन, अवयवों की संगति,

स्वस्थता, स्वास्थ्य, सुदृढता, स्वास्थ्य में
सुधार; पौधों की क्यारी (मेड़); हाल;
... (आज का दिन)

कामना ; आश्चर्य, कौतुक ।
 कुत्कील (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।

॥ कुत्त. (क) सं.—दापि, अपराध, कसूर ;

क०म०क० कुदुरे

बाहर न विकीर्ण हो, इस उद्देश्य से इसको, ओखली पर रखा जाता है); घड़े के नीचे रखा जानेवाला चक्राकार पदार्थ (इसके रहने से घड़ा लुढ़क नहीं जाता); दे. क०म०क०.

क०म०क० कुदुरे (क) सं. — दे. क०म०क०; बंदूक का घोड़ा, अंतरंग के खेल में 'बज़ीर'

क०म०क० कुदुरेगार (क) सं. — घोड़ा रखने-वाला, वह जिसके पास घोड़ा हो, अश्व-पालक ।

क०म०क० कुदुरेगाव (क) सं. — घोड़े की देखभाल करनेवाला, अश्व-रक्षक ।

क०म०क० कुदुष्टि (सम्) सं. — घुरी दृष्टि; निर्धल या कमजोर दृष्टि ।

क०म०क० कुद्रे (क) सं. — श्रृंखला; वेड़ी, बंधन ।

क०म०क० कुद्वार, क०म०क० कुद्वाल (सम्) सं. — ग०म०क० गुदलि (तद्) — कुदाली; फावड़ा; कचनार का वृक्ष, कांचन वृक्ष ।

क०म०क० कुद्रि (क) सं. — दे. क०म०क०.

क०म०क० कुधर, क०म०क० कुध्र (सम्) सं. — भूधर, पर्वत, पहाड़ ।

क०म०क० कुनक (सम्) सं. — कौभा ।

क०म०क० कुनटि (सम्) सं. — लाल संखिया या विष ।

क०म०क० कनसु (अ. दे.) सं. — खुनस (हिं); — विद्वेष, गहरी शत्रुता या डाह ।

क०म०क० कुनासक (सम्) सं. — एक कांटेदार पौधा (Alhagi maurorum Tournef).

क०म०क० कुनि (क) क्रि. — झुक, शरीर को आगे झुका; नवा, नमस्कार कर; अंग सिकोड़ । सं. — टेढ़ी या वक्र भूमि ।

क०म०क० कुनिकल् (क) सं. — बोरा, धैला, धैली ।

क०म०क० कुनिष्ट (क) सं. — क०म०क० कोनष्टे — वक्रता, टेढ़ापन; हठ, दुष्टता, घटता, अविनय । (तद् ?) सं. — विलकुल छोटा या क्षुद्र पदार्थ या व्यक्ति ।

क०म०क० कुनिसु (क) क्रि. — दिक कर, कष्ट दे, पीड़ा दे ।

क०म०क० कुनुगु (क) क्रि. — झुक, सिकुड़, सकुचित हो; विनम्र हो ।

क०म०क० कुन्न (क) सं. — जुआं (चीलर) ।

क०म०क० कुन्नि (क) सं. — पशुओं का बच्चा — विशेषकर कुत्ते का बच्चा, पिल्ला; कुत्ता; नीच या हेय बुद्धिवाला पुरुष ।

क०म०क० कुन्ने (क) सं. — क०म०क०.

क०म०क० कुपति (सम्) सं. — पृथ्वीपति, राजा ।

क०म०क० कुपय (सम्) सं. — बुरा रास्ता; बुरा चरित्र, घृणा करने योग्य स्वभाव ।

क०म०क० कुपरि (सम्) सं. — बुरा विधान, रीति या व्यवहार ।

क०म०क० कुपित (सम्) वि. — क्रुद्ध, रुष्ट, क्रोध किया हुआ । सं. — क्रोध, गुस्सा, रोष ।

क०म०क० कुपूय (सम्) वि. — दुष्टाचरणवाला, नीच, क्षुद्र ।

क०म०क० कुपुटे, क०म०क० कुपुडिगे (क) सं. — अंगीठा, अंगीठी. बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा जिसमें आग रखी जाती है, वहनीय या सहज ही ले जाने योग्य अंगीठी ।

क०म०क० कुपरिसु (क) क्रि. = क०म०क० कुपुलिस् — दोनों पैरों को जोड़कर कूद, छलांग मार, मेंढक के जैसे कूद; उठाकर ज़मीन पर फेंक या पटक ।

क०म०क० कुपुस (तद्) सं. = क०म०क० कुप्स, क०म०क० कुवस, क०म०क० कुवुस, क०म०क० कुव्वस, क०म०क० कुवस — कृपास (तत्) — चोली, जाकट, कंचुक ।

क०म०क० कुपुलिस् (क) क्रि. — राशि हो, ढेर हो, समूह हो, समुदाय हो, अधिक हो, समृद्ध हो; गरम तरल पदार्थ से हानि या दुःख हो, फफोला या छाला हो; दे. क०म०क०.

क०म०क० कुपि, क०म०क० कुपिगे (तद्) सं. = कृपी (तत्); बोंतल, कांच की शीशी, पतली गर्दन की बोंतल, कुप्पी ।

क०म०क० कुपिसु (क) क्रि. — (किसी जानवर को) कुड़ा या छालग मारने दे ।

क०म०क० कुपु (क) क्रि. — ढेर बना, राशि कर, एक साथ मिला, पुंजीकरण कर; कूद, लांघ,

छलांग मार; दोनों पैरों को एक साथकर कूद । सं. — एक प्रकार का रोग, वीमारी । क०म०क० कुपे (क) सं. — राशि, ढेर; गोबर की राशि; एक पौधा विशेष (Acalypha Indica) ।

क०म०क० कुप्य (सम्) सं. — उपधातु, चांदी और सोने के अतिरिक्त शेष धातु ।

क०म०क० कुप्रतर्किंग (सम्) सं. — बुरी दलील देनेवाला, बुरा तर्कशास्त्रज्ञ ।

क०म०क० कुप्रबोधे (सम्) सं. — बुरा ज्ञान दुर्बुद्धि ।

क०म०क० कुप्रिय (सम्) वि. — अरुचिकर, अप्रिय, असम; बुरे स्वाद का ।

क०म०क० कुबकु. क०म०क० कुबुकु (क) क्रि. — धीरे-धीरे जमीन खोद, घास — पात निकाल ।

क०म०क० कुवस (तद्) सं. — दे. क०म०क०.

क०म०क० कुबुबु, क०म०क० कुबिवि (क) सं. — जोर की चिल्लाहट, मनसेच्छा चिल्लाना, होहल्ला ।

क०म०क० कुवस (तद्) सं. — दे. क०म०क०.

क०म०क० कुवेर, क०म०क० कुवेर (सम्) सं. — यक्षराज, धनाध्यक्ष देवता, उत्तर दिक्पति ।

क०म०क० कुबोधक (सम्) सं. — कुगुरु, बुरा उपदेश देनेवाला ।

क०म०क० कुबोधने (सम्) सं. — बुरा उपदेश, बुरा ज्ञान ।

क०म०क० कुवज (सम्) वि. — क०म०क० कुवुज (तद्) — कूबड़ा; झुका हुआ, वक्र । सं. — कूबड़, वक्रता, टेढ़ापन ।

क०म०क० कुव्वस (तद्) सं. — दे. क०म०क०.

क०म०क० कुवु, क०म०क० कुवुवु (क) सं. — अहं भाव, घमंड, मद । क०म०क० कुव्ववट (क) सं. — अहंभावपूर्ण व्यवहार ।

क०म०क० कुवस (तद्) सं. — दे. क०म०क०.

क०म०क० कुभापि (सम्) सं. — बुरा या अपशब्द कहनेवाला ।

क०म०क० कुभृत् (सम्) सं. — पहाड़, पर्वत ।

क०म०क० कुमकि, क०म०क० कुमुकु; क०म०क० कुम्मकु, (अ. दे.) सं. — सहायता, मदद, सहारा ।

क०म०ज०न कुमंजन (क) सं.—दे. क०ज०.

क०म०ति कुमति (सम्) सं.—बुरी या खराब प्रवृत्ति; मंद बुद्धि। वि.—बुरा, खराब, मूर्ख।
क०म०न कुमन (सम्) सं.—बुरा या बुरर मन या हृदय।

क०म०त्र कुमत्र (सम्) सं.—बुरी मंत्रणा, बुरी योजना, षड्यन्त्र, बुरे उपायों द्वारा अपनी इच्छा-पूर्ति का कार्य।

क०म० कुमरि (क) सं.—जंगल में पेड़-पौधों को काटकर या जलाकर खेती के योग्य बनायी गई भूमि का भाग जहाँ एक-दो वर्ष ही खेती की जाती है।

क०म०य कुमाये (क) सं.—बुरा उपाय।

क०म०र कुमार (सम्) सं.—क०म० कुवर (तद्)—पुत्र, बालक, पाँच वर्ष से कम आयु का बालक; युवराज, राजकुमार; स्कंद का नाम।—गुरु (सम्) सं.—शिव।

क०म०र कुमारे, क०म०र कुमारे (तद्) सं.—लड़की, कुमारी, जवान लड़की; पुत्री।

क०म०र क०म०न क०म०र कुमार रामन कथे (सम्) सं.—कन्नड कवि नंजुण्ड का एक काव्य।

क०म०र क०म०र कुमार वाल्मीकि (सम्) सं.—कन्नड का एक जनप्रिय महाकाव्य 'तोरवरामायण' के कवि का नाम।

क०म०र क०म०र कुमारव्यास (सम्) सं.—'कर्णाट-भारत-कथामंजरी' या कन्नड-महा-भारत के कवि का उपनाम (इनका वास्तविक नाम नारणप्पा था)।

क०म०र क०म०र कुमारस्वामि (सम्) सं.—स्कन्द, कार्तिकेय।

क०म०र कुमारि (सम्) सं.—क०म० कुचरि (तद्)—दे. क०म०रड.

क०म०र कुमुद (क) सं.—खराबी, धिनौना-पन, सड़ापन; दुर्गंध, बदबू। क्रि.—सूख, मुरझा; कूद, छलांग मार।

क०म०र कुमुद (सम्) वि.—दयारहित, अमित्र; लालची।

क०म०र कुमुद (सम्) सं.—सफेद कमल जो चंद्रोदय पर खिलता है; लाल कमल; नीलोत्पल; दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम; एक वृक्ष का नाम; चंद्रमा; कपूर, काफूर; कपिल वर्ण, भूरा रंग; जल, पानी; जनप्रमोद, हर्ष, आनंद; कठोरता, निष्ठुरता, दयाराहित्य; एक प्रधान कवि का नाम।

क०म०र कुमुदप्रिय, क०म०र कुमुदबंधु, क०म०र कुमुदबांधव (सम्) सं.—चंद्रमा।

क०म०र कुमुदवैरि, क०म०र कुमुदारि (सम्) सं.—सफेद कमल का शत्रु सूर्य।

क०म०र कुमुदाक्षि (सम्) सं.—स्त्री जिसकी आँखें कुमुद के समान हों।

क०म०र कुमुदिनि (सम्) सं.—सफेद कमलों का सरोवर या समूह।—क०म०र क०म०र (सम्) सं.—चंद्रमा।

क०म०र कुमुद्वत्, क०म०र कुमुद्वति (सम्) सं.—सफेद कमलों का सरोवर, सफेद कमलों का समूह; स्त्रियों का नाम; एक नदी का नाम;

क०म०र कुम्मट, क०म०र कुम्मटे (क) सं.—दे. क०म०र.

क०म०र कुम्मसु, क०म०र कुम्मिसु (क) क्रि.—चूर्ण करा, कुटा (प्रे.)।

क०म०र कुम्मलिसु (क) क्रि.—दोनों पैरों को एक साथ मिलाकर कूद।

क०म०र कुम्मु (क) क्रि.—मूसल से कूट, पुड़िया या चूर्ण बना।

क०म०र कुय, क०म०र कुयि, क०म०र कोय (क) क्रि.—काट, विभाग कर, टुकड़े कर, चीर।

क०म०र कुयक, क०म०र कोयक (तद्) सं.—कुहका (तद्)—छलिया, जालसाज़।

क०म०र कुयि (क) क्रि.—दे. क०म०र.

क०म०र कुयिलु, क०म०र कोयिलु (क) सं.—काटना, कटाव। क०म०र कुयिलालु (क) सं.—फसल काटने के लिए नियुक्त मजदूर।

क०म०र कुयिसु, क०म०र कुयिसु, क०म०र कोयिसु (क) क्रि.—कटा, कटाव करा (प्रे.)।
क०म०र कुय्य (क) सं.—छड़ी, सौटा; अंकुश।
क०म०र कुय्यिके (क) सं.—काटने की क्रिया।

क०म०र कुय्यो, क०म०र कोय्यो (क) वि. वो.—हाय. हाय।

(१) क०र कुर, क०र कुरु, क०र कुरु (क) सं.—वण, घाव, फोड़ा।

(२) क०र कुर (तद्) सं.—खुर (तद्); (गाय आदि का) खुर।

क०र कुरकर क०र कुरकर (सम्) सं.—सारस पक्षी, बगुला।

क०र कुरग (क ?) सं.—निहाई, स्थूणा, लोहे का साधन जिस पर (वस्तुएँ) रखकर सोनार काम करता है।

क०र कुरंग (सम्) सं.—हिरनों की एक जाति, लाल रंग का हिरन; एक देश का नाम।—क०र क०र (सम्) सं.—चंद्रमा।—क०र नाभि (सम्) सं.—मुश्क. कस्तूरी।—क०र रिपु (सम्) सं.—बाघ, व्याघ्र।

क०र कुरचि, क०र कुरिचि, क०र कुरसि क०र कुचि (अ. दे.) सं.—कुरसी (बरबी); बैठने का आसन।

क०र कुरचिल (सम्) सं.—केकड़ा।

क०र कुरट (सम्) सं.—चमार, मोची।

क०र कुरटिके, क०र कुरटिग, क०र कुरटिके, क०र कुरटिग (क) सं.—एक वृक्ष विशेष।

क०र कुरड, क०र कुरुड (क) सं.—अंधा आदमी।

क०र कुरडि (क) सं.—अंधी स्त्री।

क०र कुरुड, क०र कुरुड (क) सं.—अंधता, अंधत्व।

क०र कुरंट, क०र कुरंटक (सम्) सं.—पीले रंग का सदाबहार गुलशादाब।

क०र कुरर (सम्) सं.—उत्क्रोश पक्षी, चकवा।

क०र कुररि (सम्) सं.—चकवी।

कंठ्या कूरल

कंठ्या कूरल (क) क्रि.—चिह्ना, चीख, पुकार ।
 कंठ्या कूरवक, कंठ्या कूरवक (सम्) सं.—गुलकेस, गुलशादाव ।
 कंठ्या कुरवि (क) सं.—एक पौधे का नाम ।
 कंठ्या कूरल, कंठ्या कूरल, कंठ्या कूरल, कंठ्या कूरल (क) सं.—उपला, गोमय-पिंड, करीष ।
 कंठ्या कुराण, कंठ्या कुरान्, कंठ्या कुरानु, कंठ्या कुराण, कंठ्या कुराण, कंठ्या कुरानु (अ. दे.) सं.—कुरान ।
 कंठ्या कुरिचि (अ. दे.) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कुर (क) सं.—दे. कंठ्या । (सम्) सं.—आधुनिक दिल्ली के आसपास का प्रदेश; उस देश के राजा ।—कंठ्या कुरल (सम्) सं.—कुरुवंश, पाण्डव और कौरवों का वंश ।—कंठ्या क्षेत्र (सम्) सं.—दिल्ली के पश्चिम का एक तीर्थस्थान, जहाँ पाण्डव और कौरवों का युद्ध हुआ था ।
 कंठ्या कूरुगंगल (सम्) सं.—देश का नाम और उसके निवासी ।
 कंठ्या कूरुजातु (सम्) सं.—प्राचीनकाल का एक सिका ।
 कंठ्या कूरुजु (क) सं.—बांस की तीलियों का ढाँचा जिसपर कागज या कपड़ा या पत्ते लगे रहते हैं और जिसके अंदर विग्रह आदि रखे जाते हैं । बांस का मंडप, वर-वधू को बैठने का कल्याण-मंडप ।
 कंठ्या कूरुटिग (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुटिगे, कंठ्या कूरुटिके (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुड (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुडतन (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुडि (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुडु (क) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुडु (सम्) सं.—गंठ्या गोरटे, गंठ्या गोरटे, गंठ्या गोरटे, गंठ्या गोरटे, गंठ्या गोरटे (तद्)—लाल रंग का गुलशादाव ।
 कंठ्या कूरुडक (सम्) सं.—दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुडंड (सम्) सं.—लंबी लाठी, छड़ी या दण्ड ।

कंठ्या कूरुपे (तद्) सं.—कृपा (तद्) ।
 कंठ्या कूरुवे, कंठ्या कूरुवे (क) सं.—अपक्व या कच्चा नारियल, नम (या कोमल) नारियल ।
 कंठ्या कूरुविंद (सम्) सं.—एक सुरमित तृण ; लाल, रत्न ।
 कंठ्या कूरुविस (सम्) सं.—चार तोले की सोने की तौल ।
 कंठ्या कूरुवु (क) सं.—दे. कंठ्या (१) ।
 कंठ्या कूरुवैरि (सम्) सं.—कौरवों के शत्रु, भीम ।
 कंठ्या कूरुसि (अ. दे.) सं.—कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुल (क) सं.—दे. कंठ्या ; कंठ्या कूरुल, कंठ्या कूरुल—घुंवरा ले बाल, अलंकृत केश ।
 कंठ्या कूरुल (क) सं.—दे. कंठ्या ; दे. कंठ्या ।
 कंठ्या कूरुले (क) सं.—मिट्टी का बड़े मुँह का बर्तन जिसमें दही मंथा जाता है ।
 कंठ्या कूरुलु (क) क्रि.—शस्त्र या आयुध हिला, शस्त्र-संचालन कर ।
 कंठ्या कूरुप (सम्) सं.—कंठ्या कूरुप (तद्)—बुरा रूप, रूप या सौंदर्य हीनता, भहापन । कंठ्या कूरुपि (सम्) वि.—बदसूरत, भद्दा ।
 (१) कंठ्या कूरु (क) सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द ।
 (२) कंठ्या कूरु (?) सं.—शुद्ध सोना, कुंदन ।
 कंठ्या कूरुचि, कंठ्या कूरुच, कंठ्या कूरुचु (क) सं.—छोटा वृक्ष विशेष ।—कंठ्या काडु (क) सं.—छोटा-छोटे वृक्षों का जंगल ।
 कंठ्या कूरुब, कंठ्या कूरुब, कंठ्या कूरुब (क) सं.—गड़रिया, चरवाहा; मूर्ख, बेवकूफ ।—कंठ्या तन (क) सं.—गड़रिये की वृत्ति, मूर्खता ।
 कंठ्या कूरुव, कंठ्या कूरुव, कंठ्या कूरुव (क) सं.—द्वीप, अंतरीप ।
 कंठ्या कूरुल (क) सं.—कंठ्या, कूरुल —

नाटापन, छोटापन ; छोटी-छोटी पंक्तियों (चरणों) की कविता (उदा.—तमिल का 'तिरुक्कुरल' ग्रंथ) ।
 कंठ्या कुरि (क) क्रि.—निशान लगा, चिह्न लगा ; लिख, नोट कर ; ध्यान दे, विचार कर । सं.—चिह्न, निशान ; पहचान ; लक्ष्य, उद्देश्य, निशाना ; भेड़, मेघ, मेढ़ा ।
 कंठ्या कुरिके (म) सं.—ग्राम. गांव ।
 कंठ्या कूरुतन (क) सं.—भेड़ जैसी बुद्धि, मूर्खता ।
 कंठ्या कूरुतु (क) अ.—के बारे में, के संबंध में ।
 कंठ्या कूरुपु (क) सं.—दे. कंठ्या (सं) ।
 कंठ्या कूरु (क) वि.—छोटा, लघु । कंठ्या गंठ्या कूरुगंडु (क) सं.—छोटी गठरी या गट्टा । कंठ्या गंठ्या कूरुगेय (क) सं.—छोटा हाथ । कंठ्या कूरुपडे (क) सं.—छोटी सेना ।
 कंठ्या कूरुकु, कंठ्या कूरुकु (क) क्रि.—दांतों से काट, कुतर, खा ।
 कंठ्या कूरुकुलि (क) सं.—निंदा करने वाला ।
 कंठ्या कूरुगणि (क) सं.—न्यूनता. कमी, घटना ; वह जो घट गया या कम हो गया हो ; कानों की गंदगी (मैल) ।
 कंठ्या कूरुचु (क) सं.—कम होने या घटने की क्रिया, कमी, न्यूनता, घटना ; छोटापन, लघुता ; नाटापन, टिगनापन ।
 कंठ्या कूरुजे, कंठ्या कूरुजे (क) सं.—कच्चा (या अपक्व) कटहल ।
 कंठ्या कूरुपु (क) सं.—दे. कंठ्या (सं) ।
 कंठ्या कूरुब (क) सं.—दे. कंठ्या ; दे. कंठ्या ; कुम्हार ।
 कंठ्या कूरुगि, कूरुबगिति (क) सं.—गड़रिया जाति की स्त्री ।
 कंठ्या कूरुतन (क) सं.—कंठ्या तन ।
 कंठ्या कूरुबति, कंठ्या कूरुबति (क) सं.—कंठ्या गि ।

क०ल०००० कुरुव (क) सं.—दे. क०ल००००; एक पहाड़ी जाति के लोग और उनकी बोली (यह कन्नड से संबंधित एक बोली है); किले का आदमी, किले का रक्षक।

क०ल०००० कुरुवि, क०ल०००० कुरुविति (क) सं.—कुरुव जाति की स्त्री।

क०ल०००० कुरुवु (क) सं.—दे. क०ल००००; मूर्खता, बेवकूफी; (दुष्टता)।—क०ल० गार (क) सं.—बेवकूफ आदमी, मूर्ख पुरुष।

क०ल०००० कुरुव (क) सं.—दे. क०ल००००.

क०ल०००० कुरुवु, क०ल०००० कुरुवु (क) सं.—चिह्न, निशान, पहचान; कलंक, लांछन, दोष; लक्ष्य, उद्देश्य।

क०ल०००० कुरु (क) सं.—भेंट, उपहार (विवाह के समय दूल्हा-दुल्हिन को दिये जानेवाले उपहार—वस्त्रादि)।

क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—कुत्ता, श्वान।

क०ल०००० कुरु (क) क्रि.—झुक, टेढ़ा हो; सिकुड़, संकुचित हो; दब, भार के कारण नीचे जा; कम हो, घट। सं.—झुकने या टेढ़ा होने की स्थिति, टेढ़ापन, सिकुड़न; कुकुद्, कूबड़।

(१) क०ल०००० कुरु (क) सं.—वह जिसने कटे जाने के कारण अपने शरीर के किसी अंग को खो दिया है।

(२) क०ल०००० कुरु (अ. दे.) सं.—दे. क०ल००००. क०ल०००० कुरुकि, क०ल०००० कुरुकि, (सम्) सं.—कूंची; कुंजी, ताली; दुग्धविकार; सुई।

क०ल०००० कुरुकि (क) सं.—घास-फूस निकालने का कांटा।

क०ल०००० कुरु (क) सं.—दे. क०ल००००.

क०ल०००० कुरु (क) सं.—दे. क०ल००००.

क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—कुल, वंश, घराना; कुलीन या उच्च वंशीय; समूह, समुदाय; झुण्ड, दल; जाति; घर, स्थान; देश; शरीर। क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—कुल, वंश, घराना; कुलीन या उच्च वंशीय; समूह, समुदाय; झुण्ड, दल; जाति; घर, स्थान; देश; शरीर। क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—कुल, वंश, घराना; कुलीन या उच्च वंशीय; समूह, समुदाय; झुण्ड, दल; जाति; घर, स्थान; देश; शरीर। क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—कुल, वंश, घराना; कुलीन या उच्च वंशीय; समूह, समुदाय; झुण्ड, दल; जाति; घर, स्थान; देश; शरीर।

न हो (कह.)।—क०ल०००० कुरु (क) सं.—अपनी जाति या वंश को खराब करनेवाला।—क०ल०००० कुरु (क) सं.—स्त्री. लिं। क०ल०००० कुरु (क) क्रि.—कुल या जाति खराब हो, बरबाद हो।

क०ल०००० कुरु (सम्) सं.—अच्छे कुल का व्यक्ति, सद्गुणज; कोविदार या आबनूस विशेष, एक प्रकार की कविता; तितलौकी; कडुआ भर्त्सना।

क०ल०००० कुरुकरि, क०ल०००० कुरुकरि (सम्) सं.—ग्राम के लेखक, ग्राम के मुंशी; ग्राम की मुंशीगरी करनेवालों की एक जाति।

क०ल०००० कुरुकिसु, क०ल०००० कुरुकिसु, क०ल०००० कुरुकिसु (क) क्रि.—हिलवा; झटका, हिला, उत्तेजित कर, व्यग्र कर; पंकिल कर।

क०ल०००० कुरुक, क०ल०००० कुरुक, क०ल०००० कुरुक (क) क्रि.—हिला (बोतल को हिलाना), हिला कर ठीक कर; पंकिल कर, गंदा कर; व्यग्र कर उत्तेजित कर। सं.—हिलाने की क्रिया; हिलना, कंपन, डुलना; झटका।

क०ल०००० कुरुक्षय (सम्) सं.—कुल या वंश का नाश।

क०ल०००० कुरुगिरि (सम्) सं.—कुलपर्वत, सात प्रधान पर्वतों में एक।

क०ल०००० कुरुगुरु (सम्) सं.—कुल के आचार्य।

क०ल०००० कुरुगुरु (सम्) सं.—उच्च या श्रेष्ठ घराना।

क०ल०००० कुरुगुरु (सम्) सं.—घराना या वंश और जाति-संप्रदाय।

क०ल०००० कुरुज (सम्) सं.—सत्कुल में उत्पन्न व्यक्ति। सत्कुल का; पूर्वजों का, परंपरागत।

क०ल०००० कुरुज (सम्) सं.—अभिजात वंश की स्त्री।

क०ल०००० कुरुदे (सम्) सं.—कुलटा, छिनाल, व्यभिचारिणी स्त्री।

क०ल०००० कुरुथ (सम्) सं.—कुलथी, अनाज विशेष।

क०ल०००० कुरुनग (सम्) सं.—दे. क०ल००००. क०ल०००० कुरुनारि (सम्) सं.—अच्छे परिवार की स्त्री, सद्गृहिणी, पतिव्रता। क०ल०००० कुरुपर्वत (सम्) सं.—दे. क०ल००००.

क०ल०००० कुरुपालिके, क०ल०००० कुरुपालिके (सम्) सं.—अभिजात कुलवधू, आदणीय स्त्री।

क०ल०००० कुरुमद (सम्) सं.—जाति, वंश या जन्म का धर्म या मद।

क०ल०००० कुरुमे, क०ल०००० कुरुमे, क०ल०००० कुरुमे, क०ल०००० कुरुमे, क०ल०००० कुरुमे (क) सं.—चूल्हा, अंगीठी।

क०ल०००० कुरुविवर (सम्) सं.—कुलमेद।

क०ल०००० कुरुविहीन (सम्) सं.—जाति अथ पुरुष; नीच कुल में उत्पन्न मनुष्य।

क०ल०००० कुरुस्थ (सम्) सं.—अच्छे वंश या परिवार का व्यक्ति। क०ल०००० कुरुस्थे—स्त्री. लिं।

क०ल०००० कुरुचल (सम्) सं.—दे. क०ल००००.

(१) क०ल०००० कुरुचल (सम्) सं.—घोंसला।

(२) क०ल०००० कुरुचल, क०ल०००० कुरुचल, क०ल०००० कुरुचल, क०ल०००० कुरुचल, क०ल०००० कुरुचल (क) सं.—छोटी टोपी, बच्चों की पहनाने की टोपी। क०ल०००० कुरुचल (अ. दे.) क्रि.—[खोल (हिं) से]—खुला हो, फैला हुआ या व्याप्त हो; साफ-साफ हो; अधिक हो, बढ़ि हो।

क०ल०००० कुरुल (सम्) सं.—कुम्हार।—क०ल०००० कुरुल (सम्) सं.—कुम्हार की वृत्ति।—क०ल०००० चक्र (सम्) सं.—कुम्हार का चाक।

क०ल०००० कुरुलालि (सम्) सं.—कुम्हार की स्त्री; एक प्रकार का नीला पत्थर; कुलथी का पौधा विशेष।

क०ल०००० कुरुल (क) सं.—मारनेवाला, हत्यारा। (सम्) सं.—हाथ।

क०ल०००० कुरुलिक (सम्) वि.—कुलीन। सं.—एक नाग या सर्प का नाम।

कौटिल्य कुलिकिसु

कौटिल्य कुलिकिसु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य.
कौटिल्य कुलिकु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य.
कौटिल्य कुलिके, कौटिल्य कुलिके, कौटिल्य
कुलिके, [कौटिल्य कुणिके] (क) सं.—फंदा
दरार, चकर, गांठ, अंकुड़ा; मेल, जोड़,
कड़ी, संधि।

कौटिल्य कुलित (सम्) वि.—राशि किया हुआ,
मिलाया हुआ, एकत्रित।

कौटिल्य कुलमे (क) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुलिश (सम्) सं.—इन्द्र का वज्र;
एक माप विशेष; एक प्रकार की मछली।—
धर धर, धार धारि; हस्त (सम्) सं.—
इन्द्र।

कौटिल्य कुलीन (सम्) वि.—सदृश में उत्पन्न,
अच्छे परिवार का, अच्छी नस्ल का।—
कुल (सम्) सं.—कुलीनता।

कौटिल्य कुलीने (सम्) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुलीर (सम्) सं.—केकड़ा।

कौटिल्य कुलिकिसु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुलिकु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुलिकुगाति (क) सं.—हाव-भाव
दिखलानेवाली स्त्री, विलासवती स्त्री, कामिनी
नारी।

कौटिल्य कुलमे (क) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुलेंद्र, कौटिल्य कुलोद्दाम
(सम्) सं.—वंश या घराने का प्रधान
पुरुष।

कौटिल्य कुलकु (क) क्रि.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य (अ. दे. ?) सं.—भैंसा।

कौटिल्य कुलमाष (सम्) सं.—माँड़, पीची;
आधा पका जौ; घटिया प्रकार का उदद;
रौंगी, बरबटी।

कौटिल्य कुलमे, (क) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुल्य (सम्) सं.—(कौटिल्य कुल्ये—तद्)—
हड्डी, अस्थि; नाला, नहर; खाई; परिखा;
किनारा, तट; नदी; वन, जंगल; मोह;
फूहड़ आदत, लत। वि.—कुल का, कुलीन,
वंश संबंधी।

कौटिल्य कुल्ये (सम्) सं.—दे. कौटिल्य;
कुलवध, कुलनारी; लक्ष्मी।

कौटिल्य कुल्या (अ. दे.) वि.—खुला; फैला
हुआ।

कौटिल्य कुल्यि, कौटिल्य कुल्यि (क ?)
सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुल्लु (अ. दे.) वि.—कुल (हिं.); सब;
पूरा।

कौटिल्य कुवक (तद्) सं.—कुहकम् (तद्);
छल, प्रवचना, जालसाजी।

(१) कौटिल्य कुवर (क) सं.—कुम्हार; = कौटिल्य
कव्वर, कौटिल्य कौव्वरि—पटा, यवनिका;
(घूँघट, नकाब)।

(२) कौटिल्य कुवर (तद्) सं.—कौटिल्य कव्वर,
कौटिल्य कोमर, कौटिल्य कोमार, कौटिल्य
कोर (कुमार:—तद्)—दे. कौटिल्य.
कौटिल्य कुवरि, कौटिल्य कौवरि (तद्) सं.—
कुमारी (तद्)—लड़की, पुत्री, जवान
लड़की।

कौटिल्य कुवल (सम्) सं.—फेनिल, उन्नाव
(वृक्ष और फल); कमल विशेष।

कौटिल्य कुवल्य (सम्) सं.—कमल;
नीलकमल विशेष; भूमि, धरा।—कौटिल्य
धारि (सम्) सं.—सरोवर; राजा, भूपति।
कौटिल्य कुवरि, कौटिल्य कौलि (क ?) सं.—उन्नाव,
फेनिल।

कौटिल्य कुवाक्, कौटिल्य कुवाच् (सम्)
सं.—बुरे वचन, निंदा, गाली।

कौटिल्य कुवाद (सम्) सं.—बुरा वाद, बुरी
दलील, हठवाद। वि.—बदनाम, तुच्छ;
निंदक।

कौटिल्य कुवि (क) क्रि.—पुकार, चिला।

कौटिल्य कुविंद, कौटिल्य कुविंदक (सम्)
सं.—जुलाहा।

कौटिल्य कुवेणि (सम्) सं.—कुवेणी मछ-
लियों को रखने की टोंकरी।

कौटिल्य कुवेर (सम्) सं.—दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कुवेरक (सम्) सं.—तुन का वृक्ष।

कौटिल्य कुवेगक्षि (सम्) सं.—एक पौधा-

विशेष (The plant Bignonia Suaveo-
lens)।

कौटिल्य कुवे (क) सं.—एक वृक्ष विशेष जिसके
पत्तों से शिरछाण (टोपी जैसी वस्तु) बनाया
जाता है और वर्षा के जल से बचने के लिए
उसका उपयोग किया जाता है; अरारुट।

कौटिल्य कुश (सम्) सं.—दर्भ, पवित्र तृण विशेष;
पानी, जल; राम के बेटे का नाम; एक
बड़ा द्वीप विशेष।—अज, अज जात
(सम्) सं.—कमल, कुवल्य।

कौटिल्य कुशब्द (सम्) सं.—बुरा शब्द, अनुचित
वचन।

कौटिल्य कुशल (सम्) वि.—ठीक, अच्छा,
शुभ, प्रसन्न, समृद्धिशाली; योग्य, प्रवीण,
पटु, निपुण, दक्ष।—कौटिल्य गार (सम्)
सं.—बुद्धिमान पुरुष; कौटिल्य गार्ति—
स्त्री. लिं.।—कौटिल्य तन (सम्) सं.—
बुद्धिमत्ता, निपुणता, दक्षता।—कौटिल्य ते (सम्)
सं.—कौटिल्य तन. कौटिल्य प्रज्ञे (सम्)—
कुशल-सेम पूछना।

कौटिल्य कुशलि (सम्) सं.—बुद्धिमती या
निपुणा स्त्री।

कौटिल्य कुशस्थलि (सम्) सं.—द्वारकापुरी;
दक्ष की पुत्री का नाम।

कौटिल्य कुशाग्रबुद्धि, कौटिल्य कुशा-
ग्रमति (सम्) सं.—तीक्ष्ण बुद्धिवाला, तेज
बुद्धिवाला।

कौटिल्य शालु (अ. दे.) सं.—खुशहाल
(फारसी); सुख संपन्नता, अच्छी स्थिति,
आनंद।

कौटिल्य कुशासन (सम्) सं.—कुश या दर्भ
का आसन (चटाई)।

(१) कौटिल्य कुशि (सम्) सं.—हल की फाल;
काम्ठी लोहा।

(२) कौटिल्य कुशि, कौटिल्य कुषि, कौटिल्य कुसि
(आ. दे.) सं.—खुशी (फारसी); आनंद
संतोष।

कौटिल्य कुशिक, कौटिल्य कुशिर (सम्) सं.—
हल की फाल।

०३१७८८ कुशीलव (सम्) सं.— भाट, चारण, गायक, नट, अभिनेता ।

०३१७८८ कुशूल (सम्) सं.— कुशूल कुसूल (तद्)— भंडार, अन्न भरने की कोठरी ।

०३१७८८ कुशु (सम्) सं.— दे. कुश. लगाम ; लकड़ी की टुकड़ी ; किसी को ढँकने का काष्ठ फलक या तख्ता ।

०३१७८८ कुशेशय (सम्) सं.— पानी में उत्पन्न होनेवाला, कमल, कुवलय ; विष्णु (मै. प्र.) ।

०३१७८८ कुशभ्र (सम्) सं.— भूमि में एक छोटा छेद ।

०३१७८८ कुक्कि (क?) सं.— वह भूमि जहाँ वर्षा होने से उपज हो सकती है ।

०३१७८८ कुष्टिग (क) सं.— एक लता विशेष ।

०३१७८८ कुष्ठ (सम्) सं.— एक पौधा विशेष, कुष्ठ या कोढ़ रोग ।

०३१७८८ कुष्मांडक (सम्) सं.— कुन्हड़ा ।

०३१७८८ कुस (क) सं.— कुसकुस— फुसफुसाहट । कुसगुट्ट (क) क्रि.— फुसफुसाहट कर ।

०३१७८८ कुसकु (क) सं.— कपड़े को धीरे धीरे साफ़ कर या पीट ।

०३१७८८ कुसंग (सम्) सं.— बुरी संगति ।

०३१७८८ कुसंधि (सम्) सं.— शब्दों का असाधु मेल ; तंगी, तंग जगह ; ग्रहों की बुरी गति ।

०३१७८८ कुसमय (सम्) सं.— बुरा समय ;

बुरा नियम या कायदा ; नास्तिकता ।

०३१७८८ कुसल् (क) सं.— दे. कुसल ।

०३१७८८ कुसल (तद्) सं.— कुशल (तत्) ।

०३१७८८ कुसाकलि (क) सं.— कष्ट, संकट ; व्यग्रता, विकलता ।

०३१७८८ कुसाले (क) सं.— दे. कुशल ।

(१) कुसि (क) सं.— कवाटशलाका, दर-वाज़े का क्रीला ; झुकने या टेढ़ा रहने की स्थिति, झुकाव, टेढ़ापन । क्रि.— ढह जा, नीचे की ओर हो जा, झुक जा, भार (बौझ) के कारण ढह जा, नवा ; ठोकर खाकर गिर ;

कंपित हो, कांपकर गिर ; डूब ; स्थान दे ; ठहर ।

(२) कुसि (अ. दे.) सं.— दे. कुसि (२). कुसिकु (क) क्रि.— मार, पीट, आघात कर ; कपड़े को धीरे-धीरे साफ़ कर या ज़मीन पर पीट ।

कुसिबे, कुसिबे (तद्) सं.— कुसुभः (तत्) ।

कुसीद, कुसीदक (सम्) सं.— व्याज या सूद पर जीवित रहनेवाला ।

कुसु (क) सं. = कुसुकुसु = कुसुकुसु.

कुसुक (क) सं.— दे. कुसि (१).

कुसुकु (क) सं.— भार या बौझ के कारण ढहकर गिरने या झुकने की स्थिति । क्रि.— दे. कुसिकु.

कुसुकु (क) क्रि.— दे. कुसिकु.

कुसुबु, कुसुबु (क) क्रि.— कपड़े को पत्थर पर मार-मार कर साफ़ कर ; नीचे गिरा, ठेल दे ।

कुसुबे (तद्) सं.— कुसुभः (तत्) ।

कुसुम (सम्) सं.— फूल ; पुष्प ; रजोदर्शन ।

कुसुमधन्वा, कुसुमबाण कुसुम-बाण, कुसुमशर कुसुमशर, कुसुमसायक, कुसुमायुध (सम्) सं.— मन्मथ, कामदेव ।

कुसुममंजरी (सम्) सं.— फूलों का गुच्छा, फूलों की माला ।

कुसुमरस (सम्) सं.— शहद, मधु ।

कुसुमविचित्र (सम्) सं.— एक छंद का नाम ।

कुसुमविशिख (सम्) सं.— कामदेव ।

कुसुमपट्टि (सम्) सं.— एक छंद का नाम ।

कुसुमाकर (सम्) सं.— कामदेव ।

कुसुमांघ्रि (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।

कुसुमांजन (सम्) सं.— पीतल धातु का भस्म ।

कुसुमारि (सम्) सं.— सुदगर, सुदगर ।

कुसुमास्त्र (सम्) सं.— कामदेव । कुसुमित (सम्) वि.— फूलों से अलंकृत, फूलों से भरा हुआ, फूला हुआ ।

कुसुम (क) क्रि.— दे. कुसुबु.

कुसुमे (सम्) सं.— रजोदर्शन, एक पौधे का नाम ।

कुसुमेष्टु (सम्) सं.— दे. कुसुमाष्टु.

कुसुंबरि, कुसुंबरि, कुसुंबरि, कुसुंबरि, कुसुंबरि (सम्?) सं.— तत् तत् क्रतुओं के फलों को रक्षित रखने की क्रिया ।

कुसुबे (तद्) सं.— कुसुभः (तत्) ।

कुसुभ (सम्) सं.— केसर ; गोखरू-जैसा पौधा ।

(१) कुसुरि, कुसुर (क) सं.— फल या तरकारी का बिलकुल कच्चा या कोमल अंश ।

कुसुरि (अ. दे. ?) सं.— एक प्रकार का कपड़ा ।

कुसुर (क) सं.— दे. कुसुरि ; किंजल्क, पुष्प का रेशा ।

कुसुवु (क) सं.— जूट ; पट्टा ।

कुसूल (सम्) सं.— खत्ती, अन्न का भांडार गृह ।

कुसुति (सम्) सं.— छल, कपट, धोखा, प्रवचना, जाल ।

कुस्ति (अ. दे.) सं.— कुश्ती (फ़ारसी) ; मलयुद्ध ।— अड्डा आड्ड (अ. दे.) क्रि.— कुश्ती लड़ ।

कुस्तुभ (सम्) सं.— विष्णु ; समुद्र ।

कुस्तुंबरि (सम्?) सं.— धनिया, (धनिया की पत्ती) ।

कुस्तुंबर (सम्?) = कुस्तुंबर

ಕೂಡಲಾ ಕಡಲ, ಕೂಡಲು ಕಡಲ, ಕೆಡು

रहना चाहिए और स्त्री को घुमकड़ नहीं बनना चाहिए (कह.) ।

कूरांबु (सम्) सं. — भात का पानी; कैंजी।

कूरेके

कूरेके (क) सं — तीक्ष्णता, नुकीला-पन ।

कूरेतु, कूरेतु (क) सं — वह जो तीक्ष्ण या नुकीला हो ।

कूरेद (क) सं. — तीक्ष्ण, तेज़ या साहसी पुरुष ।

कूरिल (क) सं. — वह जो तीक्ष्ण या नुकीला न हो ।

कूरिसु (क) क्रि. — प्रेम करा (या करवा); बैठा, उपविष्ट करा (या करवा) (प्रे.); मिला, जोड़, पिरो ।

कूरु [कूरु] (क) क्रि. — नीचे गिर, गिर पड़, ढह जा । सं. — खिंचाव, कसाव, तनाव ।

कूरिगे (क) सं. — बीज बोने का साधन, वापि ।

कूरे (क) सं. — (मैले) कपड़े में उत्पन्न होनेवाली लीख ।

कूर्गणि (क) सं. — तीक्ष्ण या नुकीले बाण ।

कूर्च (सम्) सं. — मूठा, गट्टर; मुट्ठी भर कुश; मोरपंख; दाढ़ी, मूँछ; चुटकी; कूँची; सिर; दोनों भौंहों का मध्यभाग; विभाग; अक्कड़पन, ढोंग, दंभ ।

कूर्चक (सम्) सं. — कूँची, चित्र लिखने की पेन्सिल, तूलिका ।

कूर्चशीर्ष (सम्) सं. — नारियल का वृक्ष ।

कूर्चिके (सम्) सं. — दे. कूर्चिके; दुग्धविकार ।

कूर्दग (सम्) सं. — छायांग; खेल, क्रीडा ।

कूर्प (सम्) सं — भौंहों के बीच का स्थान; बाँस का एक प्रकार का दक्कन; योनि के रोम ।

कूर्पर (सम्) सं. — कुहनी, घटना ।

कूर्पास, कूर्पासक (सम्) सं. — चोली, जॉकट; कवच ।

कूर्पु (क) सं. — तीक्ष्णता, तेज़ी, नुकीलापन; साहस, प्रताप; तीक्ष्ण दृष्टि,

प्रेम, प्रीति (कूर्पवन्तु — प्रेमी, प्रियतम, पति); नाश, तबाही ।

कूर्म (सम्) सं. — कछुआ; विष्णु के दशावतारों में एक; शरीर की बाह्य हवा ।

कूर्मि (सम्) सं. — कछुवी ।

कूर्मे (क) सं. — अनुरक्ति, स्नेह, प्रेम, अनुराग ।

कूर्, कूर् कोल् (क) वि. — बड़ा, लंबा । — कूर् बल् (क) सं. — लंबा जाल ।

कूर्कल (सम्) सं. — किनारा, तट, छोर; ढाल, उतार; सामीप्य ।

कूर्कल, कूर्कल (सम्) सं. — नदी । अ. — आमूलाग्र, आदि से अंततक ।

कूर्जि (क) सं. — दे. कूर्जि ।

कूर्जि (सम्) सं. — कूल, किनारा, तट ।

कूलि (क) सं. — कूली, मजदूरी; कूली करनेवाला, मजदूर । — कूर्ति, कूर्ति (क) सं. — मजदूरिन, कूली करनेवाली स्त्री । — कूर्कार, [कूर्कार] (क) सं. — कूली, मजदूर । — कूर्गार = कूर्गार ।

कूलिसु (क) क्रि. — गिरा खिसका, नाश कर ।

कूल (क) क्रि. — गिर, गिर पड़, खिसका, ढह, नष्ट हो । सं. — लकड़ी की चूल (जो छेद में बैठाई जाती है); नदी की (नीचे उतरने की) सीढ़ियाँ ।

कूलर (सम्) सं. — दे. कूलर (तद्) । सं. — दे. कूलर ।

कूलरि (सम्) सं. — दे. कूलर ।

कूवे (क) सं. — अरारुट ।

कूप्पांड (सम्) सं. — कुम्हड़ा ।

कूसु (क) सं. — शिशु, बच्चा या बच्ची; बालक, बालिका । — कूसु तन (क) सं. — शैशव, बचपन ।

कूळि, कूळे (क) सं. — मछली पकड़ने की टोकरी, कुवेणी ।

कूळे (क) सं. — दे. कूळे; वृक्ष की कटी हुई डाली, बाजरे के पौधों का कटा हुआ भाग ।

कूळ (क?) सं. — भात, भोजन । (तद्) । वि. — कूर (तद्) ।

कूळ (क) सं. — नीच, हेय, तुच्छ, बेकार, या क्षुद्र पुरुष । — कूसु तन (क) सं. — नीचता, तुच्छता, क्षुद्रता ।

कूळ (क) सं. — भात, भोजन, खाना ।

कूळे (क) सं. — दे. कूळे. घुरी या टुष्ट स्त्री ।

कूळ (सम्) सं. — गला, कंठ ।

कूळकण, कूळकण (सम्) सं. — तीतर ।

कूळकल (सम्) सं. — छिपकली विशेष, गिरगिट ।

कूळकल (सम्) सं. — मुर्गा; मोर. मयूर; छिपकली, गिरगिट ।

कूळकल (सम्) सं. — गद्दन का पिछला भाग ।

कूळ (सम्) सं. — कठिनाई, पीड़ा, संकट, विपत्ति, शारीरिक कष्ट ।

कूळ (सम्) वि. — किया हुआ, बनाया हुआ । सं. — काम, कार्य, कर्म, कृत्य ।

कूळ (सम्) वि. — अस्वाभाविक, बनावटी, बनाया हुआ, मनुष्य-निर्मित ।

कूळकर्म (सम्) वि. — चतुर, निपुण, होशियार ।

कूळकर्ण (सम्) सं. — अर्जुन का पुत्र ब्रभ्रवाहन ।

कूळक (सम्) सं. — कपटी या धूर्त स्त्री ।

कूळकृत्य (सम्) वि. — वह जिसका उद्देश्य सिद्ध हो, संतुष्ट, अधाया हुआ; कर्तव्य पालन किया हुआ ।

कूळकृत (सम्) सं. — किये गये उपकार का स्मरण न करनेवाला । — कूळकृत (सम्) सं. — कृतज्ञता ।

कूळकृत (सम्) सं. — उपकृत, उपकार का स्मरण करनेवाला । — कूळकृत (सम्) सं. —

कृतज्ञता, उपकार का स्मरण । — कृ० त्र०
(सम्) सं. — कृतज्ञता ।
कृ० त्र० ०३० कृतपुंख (सम्) सं. — धनुर्विद्यामें
प्रवीण ।
कृ० त्र० ०३० कृतमाल (सम्) सं. — दलचीनी
का वृक्ष ।
कृ० त्र० ०३० कृतमुख (सम्) वि. — शिक्षित,
बुद्धिमान ।
कृ० त्र० ०३० कृतयुग (सम्) सं. — चार युगों में
एक — सत्ययुग (यह १७२,८,००० वर्षों ।
का माना जाना है ।
कृ० त्र० ०३० कृतलक्षण (सम्) वि. — अच्छे
लक्षण या गुणों से युक्त ।
कृ० त्र० ०३० कृतवर्म (सम्) वि. — चतुर,
निपुण । सं. — एक राजा का नाम ।
कृ० त्र० ०३० कृतवीर्य (सम्) सं. — हैहय राजा
अर्जुन (कार्तवीर्य) के पिता का नाम ।
कृ० त्र० ०३० कृतव्रण (सम्) सं. — एक ब्रह्मा का
नाम ।
कृ० त्र० ०३० कृतसापत्निके (सम्) सं. — वह
स्त्री जिसकी सौत हो ।
कृ० त्र० ०३० कृतस्वर (सम्) वि. — ध्वनि पूर्ण,
स्वर से भर हुआ ।
कृ० त्र० ०३० कृतहस्त (सम्) सं. — पटु, निपुण,
कुशल ।
कृ० त्र० ०३० कृताकृत (सम्) वि. — किया हुआ-न
किया हुआ, योग्य-अयोग्य ।
कृ० त्र० ०३० कृतांजलि (सम्) सं. — सम्मान
प्रदर्शनार्थ दोनों कर जोड़नेवाला ।
कृ० त्र० ०३० कृतांत (सम्) सं. — समाप्त करना,
समाप्ति ; सत्य का निरूपण ; किसी क्रिया
या कार्य का अंत ; यम ; पाप, बुरा कार्य
— क क (सम्) सं. — यमराज । —
कृ० त्र० ०३० कृतमर्दक (सम्) सं. — शिव ।
कृ० त्र० ०३० कृताभिपेक (सम्) वि. — अभि-
प्रेत, राज-तिलक किया हुआ ।
कृ० त्र० ०३० कृतार्थ (सम्) सं. — अपने उद्देश्य
की पूर्ति किया हुआ पुरुष, संतुष्ट या तृप्त
पुरुष । — उ ते (सम्) सं. — उद्देश्य की
सिद्धि, सफलता ।

कृ० त्र० ०३० कृति (सम्) सं. — बनाना, करना, क्रिया
रचना, साहित्यिक रचना, कविता । वि. —
चतुर, निपुण, पंडित । — कृ० त्र० पति (सम्)
सं. — रचनाकार, कवि । — कृ० त्र० मत
(सम्) सं. — कविता का शैली-विधान ।
कृ० त्र० ०३० कृत (सम्) वि. — कटा हुआ, विभक्त,
खण्ड किया हुआ ।
कृ० त्र० ०३० कृत्ति (सम्) सं. — चर्म, चमड़ा ;
मृगचर्म भोजपत्र । — कृ० त्र० वास, कृ० त्र०
वासन्. (सम्) सं. — शिव ।
कृ० त्र० ०३० कृत्य (सम्) वि. — वह जो किया जाना
चाहिए, उपयुक्त, योग्य ; संभव, साध्य ।
सं. — कर्तव्य, कर्म, उद्देश्य, प्रयोजन ।
कृ० त्र० ०३० कृत्ये (सम्) सं. — क्रिया, कर्म, कार्य ;
दुष्टशक्ति, विनाशकरिणी देवी ।
कृ० त्र० ०३० कृत्रिम (सम्) वि. — बनावटी,
नकली, कल्पित ; गोद लिया हुआ ।
कृ० त्र० ०३० कृत्रिमि (सम्) सं. — कपटी पुरुष ।
कृ० त्र० ०३० कृत्स्न (सम्) वि. — संपूर्ण, पूरा,
सारा ।
कृ० त्र० ०३० कृदर (सम्) सं. — धान्यागार, अनाज
रखने का भण्डार ।
कृ० त्र० ०३० कृत, कृ० त्र० कृतन (सम्) सं. — काटना ;
काटकर टुकड़े करना ।
कृ० त्र० ०३० कृप (सम्) सं. — अश्वत्थामा के मामा
का नाम ।
कृ० त्र० ०३० कृपण (सम्) वि. — गरीब, दरिद्र,
अभागा, सहाय्यभूति के योग्य । सं. —
लोभी, कंजूस । — कृ० त्र० तन (सम्) सं. —
लोभ, कंजूसी । — कृ० त्र० त्व (सम्) सं. —
कृ० त्र० त्वत् ।
कृ० त्र० ०३० कृपा (सम्) सं. — दया, रहम, अनुकंपा ।
— कृ० त्र० कृपाक्ष (सम्) सं. — दया दृष्टि,
अनुकंपा भरी दृष्टि । — कृ० त्र० कर (सम्)
सं. — दयालु, करुणाकर । — कृ० त्र०
सागर (सम्) सं. — करुणासागर, अत्यंत
दयावान ।
कृ० त्र० ०३० कृपांग (सम्) सं. — अत्यंत दयालु
पुरुष ।
कृ० त्र० ०३० कृपाण (सम्) सं. — तलवार, छुरी ।

कृ० त्र० ०३० कृपाणि (सम्) सं. — कैची ; छुरी,
तलवार ; खंजर ।
कृ० त्र० ०३० कृपालु (सम्) वि. — दयालु,
रहमदिल ।
कृ० त्र० ०३० कृपावलोकन (सम्) सं. —
दे. कृ० त्र० कृपा (सम्) सं. —
कृ० त्र० कृपीट (सम्) सं. — पेट ; पानी, उदक
काँसा ; वन, जंगल ; ईंधन । — कृ० त्र०
योनि (सम्) सं. — आग, अग्नि ।
कृ० त्र० ०३० कृपे (सम्) सं. — दे. कृ० त्र०
कृ० त्र० ०३० कृमि (सम्) सं. — कीट, कीड़ा ;
मकड़ी ; रेशम का कीड़ा ; लाख ।
कृ० त्र० ०३० कृमिवन् (सम्) सं. — एक पौधा जो
दवाई में काम आता है ; कीड़ों को मारने
वाला ।
कृ० त्र० ०३० कृमि (सम्) सं. — अगार ।
कृ० त्र० ०३० कृमिरोग (सम्) सं. — कीड़ों से
होनेवाली एक बीमारी ।
कृ० त्र० ०३० कृवि (सम्) सं. — करघा ।
कृ० त्र० ०३० कृश (सम्) वि. — पतला, दुबला ;
निर्बल ; छोटा, थोड़ा, महीन ।
कृ० त्र० ०३० कृशशर (सम्) सं. — वह जिसके
बाण दुर्बल हो गये हों ।
कृ० त्र० ०३० कृशांग (सम्) सं. — दुबला या
निर्बल शरीर ।
कृ० त्र० ०३० कृशांगि (सम्) सं. — पतली स्त्री ;
प्रियंगु बेल ।
कृ० त्र० ०३० कृशानु (सम्) सं. — आग, अग्नि ;
माप विशेष । — कृ० त्र० कृशस् (सम्) सं. —
शिव ।
कृ० त्र० ०३० कृशाश्व (सम्) सं. — कृशाश्व का
शिष्य ; नाटक का पात्र, अभिनेता ।
कृ० त्र० ०३० कृशोदरि (सम्) सं. — पतली
कमरवाली स्त्री ।
कृ० त्र० ०३० कृषि (सम्) सं. — कृषि, खेती-बाड़ी,
किसानी । — कृ० त्र० क (सम्) सं. — कृषक,
किसान । — कृ० त्र० वल (सम्) सं. — किसान ।
कृ० त्र० ०३० कृष्ट (सम्) वि. — खींचा हुआ आकृष्ट ;
जोता हुआ ।

चुंळ कृष्ण

चुंळ कृष्ण (सम्) सं. — चूँ, किट्ट, चुंळ
कृष्ट, चुंळ कृष्ट, चुंळ किट्ट, चुंळ
क्रिष्ण (तद्) — काला रंग, काला मृग;
कौआ; कोयल; कृष्णपक्ष; कृष्ण (दशा-
वतारों में एक); इंद्र; अग्नि; व्यास;
अर्जुन; जीवन, पानी; नदी; आकाश,
गगन; मुकुट, मौली; जाल, फंदा;
बड़ी पीपल। — चूँ कर्म (सम्) सं. —
चुरा कर्म। वि. — अमदाचारी, पापी, दोषी।
— चूँ काक (सम्) सं. — जंगली कौआ।
— चूँ जयंति (सम्) सं. — कृष्ण का
जन्म-दिन, कृष्णाष्टमी। — चूँ ते, चूँ ख
(सम्) सं. — कालापन; धोखा, छला। —
चूँ चूँ चूँ द्वैपायन (सम्) सं. — व्यास।
— चूँ पक्ष (सम्) सं. — अंधेरा पक्ष,
कृष्णपक्ष। — चूँ पांडुर (सम्) सं. —
भूरा और सफेद रंग। — चूँ भूम (सम्)
सं. — काली भूमि वाला। — चूँ भेदि
सं. — दवाई में उपयोगी एक पौधा, कटु-
रोहिणी। — चूँ मुनि (सम्) सं. —
व्यास। — चूँ मृत्तिके (सम्) सं. —
काली मिट्टी।
चुंळ कृष्ण (सम्) सं. — चुँघची का पौधा।
चुंळ लोहित कृष्ण लोहित (सम्) सं. —
काले और लाल रंग का मिश्रण, बैंगनी रंग।
चुंळ कृष्णवक्त्र (सम्) सं. — काले
मुख का वानर।
चुंळ कृष्णवर्ण (सम्) सं. — काला रंग;
राहु; शूद्र।
चुंळ कृष्णवर्त्म (सम्) सं. — आग;
राहुग्रह; ओछा आदमी।
चुंळ कृष्णवृत्ते (सम्) सं. — फूल विशेष
(Bignonia Suavedens)।
चुंळ कृष्णवेणि (सम्) सं. — एक नदी
का नाम।
चुंळ कृष्णसर्प (सम्) सं. — काला नागा।
चुंळ कृष्णसार (सम्) सं. — काला हिरन।
चुंळ कृष्णहृदय (सम्) वि. — प्रबंचक;
धोखेबाज़, कलंकित, दुष्ट।
चुंळ कृष्णाग्र (सम्) सं. — काला

अगर; काला चंदन।
चुंळ कृष्णांक (सम्) सं. — काला-चिह्न;
(कलंक)।
चुंळ कृष्णांगि (सम्) सं. — काली देवता।
चुंळ कृष्णाजिन (सम्) सं. — काले हिरन
का चर्म।
चुंळ कृष्णिके (सम्) सं. — काली सरसों।
चुंळ कृष्ण (सम्) वि. — जोतने योग्य; जोता
हुआ।
चुंळ कृसर, चुंळ कृशर (सम्) सं. —
खिचड़ी, एक प्रकार का पक्वान्न।
चुंळ कृसरि (सम्) सं. — दे. चुंळ।
चुंळ कृप्त (सम्) वि. — व्यवस्थित, तैयार-
बनाया हुआ, खोजा हुआ, सजा हुआ;
टुकड़े किया हुआ, कटा हुआ। सं. — मूल्य,
कीमत, भाव; कतरन, काट।
चुंळ कृत्तिक (सम्) सं. — मूल्य, कीमत।
चुंळ के (क) प्र. — संप्रदान कारक का प्रत्यय;
उदा. — चूँ बनके — बन को (के लिए),
चूँ पोलके — खेत (के लिए); संभाव्य
भविष्यत में अन्य पुरुष का सूचक प्रत्यय;
उदा. चूँ चूँ चूँ अवर् माळके — वे
करें!, चूँ रक्षिके — रक्षा करें!
चुंळ के (क) वि. — (समस्त-पदों में) लाल,
अरुण। — चुंळ गण (क) सं. — लाल आँख।
— चुंळ गण (क) सं. — लाल आँखोंवाला;
कोयल। — चुंळ गणलविक (क)
सं. — कोयल। — चुंळ गरि (क) सं. —
लाल, पंख। — चुंळ गरिगोल (क)
सं. — लाल पंखवाला बाण। — चुंळ गल्
(क) सं. — लाल पत्थर। — चुंळ गेड (क)
सं. — लाल अंगारा; — शिव। —
चुंळ गोडे (क) सं. — लाल छतरी।
चुंळ केक (क) सं. — हेम वर्ण, सोने का रंग,
ताम्र वर्ण।
चुंळ केकल (क) सं. — मछली विशेष।
चुंळ केकलिसु (क) क्रि. — लाल हो,
अरुण हो।
चुंळ केकरो, चुंळ केकने (क) वि. — लाल।
सं. — लालिमा।

चुंळ केचि (क) सं. — लाल या भूरे रंग की
खी; खियों का नाम।
चुंळ केचिगे, चुंळ केजिगे, (क) सं. —
पौधा विशेष।
चुंळ केचु (क) सं. — लाल रंग।
चुंळ केचिग [चुंळ केजग, चुंळ केचुगे]
(क) सं. — लाल चींटी जो काटती है।
चुंळ केड (क) सं. — अंगारा। चुंळ केड
चुंळ केडके इरुवे मुचिती — क्या
अंगारे को चींटी लग सकती है (कह)।
चुंळ केडलिसु (क) क्रि. — टुकड़े कर
विभाग कर।
चुंळ केडलिसु (क) क्रि. — जला, अंगारा
एकत्रित कर।
चुंळ केडल (क) सं. — लाल दल; लाल
हथेली, किसलय।
चुंळ केदार (क) सं. — मंदिर, देवालय।
चुंळ केदावरे (क) सं. — लाल कमल।
चुंळ केदु (क) सं. — लाल रंग। क्रि. —
ऊपर गिर या झुक।
चुंळ केपु (क) सं. — लाल रंग, रक्त वर्ण, अरु-
णिमा। — चुंळ अरगु (क) सं. — लाख। —
चुंळ कणिगले (तद् ?) सं. — लाल
कनेर। — चुंळ कल्लु (क) सं. — शोणरत्न।
— चुंळ कूवे (क) सं. — एक प्रकार का
अरारुट। — चुंळ तावरे (क) सं. — लाल
कमल। — चुंळ तुंति (क) सं. — वरट,
हड्डा। — चुंळ नेल (क) सं. — लाल ज़मीन।
— चुंळ वण (क) सं. — रंग, रक्त वर्ण।
चुंळ केपोले (क) सं. — कानों की बाली
जिसमें लाल मणि जड़ी गई हो।
चुंळ केपत्ति (क) सं. — कपास का पौधा
जिसके फूल लाल होते हैं।
चुंळ केवलु (क) सं. — खोसी।
चुंळ केवार (क) सं. — सायंकालीन अरु-
णिमा; अधिक गरमी या उष्णता के कारण
बच्चों को होनेवाला फोला।
चुंळ केवारे (क) सं. — दे. चुंळ।
चुंळ केकर (क) सं. — खरबूजे बेल।
चुंळ केकर (क) सं. — खरबूजा।

कै० ०२० के० करिसु (क) क्रि.—लाल हो, रक्त वर्ण हो ।

कै० ०२० के० करिस (क) सं.—गाली, निंदा ; अपमान ।

कै० ०२० के० करिसु (क) क्रि.—भीत हो, डर, घबरा ।

कै० ०२० के० (क) सं.—गो-शिक्षा ध्वनि, गायों को बुलाने की आवाज़ ।

कै० ०२० के० (क) सं.—गाल, कपोल ।

कै० ०२० के० (क) वि.—लाल, लाल रंग का, अरुणिम ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) सं.—थन ।

कै० ०२० के० (क) सं.—थन ।

कै० ०२० के० (क) सं.—लाल रंग ; तिरछा करने से पड़ी गाँठ, उलझन ; तरु-सार, पेड़-पौधों का अंतर्भाग ; सार, बल ; गर्व, अभिमान, घमंड । क्रि.—दो धागों को मिला या उनमें गाँठ लगा ; लगा, जड़ ; बंद कर ।

कै० ०२० के० (क) सं.—बुराई, बुरा गुण, दुष्टता ; शरारत । कै० ०२० के०—बुरी चीज़ या बात । कै० ०२० के०—बुरा आदमी ।

कै० ०२० के० (क) वि.—बुरा, हानिकर, दुष्ट ; अभाग्य, दुर्गति (कै० ०२० के०) क्रि.—बुराई कर या अहित सोच ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) सं.—बुरा, दुष्ट या नीच पुरुष ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) सं.—बुरा गुण या स्वभाव, दुष्टता, नीचता ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) सं.—बुरी, दुष्ट, अहित करनेवाली या नीच स्त्री, विनाशकारिणी स्त्री ।

कै० ०२० के० (क) सं.—बुराई, अहित, दुष्टता, बुरा स्वभाव, खराबी, नाश, विनाश ।

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) क्रि.—गिरवा ; पतन करा (प्रे.) ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) क्रि.—गिरा, नीचे गिरा,

नीचे की ओर खींच, पतन कर ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—दे. कै० ०२०. छेद या रंध में लगा अंदर घुसा या चुभ ।

कै० ०२० के० (क) सं.—वह मनुष्य जो बिना सोचे-विचारे यों ही कुछ शब्द कह देता है ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) सं.—गिराने का कार्य, निपातन, निपातन ।

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—खराब कर ; नाश कर, बुरा कर, बरबाद कर ; गिरा, पतित कर, निकाल, दूर कर ; बुझा (दया बुझाना) ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—खराब हो, नष्ट हो, बरबाद हो, गिर, पतित हो, बुरा हो, नीच हो ; निकल, दूर हो ; बुझ ; सड़ा ।

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) सं.—खराब होना, नष्ट होना, सड़ना, खराबी, नाश, पतन ; दूर होना, अदृश्यता ।

कै० ०२० के० (क) सं.—विनाश, बरबादी, तबाही ; निकालना, अदृश्यता ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—गिर, गिर पड़, पतित हो नष्ट हो, डूब जा (अक्. क्रि.) ; गिरा, डाल, सोचे-विचारे बिना शब्द कह, बड़बड़ा । सं.—बड़बड़ाहट ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—छेड़, चिढ़ा (अपनी बात या क्रिया के द्वारा) ।—असु इसु—प्रेरणार्थक रूप ।

कै० ०२० के० (क) सं.—रत्न आदि जड़ने की क्रिया ; कारीगरी, नकाशी ; खोदना ।

कै० ०२० के० (क) सं.—खेत में घास-फूस निकालने का एक प्रकार का अंकुड़ ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—खुदा, नकाशी करा, कारीगरी करा (प्रे.) ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—खोद, नकाशी कर, (रत्न आदि जड़. कारीगरी कर ; कंपित हो, काँप, थरथरा ; काट, कुतर, घास-फूस काटकर निकाल ; साफ़ कर, पतला कर, थोड़ा खोद ।

कै० ०२० के० (क) सं.—(लकड़ी, पत्थर या फल का टुकड़ा, कतरन ।

कै० ०२० के० (क) सं.—दे. कै० ०२०.

कै० ०२० के० (क) क्रि.—खुरच, नोच ; खोद ।

कै० ०२० के०, कै० ०२० के० (क) क्रि.—

बालों का विखरना या अव्यवस्थित होना । कै० ०२० के० (क) सं.—वह स्त्री जिसके बाल विखर गये हों ।

कै० ०२० के० (क) सं.—बालों की अव्यवस्था या उनका विखरना ।

कै० ०२० के० (क) क्रि.—विखर, अव्यवस्थित हो ; विकीर्ण हो ; फैल, अलग-अलग हो ; खुरच, पंजे से खुरच । सं.—विखरना, फैलना, फैलाव, विकीर्ण होना ।—कै० ०२० के० (क) सं.—विखरे बाल ।

कै० ०२० के० (क) सं.—(समस्त-पदों में) 'लाल रंग' का अर्थ सूचक । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल पशु । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल सिर । कै० ०२० के० (क) सं.—लवा बटेर । कै० ०२० के० (क) सं.—अरुण पल्लव । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल कमल । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल अधर । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल जिह्वा । कै० ०२० के० (क) सं.—लाल कुसुद ।

कै० ०२० के० (क) सं.—सुंदरता, मनोहरता, लावण्य, रमणीयता ; मलाई ।—कै० ०२० के० (क) सं.—मलाईदार दही ।—कै० ०२० के० (क) सं.—मलाईदार दूध । क्रि.—हेषा ध्वनि कर, हिनहिना ।

कै०३०६ कै० (क) सं.—अधिकता; वृद्धि । कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै०—अधिक, बहुत, और ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—गाल कपोल ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—बहरापन । कै०३०६ कै०
—बहरा आदमी, कै०३०६ कै०—बहरी स्त्री ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—(मिट्टी का) लाल रंग ;
छिलका ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—(समस्त पदों में) लाल
रंग । कै०३०६ कै० (क) सं.—लाल
रंग । कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क)
सं.—कपास का पौधा जिसके फूल होते हैं ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—लाल मिट्टी ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—लाल मछली ।
कै०३०६ कै० (क) अ.—चुपचाप, यों ही,
अकारण ही ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०—
खाँसी ।
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—खाँसी । सं.—खाँसी ।
कै०३०६ कै० (क) सं.—दे. कै०३०६ कै०.
कै०३०६ कै० (क) सं.—खाँसना, खाँसी ।
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—कर, बना, काम कर,
हाथ में ले, संपन्न कर; सेवा कर. सेवा
के योग्य हो; उपयुक्त हो । सं.—
हाथ, कर, कराग्र (करतल); हाथी की
सूँड; डाल, शाखा; स्तंभ, खंभा, छड़ी,
ढंडा, कुंजी, लकड़ी का हाथ; छोटापन,
लघुता; माध्यम, सहारा; सज्जा, साज-
सज्जा, वैभव, अलंकरण; खेत, ज़मीन;
क्षेत्र ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हाथ
बांध, हाथ का संचालन न हो, गरीब हो;
सं.—हाथ का आभरण, कंकण, वलय ।—
कै०३०६ कै० (क) सं.—सब लोगों को
ज्ञात चिकित्सा-विधि, चिकित्सा ।—कै०३०६ कै०,
कै०३०६ कै० (क) सं.—शारीरिक
परिश्रम, मेहनत, श्रम, मज़दूरी ।—कै०३०६ कै०
(क) क्रि.—हाथ से निकल, अधीन में
न रह ।—कै०३०६ कै० (अ. दे.) सं.—हाथ
का कागज़, सट्टा ।—कै०३०६ कै० (क)
सं.—हाथ पैर ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०

कै०३०६ कै० (क) क्रि.—गिड़गिड़ा, पैरों में
पड़. दीनता से याचना कर ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—विभ्रमित हो ।—
कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क) क्रि.—दीनता से
याचना कर, गिड़गिड़ा ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हिम्मत हार, निराश
हो ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क) क्रि.—
धैर्य पा; काम में लग, कटिबद्ध हो ।—
कै०३०६ कै० (क) सं.—मलयुद्ध ।—
कै०३०६ कै० (क) सं.—छोटी कुँची ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—छोटा-मोटा काम,
मज़दूरी ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—
कूली, मज़दूर ।—कै०३०६ कै० (क) अ.—
हाथ के नीचे; अधीन में (किसी के) अधि-
कार के नीचे ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०,
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हाथ में ले, कर, प्रारंभ
कर; प्राप्त कर, स्वीकार कर, मान, ध्यान
दे ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०
(क) क्रि.—स्वीकार करा, प्राप्त करा,
स्वाधीन करा ।—कै०३०६ कै० (क)
सं.—लेना, स्वीकार करना, पाना ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—लाठी. छड़ी ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—वेड़ी, शृंखला ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—ऋण, उधार. कर्ज ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हाथ से मथ या रगड़ ।—
कै०३०६ कै० (क) सं.—छोटा घड़ा, गागरी ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—(व्यक्तिगत) खर्च
के लिए उपयोगी पैसा या धन ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—सुखसुखत
कार्य ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—द्वयोर से
निकल, सीमाहीन हो, अतिक्रमण कर. संक
हो ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—चाद, धागा-
कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क) सं.—कूर,
रुग ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—सुस्ती ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—चोरी-
वाली स्त्री ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—की-की-
कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क) सं.—
उपहार, भेंट ।—कै०३०६ कै० (क) अ.—
चतुर या बुद्धिमान पुरुष ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—हिलाने

धंधे; कारीगरी ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०,
कै०३०६ कै० (क) सं.—उतना खाना जितना एक
एक हाथ में समाता है और मुँह में रखा
जाता है ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—
अंजलि भर ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै०
(क) सं.—हाथ लगा, सम्मान के साथ
हाथ मिला ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—
मिल, प्राप्त हो; सफल हो ।—कै०३०६ कै०
(क) सं.—मज़दूरी, कूली ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—मिल, प्राप्त हो; उप-
योगी हो ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—कर,
बना ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—पहुँच में
आ, पकड़ में आ, प्राप्त हो ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—छोटा काठ का हथौड़ा ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—हाथ ठकने का
वस्त्र; क्रि.—सर्दी के कारण दोनों हथे-
लियों को मिला ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क)
क्रि.—करा, बनवा, पूर्ण करा, संपन्न करा,
सफल करा ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—एक
स्थान से दूसरे स्थान ले जाने योग्य वितान ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै०—ताली बजाना ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) सं.—हस्तकौशल, दक्षता;
हाथ की सुफाई, इंद्रजाल ।—कै०३०६ कै०
(क) सं.—हाथ या बहू में सिकुड़न या
एँठन ।—कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हाथ
फैला या पसार ।—कै०३०६ कै० (क) सं—
हस्त-त्राण, हाथ का मोजा ।—कै०३०६ कै०
कै०३०६ कै० (क) क्रि.—हाथ जोड़कर नमस्कार
कर. प्रार्थना कर ।—कै०३०६ कै०, कै०३०६ कै० (क)
सं.—ताली बजाना, एक प्रकार की बड़ी
झाँझ ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—हाथ की
गलती, हाथ से गिरना ।—कै०३०६ कै०
(क) सं.—हाथ जो कमल के समान हो ।
—कै०३०६ कै० (क) सं.—हाथ में पक-
ड़ने का दीपक, टार्च ।—कै०३०६ कै० (क)
क्रि.—हाथ लगा; शीघ्रता या उतावलेपन
से पकड़, बलपूर्वक कड़, गड़बड़ पकर;
सं.—शीघ्रता या बलपूर्वक पकड़ने की
क्रिया ।—कै०३०६ कै० (क) सं.—हाथ का

आभूषण ।—६०३३३ दोलसु (क) सं. —
सुक्की, मार-पीट ।—६०३३३ नीरु (क) सं.—
विवाह के समय वर-वधू के हाथ में डाला
गया पानी ।—६०३३३ नूति (क) सं.—हथेली
में होनेवाला घाव ।—६०३३३ नेगहु (क)
सं.—हाथ ऊपर उठाने की क्रिया ।—६०३३३
नेरवु (क) सं.—सहायता, मदद, सहारा ।
६०३३३ नेय (क) सं.—दूसरे के अधीन में
रहनेवाला, सेवक ।—६०३३३ वरे (क) सं.—
डमरू ।—६०३३३ पावड (क) सं.—
रूमाल ।—६०३३३ पिडि (क) सं.—दस्ता,
मुठिया; धनुष टाँगने का स्थान; दर्पण,
आईना ।—६०३३३ बदलु (क) सं.—(धन
का) उधार, कर्ज ।—६०३३३ बले (क) सं.—
बलय, कंकण ।—६०३३३ बाचि (क) सं.—
छोटा बसूला ।—६०३३३ बाळु (क) सं.—
घास काटने की तलवार, हँसिया ।—६०३३३
बिडु (क) क्रि.—हाथ छोड़; सहारा देना
छोड़; ।—६०३३३ मगग (क) सं.—हाथ-
करघा ।—६०३३३ मरे (क) क्रि.—व्यग्र
हो; व्याकुल हो; चलित हो । सं.—नाच
में एक भंगिमा, अचल-भाव ।—६०३३३
मसकु (क) सं.—हाथ पर लगी-काली धूली ।
—६०३३३ माट (क) सं.—हाथ का इगारा
या चेष्टा ।—६०३३३ माडु (क) सं.—हाथ
से इशारा या संकेत कर, हाथ के द्वारा कुछ
समझा; मार या प्रहार कर, आक्रमण
कर, विरोध कर; शस्त्रसंचालन कर, हथि-
यार चला; लेन-देन या खरीद-फरोख्त में
मूल्य-निर्णय कर ।—६०३३३ मिगु (क) क्रि.
अधिक हो, अधिक बली या अधिकार युक्त
हो । ६०३३३ मिचु (क) क्रि.—हाथ से
निकल, (किसी के) अधिकार से बाहर हो,
वश में न हो, ।—६०३३३ मीरु (क) क्रि.=
६०३३३ मीरु ।—६०३३३ मुनि (क) क्रि.—
हाथ जोड़, प्रणाम कर, विनय कर ।—
६०३३३ मुट्टु (क) सं.—छोटे-छोटे उप-
करण; क्रि.—हाथ से छू ।—६०३३३ सुरि
(क) क्रि.—हाथ मरोड़; असहाय स्थिति
हो ।—६०३३३ मू लि (क) सं.—आभरण-

हीन हाथ या बाहू । ६०३३३ क्यक्षर (क)
सं.—हाथ की लिखी चीज़; हस्ताक्षर ।
६०३३३ क्यलागदु (क) क्रि. सं.—
(हाथ से) नहीं होता, संभव नहीं । ६०३३३
क्यळवि (क) सं.—संभावना, अधिकार,
बल । ६०३३३ क्य्याडिसु (क) क्रि.—
हाथ का संचालन कर, (किसी वस्तु को)
इधर-उधर हिला हाथ से धीरे-धीरे दबा
या रगड़, हाथ फेर, सहला, थपथपा ।—
६०३३३ क्य्यार् (क) क्रि.—दोनों हाथ
जुड़ा, तैयार हो; पूर्ण हो । ६०३३३
क्य्याळु (क) सं.—मज़दूर या सेवक का
सहायक । ६०३३३ क्यिलदवनु (क)
सं.—वह जिसके हाथ न हो । ६०३३३
क्य्यासे (क) सं.—रिश्तत, घूस ६०३३३
क्य्येण (क) सं.—हाथ का निकाला (अर्थात्
मिल का नहीं) तेल; एरंडी का तेल (मै.
प्र.) । ६०३३३ क्य्योडडु (क) क्रि.—
(किसी वस्तु को लेने के लिए) हाथ पसार ।
—६०३३३ राटे (क) सं.—छोटी धिरनी ।—
६०३३३ राटण (क) सं.—६०३३३ — ६०३३३
व (क) क्रि.—हाथ लग, प्राप्त हो, मिल ।
—६०३३३ वरे (क) सं.—छोटा ढोल ।—
६०३३३ वरेग (क) सं.—हाथ से या डंडे से
होना बजानेवाला ।—६०३३३ वत्तिसु,
६०३३३ वत्तिसु (क) क्रि.—निकाल, मुक्त-
क, छोड़, दूर कर; दे ।—६०३३३ वश-
व (क) क्रि.—हाथ में आ, वश में हो,
धी; निकार में हो ।—६०३३३ वाड (क) सं.—
हो, डूब उ में होना, पास होना; अधिकार ।—
६०३३३ वार (क) सं.—परकाल (Compas-
व; प्रशंसा, सराहना ।—६०३३३
वडवडाहट (क) क्रि.—प्रशंसा या सराहना कर ।
६०३३३ केणकु (क) सं.—हाथ की पकड़ ।
—या क्रिया केवडिते (क) सं.—हाथ की पकड़ ।
६०३३३ विल [६० विल] (क) सं.—हाथी
कत्तने (क) सं. केनथने ।—६०३३३ वीसु [६० वीसु]
मा; कारीगरी, —चलते समय हाथों को धीरे-धीरे
६०३३३ केतवारि (क) हिला; लडने के पूर्व हाथ को
कालने का एक प्र-६०३३३ वागु (क) क्रि.—प्राप्त हो,
६०३३३ वीय (क) सं.—ताली

बजाना ।—६०३३३ वोल (क) सं.—अपने
हाथ से जुती गई ज़मीन ।—६०३३३ वोग
(क) सं.—हस्तकौशल; निपुणता ।—
६०३३३ सन्ने (क) सं.—हाथ का संकेत ।—
६०३३३ सागु (क) क्रि.—संभव हो; सफल
हो ।—६०३३३ सार्, ६०३३३ सारु (क) क्रि.
—हाथ जोड़; प्राप्त हो, मिल ।—६०३३३
साले (क) सं.—(मंदिर का) बरामदा ।—
६०३३३ सदिने (क) सं.—छोटी बोटल ।—
६०३३३ सुरिगि, ६०३३३ सुरिगे (क) सं.—
छोटा कटार, चाकू ।—६०३३३ सूर [६०३३३
सूर] (क) सं.—लूट; विनाश ।—
६०३३३ सेरे, ६०३३३ सेरे (क) सं.—गिरफ्तारी ।
—६०३३३ सेरु (क) क्रि.—हाथ में आ,
मिल ।—६०३३३ सोडर (क) सं.—छोटा
दिया ।—६०३३३ सोलु (क) सं.—कीसी
भारी चीज़ को उठाने के कारण बहुओं को
होनेवाली थकावट या पीड़ा ।—६०३३३ होड़े
(क) क्रि.—(किसी बात की प्रतिज्ञा करते
समय) जिसको वचन दिया जाता है उसके
हाथ में हाथ रख; सौदा निर्णय कर; सं.—
गोधा, चमड़े का पट्टा जो बाईं भुजा पर
धनुष की रगड़ से बचने को रखा जाता है ।
—६०३३३ होल (क) सं.—दे, ६०३३३
छोटा खेत ।
६०३३३ केयि (क) सं.—क्षेत्र, खेत, वप्र । क्रि.
दे, ६०३३३.
६०३३३ केयके (क) सं.—क्रिया, करना, संपन्नता;
छल, कपट, धोखा ।
६०३३३ केयत (क) सं.—करना, बनाना, संव
करना, क्रिया, कर्म; उपाय; कपट, छ
धोखा ।
६०३३३ केयदाळु (क) सं.—कुटिलता, प्र
व्यवहार, छल, कपट ।
६०३३३ केयिद (क) वि.—पिनद; बंद, अर्ह
वस्त्रों से सज्जित ।
६०३३३ केयडु (क) सं.—६०३३३ केडु — श
आयुध, हथियार ।—६०३३३ केय (क) क्रि
आयुध का उपयोग कर, हथियार चला

कंठगो केळगु

लड़। — कंठ कार [कंठ कार] (क) सं.—
सैनिक, सिपाही। — कंठकार तन (क)।
सं. शस्त्र-संचालन की निपुणता।

कंठगो केळगु (क) सं.—करना, कार्य, कर्म, भारी
करत, वीरता का कार्य; बुद्धिमत्ता, दक्षता,
निपुणता; धूर्तता, छल, वंचना।

कंठगो केळगु (क) सं.—हाथ; खेल, क्षेत्र।

कंठगो केळगु (क) क्रि.—करा, करवा, बना,
बनवा, काम, करा (करवा)।

कंठगो केळगु (क) सं.—करना, कर्म।

कंठ केर (क) सं.—कंठ केरवु, कंठ केरहु।

कंठ केरु—(चमड़े का) चप्पल, जूता।

कंठ केरलु (क) सं.—चावल पकाये गये
बर्तन के अंदर, तल में खुरचना, खुरचन।

कंठ केरकु (क) सं.—वह जो रुक्ष या खुर-
चनेवाला हो; पपड़ी, एक प्रकार का चर्म-
रोग।

कंठ केरदु (क) क्रि.—नख से खोद, नोच,
खुरच।

कंठ केरवु (क) सं.—दे. कंठ।

कंठ केरसे (क) सं.—कंठ केरसे, कंठ
केरसे, कंठ केरसे—चौकाकार, और सम
तल (बाँस की) टोकरी। — बाँस का
बाणियव (क) सं.—बड़े मुँह का मनुष्य;
रहस्य बतला देनेवाला।

कंठ केरहु (क) सं.—दे. कंठ।

कंठ केरलु, कंठ केरलु (क) क्रि.—पुकार,
चिला; चीख, कराह, रोग अधिक हो;
रुष्ट हो, गुस्से में आ, क्रुद्ध हो।

कंठ केरलुचु (क) क्रि.—चिढ़ा, क्रुद्ध
करा; क्रुद्ध हो, रुष्ट।

कंठ केरलु (क) क्रि.—दे. कंठ; बढ़,
अधिक (दुःख या दर्द), फैल (घाव का
फैलना)।

कंठ केरलुचु (क) क्रि.—भुजाएँ थपाकर या
ताली बजाकर शोर मचा, आस्फोटन कर;
गर्जन कर; दे. कंठ केरलु।

कंठ केरसु (क) क्रि.—हजामत करा, क्षौर
करा; खुरचा (प्रे.)।

कंठ केरे (क) क्रि.—खुरच, खुजला, नोच,

नख से खुरच, नख से खोद; हजामत कर,
क्षौर कर। सं.—गो-समूह; गायों का
झुंड, तालाब, तटाक।

कंठ केरे (क) सं.—दे. कंठ; छेद बना।

कंठ केरु (क) सं.—दे. कंठ।

कंठ केरु (क) सं.—पेड़ की डाली, शाखा।

कंठ केरु (क) वि.—दायाँ, बायाँ, एक ओर

का; एक तरफ का; (ओर, दिशा में, तरफ);

कुछ, थोड़ा, कई, अल्प। कंठ केरु

—दोनों ओर। कंठ केरु—वह पुरुष

जो दोनों ओर हो या एक ओर हो। कंठ केरु

केरुदु (क) सं.—अन्य वस्तुओं की बगल

में रखी गई थाली। कंठ केरु—एक

ओर ले। कंठ केरु केरुदोलु—एक

ओर हो। कंठ केरु—बायाँ और

दायाँ। कंठ केरु—कुछ; कंठ केरु

केरुवुगलु—कुछ (ब. व.)। कंठ केरु

केरु जनरु—कुछ लोग; कंठ केरु

केरु पंडितरु—कुछ पंडित या विद्वान।

कंठ केरुचु (क) सं.—मदद, सहायता,

साहाय्य।

कंठ केरुस (क) सं.—काम, कार्य, कर्म;

नौकरी, पेशा; क्रिया; उपयोग, महत्व,

लाभ। कंठ केरु केरुसके बलिद (क)

सं.—कर्मठ, काम करने में पटु। कंठ केरु

केरुसके मंदेरेयुववु

(क) सं.—कामचोर पुरुष। कंठ केरु

केरुसके मंयोडुववु

(क) सं.—चतुर या दक्ष, कर्मशूर। कंठ केरु

केरुसके बरु (क) क्रि.—उपयोगी

हो। कंठ केरु केरुसगळति (क) सं.

—सुस्त या कामचोर स्त्री। कंठ केरु केरु

केरुस गळतिगे कसु

हुष्टि हागे—(जैसे) कामचोर (या सुस्त)

स्त्री को बच्चा हुआ हो (कह.)। कंठ केरु

केरुस हेरु (क) क्रि.—काम करने की

आज्ञा दे।

कंठ केरुसि (क) सं.—काम करनेवाला

व्यक्ति; नाई, हजाम।

कंठ केरुसिग, कंठ केरुसिगव,

कंठ केरुसि (क) सं.—दे. कंठ (२).

कंठ केले (क) सं.—जोर से चिला, उत्साह से

चिला, हला कर, शोर मचा।

कंठ केलेत (क) सं.—निंदात्मक कोलाहल,

गाली।

कंठ केले, कंठ केले (क) सं.—रस्सी या धागे

का टुकड़ा।

कंठ केलेसु (क) क्रि.—पतली पट्टी

चीर, खमाची बना; सताया जा कष्ट पा,

व्यग्र हो।

कंठ केले (क) सं.—दे. कंठ; टुकड़ा, चीरने

के बाद बचा हुआ अंश; आयुध, हथियार;

कंपन।

कंठ केलेगेडे (क) क्रि.—चूर-चूर कर,

टुकड़े कर।

कंठ केले, कंठ केले (क) सं.—एक

पौधा जिसके फूल अंगूरी रंग के होते हैं

(*Ixora coccinea*)

कंठ केलेने (क) सं.—ढेला मारते समय

आनेवाली आवाज़।

कंठ केले, कंठ केले (क) सं.—कुकुरमुत्ता,

छत्रक।

कंठ केले (क) सं.—असहायता। अरुचि,

उबाई; झगड़ा, कलह; बुरी दृष्टि, दृष्टि.

दोष।

कंठ केले केले केले (क) सं.—पंक,

कीचड़, दलदल।

कंठ केले केले (क) सं.—स्नानागार की

मोरी।

कंठ केले (क) सं.—दे. कंठ; पौधा विशेष

(*The cocco*)।

कंठ केले (क) सं.—दे. कंठ (२).

कंठ केले (क) वि.—नीचे का, निम्न, अधो-

भाग का। कंठ केले—नीचे या नीचे-

के भाग में। कंठ केले (क) सं.—

नीचे का अधर। कंठ केले (क)

सं—नीचे का जबड़ा। कंठ केले

(क) सं.—नीचे का भाग।

कंठ केले (क) अ.—के नीचे, तले, अधोभाग

में, नीचे की ओर या दिशा में, के पहले।

कौ०००० कैयि कौ०००० कैयि (क) सं. — हाथ; कर ।
 कौ०००० कैरव (सम्) सं. — कोकावेली, चंद्रमा की चादनी में खिलनेवाली सफेद कमल) —
 बांधव, मित्र (सम्) सं. — चंद्रमा । — मित्र विणि (सम्) सं. — सफेद कमलों का समुदाय ।
 कौ०००० कैलास (सम्) सं. — हिमालय पर्वत का शिखर विशेष । — दुर्ग, पुरि (सम्) सं. = कौ०००० ।
 कौ०००० कैवर्त (सम्) सं. — मछुआ, मछाह ।
 कौ०००० कैवर्त मुस्तक (सम्) सं. — एक सुगंधित तृणविशेष ।
 कौ०००० कैवल्य (सम्) सं. — एकत्व, एका-
 न्तता ; मोक्ष, मुक्ति ; निर्मलता, शुद्धता ;
 मुख्य स्थान ; वेदों की शाखा ।
 कौ०००० कैशिक (सम्) सं. — बालों का परिमाण ;
 प्रेम, प्रेमभाव ; कामुकता ।
 कौ०००० कैशिकि (सम्) सं. — नाट्यशास्त्र की एक वृत्ति ।
 कौ०००० कैश्य (सम्) सं. — बालों का परिमाण, संपूर्ण केश ।
 कौ०००० कौक, कौ०००० कौग, कौ०००० कौगु (क) सं. — क्षुद्रता, तुच्छता ; परिहास, हँसी, दिलगी ; दिलगी करनेवाला, विदूषक ; क्षुद्र पुरुष ।
 कौ०००० कौकण, कौ०००० कौकण, कौ०००० कौकण (क) सं. — कौकण देश । — स्थ (क) सं. कौकण देश का ब्राह्मण ।
 कौ०००० कौकणि (क) सं. — कौकण-ब्राह्मण जाति का पुरुष ।
 कौ०००० कौकणिग (क) सं. — कौकण देश का ब्राह्मण ।
 कौ०००० कौकुल, कौ०००० कौकुल (क) सं. — काँख, बगल ।
 कौ०००० कौकुल, कौ०००० कौकुल (क) सं. — दे. कौ०००० ।
 कौ०००० कौकि (क) सं. — अँकुड़ा, कुलाबा, काँटा, मछली फँसाने की बँसी ।

कौ०००० कौकिसु (क) क्रि. — वक्र कर, टेढ़ा कर ; रूप बिगाड़ ।
 कौ०००० कौकु (क) क्रि. — वक्र हो, टेढ़ा हो, तिरछा हो, रूप बिगाड़, रूप परिवर्तन हो, भग्न हो, कुटिल हो ; झूठा हो । सं. — वक्रता, टेढ़ापन, तिरछापन, भग्नता, कुटिलता ; गुरु, गुरुवर्ण ।
 कौ०००० कौकुल (क) सं. — दे. कौ०००० ।
 कौ०००० कौग (क) सं. — दे. कौ०००० ।
 कौ०००० कौगरी (क) सं. = कौ००००
 कौगरी बंगरी — हका-बका होना ।
 कौ०००० कौगु (क) सं. — दे. कौ०००० ; देश विशेष का नाम (वर्तमान केरल का एक भाग) ।
 कौ०००० कौगे, कौ०००० कौबु, कौ०००० कौबे (क) सं. — पेड़ की शाखा, डाली ।
 कौ०००० कौच, कौ०००० कौचे (क) वि. — थोड़ा ; कुछ, लेशमात्र ।
 कौ०००० कौचिगे (क) सं. — बच्चों को पहनाने की टोपी ।
 (१) कौ०००० कौचे (क) वि. — दे. कौ०००० । सं. — आवरण, प्राचीर, शाल, हाता, घेरा । ; उत्तर काल की या बाद की वस्तु ।
 (२) कौ०००० कौचे (तद्) सं. = कौ०००० कंच, कौ०००० कंचु-कौच (तद्) — कुरर पक्षी ।
 कौ०००० कौडे (क) सं. — गदा ; मुद्गर ; पेड़ का कटा हुआ भाग, ढँड, लकड़ी का कुंदा-लट्ठा ।
 (१) कौ०००० कौड (क) सं. — पहाड़, पर्वत । — कौड कुरि ; गौड गुरि (क) सं. — रौहिष ; जंगली भेड़ ।
 (२) कौ०००० कौड (तद्) सं. — कुंडः (तद्) ; कूड़ा, कूड़ी, हौदी ।
 कौ०००० कौडल, कौ०००० कौडलु (तद्) सं. — कुंडलः (तद्) ; कानों की बाली, कर्णाभरण ।
 कौ०००० कौडसु (क) सं. — एक पौधा विशेष (सूप-कारिका नामक पौधा) ।
 कौ०००० कौडमारु (क) सं. — निष्फल-क्रिया, मूल रूप ।

कौ०००० कौंडाट (क) सं. — स्तुति, प्रशंसा, सराहना । कौ०००० कौंडाडु (क) क्रि. — गुण-कथन कर ।
 कौ०००० कौंडि (क) सं. — अँकुड़ा, खूँटी, ताले क अंदर की कड़ी ; बिच्छू का पुच्छ ।
 कौ०००० कौंडिसु (क) क्रि. — कलंक लगा, अपयश कर, बदनाम कर ।
 कौ०००० कौंडु (क) कृ. — (‘कौण्ड’ कोल्’ से) — लेकर ; खरीद कर ।
 कौ०००० कौंडे (के) सं. — कौ०००० कौंडेय — चुगली, शिकायत ; अपयश, बदनामी ; गाली ; सिर पर धारण करने की मोतियों की लड़ी या माला ; गुच्छा ; जूड़ा ; झब्बा ।
 कौ०००० कौंडेग (क) सं. — दे. कौ०००० ; शिकायत करनेवाला, चुगलखोर, बदनाम करनेवाला, अपयश फैलानेवाला ।
 कौ०००० कौंडेगार [गौड गार] (क) सं. — चुगलखोर, अपयश फैलानेवाला पुरुष ।
 कौ०००० कौंडेतन (क) सं. — दे. कौ०००० ।
 कौ०००० कौंडेय (क) सं. — दे. कौ०००० ।
 कौ०००० कौंत (तद्) सं. — कुंत (तद्) प्राप्त नामक शस्त्र, भाला ।
 कौ०००० कौंति (तद्) सं. — कुंती (तद्) ।
 कौ०००० कौंटु (क) कृ. — (‘कौण्ड’ कोल् या ‘कौण्ड’ कोल्लु = मार) — मारकर ।
 कौ०००० कौंदे (क) सं. — मोटी दालचीनी का पेड़ ।
 कौ०००० कौंपे (क) सं. — काँटों की झाड़ी २. छोटा ग्राम ; झोंपड़ी ।
 कौ०००० कौंबु (क) सं. — पशुओं का सींग, वह जो सींग-जैसा हो, शृंग, ललाम ; हाथी का निकला हुआ दाँत ; पेड़ की शाखा, डाली ; संकेत-स्थान, संकेतस्थल । क्रि. — ले, खरीद ।
 कौ०००० कौंबुविके (क) सं. — खरीदना, लेना ।
 कौ०००० कौंबे (क) सं. — डाल, शाखा ।
 कौ०००० कौंयि (क) सं. — मारने पर कुत्तों के मुँह से निकलनेवाली आवाज़ ।

कौटिल्य कोकर

कौटिल्य कोकर (क) सं.—असह्यता; चिल्लाहट, गर्जन; विरोध।

कौटिल्य कोकरि (क) सं.—हक्कबक्का होना।

कौटिल्य कोकरिसु (क) क्रि.—डरा, धमका, डैंट, फटकार बता; गाली दे, कोस; तिरछा हो, ठिठुर, काँप (सर्दी के मारे या भय से), सिकुड़, ठिठक; चिल्ला, पुकार, गर्जन; खिसिया; मुँह बँद करके हँस।

कौटिल्य कोकरे (क) सं.—सारस; बगुला।

कौटिल्य कोक्कि (क) सं.—पेड़ का टूँठ, पेड़ की टेढ़ी शाखा; वक्रता, टेढ़ापन; तिरछापन, दुष्टता।

कौटिल्य कोक्कु (क) सं.—दे. कौटिल्य; चोंच।

कौटिल्य कोक्के (क) सं.—टेढ़ापन; वक्रता; कुलाबा, काँटा (अड़चन, बाधा)।

कौटिल्य कोक्के (क) सं.—दे. कौटिल्य।

कौटिल्य कोग्ग (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन; वक्र या कर्कश ध्वनिवाला पुरुष।

कौटिल्य कोगिग, कौटिल्य कोगिगि, कौटिल्य कोगिगि, कौटिल्य कोग्गे (क) सं.—एक पौधा विशेष (Tephrosia purpurea)।

कौटिल्य कोग्गु (क) सं.—कानों का मल।

कौटिल्य कोच्चिके (क) सं.—काटने की क्रिया।

कौटिल्य कोच्चिसु (क) क्रि.—कटा, कटवा (प्रे.)।

(१) कौटिल्य कोच्चु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर; अधिक बोल, बड़बड़ा, डींग हाँक; आटे को साफ कर. पछार। सं.—काटना, काटने की क्रिया, काटने का आयुध; पुडिया, चूर्ण; धूल मूत्र की दुर्गंध।

(२) कौटिल्य कोच्चु (तद्) सं.—कूर्चम् (तत्); गुच्छा; मूठा; गट्टर।

कौटिल्य कोच्चे (क) सं.—दलदल, कीचड़, पंक।

कौटिल्य कोज्जे, कौटिल्य खोजा (अ. दे.) सं.—खोजा (फ़ारसी); नपुंसक, कापुरुष।

कौटिल्य कोट, कौटिल्य कोटगे, कौटिल्य कोटगे,

कौटिल्य कोट्टेग, (तद्) सं.—कुटंक: (तत्); छोटी झोंपड़ी, गोशाला।

कौटिल्य कोटार, कौटिल्य कोटार (तद्) सं.—कोट्टागार (तत्); खलियान; अनाज (भूसे से अलगाने के लिए) पीटने का स्थान।

(१) कौटिल्य कोट्ट (क) सं.—बाँस की नली; एक पौधा। वि.—बिलकुल अंत का, अंतिम।

(२) कौटिल्य कोट्ट (तद्) सं.—दे. कौटिल्य; कोष (तत्)।

(३) कौटिल्य कोट्ट (सम्) सं.—कोट, गढ़, किला। — गौड गार् (सम्) सं.—किलेदार।

कौटिल्य कोट्टज (क) सं.—राज कर, भेंट। कौटिल्य कोट्टडि (अ. दे.?) सं.—कोठरी, कमरा।

कौटिल्य कोट्टण (क) सं.—धान को कूटने की क्रिया। — कूट अक्कि (क) सं.—कूटा हुआ (अर्थात् मिल का नहीं) चावल। — गौड गित्ति (क) सं.—धान कूटनेवाली स्त्री।

कौटिल्य कोट्टन (अ. दे.) सं.—खोटापन (हिं.); वक्रता; छल, कपट।

कौटिल्य कोट्टवळ (सम्) सं.—किलेदार।

कौटिल्य कोट्टस (क) सं.—भूना हुआ माँस।

कौटिल्य कोट्टार (तद्) सं.—दे. कौटिल्य।

(१) कौटिल्य कोट्टि (क) सं.—निर्लज्ज, बेशर्मे, नीच. तुच्छ या क्षुद्र पुरुष।

(२) कौटिल्य कोट्टि (अ. दे.) वि.—खोटा (हिं.); झूठा, अविश्वास के योग्य, छलिया, कपटी, बुरा, खराब; दुराचारी, पापी।

(३) कौटिल्य कोट्टि (अ. दे.) सं.—कमरा, कोठी।

कौटिल्य कोट्टु (क) सं.—नोक, अग्र भाग; चूचुक; मुकुट, कलंगी; सिर पर धारण करने का एक आभूषण विशेष, चूडा। क.—(कौटिल्य कोट्टु = दे.) — देकर।

कौटिल्य कोट्टुक, कौटिल्य कोट्टुग (क) सं.—(क) टिटिहरी।

कौटिल्य कोट्टे (क) सं.—फलों की गुठली या गुद्दी।

कौटिल्य कोट्टण (क) सं.—दे. कौटिल्य।

कौटिल्य कोठडि (अ. दे.?) सं.—कमरा; कोठरी।

(१) कौटिल्य कोड (क) सं.—कोमलता, मृदुता; कोमल वय, यौवन (कौटिल्य कोडगुसु — सयानी लड़की, युवती; कन्या); शहद, मधु; तलवार, हँसिया।

(२) कौटिल्य कोड (तद्) सं.—कुट: (तत्); जलपात्र, घड़ा, गागरी।

कौटिल्य कोडकु (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन।

कौटिल्य कोडके, कौटिल्य कोडके (क) सं.—कान।

कौटिल्य कोडग (क) सं.—दरिद्रता, गरीबी; आवश्यकता।

कौटिल्य कोडगु (क) सं.—कूर्ग जो वर्तमान मैसूर राज्य का एक भाग है।

कौटिल्य कोडगे (क) सं.—देन; भेंट; उपहार; अनुदान।

कौटिल्य कोडचि (क) सं.—एक पौधा विशेष।

कौटिल्य कोडचु, कौटिल्य कोडसु (क) सं.—हाथ की उंगली से या कनखोदनी से कानों का मल निकाल; बर्तन में लगी गंदगी को हाथ से (रगड़कर) निकल।

कौटिल्य कोडत (क) सं.—शीतलता; सर्दी, जाड़ा; कुत्ते के गर्दन पर बांधा जानेवाला डंडा; घाव का दर्द (पीडा)। क्रि.—खोखला कर, थोथा कर; छेद, भेद, रंघ कर, चुभ।

कौटिल्य कोडति, कौटिल्य कोडंति (क) सं.—लौहे की हथौड़ी।

कौटिल्य कोडपु, कौटिल्य कोडु, कौटिल्य कोडहु (क) क्रि.—झाड़, हाथ से पटक या फैला, हिला।

कौटिल्य कोडमे, कौटिल्य कोडंवे (क) सं.—मछली पकड़ने की टोकरी, जाल।

कौटिल्य कोडरिसु (क) सं.—एक आभूषण विशेष।

कोडलि, कोडलि (तद्) सं.—कुटार: (तत्) कुल्हाडी, परशु ।
 कोडवु (क) सं.—दे. कोडवु. क्रि.—दे, कोडवु.
 कोडसिगु (क) सं.—एक पौधा विशेष (The tree cluystia collina) ।
 कोडसु, कोडहु (क) सं.—दे. कोडवु.
 कोडि (क) सं.—बल, शक्ति; सामर्थ्य; मोटापन)
 कोडिगे (क) सं.—कोडगै.
 कोडिसिगु, कोडसिगे, कोडसिगु (तद्) सं.—कुटजक (तत्), एक वृक्ष का नाम ।
 कोडिसु (क) क्रि.—दिला, दिलवा (प्रे.) ।—वि. विक्रे = दिलाना ।
 कोडु (क) क्रि.—दे. प्रदान कर; दान दे ।
 कोडु, कोडुविके, कोडुह (क) सं.—देना, प्रदान करना; देन, दान ।
 कोडे (क) सं.—छाता, छतरी । क्रि.—विकीर्ण कर; छेद कर, उंगली से खोद या नोच, निकाल; कानों का मल उंगली से कनखोदनी से निकाल; दर्द कर, पीडा उत्पन्न हो; बहुत खुजलाहट हो. गुदगुदी हो ।
 कोडु (क) सं.—एक प्रकार का इन्द्रधनुष; मूल या बेवकूफ मनुष्य ।
 कोण (क) सं.—तालाब, सरोवर; नाक की आवाज़ । कोण कोण एन्नु कोण कोण एन्नु—नाक से बोल ।
 कोणकु (क) क्रि.—लौघ, कूद, उछल (पशुओं का लौघना) । सं.—लौघना उछलना ।
 कोणगु (क) सं.—खुर ।
 कोणत (क) सं.—गदा, मुदगर ।
 कोणपि (क) सं.—मूसल, कण्डनी (द. क.) ।

कोणबिगे (क) सं.—काठ की थाली; काठ का बर्तन (द. क.) ।
 कोणविके (क) सं.—दे. कोणबिगे.
 कोणसु (क) सं.—दुष्ट मृगों का बच्चा ।
 कोत (क) सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द ।
 कोतम्बर, कोतम्बर (क?) सं.—धनिया की पत्ती ।
 कोत्तणि (क) सं.—झुण्ड, समूह, समुदाय ।
 कोत्तल, कोत्तल (क) सं.—कोट दुर्ग का प्राचीर ।
 कोत्तलि (क) सं.—दे. कोत्तल.
 कोत्ति (क) सं.—बिली या बिलाव ।
 कोत्तु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर, बोटी-बोटी कर । सं.—गुच्छा; समूह ।
 कोत्तमरि, कोत्तमरि (क) सं.—दे. कोत्तम्बर.
 कोत्तुम्बर (क) सं.—दे. कोत्तम्बर.
 कोदल, कोदल (क) क्रि.—तुतलाकर बोल, रुक-रुक कर बोल । सं.—तुतलाना, तुतली ।
 कोदल (क) सं.—दे. कोदल.
 कोनर, कोनरु (क) क्रि.—अंकुरित हो, पल्लव हो; निकल, विकसित हो. कुसुमित हो; अधिक हो । सं.—पल्लव, किसलय; मृणाल, कमल, की नाल ।
 कोनदे (क) सं.—वक्रता, टेढ़ापन; दुष्टता ।
 कोने (क) क्रि.—स्वीकृत कार्य में वृद्धि पा; हिल, हिल-डुल । सं.—अन्त्य, समाप्ति, छोर, अखिरी भाग; कोना; अग्र भाग; पेड़ की शाखा ।
 कोप्प (क) सं.—झोंपड़ी, छोटा गाँव ।
 कोप्पट (क) सं.—धनुष का अग्र भाग, सींग की नोक ।
 कोप्पर (क) सं.—भुजा, कन्धा ।
 कोप्परिगे (तद्) सं.—कर्पर (तत्); कड़ाह, कड़ाही ।

कोप्परिसु, कोप्परिसु, कोप्परिसु (क) क्रि.—मार, पीट; कुचला जा; अधीन में हों ।
 कोप्पल (क) सं.—राशि, ढेर; छोटा ग्राम ।
 कोप्पु (क) सं.—क. झुंझ; कान के ऊपरी भाग में धारण करने का आभूषण; जूड़ा, केशबंध; वेणी में धारण करने का आभूषण विशेष ।
 कोप्परि, कोप्परि (क) सं.—गरी ।
 कोप्पट्टु (क) सं.—धान का भूसा ।
 कोप्पिग (क) सं.—गर्वीला पुरुष ।
 कोप्पिल (क) सं.—असभ्य, अशिष्ट, गँवार या क्षुद्र मनुष्य ।
 कोप्पिसु (क) क्रि.—मोटा हो; मोटा कर ।
 कोप्पु (क) क्रि.—मोटा हो, तगड़ा हो; अधिक हो, वृद्धि पा; घमंडी हो, गर्व कर, उद्धत हो, ढीठ हो । सं.—चरबी, वसा ।
 कोप्पर, कोप्पर (तद्) सं.—दे. कोप्पर.
 कोप्पे (क) क्रि.—जलने लग (जैसे आग का जलना या क्रोध का उभड़ना) ।
 कोप्पे (क) सं.—अनाज की खेती एक प्रकार की घास ।
 कोप्प (क) क्रि.—काट. आरे से काट फसल काट; तोड़ (फल, फूल आदि) । सं.—काटना, तोड़ना ।
 कोप्पक (तद्) सं.—कुहक (तत्) ।
 कोयि (क) क्रि.—दे. कोयि.
 कोयिक (क) सं.—काटने वाला पुरुष ।
 कोयिकतन (क) सं.—काटना, कटाव ।
 कोयिड (क) सं.—काटना; काटने का आयुध विशेष ।
 कोयिळु (क) सं.—काटना, कटाव; तोड़ना ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— कटा, कटवा ; तुड़ा, तुड़वा ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— वह स्त्री जिसके कान आदि कट गये हो ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— काटनेवाली स्त्री ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— काटनेवाला ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) अ.— हाय । हाय ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— 'कोर-कोर' ध्वनि, खुराटा ; बिछी की हर्ष-ध्वनि ; लाम, फायदा, उपयोग ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— एक पौधा विशेष ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— कौटिल्य (तद्) सं.— कौटिल्य (तद्) ; कुरर पक्षी ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दुःख, व्यथा, खेद, शोक ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— रसहीन कर, व्यथित कर, दुःखी कर ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— व्यथित हो, दुःखी हो ; ग्लानि कर, रसहीन हो । सं.— दुःख, व्यथा, ग्लानि ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— कपि, बंदर ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— उपहास कर, मज़ाक उड़ा ; निंदा कर, तिरस्कार ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— एक वृक्ष विशेष की गुठली ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— उत्पन्न न होने देने या बढ़ने न देने की स्थिति, भग्न करना, भंग ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य २.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दलदल का एक पौधा ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— घोड़े को मलने का खरहरा ।

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.—

गर्दन, गला, कण्ठ, गला और गर्दन ; स्वर, आवाज़, ध्वनि ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— पुकार, चिला, चीख ।

कौटिल्य कौटिल्य (अ. दे.) सं.— व्याकुलता, व्यग्रता, चिंता ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— घरांटा, सोते समय नाक से शब्द निकाल ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— काटना, कटाव (कौटिल्य कौटिल्य— नुकीला, रुक्ष पत्थर) ; कमी, न्यूनता, छोटापन ; शेष, बचत ।

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— नदी के पानी से बननेवाला गहड़ा ; नाला, नहर ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— काट ; दाँतों से काट ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— एक पहाड़ी जाति लोग जो प्रायः लकड़ी की कथियाँ बेचा करते हैं ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (अ. दे.) सं.— कोड़ा (हिं.) ; चाबुक ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य २.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— काटने की क्रिया, काटना, कटाव ; शीतलता. बहुत ठंडा होना ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— छोटी या नाटी स्त्री ।

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) कृ.— ('कौटिल्य कौटिल्य' धातु से) — छेदकर, भेदकर ; काटकर ; खोदकर ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— कमी, न्यूनता, (किसी वस्तु की) आवश्यकता ; हानि, लोप ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे.— कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.—

एक जाति के लोग जो कन्नड बोलते और जो टोकरी, चटाई आदि बनाने का काम करते हैं ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— एक अनाज विशेष (खगति) एक प्रकार की चाँदी ।

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, (क) सं.— 'कौटिल्य' जाति की स्त्री ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— उपहास, परिहास, मज़ाक, किसी की नक़ल करना ।

(१) कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— छेद, भेद, खनन कर, खोद, काट ; चुभ, लग, बहुत शीतल या ठंडा हो । सं.— वह पदार्थ जो काट दिया गया हो ; काँटेदार वृक्ष की कटी हुई बड़ी डाली ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— तेज़ी से चक्कर खा, घूम, चारों ओर घूम ; व्याकुल हो, अस्मित हो ।

कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— 'कौटिल्य' का प्रेरणार्थक रूप ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— दे. कौटिल्य (१) ; कम हो, न्यून हो, छोटा हो । सं.— कमी, न्यूनता, छोटापन ; अवशेष, बचत ; काटना, कटा हुआ पदार्थ ; एक प्रकार का अनाज उपहार या भेंट के रूप में (विवाहादि में) दिये जाने वाले वस्त्र ; घुमकड़, घूमनेवाला मनुष्य ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य (मै.प्र.) ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— भेदना, छेदना ; खोदना ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— अधिक बोल, बढ़ा-चढ़ाकर कह, बड़बड़ा, डींग हँक ; काट डाल. छेद डाल । सं.— मूत्र की दुर्गंध ।

कौटिल्य कौटिल्य (क, क्रि.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— वसा, चरबी ।

कौटिल्य कौटिल्य (क) सं.— कौटिल्य.

(१) कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य, कौटिल्य कौटिल्य (क) क्रि.— मार डाल, हत्या कर, बध कर ।

(२) कौल कोल् (क) सं. — लट्ठों का या पीपे का वेड़ा; जोड़, मिलाव; = कौल कोल्—छड़ी, डण्डा, लाठी।

कौलिके, कौलिके (क) सं.—
अँकुरा, अँकुड़ा।

कौलिके (क) सं.— चूल्हा, अंगीठी।

कौलिके, कौलिके (क) क्रि.

मरा, मरवा, वध करा।

कौलिके (क) सं.—क्रि. दे. कौलिके.

कौलिके (क) दे. कौलिके।

कौलिके (क) सं.—हत्या, वध; कतल, मारना; हिंसा।

कौलिके, कौलिके (क) सं.

मारनेवाला, हत्यारा, कातिल।

कौलिके (क) सं.—रस्सी, लाठी

आदि के सहारे खेल करनेवाला या नाचने-वाला। कौलिके—(स्त्री. लिं.)।

कौलिके (क) सं.—खेलना, खेल,

खेद-कूद।

कौलिके, कौलिके, कौलिके

कोलार (क) सं.—बैल गाड़ी।

कौलिके, कौलिके (क) सं.—झुकाव,

टेढ़ापन; कोना; खाड़ी, आखात।

कौलिके (क) क्रि.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) क्रि.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—मारना,

हत्या, वध।

कौलिके (क) सं.—पर्दा; यवनिका।

कौलिके (क) सं.—कर्णिकार, वन-

चम्पा या कठचम्पा।

कौलिके (क) सं.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—इच्छा, अभि-

लाषा, चाह; कामना; विस्तार, अधिकता;

वर्णन; छीना-झपटी; चिल्लाहट।

कौलिके (क) क्रि.—अधिक हो;

फैल; संयमहीन हो; बलपूर्वक ले, छीन;

उत्कंठा कर, लालसा कर, चाह; किसी

वस्तु की माँग कर या अधिक माँग। सं—

उत्कंठा, लालसा, वांछा, अति लोभ;

साधारणतया किसी वस्तु को खरीदते समय उसको और अधिक माँगना।

कौलिके (क) सं.—कष्ट, पीड़ा, व्यग्रता।

कौलिके (क) क्रि.—निधुवन कर, परि-
रंभण कर। सं.—घोड़े पर चढ़ने की एक
रीति।

कौलिके, कौलिके, कौलिके
(क) सं.—पकड़, धर, छीन ले, झपटकर
ले, जब्त कर; ले, स्वीकार कर, अपना,
पा, प्राप्त कर, ग्रहण कर, खरीद कर, मोल
कर, मूल्य देकर ले। सं.—लेना, खरीद,
विक्रय, खरीद-फरोखत; गला गर्दन, कंठ।

कौलिके (क) सं.—संकेतस्थान; सरोवर,
सरसी; मापने का बर्तन विशेष।

कौलिके, कौलिके (क) सं.—
धान की फसल जो वर्ष में तीसरी बार होती
है।

कौलिके (क) सं.—मापने का एक
बर्तन विशेष (जो प्रायः चार या पाँच सेर
का होता है); एक बड़ा जलपात्र (धातु का);
कानों का आभूषण विशेष; खुर (पशुओं)
का खुर।

कौलिके (क) सं.—खुर।

कौलिके (क) सं.—जलाशय
के आस-पास उत्पन्न होनेवाला पौधा विशेष,
इक्षुगंधा।

कौलिके, कौलिके, कौलिके
कोलिके (क?) सं.—मंजिष्ठा, मधुक; उत्पल;
योजनवल्ली, योजनपर्णी।

कौलिके (क) सं.—एक सुगंधित तृण
विशेष।

कौलिके, कौलिके, कौलिके
(क) सं.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—नली, नलिका।

कौलिके (क) सं.—तालाब, सरोवर।

कौलिके (तेलुगु?) सं.—नल,
पाइप का पानी।

कौलिके (क) सं.—पकड़ना, धरना।

कौलिके (क) सं.—दे. कौलिके.

कौलिके, कौलिके (क)
क्रि.—धरा, पकड़ा, खरीदवा, विक्रय करा
(प्रे.)।

कौलिके (क) सं.—पकड़ना,
धराना, खरीदवाना।

कौलिके (क) क्रि.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—कौलिके

कौलिके (क) सं.—पकड़ना, धरना;
क्रय, मोल।

कौलिके (क) सं.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—निकुंज; गह्वर, गुफा;
= कौलिके—नाटा मनुष्य।

कौलिके (क) सं.—मशाल, उल्का,
उल्मुक।

कौलिके (क) क्रि. सं.—दे. कौलिके.

कौलिके (क) सं.—लेना, ग्रहण,
करना, ग्रहण, स्वीकृति, खरीदना, क्रय-
विक्रय।

कौलिके (क) सं.—दे. कौलिके; लट्ठ,
लटमार।—कौलिके [कौलिके] (क)
सं.—लुटेरा।

कौलिके (क) वि.—गंदा, पंकिल, कीचड़
से युक्त।

कौलिके (क) सं.—गन्दगी, सड़ा हुआ
(पदार्थ); मैलापन। वि.—गन्दा, मैला,
सड़ा हुआ।

कौलिके (क) सं.—गन्दगी,
मैलापन, अशुद्धता, सड़े रहने की स्थिति।

कौलिके (क) सं.—कीचड़पन, पंकि-
लता; गन्दगी।

कौलिके (क) सं.—अड़चन, रुकावट,
बाधा, विघ्न।

कौलिके, कौलिके, [कौलिके]
कोलिके, कौलिके (क) सं.—
मुरली, बाँसुरी, वेणु।

कौलिके, कौलिके (क) सं.—
नली, बाँस की नली, नाली।

ಕೊಬ್ಬು ಕೊಡಲು

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय (क)
 क्रि. — सदा मैला कर, गन्दा कर; नष्ट
 कर ।

करी ।
 ಕೊಲ್ಲಾಯಿ ಕೊಲ್ಲಾಯಿ (ಕ) ಸಂ. ದೇ. ಕೊಲ್ಲಾಯಿ.
 ಕೊಲ್ಲಾಯಿ ಕೊಲ್ಲಾಯಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಮೈಲಾ ಹೊ, ಗಂದಾ ಹೊ,
 ಅಶುದ್ಧ ಹೊ, ಸಡ, ಜಿರ್ಣ ಹೊ, ನಫ ಹೊ, ಖರಾಬ
 ಹೊ । ಸಂ. — ಮೈಲಾಪನ, ಗಂದಗಿ, ಅಶುದ್ಧತಾ,
 ಮಲ, ಪಂಕ, ಕೀಚಡ, ದಲದಲ ; ಸುಕಾವಡ,
 ಅಡಚನ, ಬಾಧಾ. ಅವರೋಧ, ದೇರ ।

पिरो, गूँथ; ताँत लगा, डोरी लगा, तार
चढ़ा; पिरोया जा; गूँथा जा ।

हृज्जत्तं कोक (सम्) सं. — भेड़िया; चक्र-
वाक; कोयल; मेंढक; खजूर का पेड़
वृक्ष विशेष; बड़ी बहन; एक पंडित का
नाम।

—शु० वैरि (सम्) सं.—चन्द्रमा; एक
छन्द का नाम ।

ॐ१०० कोकि (सम्) सं.—वक्रवाक, रथांग ।

८७१८७ कोकिल (सम्) सं. —कोयल ।

ಕೋಕಿಲಾಕ್ಷ (ಸಮ) ಸಂ. — ದೆ.

—कौकिल (तत्)

कौंगिरु (अ. दे.) सं. — खौगीर
(फारसी); घोड़े की जीन (मंसनद)।

कोच (अ. दे.) सं. — Coach
(अंग्रेजी); चौपहिया गाड़ी ।

(१) कौशु कोचु (अ. दे.) सं. — दे.
कौशु.

(२) कै० (क) सं. — अतिक्रम,
भूल; बेवकूफी। — प्र० भट (क) सं. —
मूर्ख पुरुष।

कोचमन, कोचमन्
(अ. दे.) सं.—Coachman (अंग्रेजी);
गाडीवान ।

(१) छँज (छ) कोट (क) सं.—शीतलता, सर्दी, ठण्ड, ठण्डापन; एक पक्षी का नाम, ब्याकुली या किरीटचाप पक्षी); एक खाले का नाम।

(२) छायाँ कोट (म. दे.) सं.—खोटा (हिं)
टेढ़ापन, चक्रता; झोंपड़ी, कुटी; किला।

ଚଢ଼ିଆ ଲୋଡ଼ି (କ. ଦେ.) ସଂ. — ଚଢ଼ିଆ ଲୋଡ଼ି.

८७६३० कोटरि (सम्) सं. नंगी खी; दुर्गा ।
८७६३०१ कोटलिंग (क) सं. — सतानेवाला
या पीडा देनेवाला पुरुष ।

८७१४० कोटेल (क) सं. — सताना. कष्ट.
पीडा दर्द ।

८०९६० कोटवि (सन्) सं.—दे. ८०९६०.

चण्डाबासुचण्डाबासु कोटानुकोटि, चण्डाबासु
चण्डाबासु कोटानुकोटि (सम्) वि.—करोडों,
असंख्य, अनगिनत ।

८७१३ कोटि (सम्) सं-नोंक, छोर ; अस्त्र की
नोंक या धार ; चरमबिंदु, आधिक्य, सर्वो-
त्कृष्टता ; चन्द्रकला ; करोड़ की संख्या ;
धनुष का अंतिम भाग ; समकोण त्रिभुज
की एक भुजा ; श्रेणी, कक्षा, विभाग ;
राज्य, सल्तनत, आभरण, भूषण ; सौंदर्य,
चारुता ; मन का उत्साह या उमंग ; अन-
गिनत संख्या ; पेड़ का खोखला ; गुहा ;
संग्राम, युद्ध ।

ज०१३८ कोटिक (सम्) सं.—अग्र, नौक,
श्रेणी, चोटी ।

८११३३३३ कोटिपात्र (सम्) सं — पतवार ।
 ८११३३३३ कोटिपर्व (सम्) सं — दवाई
 में उपयोगी एक पौधा ।

सं.—पाटा, होगा।

ॐ१३१० कोटीर (सम्) सं. — मुकुट. ताज,
किरीट, कलंगी चोटी।

ऋ००३० कोटें (तद्) सं.—कोटः (तत्); गढ़ किला,
 दुर्ग; शाला, झोंपड़ी; बाँकापन; दाही।
 ऋ००३१० कोटेश्वर (सम्) सं.—शिव; एक
 ग्राम का नाम।

८७७, कोट (तद्) सं.—कोट, गढ़, किला ।

चौहण्ड्यूर कोटार (सम्) सं. — किला या किले के भीतर का ग्राम ; चोर-डाकुओं का स्थान ; सरोवर या तालाब की सीढ़ियाँ ; कूप, तड़ाग ; कामुक, लम्पट या दुराचारी पुरुष ।

८०१६ कोटले (क) सं.—दे. ८०१६३.

₹१०० कोठि (भ. दे) सं.—कोठी (हिं)।

चौखण्डा कौडग (क) सं.—बन्दर, कपि, मर्कटा

चौ०खो० कोडिंग (क) सं.—बन्दर जैसा
व्यवहार करनेवाला ; विदूषक, टिठोलिया,
भौंड ।—ड० तन (क) सं.—दिल्ली, परि-
हास ।

टॉलूईन कोडबले (क) सं—चावल के आटे से बनाया जानेवाला एक नमकीन पदार्थ।

६७६ कोड़ि (क) सं.—जलोच्छ्वास, परिवाह,
जलमार्ग; कमी, न्यूनता, किसी वस्तु की
आवश्यकता; एक राक्षस का नाम ।

(१) ङङ्ग कोडु (क) क्रि — ठंडा हो, ठंडा लग, शीतल हो ; कँप, थरथरा, भीत हो ।
 सं.— ठंड, शीतलता ; कंपन, भय ; पशुओं का सींग, विषाण ; शृंग, श्रेणी, चोटी ; पेड़ की शाखा, डाल ; देन, उपहार, भेंट ।
 (२) ङङ्ग कोडु (तद्) सं.— कूट (तत्) ; जोड़ा — ङङ्ग केय् (सम्) सं.— जुड़े हाथ, दोनों हाथ ।

हवा ।

(१) ८७९६० कोण (क) सं.— महिष, भैंसा ।

(२) चँजल कोण (सम्) सं.—कोना ; छोर
नगाड़ा या ढोल बजाने का डंडा ; डंडा,
छडी ।

कौण्य (सम्) सं.— यमराज ;
निकृति ; राक्षसः दैत्य ।

सं०१६०६ कोणे (क) सं.—कलश, घड़ा ; कमरा,
रसोई घर । (तद्) सं.— परिधि की चिंहु ।
सं०१६०६ कोटे (तद्) सं.— किला, गढ़ ।

(१) जैशंकर कोत (क) सं.— एक जाति के लोग जो नीलगिरि में रहते हैं।

(२) कोत (अ. दे.) सं.—कोताह ? (फारसी) ;
कमी, न्यूनता ।

ಕೋಟಂಬರಿ ಕೊತ್ತರಿ (ಕ?) ಸಂ.— ದೇ. ಕೋಟಂಬರಿ.

ಕೋತಿ (ಕ) ಸಂ.— ಕಪಿ, ಬೆಂದರ, ಮರ್ಮಡ ।
ಕೋಡು ಕೋಡು (ಕ) ಸಂ.— ಹಲ್ಲ

चलाना, जोतना, जोताई । कृ. — पिरोकर, गूँथ-कर ।

(१) कौटिल्य कौटिल्य (सम्) सं. — धनुष, कमान ।

(२) कौटिल्य कौटिल्य (क) सं. — स्कूल में छात्रों को दंड देने के लिए उनके दोनों हाथ ऊपर की ओर बांधने की रस्सी (प्राचीन काल में छात्रों को ऐसी सजा दी जाती थी) । कौटिल्य कौटिल्य (सम्) सं. — कौटिल्य अनाज । कौटिल्य कोन (तद्) सं. — कोण (तत्) ।

कौटिल्य कोप (सम्) सं. — क्रोध, रोष, गुस्सा । — कृष्ण क्रम (सम्) सं. — क्रोधी पुरुष । — गौरी गाति (सम्) सं. — क्रोधी स्त्री । — गौरी गार = कौटिल्यक्रम. — कृष्ण सं. — ब्रह्मा की सृष्टि । — न कोपने = कौटिल्यगौरी. — गौरी शिखि (सम्) सं. — क्रोध रूप अग्नि । — गौरी (सम्) सं. = कौटिल्यगौरी-सं. छ (सम्) सं. — क्रोधी पुरुष । गौरी छलु (सम्) सं. — क्रोधी स्त्री । — गौरी इसु (सम्) क्रि. — क्रोध कर, गुस्से में आ ।

कौटिल्य कोपु (क) सं. — नाटकीय हाव-भाव या अभिनय ।

कौटिल्य कोमटि (क) सं. — वैश्य, बनिया ; लोभी, कंजूस ।

कौटिल्य कोमटिग (क) सं. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोमटिगिति (क) सं. — वैश्य या बनिया जाति की स्त्री ।

कौटिल्य कोमटितन (क) सं. — बनिया का पेशा, लालच, लोभ ।

कौटिल्य कोमल (सम्) वि. — कौटिल्य कोमल, कौटिल्य कोमल (तद्) — मृदुल, सुलायम, नरम ; धीर, मन्द ; प्रिय, मधुर ; मनोहर, सुन्दर । सं. — पक्कव फल ; जल, पानी । — कौटिल्य (सम्) सं. — कोमलता, मृदुलता ; मनोहरता । — कौटिल्य रुचिर (सम्) सं. — एक वृत्त का नाम । — कौटिल्य अंग (सम्) सं. — सुन्दर बाला ।

कौटिल्य कोमलित (सम्) वि. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोमले, कौटिल्य कोमले (सम्) सं. मृदुल, प्रिय या सुन्दर स्त्री ।

कौटिल्य कोमु (अ. दे.) सं. — कौम (अरबी) ; जाति, वर्ण, वर्ग ।

कौटिल्य कोयष्टि. कौटिल्य कोयष्टिक (सम्) सं. — शिखरी, पानी के ऊपर उड़ने-वाला एक पक्षी ।

कौटिल्य कोर (तद्) सं. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोरक (सम्) सं. — कली, अधखिला फूल ।

कौटिल्य कोरंगि (सम् ?) सं. — छोटा इला-यची ।

(१) कौटिल्य कोरडि, कौटिल्य कोरडा, कौटिल्य कोरडे (अ. दे.) सं. — चाबुक ।

(२) कौटिल्य कोरडि (क ?) सं. — रिक्तता, खाली होना, रसहीनता ।

कौटिल्य कोरदूष (सम्) सं. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोरंब (क ?) सं. — देवता-विग्रहों का सोने या चांदी का मुकुट या किरीट ।

कौटिल्य कोरयिसु (क) क्रि. — चौंध, चका चौंध उत्पन्न कर, चमक, चमचमा ।

कौटिल्य कोर (अ. दे.) वि. — नया, नवीन । सं. — सफेद न किया हुआ खादी का कपड़ा ।

कौटिल्य कोरिंदे (क) सं. — एक प्रकार का सुगंधित तृणविशेष ।

कौटिल्य कोरु (क ?) सं. — जरी ; प्रांत, प्रदेश ।

कौटिल्य कोरे (क) सं. — वक्रता, टेढ़ापन, नीचता, दुष्टता ।

कौटिल्य कोर (क) सं. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोरडि, कौटिल्य कोरडे (अ. दे.) सं. — दे. कौटिल्य (१).

कौटिल्य कोरि (क) सं. — छोटा कपड़ा (पुराना) चिथड़ा, लत्ता ।

कौटिल्य कोरिके (क) सं. — इच्छा, कामना, अभिलाषा ।

कौटिल्य कोरु (क) क्रि. — इच्छा कर, कामना कर ; माँग ; विचार कर । सं. — भाग, अंश, खण्ड, हिस्सा ।

कौटिल्य कोरे (क) सं. — काटना ; नुकिलापन, तीक्ष्णता ; दाँत, बाहर निकला हुआ नुकीला दाँत ; दाँत की जड़ ।

कौटिल्य कोर्टु (अ. दे.) सं. — Court (अंग्रेजी) ; अदालत, न्यायालय ।

कौटिल्य कोल्, कौटिल्य कोलु (क) सं. — लोही, डंडा, छडी, दण्ड ; (मापने का दण्ड (माप-दण्ड) ; बाण, तीर ; ऊँचाई, उच्चता, दीर्घ होना ; लट्ठों का बेड़ा ।

(१) कौटिल्य कोल (क) सं. — गहना, आभरण, आभूषण ; रंग, रूप-रंग, पोशाक ; उत्सव, जलसा ।

(२) कौटिल्य कोल (सम्) सं. — बेड़ा, नाव ; शूकर, सुअर ; उन्नाब, फेनिल ; एक प्रकार का आयुध ।

कौटिल्य कोलक (सम्) सं. — एक सुगन्ध द्रव्य ; काली मिर्च ।

कौटिल्य कोलदल (सम्) सं. — एक सुगन्ध द्रव्य ।

कौटिल्य कोलंबक (सम्) सं. — वीणा का ढाँचा ।

कौटिल्य कोलाट (क) सं. — डण्डों का खेल ; बाण चलाकर युद्ध करना ।

कौटिल्य कोलार (क) वि. — देशीय ; नीच, निम्न जाति या नस्ल का । — कौटिल्य तद्दु = निम्न जाति का घोड़ा ।

कौटिल्य कोलाहल (सम्) सं. — शोरगुल, हल्ला, चिन्हाहट ।

कौटिल्य कोलि (क) सं. — बाजरे का ढंढा (फसल काटने के बचा अंश) । (सम्) सं. — बेर, उन्नाब ।

कौटिल्य कोलु (क) सं. — दे. कौटिल्य.

कौटिल्य कोलुकार (क) सं. — दरबान, द्वारपाल, सेवक ।

कौटिल्य कोले (सम्) सं. — बेर ; पीपल ।

कौटिल्य कोव (क) सं. — एक जाति के लोग ; कुम्हार ।

कौटिल्य कोवण (तद्) सं. — कौपीन (तद्) ; लंगोटी ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—संभ्रम, औत्सुक्य ; गड़बड़ी ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—नाली, नली ; बेंसी, बांसुरी ; बन्दूक ।

कौटिल्य की वीर (सम्) वि.—पंडित, चतुर, बुद्धिमान, विद्वान् (कौटिल्य की वीर — स्त्री. लिं.) । कौटिल्य की वीर = पांडित्य, विद्वत्ता ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—एक वृक्ष विशेष, लाल कचनार ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—अजीर्ण, मंदाग्नि ; बच्चों के सिर पर होनेवाला फोड़ा ; एक वृक्ष विशेष ; धातु गलाने की धरिया, तैजसाव-तिनी ।

कौटिल्य की वीर (अ. दे.) सं.—खोवा, दूध-पेड़ा ।
कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—
कठौती, दोहनी, बाल्टी, डोलची, कोई भी पात्र, भांडार, घर, भांडार, खजाना, धनागार ; धन ; संपत्ति, दौलत ; शब्दार्थ संग्रह ; कली, अधखिला फूल ; कर्णिका, फल की गुठली ; सोना, चाँदी ; छिमी, फली, बाँड़ी ; जायफल सुपारी ; एक देश का नाम ; रेशम का कोका ; योनि, गर्भा-शय ; अंडा ; लिंग, पुरुष-जननेन्द्रिय ; गोला, गेंद ; वेदांत में वर्णित अन्नमय कोश आदि ; काव्य में एक प्रकार की अभिव्यक्ति ; मारना, हत्या । — गृह (सम्) सं.—वह स्थान जहाँ मूल्यवान वस्तुएँ रखी जाती हैं, खजाना, धनागार ।
—कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—एक प्रकार का कीरा या कट्ठा ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—बीजकोश, बोड़ी, फली ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—गिलास, एक प्रकार का जलपात्र ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—शरीर का भीतरी

भाग—पेट, फेफड़ा आदि ; मेदा, पेड़ ; कमरा ; अन्नभांडार ; एक वृक्ष विशेष ;
= कौटिल्य की वीर—एक रोग ; हिसाब में सम चतुर्भुज ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—अनाज का भण्डार, भण्डारी ; हाता, हाते की दीवार ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—भाण्डार, खजाना ।

कौटिल्य की वीर (सम्) वि.—गुणगुना, थोड़ा गरम ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—कौटिल्य की वीर, कौटिल्य की वीर, कौटिल्य की वीर (क) अ.—के लिए, के वास्ते, (को) ।

कौटिल्य की वीर (क) अ.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—
—देश का नाम और उनके निवासी ।

(१) कौटिल्य की वीर (क) क्रि.—(सुई में) धागा लगा या पिरो । सं.—वक्रता, टेढ़ापन ।

(२) कौटिल्य की वीर (?) सं.—गोभी । (तद्) सं.—क्रोशः (तत्) ; तीन या चार मील का अंतर, दूरी ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—कौटिल्य की वीर, कौटिल्य की वीर (क) सं.—मूँग की दाल या चने की दाल पानी में भिगोकर उसमें नारियल, हरी-मिर्च नमक आदि मिलाकर तैयार किया हुआ एक खाद्यपदार्थ ।

कौटिल्य की वीर (क) अ. दे.—कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—
काहिली, एक वाद्य विशेष ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—क्रमिक पंक्ति या कतार ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—पकड़ना, छीनना, लट्ठना, लट्ठ, लट्ठ-मार ; शिकार, लट्ठ का माल ; विनाश ; आक्षेप, झूठा अभियोग, निंदा ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—बेड़ी, धरन-बंधन ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—कोला हल (तत्) ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—एक चढ़नेवाली लता जिसके फूल लाल या पीले होते हैं ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—पशुओं का सींग, विषाण ; श्रेणी, चोटी ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—सुर्गी, सुर्गा, ताम्र-चूड़ ।

कौटिल्य की वीर (क) सं.—कफ, सर्दी ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—चिड़ीमार ; वह साधु जो चलते समय ज़मीन की ओर दृष्टि रखता है ता कि कोई जीव उसके पैर से न कुचल जाय ; दम्भी, पाखण्डी ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—तलवार ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—स्वतंत्र रूप से अपने घर में काम करनेवाला बढ़ई ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—नंगी स्त्री ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—चिड़ीमार, जाल में फँसानेवाला, कसाई, बधिक, छलिया, ठग ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—चाणक्य का नाम ; कुटिलता, दुष्टता, बेईमानी, जाल, छल ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—दे. कौटिल्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—अभिलाषा, इच्छा, चाह ; कौतूहलोत्पादक कोई वस्तु, औत्सुक्य, आश्चर्य, कौतूहल ; हर्ष, आनंद, प्रसन्नता ; विवाह में एक विधि विशेष, महोत्सव, उत्सव, शुभ उत्सव ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—अभिलाषा, जिज्ञासा, औत्सुक्य, आश्चर्य, कौतूहलोत्पादक वस्तु ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—बुरा धर्म या आचरण ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

कौटिल्य की वीर (सम्) सं.—भाला धारण किया हुआ योद्धा ।

००३९००० कौतेय (सम्) सं.—कुंती का पुत्र ; धर्मराज, भीम और अर्जुन ।

००३९००० कौपीन (सम्) सं.—गुह्य, गुप्तग ; लंगोटी ; पाप या अनुचित कर्म ।

००३९००० कौवेरि (सम्) सं.—उत्तर दिशा ।

००३९००० कौमारि (सम्) सं.—सप्त मातृकाओं में एक ।

००३९००० कौमुदि (सम्) सं.—चंद्रिका, चाँदनी ।

००३९००० कौमोदकि (सम्) सं.—विष्णु की गदा का नाम ।

००३९००० कौरव (सम्) सं.—कुरु के वंशज, विशेषतः धृतराष्ट्र के पुत्र ।

००३९००० कौरवारि (सम्) सं.—कौरवों का शत्रु, भीम ।

००३९००० कौलकेय (सम्) सं.—छिनाल का वेटा, वर्णसंकर ।

००३९००० कौलटिनेय (सम्) सं.—सती भिक्षुकी का लड़का ; वर्णसंकर ।

००३९००० कौलटेय (सम्) सं.—सती या असती भिखारिन का पुत्र ।

००३९००० कौलिक (सम्) सं.—कोरी, जुलाहा ; दंभी, पाखण्डी ; वाममार्गी ।

००३९००० कौलीन (सम्) सं.—सत्कुल का पुरुष, सत्कुलीन ; लोकापवाद-कांचनवाद ; रोगी, बीमार ; काला-काजल ; युद्ध, लड़ाई, पशुओं की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई ।

००३९००० कौलु (अ. दे.) सं.—कौल (अरबी) ; स्वीकृति, संधि, सुलह ।

००३९००० कौलेय (सम्) सं.—सत्कुलप्रसूत ; कुत्ता ।

००३९००० कौवेरि (सम्) सं.—उत्तर दिशा ।

००३९००० कौशल, ००३९००० कौशल्य (सम्) सं.—प्रसन्नता, समृद्धि, निपुणता, चतुरता ।

००३९००० कौशिक (सम्) सं.—इंद्र ; विश्वामित्र का नाम ; सर्पोपजीवी, सपैला ; उल्लू ; गूगल ; न्योला ; अद्भुत, आश्चर्य ; साँप का मुख ।

००३९००० कौशिके (सम्) सं.—प्याला, कटोरा ।

००३९००० कौसल्ये, ००३९००० कौसले (सम्) सं.—दशरथ की बड़ी रानी और राम की माता ।

००३९००० कौसलेय (सम्) सं.—राम ।

००३९००० कौसीद्य (सम्) सं.—सुस्ती, अकर्म-ण्यता ।

००३९००० कौसृतिक (सम्) सं.—जादूगर ; छलिया ।

००३९००० कौस्तुभ (सम्) सं.—विष्णु के चक्षस्थल पर धारण करने की मणि ।

००३९००० कौलिक (तद्) सं.—कौटिक (तत्) ; कसाई ।

००३९००० कौकच (सम्) सं.—आरा ।

००३९००० कौकचे (सम्) एक पौधा विशेष (The tree pandanus odoratissimus) ।

००३९००० कौकण, ००३९००० कौकर (सम्) सं.—तीतर ; एक पौधा विशेष ।

००३९००० कौतु (सम्) सं.—यज्ञ, याग ; एक प्रजापति का नाम ; एक विश्वदेव का नाम ; विष्णु की उपाधि ; एक पौधा ।—००३९००० कौसि (सम्) सं.—शिव ।—००३९००० कौसु (सम्) सं.—विष्णु ।

००३९००० कौथ (सम्) सं.—यादवों का एक वंश ।

००३९००० कौथन (सम्) सं.—मारना ; वध, हत्या ।

००३९००० कौदन (सम्) सं.—रोदन, रोना, विलाप ।

००३९००० कौम (सम्) सं.—गमन, चलना-फिरना, आगे बढ़ना ; पग, कदम, चरण, पद ; पैर ; अनुष्ठान, आरंभ ; सिलसिला ; तरीका, ढंग ; कर्म, कार्य ; वेद पढ़ने की शैली विशेष ; तैयारी, तत्परता ।

००३९००० कौमण (सम्) सं.—दे. ००३९००० कौमाग (सम्) वि.—क्रम से आया हुआ ।

००३९००० कौमिसु (सम्) क्रि.—जा, चल, गमन कर, पग रख ।

००३९००० कौमुक (सम्) सं.—सुपारी का पेड़ ; अहत्त का पेड़ ; लाल लोभ्र वृक्ष ।

००३९००० कौमणक, ००३९००० कौमणलक (सम्) सं.—ऊँट ।

००३९००० कौय (सम्) सं.—खरीद, मूल्य देकर लेना ; कीमत, मूल्य ।—००३९००० कौयिक = खरीद-फरोख्त ।—००३९००० कौयिक (सम्) सं.—व्यापारी ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—ग्राहक, खरीदने-वाला ।

००३९००० कौयिक (सम्) वि.—बिकने के लिए, बिकाऊ ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—मांस, कच्चा मांस ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—मांस खाने-वाले जीवजंतु ; राक्षस ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—दे. ००३९००० कौयिक (सम्) सं.—एक पौधा विशेष (Vernonia anthelmintica) ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—कीड़ा ।—००३९००० कौयिक (सम्) सं.—कीड़े से उत्पन्न, रेशम ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—आपसी समझौता, स्वीकार पत्र ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—तोड़ना, टुकड़े करना ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—नाटक में—प्रवेश-निर्गम आदि ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—क्रिया (Verb) ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—क्रिये हुए कार्य का फल ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—धार्मिक कार्यों में कर्तव्य-च्युति ; व्याकरण में क्रिया का अध्याहार ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—कर्मठ व्यक्ति, सच्चा आदमी, चरित्रवान् ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—कार्य की अभिव्यक्ति ; क्रियार्थक संज्ञा ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—व्याकरण में क्रियाविशेषण (Adverb) ।

००३९००० कौयिक (सम्) सं.—कार्य, कृति, कर्म, उद्योग ; क्रिया शब्द का कार्य ; काल, समय ; क्रिया ; संपादन, सफलता ; परि-

ह्र३३००० क्षत्रियाणि (सम्) सं.— क्षत्राणि,
क्षत्रिय की पत्नी ।

कृ०००० क्षत्रिय, कृ०००० क्षत्रिये (सम्) सं.—
दे. कृ००००००.
कृ००० क्षत्र (सम्) सं.—धैर्यवान्, सहनशील;
विनयी ।
कृ००० क्षपण (सम्) सं.—बौद्ध-भिक्षु; सूतक,
अशौच ; नाश, निर्वासन ।
कृ०००० क्षपणक (सम्) सं.— दे. कृ००००.
कृ००० क्षपा, कृ०० क्षपे (सम्) सं.— रात,
रजनी ; हल्दी ।
कृ०००० क्षपाकर, कृ०००० क्षपानाथ (सम्)
सं.— चंद्रमा ।
कृ००० क्षम (सम्) सं.— धैर्य ; सहनशीलता
माफी । वि.— उपयुक्त, योग्य, ठीक,
उचित ।
कृ००० क्षमते (सम्) सं.—क्षमता, योग्यता,
दक्षता ; उपयुक्तता ।
कृ००० क्षमाप (सम्) सं.— पृथ्वीनाथ,
राजा ।
कृ००० क्षमापण (सम्) सं.— क्षमा,
माफी ।
कृ००० क्षमारुह (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष ।
कृ००० क्षमियसु, कृ००० क्षमिसु (सम्)
सं.— माफ़ कर, क्षमा प्रदान कर ।
कृ००० क्षमे, कृ००० क्षमा (सम्) सं= कृ०००.
कृ००० क्षय (सम्) सं.—क्षयरोग, क्षयी का
रोग ; हानि, ह्रास, कमी, खराबी ; नाश,
समाप्ति, अंत ।—कृ००० पक्ष (सम्) सं.—
अंधियारा पक्ष ।
कृ००० क्षयिष्णु (सम्) वि.— ह्रास होने-
वाला, खराब होनेवाला, घटनेवाला ।
कृ००० क्षर (सम्) वि.— पिघला हुआ । सं.—
जंगम, चर ; पानी ; शरीर ; बादल ।
कृ००० क्षव (सम्) सं.—खाँसी, छींक ; काली
सरसों ।
कृ००० क्षवथु (सम्) सं.—दे. कृ०००.
कृ००० क्षात्र (सम्) वि.—क्षत्रिय संबंधी या
क्षत्रिय का ।
कृ००० क्षांत, कृ००० क्षांति, (सम्) सं.—
सहनशीलता, क्षमागुण ।
कृ००० क्षाम (सम्) वि.—झुलसा हुआ, जल

हुआ, घटा हुआ, नष्ट किया हुआ, दुबला,
हल्का, छोटा-थोड़ा, निर्बल । सं.— दुर्ब-
लता, क्षीणता, अकाल ।
कृ००० क्षार (सम्) वि.— काट करनेवाला,
जलानेवाला, तेज़. खारा, नमकीन । सं.—
काला नमक ; रस, सार ; जल, पानी
शीरा, चोटा, राव, सोडा (Soda) ।
कृ००० क्षारक (सम्) सं.— फूल, कली ।
कृ००० क्षारकि (सम्) सं.— एक लता विशेष ।
कृ००० क्षारमृत्तिके (सम्) सं.— खारी
भूमि या मट्टी ।
कृ००० क्षारांबुधि (सम्) सं.— खारा
समुद्र ।
कृ००० क्षालन (सम्) सं.— धोना, साफ़
करना, प्रक्षालन. सफाई ।
कृ००० क्षित (सम्) वि.— घटा हुआ, नष्ट किया
हुआ, विनष्ट, क्षीण ।
कृ००० क्षिति (सम्) सं.— घर, आवास ; पृथिवी,
भूमि, मिट्टी ।—कृ००० कांत (सम्) सं.—
राजा ।—कृ००० जे (सम्) सं.— सीता ।
—कृ००० धर (सम्) सं.— पहाड़ ।—
कृ००० नाथ, कृ००० पति, कृ००० पाल,
कृ००० रमण (सम्) सं.— राजा ।—कृ०००
रुह (सम्) सं.— पेड़ ।—कृ००० सुता,
कृ००० सुते (सम्) सं.— सीता ।
कृ००० क्षित्यधिप, कृ००० क्षितीश (सम्)
—सं. राजा ।
कृ००० क्षिप्त (सम्) वि.— फेंका हुआ, छितरा-
या हुआ, पटका हुआ, त्यागा हुआ, भेजा
हुआ. निकाला हुआ ।
कृ००० क्षिप्र (सम्) अ.— तेज़ी से, जल्दी,
शीघ्रता से ।
कृ००० क्षिये (सम्) सं.— घटना, कमी, क्षय,
हानि, नाश ।
कृ००० क्षीण (सम्) वि.— घटा हुआ, नष्ट किया
हुआ, दुबला, पतला, विनष्ट, खोया हुआ ;
घायल ; टूटा हुआ ; थोड़ा, कम ; अधीन
में आया हुआ ; दरिद्र ; खराब ।
कृ००० क्षीणत्व (सम्) सं.— क्षीणता,
विनाश ; व्यय होना, घटना, क्षत होना ।

कृ००० क्षीव, कृ००० क्षीव (सम्) वि.—उत्ते-
जित, नशे में चूर ।
कृ००० क्षीर (सम्) सं.—दूध ; पानी ; बादल ।
कृ००० क्षीरके, कृ००० क्षीरिके (सम्) सं.—
दूध से बनायी गई एक मिठाई, खीर ; एक
पौधा विशेष (The plant Mimosa
kāuki) ।
कृ००० क्षीरज (सम्) सं.—दही ।
कृ००० क्षीरनीर (सम्) सं.— दूध और
पानी ; दूध और पानी की तरह एकता ;
आलिंगन ।
कृ००० क्षीरविकृति (सम्) — जमा हुआ
दूध ।
कृ००० क्षीरस (सम्) सं.— दूध का सार,
दूध से बना कोई पदार्थ ।
कृ००० क्षीरसमुद्र, कृ००० क्षीराब्धि
(सम्) सं.—क्षीरसागर, दूध का समुद्र ।
—कृ००० तनये (सम्) सं.— लक्ष्मी ।
कृ००० क्षीरांबुधि, कृ००० क्षीरोद
(सम्) सं=कृ००० क्षीरसमुद्र ।
कृ००० क्षुता, कृ००० क्षुत् (सम्) सं—छींक ।
कृ००० क्षुताभिजनन (सम्) सं.—काली
सरसों ।
कृ००० क्षुत्रपत्र (सम्) सं.—पर्णास, काम-
कस्तूरी ।
कृ००० क्षुधा (सम्) सं.—भूख ।—कृ००० बाधे
(सम्) सं.—भूख के कारण बेचैनी ।
कृ००० क्षुद्र (सम्) वि.—छोटा, विकुल छोटा ;
दरिद्र. गरीब ; कमीना, ओछा, नीच ; लोभी,
कजूस ; क्रूर, निष्ठुर ।
कृ००० क्षुद्रि (सम्) सं—कलंकी या मिथ्या-
निंदक पुरुष ।
कृ००० क्षुद्रे (सम्) सं.— कर्कशा स्त्री, लंजी
औरत, रंडी, वेइया ; नाचनेवाली स्त्री,
अमर ; एक प्रकार की लता ।
कृ००० क्षुद्रत् (सम्) वि.— भूखा ।
कृ००० क्षुध, कृ००० क्षुधा, कृ००० क्षुत्
(सम्) सं.— भूख ।
कृ००० क्षुधाभिजनन (सम्) सं.—
काली सरसों ।

कूटनाम ध्रुवार्त, कूट ध्रुवित (सम्) सं.—
भूखा ।

कूट ध्रुव (सम्) सं. = कूट ।

कूट ध्रुव ध्रुवित कूट ध्रुव (सम्) वि.—
व्याकुल, भयभीत, कौपता हुआ ; क्रुद्ध ।

कूट ध्रुव (सम्) सं.— छुरा, अस्तुरा ; गौ
का खुर ; घोड़े का सुम ; तीर ; एक पौधा ।
कूट ध्रुव ध्रुवित कूट ध्रुव (सम्) सं.—
नाई, हज्जाम ।

कूट ध्रुव ध्रुवित (सम्) सं.— चाकू, छुरी-
कटार ।

कूट ध्रुव ध्रुवित (सम्) वि.— छोटा, लघु ;
पतला, दुबला, सूक्ष्म ; कृपण, दीन, गरीब,
नीच, क्षुद्र ; कंचूस ; लोभी ; मतिहीन,
अल्पमति ; मिथ्यावादी ; छोटा शंख ;
किरात, शबर ।

कूट ध्रुव ध्रुवित (सम्) सं.— एक
प्रकार का अम्लवेत ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— खेत ; स्थान, जगह,
स्थल ; देश, प्रदेश, जिला, तीर्थस्थान
पत्नी, भार्या ; शरीर ; रेखागणित की एक
शक्ति, अंकित क्षेत्र, चित्र ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— क्षेत्रोत्पन्न-
शरीरोत्पन्न, चारह प्रकार के पुत्रों में से एक ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— चतुर, दक्ष ;
आत्मा ; शरीर को जाननेवाला ।

कूट ध्रुव क्षेत्रफल (सम्) सं.— खेत की
लंबाई-चौड़ाई की माप ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— उछलना, फेंकना,
पटकना, फेंक, पटक, भेजना । क क
वि.— फेंकनेवाला, पटकने वाला, भेजने-
वाला, निर्देश करनेवाला ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— शांति, प्रसन्नता,
सुख, चैन, स्वस्थ रहना ; रक्षा ; निर्विघ्नता ;
रक्षित ; जो वस्तु पास हो उसका रक्षण ;
एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ; स्नेहपूर्वक
आलिंगन करना ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— सुभ, मंगलकारी ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— खेतों का समूह ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— भूमि, खेत ; माप
विशेष ; एक की संख्या । — कूट ध्रुव
जासुत (सम्) सं.— सीता का बेटा ।

— कूट ध्रुव जा (सम्) सं.— सीता ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— पहाड़,
पर्वत ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— राजा, पृथ्वीपति ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— पिसाई, घुटाई ;
विभ्रम व्यग्रता ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) वि.— छोटा,
बहुत छोटा ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— शोभ, क्षोभे (सम्) सं.—
हिलना, चलना ; उछलना, उतेजन, घबरा-
हट उत्पात ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— अटारी, अटा ;
बुना हुआ रेशम ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— शहद, मधु ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— रेशमी वस्त्र, बुना,
हुआ रेशम ; हवादार अटा, अटारी ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— हजामत । — क क
(सम्) सं.— नाई, हज्जाम ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— भूमि ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— क्षमाधर, क्षमापति, क्षमाधर
क्षमाधर (सम्) सं.— राजा ; पहाड़,
पर्वत ।

कूट ध्रुव क्षेत्र (सम्) सं.— जहर,
विष ।

ख

२० ख — कवर्ग का दूसरा अक्षर । कन्नड-
वर्णमाला का सोलहवाँ अक्षर ।

२० ख (सम्) सं.— आकाश, गगन ; इंद्रिय,
बुद्धि ; मन ; ब्रह्मा ; स्वर्ग, क्षेत्र, खेत ; अर्गला,
ताला ; यति, संन्यासी ; शून्य ; सूना
स्थान ; दो की संख्या ।

२० ख खंकर (सम्) सं.— अलक, लट, धुंधराले
बाल ।

२० ख खंज (सम्) वि.— लंगड़ा, रुका हुआ ।

२० ख खंज (सम्) सं.— खंजन पक्षी ।

२० ख खंज (सम्) सं.— खंजड़ी, चंग ।

२० ख खंज (सम्) सं.— खंजन पक्षी ।

२० ख खंज (सम्) सं.— टुकड़ा, भाग, हिस्सा,
अंश ; खंड, चीनी ; एक प्रकार का गन्ना ;
एक प्रकार का नमक ; भूगोल का भाग ;
अर्धचंद्र ।

२० ख खंज (सम्) सं.— टुकड़ा भाग, अंश,
हिस्सा ।

२० ख खंज (सम्) सं.— काटना, तोड़ना, टुकड़े करना ; चोट करना,
घायल करना ; विरोध, विमर्जन । — खंज
परशु (सम्) सं.— कुल्हाड़ी से काटना ;

शिव, परमेश्वर ; परशुराम ; विनायक,
गणेश । — खंज शशधर (सम्) सं.—
अर्धचंद्र । — खंज शशिदेखर (सम्)
सं.— शिव ।

२० ख खंज (सम्) सं.— मटर ।

(१) २० ख खंज (क) सं.— दृढ़ता, निश्चि-
तता, स्थिरता । अ.— सचमुच, निश्चित
रूप से ।

(२) २० ख खंज (सम्) वि.— कटा हुआ,
टुकड़े किया हुआ, विभक्त ; नष्ट किया
हुआ ; हराया हुआ ।

२० ख खंज (सम्) सं.— खंडिता नायिका ;
वह स्त्री जिसका पति अन्यत्र रात बिताता
हो ।

२० ख खंज (सम्) क्रि.— काट, टुकड़े
कर ; नष्ट कर ; निराश कर ; वाद में
हरा ।

२० ख खंज (सम्) क्रि.— दे. २० ख.
२० ख खंज (सम्) सं.— आकाश में उड़ना,
उड़ान, २० ख खंज, २० ख खंज, २० ख खंज
(सम्) सं.— गरुड ।

२० ख खंज (सम्) सं.— आकाशमण्डल,
खगोल विद्या, ज्योतिष विद्या ।

२० ख खंज (सम्) सं.— चिड़िया, पक्षी
सूर्य ; गंधर्व ; एक की संख्या । — २० ख

अंगने, ७७७ अवले (सम्) सं.— गंधव-
स्त्री ।

०३३ खचित (सम्) वि.— जड़ा हुआ, भरा
हुआ, मिला हुआ ; गड़ा हुआ ; स्थिर, दृढ़,
सच्चा ।

०३४ खजक (सम्) सं.— मथानी ; चँदवा,
आच्छादन ।

०३५ खजव (सम्?) सं.— चँदवा, वितान ।

०३६ खजाके (तद्) सं.— बड़ा चमचा,
करछुल, चमचा ।

०३७ खजांचि (अ. दे.) सं.— खजानची
(फारसी) ; कोपाध्यक्ष ।

०३८ खजाने (अ. दे.) सं.— खजाना
(अरबी) ; कोष, धनागार ।

०३९ खजाके (तद्) सं.— खजाचिका (तत्) ;
चमचा ।

०४० खजिख (तद्) सं.— दे. ०४१.

०४१ खजीने (अ. दे.) सं.— दे. ०४२.

०४२ खज्जा, ०४३ खज्या (अ. दे.) सं.—
झगड़ना । — ०४४ खोर = झगड़ा ।

०४५ खट (सम्) सं.— कफ, अंधा कूप ;
टाँकी ; हल ; घास ; खटखट ध्वनि ।

०४६ खटखटाहक (सम्) सं.—
पीकदानी ।

०४७ खटिके (सम्) सं.— ०४८ खटिके
(तद्) — खड़िया, चॉक (Chalk) ।

०४९ खटिक (सम्) सं.— कसाई ; चिड़ीमार,
बहेलिया, शिकारी, खटिक ।

०५० खट्वांग (सम्) सं.— लकड़ी या
डंडा जिसमें खोपड़ी जड़ी हो — यह शिवजी
का हथियार समझा जाता है । — ०५१ धर
(सम्) सं.— शिव ।

०५२ खट्वा, ०५३ खट्वा, ०५४ खट्वा (सम्)
सं.— चारपाई, खाट, सेंज, पलका ; झला,
हिंडोला ।

०५५ खड (अ. दे.) सं.— कड़ी । (सम्) सं.—
घास विभक्त करना, तोड़ना । (तद्)
सं.— तलवार, खड्ग ।

०५६ खड्ग (सम्) सं.— तलवार । — ०५७
पिधान (सम्) सं.— म्यान । — ०५८ फल

(सम्) सं.— तलवार की नोक ।

०५९ खड्गि (सम्) सं.— तलवार धारण किया
हुआ, खड्गधारी ; गौंडा, गण्डक ।

०६० खड्गमृग (सम्) सं.— गैण्डा,
गण्डक ।

०६१ खणि, ०६२ खणिल् (क) सं.— एक
अनुकरणमूलक शब्द ; जोर से, जोर का
शब्द ।

०६३ खतमाल (सम्) सं.— बादल, मेघ ;
धुआँ ।

०६४ खतिलक (सम्?) सं.— सूर्य ।

०६५ खदिर् (सम्) सं.— कत्था का वृक्ष ;
इन्द्र ; चंद्रमा ।

०६६ खदिर (?) सं.— छुई मुई का पौधा ।

०६७ खद्योत (सम्) सं.— पतंग ; सूर्य ।

०६८ खनक (सम्) सं.— खोदना ; खोदने-
वाला ; सेंध फोड़नेवाला ; चूहा, घूस ।

०६९ खनन (सम्) सं.— खोदना, खुदाई,
गाड़ना ।

०७० खनि (सम्) सं.— खान ।

०७१ खनिज (सम्) सं.— खनिज ।

०७२ खनित्र (सम्) सं.— फावड़ी, कुदाली ।

०७३ खपुर (सम्) सं.— सुपारी का पेड़ ।

०७४ खप्रवाह (सम्) सं.— गंगा नदी ।
— ०७५ जूट । (सम्) सं.— शिव ।

०७६ खर (सम्) वि.— कड़ा, रुखा, ठोस,
तेज, तीक्ष्ण, कठोर ; गरम ; खट्टा ; तीखा ।

सं.— गधा ; एक वर्ष (संवत्) का नाम ;
एक राक्षस का नाम । — ०७७ कर (सम्)

सं.— सूर्य ; एक माप विशेष । — ०७८ करण

(सम्) सं.— सूर्य । — ०७९ वैरि (सम्)

सं.— राम ।

०८० खरणस्, ०८१ खसरिस (सम्) सं.—

नुकीली नाकवाला पुरुष ।

०८२ खरसाण (सम्) सं.— तीक्ष्ण या

तेज आराधक ।

०८३ खरारु (अ. दे.) सं.— खरहरा (हिं.),

घोड़े को मलने का खरहरा ।

०८४ खरीदि (अ. दे.) सं.— खरीद (फारसी).

खरीदना ।

०८५ खर्चु (अ. दे.) सं.— खर्च (फारसी) ;
व्यय । — ०८६ दार (अ. दे.) सं.— अति-
व्ययी ।

०८७ खर्जूर (सम्) सं.— चाँदी ; हर ;
ताल ; कजूर का पेड़ ।

०८८ खर्जूरि (सम्) कृ.— दे. ०८९.

०८९ खर्व (सम्) वि.— अपूर्ण ; ठिंगना ;
छोटा, नीजा । — ०९० शाखा (सम्) सं.—
ठिंगना ; बौना ।

०९१ खर्वूज (अ. दे.) सं.— खरबूजा
(फारसी) ।

०९२ खल (सम्) सं.— नीच, दुर्जन, दुष्ट ;
खलिहान ; जगह, स्थान ; धूल का ढेर ;
तलछट । — ०९३ करण (सम्) सं.—
अनाज को पीटकर भूसे अलग करने की
क्रिया ।

०९४ खलति (सम्) वि.— गंजा ।

०९५ खलधान्य (सम्) सं.— खलिहान ।

०९६ खलपु (सम्) सं.— झाड़, बुहारी ।

०९७ खलीन (सम्) सं.— लगाम ।

०९८ खल्लरिक (सम्) सं.— खल्लरिका,
परेड-मैदान जहाँ सेना शस्त्रास्त्र का अभ्यास
करती है ।

०९९ खल्ले, १०० खल्लिनि (सम्) सं.—
खलिहान का समूह ।

१०१ खल्लाट (सम्) वि.— गंजा ।

१०२ खल्लविसु (क) क्रि.— जल,
ज्वलित हो, इच्छा कर, आतुर हो ।

१०३ खल (सम्) सं.— खाज, खुजली ।

१०४ खल (तद्) सं.— दे. १०५.

१०५ खल्ला (तद्) सं.— खड्ग (तत्) ; तलवार ;
मादा गैण्डा ।

१०६ खल्ले, १०७ खल्लि (क) अ.—
जोर से, कर्कशाता से ।

१०८ खल्लि (क) सं.— एक अनुकरणमूलक
शब्द ।

१०९ खाड (सम्) सं.— खड्ग, तलवार ।

११० खाडाखाडि— महयुद्ध ; तलवारों
से परस्पर लड़ना ।

खान, खान (अ. दे.) सं.—
खाना, भोजन ।
खाना (सम्) वि.—
खाना हुआ । सं.—
पुष्करिणी, बड़ा तालाब ।
खानक (सम्) सं.—
खोदनेवाला ; गड्ढा, गर्त ।
खानि, खाने (अ. दे.) सं.—
खाता ।
खान खान (सम्) सं.—
खाना, चबाना ।
खानि (अ. दे.) सं.—
खादी, खहर ।
खानि (सम्) वि.—
खाया हुआ ।
खानि (सम्) वि.—
खदिर या कस्था के वृक्ष से संबंधित ।
खान (अ. दे.) सं.—
खाना ; राजा, राज-कुमार ; नेता, नायक एक उपाधि ।
खानि (अ. दे.) वि.—
खानगी (फ़ारसी) ; घर से संबंधित, खास, विशेष ।
खाने (अ. दे.) सं.—
स्थान, जगह ; घर ।
खार, खारि (सम्) सं.—
१२ मन या ३२ सेर की अनाज की तौल ।
खालि (अ. दे.) वि.—
खाली (अरबी) ; रिक्त ।
खान, खाना (अ. दे.) वि.—
खासा (अरबी) ।
खान (सम्) सं.—
बाण प्रयोग के समय उत्पन्न होनेवाली आवाज़ ।
खान (अ. दे.) सं.—
खिदमत (अरबी) ; सेवा ।
खान गार (अ. दे.) सं.—
सेवक ।
खान (सम्) वि.—
दुःखी, उदास, संतप्त ।
खान (सम्) सं.—
बंजर भूमि या मरुभूमि का टुकड़ा ; परिशिष्ट भाग, अतिरिक्त भाग ; खोखलापन ; अविशिष्ट भाग ; खाली स्थान ।
खान, खान (अ. दे.) सं.—
खिताब, पदवी ।

खान (अ. दे.) सं.—
खुदा (फ़ारसी) ; भगवान ।
खान (अ. दे.) वि.—
खुदा (फ़ारसी) ; स्वयं, आप ।
खान, खान (सम्) सं.—
चपटी नाकवाला ।
खान (सम्) सं.—
खुर ।
खान (अ. दे.) सं.—
खुराक (फ़ारसी) ; भोजन ।
खान (अ. दे.) सं.—
कुरान (अरबी) ।
खान (अ. दे.) सं.—
घटिया प्रकार का तिल का तेल ।
खान, खान (अ. दे.) सं.—
नमस्कार, वंदन ।
खान (अ. दे.) सं.—
खुलासा (अरबी) ; स्पष्टता, निर्णय ; रिक्तता, स्वतंत्रता ।
खान (सम्) वि.—
छोटा, कम, नीचा, ओछा । सं.—
असंयमशीलता, क्रोध, रोष ।
खान (सम्) सं.—
तुच्छता, नीचता ।
खान (अ. दे.) सं.—
खुशामद (फ़ारसी) ; मिथ्या प्रशंसा, चापल्य ।
खान (अ. दे.) सं.—
हथारा, मार डालनेवाला ।
खान (सम्) सं.—
आकाशगामी, खग, पक्षी ; गंधर्व ।
खान (सम्) सं.—
कफ़ गाँव, छोटा शहर ; बलराम का मूसल ; घोड़ा ; शिकार, आखेट । वि.—
खराब, नीच, तुच्छ ।
खान (सम्) सं.—
गाँव ; ढाल ।
खान (सम्) सं.—
शिकार, आखेट ।
खान (सम्) सं.—
गाँव ; भयभीत पुरुष ।
खान (सम्) सं.—
खेड, खेड (तद्) सं.—
ढाल ।
खान (सम्) सं.—
दुःख, पीड़ा, शोक, उदासी, निराशा, शिथिलता, सुस्ती, थकावट ;

घोड़े का हिनहिनाना ; सिंह गर्जन ; वाँस ; विष, जहर । वि.—
छोटा, अल्प ।
खान (सम्) सं.—
दुःख की अभिव्यक्ति ।
खान (सम्) क्रि.—
दुःख कर, शोक कर ।
खान (अ. दे.) सं.—
एक बार, एक दफ़े ।
खान (सम्) सं.—
पुल ; खाई ।
खान (सम्) सं.—
कीड़ा, खेल ।
खान (सम्) सं.—
खिलाड़ी ; मलबार का आदमी ।
खान (अ. दे.) सं.—
खैर (फ़ारसी) कुशल-क्षेम, अच्छाई, हित ।
खान (अ. दे.) क्रि.—
मार, पीटा ; कुचला जा, पीटा जा ; अधीन में हो ।
खान (अ. दे.) सं.—
एक अनुकरणमूलक शब्द ; लड़ते समय किया जानेवाला खो शब्द ।
खान (अ. दे.) सं.—
खोजा (फ़ारसी) ; हिजड़ा, नपुंसक ।
खान (अ. दे.) सं.—
खोड, खोल (सम्) सं.—
लंगड़ा, लला ।
खान (सम्) सं.—
तरकस, तूणीर ।
खान (सम्) वि.—
जाना हुआ, कीर्तिमान, मशहूर, उक्त, कहा हुआ, प्रसिद्ध ।
खान (सम्) सं.—
प्रसिद्धि, यश, कीर्ति ; गौरव, पदवी, उपाधि ; वर्णन, प्रशंसा ।

ग

ग—
कन्नड-वर्णमाला का सत्रहवाँ अक्षर ।
कवर्ग का तीसरा अक्षर ।
ग (सम्) वि.—
(समास में पीछे आता है) —जानेवाला, होनेवाला, ठहरनेवाला, रहनेवाला, मैथुन करनेवाला । सं.—
संगीत में तीसरा स्वर 'गांधार' ; तीन की संख्या ।
(१) गं (सम्) सं.—
गीत, भजन ।
(२) गं (अ. दे.) सं.—
तक, पर्यंत ।

गोदंशु ७ गंडस्थल

गोदंशु ७ गंडस्थल (सम्) सं. — गाल ; हाथी की कनपुटी ।
 गोदंशुगोदं गंडागुंडि (क) सं. — अव्यवस्था ; अन्यायपूर्ण कलह, छोना-झपटी ; निर्लज्जता. ठिठाई ।
 गोदंशु गंडाडि (क) सं. — वीर, बहादुर, योद्धा ।
 गोदंशुगंडगंडाते (रम्) सं. — संकट, विपदा, खतरा ; दुर्भाग्य ; रोग ।
 गोदंशु गंडि (क) सं. — चुंगी बसूल करनेवाला ; किले की पगडण्डी ।
 गोदंशु गंडिके (क) सं. — वीरता, पराक्रम ।
 गोदंशु गंडिग (क) सं. — वीर पुरुष, बहादुर, योद्धा ।
 गोदंशु गंडु (क) सं. — पुरुषता, पौरुष, साहस, वीरता, दृढ़ता ; शक्ति, सामर्थ्य पुरुष. आदमी, नर ।
 गोदंशुगंडन गंडुगतन (क) सं. — पराक्रमी होना, पराक्रम, बहादुरी ।
 गोदंशु गंडुस, गोदंशु गंडुसु (क) सं. — दे. गोदंशु.
 गोदंशुगंडुपद (सम्) सं. — कीट विशेष ।
 गोदंशुगंडुष, गोदंशुगंडुषे (सम्) सं. — सुँह भर, अंजली भर ।
 गोदंशुगंडोलि (क) सं. — नर कृष्णमृग, काला हिरन ।
 गोदंशु गंति (तद्) सं. — ग्रंथि (तत्) ।
 गोदंशु गंतु (सम्) सं. — रास्ता, मार्ग, पथिक । वि. — हिलनेवाला, लटकनेवाला, नाचनेवाला ।
 गोदंशु गंतु (सम्) वि. — जानेवाला ।
 गोदंशु गंति (सम्) सं. — बैलगाड़ी ।
 गोदंशु गंद (तद्) सं. — गंध (तत्) ।
 गोदंशु गंदर (तद्) सं. — गंधर्व (तत्) ।
 गोदंशु गंदि, गोदंशु गंदे (तद्) सं. — ग्रंथि (तत्) ; फोड़ा, सूजन ।
 गोदंशु गंदिग (तद्) सं. — सुगंध द्रव्य बेचने-वाला ; कुटना ; नेत्र-चिकित्सा करनेवाला, नेत्र-वैद्य ।

गोदंशु गंदिगे (तद्) सं. — ग्रंथिका (तद्) ; —
 गोदंशु गंगडि (७०००० अंगडि) = दवाई की दूकान ।
 गोदंशु गंध (सम्) सं. — बू, वास ; सुगंध द्रव्य, गंधक ; घिसा हुआ चन्दन ; शिला, पत्थर ; संबन्ध, रिश्ता ; पडोस ; अहंकार, गर्व ; चन्दन) — कडू कडु (तत्) सं. — ऊदवत्ती, अगरवत्ती ।
 गोदंशु गंधक (सम्) सं. — गंधक (Sulphur) — कडू धृति (सम्) सं. — गन्धक से निकला हुआ अम्ल पदार्थ (Sulphuric acid) ।
 गोदंशुगंधकचोर (सम्) सं. — आँत्रा हल्दी, करकचूर ।
 गोदंशुगंधकस्तूरी (सम्) सं. — सुगन्धित कस्तूरी या मुश्क ।
 गोदंशुगंधकशिके (सम्) सं. — वह स्त्री जो सुगंधद्रव्य बनाते के लिए नियुक्त हो ।
 गोदंशुगंधकुटि (सम्) सं. — एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गोदंशुगंधतैल (सम्) सं. — चंदन का तेल ।
 गोदंशुगंधन (सम्) सं. — सौरभ, परिमल ; उत्साह ; प्रकाश, प्राकट्य ; किसी बात को बतलाना, समाचार ; संतोष, आनन्द ।
 गोदंशुगंधनाकुलि (सम्) सं. — एक पौधा विशेष ।
 गोदंशुगंधफलि (सम्) सं. — दवाई में उपयोगी एक पौधा ।
 गोदंशुगंधमादन (सम्) सं. — एक पहाड़ का नाम जो रामेश्वरम में है ।
 गोदंशुगंधमार्जार (सम्) सं. — मुश्क बिल्ली, कस्तूरी मृग ।
 गोदंशुगंधमूषि, गोदंशुगंधमूषिके (सम्) सं. — छल्लन्दर ।
 गोदंशुगंधरस (सम्) सं. — बोल, लोहवान ।
 गोदंशुगंधर्व (सम्) सं. — देवताओं के गायक ; गवैया ; घोड़ा ; कस्तूरीमृग मृत्यु के बाद और जन्म के पूर्व की जीव की दशा ; काली कोयल ; एक प्रकार का अमर ; सूर्य ; पत्नी ; सुंदरी स्त्री । —

गोदंशु नरि (सम्) सं. — गंधर्व स्त्री । —
 गोदंशु हस्तक (सम्) सं. — एरंडी का पौधा ।
 गोदंशुगंधवति (सम्) सं. — भूमि, पृथिवी ; एक प्रकार की जुंही ; व्यास जी की माता का नाम ; एक नगर का नाम ; गंधक ; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गोदंशुगंधवह (सम्) सं. — पवन, हवा ।
 गोदंशुगंधवहे (सम्) सं. — नाक, नासिका ।
 गोदंशुगंधवाह (सम्) सं. = गोदंशुगंध, गोदंशुगंधवीड (सम्) सं. — काला नमक ।
 गोदंशुगंधसार (सम्) सं. — चंदन ।
 गोदंशुगंधाखु (सम्) सं. — छल्लंदर ।
 गोदंशुगंधाश्म (सम्) सं. — गंधक ।
 गोदंशुगंधि (सम्) वि. — वह जिसमें बू हो, गंध युक्त ; सुगंधित, सुवासित ।
 गोदंशुगंधिनि (सम्) सं. — एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।
 गोदंशुगंधोपल (सम्) सं. — गंधक ।
 गोदंशुगंधोलि (सम्) सं. — गोदंशुगंधोलि (तद्) — बरट, हटा ।
 गोदंशुगंधु (क) सं. — परिमल, सुगंध, खुशबू ।
 गोदंशुगंधे (क) सं. — टोकरी, टोकरा ।
 गोदंशुगंधारिका, गोदंशुगंधारिके, गोदंशुगंधारि (सम्) सं. — एक वृक्ष का नाम ।
 गोदंशुगंधीर (सम्) वि. — गहरा ; गाढ़ा ; सघन, घना ; प्रगाढ़ ; अगाध ; विलक्षण ; गुप्त, दृढतर । — उँ ते (सम्) सं. — गहराई आदि ।
 गोदंशुगंधीरा, गोदंशुगंधीरिका (सम्) सं. — एक नदी का नाम ।
 गोदंशुगंधर (तद्) सं. — गह्वर (तत्) ।
 गोदंशुगंधु (क) अ. — अत्यधिक अंधकार पूर्ण (या के साथ) ।
 गोदंशुगंधुने (क) अ. — शीघ्र, तुरंत ; हठात् ।
 गोदंशुगंधु (क) सं. — एक प्रकार का सारस पक्षी ।

गणेश गगण, गणेश गगन (सम्) सं. — आकाश, आसमान, अंतरिक्ष, शून्य ।
 गणेशगंगे गगनगंगे (सम्) सं. — आकाश गंगा ।
 गणेशचर गगनचर (सम्) सं. — पक्षी ; ग्रह ; स्वर्गीय आत्मा ; गंधर्व । गणेशचर गगनचरि = गंधर्व-स्त्री ।
 गणेशचक्र गगनचाप (सम्) सं. — इंद्रधनुष ।
 गणेशमणि गगनमणि (सम्) सं. — सूर्य ।
 गणेश गगगर, गणेश गगगरि (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेश गग (क) वि. — मूढ़, मूर्ख, बेवकूफ ।
 गणेश गगु (क) सं. — अरुचि, असह्यता (जलते हुए तेल की दुर्गंध) ।
 गणेश गग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेश गगिणी गगिणी (क) सं. — वार्निश, चमक ।
 गणेश गचु (अ. दे.) सं. — गच (हिं) ; गारा, सिमेंट, चूना ।
 गणेश गच्छ (सम्) — वृक्ष ; अंकगणित का एक पारिभाषिक शब्द ।
 (१) गणेश गज (क) सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द । — गणेश गज = कोलाहल । शोरगुल ।
 (२) गणेश गज (सम्) सं. — हाथी ; दिग्गज ; एक राक्षस का नाम ; आठ की संख्या ।
 (३) गणेश गज (अ. दे.) सं. — लम्बाई मापने की माप विशेष जो दो हाथ की होती है, तीन फीट ('गज' — फारसी) ।
 गणेश गचकबल (सम्) सं. — हाथी का आहार ।
 गणेश गजकर्ण (सम्) सं. — दाढ़ ।
 गणेश गजकर्णिके (सम्) सं. — एक पौधे का नाम ।
 गणेश गजग, गणेश गजगु, गणेश गजिग, गणेश गजिगे, गणेश गजेग, गणेश गज्जिग, गणेश गज्जुग (क) सं. — एक वृक्ष विशेष जिसके बीज लड़कों के खेलने की गोली के रूप में उपयोगी होते हैं (The Molucca bean or Guilandia bonducella Lin) ।

गणेशगणेश गजगमन (सम्) सं. — इन्द्र ।
 गणेशगणेश गजगमने गणेशगणेश गजगामिनि (सम्) सं. — हाथी जैसी चाल से चलने-वाली स्त्री ।
 गणेशगणेश गजचर्मधारि, गणेशगणेश गजचर्मधार (सम्) सं. — शिवजी ।
 गणेशगणेश गजजीव, गणेशगणेश गजजीव (सम्) सं. — महावत ।
 गणेश गजते (सम्) सं. — गजता, हाथियों का समूह ।
 गणेशगणेश गजदंत (सम्) सं. — हाथी का दाँत ; गणेशजी ।
 गणेशगणेश गजदान (सम्) सं. — हाथी का मद, हाथी का दान ।
 गणेशगणेश गजदानव (सम्) सं. — गजासुर ।
 गणेश गजनि (क) सं. — वह खेत जहाँ धान की बहुत कम उपज होती है ।
 गणेशगणेश गजपुर, गणेशगणेश गजनगर (सम्) सं. — हस्तिनापुर, दिल्ली ।
 गणेशगणेश गजप्रास (सम्) सं. — अनुप्रास का एक भेद ।
 गणेशगणेश गजप्रिये, गणेशगणेश गजप्रेमि (सम्) सं. — एक सुगंधित गोंद (Boswellia Serrata) ।
 गणेशगणेश गजबंधन (सम्) सं. — गजशाला, हाथियों को बांधने का स्थान ।
 गणेशगणेश गजभक्षे (सम्) सं. — दे. गणेश ।
 गणेशगणेश गजमुख (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगणेश गजरगळे (सम्) सं. — गपशप, थोथी बात ।
 गणेशगणेश गजर, गणेशगणेश गजरु (क) सं. — चिल्लाहट, रोषपूर्ण ध्वनि या बात । क्रि. — जोर से बोल, चिल्ला ; गाली दे ।
 गणेशगणेश गजवदन (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगणेश गजवैरि (सम्) सं. — सिंह, शेर ।
 गणेशगणेश गजवज (सम्) सं. — हाथियों की टोली ; आठ की संख्या ।
 गणेशगणेश गजवात (सम्) सं. — आठ की संख्या ।

गणेशगणेश गजशाले (सम्) सं. — हाथियों को बांधने का स्थान ।
 गणेशगणेश गक्षाख्ये (सम्) सं. — गजाख्य ; मोटी दालचीनी या तेजपात का पौधा ।
 गणेशगणेश गजानन (सम्) सं. — गणेश ।
 गणेशगणेश गजाराति (सम्) सं. — सिंह, शेर ।
 गणेशगणेश गजारि (सम्) सं. — सिंह ; शिवजी ।
 गणेशगणेश गजारोह (सम्) सं. — महावत ।
 गणेशगणेश गजालु (क?) सं. — गपशप, निरर्थक बातचीत । — गणेश गति = गपशप करने वाली स्त्री । — गणेश गार = गपशप करने-वाला पुरुष ।
 गणेशगणेश गजास्य (सम्) सं. — विनायक, गणेश ।
 गणेशगणेश गजिबिजि (क) सं. — भ्रम, भ्रांति, अव्यवस्था, उलझन ।
 गणेशगणेश गजिग, गणेशगणेश गजिगे, गणेशगणेश गजुग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेशगणेश गजोत्कर (सम्) सं. — हाथियों की टोली ।
 गणेशगणेश गज्जरि (अ. दे.) सं. — गाजर (हि.) ।
 गणेशगणेश गज्जि (क) सं. — खुजली, खुजलन ।
 गणेशगणेश गज्जिग (क) — दे. गणेश ।
 गणेशगणेश गज्जु (क) सं. — दुर्गंधमय मोरी का पानी ।
 गणेशगणेश गज्जुग (क) सं. — दे. गणेश ।
 गणेशगणेश गज्जे (क) सं. — घुँघरू ।
 गणेशगणेश गट (तद्) सं. — घट (तत्) ; घड़ा ।
 गणेशगणेश गटक (तद्) सं. — घटक (तत्) ; शक्ति-मान या समर्थ पुरुष ।
 गणेशगणेश गटिके (तद्) सं. — घटिका (तत्) ; गाढ़ा होना, घना होना, जमा होना ; कठोरता ।
 गणेशगणेश गटिवालि (क) सं. — झगडालू और गाली देनेवाली स्त्री ।
 गणेशगणेश गट (तद्) सं. — घट (तत्) ; घाट ।
 गणेशगणेश गट्टणि, गणेशगणेश घट्टणि (तद्) सं. — घटना (तत्) ; हिलाना ; घना या गाढ़ा करना ; मारना, पीटना ।
 गणेशगणेश गट्टि (क) वि. — बलवान्, दृढ़, स्थिर । सं. — स्थिरता, कड़ापन, गाढ़ा होना, घन

कर, गणक, गणिक (सम्) सं.—

गठिगठि गठोकर

गठिगठि गठोकर (सम्) सं. — व्यधि, बीमारी ।

गठिगठि गठद (सम्) सं. — हकलाना, तुतलाना ।

गठि गठ (क) सं.—दे. गठ २.

गठिगठि गठरिसु, गठिगठि (क) क्रि. — फोड़ा हो (घाव) फूल, सूज ।

गठिगठि गठरिसु, गठिगठि गठरिसु (क) क्रि. — दे. गठ २.

गठिगठि गठल (क) सं. हला, शोरगुल ।

गठिगठि गठदिगे, गठिगठि गठदिगे. गठिगठि गठदिगे (क) सं. — सिंहासन, गद्दी ; आसन ; मूल, आधार ; जंगमों (संन्यासियों) का स्मारक ।

गठिगठि गठदिसु (क) क्रि.—चिह्ना, गर्जन कर; फटकार बता ।

गठि गठदे, गठि गठदे (क) सं.—धान का खेत । गठि गठ (सम्) सं.—गद्य, वह रचना जिसमें पद्य न हो (Prose) ।

गठिगठि गद्याण, गठिगठि गद्याणक (सम्) सं.—रत्नी भर की तौल ।

गठिगठि गनह (तद्) सं.—शिवजी ; ब्राह्मण, विप्र ।

गठि गनि (तद्) सं.—खनिः (तत्) ; खान ।

गठिगठि गनीम (अ.दे.) सं.—गनीम (अरबी) ; शत्रु, छुटेरा डाकू ।

गठि गने (क) क्रि.—गर्जन कर ; चिह्ना ।

गठि गन (क) सं.—चोरी ; रहस्य ; चातुरी ; धोखा ।

गठिगठि गपचिप (अ.दे.) अ.—चुपचाप, चुप, मौन रूप से ।

गठिगठि गपने (क) अ. — अकस्मात्, तुरंत, हठात् ।

गठि गप्पु. गठि गप्पि (अ.दे.) सं. — गप्प (हि.) ; झूठ, झूठा समाचार ।

गठिगठि गवगव. [गठिगठि गपगप] (क) अ. जल्दी जल्दी ।

गठिगठि गवकने (क) अ. — जल्दी, शीघ्र, गठि गव (तद्) सं. — गर्व (तत्) ; गर्भ

(तत्) : — गठिगठि गवगु, गठिगठि गवगु

गवगु = गामिन हो (गाय और बैस के लिए ही प्रयुक्त होता है) ।

गठिगठि गवगु (क) क्रि. — खनन कर, खोद, भूमि खोद, सुरंग लगा ।

गठिगठि गव (तद्) वि.—गर्वी (तत्) ; घमंडी ।

गठिगठि गविलायि (क) सं.—चमगादड़ ।

गठिगठि गव, गठिगठि (क) सं.—दुर्गंध, बदबू ।

गठिगठि गवति (सम्) सं. — सूर्य, सूर्य की किरण ।

गठिगठि गभीर (सम्) वि. — गंभीर, गहरा ; गुप्त ; रहस्यमय, गाढ़ा, सघन घना ।

(१) गठिगठि (क) सं.—गंध, सुगंध, फूलों की सुरभि ।

(२) गठिगठि (सम्) वि. — जानेवाला, चलने-वाला ।

गठिगठि गमक (सम्) सं.—सूचक, संकेतकारी, स्मारक, विश्वासोत्पादक ; स्पष्ट करना, स्पष्टीकरण, प्रमाण, काव्य-पठन की एक प्रणाली ; संगीत में अंतर या स्वर की गहराई ।

गठिगठि गमकि (सम्) सं.—बोलनेवाला, कथन करनेवाला. स्वर-माधुर्य के साथ काव्य-वाचन करनेवाला, वाक् चतुर ।

गठिगठि गमण, गठिगठि गमन (क) सं.—गंध, सुगंध ।

गठिगठि गमन (सम्) सं. — जाना, चाल, गति, समीप जाना ; प्राप्ति, उपलब्धि ; स्त्री-मैथुन ।

गठिगठि गमनि (सम्) सं.—एक गाली ; दुष्ट पापी, दुर्जन ।

गठिगठि गमनिसु, गठिगठि गवनिसु, गठिगठि गविसु (क) क्रि.—ध्यान दे. गौर कर, मन लगा, सावधान हो ।

गठिगठि गमनिसु (सम्) क्रि. — जा, चल ।

गठिगठि गमार, गठिगठि गवार (अ.दे.) सं.—गँवार (हि.) मूर्ख, बेवकूफ ।

गठिगठि गमिसु (सम्) क्रि.—जा, चल, — एक विके = जाना, चलन ; गमन ।

गठिगठि गम्म, गठिगठि गम्मु (तद्) सं. — धर्मः (तत्) ; गरमी, उष्णता ।

गठिगठि गमत्तु (अ.दे. ?) सं. — विनोद से समय बिताना, तमाशा ।

गठिगठि गम्मने (क) अ.—शीघ्र, जल्दी ।

गठिगठि गम्मु (क) क्रि.—(बंदर जैसे) विचित्र-ध्वनि कर ।

गठिगठि गम्य (सम्) वि.—समीप जाने योग्य, बोधगम्य, वांछनीय, योग्य, प्राप्त करने योग्य ।

गठिगठि गय, गठिगठि गये (सम्) सं. — गया (स्थान का नाम) ।

गठिगठि गयावल, गठिगठि गयावाल (सम्) सं.—गया का पंढा (गयावाला ?) ।

गठिगठि गयाल (क ?) सं.—निर्बल या निरुप-योगी मनुष्य ।

गठिगठि गय्यालि (क) सं. — मूर्ख स्त्री, झगड़ाहू स्त्री ; जिद्दी औरत । — उत तन = झगड़ाहू होना ।

गठिगठि गयसु (क) क्रि.—करा या करवा ।

गठि गर (क) सं.—‘गरगर’ शब्द । (तद्) सं.—ग्रह (तद्) ।

गठिगठि गरकु, गठिगठि गरकु, गठिगठि गरसु, गठिगठि गरकु (क) सं. — असमता, रुक्षता, कठोरता ।

गठिगठि गरग, गठिगठि गरगु, गठिगठि गरगा, गठिगठि गरगु, गठिगठि (क) सं. — एक झाड़ी का नाम, झुगराज (Eclipta abla Hassk) ।

गठिगठि गरगतिग (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

गठिगठि गरगति (क) सं.—वृक्षविशेष (The tree Ficus asperrima) ।

गठिगठि गरगरिके (क) सं.—सुन्दरता, चारुता, स्वच्छता, शुभ्रता ।

गठिगठि गरगस (तद्) सं. — क्रकच (तद्) ; आरा ।

गठिगठि गरगु (क) सं.—दे. गठिगठि.

गठिगठि गरजु (अ.दे.) सं. — गरज (अरबी) ; आवश्यकता, जरूरत, प्रयोजन ।

गठिगठि गरडि, गठिगठि गरडि, गठिगठि गरडि-मने (क) सं.—व्यायामशाला, कसरत करने का स्थान ।

गठल गरणे (क) सं. — थका, पिंड ; घना पदार्थ (मट्टे में दही का गाढ़ा अंश) ।

गठल गरति, गठल गति (तद्) सं. — सद्गृहिणी, अमिजांत कुल की आदरणीय स्त्री ।

गठल गरम (तद्) वि. — घर्मः (तत्) ; गरम, उष्ण । गठल गरमि = गरमी, उष्णता ।

गठल गरल, गठल गरल (सम्) सं. — जहर, विष । — कंधर कंधर, ग्रीव धर (सम्) सं. — शिव । — पूर (सम्) सं. — साँप । — भुक् (सम्) सं. — शिव । — विशिख (सम्) सं. — विषैला बाण । — अशन (सम्) सं. — शिव ।

गठल गरतु (क) क्रि. — सब कुछ छीन ले, सब कुछ ले ले ।

गठल गरसु (क) सं. — दे. गठल ; कंकड़, पथरी ।

गठल गरसे, गठल गेरसे (क) सं. — एक परिमाण विशेष जो प्रायः ३२० पौंड के बराबर होता है ।

गठल गरल (सम्) सं. — दे. गठल

गठल गरले (सम्) सं. — एक पौधे का नाम ।

गठल गरलदार (अ. दे.) सं. — आदरणीय पुरुष ।

गठल गरस (तद्) सं. — ग्रासः (तत्) ; कौर, गरसा ।

गठल गरि (क) सं. — एक तृणविशेष ; पक्षियों का पुच्छ ; कोमल पत्ता ; नारियल या ईख का पत्ता । घास ; बाण का पिछला भाग ।

— कट्टु (क) क्रि. — पंख निकल ; संभल ; जा ; शक्ति पा । — केदरु (क) क्रि. — पंख फैला । — पू (क) सं. — केतकी पुष्प ।

गठल गरिके (क) सं. — घास, तृण दूर्वा ।

गठल गरिग (क) सं. — एक पक्षी ; बाण, तीर ।

गठल गरिम, गठल गरिमा (सम्) सं. — गुरुता, महत्व, विशेषता, गौरव, उत्तमता ; मुख्यता, योग्यता ।

गठल गरिमु (क) सं. — दड, पक्का ; कठोर ।

गठल गरिमे (सम्) सं. = गठल.

गठल गरिष्ठ (सम्) वि. — सबसे अधिक भारी, खबसे अधिक महत्वपूर्ण ।

गठल गरीब (अ. दे.) सं. — गरीब (अरबी) ; दरिद्र ।

गठल गरीय (तद्) वि. — गरीयस् (तत्) ; अपेक्षाकृत भारी या महत्वपूर्ण ।

गठल गरु (तद्) वि. = गुरु (भारी) ।

गठल गरुग, गठल गरुगु (क) सं. — दे. गठल.

गठल गरुड (सम्) सं. — पक्षिराज गरुड के आकार का व्यूह, गरुडाकार भवन ; एक की संख्या । — ध्वज (सम्) सं. — विष्णु की उपाधि । — पाताल (सम्) सं. — एक जड़ी-बूटी जो साँप के डसने पर विष दूर करने के काम में आती है । — पुराण (सम्) सं. — एक पुराण का नाम । — फल (सम्) सं. — वृक्ष विशेष (The tree Hydno-

carpus Veneata Gaert) । — वाहन (सम्) सं. — विष्णु ; मंदिरों में रहनेवाला गरुड का वाहन । — वाहिनि (सम्) सं. — गरुड के आकार का व्यूह ।

गठल गरुडग्रज (सम्) सं. — गरुड का बड़ा भाई, अरुण ।

गठल गरुडांक (सम्) सं. — गरुडध्वज ।

गठल गरुडि (क) सं. — स्थान, जगह, घर, आश्रय ; व्यायामशाला, कसरत करने का स्थान, अखाड़ा ।

गठल गरुत् (सम्) सं. — पंख, पर ।

गठल गरुत्तम् (सम्) सं. — पक्षी ; गरुड ।

गठल गरुत्तम्, गठल गरुल (सम्) सं. — गरुड ।

(१) गठल गरुव (तद्) वि. — गरुः या गरिमा (तत्) ; योग्य आदरणीय, मान्य ।

(२) गठल गरुव (तद्) सं. — गर्वः (तत्) ।

गठल गरुवलि (क) सं. — पवन, हवा, समीर ।

गठल गरुवायि, गठल गरुविके (तद्) सं. — गंभीरता, गंभीर गमन, (हाथी की चाल-सी) चाल, गौरवपूर्ण विधान, उचित ढंग ; धमंड, गर्व ।

गठल गरुसु (क) सं. — दे. गठल.

गठल गर (क) अ. — चारों ओर, जल्दी-जल्दी, चक्र-दार । सं. — एक अनुकरणमूलक शब्द ।

गठल गरके (क) सं. — दूर्वा ।

गठल गरगु (क) सं. — जल जाना. मुरझाना सूखना ; (घी या तेल में भुनने के बाद) पापड़ आदि का कुरकुरा होना ।

गठल गरि (क) सं. — पंख, पर ; पंख जैसा ताड़ या नरियल का पत्ता ।

गठल गरिके (क) सं. — दे. गठल.

गठल गरुगु (क) सं. — दे. गठल.

गठल गरु (क) सं. — डकार लेते समय की ध्वनि ।

गठल गरु (क) सं. — दे. गठल.

गठल गरु (क) सं. — दे. गठल.

गठल गरु (क) सं. — घर्घरः (तत्) ; बरबराहट, कोलाहल ।

गठल गरु (क) सं. — मथानी ; गगरी ।

गठल गरु (क) सं. — गर्जन, चिलाहट, जोर से ध्वनि करना, चीत्कार, गड़गड़ाहट, घुरघुराहट ; रोष, क्रोध ; युद्ध, लड़ाई ; भर्त्सना, फटकार, धिक्कार ।

गठल गरुने (सम्) सं. = गठल.

गठल गरुनेषु (सम्) सं. — बादल जिससे गरज तथा बिजली उत्पन्न होती है ।

(१) गठल गरि (क) सं. — एक पौधे का नाम जिसके छोटे-छोटे कडुवे फल से अचार बनता है ।

(२) गठल गरि (सम्) सं. — बादलों की गरजन ।

गठल गरिजु (सम्) क्रि. — गर्जन कर, भयंकर ध्वनि कर ; डाँट, गाली दे, शिकायत कर ।

गठल गरि (सम्) सं. = गठल.

गठल गने (सम्) सं. — ऊँचा आसन, गद्दी.

तन्त्र गति

सिंहासन. युद्ध के रथ का आसन ; रथ ;
पासे का खेल खेलने की मेज़ ; पोल, छेद,
गुफा ।

तन्त्र गति (तद्) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र गर्दभ (सम्) सं.—(यह द्राविड
शब्द ही है जिसे संस्कृत ने अपनाया है)
—गधा ।

तन्त्रगण्ड गर्दभांड (सम्) सं.—वृक्ष विशेष
(The tree thespesia populneoides
wall) ।

तन्त्रगण्डगु (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

तन्त्रगण्डगु (क) सं.—दे. तन्त्रग.

तन्त्र गर्दे (क) सं.—तन्त्र गर्दे—खेत ।

तन्त्र गर्धन, तन्त्र गर्धित (सम्) वि.—
लालची, लोभी । तन्त्र गर्धने = लोभ,
लालच ।

तन्त्र गर्व (तद्) सं.—गर्व (तत्) ।

तन्त्र गर्व (क) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र (सम्) सं.—गर्भाशय, पेट ; गर्भाशय,
पेट ; गर्भाशय की झिल्ली, गर्भाधान ; गर्भ
का बच्चा ; भीतरी भाग, मध्य भाग ।

तन्त्र गर्भक (सम्) सं.—फूलों का गुच्छा
जो वालों में खोसा जाता है ।

तन्त्रगण्ड गर्भगृह (सम्) सं.—भीतरी कमरा ;
प्रसूतिका गृह ; मंदिर का गर्भगृह जहाँ मूर्ति
स्थित हो ।

तन्त्रगण्ड गर्भपात (सम्) सं.—गर्भस्त्राव,
अकाल उत्पत्ति ।

तन्त्रगण्ड गर्भमोचन (सम्) सं.—जन्म,
उत्पत्ति ।

तन्त्रगण्ड गर्भश्रीमंत (सम्) सं.—वह
पुरुष जो जन्म से ही धनी और मान्य हो ।

तन्त्रगण्ड गर्भागार (सम्) सं.—भीतरी कमरा,
मंदिर का गर्भगृह ।

तन्त्रगण्ड गर्भिणी (सम्) सं.—गर्भिणी स्त्री ।

तन्त्रगण्ड गर्भित (सम्) वि.—गर्भवाली,
जिसके पेट में गर्भ हो ; पूर्ण, भरा हुआ,
युक्त ।

तन्त्रगण्ड गर्भित (सम्) सं.—एक वृत्त विशेष ।

तन्त्र गर्व (सम्) सं.—घमंड, अभिमान,
ऐंठ । — डंते = घमंडी होना ।

तन्त्र गर्वि, तन्त्र गर्वित (सम्) वि.—
घमंडी, अभिमानी ।

तन्त्रगण्ड गर्विसु (सम्) क्रि.—गर्व कर, घमंड
कर, अभिमान कर ।

तन्त्र गर्वु (तद्) सं.—गर्व (तत्) ।

तन्त्रगण्ड गर्हण (सम्) सं.—भर्त्सना, फटकार ;
कलंक, धिक्कार ।

तन्त्रगण्ड गर्शक (सम्) सं.—तौबे या पीतल का
वर्तन ।

तन्त्र गल् (क) सं.—अवधि, समय, मीयाद ।

(१) तन्त्र गल (क) सं.—‘ज्ञनज्ञान’ शब्द ।

(२) तन्त्र गल (सम्) सं.—गला, गर्दन । —
कलंक, धिक्कार (सम्) सं.—बैल या गाय की
गर्दन की खाल जो लटकती रहती है ।

तन्त्र गलकु (क) सं.—‘ज्ञनज्ञान’ ध्वनि ;
एक प्रकार की घास ।

तन्त्र गलगु (क) सं.—नरकट ; बहुत जोर
का शब्द, कड़कड़ शब्द ।

तन्त्र गलन (सम्) सं.—चूना, टपकना,
रिसना ।

तन्त्र गलति, तन्त्र गलित, तन्त्र गलितु
(अ. दे.) सं.—गलती (फारसी), अशुद्धि ।

तन्त्र गलति, तन्त्र गलतिके, तन्त्र गलतिगे
गलतिगे (सम्) सं.—तन्त्र गलन्तिगे,
तन्त्र गणतिगे (तद्)—छोटा कलसा, कल-

सिया, झोटा घड़ा ; छोटा घड़ा जिसकी
पेदी में छेद करके जल भरकर शिवालिंग के
ऊपर टांग देते हैं ।

तन्त्र गलि (क) सं.—तन्त्र गलिविलि —
अव्यवस्था, अक्रम, अम, अंति ।

तन्त्र गलीज (अ. दे.) वि.—गलीज (अरबी) ;
गंदा, अशुद्ध ।

तन्त्र गलु (क) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र गलगु (क) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र गलुहु (क) सं.—ज्ञनक-ज्ञनक शब्द ।

तन्त्र गलेफु (अ. दे.) सं.—गिलाफ (अरबी) ।

तन्त्र गल्लु (क) सं.—पायल की ध्वनि ।

तन्त्र गलित (अ. दे.) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र गल्भ (सम्) वि.—साहसी, हिम्मती ।

तन्त्र गल्ये (सम्) सं.—गल्या, गलों का
समूह ।

तन्त्र गल (क) सं.—[गंड—तत् ?] —कपोल,
गाल ।

तन्त्र गलणे (क) सं.—कष्ट, पीड़ा, चिंता,
व्यग्रता ; यातना, उत्पात, कंटक ।

तन्त्र गल्लु (अ. दे.) सं.—दे. तन्त्र.

तन्त्र गल्ला, तन्त्र गल्ले (अ. दे.) सं.—गल्ला
(अरबी) ; दैनिक-व्यापार का धन, धन रखने
की पेटी ।

तन्त्र गल्लि (अ. दे.) सं.—गली (हिं.) ।

तन्त्र गल्लिसु (क) क्रि.—कष्ट दे, पीड़ा दे,
यातना दे, व्यग्र कर, चिंतित कर ; चिंतित
हो, व्यग्र हो ; पछोर ; मिला ; चंचल कर,
हिला ; ढकेल, हटा ।

तन्त्र गल्लु (क ?) सं.—फांसी । तन्त्र गल्लु
गल्लिगे हाकु (क) क्रि.—फांसी पर लटका,
फांसी की सजा दे ।

तन्त्र गल्ले (क) सं.—थक्का, पिंडा, ढोंका ;
गाल, कपोल ।

तन्त्र गल्वर्क (सम्) सं.—बिना हथिये का
पानी पीने का प्याला या कटोरा ।

तन्त्र गव (क) सं.—कुत्ते के भूँकने की
आवाज़ ।

(१) तन्त्र गव (क) क्रि.—खुजलन हो, गुद-
गुदी हो ।

(२) तन्त्र गव (सम्) सं.—गाय, पशु ।

तन्त्र गवड, तन्त्र गवुड, तन्त्र गव (क) सं.—
ग्राभीण, एक जाति विशेष ; पुरुषों के अंत
में यह शब्द लगता है, जैसे गवड तन्त्र
(गवड) मारे गवड (गौड) आदि ।

तन्त्र गवक्के (क) अ.—तुरंत, फौरन ।

तन्त्र गवन (क) सं.—ध्यान, मत, विचार,
सावधानी । —तन्त्र इसु (क) क्रि.—ध्यान
दे ; गौर कर, मन लगा, सावधान हो ।

तन्त्र गवय (सम्) सं.—बैल की जाति
विशेष ।

तन्त्र गवर्गिग (क) सं.—चटाई, टोकरी आदि-
बनानेवाले लोगों की जाति का आदमी ।

ಸೂಚಕ ಪ್ರತ್ಯಯ | ಉದಾ.—ದೇವತೆಗಳ್ ದೇವತೆಗಲ್,
 ದೇವತೆಗಳು ದೇವತೆಗಲು = ದೇವತಾ | ಗುರುಗಳ್
 ಗುರುಗಲ್, ಗುರುಗಳು ಗುರುಗಲು = ಗುರು |

गलक् (क) सं.— किसी चीज़ को निगलते समय धानेवाली ध्वनि ।

गङ्गा गळग. गङ्गा गळिगे (तद्) सं. — घटिका
(तद्?) ; तद्, परत ।

गङ्गगङ्गै गळगळने (क) अ.— जल्दी-जल्दी,
शीघ्रता से ।

गङ्गागङ्ग गळगाळ (क) सं.— कुलाबा, काँदा,
मछली, फँसाने की बंसी ।

तहाँ गळ्गे (क?) सं.— बाँस की बड़ी
टोकरी जिसमें अनाज रखा जाता है।

गङ्गां गच्छति (सम्?) सं.— ('गृह से?')
— कमारा, कौठरी ।

गङ्गा गङ्गा (तद्) सं. — दे. गङ्गा.

२४ मिनट की एक घड़ी ।

ಗಳಿಸು ಗಲಿಸು (ತಡ್) ಕ್ರಿ.— ದೆ. ಗಡಿಸು

गंधी गल्लु (क) प्र.— दे. गंधी.

गङ्गेऽ गळेवु, गङ्गेऽ गळेयवु, गङ्गेऽ
गळेय (क) सं.— कृषि के काम आनेवाले
उपकरण, कृषकों के लिए उपयोगी आयुध ।
गङ्गेऽ गळ्ळेने (क) अ.— हँसते समय
उ पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गङ्गा गङ्गा (क) सं.— थका, पिंड ।

ग० ग० (क) सं.— 'शीघ्रता' का अर्थबोधक
शब्द ; नौकादण्ड, नाव खेने की पतवार ।

गणेश गणप (क) सं.— वाचाल, बकवाद करनेवाला या झूठ बोलनेवाला पुरुष ।

गणपत्य गळपत्य (क) सं.— बकवास,
मँहजोरी ; झूठ ।

गल्लपु, गल्लहु (क) क्रि.—
बकवाद कर, बहुत बोल, गपशप कर।
सं.— बकवास ; गपशप, व्यर्थ की बात ।

गेल्ले गळह (क) सं.—दे. गळह.

ಗಟ್ಟು ಗಟ್ಟು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೇ. ಗಟ್ಟು.

गल्लिके (क) सं.—प्राप्ति, कमाना,
कमाई, अर्जन ।

१७१ गल्लिगे (तद्) सं. -- 'वटिका (तद्) ।

गणित (क) सं.— क्रमिकता, व्यवस्था, प्रबंध, तैयार करना; तैयारी।

गणित (तद्) क्रि.— दे.— गणित।

गणित (क) सं.— नौकादण्ड, पतवार।

गणित (क) सं.— दे.— गणित।

गणित (क) सं.— बाँस, बाँस की लकड़ी, डंडा, लाठी, छड़ी, पतवार; मथानी।— गणित (क) सं.— दे.— गणित।

गणित (सम्) सं.— गंगा का पुत्र, भीष्म, कर्तिकेय, कर्ण; सुवर्ण, सोना, सफेद रंग।

गणित (सम्) सं.— एक पौधा विशेष The plant uraria lagopodioides।

गणित (अ. दे.) सं.— गांजा (हिं.)।

गणित (अ. दे.) सं.— छोटी गहरी।

गणित (सम्) सं.— गांधीव, गांधीव (सम्) सं.— अर्जुन के धनुष का नाम।

गणित (सम्) सं.— गांधीव (सम्) सं.— अर्जुन।

गणित (क) सं.— गुदा, अपान; बुद्धि—हीन पुरुष, मूर्ख; बड़ी गदा।

गणित (सम्) सं.— गांधी, बैलगाड़ी।

गणित (सम्) सं.— गांधर्व से संबंधित; गांधर्व-विद्या—संगीत, नृत्य।— गणित (सम्) सं.— सुंदर भवन; संगीत का हॉल (Hall)— गणित विवाह (सम्) सं.— गणित प्रकार के विवाहों में एक।

गणित (सम्) सं.— संगीत के सप्त स्वरों में तीसरा, कांधार और उसके निवासी।

गणित (सम्) सं.— धतराष्ट्र की पत्नी का नाम; एक पौधा, देवपत्र या माचीपत्र; गंधवती, एक प्रकार की चमेली; एक राग का नाम।

गणित (क) सं.— गौवार, मूर्ख या बेवकूफ आदमी।

गणित (क) सं.— गणित गांधीव (सम्) सं.— मूर्खता, बेवकूफी।

गणित (सम्) सं.— गंभीरता, गहराई, चरित्र की उच्चता; उत्साह; चतुराई।

गणित (क) सं.— शोर, शोरगुल, हल्ला।

गणित (तद्) सं.— ग्रहचार (तद्); दुर्भाग्य, विधि।

गणित (तद्) सं.— काच; (तद्); शीशा, काँच।

(१) गणित (क) सं.— लाल मिर्च आदि की तीक्ष्ण गंध।

(२) गणित (तद्) वि.— गाढ (तद्); — बढ़ा, बृहत्, गुरु, गाढ़।

गणित (क) क्रि.— तंग कर, दिक कर, कष्ट दे, पीड़ा दे।

गणित (तद्) वि.— गाढ (तद्); गहरा, घना, सघन, कसा हुआ, अगम्य।

(१) गणित (क) सं.— सौंदर्य, सुंदरता, चारुता, मनोहरता, शोभा।

(२) गणित (अ. दे.) सं.— गाड़ी (हिं.), बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, इका, तांगा। — गणित कार = गाड़ीवान।

गणित (क) सं.— सुंदर स्त्री, सुंदरी।

गणित (सम्) सं.— (गणित से) — अधिकता, बहुतायत, घनत्व।

गणित (तद्) गणित, गणित गणित (तद्) सं.— गणितिक; (तद्); ऐंद्रजालिक, जादूगर।

गणित (क) सं.— दे.— गणित (१) गणित (सम्) वि.— गणित — गणितिक अंधकार (सम्) सं.— गहरा अंधेरा। — गणित आलिंगन (सम्) सं.— बहुत प्रेम के साथ गले मिलना। — गणित (सम्) सं.— गणित-निद्रा; मधुर निद्रा (मै. प्र.)।

गणित (सम्) सं.— असम्यक्ता, रुक्षता, भद्दापन।

(१) गणित (क) सं.— कोल्हू, ईख का रस निकालने का यंत्र; काँटा, कुलाबा, मल्लई फँसाने की बंसी।

(२) गणित (तद्) सं.— ग्रहणम् (तद्) — सूर्य या चंद्र ग्रहण; गानम् (तद्)— गीत। गणित, गणितिक, गणितिक (क) सं.— तेलिन, तेली की पत्नी।

गणित (तद्) सं.— गायिका।

गणित (सम्) सं.— वेश्याओं का समूह।

गणित (क) सं.— तेली।

गणित (क) सं.— दे.— गणित।

गणित (क) सं.— दे.— गणित।

गणित (तद्) सं.— घात; (तद्); गहराई; प्रहार, चोट।

गणित (क) सं.— दे.— गणित।

गणित (क) प्र.— 'वाली' (स्त्री. लिं.) का अर्थसूचक प्रत्यय।

गणित (सम्) सं.— गायक।

(१) गणित (क) सं.— दे.— गणित।

(२) गणित (सम्) सं.— शरीर, देह, शरीरावयव; हाथी के आगे के पैर की जाँघ।

गणित (सम्) सं.— चंदन (लाल चंदन)।

गणित (सम्) सं.— गात्रसंकोचि (सम्) सं.— खेखर, जड़-विलाव के समान पशु विशेष।

गणित (सम्) सं.— शरीर पर मलने का सुगंध द्रव्य।

गणित (सम्) सं.— गायक; विश्वामित्र के पिता का नाम।

गणित (सम्) सं.— गाथा; गाना, गति; पद्य; छन्दोबद्ध सूत्र; कथन, कहावत।

गणित (क) सं.— कीड़े-मकोड़ों के काटने से शरीर में होनेवाले घाव या घाव का निशान।

गणित (अ. दे.) से.— गणित (हिं.); गणित आसन, तकिया। सं.— दे.— गणित।

गणित (अ. दे.) सं.— धिरनी खंदक, खाई। त. ने का चर्खा।

गार्गी गार्गी (सम्) सं.— एक
विदुषी ; याज्ञवल्क की पत्नी ।

गठि गार्ति (क) प्र.— दे. ग०३.
गठ्ठं गार्दभ (सम्) वि.— गर्दभ से
संबंधित । सं.— गधा ।

गार्भिण्य (सम्) सं.— गर्भवती
स्त्रियों का समूह ।

गार्हपत्य (सम्) सं.— अग्निहोत्र
की अग्नि, वह स्थान जहाँ पवित्र अग्नि
रखी जाय ।

गण्डर्वसु गार्हस्थ्य (सम्) सं.— गृहस्थ
धर्म, गृहस्थी ।

गल गाल (सम्) सं.— घाव ; (किसी पनीली चीज को) छानना ; पिघलना ।

गालव (सम्) सं.— एक ऋषि का नाम ; लोध्र वृक्ष ।

ग० गालि (क) सं.— चक्र, पहिया ।
ग० गाल, ग० गाल (भ. दे.) सं.—

आक्रमण करना, नष्ट करना, नाश ; अव्य-
वस्था, हलचल, उपद्रव ; क्षोभ ।

गाव गाव, गाव गावे (तद्) सं.— ग्रामः ;
(तद्) गाँव ।

गवडि गावटे (क) सं.— एक वृक्ष का नाम ।
गवडिग गावणिग (ख. दे.) सं.— ('गँवार')

से ?) — नीच या तुच्छ पुरुष ।
ಗವೆದ ಗಾವದ, ಗವುದು ಗಾವುದ (ತದ್) ಸಂ.—

गव्यूतम् (तत्) ; एक कोस या दो मील ।
गव्दो गावदि (क्ष. दे.) सं.— गँवार (हिं.),

मूर्ख ।

ध्वनि, स्वर, आवाज़, आहट, कोलाहल ;
पीड़ा का शब्द ।

ಎಂಒಸು ಗಾವರಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಧ್ವನಿ ಕರ,
ಶಬ್ದ ಕರ ; ಶೋರ ಮಾಚಾ. ಹಲ್ಯಾ ಕರ ।

७७५० गावसिंग (तद्र) सं.— ग्रामसिंहः
(तद्र) : कृष्ण ।

७६ गावळ (क) सं.— अंधकार, अंधेरा,
निन्दा ।

७७९ गावळि (क) सं.— दे. गळड.

गालिग गावलिग

गालिग गावलिग (क) सं.— हो-हला करनेवाला, शोर-गुल करनेवाला ।
 गालिग गावलि (तद्) सं.— ग्रामीणः (तत्) ; गँवार ; मूर्ख ।
 गालिग गावुद (तद्) सं.— दे. गालिग ।
 गालिग गावुलि (क) सं.— समूह, समुदाय ; राशि ।
 गालिग गास (तद्) सं.— काचः (तत्) ; काँच, शीशा ।
 गालिग गासि (क) सं.— तकलीफ़, कष्ट, पीड़ा ; थकावट ; दर्द । — गालिग, कोल्लु (क) क्रि.— थकावट का अनुभव कर ।
 गालिग गाह (सम्) सं.— डुबकी, गोता, स्नान ; गहराई, अन्तर्देश । — क (सम्) वि.— गहराई में जानेवाला ।
 गालिग गाहन (सम्) सं.— डुबकी, गोता, स्नान ।
 गालिग गाहु (क) सं.— कपट, धोखा, ठगई ।
 गालिग गाड़े (तद्) सं.— गाथा (तत्) ।
 गालिग गाल, गालि गालि, गालि गालु (क) सं.— हवा, पवन, वायु, अनिल ; श्वास ।
 गालि गाल, गालि गाण (क) सं.— दे. गालि (१) ।
 गालिग गालक (क) सं.— (ग्राहक-तत्?) — अच्छा या योग्य पुरुष ।
 गालि गालि (क) सं.— दे. गालि ; शून्यता, सूनापन, खाली होना, विवेकहीनता ; भूत, प्रेत, राक्षस ।
 गालिग गालिग (क) सं.— वह भूत जिसकी 'गालि-पूजा' की जाती है ।
 गालिग गालिसु (सम्) क्रि.— ('गालनम्' से) — छान, पछोर ; पिघला ।
 (१) गालि गालु (क) सं.— दे. गालि ।
 (२) गालि गालु (अ. दे.) सं.— दे. गालि ।
 गालिग गालुक (अ. दे.?) सं.— चिमटा, सँडसी ।
 गालि, गालि (क) — ध्वन्यात्मक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, जैसे— गालि-गालि कुदरे-गिदरे = घोड़ा-वोड़ा ; गालि-गालि नीरु-गीरु = पानी-वानी आदि ।

गालिग गिंनु (क) सं.— एक पक्षी विशेष ।
 गालिग गिंनु, गालिग गेकु (क) सं.— सुस्ता, कैवर्त सुस्तक, एक प्रकार का कंद ।
 गालिग गिज (क) सं.— एक अनुकरणमूलक ध्वनि ; अस्पष्टता, हो-हला । गालिग गिजगिज— (दुहराना) ।
 गालिग गिजटि (क) सं.— मज्जा, वसा, गुदा एक झाड़ी या पौधा ; लाल रंग के छोटे-छोटे गोलाकार बीज विशेष (धुंधची) ।
 गालिग गिजि (क) सं.— दे. गालिग ; भ्रम या भ्रान्ति का सूचक शब्द ; गालि गालि गिजिगिजि (क) वि.— खचाखच ; पक्षियों का चहचहाना ; दे. गालिग ।
 गालिग गिजुगार (क) सं.— खंजन, खंजरी ।
 गालिग गिट (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द । — गिट गरे = खाने या पीने के बाद पेट में गड़गड़ शब्द होना ।
 गालिग गिटक, गालिग गिटकु, गालिग गिटकु (क) सं.— गरी ।
 गालिग गिटिसु गालिग गोटिसु (क) क्रि.— अपना (हड़प ले) ; पहुँचा ; प्राप्त हो ।
 गालिग गिटु (क) क्रि.— प्राप्त हो, मिल ; बराबर हो, ठीक हो ; एक दूसरे के पास लगा या दबा ।
 गालिग गिट (क) सं.— पौधा, छोटा वृक्ष, झाड़ी ।
 गालिग गिटगलु — व. व. ।
 गालिग गिटग (क) सं.— बाज़, इयेन पक्षी ।
 गालिग गिटगार [गार गार] (क) सं.— वह मनुष्य जो कपट रूप ले दूसरे को विष देता हो ।
 गालिग गिटि (क) क्रि.— एक कौर के बाद दूसरा कौर जल्दी-जल्दी खा, मुँह के अंदर हँस । सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; गालिग गिटविड — डमरू आदि वाद्य बजाने से उत्पन्न ध्वनि ।
 गालिग गिटिग (क) सं.— दे. गालिग ।
 गालिग गिटु (क) सं.— गिट ।
 गालिग गिटु (क) सं.— छोटा, नाटा आदमी, वामन, बौना ।

गालिग गिटुने, गालिग गिटुने (क) वि.— छोटा, नाटा ।
 गालिग गिटिड (क) सं.— छोटी या नाटी स्त्री ।
 गालिग गिणि (क) सं.— तोता, कीर ; कपड़े आदि टाँगने की खूँटी ; एक अनुकरणमूलक ध्वनि, टन्टन् ध्वनि ।
 गालिग गिणिके, गालिग गिलकु (क) सं.— टन्टन् ध्वनि, खड़खड़ाहट ।
 गालिग गिण्ट (क) सं.— मोटा कपड़ा, दो ताने का कपड़ा ।
 गालिग गिंडी (क) सं.— छोटे मुँह का एक जल-पात्र ।
 गालिग गिंडु (क) क्रि.— चकौटी काट, नोच ।
 गालिग गिण्ण, गालिग गिण्णु, गालिग गेण्णु (क) सं.— व्याई हुई गाय या भैंस का दूध ।
 गालिग गिणि (क) सं.— एक प्रकार की बीमारी जिसके कारण हाथ-पैर की अंगलियाँ और नाक खराब हो जाती है ।
 गालिग गिण्णु (क) सं.— दे. गालिग ; जोड़, गांठ ।
 गालिग गिति ['गति' का अन्यरूप] — स्त्री. लिं. सूचक प्रत्यय ; उदा. — गालिग गति, कुंवारगिति = कुम्हारिन, गालिग गति, डोंबरगिति = डोंबर जाति की स्त्री ।
 गालिग गिटु ; गालिग गिटुन, गालिग गिटुन, गालिग गिटुन (क) वि. १/४ [एक चौथाई] भाग, एक परिमाण विशेष ।
 गालिग गिर (सम्) सं.— गिरा, वाणी, बात ।
 गालिग गिरकालु (क) वि. — १/१६ (एक बटा सोलह) ।
 गालिग गिरकु (क) क्रि.— हँस, दबाकर भर ; घना हो ;
 गालिग गिरके (क) सं.— रुई धुनने का यंत्र ।
 गालिग गिरगट, गालिग गिरगट, गालिग गिरगटे (सम्) सं.— एक एक प्रकार का वाद्य विशेष जिसका स्वर उतना आकर्षक नहीं होता ।
 गालिग गिरगे (क) सं.— नली (Ankle) ।
 (१) गालिग गिरणि (क) सं.— दे. गालिग ।
 (२) गालिग गिरणि (अ. दे.) सं.— घिरनी (हिं.) सूत कातने का चर्खा ।

१०८ गिरस्त (तद्) सं.—गृहस्थ (तत्) ।
१०८ गिराकि (तद्) सं.—ग्राहकः (तत्) ;
खरीदनेवाला ।

१०८ गिरागति (तद्) सं.—गृहगति (तद्)
किसी की व्यक्तिगत बातें ।

१०८ गिरास्त (तद्) सं.—दे. १०८.

(१) १० गिरि (सम्) सं.—प्रतिष्ठित, मान
नीय ; पर्वत, सात प्रधान पर्वतों में एक ;
सात की संख्या ; = १० (' गिल' धातु) —
निगलना ।

(२) १० गिरि (अ.दे.) प्र.—व्यापार-व्यवसाय
का सूचक प्रत्यय ; उदा.— १० गिरि १०
गुमास्तगिरि. १० गिरि मुनषीगिरि =
मुनीम ।

१०८ गिरिकर्णि (सम्) सं.—एक पौधा,
विष्णुकान्ता ;

१०८ गिरिकर्णिके (सम्) दे.—१०८ गिरि ;
पृथिवी ।

१०८ गिरिके (सम्) सं.—गिरिका, छोटा चूहा ।
चुहिया ।

१०८ गिरिगे (क) सं.—दे. १०८.

१०८ गिरिज (सम्) सं.—पार्वती, पहाड़ी
केला ; मलिका लता, गंगाजी ; सेंट-
खड़ी, खड़िया मिट्टी ।

१०८ गिरिजाकल्याण (सम्) सं.—
कन्नड के प्रसिद्ध कवि हरिहर का प्रबंध
काव्य ।

१०८ गिरिकांत (सम्) सं.—शिव ;
माप विशेष ।

१०८ गिरिजाते, १०८ गिरिजे (सम्) सं.—
पार्वती ।

१०८ गिरिजानाथ, १०८ गिरिजेन्द्र,
१०८ गिरिजेश (सम्) सं.—शिवजी ।

१०८ गिरिदुर्ग (सम्) सं.—पहाड़ी
किला ।

१०८ गिरिधन्व (सम्) सं.—शिव ।

१०८ गिरिधर (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।

१०८ गिरिमल्लिके (सम्) सं.—एक
प्रकार की चमेली ; कुटजवृक्ष ।

१०८ गिरिराज (सम्) सं.—हिमालय ।

१०८ गिरिरिपु (सम्) सं.—इंद्र ।

१०८ गिरिवातनाथ, १०८ गिरिश
(सम्) सं.—शिव ।

१०८ गिरिशृंग (सम्) सं.—पर्वत की
चोटी ; गणेश ।

१०८ गिरिस (तद्) सं.—गिरिश (तत्) ।

१०८ गिरिसानु (सम्) सं.—अधिलका,
पहाड़ की तलहटी ।

१०८ गिरिसार (सम्) सं.—लोहा ;
जस्ता ।

१०८ गिरिसुते (सम्) सं.—१०८ गिरि.

१०८ गिरिश, १०८ गिरिश्वर (सम्) सं.—
शिव ; हिमालय ।

१०८ गिरे (सम्) सं.—गिरा, वाणी ।

१०८ गिर्याण (तद्) सं.—ग्रहणम् (तत्) ।

१०८ गिरि (क) क्रि.—सोच, विचार कर,
कल्पना कर, गौर कर ।

१०८ गिरि (क) अ.—१०८ गिरिगिरि—चारों
ओर घूमते हुए या चक्कर काटते हुए ।

१०८ गिरि, १०८ गिरिके (क) सं.—चारों
ओर घूमने या चक्कर काटने की क्रिया ;
विभ्रम ।

१०८ गिरिकु (क) सं.—सीधा होना, स्थिर या
दृढ़ होना ; बहुत कठिनाई के साथ खोलने
योग्य होना (जैसा कि दरवाजा) ; खचा-
खच (भरा) होना । सं.—चरचर शब्द
(दरवाजे का) ।

१०८ गिरिके (क) सं.—दे. १०८.

१०८ गिरि (क) सं.—चक्कर काटना ; चक्कर,
किसी पदार्थ के वेग से घूमने से निकलने-
वाली ध्वनि ।

१०८ गिरिकि (क) सं.—दे. १०८.

१०८ गिरिके (क) सं.—दे. १०८ ; बच्चों
का खिलौना ; रस्सी के सहारे चलनेवाला
पहिया ।

१०८ गिरि (क) वि.—चराचरहट करनेवाला ।

१०८ गिरिकु (क) सं.—चराचरहट ; हवा की
ध्वनि ।

१०८ गिरिगटे (क) सं.—बच्चों का

खिलौना जिसमें से खड़खड़ाहट का शब्द
निकले ; खड़खड़ शब्द ।

१०८ गिरिगटे (क) सं.—दे. १०८.

१०८ गिरि, १०८ गिरिगे (क) अ.—
वेग से चक्कर काटने हुए, शीघ्रता से ।

१०८ गिरिगटे, १०८ गिरिगटे (सम्) सं.—
दे. १०८.

१०८ गिरि (क) वि.—दे. १०८.

१०८ गिरि, १०८ गिरि (क) सं.—खड़खड़,
गड़गड़ आदि शब्द ।

१०८ गिरि (क) सं.—खड़खड़ शब्द ।

१०८ गिरिकु, १०८ गिरिके (क) सं.—दे.
१०८ और १०८.

१०८ गिरिगटे (सम्) सं.—मगर, नक्र,
घड़ियाल ।

१०८ गिरिन (सम्) सं.—निगलना, खा
डालना ।

१०८ गिरिगटे, १०८ गिरिगटे, १०८ गिरिगटे
गिरिगटे (अ. दे.) सं.—गिरिगटे (फारसी)
गारा, दीवार पर गारा लगाने की क्रिया ।

१०८ गिरि (क) सं.—दे. १०८.—१०८ गिरिगटे
गिरिगटे = १०८ गिरिगटे गिरिगटे —
औषध की एक जड़ी-बूटी ।

१०८ गिरिके, १०८ गिरिके, १०८ गिरिके (क)
सं.—बच्चों का खिलौना जिसमें से
खड़खड़ शब्द निकले ।

१०८ गिरि (अ. दे.) सं.—शिकायात,
कलंक लगाना, दुर्नाम करना, अपयश
फैलाना ।

१०८ गिरि (क) सं.—तोता, कीर, शुक ।

१०८ गिरिगटे, १०८ गिरिगटे (क) सं.—
हाथी का चिंघाड़ना ।

१०८ गीकु, १०८ गीचु (क) क्रि.—खुरच,
रगड़कर चमका ; रेखाएँ खींच, अस्पष्ट
लिख, घसीट लिखकर कागज़ भर ; नोच,
छील ; किसी पेड़ से रस निकालने लिए
नश्तर लगाया । सं.—खुरचन ; छेनी,
कलम आदि से खींची गई रेखा ; नोचना ;
हल की लकीर ।

ಗುಡಲು ಗುಡಲು (ಕ) ಸ. - ದ. ಗುಡಲು.

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—कन्नड के एक लेखक का नाम ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—मस्तूल या वह खंभा जिससे जहाज या नाव बांधी जाती है ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— गुणन-क्रिया, गुना करना ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— गाँव के अंक-लेखक (शानुभोग) का सहायक ।

(१) गुणवर्म गुणवर्म (क) वि.— पोला, छूछा । क्रि.—चाबुक की मूठ ।

(२) गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—गुणवान् पुरुष ; धनुष ; एक पौधा विशेष ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—गुमड़ी, गिल्टी । गुणवर्म गुणवर्म (सम्) वि.—गुना किया हुआ । सं.—गुणन क्रिया ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) क्रि.—दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि.— गुणवर्म गुणवर्म बड़बड़ाहट, कुड़बड़ाना ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— राशि, समुदाय ; गहराई, अथाह ; गंभीरता, गुप्त होना, रहस्य ।

(१) गुणवर्म गुणवर्म (क) वि.— दृढ़, कसा हुआ । गुणवर्म गुणवर्म (तद्) वि.—गुप्त (तद्) । गुणवर्म गुणवर्म (क) कृ.—कसकर, दृढ़ता से । गुणवर्म गुणवर्म गुणवर्म (क ?) सं.—ठेकेदार । गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— फली या फूलों का गुच्छा ; झाड़ी ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— ठेका, ठेकेदारी ; काश्तकारी ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— चिह्न, निशान, पहचान ; स्थान, जगह ; तंगी ।

गुणवर्म गुणवर्म (तद्) सं.— गुप्तक (तद्) ; गुच्छा ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— गट्ठा, बंडल, गुच्छा ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—गुदा ।—३९७ कील, ३९७ कीलक (सम्) सं.—बवासीर ।

(१) गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—दरवाजे को अंदर से बंद करने की कुंडी ।

(२) गुणवर्म (क) सं.—मोटा आदमी । गुणवर्म गुणवर्म—स्त्री. लिं. ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—दे. गुणवर्म (१). गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—गदा, गदका ; मुद्गर ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.—विष्णु ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि.—कूद, छलांग मार, पैरों से शोर मचा ; पाद या पैर बांध । सं.— गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म—ताड़ के वृक्ष या नारियल के वृक्ष पर चढ़ते समय पादों में बांधने को रस्सी ; गुच्छा ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—दे. गुणवर्म ; दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— सनसनाहट ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— दे. गुणवर्म (१). गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— दे. गुणवर्म (सं.) ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि.— आगे-आगे चला, खींच ; मुक्की मार ।

गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म (तद्) सं.— कुहालः (तद्) ; कुदाली ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— पशुओं के गले में बांधने की रस्सी ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि.—आगे-आगे चलवा (गुणवर्म का प्रेरणार्थक) ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि.— मुष्टि प्रहार कर, धूँसा दे, मुक्की मार ; कूट, चूर्ण कर । सं.— धूँसा ; चूहे, साँप आदि का बिल ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— मुष्टि प्रहार करना ।

गुणवर्म गुणवर्म (तद्) सं.— दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— बाजरे के ऊपर का छोटा भाग ; धान आदि का भूसा ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— ऊपर उठा हुआ स्थान,

(पहाड़ी) ; छोटापन । गुणवर्म गुणवर्म. छोटा हाथी ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— सुनहले रंग का कागज़ जो अलंकार करने के काम में आता है ।

गुणवर्म गुणवर्म (तद्) सं.— गुप्त (तद्) ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— रहस्य, गोपनीय बात ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— रक्षक ; गुप्तचर, जासूस ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— रक्षण, संरक्षण ; छिपाव ; विल, गुफा ; तलवार की मूठ ।

गुणवर्म गुणवर्म (सम्) सं.— रहस्यपूर्ण संभाषण ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) अ.— चुपचाप, मौन रूप से ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि — कूद, लांघ ; छिप ; छिपा (पूरे शरीर को या शरीर के किसी भाग को) ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— डेर, राशि ।— गुणवर्म गुणवर्म (क) क्रि — राशि हो ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— घनत्व, निविड़ होना, भीड़भाड़ होना । क्रि.—दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—भीड़ का शोरगुल ; फुलाव, सूजन, वृद्धि ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द । वि.— गरम, उष्ण ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—मेंढक की टरटराहट । गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— दे. गुणवर्म.

गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— छोटा पक्षी, गौरैया ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— दे. गुणवर्म ; पिण्ड, गोंठ ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— दे. गुणवर्म. गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.—एक प्रकार का तृण ।

गुणवर्म गुणवर्म (क) सं.— गुणवर्म गुणवर्म — फूलों की सुगंधि की व्याप्ति ।

गुणवर्म गुणवर्म (तद्) सं.— गुणवर्म गुणवर्म, गुणवर्म गुणवर्म—कुंभ वाद्य ।

स के गुलाल (अ. दे.) सं. — गुलाल रंग जिसका प्रयोग होली में होता है ।

गोली च गुलिके (सम्) सं.—गोली (A ball), गोल स्फटिक ।

गोली गोली गुलिके (क) सं.—गोली गोली, गोली गुलिके, गोली गुलिके (सम्) सं.—गुच्छा, दस्ता ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—पाँवों की गाँठे, गिटुआ ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—एक पक्षी का नाम ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—गोली गुलिक (तद्)—झाड़ी, वृक्षों का झुरमुट, वन, जंगल; प्रधान पुरुषों से युक्त रक्षकदल जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ अश्व और ४५ पदाति होते हैं; दुर्ग, किला; प्लीहा; देहाती पुलिस की चौकी; घाट ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—सोमवल्ली ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—झाड़ बांधकर उगनेवाली लता ।

गोली गुलिक (क) सं.—शोरगुल, हो हल्ला ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—सुपारी का पेड़ ।

गोली गुलिक (तद्) सं.—गुहा (तद्); गुफा ।

गोली गुलिक (अ. दे.) सं.—घूँसा (हिं.) ।

गोली गुलिक (क) सं.—फुसफुसाहट, कानाफूसी ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—कार्तिकेय । — जनक (सम्) सं.—शिव ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—गुहा, गुफा, विल; हृदय ।

गोली गुलिक (सम्) वि.—छिपाने के योग्य, गुप्त ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—रहस्य, गुप्तत्व; एकांत; अकार्य, अनुचित कार्य; कूल्हा; भग, योनि; कौपीन, लंगोट ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—देवयोनि विशेष — कुवेर के धनागार की रक्षा करनेवाले; कुवेर ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—कुवेर ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—लंगोट, कौपीन ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—हिंगुलि, इंगुर; पानी

या किसी तरल पदार्थ के उबलते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

गोली गुलिक (क) सं.—किसी चीज़ को एक ही बार

पूर्णतः निगलते समय उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गोली गुलिक (तद्) सं.—कुलिकः (तद्); एक नाग का नाम ।

(१) गोली गुलिके (तद्) सं.—गुटिका (तद्); गोली (Pill) ।

(२) गोली गुलिके (तद्) सं.—घुटिका (तद्); पावों की गाँठे, एड़ी ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—समुदाय; स्थानांतरीकरण (शत्रुओं के आक्रमण के भय या अकाल के भय से एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान जाना) ।

गोली गुलिक (क) सं.—लता विशेष, निदग्धिका या राष्ट्रिका (Solanum ferox) ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—मसिपात्र, दवात ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—हाथी-घोड़े का सजावटी साज; हल की फाल; लोहे की छड़ी ।

गोली गुलिक (क) सं.—निम्न भूमि, गड्ढा; विल ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली. (समुद्र के)

जल का गर्जन; अग्नि-ज्वाला का शब्द ।

गोली गुलिक (क) सं.—गोली, गोली, गोली (क) सं.—उल्लू ।

गोली गुलिक (क) सं.—भूसा, भूसी ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—कीला, खूँटा, खूँटी ।

गोली गुलिक (क) सं.—टोकरी ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—एक साथ मिला, राशि लगा, झाड़ू देकर राशि लगा; झाड़ू दे ।

गोली गुलिक (क) सं.—घोंसला, नीह; कबूतर का दरवा; मुर्गी-मुर्गे का घर; अस्थायी वासस्थान; दीवार में छोटा ताखा (Niche); क्रूर मृगों को फँसाने का फँदा; पिंजड़ा; नाभि; हड्डी का खोखला; ढाँचा, खाका; शरीर, देह; बाजरे की सूखी भूसी का ढेर ।

गोली गुलिक (क) सं.—टोकरी; एक पौधा विशेष ।

गोली गुलिक (सम्) वि.—छिपा हुआ, ढका हुआ, गुप्त; गहन, एकांत ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—एक प्रकार का चित्र ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—गुप्तत्व, रहस्य ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—सौँप, सर्प ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—रहस्य; असाधारण शब्द ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—प्रपंची गवाह ।

गोली गुलिक (सम्) सं.—कमठ, कछुवा ।

गोली गुलिक (क) सं.—छोटा ताखा, छोटा आला ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (सम्) सं.—विष्टा, मल ।

गोली गुलिक (क) सं.—टमाटर ।

गोली गुलिक (क) सं.—कुबड़ी, कुब्जा ।

गोली गुलिक (क) सं.—दे. गोली.

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गोली गुलिक (क) सं.—बाँस का जीवन ।

गुणार्णव (सम्) वि.— लिया हुआ, प्रयत्न किया हुआ ।

गुणार्णव गुणिसु, गुणार्णव गुर्मिसु (क) क्रि.— गर्जन कर, कलकल कर, ध्वनि कर ; गूँज ; जभाई ले ; खोल ; विस्तृत कर ; प्रकट हो ; उत्पन्न हो, ऊपर उठ ।

गुणार्णव गुर्मिसु (क) क्रि.— दे. गुणार्णव. गुण गूव (क) सं.— कबूतर, कपोत ।

गुणार्णव गुवाक (सम्) सं. = गुणार्णव गुवाक — सुपारी का पेड़ ।

गुण गूळि (क) सं. — सौंड ; बड़ा जुआ, चीलर ।

गुण गूळे, गुण गूळ्यु, गुण गूळ्य (क) सं.— दे. गुण.

गुण गूजन (सम्) सं.— लहसुन ।

गुण गूधु (सम्) वि. — लालची, लोभी ; अभिलाषी ।

गुण गूध्र (सम्) वि.— लालची, लोभी । सं. गीध ।

गुण गूष्टि (सम्) सं.— एक बछड़ेवाली गाय ; कोई भी जवान मादा जानवर ।

गुण गूष्टिके (सम्) सं. — एक प्रकार का पौधा ।

गुण गूह (सम्) सं.— घर, भवन ; पत्नी ।

गुण गूहकृत्य (सम्) सं.— घरेलू कार्य या बातें ; घर का काम-काज ।

गुण गूहोधिके (सम्) सं. — छिप-कली ।

गुण गूहच्छिद्र (सम्) सं. — घर-गृहस्थी का दोष या कलंक ।

गुण गूहपति (सम्) सं. — गृहस्थ, घर का स्वामी ; यज्ञ करनेवाला ।

गुण गूहपिक (सम्) सं.— दे. गुण गूहपिक. गुण गूहपिक (क) सं.— दे. गुण गूहपिक. गुण गूहपिक (क) सं.— दे. गुण गूहपिक.

गुण गूहप्रवेश (सम्) सं. — नये बने कागिसु (क) सं.— दे. गुण गूहप्रवेश. गुण गूहप्रवेश (क) सं.— दे. गुण गूहप्रवेश.

गुण गूहपति (सम्) सं.— दे. गुण गूहपति. गुण गूहपति (क) सं.— दे. गुण गूहपति.

गुण गूहपिक (सम्) सं.— दे. गुण गूहपिक. गुण गूहपिक (क) सं.— दे. गुण गूहपिक.

गुण गूहबलिभुज (सम्) सं. — गौरैया !

गुण गूहवाटि (सम्) सं.— घर के सामने का बगीचा ।

गुण गूहशांति (सम्) सं. — घर की शांति के लिए किया जानेवाला कर्मानुष्ठान ।

गुण गूहस्थ (सम्) सं. — घर का स्वामी, गृहपति, बाल बच्चोंवाला ; सज्जन, सत्पुरुष ।

गुण गूहस्थान (सम्) सं. — अस्थायी निवास-स्थान ।

गुण गूहस्थाश्रम (सम्) सं.— चार अश्रमों में दूसरा ।

गुण गूहस्थिके (सम्) सं.— घर-गृहस्थी ; सज्जनता, शिष्टता, सभ्यता ।

गुण गूहस्थे (सम्) सं.— गृहिणी, घर की स्वामिनी ।

गुण गूहाधिप (सम्) सं.— गृहस्थ. घर का स्वामी ।

गुण गूहावग्रहणि (सम्) सं. — देहरी ।

गुण गूहि (सम्) सं.— गुण गूहि.

गुण गूहिणि (सम्) सं.— घर के स्वामी की पत्नी, पत्नी ।

गुण गूहीत (सम्) वि.— लिया हुआ, प्राप्त, उपलब्ध, स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ, धारण किया हुआ ।

गुण गूह्य (सम्) वि.— घरेलू, घर से संबंधित ; आकर्षणीय ; प्रसन्न करने योग्य ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— घर में बसनेवाला, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गुण गूह्यक (सम्) सं.— परतंत्र, पालतू, पालतू जानवर ।

गौरी गेदि (क) सं.— एक प्रकार की मछली ।

गौरी गेदि (क) वि.— छोटा, लघु ।

गौरी गेदि (क) सं.— दीमक ।

गौरी गेदि (क) सं.— गूपुर, पायल ; ऊरुसंधि, पेट और जांव क बीच का भाग ।

गौरी गेदि (क) सं.— गूपुर, पायल ; ऊरुसंधि, पेट और जांव क बीच का भाग ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गौरी गेदि (क) सं.— तोते की बोली ।

गोंदिसा गोंदिसु (क) क्रि.—गोंद का प्रेरणार्थक रूप—जिता, विजय प्राप्त करा ।

गोंदूँ गोंदलि, गोंदूँ गोंदलु (क) सं.—दीमक ।

गोंदूँ गोंपति (तद्) सं.—ज्ञेपति: (तद्) ; सम-ज्ञाना, जानना, बुद्धि ; स्मरण ।

गोंदूँ गोंबरु (क) क्रि.—नख से (जमीन) खोद ।

गोंदूँ गोंवु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंय (क) क्रि.—कर, काम कर, बना, तैयार कर, जोत, कृषिकर्म कर ।

गोंदूँ गोंयि (क) क्रि.—गोंदूँ.

गोंदूँ गोंयिसु (क) क्रि.—करा, काम करा, बनवा, तैयार करा (प्रे.) ।

गोंदूँ गोंयु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंयत (क) सं.—काम, श्रम ।

गोंदूँ गोंय्मे (क) सं.—काम, परिश्रम, जोताई, कृषि ।

गोंदूँ गोंयु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंयसु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरसे (क) सं.—सूप, अनाज रखने की चौकाकार टोकरी, सेकपात्र ।

गोंदूँ गोंरसे (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरे (क) सं.—नख या छेनी की रेखा, रेखा, लायिन लकीर ।

गोंदूँ गोंरेसे (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंर (क) सं.—रेखा, लकीर ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—मैथुन कर, रति-क्रीडा कर ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—जीत, विजय पा, विजय हो ; लेपन कर, मल, संपर्क में ला ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—जीत, विजय, जय ; जीतने का आनंद, विजयोत्साह । गोंदूँ गोंरु गोंरु सोलु — जीत और हार ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—जीतकर ।

गोंदूँ गोंरिसु (क) क्रि.—जिता, विजयी कर (प्रे.) ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ. सं.—विजय, जीत ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—जीतना, जीत, विजय (मै. प्र.) ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—जीत, जय, विजय ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—जीत, जय, विजय ।

गोंदूँ गोंरिसु (क) क्रि.—जिता, विजय प्राप्त करा (प्रे.) ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—विजय प्राप्त कर, जीत ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—सखी, सहेली, आली ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दोस्त, मित्र, सखा ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—स्नेह, मित्रता, मैत्री, सांगत्य ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—शकरकंद, मूल या कंद ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—कर, बताना, तैयार कर, कृषि कर ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—गेंडा, गंडक ।

गोंदूँ गोंरु, गोंदूँ गोंरु (क) सं.—गेंडा ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दलदल का एक पौधा ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—अंगूठे और कनिष्ठिका के बीच का परिमाण, वितस्ति ; बड़ा चाकू, तलवार । — गोंदूँ हाक (क) क्रि.—हाथ से नाप (अंगूठे और कनिष्ठिका के बीच का स्थान) ; दूर की बात सोच ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—भाड़ा, किराया ; संविदा ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु (क?) सं.—एक पौधा विशेष ।

गोंदूँ गोंरु (तद्) सं.—ज्ञान । — गोंदूँ वंत (तद्) सं.—ज्ञानवान्, ज्ञानी (प्रा.) ।

गोंदूँ गोंरु (तद्) सं.—ज्ञापक (तद्), याद ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—रोग के कारण (शरीर के किसी अंग का) फूलना ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—काम, कार्य ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) वि.—गाने योग्य, गानेवाला, गवैया । सं.—एक वृत्त का नाम ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—काम करा (प्रे.) ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—कफ के कारण छाती और कंठ में उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ ; काजू का पेड़ ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—सूप से पछोर (मै. प्र.) ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—काजू का पेड़ ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—हँसी-ठट्ठा, उपहास, मजाक, खिली उड़ाना ।

गोंदूँ गोंरु (तद्) सं.—गृहस्थ (तद्) ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) सं.—गृहिणी, पत्नी, घर की स्वामिनी ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) सं.—डरपोक, पर्दे का मुर्गा ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) सं.—घर के पास का बगीचा ।

गोंदूँ गोंरु (क) क्रि.—दे. गोंदूँ.

गोंदूँ गोंरु (अ. दे.) सं.—अतिरिक्त व्यय ।

गोंदूँ गोंरु (अ. दे.) वि.—गौरहाज़िर (अरबी) ; अनुपस्थित ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) सं.—पहाड़ पर उत्पन्न ; सोना ; शिलाजीत, राल ।

गोंदूँ गोंरु (सम्) सं.—राल, शिलाजीत ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—कंठ, गला ।

गोंदूँ गोंरु (अ. दे.) सं.—सिर और मुँह पर लगाने की चादर ; चादर ; अच्छा और लंबा इमली का फल ।

गोंदूँ गोंरु (क) सं.—दे. गोंदूँ.

ಗೊರವಂಕೆ ಗೊರವಂಕೆ ಗೊರವಂಕೆ (ಕ)
 ಸಂ.— ಮೈನಾ ಪಕ್ಷಿ ।

गोळी (क) सं.—कोना, कोण ; गली ;
गुप्त भाग (योनी, भग) ।

ମାର୍ଜିତ୍ତ ମୋକ୍ଷ, ମାର୍ଜିତ୍ତ ମୋକ୍ଷକ (ସମ୍ପ୍ର.),
 ସଂ.—ଦେ. ମାର୍ଜିତ୍ତ.

गो००८ गोंद, गो००८ गोंदु (अ.दे.) सं.—
गोंद (Gum) ।

गो००९ गोप (सम्) सं.— गो-रक्षक, ग्वाला ;
छिपाव, दुराव ; गाली, कुवाच्य ; दीप्ति,
चमक, कांति ; श्रीकृष्ण ; राजा ; शिव,
शंकर ; इंद्र ; ब्रह्मा ; सूर्य ; चंद्रमा ; मेरु
पर्वत ; वृषभ, बैल ; गरुड पक्षी ; बोल,
लोहवान (Myrrh) । — कामिनी
(सम्) सं.— ग्वालिन, ग्वाले की पत्नी ।

गो००९० गोपदुत्व (सम्) सं.— वक्तृत्व
शक्ति ।

गो००९० गोपति (सम्) सं.— साँड, बैल ;
सूर्य ; इंद्र ।

गो००९० गोपथ (सम्) सं.— गायों का मार्ग ;
गोपथ ब्राह्मण ।

गो००९० गोपध्वज (सम्) सं.— शिव ।

गो००९० गोपन (सम्) सं.— रक्षा, रक्षण,
देख-भाल ; छिपाव, दुराव ।

गो००९० गोपवनभुगिन (सम्) सं.—
चमकदार आदिशेष सर्प ।

गो००९० गोपवाहन (सम्) सं.— इंद्र
का वाहन—ऐरावत, ब्रह्मा का वाहन—हंस,
विष्णु का वाहन—गरुड, वृषभ—वाहन—
शिव ।

गो००९० गोपादप (सम्) सं.— स्वर्ग का
वृक्ष ।

गो००९० गोपायित (सम्) वि.— रक्षित ।

गो००९० गोपाल (सम्) सं.— गोप, ग्वाला,
वैष्णव साधुओं की एक जाति ; श्रीकृष्ण ;
शिव ; अन्न, भोजन (मै. प्र.) ।

गो००९० गोपालक (सम्) सं.— अहीर,
ग्वाला ।

गो००९० गोपाळ (तद्) अ.— नाचीज़, निकृष्ट ।

गो००९० गोपि (सं. र.) सं.— गोपी ; अहीर
जाति की स्त्री ; ग्वालिन ; एक पौधा
विशेष । — चंदन (सम्) सं.—

एक प्रकार की सफेद मिट्टी (चंदन) जो
ललाट पर तिलक लगाने के काम में आता
है । — नाथ (सम्) सं.— श्रीकृष्ण ।

गो००९० गोपुर (सम्) सं.— गोपुर, प्रांगण

या नगर का द्वार, जिसपर गोपुर होता है
मंदिर का गोपुर ।

गो००९० गोप्य (सम्) वि.— रक्षा करने योग्य,
छिपाने योग्य, गोपनीय । सं.— दासी का
पुत्र ।

गो००९० गोप्यक (सम्) सं.— नौकर, दास ।

गो००९० गोमतल्लिके (सम्) सं.— अच्छी
गाय ।

गो००९० गोमनालि (क) सं.— गला ;
कंठ, गदेन ।

गो००९० गोमंत (सम्) सं.— एक पर्वत का
नाम ।

गो००९० गोमय (सम्) सं.— गोबर । —
पिण्ड (सम्) सं.— उपला ।

गो००९० गोमराळि, गो००९० गोमलाळि
(क) सं.— दे. गो००९० गोमराळि ।

गो००९० गोमायु (सम्) सं.— पशुओं के
जैसे ध्वनि करना ; सियार ; एक प्रकार का
मैंढक ।

गो००९० गोमाल (सम्) सं.— सार्वजनिक
तृणभूमि (चरागाह) ।

गो००९० गोमाले (क) सं.— कंठ का बाहरी
उभाड़ ।

गो००९० गोमिनि (सम्) सं.— महालक्ष्मी,
विष्णु—माया । — तनुज (सम्)
सं.— काम, मदन ।

गो००९० गोमुख (सम्) सं.— गाय का
मुँह या चेहरा, गाय जैसा मुख ; विलेपन,
अनुलेपन ; एक प्रकार का बाजा ; शुद्धता,
सफाई ; मदमत्तता, नशा ; छेद, सुराख ;
नक्र, मगर, घड़ियाल । — व्याघ्र
(सम्) सं.— मुख गाय का और हृदय बाघ
का अर्थात् दुष्ट हृदय (A wolf in sheep's
clothing) ।

गो००९० गोमेद, गो००९० गोमेदक,
गो००९० गोमेदिक सं.— लाल रत्न,
मणि विशेष ।

गो००९० गोमेध (सम्) — वह यज्ञ जिसमें
गाय की आहुति दी जाती है ।

गो००९० गोम्याळि (क) सं.— गदेन का
पिछला भाग ।

गो००९० गोर, गो००९० गोरु (क) क्रि.— मछली
पकड़ ; जाल पसार ; एकत्रित कर, राशि
बना ।

गो००९० गोर (तद्) वि.— घोर (तद्) ।

गो००९० गोरटे (तद्) सं.— दे. गो००९० गोरटे ।

गो००९० गोरस (सम्) सं.— स्फूर्ति, सतत प्रयत्न,
लगातार चेष्टा करना ।

गो००९० गोरंट, गो००९० गोरटे, गो००९०
गोरंटि (तद्) सं.— दे. गो००९० गोरटे ।

गो००९० गोरथ (सम्) सं.— बैल गाड़ी ।

गो००९० गोरस (सम्) सं.— गाय का दूध ;
गट्टा ।

(१) गो००९० गोरि (क) सं.— जानवरों को
मोहित करने का गान ; खिंचाव, आकर्षण,
हेंगी, भूमि चिकनाने का औजार ।

(२) गो००९० गोरि (अ. दे.) सं.— गोर
(फारसी), स्मशान, समाधि ।

गो००९० गोरिकल्लु (क) सं.— सफेद पत्थर,
चकमक पत्थर ।

गो००९० गोरिकायि, गो००९० गोरी-
कायि (क) सं.— एक प्रकार का सेम ।

गो००९० गोरिसु (क) क्रि.— इकट्ठा करा,
एकत्रित करा ।

(१) गो००९० गोरु (क) क्रि.— एकत्रित कर,
इकट्ठा कर, झाड़ू देकर ढेर लगा, राशि बना,
अनाज के ढेर में कूड़ा-करकट निकाल ; छेद,
छीन, झपट कर ले ; जोती गई ज़मीन को
समतल कर ।

(२) गो००९० गोरु (तद्) सं.— तकलीफ, कष्ट,
विकलता ।

गो००९० गोरे (क) सं.— नाव या जहाज़ के
भीतर कूड़ा-करकट निकालने का फावड़ा ;
(शुद्ध निकालने के) तख्ते से निकाला गया
शुद्ध ।

गो००९० गोरोच, गो००९० गोरोज,
गो००९० गोरोचन (सम्) सं.—
गोरचना, गौ के मस्तक से निकाला हुआ
पीला पदार्थ ।

गोरो

गोरो (क) क्रि.—नख से खुरच । —
 ७०७७ अंचु (क) सं.—खुरचने या रेखाएँ
 खींचने के काम में आनेवाली छेनी ।
 गोरो (क) सं.—हठी, दुष्ट या
 चिड़चिड़ा पुरुष ।
 गोरो (सम्) सं.—दिमाग, मस्तिष्क ।
 गोरो (सम्) सं.—गेंद गोला, ;
 भूगोल ; वृत्त ; लोहवान ; गाय का खुर ।
 (१) गोरो (सम्) सं.—गेंद,
 वृत्त ; विधवा का पुत्र ।
 (२) गोरो (सम्) सं.—गोलक,
 धन-संग्रह करने की पेटी या गोलाकार
 डिब्बा ।
 गोरो (सम्) सं.—गोला, गेंद, गोल
 पदार्थ, बंदूक की गोली, बच्चों के खेलने की
 काँच की गोली ।
 गोरो (सम्) सं.—गोला, वृत्त ;
 भूगोल ।
 गोरो (सम्) सं.—लाल संख्या ।
 गोरो (सम्) सं.—उग्रगंध
 नामक पौधा ; भूतकेश नामक और एक
 पौधा ।
 गोरो (सम्) सं.—गोप (तत्), ग्वाला ;
 अमरुद का पेड़ ।
 गोरो (सम्) सं.—बछड़ा ।
 गोरो (सम्) सं.—प्रियंगु
 वृक्ष ।
 गोरो (सम्) सं.—गोवर्धन
 पर्वत ; श्रीकृष्ण ।—घर घर (सम्) सं.—
 श्रीकृष्ण, गिरिधर ।
 गोरो (सम्) सं.—गोपाल ; (तत्), ग्वाला ।
 गोरो (सम्) सं.—गंगा
 नदी ।
 गोरो (सम्) सं.—गाय, गायों का
 समूह ।
 गोरो (सम्) सं.—शब्द, कथा ।
 गोरो (सम्) सं.—जमाव, सभा ;
 संस्था ; वार्तालाप, संवाद ; समूह, समु-

दाय ; नाटक रचना का एक प्रकार ;
 संबंध ।
 गोरो (सम्) सं.—समूह, Par-
 ty) ।
 गोरो (सम्) सं.—गाय का पद
 या खुर ; गाय के खुर के समानवाला परि-
 माण ; खुर का चिह्न ।
 गोरो (सम्) सं.—बोल, लोहवान ।
 गोरो (सम्) सं.—गोसने (तद्) सं.—
 घोषणा (तत्) ।
 गोरो (सम्) सं.—गोसावि (तद्)
 सं.—गोस्वामिन् (तत्) ।
 गोरो (सम्) सं.—गिरगिट ।
 गोरो (सम्) सं.—के लिए, के वास्ते
 गोरो (सम्) सं.—गाय का थन ;
 फूला हुआ समुदाय ; चार तारों का हार
 (Necklace) ।
 गोरो (सम्) सं.—दे. गोरो ;
 अंगूर का गुच्छा ; अंगूर की लता ।
 गोरो (सम्) सं.—गाय का
 धनी ; भिक्षुक विशेष ; उपाधि विशेष ।
 गोरो (सम्) सं.—गोपुर (तत्) ।
 गोरो (सम्) सं.—गोल, गोला,
 भूगोल ।
 गोरो (सम्) सं.—रोना-चिल्लाना,
 विलाप, रुलाई ।
 गोरो (सम्) सं.—एक प्रकार की वन-
 स्पति ; बरगद का पेड़ ; अंजीर या गूलर
 का पेड़ ; केसर ; बकुल ।
 गोरो (सम्) सं.—रगड़ ; रगड़-
 कर मिला, हिला (Stir) ।
 गोरो (सम्) सं.—रोना,
 रुलाई ; झगड़, गड़बड़ (लाक्ष.) ।
 गोरो (सम्) सं.—दे. गोरो ;
 गोरो (सम्) सं.—मिठाइयां ; एक देश
 का नाम ; काव्य की एक रीति । (क) सं.—
 एक जाति जो प्रायः कृषि करती है ।
 गोरो (सम्) सं.—गुड़ (या ऊख) की
 मदिरा । (क) सं.—‘गौड’ जाति की
 स्त्री ।
 गोरो (सम्) वि.—अप्रधान, अमुख्य ;
 आलंकारिक, गुण बतलानेवाला ।
 गोरो (सम्) सं.—बुद्ध या सांख्य
 मुनि का नाम ; दे. गोरो ।
 गोरो (सम्) सं.—गौतमी नदी ।
 गोरो (सम्) सं.—एक प्रकार की
 छिपकली ।
 गोरो (सम्) सं.—गौधेर (सम्) सं.—
 एक प्रकार की छिपकली ।
 गोरो (सम्) वि.—सफ़ेद ; पीला ;
 लाल । सं.—चंद्रमा ; एक प्रकार का हिरन ;
 सफ़ेद सरसों ; कमल का तंतु ।
 गोरो (सम्) सं.—वजन, भारीपन ;
 मर्यादा, सम्मान, प्रतिष्ठा ; प्रधानता, बड़-
 पन ; कुलीनता, पदमर्यादा ।
 गोरो (सम्) सं.—पार्वती ;
 कन्या ; लड़की जिमको रजोधर्म न हुआ
 हो ; गोरी लड़की ; पृथिवी, धरा, हल्दी ;
 गोरोचन ; तुलसी का पौधा ; वरुण की
 स्त्री ; महिला की लता ; मंजिष्ठ का पौधा ।
 गोरो (सम्) सं.—भूजटा नामक
 पौधा ।
 गोरो (सम्) सं.—दे. गोरो ।
 गोरो (सम्) सं.—गौड (तत्) ; एक
 राग का नाम ।
 गोरो (सम्) सं.—बांध, गाँठ लगाना ;
 पुस्तक, रचना, साहित्यिक रचना ; धन,
 संपत्ति ; अनुष्ठान छंदवाला पद्य ।—छंद,
 कर्त, छंद कार, छंद लेखक (सम्) सं.—
 लेखक, रचयिता ।
 गोरो (सम्) सं.—गूथना, गाढ़ा
 करना, लिखना ।
 गोरो (सम्) सं.—गिल्टी, गुमड़ा,
 गुमड़ी ; गाँठ, बंधन, रस्सी की गाँठ ।
 गोरो (सम्) सं.—दैवज्ञ, ज्योतिषी ;
 दवाई का एक पौधा ।
 गोरो (सम्) सं.—एक सुगं-
 गंधित पौधा, माचीपत्र ।
 गोरो (सम्) वि.—

गूँथा हुआ, रचा हुआ, बांधा हुआ; जमाया हुआ, गाढ़ा किया हुआ ।

गुप्ति ग्रस्त (सम्) वि.—खाया हुआ, भक्षण किया हुआ; पकड़ा हुआ; प्रभाव पड़ा हुआ; ग्रहण लगा हुआ ।

गुप्ति ग्रह (सम्) सं.—पकड़ना, लेना, ग्रहण करना; पाना, प्राप्ति, अंगीकार करना, वसूल करना; बंदी करना, गिरफ्तारी; रोक-थाम; ग्रह; (सूर्य-चंद्र का) ग्रहण; भूत, पिशाच; बच्चों को कष्ट देनेवाली दुष्ट योनि विशेष; ब्राह्मण; जीव-समूह; नौ की संख्या ।—आठ चार (सम्) सं.—ग्रहों का चलना; दुर्भाग्य, अशुभ परिणाम ।

गुप्ति ग्रहण (सम्) सं.—सूर्य-चंद्र का ग्रहण; पकड़ना, पाना; बुद्धि, समझ; ज्ञान ।

गुप्ति ग्रहणी (सम्) सं.—संग्रहणी रोग, शीतला रोग, दस्तों की बीमारी ।

गुप्ति ग्रहणिकर (सम्) सं.—नवग्रह ।

गुप्ति ग्रहपति (सम्) सं.—सूर्य ।

गुप्ति ग्रहमाले (सम्) सं.—ग्रह ।

गुप्ति ग्रहिके (सम्) सं.—ग्रहण करना, समझना; ज्ञान ।

गुप्ति ग्रहिसु (सम्) क्रि.—ले, धर, ग्रहण कर, पकड़; समझ, जान ।

गुप्ति ग्रहाचार (तद्) सं.—दे. गुप्तिग्रह ।

गुप्ति ग्राम (सम्) सं.—गाँव, पुरवा; जाति, समाज; समूह, समुदाय; स्वर, राग; रति, भोग; इंद्रिय; रेतस्, वीर्य; किरण; शब्द, ध्वनि; भूतग्राम; मागध ।

गुप्ति ग्रामिणि (सम्) सं.—ग्राम का आदमी; मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ; ग्रामीण; नाई ।

गुप्ति ग्रामते (सम्) सं.—गाँवों का समूह ।

गुप्ति ग्रामधान, गुप्ति ग्रामाधान (सम्) सं.—गाँव, छोटा नगर ।

गुप्ति ग्रामशार्दूल (सम्) सं.—कुत्ता ।

गुप्ति ग्रामिण गुप्ति ग्रामीण (सम्)

सं.—गाँवार, गाँव का रहनेवाला, मूर्ख, बेवकूफ ।

गुप्ति ग्रामीणे (सम्) सं.—नील का पौधा ।

गुप्ति ग्रामे (सम्) सं.—अनुप्रास का एक भेद ।

गुप्ति ग्रामेयक (सम्) सं.—गाँवार, ग्रामीण; असभ्य ।

गुप्ति ग्राम्य (सम्) वि.—गाँव संबंधी, गाँव का; ग्रामवासी, मूर्ख, अनपढ़, असभ्य, अशिष्ट ।—असभ्य धर्म (सम्) सं.—मैथुन, स्त्री-प्रसंग । अशु पशु (सम्) सं.—पालतू जानवर ।—अशु शब्द (सम्) सं.—अशिष्ट शब्द ।

गुप्ति ग्राव (सम्) सं.—पत्थर, पाषाण; पर्वत, दृढ़ता, धैर्य, निरंतरता ।

गुप्ति ग्रावाल (सम्) सं.—पत्थर पाषाण ।

गुप्ति ग्रास (सम्) सं.—कौर, गस्ता, मुँह भर माप; अन्न, भोजन, पालन-पोषण का उपस्कर ।

गुप्ति ग्राह (सम्) वि.—पकड़ा हुआ । सं.—मगर, नक्र; बंदी, कैदी; स्वीकृति; समझ, ज्ञान; दृढ़ता, अटलता, संकल्प, निश्चय ।

गुप्ति ग्राहक (सम्) सं.—खरीदनेवाला, ग्रहण करनेवाला; पुलिस अफसर ।

गुप्ति ग्राह्य (सम्) वि.—ग्रहण करने योग्य, स्वीकार करने योग्य, लेने योग्य, जानने योग्य, विचार करने योग्य ।

गुप्ति ग्रीव, गुप्ति ग्रीवे (सम्) सं.—गर्दन, गर्दन का पिछला भाग ।

गुप्ति ग्रीष्म (सम्) सं.—गरमी की ऋतु, गरमी, उष्णता ।—जल काल (सम्) सं.—गरमी की ऋतु ।

गुप्ति ग्रीवेय (सम्) वि.—गर्दन संबंधी । सं.—गले का हार, कंठहार ।

गुप्ति ग्लानि (सम्) सं.—थकान; निपैलता, बीमारी; ह्रास; अनिच्छा, अरुचि, घृणा; एक संचारी भाव ।

गुप्ति ग्लासु (अ. दे.) सं.—गिलास, प्याला ।

घ घ

घ घ—कन्नड वर्णमाला का आठारहवाँ अक्षर; कवर्ग का चौथा अक्षर ।

घं घं (क) सं.—ठमरु या ढके की ध्वनि ।

घं घंटा, घं घंटे (सम्) सं.—गंध गंधे (तद्) — घंटा, घंटी; बजे ।

घं घंटाकर्ण (सम्) सं.—स्कंद और शिव का एक गण ।

घं घंटागार (सम्) सं.—घंटाघर ।

घं घंटानाद (सम्) सं.—घंटे की ध्वनि या रव; एक पौधे का नाम ।

घं घंटापथ (सम्) सं.—प्रधान मार्ग, मुख्य रास्ता ।

घं घंटापाटलि (सम्) सं.—तुरही-पौधा (घंटे के आकार के फूलों वाला पौधा) — (Bignonia Suaveolens) ।

घं घंटामणि (सम्) सं.—स्वर्णक्षीरी या हैमवती पौधा ।

घं घंटिके (सम्) सं.—घंटी, छोटी घंटी ।

घं घट (सम्) वि.—होनेवाला, मिलनेवाला, जुड़नेवाला, छूनेवाला, स्पर्श करनेवाला । सं.—संग्रह; हाथी का माथा; घड़, कुंभराशि; कुंभक प्राणायाम; द्रोण के समान तौल; स्तंभ का एक भाग; मधु-गोष्ठी, मधुपान गोष्ठी; काया, देह, शरीर; छोर, किनारा, परिधि ।

घं घटक (सम्) वि.—प्रयत्नवान, प्रयास करनेवाला; बली, शक्तिमान (मै. प्र.); प्रधान, वास्तविक । सं.—एक वृक्ष जिसमें फूल न लगकर फल ही लगते हैं ।

घं घटन, घं घटने (सम्) सं.—घटना, प्रयत्न, उद्योग; होना, संपन्नता, पूर्णता; मेल, ऐक्य, संबंध, संसर्ग; बनाना, तैयार करना, गढ़ना ।

घं घटयोनि (सम्) सं.—घड़े में पैदा हुआ व्यक्ति, अगस्य ।

घं घटसर्प (सम्) सं.—बहुत बड़ा साँप ।

ॐ ष्टुणि (सम्) सं.—गरमी, धूप; किरण,

अं० चंगु

- (२) अं० चंगु (अ. दे.) सं. — सुरचंग ।
 अं० चंगुली (क) सं. — मजदूर, श्रमिक
 (सं. प्र.) ; निर्लज्ज, बेहया ।
 अं० चंगु (क) वि. — दे. अं० ।
 अं० चंच (क) सं. — एक जंगली जाति,
 शबर जाति ।
 अं० चंचत् (सम्) वि. — जानेवाला,
 चलनेवाला, हिलनेवाला, ढुलनेवाला, चंचल,
 चपल ।
 अं० चंचरीक (सम्) सं. — भ्रमर,
 मधुकर ।
 अं० चंचल (सम्) वि. — कौपनेवाला, थर-
 थरानेवाला, कंपकंपी, अस्थिर । — उल्लंघन,
 दुःख (सम्) सं. — चंचलता, अस्थिरता,
 कौपना । — लंघन, लंघन (सम्) सं. —
 लंघन । — अंगण अपांग (सम्) सं. —
 आँग का बाहरी अस्थिर भाग ।
 अं० चंचलि (क) सं. — दक्षिणावर्ती या
 धूमपुष्प वृक्ष (Flacourtia catafracta) ।
 अं० चंचलित (सम्) वि. — दे. अं० चंचल ।
 अं० चंचले (सम्) सं. — चंचला, विजली ;
 भाग्य ; लक्ष्मी ।
 अं० चंचि (क) सं. — [' अं० चंचि ' —
 तेलुगु] — छोटी थैली — विशेषकर पान-
 सुपारी रखने की थैली ।
 अं० चंचित (क) सं. — चंच या शबर
 जाति की छी ।
 (१) अं० चंचु (क) सं. — दे. अं० चंच ।
 (२) अं० चंचु (सम्) सं. — चोंच ; एरण्डी
 का पौधा । वि. — प्रसिद्ध, प्रख्यात ; चतुर ।
 अं० चंचुक (सम्) सं. — एक पक्षी विशेष ।
 अं० चंचुपुट (सम्) सं. — चोंच जो
 खुला न हो ।
 अं० चंचुर (सम्) वि. — चतुर, पटु ;
 सुंदर ।
 अं० चंचे (तद्) सं. — [' अं० चंचे ' के
 बदले] — सायंकाल, शाम (आ.) ।
 अं० चंड (सम्) वि. — भयानक, उग्र,
 क्रुद्ध, गरम ; कर्मट, फुर्तीला ; झालरदार ।
 सं. — गरमी, उष्णता ; क्रोध, रोष ; शिव ;

- स्कंद ; एक राक्षस का नाम ; शिवजी का
 एक भक्त । — चंड कर (सम्) सं. — सूर्य ।
 — चंड कीर्ति (सम्) सं. — शिवजी का
 एक गण । — चंड मुंड (सम्) सं. —
 चामुंडा, दुर्गा का नाम । — चंड रुचि
 (सम्) सं. — सूर्य ; एक राक्षस ।
 अं० चंडाणि (सम्) सं. — उष्णता, गरम
 होना ।
 अं० चंडांशु (सम्) सं. — सूर्य ।
 अं० चंडात (सम्) सं. — सुगंधित कनेर ।
 अं० चंडातक (सम्) सं. — कुर्ती, छोटा
 कोट ; छोटा लहंगा ।
 अं० चंडाल (सम्) सं. — चांडाल, एक
 पतित जाति ; ब्राह्मण पिता और शूद्र स्त्री
 से उत्पन्न एक अत्यंत नीच या घृणित वर्ण-
 संकर जाति । — चंडाल वल्लि (सम्) सं. —
 चंडाल का सितार, सितार ।
 (१) अं० चंडि (सम्) सं. — कामुका या
 हिमालु स्त्री ; स्त्रियों को प्रेम के साथ
 संबोधित करने का एक शब्द ; दुर्गा ;
 दुर्दम या स्वेच्छाचारिता (मै. प्र.) ।
 (२) अं० चंडि (अ. दे.) सं. — उं० चंडि —
 ठंड, ठंडापन ।
 अं० चंडिका, अं० चंडिके (सम्) सं.
 दुर्गा ; पार्वती । — उं० चंडिका (सम्)
 सं. — शिव ।
 अं० चंडिके (क) सं. — चोटी, शिला ;
 जूड़ा ।
 अं० चंडिल (सम्) सं. — रुद्र, शिव ;
 नाई ।
 अं० चंडिवाल, अं० चंडवाल
 (तद्) सं. — अग्रिम धन, वयाना ।
 अं० चंडिसु (सम्) क्रि. — क्रुद्ध हों, गुस्से
 में आ ; स्वेच्छाचारी हो ।
 अं० चंडीश्वर (सम्) सं. — शिव ।
 अं० चंडु (क) सं. — [' कंडुक ' से ?] गेंद ;
 फूँचों का गुच्छा ; पुरुष के लिंग का भाग ;
 गर्दन, गर्दन का पिछला भाग ।
 अं० चंडे (सम्) सं. — दुर्गा ; एक प्रकार

- का सुगंध द्रव्य ; एक वृक्ष विशेष (Cerbera
 odollam Gaert) ।
 अं० चंडेश, अं० चंडेश्वर (सम्)
 सं. — शिव ।
 अं० चंडेश्वरी (सम्) सं. — दुर्गा ।
 अं० चंडोल (क) सं. — भारद्वाज पक्षी,
 लवा ।
 (१) अं० चंद (तद्) वि. — चंद (तद्) —
 सुंदर, अच्छा, लसित, चमकदार, उचित,
 प्रसन्न करनेवाला । सं. — विधान, ढंग,
 आकार, आकृति, प्रकार ।
 (२) अं० चंद (तद्) सं. — चंद्र ; (तद्) ;
 चंद्रमा, चाँद ।
 (३) अं० चंद (तद्) सं. — चंद (तद्) ;
 चंद (इसका बहुत कम प्रयोग होता है) ।
 अं० चंदन (सम्) सं. — चंदन चंदन,
 चंदन चंदल, चंदन चंदल, चंदन
 चंदाल (तद्) — चंदन, चंदन का वृक्ष ।
 अं० चंदनाचल (सम्) सं. — मलय-
 पर्वत जहाँ चंदन के वृक्ष अधिक होते हैं ।
 अं० चंदनोपल (सम्) सं. — चंदन
 घिसने का पत्थर, सान (का पत्थर) ।
 अं० चंदर, अं० चंद्र (तद्) सं. — सिंदूर
 (तद्) ; सिंदूर ।
 अं० चंदल (तद्) सं. — चंदन (तद्) .
 चंदन का कटोरा ।
 अं० चंदल, अं० चंदल (तद्) सं. — दे.
 चंदल ।
 अं० चंदि (अ. दे.) सं. — गृहशिखर, मकान
 का पाखा ।
 अं० चंदिर (तद्) सं. — चंद्र ; (तद्),
 चंद्रमा ।
 अं० चंद्र (तद्) सं. — चाँद ; तिथि, तारीख ।
 (१) अं० चंद्र (सम्) चंद्रमा, चाँद ; चंद्र-
 ग्रह ; कपूर ; मयूरपंख से चंद्रिकाएँ ;
 आनंद देनेवाली कोई वस्तु ; सोना ; लाल
 रंग ; धूलि, रज ; सिंहासन, विष्टर, बैठक
 (यथा कुरसी आदि) ; वन, जंगल ; माप
 विशेष ; जल, पानी । वि. — चमकनेवाला,
 चमकदार ; मुख्य, श्रेष्ठ, प्रमुख, अच्छा ।

(२) ॐॐ चंद्र (तद्) सं.—सिंदूर (तत्) ;
सिंदूर ।

ॐॐ चंद्रक (सम्) मयूरपंख में चंद्रिकाएँ ;
चंद्रमा ।

ॐॐ चंद्रकांत (सम्) सं. — चंद्रकांत
शिला ; चाँद ।

ॐॐ चंद्रकांति (सम्) सं.—चंद्रिका,
चाँदनी ।

ॐॐ चंद्रकि (सम्) सं.—मोर, मयूर ।

ॐॐ चंद्रचूड (सम्) सं.—शिव ।

ॐॐ चंद्रज (सम्) सं.—बुध ।

ॐॐ चंद्रज्योति (सम्) सं. —
चाँदनी ।

ॐॐ चंद्रदार (सम्) सं.—चाँद की
पत्नियाँ, २७ नक्षत्रों में कोई एक ।

ॐॐ चंद्रधर (सम्) सं.—चंद्रचूड ।

ॐॐ चंद्रनखि (सम्) सं.—रावण की
बहन का नाम ।

ॐॐ चंद्रप्रभ (सम्) सं.—आठवें तीर्थ-
कर का नाम ।

ॐॐ चंद्रबाले (सम्) सं.—बड़ी इला-
यची ।

ॐॐ चंद्रभागा [भाग भागे] (सम्)
सं.—एक नदी का नाम ।

ॐॐ चंद्रम, ॐॐ चंद्रमस (सम्)
सं.—चाँद ।

ॐॐ चंद्रमौलि [मौलि मौलि] (क)
सं.—शिव ।

ॐॐ चंद्रलेखे (सम्) सं.—चंद्र की
कला ।

ॐॐ चंद्रवंश (सम्) सं.—प्राचीन
भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश, चंद्रवंश ।

ॐॐ चंद्रवदने (सम्) सं.—चंद्रमा
के समान मुखवाली स्त्री ।

ॐॐ चंद्रशाले (सम्) सं.—चंद्रचूड
चंद्रशाले—भटारी, भटा ।

ॐॐ चंद्रशिले (सम्) सं.—चंद्रकांता
पत्थर ।

ॐॐ चंद्रहास (सम्) सं.—चम

चमाती तलवार, रावण की तलवार का नाम;
केरल के एक राजा का नाम ।

ॐॐ चंद्रांगद (सम्) सं.—इंद्रसेन
राजा का पुत्र ।

ॐॐ चंद्राचूड (सम्) सं.—शिव ।

ॐॐ चंद्रातप (सम्) सं.—चाँदनी ;
बड़ा हॉल ।

ॐॐ चंद्रात्मज (सम्) सं.—बुध ।

ॐॐ चंद्राभरण (सम्) सं.—शिव ।

ॐॐ चंद्राश्म (सम्) सं.—चंद्रचूड ।

ॐॐ चंद्रि (सम्) वि.—चमकदार ; स्वर्णिमा
सं.—एक वृत्त का नाम ; बुध ।

ॐॐ चंद्रिके (सम्) सं.—चाँदनी ;
व्याख्या, टीका ; चन्द्रभागा नदी ; एक

वृत्त का नाम ; ताड़ के पत्तों की गड़री ;
रोशनी ; बड़ी इलायची ; मल्लिका लता ।

ॐॐ चंद्रे (सम्) सं.—भटारी, भटा,
मकान के ऊपरी भाग का हॉल ।

ॐॐ चंद्रोदय (सम्) सं.—चांद
का निकलना ; चँदवा, सभा-भवन में
ऊपरी भाग में बिछाया गया कपड़ा)

ॐॐ चंप, चंपे (सम्) सं.—पहाड़ी आबनूस ;
चंपक पुष्प (या वृक्ष) ।

ॐॐ चंपक (सम्) सं.—संयोग संपिणे
(तद्)—चंपा का वृक्ष जिसके पुष्प पीले

(या लाल) और सुगन्धित होते हैं ; एक
सुगंध द्रव्य ; एक छंद का नाम जो 'चंप-

कमाला' कहलाता है ।—मालिनि
(सम्) सं.—चंद्रहास की दूसरी पत्नी का

नाम ।—माले (सम्) सं.—एक
वृत्त का नाम ।

ॐॐ चंपु, ॐॐ चंपू (सम्) सं.—चंपू काव्य,
गद्य-पद्य मिश्रित रचना ।

ॐॐ चंबक (क) सं.—एक प्रकार का
बाजा ।

ॐॐ चंबार, ॐॐ चम्मार (तद्) सं.—
चर्मकार ; (तत्) ; मोची, चमार, चमड़े का
काम करनेवाला ।

ॐॐ चंबु (क) सं.—तौबा ; लोटा (तांबे,
पीतल आदि का) ।

ॐॐ चकचक (क) अ.—जल्दी, शीघ्र ;
चमकते हुए, प्रकाशित होते हुए ।

ॐॐ चकडा, ॐॐ चक्रडि (तद्) सं.—
शकट (तत्) ; गाड़ी, छकड़ा ।

ॐॐ चकमुकि, ॐॐ चकिमुकि,
ॐॐ चकमुकि, ॐॐ चकिमुकि
(अ. दे.) सं.—चकचक (फारसी) ।

ॐॐ चकर (तद्) सं.—चक्र (तत्) ।

ॐॐ चकळगुलि, ॐॐ चकळगुलि,
ॐॐ चकळगुलि (क) सं.—गुदगुदी,
गुदगुदी पैदा करके दूसरे को हँसाना ।

ॐॐ चकित (सम्) वि.—थरथर काँपता हुआ,
डरा हुआ, भयभीत, चौंका हुआ, शक्ति ।

ॐॐ चकिमुकि (अ. दे.) सं.—दे-
चकमुकि ।

ॐॐ चकोत, ॐॐ चकोतु, ॐॐ चकोतु,
ॐॐ चकोतनसोपु (क) सं.—एक
भाजी का नाम ।

ॐॐ चकोर (सम्) सं.—चकोर पक्षी,
तीतर की जाति का एक पहाड़ी पक्षी जो
चंद्रमा को देखकर बहुत प्रसन्न होता है ।

ॐॐ चकोरक (सम्) सं.—चकोर,
ॐॐ चकोरि, ॐॐ चकोरिके (सम्)

सं.—माद चकोर ।

ॐॐ चकडा, ॐॐ चक्रडि (तद्) सं.—
दे.—चकडा ।

ॐॐ चकने (क) अ.—शीघ्रता से, जल्दी,
सवेग, तुरंत ।

ॐॐ चकंद (क) सं.—गपशप, व्यर्थ की
बात ; आनंद, मनोरंजन ; संतोष, वृषि ।

ॐॐ चकमुकि (अ. दे.) सं.—दे-
चकमुकि ।

ॐॐ चक्रिसु (क) क्रि.—चकर की
'चा वा' ध्वनि ।

ॐॐ चकळगुलि (क) सं.—दे-
चकळगुलि ।

ॐॐ चकलि, ॐॐ चकलि, ॐॐ चकलि,
ॐॐ चलि (तद्) सं.—चकली (तत्) ;
एक खाने की (नमकीन) चीज़ ।

अंशुका चटाकु (अ. दे.) सं.—छाँक (हिं.)
अंशुका चटिके (सम्) सं.—मादा गौरैया; पीपल
की जड़ ।

अंशुका चटिगे अंशुका चटिगे (क) सं.— मिट्टी
का भाण्ड जिसका मुँह बड़ा होता है ।

अंशुका चटिल् (क) सं.—दे. अंशुका.

अंशुका चटिरने (क) अ. — जोर-जोर से,
'चट' शब्द के साथ ।

अंशुका चटु (सम्) सं.—चापलूमी भरे शब्द ;
पेट ।

अंशुका चटुकने (क) सं. — जोर की चोट,
थप्पड ।

अंशुका चटुकु (क) सं. — कोढ़ से या छड़ी से
(भारते समय) आनेवाली ध्वनि ।

अंशुका चटुल (सम्) वि.—कँपकँपा, कँप-
नेवाला, अस्थिर ; चंचल ; मनोहर, सुंदर ।

अंशुका चटुवटिके (क) सं.—दे. अंशुका.

अंशुका चट्ट (क) सं.—पछोरकर या छानकर
निकाला गया कूड़ा-करकट ; समतलता ;
गाड़ी, खाट, कुरसी या चित्र का ढाँचा ;
मुर्दा ले जाने की टिकठी, अस्थि ; योजना,
नियम, क्रम, कानून ; सफाई, स्वच्छता ; मनो-
हरता ।

अंशुका चट्टने (क) अ.—तुरंत, सहसा, फौरन,
अचानक, स्वरित गति से ।

अंशुका चट्टि (क) सं.— मिट्टी का भाण्ड ।
(तद्) — (१) श्रेष्ठिन् (तत्) — बनिया,
सेठ (२) षष्ठी (तत्) । — गण गरण
(तद्) सं.— षष्ठीग्रहण (तत्) ।

अंशुका चट्टिगे (क) सं.— दे. अंशुका.

अंशुका चट्टिरि (क) क्रि.— शरीर पर
सुगंध द्रव्य का लेपन कर ।

अंशुका चट्टु (क) सं.— समतलता ; गाड़ी
का तल या भचान ; = अंशुका चटु-पालकी
का समतल वस्त्र-परिवेश ; बीजकोष,
फली ; अशुद्धि ; गंदगी ; नीचता ; नाश,
विनाश ; बीजरहित आँवला जिसे धूप में
सुखाकर रखा जाता है ।

अंशुका चट्टे (क) सं.—अंग्रेजी-फैशन का वस्त्र ;
समतलता ; एक प्रकार की बीमारी । —

गार कार, गार कार (क) सं.— अंग्रेजी-
फैशन का वस्त्र पहना हुआ व्यक्ति । —

गार गार. गार गार (क) सं.— अंशुका.

अंशुका चट्टणि, अंशुका चट्टनि (अ. दे.) सं.—
चटनी (हिं.) पीसा जाना या रगड़ा जाना ।

अंशुका चट्टति (अ. दे.) सं.— ('चट्टनी' से ?)
— ईर्ष्या, डाह ।

अंशुका चट्टायिसु (अ. दे.) क्रि.— चट्टा,
अधिक कर, बढ़ा ; लगा, दढ़ कर, जड़ ।

अंशुका चट्टावु, अंशुका चट्टाल (अ. दे.)
सं.— बढ़ती, अधिकता, वृद्धि ।

अंशुका चट्टि (अ. दे.) सं.— सीढ़ी ; कबूतर की
खुशी पूँछ के समान (डमरुआ) चूल ; छड़ी ।

अंशुका चट्टुडने (क) अ. — जल्दी,
शीघ्रता से ।

अंशुका चट्टे, अंशुका सट्टे (अ. दे.) वि.— अलग,
पृथक, बिना भार का ।

अंशुका चट्टि (अ. दे.) सं.— चट्टी (हिं.) ।

अंशुका चण (सम्) वि.— प्रसिद्ध, प्रख्यात ;
निपुण । (तद्) सं.— क्षणः (तत्) ।

अंशुका चणक (क) सं.— चट्टी । (सम्) सं.—
चना ।

अंशुका चणनि (क) सं.— अंशुका चणने. अंशुका
चणनि, अंशुका चणनि — मांगल्यक,
ममूर ।

अंशुका चणने. अंशुका चणनि (क) सं.—
दे. अंशुका.

अंशुका चणंग (तद्) सं.— चणक (तत्) ;
चना ।

अंशुका चणन (क) सं.— छोटा जांधिया, चट्टी ।

अंशुका चतुः (सम्) वि.— चार की संख्या ।
— चार शाल, चार शाले (सम्) सं.—

चार मंदिर या भवन जो सम चतुर्भुज आकार
में हो ।

अंशुका चतुर (सम्) वि.— अंशुका चदर,
अंशुका चदर, अंशुका चदुर, अंशुका
चदुरु (तद्)—चतुर, होशियार, पटु, निपुण ;
तेज, मनोहर, प्रिय । — अंशुका तन (सम्)
= चातुर्य ।

अंशुका चतुरंग (सम्) सं.— अंशुका चद-

रंग, अंशुका चतुरंग (तद्) — चतुरंगी
सेना ; शतरंज ।

अंशुका चतुरते (सम्) सं.— चातुर्य, होशि-
यारी ।

अंशुका चतुरश्र, अंशुका चतुरस्र (सम्) वि.
— चार कोनोंवाला, चतुष्कोण ।

अंशुका चतुरानन, अंशुका चतुरास्य
(सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अंशुका चतुरास्यनिघंटु (सम्) सं.
— बौद्ध कवि का एक कोश ग्रंथ ।

अंशुका चतुरोपाय (सम्) सं.—
शत्रुओं के साथ व्यवहार के चार उपाय—

साम, दान, भेद और दण्ड ।

अंशुका चतुर्गति (सम्) सं.— परमात्मा ।
कछुवा ।

अंशुका चतुर्थि (सम्) सं.— अंशुका चतुति,
अंशुका चौति (तद्) — चौथ तिथि ।

अंशुका चतुर्दंत (सम्) सं.— ऐरावत ।

अंशुका चतुर्बल (सम्) सं.— चतुरंग ;
हाथी ; घोड़े, रथ और पैदल सिपाहियों से

सज्जित सेना ।

अंशुका चतुर्भद्र (सम्) सं.— चार पुरुषार्थ—
धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

अंशुका चतुर्भुज (सम्) सं.— चतुष्कोण,
विष्णु ।

अंशुका चतुर्मुख (सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अंशुका चतुर्गुण (सम्) सं.— चार युग
— कृत, त्रेता, द्वापर और कलियुग ।

अंशुका चतुर्वक्त्र (सम्) सं.— ब्रह्मा ।

अंशुका चतुर्वर्ग अंशुका चतुर्वर्ग अंशुका चतु-
र्विधपुरुषार्थ । (सम्) सं.— दे. अंशुका.

अंशुका चतुष्कोण (सम्) वि.— चार
कोनों वाला, सम चतुर्भुज आकार का ।

अंशुका चतुष्टय (सम्) वि.— चार की
संख्या, चार लोगों से युक्त ।

अंशुका चतुष्पथ (सम्) सं.— चौराहा ।

अंशुका चतुष्पद, अंशुका चतुष्पाद (सम्)
वि.— चार पैरोंवाला, चार अवयवोंवाला ।

अंशुका चतुष्पदि (सम्) सं.— एक वृत्त का
नाम ।

अंशु चत्तरी

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (तद्) सं.—छत्र (तत्); छाता, छतरी।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) सं.—काव्यरचना का एक प्रकार।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—छत (हिं.); बिस्तर, पालकी, कमरे आदि का आवरण-वस्त्र।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—छत्र (तत्); सत्र (तत्)।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी (सम्) सं.—चवूतरा, आंगन; चौराहा; यज्ञ के लिए तैयार की गई समतल भूमि।

अंशु चत्तरी (सम्) वि.—चार की संख्या। अंशु चत्तरी (सम्) वि.—चालीस (संख्या)।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (तद्) सं.—चतुष्कोण।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) क्रि.—विकीर्ण कर, फैला, छितरा, बिखेर।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) क्रि.—बिखर जा, फैल जा, विकीर्ण हो।

अंशु चत्तरी (तद्) वि.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—शतरंज।

अंशु चत्तरी (तद्) वि.—चतुरा, निपुणा स्त्री (तद्) सं.—चातुर्य।

अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—चहर, चादर (फारसी)। अंशु चत्तरी (क) वि.—(समस्त पदों में)।

लाल, अरुण; उचित, योग्य, ठीक, अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम, नियमित, सम, सीधा।

अंशु चत्तरी (सम्) अ.—[च + न]—और नहीं।

अंशु चत्तरी (क) सं.—सुंदर या मनोहर पुरुष; एक व्यक्ति का नाम।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) अ.—अच्छी तरह, अच्छे प्रकार से, भली भाँति, सुन्दरता से।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) सं—

एक बड़ा वृक्ष जिसके छाल सफेद होते हैं (Largerstroemia Parviflora); = अंशु चत्तरी—मसूर।

अंशु चत्तरी (क) सं.—सुन्दर पुरुष।

अंशु चत्तरी (क) सं.—सीधापन, अच्छापन, सौंदर्य, उत्तमता, औचित्य।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) सं.—सुन्दरी स्त्री।

अंशु चत्तरी (सम्) सं.—बाँस, बाँस की छड़ी।

—कारक (सम्) सं.—बाँस का काम करनेवाला, टोकरी आदि बनानेवाला।

अंशु चत्तरी, चत्तरी (क) क्रि.—‘चप चप’।

कर, खाना खाते समय चपचप कर।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) वि.—समतल। सं.—बड़ा समतल पत्थर।

अंशु चत्तरी (सम्) वि.—हिलनेवाला, काँपनेवाला, चंचल, अस्थिर, हँवाडोल; निर्बल, नरवर; फुर्तीला, उतावला। सं.—मछली;

पाग, पारद, सुगंध द्रव्य विशेष; चातक पक्षी।—अनं तन, अंशु चत्तरी (सम्) सं.—चंचलता, अस्थिरता आदि।

अंशु चत्तरी (सम्) सं.—कुलटा स्त्री; मदिरा; विजली; लक्ष्मी; जिह्वा; पीपल।

अंशु चत्तरी (क) वि.—दे. अंशु चत्तरी सं.—थप्पड़, तमाचा।

अंशु चत्तरी (क) क्रि.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—चपाती (हिं)। अंशु चत्तरी (अ. दे.) क्रि.—

‘छिपाना’ से छिपा।—अंशु चत्तरी चपावणे=छिपाव। अंशु चत्तरी=छिपाव।

अंशु चत्तरी (सम्) सं.—फैले हुए हाथ की हथेली; थप्पड़।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) अ.—नीरस, सारहीन, स्वादहीन।

अंशु चत्तरी (क) वि.—दे. अंशु चत्तरी; ताली बजाना।

अंशु चत्तरी (क) सं.—बड़ा समतल पत्थर। अंशु चत्तरी (क) क.—‘चपचप’ करते हुए।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (अ. दे.) वि.—छप्पड़ (संख्या)।—अंशु चत्तरी=छप्पड़ देश विशेष।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) सं.—

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—छप्पड़ (हिं.), मंडप, पंडाल; चँदवा, आच्छादन।

अंशु चत्तरी (क) सं.—चिड़ियों का चूँ चूँ शब्द; गाय-बैलों को चलाते समय किसानों के मुँह से निकालनेवाली ध्वनि; मुँह बंद करके हँसना, प्रसन्नता का चिह्न दिखलाना।

अंशु चत्तरी (क) सं.—अनेक तृणों के नाम।

अंशु चत्तरी (क) क्रि.—गाय-बैलों को चलाते समय एक प्रकार का शब्द कर;

चवाते समय आवाज़ कर, एक प्रकार की आवाज़ के साथ चवा; थोड़ा-थोड़ा करके पी (चूस); थपकी दे; थप्पड़ मार, तमाचा लगा।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—चप्पल, जूता।

अंशु चत्तरी (क) सं.—ताली बजाने की क्रिया।

अंशु चत्तरी (क) क्रि.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (क) सं.—दे. अंशु चत्तरी।

(१) अंशु चत्तरी (क) वि.—दबी हुई, चिपटी हुई। सं.—चूतड़ की हड्डी; वेस्वाद, रस हीनता।

(२) अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—छाप (हिं), सुहर, सुद्रा।

अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—दे. अंशु चत्तरी।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—चातुक (अ. दे.) सं.—चातुक।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (अ. दे.) सं.—चमक, दमक, कैपा; डाँट।

अंशु चत्तरी, अंशु चत्तरी (तद्) सं.—चर्मपट्टिका (तत्); पाँसे फेंकने का चमड़े का चौरस टुकड़ा।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—चर्म (तत्); (हिन्दी से यह शब्द कन्नड में आया है)

चमड़ा।

अंशु चत्तरी (तद्) सं.—चर्म (तत्); (हिन्दी से यह शब्द कन्नड में आया है)

चमड़ा।

अमृतार चमत्कार (सम्) सं.— विस्मय, आश्चर्य, चमत्कार ; तमाश ; होशियारी, बुद्धिमत्ता ; शीघ्रता । अमृतार चमत्कारि —वि. अमृतार चमत्करिसु —क्रि. ।

अमृतार चमत्कृति (सम्) सं.— अमृतार. अमृतार चमर (सम्) सं.— एक प्रकार का हिरन ; जन्तु विशेष की पूँछ का बना चँवर, 'याक' नामक मृग ।

अमृतार चमरि (सम्) सं.— सुरागाय, चमर की मादा ।

अमृतार चमरिक (सम्) सं.— कोविदार वृक्ष (Bauhinia Variegata) ।

अमृतार चमस (सम्) सं.— यज्ञों में सोम रस पीने का एक पात्र विशेष ; चमच ; एक प्रकार की मिठाई, लड्डू ; ऋषभ देव के पुत्र का नाम ।

अमृतार चमसि (सम्) सं.— दे. अमृतार.

अमृतार चमसु, अमृतार चमू (सम्) सं.— सेना, फौज ; दल जिसमें 729 हाथी, 729 रथ, 2,187 घोड़े और 3,645 पैदल सिपाही होते हैं । अमृतार पति (सम्) सं.— सेनापति, सिपहसालार ।

अमृतार चमूर (सम्?) सं.— बाघ, व्याघ्र ।

अमृतार चमूरु (सम्) सं.— एक प्रकार का हिरन ।

अमृतार चम्म (तद्) सं.— चमत् (तत्) ; चमड़ा ।

अमृतार चम्मटिगे, अमृतार चम्मट्टिगे (तद्) सं.— दे. अमृतार ; चर्मयष्टिका (तत्) —चर्मदण्ड ; लुहार का भारी हथौड़ा, घन ।

अमृतार चम्मलि, अमृतार चम्मलिके (तद्) सं.— सैहिकेयः (तत्) ; केतु ग्रह ; एक प्रकार का साँप ; एक प्रकार की मछली ।

अमृतार चम्मर (तद्) सं.— दे. अमृतार.

अमृतार चम्मरिगे (तद्) सं.— चर्मपादुका (तत्) एक प्रकार का चमड़े का जूता ; चमरौघा ।

अमृतार चम्मे, अमृतार चम्य, अमृतार चम्मे (क) सं.— रुकवाकु या नेत्री नाम

अमृतार चय (सम्) सं.— समूह, समुदाय, ढेर, राशि ; टीला ; धुस्सा ; दुर्गद्वार, परकोटा ; इमारत, भवन ; बैठकी ; लकड़ी का ढेर ।

अमृतार चयन (सम्) सं.— इकट्ठा या एकत्र करने की क्रिया, एकत्रीकरण, चयन, चुनना ; ढेर । — अमृतार कुसुम (सम्) सं.— फूलों का एकत्रीकरण ।

(१) अमृतार चर (क) सं.— एक अनुकरणमूलक शब्द ; 'चर चर' शब्द ।

(२) अमृतार चर (सम्) वि.— चलनेवाला, हिलने वाला, काँपता हुआ, थरथराता हुआ ; जंगम ; जीवधारी । सं.— जासूस, गुप्तचर, भेदिया, दूत ; खंजन पक्षी ; कौड़ी ; मंगलग्रह ; मंगलवार ; जुआ, पाँसे का खेल ।

(१) अमृतार चर (सम्) सं.— जासूस, गुप्तचर, दूत ; रसता भिक्षुक ; आयुर्वेद विशेष, आयुर्वेद के एक आचार्य का नाम ; पापड़ ; माया, इंद्रजाल (मै. प्र.) ।

(२) अमृतार चरक, अमृतार चरकि. अमृतार चरखा (अ. दे.) सं.— चरखा (हिं.) ।

अमृतार चरग, अमृतार चरुग, अमृतार चरग (क) सं.— खेत में दी जानेवाली आहुति ।

अमृतार चरट (क) सं.— भूसा, भूली ; तलछट ; थोथी वस्तु ।

अमृतार चरण (सम्) सं.— पैर, पाद, चरण ; सहारा, खंभा, वृक्षमूल ; वेद की शाखा ; श्लोक का एक पाद या चरण ; जाति, नस्ल ; घूमना, फिरना ; संपादन, अभ्यास ; चालचलन, वर्तव्य संपन्नता । — अमृतार (सम्) सं.— पदतल, तलवा । — अमृतार युग (सम्) सं.— दोनों पाद । — अमृतार वाल्मीकि (सम्) सं.— पैर जो साँप के बिल जैसे हो ; एक प्रकार का पीलपाँव । — अमृतार विन्यास (सम्)—पैर या चरण नीचे रखना ।

अमृतार चरणाक्ष (सम्) सं.— अक्षपाद, गौतम ।

अमृतार चरणभरण (सम्) सं.— पैरों का आभूषण ।

अमृतार चरणयुध (सम्) सं.— मुर्गा ।

अमृतार चरणिगे (क) सं.— नाँद ।

अमृतार चरंत, अमृतार चरंति (सम्) सं.— लिगायत-जंगम, ब्रह्मचारी ।

अमृतार चरथ (सम्) सं.— जंगम, चलनेवाला ।

अमृतार चरपु, अमृतार चरपु (तद्) सं.— चर (सम्) ; भगवान् के लिए रखा गया नैवेद्य ।

अमृतार चरबंडवल, अमृतार चरबंडवाल (क) सं.— चर-पूँजी, व्यापार के लिए लगाई गई पूँजी ।

अमृतार चरवि, अमृतार चरवि, अमृतार चरवि (अ. दे.) सं.— चरवी (फ़ारसी) ; मेद. वसा ।

अमृतार चरम (सम्) वि.— अंतिम ; आखिरी ; पिछला, पुराना, वृद्ध ; विलकुल बाहरी ; सबसे नीचे या कम ; पश्चिमी । — अमृतार चरमाभूत (सम्) — अस्ताचल । — अमृतार गिरि, अमृतार अद्रि (सम्) सं.— अस्ताचल । — अमृतार काल (सम्) सं.— मृत्यु की घड़ी । — अमृतार गीते (सम्) सं.— शोक-गीत, चरमगीत, मर्त्यिया ।

अमृतार चरयिसु (सम्) क्रि.— घूम, भ्रमण कर ।

अमृतार चरलिंग (सम्) सं.— चलनेवाला लिंग ; लिगायत संप्रदाय का जंगम ।

अमृतार चरवण (तद्) सं.— चर्वणम् (तत्) ।

अमृतार चरविगे (क) सं.— अमृतार चरिगे, अमृतार चरविगे, अमृतार चरविगे, अमृतार चरविगे, अमृतार चरविगे—बड़ा ताँबे या पीतल का घड़ा, जल रखने का घड़ा ।

अमृतार चराचर (सम्) सं.— चर और अचर स्थावर और जंगम, संपूर्ण जगत्. आकाश ।

वि.— चलने और न चलनेवाला, अतिथि ।

अमृतार चरादाय (सम्) सं.— ऐसे पशुओं को बेचने से सरकार को मिलनेवाली आय जिनके कोई मालिक न हो ; वेतन के अतिरिक्त रिश्वत आदि से होनेवाली आय ।

अमृतार चरायि (अ. दे.) सं.— चराई (हिं.) ; चरागाह ।

अमृतार चरि (सम्) वि.— जानेवाला, रहनेवाला ।

सं.— बंदूक की छोटी गोली ।

अमृतार चरिकि, अमृतार चरकि (अ. दे.) सं.— चरवी

ଅଂଘି ଚଳାନ୍ତି (କ) ସଂ.— ବାସୀ ଭାତ ।

३३०३० चलन (सम्) वि.— हिलनेवाला, काँपने वाला, जानेवाला, गमन करनेवाला । सं.— चरण, पैर ; हरिण ।

३३०३० चलनक, ३३०३० चलनि (सम्) सं.— छोटा लहंगा, घाघरा ।

३३०३० चलने (सम्) सं.— चलन, परिवर्तन ।

३३०३० चलमे, ३३०३० चलिमे, ३३०३० चलुमे, ३३०३० चल्मे, ३३०३० चेलुमे (क)

सं.— नली का छिद्र, भूमि का गहरा छिद्र,

गड्ढा ; नदी या तालाब, जहाँ पानी न हो

वहाँ खोदा गया गड्ढा; फौवारा, सोता ।

३३०३० चलावादि (तद्) सं.— दे. ३३०३०

(३३० २.)

३३०३० चलाचल (सम्) वि.— हिलनेवाला,

अस्थिर ।

३३०३० चलायिसु (अ. दे.) क्रि.— चला

(हिं.) ; बढ़ा, पूर्ण कर, समाप्त कर ; समाप्त

हो ।

३३०३० चलावणे (अ. दे.) सं.— चलन,

रिवाज़, प्रचलन, रुपये-पैसे का संचार ।

(१) ३३०३० चलि, ३३०३० चलि (क) सं.— जाड़ा,

सर्दी, ठण्डी, तमाशा, उपहास ; मज़ा ।

(२) ३३०३० चलि (सम्) सं.— चादर, ओढ़नी

मसूर का वृक्ष ।

३३०३० चलित (सम्) वि.— चला हुआ, हिला

आ, आँदोलित ; गया हुआ ; प्राप्त, पाया

हुआ ; जाना हुआ, समझा हुआ । ३३०३०

चलिसु (सम्) क्रि.— चल, गतिमान हो,

क्रियाशील हो ; हिल, काँप, थरथरा ; भ्रमित

हो ; प्रस्थान कर, जा ; घूम, चंचल हो ।

३३०३० चलु, ३३०३० चलुवु (क) सं.— सौंदर्य,

सुन्दरता, चारुता ।

३३०३० चलुकु, ३३०३० चलुकु (क) क्रि.—

(बर्तन से जल) बाहर आ, उत्सर्जित हो,

जल फेंका जा, शिथिल हो ।

३३०३० चलुमि, ३३०३० चलुवि, ३३०३०

चलुवे, ३३०३० चलि, ३३०३० चल्वे, ३३०३०

चेल्वे (क) सं.— सुन्दरी स्त्री ।

३३०३० चलुमे (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चेल्व (क) सं.— सुन्दर पुरुष ;

सौंदर्य, चारुता ।— ३३०३० तन (क) सं.—

सुन्दरता, मोहकता ; मनोहर स्वभाव ।

३३०३० चलुवति (क) सं.— सुन्दरी स्त्री ;

रतिदेवी ।

३३०३० चलुवि (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चलुविके, ३३०३० चलि, ३३०३०

चलुविके ३३०३० चेल्विके (क) सं.—

सुन्दरता, मनोहरता ; स्वच्छता, पवित्रता,

कोमलता, लालित्य ; सद्गुणवहार ।

३३०३० चलुवु (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चलुवे (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चलो (क) वि.— अच्छा, सुन्दर, सुहा-

वना खूबसूरत ।

३३०३० चलण (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चल्मे (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चल (क) सं.— हँसी, मज़ाक, तमाशा,

सरसता, विनोद । क्रि.— चारों ओर फेंक,

(पानी) छिटका ।— ३३०३० गाति, ३३०३०

गति (क) सं.— क्रीडा करनेवाला, सरसता

करनेवाली या विनोद करनेवाली स्त्री ।

३३०३० चलण (क) सं.— छोटा जाँघिया, चढ़ी,

इज़ार ।

३३०३० चलवडि (क) क्रि.— ऐसा मार (या

पीट) कि चारों ओर तितर-बितर जाय ।

३३०३० चलवत्त, ३३०३० चलवत्ते, ३३०३०

चलवत्त, ३३०३० चलवत्त ३३०३० चलवत्त (क)

सं.— मसखरेपन से जीनेवाला, विदूषक ।

३३०३० चलवारिव (क) सं.— आवारा, स्वेच्छा

से घूमनेवाला । ३३०३० चलवाडु—क्रि. ।

३३०३० चलवाट (क) सं.— खेल, तमाशा,

विनोद ; बाल्य-चापल्य । ३३०३० चलवाडु

क्रि. ।

३३०३० चलवापलि, ३३०३० चलवापलि

(क) अ.— अव्यवस्थित. क्रमहीन ।

३३०३० चलि (क) सं.— आईना, दर्पण ।

३३०३० चलु (क) क्रि.— तितरा, बाहर फेंक

(जैसे बर्तन से पानी या अनाज नीचे

रेत डाल, रेत बिखेर, बीज फेंक या बो,

रुपये-पैसे बहा या अधिक खर्च कर । सं.—

आलसी पुरुष ; भ्रमणकारी व्यक्ति ।— ३३०३०

(क) सं.— आलस्य, सुस्ती भ्रमणशीलता,

बाल्य-स्वभाव, गांभीर्य का अभाव,

३३०३० चलुकु, ३३०३० चलोरे (क) क्रि.—

लबालब भरकर या उमड़कर बह ।

३३०३० चले (क) सं.— लंबाई, दूरी, फैलाव ।

३३०३० चलव ३३०३० चलु (क) सं.— दे.

३३०३०

३३०३० चले (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चवकि, ३३०३० चवुकि (अ. दे.) सं.—

चौकी (हिं.) ।

३३०३० चवडिके (तद्) सं.— चाण्डालिका

(तद्) ; एक प्रकार का तंत्रीवाद्य, इकताता

बाजा ।

३३०३० चवर, ३३०३० चवल, ३३०३० चवुल

(तद्) सं.— चौल (तद्) — क्षौर,

हजामत ।

३३०३० चवरि, ३३०३० चवुरि, ३३०३० चौरि

(तद्) सं.— चमरी (तद्) ; चँवर ।

३३०३० चवरिगे (क) सं.— दे. ३३०३०

३३०३० चवलंब (क) सं.— आँख की पलक ।

३३०३० चवि (तद्) सं.— छवि (तद्) ; कान्ति,

सौंदर्य ; चमड़ा, खाल ।

३३०३० चविके (सम्) सं.— एक वृक्ष विशेष,

पिप्पली ।

३३०३० चवु (अ. दे.) सं.— साबुन (अरबी) ।

(१) ३३०३० चवुक (अ. दे.) सं.— चौक (हिं.)

चौकाकार चाँदी या लकड़ी की पेट्टी ;

चौकाकार रुमाल ; चार रुपये (मै. प्र.) ;

पौड़े, प्लुत, घोड़े की चाल विशेष ।

(२) ३३०३० चवुक (?) सं.— सस्तापन, कम

मूल्य ।

३३०३० चवुकसि (अ. दे.) सं.— चौकसी ;

सावधानी से पूछ-ताछ करना ।

३३०३० चवुकडि, ३३०३० चवुकुडि (अ. दे.)

सं.— चार मोतियों का समूह ; चार

(२) छाग चाग (तद्) सं.— त्यागः (तत्) ।

छाग चागि = त्यागी ।

छाग चागु (क) अ.—दे. छागु.

छाग चाचि, छाग ताचि (क) सं.— स्तन (छोटे बच्चों द्वारा प्रयुक्त शब्द) ।

छाग चाचु (क) क्रि.— आगे बढ़ा, बढ़ा, पसार, फैला, आगे फैला, सम्मुख रख ।

छाग चाट (सम्) सं.— टग, बटमार, बदमाश, वंचक ।

छाग चाटक (सम्) सं.— बाज़ीगरी, जादू ।

छाग चाटैर (सम्) सं.— नर गौरैया ।

छाग चाटि, छाग चावटि, छाग चावुटि (क) सं.— चाबुक, पेनिया ;

(१) छाग चाटु (क) सं.— आश्रय, आड, पर्दा; कोई भी वस्तु, जो गरमी, हवा और वर्षा से बचानेवाली हो ।

(२) छाग चाटु (सम्) सं.— चापलूसी, खुशामद ।—उत्तम तन (सम्) सं.— सुहावना होना, खुशामदी ।

छाग चाड (क) सं.— अपयश फैलानेवाला पुरुष, चुगलखोर ।

छाग चाडि (क) सं.—दे. छाग; अपयश फैलानेवाली स्त्री ।

छाग चाडिकार, छाग चाडिग, छाग चाडिगार (क) सं.— चुगलखोर, शिकायत करनेवाला ।

छाग चाण, छाग चान (क) सं.— छोटी छैनी, रुखानी ।

छाग चाणक्य, छाग चाणिक्य (सम्) सं.— प्रसिद्ध अर्थशास्त्रज्ञ विष्णुगुप्त या कौटिल्य का नाम ।

छाग चाणूर (सम्) सं.— कंस का एक सेवक जो मलयुद्ध में श्रीकृष्ण से मारा गया ।

छाग चात (क) सं.— राक्षस ।

छाग चातक (सम्) सं.— छाग चादगे (तद्)—चातक पक्षी, पपीहा ।

छाग चाताणि. छाग चाताळि (क) सं.— शूद्रों की एक जाति जो विष्णु की पूजा करते हैं)

छाग चातुर (सम्) वि.— चतुर, योग्य,

सयाना; सुचारुभाषी; चापलूस; दृश्य; चार की संख्या संबंधी ।—उत्तम तन (सम्) सं.—चतुरता आदि ।

छाग चातुरंग (सम्) सं.—दे. छाग चातुरंग.

छाग चातुरि छाग चातुर्य (सम्) सं.—चतुराई, निपुणता, दक्षता, पटुता ।

छाग चातुरिय (तद्) सं.—चातुर्य (तत्) ।

छाग चातुरिक (सम्) सं.—चौथिया, ज्वर ।

छाग चातुरदंत (सम्) सं.— हाथी, गज ।

छाग चातुर्वल (सम्) सं.— चतुर्वल, चतुरंगिनी सेना ।

छाग चातुर्मास्य (सम्) सं.— चार महीनों का व्रत जिसका आचरण संन्यासी करते हैं ।

छाग चातुर्मुक्ति, छाग चातुर्वर्ग (सम्) सं.—दे. छाग चातुर्वर्ग.

छाग चातुर्य (सम्) सं.—दे. छाग चातुर्य.

छाग चातुर्वर्ण्य (सम्) सं.—हिन्दुओं की चार वर्ण-व्यवस्था—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

छाग चादिगे (तद्) सं.—दे. छाग चादिगे.

छाग चादर (अ. दे.) सं.— चादर (फारसी) ।

छाग चान (क) सं.—दे. छाग.

छाग चान्नि (अ. दे.) सं.—दे. छाग चान्नि.

(१) छाग चाप, छाग चापे (क) सं.— चटाई ।

(२) छाग चाप (सम्) सं.—धनुष, कमान; वृत्तांश; इन्द्रधनुष; धनुःराशि ।

(३) छाग चाप (अ. दे.) सं.—छाप, (हिं.) मुद्रा, मुहर ।—छाग खाने (अ. दे.) सं.—प्रेस, मुद्रणशाला ।

छाग चापदेय (सम्) सं.— जार; धोखेबाज़ ।

छाग चापल (सम्) सं.—चापल्य, चंचलता, शीघ्रता, वेग; बेचैनी, विकलता ।—उत्तम तन (सम्) सं.—धनुष की डोरी; चपलता, चंचलता ।

छाग चापल्य (सम्) सं.—दे. छाग चापल्य.

छाग चापवहिरि (सम्) सं.—धनुष.

छाग चापार, छाग जापार (सम्) सं.— वासविशेष ।

छाग चापिसु (अ. दे.) क्रि.—छाप, छाप लगा, मुद्रण कर ।

(१) छाग चापु (क) सं.—विस्तार, लंबाई, व्यापकता ।

(२) छाग चापु (अ. दे.) सं.—दे. छाग चापु.

(१) छाग चापे (क) सं.—बंदूक का घोड़ा ।

(२) छाग चापे (अ. दे.) सं.—दे. छाग चापे.

—छाग खाने (अ. दे.) सं.—छाग खाने. छाग चामर (सम्) सं.—चमर, चौरी ।

—छाग ग्राहिणि (सम्) चमर डुलानेवाली स्त्री ।

छाग चामरिग (सम्) सं.—चमर डुलानेवाला पुरुष । छाग चामरिगिति (सम्) सं.—दे. छाग चामरिगिति.

छाग चामीकर (सम्) सं.— सोना, स्वर्ण ।

छाग चांमुडि (सम्) सं.—दुर्गा, भैरवी ।

—छाग बेट्ट (क) सं.— मैसूर नगर में स्थित एक पर्वत ।

छाग चाय, छाग चायि (तद्) सं.—छाया (तत्); रंग ।—छाग बेरु (तद्) सं.— मजीठ, कालमेशी ।

(१) छाग चार (सम्) सं.—गमन, गति, चाल, भ्रमण; जासूस, गुप्तचर; अनुष्ठान, अभ्यास; बेड़ी, जंजीर; बंदीखाना, कारागार कंबल, ऊन का कपड़ा; कृत्रिम उपाय; एक वृक्ष (Buchanania latifolia) ।

छाग चार (अ. दे.) सं.— चारा, चरागाह ।

छाग चारक (सम्) सं.— भेदिया, जासूस; गडरिया, गोपाल; नेता, नायक; सारथी, गाड़ीवान; घुड़सवार, साईस; बंदीगृह; हथकड़ी; भ्रमणकारी ब्रह्मचारी ।

छाग चारचक्षु (सम्) सं.— राजा जो गुप्तचर रूपी नेत्रों से देखता है ।

छाग चारण (सम्) सं.— भ्रमणकारी, यात्री, पर्यटन करनेवाला; घूमने फिरनेवाला नर

या गायक ; चारण, भाट, राजपुताने की एक जाति । — ०३०१० योगि (सम्) सं. — एक गंधर्व योगी ।

अठारह चारभट (सम्) सं. — पराक्रमी योद्धा ।

अठारह चारम (क) सं. — चेर राजा का नाम ।
अठारह चारमानि (क) सं. — एक देश का नाम ।

अठारह चारलिग (सम्) सं. — दे. अठारह.

अठार चारि (गम्) वि. — जानेवाला, घूमनेवाला, भ्रमण करनेवाला, रहनेवाला ; करनेवाला । सं. — ढंग. विधान, पद्धति ; करने या क्रिया का विधान ; इच्छा, मन का ध्येय ; सस्तापन ; कुतंत्र ; उपाय ।

अठार चारिके (सम्) सं. — परिचारिका, दायी ।

अठार चारित्र (सम्) सं. — आचरण, चालचलन ; स्वभाव, निर्वाह ।

अठार चारिसु (क) क्रि. — पीस, चूर्ण कर ; रगड़, मथ, मिला ।

अठार चारु (सम्) वि. — सुंदर. मनोहर, अच्छा. प्रिय । सं. — केसर, जाफ़ान ।

अठार चारु (क) सं. — पंक्ति, रेखा, लकीर ।

अठार चारु अठार चारु. अठार सारु (क) सं. — सार, रस, मिनै-मसाला मिलायी गई पतली दाल ।

अठार चारुनि (अ. दे.) सं. — चौकोर घर । — २१३ सीरे (अ. दे.) सं. — चौकोर रेखाओं की साड़ी ।

अठार चारुचि (सम्) सं. — शरीर पर सुगंध द्रव्यों का लेपन, शरीर को सुवासित करना ; उन्नतन ।

अठार चार्ज (अ. दे.) सं. — (Charge) (अंग्रेजी) ; सुपुर्दगी, सौंपना, कार्यभार ; अभियोग ; दाम, खर्च ; आक्रमण, हमला ।
अठार चार्मण (सम्) वि. — चर्म या चाम से ढका हुआ ।

अठार चार्माडि (सम्) सं. — मैसूर और मंगलूर के बीच का पहाड़ी भाग ।

अठार चर्वाक (सम्) सं. — नस्तिकवादी

एक दार्शनिक का नाम ।

अठार चाल, अठार चालु (सम्) सं. — गति-शीलता, चर, जंगम ; घर की छत, नील-कंठ पक्षी ।

अठार चालति. अठार चालित (अ. दे.) सं. — (मराठी—'चालता') वह जो चाल, हो, गतिशीलता ।

अठार चालन (सम्) सं. — हिलना डुलना ; चलनी में रखकर छाना, शिथिल करना. इधर उधर हिलना ;

अठार चालनि (सम्) सं. — चालनी, चलनी ।
अठार चालाक (अ. दे.) (तद्) सं. — दे. अठार.

अठार चावडि (क ?) सं. — मंडप, चट्टी, पड़ाव; अस्थायी रूप से रहने का स्थान, सराया ; घर के सामने की बैठने की जगह ; ग्राम का सार्वजनिक मंडप ।

अठार चावणि (अ. दे.) सं. — छावनी (हिं.) ; शिविर, डेरा ; घर की छत या छवनई ।

अठार चावरि (क) सं. — नटखट पुरुष ।

अठार चावळ (तद्) सं. — चापल (तत्) ; दे. अठार.

अठार चावि (अ. दे.) सं. — चाभी (हिं.) ।

अठार चावुटि (क) सं. — दे. अठार.

अठार चावुंडि (तद्) सं. — चामुण्डी (तत्) ; दुर्गा ।

अठार चाह (अ. दे.) सं. — चाय ।

अठार चालक (अ. दे.) सं. — ('चालक से') दे. अठार.

अठार चालयिसु, अठार चालयसु (तद्) सं. — इधर उधर हिला. डुला ।

अठार चालि, अठार चाले (क) सं. — आदत, चालचलन, गुण, स्वभाव, लत । अठार चाले मने मंदिराल— बड़ी बहन की आदत घर के सब लोगों की आदत (कह.) ।

(१) अठार चालिसु (क) क्रि. — हरा, पराजित कर; तमाशा कर; चपल हो; छान ।

(२) अठार चालिसु (सम्) क्रि. — अस्थिर हो, चपल हो ।

(३) अठार चालिसु, अठार चालीसु, अठार चालेस, अठार चालेश (अ. दे.) सं. — चालीस वर्ष; चालीस वर्ष की आयु में होने वाली (नेत्र की) दृष्टि की मंदता ; ऐनक ।

अठार चाले (क) सं. — दे. अठार.

अठार चालेथ (क) सं. — गतिलंघन, कूदने या उड़ने की क्रिया, चाल चलकर हराने की क्रिया ।

अठार चाल (क) सं. — सैहिकेय का सिर, राहुग्रह ।

अठार चिचि (सम्) सं. — गुंजा, घुघची का पौधा ; इमली का पेड़ ।

(१) अठार चिचे (क) सं. — वापी, कूप; तालाब ।

(२) अठार चिचे (सम्) सं. — इमली, इमली का पेड़ ।

अठार चितन, अठार चितने (सम्) सं. — सोचना, विचारना, चिंतन, सोच-विचार ।

अठार चित्ताक (क ?) सं. — एक प्रकार का सोने का हार ।

अठार चित्तकुल (सम्) वि. — चित्ता से विकल, बेचैन, उत्सुक ।

अठार चित्तमणि (सम्) सं. — सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करनेवाली एक मणि या रत्न ; एक कल्पित मणि ; भगवान् ।

अठार चितारल (सम्) सं. — दे. अठार.

अठार चितालु (क) सं. — सोना—चाँदी तोलने का छोटा तराजू ।

अठार चितिसु (सम्) क्रि. — चित्ता कर, परवाह कर ।

अठार चिते, अठार चित्ता (सम्) सं. — चित्ता, व्याकुलता, दुःख, फ़िक्र ।

अठार चित्य (सम्) कृ. — सोचने योग्य, विचारने योग्य, चित्ता के योग्य, ठूँढ़ने या पता लगाने योग्य ।

अठार चिदि (क ?) सं. — चिथड़ा. गूढ़ ।

अठार चिपि, अठार चिपे, अठार चिपि, अठार चिपु, अठार चिपे (तद् ?) सं. — शंबु (तत्) घोंघा ; शंख ।

ॐॐॐ चिपिग (तद्) सं.—[‘चेलिक’ ?]—
दर्जी । ॐॐॐॐॐ चिपिगन हुल्लु —
एक प्रकार की घाम ।

ॐॐॐॐॐ चिपिरितले (क) सं. — बालोंवाला
सिर जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो ।
ॐॐॐॐॐ चिपेजि (क) सं.—बंदर की एक
जाति ।

ॐॐ चिः, ॐॐ ची, ॐॐ छिः (क) अ.— छिः !
लानत । धिक्कार ।

ॐॐॐ चिकट, ॐॐॐ चिकट, ॐॐॐ चिक्राड,
ॐॐॐ चिक्राडि, ॐॐॐ चिककाडु, ॐॐॐ
चिगट (क) सं.—पिस्सू, देहिका ।

ॐॐॐ चिकणि, ॐॐॐ चिकिणि (अ. दे.) वि.
—चिकना (हिं.); कड़ा, कठोर; गाढ़ा,
मोटा, बड़ा ।

ॐॐॐ चिकित्तक (सम्) सं. — चिकित्सा
करने वाला, डाक्टर, वैद्य ।

ॐॐॐ चिकित्से (सम्) सं.—इलाज, औषधो-
पचार ।

ॐॐॐ चिकीर्षे (सम्) सं.—कामना, अभि-
लाषा ।

ॐॐॐ चिकुर (सम्) वि.—चंचल, अस्थिर;
अविचारी, दुस्साहसी । सं.—सिर के बाल,
केश ।

(१) ॐॐ चिक (क) वि.—छोटा, लघु, क्षुद्र,
कमीना । सं. — एक पुरुष का नाम ।
ॐॐ चिकप्प (क) सं.—पिता का छोटा
भाई । ॐॐ चिकतायि (क) सं.—
पिता के छोटे भाई की पत्नी । मौसी, खाला;
सौतेली माँ । ॐॐ चिकानु चिकानु चिकानु
मीनन्नु नुंगितंते—छोटी मछली आकर बड़ी
मछली को निगलने लगी (कह.) । ॐॐ
चिकवन्नु—छोटा (लड़का), ॐॐ चिकवन्नु
चिकवन्नु—छोटी (लड़की), ॐॐ चिकवन्नु
—छोटी (वस्तुएँ) ।

(२) ॐॐ चिक (सम्) सं.—छछंदर ।

(१) ॐॐ चिकण (सम्) वि. — चिकना;
चमकीला, कोमल, स्निग्ध, तिलहा ।

(२) ॐॐ चिकण (क) सं.—छोटी चोली ।

ॐॐॐ चिकतन (क) सं.—बचपन; लड़क-
पन, छुटपन; क्षुद्रता ।

ॐॐॐ चिकम्म (क) सं.—दे. ॐॐॐ
(ॐॐ में) ।

ॐॐॐ चिक्राड; ॐॐॐ चिक्राडि, ॐॐॐ
चिक्राडु (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिकि (क) सं.—एक स्त्री का नाम;
नक्षत्र. तारा, तिलक, बिंदी ।

ॐॐॐ चिकके (सम्) सं.—छछंदर; चपटी
नाकवाली स्त्री; सुपारी ।

ॐॐॐ चिगट (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिगरि (क) सं.—हिरन, कृष्णमृग ।

ॐॐॐ चिगरु (क) सं.—पल्लव, किसलय,
कौपल । क्रि.—अंकुरित हो, पल्लवित हो,
पल्लव निकल ।

ॐॐॐ चिगरे (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिगलि, ॐॐॐ चिगुलि (क) सं.—
तिल और गुड को कूटकर बनाई गई गोली
(मिठाई विशेष) ।

ॐॐॐ चिगि (क) क्रि.—अंकुरित हो, अंकुर फूट,
पल्लवित हो; अंगुली या अंगुलियों को
ढीला कर, अंगुली से विसर्जित कर या फेंक;
कूद, उछल ।

ॐॐॐ चिगिर् (क) सं.—शीघ्रता, जल्दी ।

ॐॐॐ चिगिल् (क) क्रि.—चिचिपा या
लसलसा हो ।

ॐॐॐ चिगिसु (क) क्रि.—कुदा, उछाल,
चकर काटने दे ।

ॐॐॐ चिगुर्, ॐॐॐ चिगुरु (क) क्रि.
और सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिगुलि (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिचक्षु (सम्) सं.—ज्ञान नेत्र,
अंतःचक्षु ।

ॐॐॐ चिचो ॐॐॐ चिचोलला (क)
सं.—लोरी ।

ॐॐॐ चिटकि, ॐॐॐ चिटकु (क) सं.—
चुटकी ।

ॐॐॐ चिटगुट्ट (क) क्रि.—‘चिट चिट’
शब्द कर (जैसे सरसों को गरम तेल में

डालने से निकलनेवाला शब्द) ; क्रोध
दिखा ।

ॐॐॐ चिटगुट्टि (क) सं.—छोटी गौरैया
चिट्टिया ।

ॐॐ चिटि (क) वि.—छोटा; लघु, क्षुद्र,
अल्प । सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द ।
ॐॐॐ चिटिके (क) सं.—चुटकी; ताल का
उपकरण वि.—कुछ, थोड़ा; उतना
परिमाण जितना अंगूठे और तर्जनी में
समाता है ।

ॐॐॐ चिटिगरु (क) सं.—छोटा दूकानदार ।

ॐॐॐ चिटिगे (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिटिपाल (क) सं.—एक वृक्ष
विशेष (Zizyphus tree) ।

ॐॐॐ चिटियु (क) क्रि.—गरमी के कारण
फट, चिटक ।

ॐॐॐ चिटिल्, ॐॐॐ चिटिलु (क) सं.—
‘चिटचिट’ शब्द, आग की ज्वाला से
निकलने वाला शब्द ।

ॐॐॐ चिटिलिसु (क) क्रि.—छिटक,
छिड़क ।

ॐॐॐ चिटुकु (क) सं.—बिंब, गोलाकार
वस्तु, मंडल; चुटकी ।

ॐॐॐ चिटुके (क) सं.—दे. ॐॐॐ.

ॐॐॐ चिटुकि, ॐॐॐ चिटुकु (क)
क्रि.—चुटकी बजा ।

ॐॐॐ चिट्टे (क) अ.—ज़ोर से चिछाते
हुए ।

ॐॐॐ चिट्टुल्लु (क) सं.—घास विशेष,
मालावृण ।

ॐॐॐ चिट्टामुट्टि (क) सं.—बारहमासी
पौधा ।

ॐॐॐ चिट्टि (क) सं.—अनाज का एक परिमाण,
चार सेर ।

ॐॐॐ चिट्टु (क) वि.—छोटा, लघु । सं.—
जुगुप्सा, उबाई ।

ॐॐॐ चिट्टे (क) सं.—तितली एक कीड़ा;
= ॐॐॐ चिट्टि—अनाज का परिमाण विशेष ।

ॐॐॐ चिट्टा (अ. दे.) सं.—चिट्टा (हिं.) ।

अन्तर्गत कृष्णोदय कृष्णोदय कृष्णोदय
 अन्तर्गत ? चित्रद कर्त्तव्यदु कर्त्तव्य कर्त्तव्य
 कौलकवहुदे ?—सोने की तलवार है। ऐसा
 समझकर क्या सिर कटवाया जा सकता है ?
 अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत
 अन्तर्गत अन्तर्गत चित्रद हरिवाणवादरु मणिन
 गोडेगे औरगवेकु—सोने की थाली को भी
 मिट्टी की दीवार का सहारा लेना पड़ता है
 (कह.) । वि—छोटा, लघु—१० गिरि
 (सम्) मेरु पर्वत ।—२० वरद (क)
 सं.—सराफ़ ।
 अन्तर्गत चित्रवाल (क) सं.—दे. अन्तर्गत.
 अन्तर्गत चित्रि (क) सं.—अरहर की दाल के बारीक
 टुकड़े जो पशुओं को खिलाये जाते हैं ; एक
 पौधा विशेष (Acalypha betulina) ।
 अन्तर्गत चित्रिधान (सम्) सं.—बुद्धिमत्ता,
 मेधा शक्ति ।
 अन्तर्गत चित्रिवार (क) सं.—दे. अन्तर्गत.
 अन्तर्गत चिन्ने (तद्) सं.—चिह्न (तत्) ; निशान,
 दाग, मोहर, लक्षण, संकेत, इशारा, लक्ष्य,
 दिशा ।
 अन्तर्गत चिन्मय (सम्) सं.—ज्ञानस्वरूप,
 परमात्मा ।
 अन्तर्गत चिन्ह (सम्) सं.—दे. अन्तर्गत.
 अन्तर्गत चिप् (क) सं.—अन्तर्गत अन्तर्गत चिपचिप्—
 छिपकली की आवाज़ ।
 अन्तर्गत चिप्प (क) सं.—अन्तर्गत अन्तर्गत चिप्पकसुबु
 —मालातृण, एक प्रकार की घास ।
 अन्तर्गत चिप्प (तद्) सं.—शिल्प (तत्) । अन्तर्गत
 चिप्पिग (तद्) सं.—शिल्पिक (तत्) ;
 कारीगर ; यंत्रसंचालक ; दर्जी । अन्तर्गत
 अन्तर्गत चिप्पिगविज्जे (तद्) सं.—शिल्प-
 विद्या । अन्तर्गत चिप्पिगिति (तद्) सं.—
 कारीगर की स्त्री ; दर्जी की स्त्री ।
 अन्तर्गत चिप्पु (क) सं.—कड़ा छिलका ; छिलका,
 नारियल का कड़ा छिलका (Shell) ;
 खोपड़ी सीप, शुक्ति ।
 अन्तर्गत चिप्पे (क) सं.—छिलका, कड़ा छिलका,
 सीप, शुक्ति ; खोपड़ी ।
 अन्तर्गत चिबकळि (क) सं.—टिटिहिरी ।

अंशु चिल्लर

अंशु चिल्लर (क) सं — एक प्रकार का वृक्ष ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (सम्) सं — उड़ी ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. बाँस की टोकरी ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (तद्) सं. — सिध्मं (तद्); एक चर्म रोग. ददोरा, चकत्ता, चट्टा ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — (पानी) छिटक, छिड़क ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — चिमटा, चिमटी (हिं.) ।

अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — (Chimney) अंग्रेजी ; चिमनी, धुआँकना ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — चिमचिम शब्द ; लुठन क्रिया, लोटपोट होना ।

अंशु चिल्लर (क) क्रि. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर [अंशु चिल्लर] (क) क्रि. — छिटक, छिड़क ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) क्रि. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — कतगनी से बाल खींचना ।

(१) अंशु चिल्लर (क) क्रि. — पलक मार, आँखें मटक ।

(२) अंशु चिल्लर (अ. दे.) क्रि. — दबा, चिमटा से दबा ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — शींगुर ।

अंशु चिल्लर (क) क्रि. — हाथ की उंगलियों से उछाल या उछलवा ; हिला, हिलवा (प्रे.) ।

अंशु चिल्लर (क) क्रि. — हाथ की अंगुलियों से मुक्त होकर ऊपर की ओर उछल ; कूद,

दौड़, छिटक, छिड़क ; फट, फट जा ; उड़ जा ; शस्त्र संचालन कर, हिला ; पीस ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — हाथ पीछे की ओर बांधने (जकड़ने) की क्रिया ।

अंशु चिल्लर (सम्) वि. — दीर्घ, दीर्घकालव्यापी ; पुराना, बहुत दिनों का । सं. — दीर्घकाल ।

— अंशु क्रिया (सम्) सं. — धीरे-धीरे कार्य करनेवाला, विलंब करनेवाला । — अंशु जीवते (सम्) सं. — दीर्घ-जीवन ।

अंशु चिल्लर (सम्) सं. — दीर्घ जीवी ; पुत्र भेटा ।

अंशु चिल्लर (सम्) सं. — दे. अंशु ; कौआ ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (सम्) सं. — विवाहिता या अविवाहिता जवान स्त्री जो दीर्घकाल तक अपने पिता के घर में रहती है ।

अंशु चिल्लर (सम्) वि. — प्राचीन, पुरातन, बहुत प्राचीन ।

अंशु चिल्लर (सम्) सं. — वृक्ष विशेष (The tree Pongamia glabra) ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (सम्) सं. — वह गाय जिसके कई बछड़े उत्पन्न हुए हों ।

अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — चिराग (फारसी) ; दिया, दीपक ।

अंशु चिल्लर (सम्) अ. — बहुत समय तक ।

अंशु चिल्लर (सम्) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर (सम्) सं. — तोता ।

अंशु चिल्लर (क) क्रि. — हँस, ठट्ठा कर ; मुस्करा ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — चीता, तेंदुआ ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — एक प्रकार का भूनीम या किरात (A kind of a Blue-flowered plant) ।

अंशु चिल्लर (क) वि. — छोटा ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर, (सम्) सं. — चिर्मटी, ककड़ी विशेष ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दर-वाज़े की कुंडी, अर्गल ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — एक मृत्ररोग ।

अंशु चिल्लर (सम् ?) सं. — कवच ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — पानी का सोता, फौवारा ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — एक निश्चित धन-राशि के ऊपर का अयुग्म (odd) धन ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े ; हिलमोचिका, वास्तुक, एक पौधा-विशेष ।

अंशु चिल्लर (क ?) सं. — एक प्रकार की छोटी मछली ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — पक्षियों की चहहाइट ।

अंशु चिल्लर (अ. दे.) सं. — चिलम (फारसी) ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — एक पक्षी का नाम ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — दही मथते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

अंशु चिल्लर (तद्) सं. — द्वेष, ईर्ष्या ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — छुट पैसे, छुटे, फुटकर पैसे ; क्षुद्रता ; क्षुद्र पुरुष (लाक्ष.) ।

(१) अंशु चिल्लर (क) सं. — एक वृक्ष विशेष (The clearing nut tree) ।

(२) अंशु चिल्लर (सम्) सं. — चील, एक प्रकार का बाज़ ।

अंशु चिल्लर (क) सं. — कष्ट, संकट, पीड़ा ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

अंशु चिल्लर, अंशु चिल्लर (क) सं. — दे. अंशु ।

३३००१०६ चुगाणि (क) सं. — कटार, छुरी, छोटी तलवार ।
 ३३००१०७ चुगाणिलि (क) अ. — अस्तव्यस्त, अव्यवस्थित, तितर-बितर ।
 ३३००१०८ चुगल (क) वि. — छोटा टुकड़ा ; तकुआ धरने का साधन या चमड़े का कान ; एक वृक्ष विशेष ।
 ३३००१०९ चुल्ले (क) सं. — अयोग्य, नालायक, नटखट या दुष्टा स्त्री ।
 ३३००११० चिवटु. ३३००१११ चिवुटु (क) क्रि. — चीन, नख से तोड़, कचौटनी काट ; आँख मार ।
 ३३००११२ चिवरु (क) क्रि. — खरोच, नख से नोच ।
 ३३००११३ चिविटु (क) क्रि. — दे. ३३००११४.
 ३३००११५ चिवुक (सम्) सं. — टुड्डी ।
 ३३००११६ चिवुकिसु. ३३००११७ चिवुकु (क) क्रि. — दे. ३३००११८.
 ३३००११९ चिवुटु (क) क्रि. — दे. ३३००११४.
 ३३००१२० चिवुटु, ३३००१२१ चिवुटु (क) क्रि. — खरोच, नोच, नखच्छेदन कर ।
 ३३००१२२ चिवुरु (क) क्रि. — दे. ३३००१२३.
 ३३००१२४ चिवु, ३३००१२५ चिवु (क) क्रि. — पतले रूप में काट, छील, छिलका निकाल, छोट-परिष्कार कर या चमका ।
 ३३००१२६ चिह्न (सम्) दे. ३३००१२७.
 ३३००१२८ चिलि (क) सं. — एक मछली विशेष ; एक अनुकरणात्मक शब्द ।
 ३३००१२९ चिल्ले (क) वि. = ३३००१३०, चिल्लेपिल्ले — छोटे-छोटे । सं. — छोटे बाल-बच्चे)
 ३३००१३१ ची (क) अ. — छिः ! छिः, तिरस्कार सूचक अव्यय ।
 ३३००१३२ चीकरि, ३३००१३३ चीकलु, ३३००१३४ चीकु (क) वि. — छोटा ।
 ३३००१३५ चीकु (?) सं. — बीमारी, रोग (तमिल ?) ।
 ३३००१३६ चीकुवायि (क) सं. — झिगुर, कनखजूरा, चपड़ा ; बड़ा भ्रमर ।
 ३३००१३७ चीटि (अ. दे.) सं. — कागज़ का टुकड़ा, चिट्ठी ; छोट का कपड़ा ; टिकट, स्टॉप ।

३३००१३८ चीटु (अ. दे.) सं. — दे. ३३००१३९.
 ३३००१४० चीडे (क) सं. — (३३००१४१ चीडे-तमिल) चावल के आटे से (गोली के आकार में) घी या तेल में तलकर बनाया जानेवाला एक नमकीन खाद्य पदार्थ ; नष्ट भाग । — ३३००१४२ हुलु (क) सं. — नीलंगु कीड़ा ।
 ३३००१४३ चीण (अ. दे.) सं. — चीन देश, चीनी लोग । — ३३००१४४ अंबर (अ. दे.) सं. — चीन का कपड़ा ।
 ३३००१४५ चीत्कार (सम्) सं. — चीत्कार, चिल्लाहट ; हाथी की चिंघाड या गधे की रेंक ।
 ३३००१४६ चीन, ३३००१४७ चीना (अ. दे.) सं. — दे. ३३००१४८.
 ३३००१४९ चीनि (अ. दे.) सं. — चीनी लोग ; शकर विशेष ; कपूर ।
 ३३००१५० चीपरि (क) सं. — झाड़ू, बुहारी ।
 (१) ३३००१५१ चीपु (क) क्रि. — चूस, फल आदि का रस चूस ।
 (२) ३३००१५२ चीपु (अ. दे.) सं. — चीप (हिं.) टुकड़ा, लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा ।
 (१) ३३००१५३ चीर, ३३००१५४ चील (क) सं. — थैला, बोरा ।
 (२) ३३००१५५ चीर (सम्) सं. — वस्त्र ; छाल ; चिथड़ा, धज्जी ; चौलड़ी मोती की माला, लकीर, पंक्ति ; नकाशी. खुदाई ; सीसा ।
 ३३००१५६ चीरण, ३३००१५७ चीर्ण, ३३००१५८ जीर्ण (क) सं. — छोटी रहानी या छेनी ।
 ३३००१५९ चीरि, ३३००१६० चीरिके (सम्) सं. — गेंद बल्ले का खेल ।
 ३३००१६१ चीरिलि (क) सं. — एक प्रकार की बड़ी मछली ।
 ३३००१६२ चीरु (क) सं. — टुकड़ा, छोटा भाग, खंड । क्रि. — छितर, टुकड़े-टुकड़े कर, खण्ड कर ; खरोच ।
 ३३००१६३ चीरु (क) क्रि. — चिल्ला, चीख उठ, जोर की आवाज़ कर । — ३३००१६४ इसु, (क) क्रि. — प्रेरणार्थक रूप ।
 ३३००१६५ चीरु (क) क्रि. — दे. ३३००१६६ वि. —

छितरा हुआ, खरोचा हुआ ; बुरा, दुष्ट ।
 ३३००१६७ चीरुवु (क) सं. — चिल्लाहट, चीखना ; व्यर्थ की बात ।
 (१) ३३००१६८ चीर्ण (क) सं. — दे. ३३००१६९.
 (२) ३३००१७० चीर्ण (सम्) वि. — चीर्ण, चीरा हुआ, फटा हुआ ; विभाजित ; किया हुआ, कृत ।
 ३३००१७१ चीर्णे (?) सं. — एक वृक्ष, मीठे नीम का पेड़ (The tree Murraya koenigii) ।
 ३३००१७२ चील, ३३००१७३ चीलु (क) सं. — दे. ३३००१७४ (१).
 ३३००१७५ चीलमंडे (क) सं. — पैर और चरण को मिलानेवाली नली ; घुटिका, गुल्फ ।
 ३३००१७६ चीलयित (क) सं. — एकाक्ष नामक पौधा ।
 ३३००१७७ चीलाय (क) सं. — चाकू, तलवार या छुरी का फल ।
 ३३००१७८ चीलि (क) सं. — बिह्ली को संबोधित करने का शब्द ।
 ३३००१७९ चीलु (क) सं. — दे. ३३००१८० (१).
 ३३००१८१ चीले (तद्) सं. — कीलः (तत्) कीलः पिन ।
 ३३००१८२ चीवर (सम्) सं. — वस्त्र, फटा कपड़ा ; चिथड़ा ; बौद्ध भिक्षुक या किसी संन्यासी का कपड़ा ।
 ३३००१८३ चीवु (क) क्रि. — दे. ३३००१८४.
 ३३००१८५ चीळ (क) सं. — चीखना ; चिल्लाहट — ३३००१८६ इडु — क्रि. रु. ।
 ३३००१८७ चुंग (क) सं. — पेशाब की बंदू को प्रकट करनेवाला एक शब्द ।
 ३३००१८८ चुंगडि (क) सं. — क्षुद्रता, अल्पता छुटे, छुट पैसे ; निश्चित धन-राशि के ऊपर के (अतिरिक्त) पैसे ; सूद, व्याज ।
 ३३००१८९ चुंगरिसु (क) क्रि. — सर्दी के कारण रोंगटे खड़े हो (रोमांच होना) ।
 ३३००१९० चुगाणि (अ. दे.) सं. — छोटा चिलम ।

अंगी चंगि (क) सं.— हठी या दुष्ट स्त्री ;
हठी या दुष्ट पुरुष ।

अंगी चंगु (क) सं.— कपड़े का छोर या
किनारा फाड़कर किसी वस्तु के साथ
लटकाया गया खण्ड ; कुसुम की नोंक ;
अंतिम भाग ।

अंगी चंचु ; अंगी चंचु (क) सं.— चोंच
अंगी चंचल — एक वृक्ष विशेष (Cor-
chorus trilocularis) ।

अंगी चंचल (क, सं.— छोटा चूहा ;
चुहिया, छछूंदर ।

(१) अंगी चंचु (क) सं.— चोंच ; वीर्यवती
नामक पौधा ; माथे पर लटकनेवाले घुंघराले
बाल ; लाल या भूरा रंग ; घर का शिला-
फलक । वि.— छोटा ।

(२) अंगी चंचु (सम्) वि.— प्रसिद्ध,
प्रख्यात, निपुण ।

अंगी चूँटि, अंगी चूँटे, अंगी चूँडि (सम्)
सं.— छोटा कुआ ; छोटा तालाब ।

अंगी चूँड (क) वि.— छोटा । अंगी चूँड
चूँडिलि (क) सं.— चुहिया ; छछूंदर ।

अंगी चूँडि (सम्) सं.— चुँडी, कुटनी ।

अंगी चूँबक (सम्) सं.— चूमनेवाला ; धूर्त,
लंपट, रसिया, वेश्यागामी ; वह जो चूमा
गया हो ; चूँबक पत्थर (loadstone) ।

अंगी चूँबित (सम्) वि.— चूमा हुआ ;
स्पर्श किया हुआ ; स्पष्ट । अंगी चूँबिसु
—क्रि. रू. ।

अंगी चूँयि, अंगी चूँयि (क) सं.—
'दोसे' बनाते समय गरम तवा पर पानी
की बूँद पड़ने से निकलनेवाली ध्वनि ।
अंगी चूँकाणि, अंगी चूँकाण (अ. दे.)
सं.— पतवार ।

अंगी चूँकायिसु (अ. दे.) क्रि.— चुक
(हिं.), पूरा कर ; व्यवस्थित कर, ठीक
कर ; मूल्य का निर्णय कर, चुका दे ।

अंगी चूँकुल, अंगी चूँकुल (सम्) सं.—
हेमदुग्ध नामक पौधा ।

अंगी चूँकण (अ. दे.) सं.— दे. अंगी चूँकण

(१) अंगी चूँकि अंगी चूँके (क) सं.—
बिंदी छोटा धक्का ।

(२) अंगी चूँकि (तद्) सं.— शुकः (तत्) ;
शुकग्रह ; शुकचार्य ।

अंगी चूँक, अंगी चूँकि, अंगी चूँके (सम्)
सं.— खटाई, खटपन, इमली ।

अंगी चूँचुक, (सम्) सं.— चूचुक कुच का
अग्र भाग ।

अंगी चूँचुल, अंगी चूँचुल (क) सं.—
एक वृक्ष विशेष (Helicteres isora) ।

अंगी चूँचु (क) क्रि.— चुभ, भोंक, गाड़-
घुसेड़, वेध, मन को पीड़ा दे ; जल, जलन
हो । वि.— चुभनेवाला, वेधनेवाला ; छोटा ।
— अंगी चूँके (क) सं.— चुभन, वेध, छेदन ;
पीड़ा, व्यथा ।

अंगी चूँचुंदर, अंगी चूँचुंदर (अ. दे.) सं.—
छछूंदर (हिं.) ।

अंगी चूँजल (क) सं.— दे. अंगी चूँजल
अंगी चूँकुक, अंगी चूँकुक (क ?) वि.—
छोटा, कम, नाटा, ठिगना, अल्पावधि
का । सं.— छोटी कविता ।

अंगी चूँटिके (क) सं.— चुटकी ; उतना परि-
माण जितना अंगूठे और तर्जनी से पकड़ा
जाता है ?

अंगी चूँट, अंगी चूँटि (क) सं.— चुरट,
तमाखू का बड़ा सिगरेट ।

अंगी चूँनायिके, अंगी चूँनायिके (अ. दे.) सं.—
चूनाव । (हिं.) चुनना ।
अंगी चूँनायिसु—क्रि. रू. ।

अंगी चूँन (क) सं.— निंदा, गाली ; बद-
नामी, अपमान, तिरस्कार । — अंगी चूँन
(क) क्रि.— गाली दे, निंदा कर, नीचा
दिखा ।

अंगी चूँबुक (सम्) सं.— ठुड़की ।

अंगी चूँकिरि (क) क्रि.— चल, गमन
कर ; प्रस्थान कर ।

अंगी चूँय (क) सं.— दे. अंगी चूँय

(१) अंगी चुरि (सम्) सं.— छोटा कुआँ ।

(२) अंगी चुरि, अंगी चूरि (अ. दे.) सं.—
छुरी ।

अंगी चुरकु, अंगी चुरकु (क) वि.—
तेज़, तीक्ष्ण, कुशाग्र । — अंगी बुद्धि—तीक्ष्ण
बुद्धि ।

अंगी चुरचि (क) सं.— चालाकी, कुशलता ।

अंगी चुरकु (क) सं.— तेज़ी, तीक्ष्णता ;
अग्नि की ज्वाला, शरीर की गरमी ;
शीघ्रता, वेग ; पीड़ा ; चाकू आदि की
तीक्ष्णता, सूक्ष्मता, फुर्तीलापन । — अंगी तन
(क) सं.— सूक्ष्मता, तीक्ष्णता, तेज़ी, फुर्ती-
लापन ।

अंगी चुरचि (क) सं.— एक पौधा विशेष
जिसको छूने से खुजलाहट होती है ।

अंगी चुरकु (क) सं.— दे. अंगी चुरकु

अंगी चुरकु (क) क्रि.— दे. अंगी चुरकु

(१) अंगी चुरक, अंगी चुरक (सम्)
सं.— गहरा कीचड़ ; मुँह भर जल ; अंजलि,
चुल्लू ; छोटा बर्तन ।

(२) अंगी चुरक, अंगी चुरक, अंगी चुरक (क)
वि.— क्षुद्र, लघु, हल्का, चपल । — अंगी तन
(क) सं.— क्षुद्रता, चपलता, अल्पता, हल्का-
पन ; गंभीरता की कमी ।

अंगी चुरि (सम्) सं.— चूल्हा ।

अंगी चुरि, अंगी चुरि (क) सं.— चोंच ।

अंगी चुरिके (क) सं.— कपास पीटने का
ढंडा ।

अंगी चूँचुक (सम्) सं.— चूचुक, स्तन का
अग्रभाग ।

अंगी चूँटि (क) सं.— उद्देश्य, ध्येय ; योजना,
उपाय, साधन, उपकरण ।

अंगी चूँट (क) सं.— दे. अंगी चूँट

अंगी चूँट (सम्) सं.— चोटी, चुटिया ।

अंगी चूँडकर्म (सम्) सं.—
चूँडकर्म संस्कार ; मुण्डन संस्कार ।

अंगी चूँडकर्म, अंगी चूँडकर्म चूँड-
रत्न (सम्) सं.— सीसफूल, सिरमें धारण
करने का एक आभूषण विशेष ; कन्नड के एक
कवि का नाम ।

अंगी चूँडाल (सम्) सं.— चूँडाल, चूँडी ;
कंकण ।

अंशुवर्ण चूडाले (सम्) सं.—एक प्रकार का सरो वृक्ष ।
 अंशुवर्ण चूड (सम्) सं.—चूडा, चुटिया, चोटी ; मोर की कलंगी ; तिर ; शिखर, चोटी ; एक प्रकार की चूड़ी, कंकण ।
 अंशुवर्ण चूणि (क) सं.—आदि, अग्र, सेना का अग्रभाग ।
 अंशुवर्ण चूत (सम्) सं.—आम का पेड़ ; भग, योनि ।
 अंशुवर्ण चूतक (सम्) सं.—छोटा कुआ ।
 अंशुवर्ण चूतकुज (सम्) सं.—आम का पेड़ ; एक वृत्त का नाम ।
 अंशुवर्ण चूपु (क) सं.—दृष्टि, दृश्य ; झलक ; दर्शन ; आँख, नेत्र ; नुकीलापन, सूक्ष्मता, तीक्ष्णता, पैना भाग ।
 अंशुवर्ण चूरण (तद्) सं.—चूर्ण (तत्) ; बुकनी, आटा ; घिसा हुआ चंदन ।
 अंशुवर्ण चूरि (अ. दे.) सं.—दे. अंशु (२).
 अंशुवर्ण चूरिसु—टुकड़े-टुकड़े कर ।
 अंशुवर्ण चूरु (क) क्रि.—खरोच, नोच । सं.—टुकड़ा । खण्ड, अंश, अल्प परिमाण ; बुकनी, पुड़िया ; छत का अंतिम भाग ; घर के ऊपर छत बनाने का ढाँचा ।
 अंशुवर्ण चूरुमरि (अ. दे.) सं.—चरमुरा ; भुना हुआ चावल ।
 अंशुवर्ण चूर्ण (सम्) सं.—चूर्ण, पुडिया बुकनी, धूल, आटा ; चूना ; चोंक ; सूरन, जमीकंद ।
 अंशुवर्ण चूर्णकुंडल (सम्) सं.—धुंवराले बाल ।
 अंशुवर्ण चूर्णि (सम्) सं.—सौ कौड़ियों का योग या जोड़ ; चूर्ण ।
 अंशुवर्ण चूर्णिके (सम्) सं.—गद्य रचना की शैली विशेष ; भुना और पिसा हुआ अनाज ।
 अंशुवर्ण चूल ; अंशुवर्ण चूलु (क) सं.—पशुओं का गर्भ धारण करना ।
 अंशुवर्ण चूल (सम्) सं.—बाल, चोटी ।
 अंशुवर्ण चूलिके (सम्) सं.—हाथी की कनपटी ; मुर्गे की कलंगी ; चोटी ; शिखर,

वृक्ष का ऊपरी भाग ; नाटक में वह कथन जो नेपथ्य की आड़ में कहा जाता है ; सेना-मुख, युद्ध का मुख ।
 अंशुवर्ण चूपे (सम्) सं.—हाथी के साज की पेटी ।
 अंशुवर्ण चूलय (क) सं.—(सिर की) माँग जिसमें मोती का आभरण रखा जाता है ।
 अंशुवर्ण चूळि (क) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंगु (क) क्रि.—कूद, उच्चल, छलांग मार ; दौड़, भाग । सं.—उछलन ; कुदान ।
 अंशुवर्ण चेंडकनरि (क) सं.—(भारतीय) लोमड़ी. सियार ।
 अंशुवर्ण चेंडि (सम्) सं.—चण्डी (तत्) ; दे. अंशुवर्ण (१).
 अंशुवर्ण चेंडिके (क) सं.—शिखा, चोटी, जूड़ा
 अंशुवर्ण चेंडु (क) सं.—गेंद, कंदुक ।
 अंशुवर्ण चेंद (तद् ?) सं.—सुन्दर, मनोहर, सुधुर ।
 अंशुवर्ण चेंदर, अंशुवर्ण चेंदिर (तद्) सं.—चंद्र (तत्) सिंदूर (तत्) चेंदिर ।
 अंशुवर्ण चेंडिगे, अंशुवर्ण चेंडु (क) सं.—लोटा, जलपात्र ।
 अंशुवर्ण चेंकने (क) अ.—जल्दी, शीघ्र, बेग से, तेजी से ।
 अंशुवर्ण चेंकरिसु (क) क्रि.—मिमिया, बकरी या भेड़ का शब्द कर ।
 अंशुवर्ण चेंकल (तद्) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंकु (अ. दे.) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंकुसु (क) क्रि.—बंद कर, रोक, निकाल, प्रवाहित कर ।
 अंशुवर्ण चेंके (तद्) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंचर (क) सं.—शीघ्रता, त्वरित गति ; सावधानी, होशियारी, जागरूकता ; निश्चितता ।
 अंशुवर्ण चेंचरिग (क) सं.—उत्साही या फुर्तीला पुरुष ।
 अंशुवर्ण चेंचु (क) क्रि.—कूट, पीट, मार, कुचल, पीस ; चूर्ण कर, पुडिया बना ।
 अंशुवर्ण चेंजे (क) सं.—दे. अंशुवर्ण

अंशुवर्ण चेंडि (क) सं.—टिट्ठिरी चिड़िया ; मिट्टी का भाण्ड (मै. प्र.) ।
 अंशुवर्ण चेंटु (क) सं.—पौधा, छोटा वृक्ष ; दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंण (क) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंदरु (क) क्रि.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंन् (क) वि.—लाल (समास में) । उदा.—अंशुवर्ण (अंशु + वर्ण) चेंन् लिर्—लाल किसलय । अंशुवर्ण (अंशु + वर्ण) चेंदावरे—लाल कमल आदि ; अच्छा, सुंदर. ठीक । उदा.—अंशुवर्ण चेंदमिल् (अंशुवर्ण सेंदमिल्)—अच्छी तमिल् ।
 अंशुवर्ण चेंन्न (क) सं.—सुन्दर पुरुष या वीर ।
 अंशुवर्ण चेंन्नंगि (क) सं.—दे. अंशुवर्ण १.
 अंशुवर्ण चेंन्नि (क) सं.—सुन्दरी स्त्री । अंशुवर्ण चेंन्नि (क) सं.—सुन्दर पुरुष ।
 अंशुवर्ण चेंन्नु (क) सं.—अच्छाई ; सौंदर्य, लावण्य ; ठीक होना ।
 अंशुवर्ण चेंन्ने (क) सं.—सुन्दरी स्त्री ; एक वृक्ष विशेष ।
 अंशुवर्ण चेंम् (क) वि.—लाल, अरुण (समास में) । उदा.—अंशुवर्ण चेंम्—लाल पुष्प, अंशुवर्ण चेंवोन्—अरुण सुवर्ण ।
 अंशुवर्ण चेंय (क) वि.—सीधा, सुन्दर, अच्छा ।
 अंशुवर्ण चेंय्याट (क) सं.—तमाशा, विनोद ।
 अंशुवर्ण चेंरग (क) सं.—दे. अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंरिगे (क) सं.—बड़े मुँह का बर्तन ; लोटा, लुटिया ।
 अंशुवर्ण चेंरुकु (क) सं.—इंख, जख ।
 अंशुवर्ण चेंचें (तद्) ; सं.—दे. चर्चा (तत्) ; अंशुवर्ण
 अंशुवर्ण चेंल्, अंशुवर्ण चेंल्लु (क) क्रि.—(पानी) उड़ेल ; फेंक ।
 अंशुवर्ण चेंल्लुकु, अंशुवर्ण चेंलगु (क) क्रि.—दे. अंशुवर्ण. छिट्क, छिटक ।
 अंशुवर्ण चेंल (क) वि.—सुन्दर, मनोहर ।
 अंशुवर्ण चेंलुव (क) सं.—सुन्दर या मनोहर पुरुष ; सौंदर्य ।

छैलडं चेतकि (सम्) सं. — पीला हरा
(Yellow myrobalan),

छैतन्य (सम्) सं. — चेतन, जीवन,
बोध, सजीवता ; परमात्मा ।

झोंगळें चोगचि, झोंगळें चोगचे, झोंगळें

चोगर्चि (क) सं.—एक वृक्ष विशेष (cassia occidentals)
 छोछ (तद्) वि.—स्वच्छ (तत्), साफ़, शुद्ध ।
 छोछल (क) सं.—पहली प्रसूति, पहली संतान ।
 छोछ, छोछ, छोछ, छोछ, छोछ, छोछ (क) सं.—लंगड़ापन, टेढ़ापन, वक्रता ।
 छोछी (क) वि.—टेढ़ा, वक्र ।
 छोछी (अ. दे.) सं.—छोटा मनुष्य, नीच पुरुष ।
 छोछी, सोछी, सोछी (क) सं.—लंगड़ी स्त्री ।
 छोछी (तद्) सं.—योकन (तत्) हल के जुए की रस्सी ; गाड़ी का जोत ।
 छोछ (क) सं.—लंगड़ापन, लंगड़ा आदमी ।
 छोछी (क) सं.—देवदारु वृक्ष ।
 छोछ (क) सं.—मकर, मगर ।
 छोछ (क) सं.—दे. छछ.
 छोछी, छोछी, छोछी (क) सं.—जूड़े या वेणी की नोक या सिरा ।
 छोछ (क) सं.—दे. छछ.
 छोछ (सम्) वि.—शुद्ध, साफ़ ; सच्चा, ईमानदार ; पटु, चतुर, निपुण ; प्रिय, मनोहर ।
 छोछ (सम्) सं.—छाल, त्वचा, चमड़ा, खाल, नारियल ।
 छोछी, सोछी (तद्) सं.—चोद्यम् (तत्) ; आश्चर्य, विस्मय, अचरज ।
 छोछी (अ. दे.) वि.—छोटा (हिं.) ।
 छोछी (क) सं.—अंगूठे और तर्जनी के बीच का अंतर ।
 छोछी, छोछी (सम्) सं.—साड़ी ; चोली ।
 छोछी (सम्) सं.—प्रेरणा, उत्साह ।

छोछी (सम्) सं.—एतराज, आपत्ति, प्रश्न करना ; आश्चर्य, अचरज ; प्रेषणीयता ।
 छोछी (अ. दे.) सं.—चोपदार, चोबदार ।
 छोछी, छोछी (सम्) सं.—चोर, ठग, डाकू ।
 छोछी (सम्) सं.—एक पौधा विशेष ।
 छोछी, छोछी (सम्) सं.—चोरी, डकैती ।
 छोछी (सम्) सं.—चोली, अंगिया ।
 छोछी (सम्) सं.—छाल की बनी पोशाक, बल्कल, वस्त्र, चोली ; पेटी, चपरास ।
 छोछी (सम्) सं.—चोली ।
 छोछी (सम्) सं.—चूसना ।
 छोछी (सम्) वि.—चूसने योग्य ।
 छोछी (सम्) सं.—बढ़िया घोड़ा ।
 छोछी (तद्) सं.—योग ; (तत्) ; वेष्ट, भेष, मुख का आवरण, स्वांग ।
 छोछी (क) सं.—एक राजवंश का नाम, एक देश और उसके निवासियों का नाम ।
 छोछी, छोछी (क) सं.—चोलपालकचरित्र (क) सं.—केशव की कृति का नाम जिसमें चोल राजाओं का चरित है ।
 छोछी (क) सं.—चोल देश से संबधित या चोल देश का आदमी ।
 छोछी (अ. दे.) सं.—चौक (हिं.), चौकोर चबूतरा, चार का समूह, चार वस्तुएँ ।
 छोछी, चौकट्ट (अ. दे.) सं.—चौखट (हिं.) ।
 छोछी, चौकड (तद्) सं.—चतुःखण्ड (तत्), कमरा ।
 छोछी, चौकडि (अ. दे.) सं.—दे. छछ.
 छोछी, चौकि (अ. दे.) सं.—चौकी (हिं.) ।
 छोछी, चौकिरी (अ. दे.) सं.—घर के भीतर का आंगन ।
 छोछी, चौकीदार (अ. दे.) सं.—चौकीदार (हिं.), रक्षक, रक्षा करनेवाला ।

छोछी चौकुल (तद्) सं.—चार कुल या जातियाँ ।
 छोछी चौगावे (तद्) सं.—चतुर्ग्राम (तत्), चार गाँव ।
 छोछी चौड, छोछी चौल (सम्) सं.—मुंडन, चूडाकर्म संस्कार ।
 छोछी चौति (तद्) सं.—दे. छछ.
 छोछी चौथायि (अ. दे.) सं.—चौथाई (हिं.), १/४ भाग ।
 छोछी चौपद (तद्) सं.—चतुःपद (तत्) चतुष्पथ (तत्) ; चौपाया ; छंद विशेष का नाम ; 'चौपद' गाकर अपने शिष्यों के साथ भेंट पाने के लिए घर-घर जानेवाला अध्यापक ।
 छोछी चौपदि (तद्) सं.—दो छंदों का नाम, चौरास्ता ।
 छोछी चौपडि (क) सं.—हॉल (Hall) ; जैन मन्दिर के सामने का मंडप ।
 छोछी चौभुज (तद्) वि.—चतुर्भुज (तत्) ।
 (१) छोछी चौर (सम्) सं.—चोर ।
 (२) छोछी चौर (तद्) सं.—क्षौर (तत्) ; हजामत ।
 छोछी चौरगे छोछी चौरिगे (तद्) सं.—चतुःशाला ।
 छोछी चौरिगे (सम्) सं.—चोरी, डकैती ।
 छोछी चौर्य (सम्) सं.—दे. छछ.
 छोछी चौल (सम्) सं.—दे. छछ.
 छोछी च्यवन (सम्) सं.—गति, गतिशीलता ; शून्यता, राहित्य ; नाश, मरण ; बहाव, टप-काव एक ऋषि का नाम ।
 छोछी च्युत (सम्) वि.—गिरा हुआ, फिसला हुआ, स्थानांतरित ।
 छोछी च्युति (सम्) सं.—पतन, टपकना, गिरना, अलगाव ; बह निकलना ; अदृश्य होना, नष्ट होना ; योनि, भग ; गुदा ।
 छोछी च्युत (सम्) सं.—आम का पेड़ ।

छ छ

छ छ—कन्नड वर्णमाला का इक्कीसवाँ अक्षर ; चवर्ग का दूसरा व्यंजन ।

छ

छ (क) वि.—सात की संख्या ।

(१) छंद छंद (सम्) सं.—इच्छा, कामना, अमिलाषा; अभिप्राय, इरादा, मंशा; वंश में करना, कावू में करना; जहर, विष; मधुर होना, आकर्षित करना ।

(२) छंद छंद (तद्) सं.—छंदस् (तत्); पद्य, वृत्त; छंदःशास्त्र; छन्दोस की संख्या ।

छंद छंदक (सम्) सं.—दे. छंद (१).

छंद छंदसु (तद्) सं.—छंदस् (तत्)—इच्छा, कामना, स्वेच्छा; पद्य, वृत्त; छंदःशास्त्र; वैदिक ऋचाएँ; वेद ।

छंद छंदोबुधि (सम्) सं.—कन्नड के प्रसिद्ध प्राचीन कवि नागवर्मा का छंदः-शास्त्र विषयक ग्रंथ ।

छंद छंदोवतंस (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

छ छक (तद्) वि.—षट्क (तत्); छः-गुना ।

छ छग, छगल, छगल छगल (सम्) सं.—बकरा ।

छ छगलान्त्रि (सम्) सं.—एक पौधा विशेष (The plant *Argyrea speciosa* or *argentea* sweet) ।

छ छटछट (क) सं.—फड़फड़ाहट, छट-छट शब्द ।

छ छटसु (क) क्रि.—छट-छट शब्द हो, फड़फड़ाहट हो ।

छ छटि छट्टे (सम्) सं.—समूह, समुदाय, जमाव; चमक, दमक, कांति, प्रकाश की रश्मियों का समूह; अटूट पंक्ति ।

छ छडकि (क) सं.—कुश्ती लड़नेवालों की एक पेंच ।

छ छडाछडि (क) अ.—जल्दी; तुरंत, शीघ्र; फौरन् ।

छ छडाछिसु (क) क्रि.—जोर से झटका 'छट' शब्द उत्पन्न कर; प्रज्वलित हो; चिड़, गुस्से में आ, उद्विक्त हो ।

छ छत्तीस (अ. दे.) वि.—छत्तीस (हिं.) ।

(१) छ छत्र (सम्) सं.—छाता, छतरी; कुकुरमुत्ता ।

(२) छ छत्र (तद्) सं.—सत्र (तत्); धर्म-शाला, आश्रय स्थान ।

छ छत्रक (सम्) सं.—कुकुरमुत्ता ।

छ छत्रपति (सम्) सं.—राजा की आदर-सूचक उपाधि ।

छ छत्राक, छ छत्राकि (सम्) सं.—कुकुरमुत्ता, कठफूल ।

छ छत्रिके (सम्) सं.—राजछत्र; कुकुरमुत्ता ।

छ छत्रे (सम्) सं.—एक पौधा विशेष; कुकुरमुत्ता; धनिया ।

छ छवर (सम्) सं.—घर, निवासस्थान; कुंज, लतामंडप ।

छ छद, छदल (सम्) सं.—ढकना; फैलाना, आच्छादन; डैना, पर; पत्ता ।

छ छदिस, छद छदे (सम्) सं.—छत या छावनी ।

छ छद (सम्) सं.—कपटवेश; बहाना, व्याज ।

छ छदने (तद्) सं.—दे. छद ।

छ छद (सम्) वि.—ढका हुआ, छिपा हुआ, रहस्यमय ।

छ छमंड (सम्) सं.—अनाथ, मातृ-पितृहीन व्यक्ति ।

छ छमने (क) अ.—छम् शब्द के साथ ।

छ छराकु (क) अ.—क्रोध, गुस्सा; मद ।

छ छर (तद्) सं.—स्वरः (तत्); तलवार या किसी आयुध की सूँठ ।

छ छर्दि, छर्दि छर्दिके (सम्) सं.—वमन, कै, रोग ।

छ छल (सम्) सं.—कपट, धोखा, दगा; चालाकी, धोखेबाजी, बदमाशी; व्याज, बहाना; दृष्टता; अभिप्राय, मत; भुलावा ।

छ छलगिल (क?) सं.—शूरता, पराक्रम; वीरता ।

छ छलवादि (सम्) वि.—हठी, हठीला, जिद्दी; धोखेबाज ।

छ छलिक (सम्) नाटक या नृत्य विशेष ।

छ छल्लि, छ छली (सम्) सं.—छाल, खाल, चमड़ ।

खाल, चमड़ ।; लता विशेष; संतान, संतति; एक प्रकार का फूल ।

छ छवि (सम्) सं.—चमड़ा, खाल, चमड़े की रंगत; कांति, शोभा, सौंदर्य, चमक, आब ।

छ छल्लेने (क) अ.—'छल्लि' शब्द के साथ ।

छ छंगु (क) अ.—शाबाश !, अच्छा !, भला !

छ छंगु (क?) सं.—घोड़ों की एक बीमरी ।

छ छंदस (सम्) वि.—छंद से संबंधित, पद्यमय; वैदिक, वेदाधीन ।

छ छंदसिक, छ छंदसिग सं.—वेदज्ञ ब्राह्मण । [छंदसः—तत्] ।

छ छग (सम्) सं.—बकरा ।

छ छगि (सम्) सं.—बकरी ।

छ छत (सम्) वि.—कटा हुआ, विभाजित; निर्बल, दुबला ।

छ छद, छदल छदन (सम्) सं.—ढकना, आच्छादन, लुकाव, छिपाव; छत, छप्पर ।

छ छदित (सम्) वि.—ढका हुआ ।

छ छानस, छ छान्स (क) सं.—[छंदस्—तत् ?]—देरी, विलम्ब । —गार=देरी करनेवाला ।

छ छापखाने (अ. दे.) सं.—मुद्रणालय, प्रेस (Press) ।

छ छाया, छाये (सम्) सं.—छाया, परछाई; प्रतिबिम्ब; समानता; सादृश्य, अम, माया; धोखा; रंगों की गड़बड़ी; चमक, दमक; रंग; सौंदर्य; चेहरे की रंगत; पंक्ति, कतार; रक्षा; अंधकार; सूर्य की पत्नी; दुर्गा; धूसरिश्वत । —गृह ग्रह (सम्) सं.

छ छीशा, दर्पण, आईना । —गृह (सम्) सं.—छाया पकड़ना । —गृह (सम्) सं.—एक राक्षसी का नाम ।

छ छनय, छनद, छन सुत (सम्) सं.—शनिग्रह । —छ पति (सम्) सं.

जंघा, जंघे (सम्) सं.—जांघ ;
 एड़ी से घुटने तक का भाग ; पैर का ऊपरी
 भाग ; पैर ; एक पौधे का नाम । —
 कारिक (सम्) सं.—दौड़ैया, चर,
 डाकिया । — अनिल (सम्) सं.—
 जल्दी चलनेवाली हवा । — (सम्) सं.—
 दौड़ैया, चर । — बल (सम्) सं.—
 पैरों की शक्ति ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—झंझट (हिं.),
परेशानी, तकलीफ ।

अ० अ० ज० ज० (सम् ?) वि.—शिथिल, दौड़ने-
वाला, क्रमहीन ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—अ० अ० अ०

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—जंजाल,
बखेड़ा ; बंदूक, तोप ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—हवा
या वर्षा की ध्वनि ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—[जंज = लड़ना]
—वीर या पराक्रमी पुरुष, वीर का शरीर ।

अ० अ० ज० ज० झंझावात, आंधी-वर्षा ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—Joint (अंग्रेजी) ;
जोड़, मिलना, मिलने का स्थान ; सह-
भागी होना, साक्षा ; मिले रहना । — गार
गार = साझेदार, सहभागी । अ० अ० ज० ज०
(अ. दे.) क्रि.—लगा, मिला, जोड़ ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—झण्डा (हिं.) ;
पताका ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—दंत (तत्) ; दाँत ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—जीव, प्राणधारी ;
मनुष्य, आत्मा ; जानवर ; कीड़े-मकोड़े ।
—अ० अ० फल (सम्) सं.—गूलर का वृक्ष ।
—अ० अ० निकर (सम्) सं.—जीवों का
समूह ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—धरन, वल्ला ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—यंत्रम् (तत्) ; तावीज ;
ताला ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—पति-पत्नी, दंपती ।

अ० अ० ज० ज० (क) सं.—आलस्य, सुस्ती, ऊँच ;
समूह, समुदाय (अ. दे.) सं.—छलांग,
कुदान, उछलन । — अ० अ० हिडि (क) क्रि.
—ऊँच, नींद आ ।

(१) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—एक प्रकार का
घोड़ा ।

(२) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—दंभः ; दंभः (तत्) ;
अहंकार, घमंड, गर्व, डींग, शेखी । —
अ० अ० कोरु = डींग हॉक, शेखी मार ।
(सुह.) । — गार गार (तद्) सं.—घमंडी ।

अ० अ० ज० ज० (क) सं.—काम, उद्योग,
मामला ; व्यापार ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—कीचड़, पंक,
दलदल ; काई ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—शमी (तत्) ; छेकुर
का पेड़ ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—नींबू, नींबू का
पेड़ ।

(१) अ० अ० ज० ज० (क) सं.—लम्बाई ; एक
प्रकार का नरकट या मुस्तबैत (Typha an-
gustifolia) ।

(२) अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—जामुन का
पेड़ और फल ।

अ० अ० ज० ज०, अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—
सियार, स्यार ; गीदड़ ; नीच मनुष्य ;
जामुन का फल ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (अ. दे.) सं.—दे.
अ० अ० अ०

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (सम्) सं.—सात
द्वीपों में एक जो मेरु पर्वत को घेरे हुए है ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (सम्) सं.—रावण
की सेना का एक राक्षस ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (सम्) सं.—मेरु पर्वत
से निकलनेवाली एक नदी का नाम । कहा
जाता है कि वह मेरुपर्वत पर स्थित एक जंबू
वृक्ष के (जामुन के) रस से बनती है ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (सम्) सं.—जामुन का
फल ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—नींबू, जमीरी ; दाँत ;
मुँह, जाबड़ा ; इंद्र द्वारा हत एक राक्षस
का नाम । — अ० अ० द्वेपि, अ० अ०, भेदि, अ० अ०
रिपु, अ० अ० शत्रु (सम्) सं.—इंद्र ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—नींबू ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज०, अ० अ० ज० ज० (सम्)
सं.—इंद्र ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—नींबू ; एक
प्रकार का तुलसी का पौधा ।

अ० अ० ज० ज०, अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—
यक्षिणी (तत्) ; यक्ष स्त्री ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—जकात (अरबी) ;
कर ।

अ० अ० ज० ज० (सम्) सं.—मलयपर्वत ; कुत्ता ।

अ० अ० ज० ज० (अ. दे.) सं.—जखीरा (अरबी) ;
वस्तुओं को संग्रह कर रखने का स्थान,
भांडार ।

(१) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—‘चक्रं’ और चक्रः
(तत्) ; चक्र, पहिया ; चक्रवाक । अ० अ०
अ० अ० ज० ज० ज० ज० (तद्) सं.—भैंस जो
यम का वाहन है । अ० अ० अ० अ० ज० ज०
ज० ज० (तद्) सं.—यम । अ० अ० अ०
ज० ज० (तद्) सं.—चक्रवाक ।

(२) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—यक्षः (तत्) ।
अ० अ० + अ० = अ० अ० — अ० अ० ज० ज०
चारि—कर्णाटक के एक प्रसिद्ध शिल्पी का
नाम । अ० अ० ज० ज० ज० ज० ज० ज० ज० ज०
शिवभक्त का नाम ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—दे. अ० अ०

अ० अ० ज० ज० (क) सं.—चापलूनी, चाटुका-
रिता, अति अनुरोध की स्थिति ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—यक्षी (तत्) —यक्ष
स्त्री ; कर्णिका ।

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—दे. अ० अ० वह
स्त्री जो सुहागिन होकर मरती है और
सम्मानित होती है (मै. प्र.) ।

अ० अ० ज० ज०, अ० अ० ज० ज० (क) क्रि.—
झुका ; खींच, नीचे दबा, प्रयत्न कर खींच ;
घमंड से चल, अकड़पन से चल ।

अ० अ० ज० ज० (क) सं.—गुदगुदी ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (क) क्रि.—गुदगुदी
उत्पन्न कर ; स्पर्श कर ; विनोद कर, मज़ा
कर, आनंदित हो ; खेल, क्रीड़ा कर ; दाँत
दिखा ।

अ० अ० ज० ज० ज० ज० (क) क्रि.—दे. अ० अ०
अ० अ०

अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—अ० अ०

(१) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—अ० अ० ज० ज०
—झगझग, चमक-दमक ।

(२) अ० अ० ज० ज० (तद्) सं.—जगत् (तत्) ;
दुनिया, संसार ! — अ० अ० ज० ज० ज० ज० (तद्)

ಜಜಾವಣಿ ಜಜಾವಣಿ (?) ಸಂ.—ಸಂಗೀತ ಕಾ ಏಕ
ವಿಧಾನ ।

अक्षर जर्जरित (तद्) वि.—जर्जरित (तद्) ;
बूढ़ा, पुराना, जीर्ण, निर्बल, घिसा हुआ,
अवश, निकम्मा ।

अक्षर जर्जर (तद्) सं.—दे. अक्षरजर्जर ।

अक्षर जर्जर (क) क्रि.—पुड़िया कर, चूर्ण कर
कूट ; पीस । सं.—चूर्ण किया जाना ।

(१) अक्षर जट (क) अ.—अक्षर जटजट—
जल्दी, शीघ्र, फौरन ।

(२) अक्षर जट, अक्षर जटा, अक्षर जटे (सम्) सं.—
दे. अक्षर ।

अक्षर जटकरिसु, अक्षर जटकायिसु
(अ. दे.) क्रि.—झटका (हिं.) झटक,
फटकार ।

अक्षर जटायु (सम्) वि.—बड़ी आयुवाला ।
सं.—एक पक्षी, गिद्धों का राजा जो सीताजी
के लिए युद्ध कर रावण से मारा गया ।

अक्षर जटि (सम्) सं.—शिव ; स्कंद का अनु-
चर ; गूलर का वृक्ष ; जटाजूट ; जमाव ।

अक्षर जटिल (सम्) वि.—जटाजूटधारी ;
उलझा हुआ, पेचीदा ; अगम्य, सघन,
बहुत कठिन ।

अक्षर जटिलित (सम्) वि.—पेचीदा,
उलझा हुआ ; सघन ।

अक्षर जटिले, अक्षर जटमांसि (सम्)
सं.—हिमालय की एक जड़ी-बूटी, जटा-
मांसी ।

अक्षर जटुल (सम् ?) सं.—शरीर पर का
धब्बा, चिन्ती ।

अक्षर जटे (सम्) सं.—जटा, जूड़ा ; जटमांसी ;
जड़, मूल, शाखा, डाल ; विचित्रता ; वेद
का पाठ विशेष ; कौशा ।

अक्षर जट्टि (क) सं.—कुश्ती लड़नेवाला, पहल-
वान, मल्ल ।—अक्षर काळग (क) सं.—
मल्लयुद्ध, कुश्ती । अक्षर अक्षर अक्षर जट्टि
विट्टिले पट्टण—पहलवान जहाँ भी जावे, डर
नहीं (कह.) ।

अक्षर जट्टिग (क) सं.—पहलवान, कुश्ती
लड़नेवाला ।

अक्षर जठर (सम्) सं.—पेट, कुक्षि । वि.—
कठोर, दृढ़, मजबूत, घना ।—अक्षर अग्नि

(सम्) सं.—जठराग्नि, पेट के भीतर की
अग्नि ।

अक्षर जट (सम्) वि.—ठंडा, शीतल ; घीसा,
गतिहीन ; मूर्ख, निवेकशून्य, अज्ञानी, अच्छे
बुरे ज्ञान से शून्य ; सुन्न, ठिठुरा हुआ,
अकड़ा हुआ, वेदाध्ययन करने में असमर्थ ।
सं.—जड़ ; जल ; सीसा ; यज्ञ, मख ;
वस्तु, द्रविण ; शरीर का भारीपन, सुस्ती,
थकावट ।

अक्षर जटकायिसु (अ. दे.) क्रि.—दे.
अक्षरजटकायिसु ।

अक्षर जटक्रिय (सम्) वि.—सुस्त,
आलसी, मंदगति से काम करनेवाला ।

अक्षर जटज (सम्) सं.—कमल ।—अक्षर
(सम्) सं.—ब्रह्मा ।—अक्षर ज (सम्) सं.—
ब्रह्मा ।—अक्षर भव, अक्षर जात (सम्) सं.—
ब्रह्मा ।—अक्षर जंतु, अक्षर जीवि (सम्)
सं.—मूर्ख प्राणी ।—अक्षर आस (सम्)
सं.—सूर्य ।—अक्षर अरि (सम्) सं.—
चंद्रमा ।

अक्षर जटत, अक्षर जटित (क) सं.—मारना,
ठोकना ।

अक्षर जटतन, अक्षर जटते, अक्षर जटत्व
(सम्) सं.—सुस्ती, अज्ञानता, मूर्खता ।

अक्षर जटधर, अक्षर जलधर (सम्) सं.—
बादल, मेघ ।

अक्षर जटधि, अक्षर जलधि (सम्) सं.—
सागर, समुद्र ।

अक्षर जटपु (तद्) सं.—कांति, प्रकाश,
चमक ।

अक्षर जटप्रास (सम्) सं.—मूर्खतापूर्ण
अनुप्रास अलंकार का प्रयोग ।

अक्षर जटभरत (सम्) सं.—एक भगवद्भक्त
का नाम जिनकी कथा श्रीमद्भागवत में है ।

अक्षर जटायिसु (क) क्रि.—बलपूर्वक
प्रवेश कर, दबा ; ठोंक ; दृढ़ कर, बंद कर ।

अक्षर जटाय, अक्षर जलाशय
(सम्) सं.—सरोवर, तालाब, जलाशय ।

(१) अक्षर जटि, अक्षर जटे, अक्षर जल्लि (क)
क्रि.—फटकार बता, डाँट, डपट, डरा,

भयभीत कर ; कोस, गाली दे, झड़की दे,
आड़े हाथों ले (ना) ; इधर-उधर चल या
हिल ; लहरा, झनझना, चमक (तलवार
चमक) ; (हाथ या डंडे से) पीट, मार, चूर्ण
कर, पुड़िया कर ; दबा, ठूस, दृढ़ कर,
बाँध । सं.—मारने, पीटने या दबाने की
क्रिया ; लगातार अल्प वृष्टि होना, बूँदा-
बूँदी ।

(१) अक्षर जटि (अ. दे.) क्रि.—मिल, लग,
जड़, मिला, लगातार वह (जैसे आँसू)
बेकार हो ; जगह दे, डूब, घँस ।

(२) अक्षर जटि, अक्षर जटे (तद्) सं.—जटा
(तत्) वेणी, जूड़ा जटा ।

अक्षर जटित (क) सं.—दे. अक्षर ।

अक्षर जटिप (क) सं.—चिट्ठियों की चहचहा-
हट, कोयल की ध्वनि ।

अक्षर जटिसु (क) क्रि.—‘अक्षर’ (१) का
प्रेरणार्थक रूप ।

अक्षर जटिकृत (सम्) वि.—स्तंभीभूत,
मंद ।

अक्षर जटिभाव (सम्) सं.—जड़ता,
चैतन्यहीनता, मंदता ।

अक्षर जटपु (अ. दे.) सं.—लटकती हुई
वस्तु, पतंग की पूँछ ।

अक्षर जटुल (तद्) वि.—दे. अक्षर ।

(१) अक्षर जटे (क) क्रि.—दे. अक्षर (१) ।

(२) अक्षर जटे (तद्) सं.—दे. अक्षर (२) ।

अक्षर जटिज (अ. दे.) सं.—Judge (अंग्रेजी) ;
जज, न्यायाधीश ।

अक्षर जटु, अक्षर जटु (क) सं.—सामीप्य,
नैकद्वय, मिले रहना ।

(१) अक्षर जटु (क) सं.—तेल की स्निग्धता,
धब्बा, दाग, चिन्ती ; बकरी के दूध की
अहितकर गंध ।

(२) अक्षर जटु (तद्) सं.—जड़ (तत्) ;
सुस्ती, आलस्य, बीमारी, रोग ; थकावट ।

अक्षर जतण, अक्षर जतन (तद्) सं.—यत्न
(तत्) ; उद्योग, प्रयत्न ।

अक्षर जति (तद्) सं.—यतिः (तत्) ; संन्यासी,
ऋषि ; यति या विराम ।

झडिगं जतिगे, झडिगं जोतिगे, झडिगं जोत्तगे, झडिगं जोत्तिगे (तद्) सं.—योक्त्रं (तत्) ; हल के जुए की रस्सी, आबंध ।

झडिगं जतु (सम्) सं.—लाख ।

झडिगं जतुक (सम्) सं.—लाख ; एक प्रकार का गोंद ; हींग ।

झडिगं जतुकुत् (सम्) सं.—लाख बनाना, एक प्रकार का सुगंधित वृक्ष जिसमें लाख के कीड़े रहते हैं ।

झडिगं जतुके (सम्) सं.—लाख ; चमगादड़ ; एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ।

झडिगं जतुरस (सम्) सं.—लाख ।

झडिगं जतुके (सम्) सं.—चमगादड़ ; एक सुगंधित वृक्ष ।

झडिगं जते (क) सं.—संयोग, संभोग, मिलन, संगम, स्नेह ; साथी ; जोड़ी ।—गाति, गाति (क) सं.—सखी, सहेली, सहचरी ।

झडिगं जत्त (तद्) सं.—यत्न ; (तत्) ; यत्न, उद्योग ; धुन, परिश्रम ; कोशिश, प्रयत्न ।

झडिगं जत्तक (क) सं.—धोखा, प्रवंचना, कपट, छल, धोखेबाजी ; धोखेबाज़, कपटी, वंचक ।

झडिगं जत्तकि (क) सं.—धोखेबाज़ स्त्री, कपटी ।

झडिगं जत्तर (क) सं.—कौपीन, लंगोटी ।

झडिगं जत्तव (क) सं.—दे. झडिगं.

झडिगं जत्ताण (क) सं.—दे. झडिगं.

झडिगं जतिगे, झडिगं जोत्तगे, झडिगं जोत्तिगे, (तद्) सं.—योक्त्रं (तत्) ; हल के जुए की रस्सी ।

झडिगं जतु (क) सं.—दे. झडिगं.

झडिगं जतुक (क) सं.—दे. झडिगं.

झडिगं जतुल (क) सं.—फेन, झाग ;

झडिगं जतु (सम्) सं.—हँसली की हड्डी ।

झडिगं जन (सम्) सं.—जीवधारी, प्राणी ; व्यक्ति ; लोग, संसार ।

झडिगं जनक (सम्) वि.—पैदा करनेवाला, उत्पन्न करनेवाला । सं.—पिता, बाप ; विदेह राजा जानक ।—झा जा, झे जे (सम्) सं.

—सीता, जानकी ।—झारमझारमण (सम्) सं.—राम ।—झनये, तनये, तनुजे, तनुजे, आत्मजे (सम्) सं.—सीता ।

झडिगं जनंगम (सम्) सं.—चांडाल ।

झडिगं जनता ; झडिगं जनते (सम्) सं.—लोग, लोगों का समूह, जनता, मानव-जाति ; उत्पत्ति ।

झडिगं जनन (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म, सृष्टि, प्रादुर्भाव ; जीवन, अस्तित्व ; वंश, कुल ; वर्ण ।

झडिगं जननाथ (सम्) सं.—राजा, नरेश ।

झडिगं जननि (सम्) सं.—माता, माँ ; एक प्रकार का सुगंधित पौधा ।

झडिगं जनप, झडिगं जनपति (सम्) सं.—राजा ।

झडिगं जनपद (सम्) सं.—जनपद, देश, राज्य ; राष्ट्र, प्रदेश जिसमें लोगों की बस्ती हो ; किसी राज्य का प्रजा-समूह ।

झडिगं जनसेजय (सम्) सं.—चंद्र-वंशी राजा जो परीक्षित के पुत्र थे । इन्होंने सर्पयाग किया था ।

झडिगं जनयितृ (सम्) सं.—पिता, जनक ।

झडिगं जनयित्रि (सम्) सं.—माता, जननी ।

झडिगं जनरमण, झडिगं जनवर (सम्) सं.—राजा, नृपति ।

झडिगं जनवाद, झडिगं जनवार्ते (सम्) सं.—समाचार, खबर ; अपवाद, अफवाह, कलंक ।

झडिगं जनश्रुति (सम्) सं.—किंवदंती, अफवाह ; बुद्धिमत्ता ।

झडिगं जनस्थान (सम्) सं.—दंडकवन का एक भाग ।

झडिगं जनांग (सम्) सं.—जाति, देश, किसी प्रदेश के निवासी (मै. प्र.) ।

झडिगं जनान, झडिगं जनानि (अ. दे.) सं.—जनाना (फ़ारसी) ; स्त्री ; स्त्रियों के योग्य, नपुंसक, अन्तःपुर से संबंधित, अन्तःपुर ।

झडिगं जनांत (सम्) सं.—प्रदेश ; जिला, देश का भाग ।

झडिगं जनार्दन (सम्) सं.—विष्णु, कृष्ण ।

झडिगं जनापवाद (सम्) सं.—लोक-निंदा, लोगों द्वारा आरोपित अपराध या दोष या अभियोग ।

झडिगं जनाश्रय (सम्) सं.—लोगों के ठहरने का स्थान, अस्थायी निवास स्थान या झोंपड़ा ।

(१) झडिगं जनि (क) क्रि.—बह, प्रवाहित, हो, खचित हो, बूँद-बूँद करके गिर, टपक ।

(२) झडिगं जनि (सम्) सं.—उत्पत्ति, सृष्टि ; स्त्री, औरत ; माता ; बहू ; भार्या, पत्नी ; एक प्रकार का पौधा (जननी) ।

झडिगं जनित (सम्) वि.—कारणभूत, उत्पन्न, पैदा हुआ ; उत्पन्न करनेवाला ।

झडिगं जनियिसु (सम्) क्रि.—पैदा हो, उत्पन्न हो, जन्म ले ; संभव हो, हो ।

झडिगं जनियुविके (क) सं.—बहाव, बहना ; टपकाव, टपकना ।

झडिगं जनीवार, झडिगं जन्नवार, झडिगं जन्नवार, झडिगं जन्निवार, झडिगं जेनिवार (तद्) सं.—यज्ञोपवीत (तत्) ; जनेऊ ।

झडिगं जनिसु (सम्) क्रि.—दे. झडिगं. झडिगं जनुम (तद्) सं.—जन्म (तत्) ; उत्पत्ति ।

झडिगं जनुस् (सम्) सं.—उत्पत्ति, जन्म ; सृष्टि ; जीवन ; अस्तित्व ।

झडिगं जने, झडिगं जेने, झडिगं जेने (क) सं.—भुटा, अंडे का गूदा ; अंडा ।

झडिगं जनेंद्र, झडिगं जनेश, झडिगं जनेश्वर (सम्) सं.—राजा ।

झडिगं जनोदय (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

झडिगं जनोलोक, झडिगं जनलोक (सम्) सं.—सात लोकों में एक ।

झडिगं जन्न (तद्) सं.—यज्ञ ; (तत्) ; याग ; किसी अश्व का नाम ; कन्नड के एक

उत्पन्न करनेवाला । ५० जरबु, ५५०F जर्बु
राजा जानक ।—५० जं (भरबी) ; भयानक

५. જઝફર જર્જર (સમૂ) ત્રિ. - વૂઠા, જીર્ણ,

ऋ०यं प्रलय (सम्) स. — जल द्वार
 नाश ।—ऋ०यं प्राय (सम्) वि.—पार्ष्ण

अक्षर जहज

से भरा, जलपूर्ण, गीला, भीगा ।— अक्षर
प्रांत (सम्) सं.—किनारा, तट । — अक्षर
फणि (सम्) सं.—जल का सौंप । — अक्षर
भंग (सम्) सं.—लहर । — अक्षर भ्रम
(सम्) सं.—आवर्त, भँवर । — अक्षर
मुच (सम्) सं.—बादल । — अक्षर यन्त्र
(सम्) सं.—जल खींचने की कल । —
अक्षर राशि (सम्) सं.—समुद्र । अक्षर रुह
(सम्) सं.—कमल । — अक्षर वायस
(सम्) सं.—सुर्गावी । — अक्षर वाह (सम्)
सं.—बादल । — अक्षर विहंग (सम्) सं.—
जलपक्षी । — अक्षर शयन (सम्) सं.—
विष्णु । — अक्षर शूक, अक्षर नीलि (सम्)
सं.—सिवार ।
अक्षर जलकने, अक्षर जलकने, अक्षर
जलकने, अक्षर जलकने अक्षर तलकने
(क) अ.—साफ साफ, शुद्ध रूप से, ठीक
प्रकार से, निर्मल रूप से, जलदी ।
अक्षर जलडे (क) सं.—दे. अक्षर.
अक्षर जलदारि (सम्) सं.—नाली, नाला ।
अक्षर जलमुलि (क) सं.—एक प्रकार का
वृण का पौधा (The Indian acalypha) ।
अक्षर जलकने (क) अ.—दे. अक्षर.
अक्षर जलाकर (सम्) सं.—जल का स्थान,
झरना; फव्वार, सरोवर ।
अक्षर जलाधार (सम्) सं.—तटाक, सरो-
वर, तालाब ।
अक्षर जलायि (अ. दे.) क्रि. —
जला (हिं.) ।
अक्षर जलालि (अ. दे.) सं. — जलाल
(अरबी), मुहरम के समय किया जानेवाला,
एक प्रकार का छद्मवेशी वृत्त ।
अक्षर जलावर्त (सम्) सं.—भँवर ।
अक्षर जलाशय (सम्) सं. — समुद्र,
तालाब, सरोवर, झरना; रबस; सिंघाड़ा;
मछली; मूर्खता, वेवकूफी । अक्षर
जलाशय (तद्) ।
अक्षर जलाश्रय (सम्) सं.—दे. अक्षर
अक्षर.
अक्षर जलाश्रिते (सम्) सं.—यक्षिणी ।

अक्षर जलिक (अ. दे. ?) सं. ठग धोखे-
बाज ।
अक्षर जलिके, अक्षर जलिके अक्षर जलिके
(सम्) सं. — जोंक । अक्षर जिगुलि,
अक्षर जिगुले—तद् ।
अक्षर जलुगु (क) सं.—वह स्थान जहाँ से
पानी टपकता या स्रवित होता है ।
अक्षर जलुम, अक्षर जलम (तद्) सं.—जन्म
(तद्) ।
अक्षर जलोके (सम्) सं. — जोंक ।
अक्षर जलोदर (सम्) सं.—एक रोग ।
अक्षर जलोद्धते (सम्) सं. — एक
वृत्त का नाम ।
अक्षर जलौके (सम्) सं.—जोंक ।
अक्षर जलदि, अक्षर जलदु, (अ. दे.) अ.—
जलदी (अरबी) ।
अक्षर जल, अक्षर जलपन (सम्) सं.—वात-
चीत, वार्तालाप, संवाद, गपशप; वाद-
विवाद ।
अक्षर जलपाक (सम्) सं.—व्यर्थ की बात
करनेवाला, गप्पे लड़नेवाला ।
अक्षर जलडि, अक्षर जलडे (क) सं. — दे.
अक्षर.
अक्षर जलने (क) अ.—अचानक, सहसा,
यकायक ।
अक्षर जल्लि (क) सं.—धान रखने का झावा;
कंकड़, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े; झरु,
असत्य बात; झूठा, लटकन ।
अक्षर जल्लि (क) क्रि.—चालनी से झार ।
अक्षर जल्लु (क) सं.—फटे रहने की स्थिति
(जैसे कपड़ा या केले का पत्ता होता है);
मल्लाह का डंडा, बाँस ।
अक्षर जल्ले (क) सं.—दे. अक्षर; बाँस का
डंडा; ईख ।
(१) अक्षर जल (सम्) सं.—तेजी, फुर्ती । वि.
—तेज, फुर्तीला । (तद्) सं. = अक्षर जल,
यम: (तद्) ।
अक्षर जलन (सम्) वि.—तेज; फुर्तीला ।
सं.—युद्ध की शिक्षा प्राप्त घोड़ा ।

अक्षर जलनिके (सम्) सं.—पदी, कतात,
चिक ।
अक्षर जलनिके (?) सं.—कवच, बख्तर ।
अक्षर जलनुर (तद्) सं.—यमपुरं (तद्) ।
अक्षर जलन, अक्षर जलनिके (तद्) सं.—यमलं
और यमली (तद्)=जोड़ा, युग्म ।
अक्षर जलनिके (क) सं.—कपड़ा, वस्त्र । —
क, कक्ष कार, [कक्ष कार] (क) सं.—
कपड़ों का व्यापारी ।
अक्षर जलनिके (तद्) क्रि. — जोड़ा हो,
लग, संयुक्त हो ।
अक्षर जलन, अक्षर जलन (क) सं.—दल-
दल, धँसान, धँसाज भूमि ।
अक्षर जलनिके, अक्षर जलनिके, अक्षर
जलनिके (सम्) सं.—जलनिके, एक सुगंधित
द्रव्य, कस्तूरी ।
अक्षर जलन (अ. दे.) सं.—नौकर, सेवक ।
अक्षर जलन (अ. दे.) सं. — जलन
(अरबी) । — अक्षर दार=उत्तरदायी पुरुष ।
— अक्षर दारि=उत्तरदायित्व ।
अक्षर जलनिके (अ. दे.) सं. — जलन
(अरबी); रत्न ।
अक्षर जलन, अक्षर जलन (क) सं.—दे. अक्षर.
अक्षर जलन, अक्षर जलन (क) सं.—दे.
अक्षर.
अक्षर जलन (क) सं.—दे. अक्षर (तद्) सं.—यव:
(तद्); जलन, जौ ।
अक्षर जलन (तद्) सं. — यौवनं (तद्);
जलन ।
अक्षर जलन, अक्षर जलनिके, अक्षर
जलन (तद्) सं. — जलन स्त्री, युवती ।
अक्षर जलन (तद्) सं.—यशस् (तद्); कीर्ति ।
— अक्षर वंत्त=कीर्तिमान् ।
अक्षर जलनिके, अक्षर जलनिके, अक्षर
जलनिके (अ. दे.) सं.—जलनिके (अरबी) । — अक्षर दार=
जलनिके ।
अक्षर जलन, अक्षर जलन (अ. दे.) सं.—
जलन (अरबी) ।

अठसठक जातसूक्त

अठसठक जातसूक्त (सम्) सं.—सुहोत्र राजा का पुत्र
जिसने गंगाजी को अपना दत्तक बनाया था।
अठसठक तनये (सम्) सं.—गंगाजी।
अठसठक जल, अठसठक जल (तद्) सं.—('जल' से)
—गरमी, गरम भाव; चमक, दमक।
अठसठक जलक (तद्) सं.—नहाना, स्नान।
अठसठक जलकने (क) अ.—दे. अठसठक।
अठसठक जलक, अठसठक जलक (क) सं.—
ऊपरी वस्त्र, आच्छादन।
अठसठक जलक, अठसठक जलक (क) सं.—पंखा,
व्यंजन; व्यंजनधारी।
अठसठक जलक (तद्) सं.—दे. अठसठक।
अठसठक जलक (क) सं.—दे. अठसठक।
अठसठक जलक (क) सं.—निर्बल पुरुष,
बेकार मनुष्य।
अठसठक जलक (क) सं.—बाँस का डंडा; ईख।
अठसठक जांगल (सम्) वि.—देहाती; रम्य,
सुन्दर, नयनरंजन; जंगली, बहशी, बर्बर;
उजाड़; सूना।
अठसठक जांगलिक, अठसठक जांगलिक
(सम्) सं.—साँप पकड़नेवाला, विषविद्या
जाननेवाला; जादूगर।
अठसठक जांगल (सम्) सं.—विषविद्या;
जादूगरी।
अठसठक जांगिक (सम्) सं.—धावक, हल-
कार; ऊँट।
अठसठक जाड़े (अ. दे.) सं.—झंडा (हिं.);
पताका।
अठसठक जांब, अठसठक जांबु (अ. दे.) सं.—
(‘जाम’—फ़ारसी से)—प्याला, बिना
हथे या हतवड का पानी पीने का प्याला।
अठसठक जांबव (सम्) सं.—जंबू वृक्ष से
संबंधित, जंबूफल; = अठसठक जांबवन
जांबवान्, रीछों के राजा का नाम जिसने
श्रीराम की सहायता की थी।
अठसठक जांबवति (सम्) सं.—जांबवान्
की पुत्री।—रमण रमण (सम्) सं.—
श्रीकृष्ण।
अठसठक जांबनद (सम्) सं.—सोना;
सोने का।

(१) अठसठक जाग (क) सं.—हरा रंग।
(२) अठसठक जाग (तद्) सं.—याग; (तत्);
यज्ञ
(३) अठसठक जाग (अ. दे.) सं.—जगह (फ़ारसी);
स्थान।
अठसठक जागटे, अठसठक जागटे, अठसठक जेगटे
(क) सं.—घड़ियाल, घंटा, गोलाकार वाद्य
विशेष।
अठसठक जागर (सम्) सं.—जागृति, कवच,
बस्तर।
अठसठक जागरण, अठसठक जागरणे (सम्)
सं.—जागे रहना, जागृत रहना, रतजगा,
अठसठक जागरण द्वादशि पारणे—एकादशी के दिन
रतजगा और द्वादशी के दिन पारणा
(कह.)।
अठसठक जागरुक्ते (सम्) सं.—जागृति,
सावधानी, सावधान रहना।
अठसठक जागिसु (क) कि.—(शरीर को पूर्ण
रूप से) ऊपर उठा।
अठसठक जागु (क) सं.—मीन, चुप्पी।
अठसठक जागुड (सम्) सं.—केसर, जाफ़ान।
अठसठक जागृत (सम्) वि.—जागते हुए,
सावधान।
अठसठक जाग्रत (म्) वि.—सजग, साव-
धान। अठसठक जाग्रते (सम्) सं.—साव-
धानी।
अठसठक जाजि (तद्) सं.—जाति: (तत्); जाय-
फल।—अठसठक पत्रे = अठसठक जापत्रे—
जायपत्र।
(१) अठसठक जाजु (क) सं.—लाल रंग; कापाय
वर्ण।
(२) अठसठक जाजु (अ. दे.) सं.—जहाज़।
(तद्) सं.—काँच।
अठसठक जाड (क) सं.—लिंगायत जाति का
जुलाहा; मकड़ी। अठसठक जाडगिति—
लिंगायत जाति के जुलाहे की स्त्री। अठसठक
जाडति = अठसठक।
अठसठक जाडणे अठसठक झाडेण (अ. दे.) सं.—
झाड़ना (हिं.) फेंकना, कपड़े झाड़ना।

अठसठक जाडमालि (अ. दे.) सं.—(संभ-
वत 'झाड़' से)—मेहतर, भंगी।
अठसठक जाडि (क) सं.—बैठने का आसन
विशेष; सुराही; समूह; बाढधारा;
कंवल। वि.—घना, बहुत, अतिशय।
अठसठक जाडिके (क) सं.—जुलाहे का व्यव-
साय; जुलाहों का समूह।
अठसठक जाडिसु (अ. दे.) कि.—झाड़; झाड़
दे झाड़ कर साफ कर, धूल निकाल;
फेंक, हटा; फुर्तीला कर, भागे बढ़ा;
(भाग जलाते समय) पंखा झल।
अठसठक जाडु, अठसठक जाड़े (क) सं.—पद-चिह्न
या चरण-चिह्न; पहिये आदि का चिह्न; सूक्ष्म-
सूचना, सूक्ष्मरूप से पता लगाना, संकेत।
अठसठक जाड्य (सम्) सं.—ठिठुरन, शीतलता;
सुस्ती, अकर्मण्यता; मूर्खता, जड़ता।
अठसठक जाण (तद्) सं.—ज्ञान (तत्)।
अठसठक जाण (तद्) वि.—जाननेवाला, समझ-
दार, बुद्धिमान, प्रवीण, चतुर।—अठसठक तन,
(तद्) सं.—बुद्धिमानी, समझदारी, चतु-
राई।
अठसठक जाणायिल, अठसठक जाणायल
(तद्) सं.—दे. अठसठक।
अठसठक जाणमे, अठसठक जाणमे, अठसठक
जाणवे, अठसठक जाणमे (तद्) सं.—चतुराई,
बुद्धिमानी, निपुणता, समझदारी।
अठसठक जाणे (तद्) सं.—समझदार या चतुर
स्त्री।
अठसठक जात (सम्) कृ.—उत्पन्न, पैदा हुआ,
निकला हुआ, कारणभूत; द्रवित, दुःखी।
अठसठक जातक (सम्) सं.—जातक, जन्म-
कुण्डली।
अठसठक जातकर्म (सम्) सं.—संतान के
जन्म के समय किया जानेवाला संस्कार
विशेष।
अठसठक जातवेद (सम्) सं.—अग्नि. भाग;
वृत्तविशेष का नाम।
अठसठक जातसूक्त (सम्) सं.—किसी
के जन्म के कारण लगनेवाला सूक्त, जात-
शौच।

झा०-जाताबाकि

झा०-जाताबाकि (अ. दे.) सं. — शेष भाग, घटाने के बाद बचनेवाला अंश ।
 झा० जाति (सम्) सं. — उत्पत्ति, जन्म ; जन्म से निश्चित होनेवाली जात ; वर्ण, जाति ; वंश, कुल ; श्रेणी, कक्षा ; किसी वस्तु या जीव की पहचान का चिह्न ; जायफल ; अग्निकुण्ड ; सप्त स्वर ; छंद विशेष ; कुसुम, पुष्प ; समूह ; अठारह की संख्या ; आँवले का पौधा ; इलेग्मातक ; चमेली ।
 झा०-जातिगे (अ. दे.) सं. — जातिगे मेदवादरु नीतिगे मेदविह जाति के व्यवहार में भले ही मेद हो, पर नीति में नहीं ।
 झा०-जातिगे (अ. दे.) सं. — जातिगे मेदवादरु नीति तप्पवारदु — भले ही जाति-अष्ट हो जाय पर नीति-अष्ट नहीं होना चाहिए (कह.) ।
 झा०-जातिकोश (सम्) सं. — जायफल, जावित्री ।
 झा०-जातिगादे (सम्) सं. — एक छंद विशेष ।
 झा०-जातिपत्रि (सम्) सं. — जायफल का छिलका ।
 झा०-जातिफल (सम्) सं. — जायफल ।
 झा०-जातीय (सम्) वि. — जाति संबंधी, जातीय ; राष्ट्रीय ।
 झा०-जात्रे (तद्) सं. — यात्रा (तत्) मेला उत्सव ।
 झा०-जादि (तद्) सं. — जाति : (तत्) ।
 झा०-जादु (क) सं. — लाल रंग ; कापाय वर्ण ।
 झा०-जादूगिरि (अ. दे.) सं. — जादूगरी (फारसी) ।
 झा०-जानकि, झा०-जानकी (सम्) सं. — सीता, जनक की पुत्री । — झा० जानि (सम्) सं. — राम । — झा० पति, रामण (सम्) सं. — राम ।
 झा०-जानपद (सम्) वि. — लोक का, ग्राम का जनता का । — झा०-हाडुगलु = लोकगीत ।
 (१) झा० जानि (क) सं. — एक छोटा पौधा ।

(२) झा० जानि (सम्) सं. — पत्नी ।
 झा० जानु (सम्) सं. — घुटना ।
 झा० जापु (क) सं. — लंबे डग की गणना ; एक प्रकार का ताल ।
 झा०-जावाल (सम्) सं. — बकरा ; एक ऋषि का नाम ।
 झा०-जाविता (अ. दे.) सं. — जावता (अरबी) ; नियम, कानून, व्यवस्था ; सूची, विवरण-पत्र ।
 झा०-जावु (अ. दे.) सं. — जवाब ; उत्तर, लिखा-पढ़ी ।
 झा०-जामदग्नि (सम्) सं. — एक ऋषि का नाम ।
 झा०-जामदग्न्य (सम्) सं. — परशुराम ।
 झा०-जामदार (अ. दे.) सं. — ('जमा-दार' — (अरबी, फारसी) — खजाने का अफसर ।
 झा०-जामा (सम्) सं. — लड़की ; बहु, पुत्रवधू । — झा० वृ (सम्) सं. — प्रभु, स्वामी : दामाद ; सूरज-मुखी ।
 झा०-जामीन, झा०-जामिन (अ. दे.) सं. — जामिन (अरबी) — जिम्मा, उत्तरदायित्व । — झा०-दार (अ. दे.) सं. — जिम्मा लेने-वाला, उत्तरदायी ।
 झा०-जामेय (सम्) सं. — बहन का पुत्र, भानजा ।
 झा०-जायक (क) सं. — पीला चंदन, एक प्रकार की लकड़ी ।
 झा०-जायमान (तद्) सं. — स्वभाव प्रकृति, जीवन ।
 झा०-जायापति (सम्) सं. — पति-पत्नी ।
 झा०-जायिल (क) सं. — कुत्ता ।
 झा०-जायु (सम्) सं. — दुवाई ; वैद्य ; झा०-जाये (सम्) सं. — पत्नी, स्त्री ।
 झा०-जार (सम्) सं. — परस्त्री से प्रेम करने-वाला, जार, उपपति । — झा० ज (सम्) सं. — उपपति से उत्पन्न बेटा । — झा० त्व (सम्) सं. — व्यवहार । — झा० देव

(सम्) सं. — कृष्ण । — झा०-पुरुष (सम्) सं. — जार । — झा० स्त्री (सम्) सं. — जारिणी ।
 झा० जारि (अ. दे.) सं. — जारी करना, शासन व्यवस्था, शासन पत्र ।
 झा०-जारिगे (क) सं. = झा०-मार जारिगे मर — एक वृक्ष जिसके फल खट्टे होते हैं (The Mysore Gamboge tree) ।
 झा०-जारे (सम्) सं. — जारिणी, छिनाल धौरत ।
 झा०-जारिके (क) सं. — फिसलतन ।
 झा०-जारिसु (क) क्रि. — फिसला ; गिरा, निकलने दे ।
 झा०-जारु (क) क्रि. — फिसल, सरक ; पैर फिसल ; दूर हो ; संकुचित हो ; संकोच कर, वापस ले ; अदृश्य हो ; जल्दी जा, हट जा, गिर ; टपक, स्रवित हो, बह ; शिथिल हो, ढीला पड़ । सं. — वह स्थान जहाँ फिसलने हो । — झा०-विके (क) सं. — फिसलना ।
 झा०-जाल (सम्) सं. — जाल, फंदा ; मकड़ी का जाल ; कवच ; खिड़की ; गर्व, घमंड ; संग्रह, समुदाय, संख्या ; जादू ; माया ; भ्रम ; आवरण ; अनखिला फूल ; अलंकार, सिंगार ; इंद्रिय ; आकाश, गगन ; कदंब वृक्ष । झा०-जाल (तद्) ।
 झा०-जालक (सम्) सं. — दे. झा० १, २, ४, ८ और ९ ; घोंसला ; चूड़ामणि, आभूषण विशेष ।
 झा०-जालकरण (सम्) सं. — मछली पकड़ने की क्रिया ; संग्रह करने की क्रिया ।
 झा०-जालगाति, झा०-जालगति (सम्) सं. — धोखेबाज़ स्त्री ।
 झा०-जालगार, झा०-जालगार (सम्) सं. — धोखेबाज़ पुरुष ।
 झा०-जालधर (सम्) सं. — एक देश का नाम ।
 झा०-जालरि (सम्) सं. — जाल का काम ; झालर ।

अ०७०० जालारि (क) सं. — एक प्रकार का लाख का पेड़ ।
 अ०७०० जालि (क) सं. — बबूल का वृक्ष ; चर्चिडे की बेल ; एक प्रकार का कांटेदार पौधा ।
 अ०७०० जालिक (सम्) सं. — मछुआ ; मकड़ी ; बहेलिया, चिड़ीमार ; जादूगर ; सूबेदार ; बदमाश, गुंडा ;
 अ०७०० जालिके (सम्) सं. — जाल ; कवच ; मकड़ी ; जौक ; विधवा ; धूधट ; लोहा ; ऊनी वस्त्र ।
 अ०७०० जालिनि (सम्) सं. — फलिनी नामक पौधा ।
 अ०७०० जालिसु (सम्) क्रि. — हिला ; चावल को पानी में डालकर कंकड़ निकाल, साफ़ कर ।
 अ०७०० जाले (क) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जालम (सम्) सं. — बदमाश, गुंडा, नीच ; मूर्ख ।
 अ०७०० जाव (तद्) सं. — यामः (तत्) प्रहर, याम ।
 अ०७०० जावक (अ. दे.) सं. — महावर ; मुंडन के पहले के बच्चे के बाल ।
 अ०७०० जावडि (तद्) सं. — एक प्रकार की फूहड़ कविता ।
 अ०७०० जावळ (तद्) वि. — सामास्य (तत्) ; साधारण, मामूली ।
 अ०७०० जावु (तद्) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जास्ति (अ. दे.) अ. — ज्यादा, अधिक, बहुत । सं. — ज्यादाती, बलात्कार ।
 अ०७०० जाहक (सम्) सं. — जौक ; खाट ।
 अ०७०० जाहागिरि (अ. दे.) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जाहीर (अ. दे.) वि. — जाहिर (अरबी) ; प्रकट, व्यक्त, प्रकाशित, प्रसिद्ध ।
 अ०७०० जाह्वि (सम्) सं. — जान्हवी, गंगा ।
 अ०७०० जालक (तद्) सं. — गवाक्ष, खिड़की ;
 अ०७०० जालवणे (तद्) सं. — धोखा, ठगना ।
 अ०७०० जालिसु (तद्) क्रि. — दे. अ०७०० ।

अ०७०० जालु (क) सं. — थोथा या निस्सार पदार्थ ।
 अ०७०० जालिगे (क) सं. — कपड़ा, वस्त्र, पोशाक ।
 अ०७०० जिके (क) सं. — मृग, कुरंग, हिरन ।
 अ०७०० जिगि (क) सं. — उन्मत्तता, मद ; मजीठा कालमेशी ।
 अ०७०० जिगटु (क) क्रि. — कचोटनी काट, नोच, नख से आघात कर । सं. — चिपचिपा, गोंद, स्निग्धता ।
 अ०७०० जिगटे (क) सं. दे. — अ०७०० (सं.) ।
 अ०७०० जिगणि, अ०७०० जिगणे, अ०७०० जिगलि, अ०७०० जिगले, अ०७०० जिगुलि, अ०७०० जिगुले (तद्) सं. — जौक, रक्तप ; जल्लाका (तद्) ।
 अ०७०० जिगलु, अ०७०० जिगुलु (क) सं. — छोटा नाला ।
 अ०७०० जिगि (क) क्रि. — उछल, कूद, छल्लांग मार ; चवा । सं. — चिपचिपा, गोंद ; कपास के पौधे को लगनेवाला रोग विशेष, मुरचा ।
 अ०७०० जिगिल् (क) वि. — जो चिपचिपा हो, गोंददार, स्निग्ध, लगनेवाला । क्रि. — क्लेश हो दुःख हो ।
 अ०७०० जिगीषु (सम्) वि. — विजय पाने का अभिलाषी ।
 अ०७०० जिगीषे (सम्) सं. — विजय पाने की अभिलाषा ।
 अ०७०० जिगुप्से सं. — जुगुप्सा (तत्) ।
 अ०७०० जिगुलु (क) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जिगुले (तद्) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जिगुलु (सम्) वि. — भूखा ।
 अ०७०० जिगुले (सम्) सं. — भूख ।
 अ०७०० जिगुलु (सम्) सं. — दुश्मन, शत्रु, वैरी ।
 अ०७०० जिट्टि (क) सं. — टिट्ठिभ, टिट्ठिरी ; झींगुर, शलभ, पतंग ; सुभर-बाड़ा, गंदा स्थान ।
 अ०७०० जिडि (क) सं. — अल्पवृष्टि, वर्षा की मंद गति ।
 अ०७०० जिड्डु (क) सं. — तलछट ; वह पदार्थ जो

स्निग्ध हो, स्निग्धता, चिपचिपा ; धब्बा, चित्ती ; दुर्गंधता ।
 अ०७०० जिणगु, अ०७०० जिणुगु (क) सं. — सूक्ष्मता, महीन होना ।
 अ०७०० जितकाम (सम्) सं. — यति, मुनि ; बुद्ध, अर्हत्, शिव ।
 अ०७०० जितकामे (सम्) सं. — पतिव्रता स्त्री ।
 अ०७०० जितशत्रु (सम्) सं. — वह जिसने शत्रु को जीत लिया हो ; अजितसेन के पुत्र का नाम ।
 अ०७०० जिताक्ष, अ०७०० जितेंद्रिय (सम्) सं. — वह जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो ।
 अ०७०० जित्वर (सम्) वि. — जयशील, विजयी ।
 (१) अ०७०० जिन (क) वि. — छोटा, लघु ।
 (२) अ०७०० जिन (सम्) सं. — बौद्ध या जैन साधु ; गुरु ; विष्णु ; जैनी अर्हत्तों की उपाधि ।
 अ०७०० जिनगु, अ०७०० जिनुगु (क) सं. — दे. अ०७०० ।
 अ०७०० जिनप, अ०७०० जिनपति (सम्) सं. — अर्हत् ।
 अ०७०० जिनप्रबुद्धि (सम्) सं. — जैन दर्शन ।
 अ०७०० जिनसि दिनसि (क) सं. — अनाज, धान्य ।
 अ०७०० जिनि (क) क्रि. — दे. अ०७०० (१) ।
 अ०७०० जिनिगिसु (क) क्रि. — पिघला, द्रवित होने ; निर्बल कर, अधिकार की गति क्षीण कर ।
 अ०७०० जिनुगु (क) सं. — दे. अ०७०० क्रि. — अल्पवृष्टि हो, धीरे-धीरे वर्षा हो, वर्षा की बूंदें पड़ें, मर्मर ध्वनि हो ; पिघल, द्रवित हो ।
 अ०७०० जिनुगु (क) क्रि. — दे. अ०७०० क्रि. ।
 अ०७०० जिपण अ०७०० जिपुण (तद्) सं. — कृपणः (तत्) ; जूस, लोभी । अ०७०० जिपुणि — स्त्री. लिं. ।

जीर्ण हो, पुराना हो, घिस जा ; पच,
हजम हो ।

४९७ जीर्ण (सम्) सं. -- पाचन शक्ति ।

જીવ (સમ્) સં. — જીના, અસ્તિત્વ

स्थिर रखना ; प्राण ; अंतरात्मा, जीवात्मा ;

जीवन ; आजीविका, पेशा ; मरुतों का

नाम ; बृहस्पति ; कर्ण का नाम ; पुण्य ;

नक्षत्र : वाणी, वान ; पानी ; घो.। ;

धनुष की डोरी । —७३३ एतु (क) क्रि.

जीवन - रक्षा कर । — कौडु (क)

क्रि.—जीवन, प्राण दो ।— ॐ तेगे (क)

क्रि. — प्राण ले; मार डाल; हिंसा कर,

सता ।

अष्टौ जीवक (सम्) सं.—सेवक, नौकर ;

जन सन्यासी ; एक दवाई का पोधा ;

सपरा; सुदुखार ।

६१२०४ जीविकल (सम्) स. — जविन का

चमक-झमक या प्रकाश, जीवित का चिह्न ।

ॐ॥ जीवग (तद्) स.—जीवकः (तत्) ;
मे ॐ॥

ಶಿವಮೊಗ್ಗ (11) : 11-11-2023

निम्नलिखित वाक्यों में से सही वाक्य चुनिए।

જીવન જીવન (મમ) સં — જીવન લિંગી .

पानी : पेक्षा, व्यवसाय । — वाद वाद

(सम) सं.—बादल ।

જીવનંદી જીવનિધિ (સમ) મં. — જલગણિ.

समस्त ।

ಜೀವನೀಯ ಜೀವನೀಯ (ಸಮ) ಸಂ. — ಪಾನಿ.

जल ।

ಜೀವಂತ ಜೀವಂತ (ತದ) ವಿ.—ಜೀವತ್ (ತತ್) ;

जीवितं, जीनेवाला, प्राणधारी ।

ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ ಜೀವನ್ಮುಕ್ತಿ (ಸಮ) ಸಂ. — ಜನ್ಮ

लेने से मुक्ति ।

ಜೀವಮಾನ (ಸಮ) ಸಂ.—ಜೀವನ ಕೀ

अवधि, जीवन का समय, जीवन ; जीवन-

काल का भरण-पोषण-व्यय ।

२१७ जीवि (सम्) सं.—प्राणधारी या जीव-

ધારી ।

३१२४ जीविके (सम्) सं.—जीवन का आधार,

रोजगारी, व्यवसाय ।

जिनेड जीवित (सम्) सं.—जीवन, अस्तित्व ; जीने का आधार, पेशा ; मजदूरी आदि ।
जिनेड जीवितेश, जिनेड जीवितेश्वर (सम्) सं.—जीवन का स्वामी, प्रेमी, पति ।
जिनेड जीविसु (सम्) क्रि.—जिओ, जीवित रहो । अस्तित्व में रहो ।— ३३ विके (सम्) सं.—जीना ।
जिनेड जीवे (सम्) सं.—जीना ; धनुष की डोर ; पौधा विशेष ।
जिनेड जुगु (क) सं.—नारियल की जटा या बाल ; रोम जो शरीर के गुहांग में हो ; दे. जिनेड ।
जिनेड जुजु (क) सं.—मुर्गे की कलगी, लाल रंग ; सूक्ष्मता, महीन या पतला होना ।
जिनेड जुजुरु (क) वि.—धुंधराले । — कूदल कूदल = धुंधराले बाल ।
जिनेड जुजुरि (अ. दे.) सं.—बड़ा हुका ।
जिनेड जुजु (क) सं.—पैरों में चैतन्यहीनता (Numbness) ।
जिनेड जुकायिसु (अ. दे.) क्रि.—झुका (हिं.) ।
जिनेड जुग (तद्) सं.—युगं (तत्), युग ।
जिनेड जुगुति (तद्) सं.—युक्ति (तत्) ; उपाय ।
जिनेड जुगुप्ते (सम्) सं.—अरुचि, घृणा, तिरस्कार ।
जिनेड जुट, जिनेड जुट्ट (क) सं.—[‘चूडा’ —तत्?]—शिखा, चूडा, चोटि, केश ।
जिनेड जुट्टि (क) सं.—एक प्रकार का कवृत्तर ।
जिनेड जुट्टु (अ. दे.) सं.—झुरमुट ।
जिनेड जुगुगिसु (क) क्रि.—सिकुड़ा, संकुचित कर ।
जिनेड जुगुगु (क) क्रि.—सिकुड़, संकुचित हो ; घट, न्यून हो, कम हो, खो । सं—सिकुड़न, संकुचितता ; शरीर की शिथिलता ।
जिनेड जुद (तत्) सं.—युद्ध (तत्) ; लड़ाई ।
जिनेड जुवर, जिनेड जुवरु (क) सं.—आम का रेशापन ।

जिनेड जुम्. जिनेड जुनु, जिनेड जुम, जिनेड जुमु, जिनेड जुम्, जिनेड जुम्, जिनेड जुम् (क) सं.—दे. जिनेड ।
जिनेड जुमकि (अ. दे.) सं.—झुमकी (हिं.) ।
जिनेड जुम्मे (क) अ.—जल्दी, झट, फौरन ।
जिनेड जुमान, जिनेड जुलमान, जिनेड जुलमाना, जिनेड जुलमाने (अ. दे.) सं.—जुमाना (फारसी) ; अर्थदंड ।
जिनेड जुलाबु (अ. दे.) सं.—जुलाब (अरबी) ; दस्त लानेवाली दवा ।
जिनेड जुलायि (अ. दे.) सं.—जुलाहा ।
जिनेड जुवु (क) सं.—चलने के कारण पैरों में होनेवाले दुःख या पीडा को सूचित करने शब्द ।
जिनेड जुगलिसु (क) क्रि.—ऊँघ ; झूम ।
जिनेड जुगु (क) क्रि.—झूम, धीरे-धीरे हिल ।
जिनेड जुज, जिनेड जुजु, जिनेड जुदु (तद्) सं.—द्यतं (तत्) जुआ ।—गार गार (तद्) सं.—जुआखोर ।
जिनेड जुट (सम्) सं.—शिवजी की जटा । (अ. दे.) सं.—झूट ; बच्चों का शारीरिक बल ।
जिनेड जूति (सम्) सं.—वेग, रफ्तार । (अ. दे.) सं.—जूता, जूती ।
जिनेड जूदाकि, जिनेड जुदुंगार (तद्) सं.—जुआ खेलनेवाला ।
जिनेड जुपर, जिनेड जुपरु (क) सं.—अल्पवृष्टि, तुषार वर्षा ।
जिनेड जूति (सम्) सं.—ज्वर, बुखार ।
जिनेड जुलु (क) सं.—पशुओं (कुत्ते, घोड़े आदि) की गर्दन पर के लंबे बाल ।
जिनेड जुलय, जिनेड जुलेय (क) सं.—तिलक, पुंद् ।
जिनेड जुलि (क) सं.—बर्तन की सँद ।
जिनेड जुंभ, जिनेड जुंभण जुंभे जुंभे (सम्) सं.—जंभाई, जम्हाई ।
जिनेड जुंकेणे (क) सं.—दे. जुंके ।
जिनेड जुंकेसु (क) क्रि.—दे. जुंकेसु ।

जिनेड जुंगि (अ. दे.) सं.—युद्ध से संबंधित, जंगी ।
जिनेड जुट्टि (क) सं.—दे. जुट्टु ।
जिनेड जुडे (तद्) सं.—जटा (तत्) ; बेणी ।
जिनेड जेरि. जिनेड जुंके जेरियुविके (क) सं.—निंदा, अनादर, अपमान, गाली देना, तिरस्कार । जिनेड जेरि—क्रि. रु. ।
जिनेड जुं, जिनेड जुं (क) सं.—शहद, मधु ।
जिनेड जुंकेसु जेंकरिसु (क) क्रि.—झंकार कर, प्रशंसा कर, स्तुति कर ।
जिनेड जुंकेसु जेंकार (क) सं.—झंकार ; प्रशंसा ; ओंकार ।
जिनेड जुंके (क) सं.—दे. जुंके (२) ।
जिनेड जुंके (क) सं.—एक प्रकार की मिट्टी ।
जिनेड जुंके, जिनेड जुंके (क) सं.—मधु, शहद ; मधुमक्खी ।—जुंके नोण (क) सं.—मधुमक्खी ।—जुंके पुट्टि, जुंके हुट्टि, जुंके हुट्ट, जुंके हुट्टु, जुंके गूडु (क) सं.—छत्ता ।—जुंके तुप्प (क) सं.—मधु, शहद ।—जुंके मेण (क) सं.—लाख ।—जुंके हुल्ल, जुंके हुल्ल (क) सं.—मधुमक्खी । जिनेड जुंके कंजुवागं जुंके जुंके जेनु हुल्ल कञ्जुवागं जुंके जुंके विट्टीते ?—जब मधुमक्खी काटने लगे तब मत काटो कहने से वह छोड़ देगी क्या ? (कह.) ।
जिनेड जुंके (क) सं.—एक वृक्ष का नाम (The tree Adenanthra aculeta) ।
जिनेड जुंके (अ. दे.)—जेब (अरबी) ।
जिनेड जुंके (क) सं.—दीवार ।
जिनेड जुंके जेवणिगे (क) सं.—माधुर्य, मीठापन, मनोहरता ।
जिनेड जुंके (तद्) सं.—जेष्टा (तत्) ।
जिनेड जुंके (सम्) वि.—विजयी, जयद्रीढ ।—रथ (सम्) सं.—विजयरथ ।—युंके यात्रे (सम्) सं.—विजययात्रा ।
जिनेड जुंके (सम्) सं.—जैनी, जैन मतावलंबी ।—जुंके आगम (सम्) सं.—जैनों का आगम ।

झुंझुनै जैमिनि

झुंझुनै जैमिनि (सम्) सं. — एक ऋषि का नाम। — झुंझुनै भारत (सम्) सं. — कन्नड जैमिनि भारत के कवि लक्ष्मीश हैं।

झुंझु जैसु (तद्) क्रि. — जीत, विजय पा।
झुंझु जोंगुलि, झुंझु जोंगुलि (क) सं. — मूर्छा, अचेतनता, बेहोशी।

झुंझु जोंजाट (अ. दे.) सं. — झंझट।

झुंझु जोंडिग (क) सं. — झींगुर।

झुंझु जोंडु (क) सं. — पील-घास, निस्सार पदार्थ, हल्का पदार्थ; सिर का पिछला भाग।

झुंझु जोंप (क) सं. — गुच्छा, समूह।

झुंझु जोंपिसु (क) क्रि. — कँपा, थर-थरा; काँप; चल पड़, निकल, उठ; मदमत्त हो, नशे में आ; चेतनाहीन हो; मूर्ख बन।

झुंझु जोंपु (क) सं. — चैतन्यहीनता, अचेतनता, मूर्छा, जड़ता।

झुंझु जोंपे (क) सं. — दे. झुंझु.

झुंझु जोंतिगे. झुंझु जोंतिगे (तद्) सं. दे. झुंझु.

(१) झुंझु जोंतु (क) सं. — दे. झुंझु; समूह; कतार, पंक्ति।

(२) झुंझु जोंतु (क) सं. — धोखा, प्रवचना। झुंझु जोंतिसु (क) क्रि. — धोखा दे प्रवचना कर।

झुंझु जोंत्र (तद्) सं. — ज्योत्स्ना (तत्)।

झुंझु जोंन्ने, झुंझु दोन्ने (क) सं. — दोना।

झुंझु जोंमने (क) अ. — भनभनाता हुआ।

झुंझु जोंम्सु (क) सं. — दे. झुंझु; पैरों में (रक्तप्रवाह रुक जाने से) अचेतनता।

झुंझु जोंल्य, झुंझु जोंलेह (क) सं. — कबरी का अग्रभाग, जूड़े की नोक।

झुंझु जोंल्लु (क) सं. — लार।

झुंझु जोंल्लु (क) सं. — दे. झुंझु.

झुंझु जो (क) सं. — 'जो जो' शब्द।

झुंझु जोंगक (क?) सं. — बोल, मुसव्वरा।

झुंझु जोंकाले, झुंझु जोंकालि (क) सं. — हिंडोला, झूला।

झुंझु जोंकु (अ. दे.) सं. — (शौक अरबी)

— डील-डौल, वस्त्रादि में ठाट-बाट। — गार गार = शौकीन आदमी, ठाट-बाट से रहनेवाला। = गार गारि — स्त्री. लिं।

झुंझु जोंके (क) सं. — सावधानी, जागरुकता, होशियारी; सुंदरता, प्रौढिमा, मनोहरता, लालित्य। झुंझु जोंके = सावधान रहो।

झुंझु जोंग (तद्) सं. — योगः (तत्); योगः; एक प्रकार की नाव।

झुंझु जोंगति (तद्) सं. — योगिनी (तत्); भिक्षुणी।

झुंझु जोंगयिसु, झुंझु जोंगिसु (तद्) सं. — मिल. जुड़ जा; तैयार कर।

झुंझु जोंगरिसु (क) क्रि. — बेहोश हो, टिडुर, सन्नह जा।

झुंझु जोंगल, झुंझु जोंगुल (क) सं. — लोरी।

झुंझु जोंगु (क) सं. — झरना, सोता; जल-प्रपात; पैरों की निश्चिष्टता या सुन्न होना।

झुंझु जोंगुल (क) सं. — दे. झुंझु.

झुंझु जोंड (अ. दे.) सं. — व्यभिचारी, लंपट।

झुंझु जोंडणि. झुंझु जोंडणे झुंझु जोंडणि (अ. दे.) सं. — गणना-गिनती, मिलाना; तैयार करना।

झुंझु जोंडि (अ. दे.) सं. — जोड़ी, जोड़ा।

झुंझु जोंडिके (अ. दे.) सं. — दे. झुंझु.

झुंझु जोंडिसु — क्रि. रू.।

झुंझु जोंडु (अ. दे.) सं. — मिलन, संगम;

साहचर्य, संगति; जोड़ा, जोड़ी, समानता, एकरूपता।

झुंझु जोंडे (अ. दे.) सं. — वेइया, रंही, व्यभिचारिणी।

झुंझु जोंति (तद्) सं. — ज्योति (तत्); प्रकाश।

झुंझु जोंत्र, झुंझु दोत्र, झुंझु दोत्र (अ. दे.) सं. — धोती।

झुंझु जोंनि (क) सं. — लसदा, होना, गलना (जैसे गुड़)।

झुंझु जोंनिग (क) सं. — शूद्रों की एक उपजाति।

झुंझु जोंपान (क?) सं. — सावधान रहना, रक्षा करने की सावधानी, रक्षा करना।

झुंझु जोंब, झुंझु, झुंझु सुंब (क) सं. — सुस्त या बालसी पुरुष।

झुंझु जोंमाले (क) सं. — लटकनेवाली माली।

झुंझु जोंमु (क) सं. — दे. झुंझु ३.

झुंझु जोंयिस, झुंझु जोंयिष, झुंझु जोंयि (तद्) सं. — ज्योतिषी (तत्)।

झुंझु जोंरिसु (क) क्रि. — बहा, खचित होने दे।

झुंझु जोंरु (क) क्रि. — द्रवित हो, चू, टपक, बह। सं. — बहना, टपकना, टपकाव; दीवारों पर अलंकार के लिए खींची जानेवाली लाल रेखा।

झुंझु जोंरु (अ. दे.) सं. — बल, शक्ति, जलद्बाजी, शीघ्रता, हिंसा, बलात्कार, दबाव, अनिवार्यता, बाध्यता।

झुंझु जोंल, झुंझु जोंलु (क) क्रि. — लटक, हिल, हिल-डुल, डोलायमान हो, इधर-उधर जा; झूल; शिथिल हो, ढीला हो; लटका; ढीला कर। सं. — लटकना, ढीला करना, ढिलाई।

(१) झुंझु जोंलि (तमिळ्) सं. — काम, व्यवहार, संबंध।

(२) झुंझु जोंलि, झुंझु जोंले (अ. दे.) सं. — लटकना, इधर-उधर हिलना; विलंब, देर।

झुंझु जोंहर, झुंझु जोंहार (अ. दे.) सं. — जुहार (हिं.); बड़ों द्वारा छोटों का अभिवादन; त्योहार, उत्सव, विनोद।

झुंझु जोंक (तद्) सं. — यवः (तत्); जौ, ज्वार।

झुंझु जोंकिगे (अ. दे.) सं. — झोली (हिं.)।

झुंझु (सम्) सं. — बुद्धिमान; विद्वान; बुधग्रह; मंगलग्रह; ब्रह्मा।

झुंझु ज्ञापित, झुंझु ज्ञप्त (सम्) वि. — विदित, जाता हुआ।

ਫੌਜ ਫੌਜ (ਕ) ਸੰ.—ਦੇ. ਫੌਜ.

डक्के डक्के (क) सं. - पीकदान ।

डक्के डक्के डक्के (क) सं. — औत्सुक्य, हालसा ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (अ. दे.) सं. — छोटा होल ।

डक्के डक्के (तद्) सं. — डमरुक (तत्) ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — मोटा बाँस ; कपाल, खोपड़ी ।

डक्के डक्के (अ. दे.) सं. — दे. डक्के. (तद्) सं. — जयड़ा ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (अ. दे.) सं. — डील-डौल, आकार, रूप ; डंग, विधान ; चिह्न, निशान ; अनुमित कर या लगान, अनुमित उत्पादन ; आडंबरपूर्ण व्यवहार, थोथा व्यवहार ।

डक्के डक्के (तत्) सं. — दांभि (तत्) ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — राक्षसी की तलवार. काली की एक अनुचरी ।

डक्के डक्के (क) सं. — धूंगा, निहाई ।

डक्के डक्के (तद्) सं. — दाडिम, (तद्), अनार का पेड़

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — लाठी दण्ड, सोंटा ।

डक्के डक्के (तद्) सं. — दामन् (तत्) ; स्त्रियों की मेखला, कमरबंद ।

डक्के डक्के (तद्) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — चमक, दमक, प्रकाश. सुंदरता. मनोहरता ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — अच्छा लग, चमक, प्रकाशित हो, मनोहर हो ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (तद्) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के ; हथर-उधर हिल (पंखे के जैसे) ।

डक्के डक्के (सम्) सं. — झगड़ा ; बच्चा ; भंडा ; गेंद, गोला ।

डक्के डक्के (सम्) सं. बच्चा ; मूर्ख । डक्के डक्के = बच्ची ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — टक्कर. सिर की टक्कर ।

डक्के डक्के (क) सं. — टक्कर ; एक प्रकार का डोल । — डक्के कोडु (क) सं. — टक्कर लगा. टक्कर मार ।

डक्के डक्के (क) सं. — योनि ।

डक्के डक्के (सम्) सं. — एक क्रूर राजा का नाम जो कृष्ण से मारा गया । — डक्के मर्दन (सम्) सं. — श्रीकृष्ण ।

डक्के डक्के (क) सं. — मन की व्याकुलता, अधैर्य, हिम्मत हारना, भय ; खोखलापन, सारहीनता ।

डक्के डक्के (क) सं. — व्यग्र हो, व्याकुल हो, हिम्मत हार ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के, डक्के डक्के (सम्) सं. — विपहीन एक साँप ।

डक्के डक्के (क) सं. — ऊँट का कूबड़. ऊँट का झिझा ; गोलाई, वक्रता ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — साँड और बैल का डकारना ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — डुक, सिर नवा, नम्रतापूर्वक पाँव पड़ ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — ध्वजस्तंभ, झण्डे का डंडा, किले का बुर्ज ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — टाँका लगाना, दृढ़ता से लगे रहना. निकट संबंध ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — विकल हो, काँप, छटपटा, थरथरा ।

(१) डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के.

(२) डक्के डक्के (अ. दे. ?) सं. — चोट (मुक्का), धक्का ।

डक्के डक्के (क) सं. — डकार ले ।

डक्के डक्के (क) सं. — एक प्रकार का वाज़ ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (अ. दे.) सं. — डेरा (हिं.)

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — डेड़ा ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — डेड़ापन डन तन (क) सं. — डेड़ापन ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — भाला, वरछी ।

डक्के डक्के (क) सं. — डेड़ा हो । सं. — डेड़ापन, वक्रता ।

डक्के डक्के (अ. दे.) सं. — डालू, चट्टान, टीला. पहाड़ी, डोंगर (हिं.) ।

डक्के डक्के (क) सं. — एक पौधे का नाम ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — डोम जाति ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — भीड़, कोलाहल ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — डोम जाति की स्त्री ।

डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के (क) सं. — दीवार, जीमीन या पेड़ का खोकला ।

डक्के डक्के (क) सं. — दबाकर पकड़, साँस रोक ।

डक्के डक्के (क) सं. — शरीर, देह ।

डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के.

डक्के डक्के (क) सं. — खोखला बना, छेद बना ।

डक्के डक्के (क) सं. — गाढ़ापन, घनत्व ।

डक्के डक्के (क) सं. — चट्टान पर का स्वाभाविक, सरोवर ; खोखला ; छेद ; तरकस ।

डक्के डक्के (क) सं. — लाठी, दण्ड, सोंटा ।

डक्के डक्के (क) सं. — दोना ।

डक्के डक्के (क) सं. — दे. डक्के (१)

डक्के डक्के (क) सं. — छेद, बिल, खोखला ।

डक्के डक्के (क) सं. — दलदल या पंक चरण रखने से उत्पन्न होनेवाली ध्वनि ।

डक्के डक्के, डक्के डक्के (क) सं. — खोखला, फूला हुआ, बड़ा । — डक्के, डक्के (क) सं. — बड़ी तोंद ।

डं०३ तंत्रि

विषय ; सिद्धांत, नियम ; कल्पना, विज्ञान ; परतंत्रता, पराधीनता ; चालाकी ; मन्त्र-तन्त्र ; अध्याय, पर्व ; तन्त्र शास्त्र ; दवाई ; शपथ ; पोशाक ; किसी कार्य को करने की ठीक ठीक पद्धति ; राजकीय परिवार, राज-सभा जन ; प्रदेश, प्रांत ; राज्य, शासन, अधिकार ; समूह, ढेर ; घर ; सजावट, सजा, अलंकार ; संपत्ति, धन ; आह्लाद ।
— तगडु गार (सम्) सं. — चालाक आदमी ; कारीगर ।

डं०३ तंत्रि (सम्) सं. — दे. डं०३.

डं०३ तंत्रि (सम्) सं. — एकपौधा विशेष (The plant cocculus cordifolius) डं०३ तंदनतान, डं०३ तंदनान, डं०३ तंदनतान, डं०३ तंदनान, डं०३ तंदनतान (क) सं. — संगीत में एक प्रकार का ताल । — डं०३ तंदनतान (क) सं. — एक प्रकार का लोकगीत ।

डं०३ तंदल, डं०३ तंदल (क) सं. — जल-कण, पानी या वर्षा की बूंद ।

डं०३ तंदूरिसु, डं०३ तंदूरिसु, डं०३ तंदूरिसु (क) क्रि. — चिंता कर, विकल हो, शोक कर ।

डं०३ तंदे (क) सं. — पिता, बाप, जनक तात । [डं०३ तंदे — तमिल, डं०३ तण्डि — तेलुगु] ।

डं०३ तंद्र डं०३ तंद्रते, डं०३ तन्दि (सम्) वि. — शिथिलता, आलस्य, सुस्ती, कुान्ति, थकावट ।

डं०३ तंपिसु (क) क्रि. — ठंडा हो । शीतल हो ।

डं०३ तंपु (क) सं. — शीतलता, ठण्डापन, ठण्डक ; शांतता. गीलापन ; मृदुता (मिट्टी की) ; आनन्दिता या मन को तोष देने का गुण ।

डं०३ तंबगि, डं०३ तंबगि, डं०३ तंबगि (क) सं. — लोटा, गोलाकार जल-पात्र ।

डं०३ तंबट, डं०३ तंबट, डं०३ तंबट (क) सं. — एक चर्मवाद्य, खंजड़ी ।

डं०३ तंबटि, डं०३ तंबटि तंबटिजालि (क) सं. — बबूल का पेड़ ।

डं०३ तंबल (क) सं. — गन्दे पानी या स्नाना-गार में रहनेवाला एक कीड़ा ।

डं०३ तंबल (क) सं. — तमिल भाषा ।

डं०३ तंबाक, डं०३ तंबाकु (अ. दे.) सं. — तमाखू ।

डं०३ तंबिगे (क) सं. — दे. डं०३.

डं०३ तंबिसु (क ?) क्रि. — रोक, टोक, ठहरा ।

डं०३ तंबु (क) सं. — डं०३ तंबिगु — चावल का आटा जिसमें गुड़ और पानी (या दूध) मिलाया जाता है और खाया जाता है ।

डं०३ तंबु (अ. दे.) सं. — तम्बू (हिं.), डेरा ।

डं०३ तंबुल (तद्) सं. — तांबूलम् (तत्) ; तांबूल, पान ।

डं०३ तंबुलि (तद्) सं. — तांबूली (तत्) ; पान का पौधा ।

डं०३ तंबुलिग (तद्) सं. — तांबूलिकः (तत्) ; तम्बोली, पान बेचनेवाला ।

डं०३ तंबूर, डं०३ तम्बूर (अ. दे.) सं. — तम्बूरा (हिं.) ।

डं०३ तंक (क) सं. — डं०३ तंकतक — एक अनु-करणमूलक शब्द. 'थै थै' शब्द ।

डं०३ तंकरा, डं०३ तंकरी (अ. दे.) सं. — तंकरा (अरबी) ।

डं०३ तंकीरु, डं०३ तंकीरु (अ. दे.) सं. — तंकीर (अरबी) ; गलती, त्रुटि, दोष, अपराध, न्यूनता ।

डं०३ तंकावि (अ. दे.) सं. — तंकावी (अरबी) ।

डं०३ तंक (क) वि. — उचित, योग्य, उपयुक्त, टीक, अच्छा, अनुरूप । डं०३ तंकदु — उचित है. अनुरूप है, उपयुक्त है ।

डं०३ तंकडि (क ?) सं. — तराजू । डं०३ तंकडि मने बड-तन ? — तराजू क्या जाने घर की गरीबी ! (रुह.) ।

डं०३ तंकडि (क ?) सं. — तराजू । डं०३ तंकडि मने बड-तन ? — तराजू क्या जाने घर की गरीबी ! (रुह.) ।

डं०३ तंकडि (क ?) सं. — तराजू । डं०३ तंकडि मने बड-तन ? — तराजू क्या जाने घर की गरीबी ! (रुह.) ।

डं०३ तंकडि (क ?) सं. — तराजू । डं०३ तंकडि मने बड-तन ? — तराजू क्या जाने घर की गरीबी ! (रुह.) ।

डं०३ तंकडि (क) क्रि. — छिटक, छिड़क, जल की बूंद डाल ।

डं०३ तंकावि (अ. दे.) सं. — धोखा, छल, कपट, झूठ ।

डं०३ तंकालि (क) सं. — टमाटर ।

डं०३ तंकि (अ. दे.) सं. — दगा धोखा ।

डं०३ तंकु (क) सं. — स्नेह, प्यार, प्रीति, ममता ; बड़प्पन, महत्ता, महानता, उच्चता ।

डं०३ तंकुडु (क) वि. — उचित, योग्य, उपयुक्त ।

डं०३ तंकुमे (क) सं. — योग्यता, उपयुक्तता, औचित्य, ठीक हो, अनुरूपता ; क्षमता ।

डं०३ तंके (क) सं. — दे. डं०३ ; और ; मिलाना, संयोजन, समुदाय, झुण्ड, समूह ; राशि ।

डं०३ तंकेसु (क) क्रि. रू. — आलिंगन कर, गले मिले ।

डं०३ तंकोळु (क) क्रि. रू. — लो, ले लो (ग्रा) ।

डं०३ तंकोल, डं०३ तंकोलक (सम्) सं. — भस्मगंधिनी नाम का वृक्ष ।

डं०३ तंक्र (सम्) सं. — मट्टा, छाछ ।

डं०३ तंक्ष, डं०३ तंक्षक (सम्) सं. — बड़ई, लकड़हारा ; पातालवासी एक सर्प का नाम ।

डं०३ तंक्षण (तद्) सं. — तंक्षणः (तत्) ; तुरंत, फौरन, तभी, तत्काल ।

डं०३ तंग (क) सं. — देर, विलम्ब, रुकावट, रोक ।

डं०३ तंगचि, डं०३ तंगचे, डं०३ तंगजे (क) सं. — चक्रमर्दक नामक पौधा ; एक वृक्ष विशेष ; शहतूत का वृक्ष ।

डं०३ तंगडु (तद्) सं. — टीन, कनस्तर, धातु-ओं के पत्र (जैसे ताम्रपत्र आदि) ।

डं०३ तंगणि, डं०३ तंगणे, डं०३ तंगुणे, डं०३ तिगणे, डं०३ तिगुणे (क) सं. — खटमल ।

डं०३ तंगडु (क) क्रि. रू. — उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है, अनुचित है, सही नहीं है ।

डं०३ तंगडु (क) क्रि. रू. — उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है, अनुचित है, सही नहीं है ।

डं०३ तंगडु (क) क्रि. रू. — उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है, अनुचित है, सही नहीं है ।

डं०३ तंगडु (क) क्रि. रू. — उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है, अनुचित है, सही नहीं है ।

उत्तर तह

उत्तर तह, उत्तर तह (क) सं. — मेडा, मेडा ।

उत्तर तह, उत्तर तह (तद्) सं. — टीन, जस्ता ।

उत्तर तह (क) सं.—दे. उत्तर (१)

उत्तर तह, उत्तर तह, उत्तर तह (क) क्रि.—मिला, लगा, जोड़, छुआ, स्पर्श करा, संयुक्त कर ।

उत्तर तह (क) क्रि.—छू, लग, स्पर्श कर, मिला ; रगड़ ; मैथुन कर ।

उत्तर तह (क) सं.—देर, विलंब, विघ्न ।

उत्तर तह (क) सं.—विघ्न, रुकावट, बाधा, प्रतिबन्ध ; संबंध, पंक्ति, श्रेणी ।

उत्तर तह (क) सं.—दे. उत्तर (१).

उत्तर तह (क) क्रि.—दे. उत्तर.

उत्तर तह (क) क्रि.—दे. उत्तर.

उत्तर तह (क) वि.—उपयुक्त, उचित, योग्य, ठीक ।

उत्तर तह (क) सं.—दे. उत्तर.

उत्तर तह (क) क्रि.—दे. उत्तर.

उत्तर तह (क) क्रि.—दे. उत्तर.

उत्तर तह (क) सं.—लगना, स्पर्श करना, छूना, स्पर्श ।

उत्तर तह (क) सं.—न्यूनता, कमी, अभाव, त्रुटि, दोष ।

उत्तर तह, उत्तर तह (क) क्रि.—मिला ; जुड़, लग, छू, स्पर्श कर, पास-पास जा ; पीठ लग, पीछे लग, ढकेल, अनुगमन कर ; हटा, पीछे छोड़ । सं. — पास-पास आना, स्पर्श ।

उत्तर तह (क) क्रि.—लगा, मिला, संयुक्त कर, स्पर्श करा ; लग, मिला, किसी के अधिकार या नीचे हो ; संलग्न रह, किसी चीज़ में व्यक्त रह ; जला, प्रज्वलित कर, आग लगा ।

उत्तर तह (क) सं.—स्पर्श, संयुक्तता, लगे रहने की स्थिति ।

उत्तर तह (क) क्रि.—रोड़ा अटका, रोक, टोक, बाधा उपस्थित कर, विघ्न बन, ठहर । सं.—ठहरना, विघ्न बनना आदि ।

उत्तर तह (क) सं.—दे. उत्तर (१).

उत्तर तह (क) सं.—जयंती वृक्ष, एक और वृक्ष ; एक बड़ी झाड़ी (clorodendron phlomoides) ।

उत्तर तह (क) क्रि.—कम कर, नीचे कर, न्यून कर, उतार, झुका ।

उत्तर तह (क) सं.—कम हो, नीचे हो, उतार जा, झुक जा, विनयी हो, गिड़गिड़ा ; माँग का गिरना ; दुबला हो । सं — निम्नता, नीचे होना. उतरना ; गड़वा, निचला प्रदेश या भूमि ; दर्रा, घाट ; बिल. छेद ; महुँगाई, किसी चीज़ का अभाव या कमी ।

उत्तर तह (सम्) सं.—जाननेवाला, तत्त्वविद् विद्वान् ।

(१) उत्तर तह (क) सं.—एक अनुकरणमूलक शब्द ।

(२) उत्तर तह, उत्तर तह, उत्तर तह (सम्) सं—किनारा, कूल, तीर ; क्षेत्र, खेत ; शरीर के कतिपय अवयवों की संज्ञा, जैसे कटितट आदि ; पहाड़ का ढाल, प्रदेश ; क्षितिज, आकाश ।

उत्तर तह (क) सं.—पेशाब की दुर्गंध ।

उत्तर तह (क) सं.—बूँद, थोड़ा या अल्प परिमाण ।

उत्तर तह (क) अ.—बूँदों में ; तुरंत, पौरन, हठात् ।

उत्तर तह (सम्) सं.—बहिया, बछड़ा सुंदरी स्त्री ।

उत्तर तह (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

उत्तर तह (सम्) वि.—तट या किनारे पर का ; उदासीन ।

उत्तर तह (सम्) सं.—तालाब, ताल ।

उत्तर तह (क) क्रि.—से होकर या जरिए जा (जैसे किसी गाँव से होकर नदी जाती है) ; सीधे पहुँच जा ।

उत्तर तह (क) क्रि.—पार, लग, तर जा, पार कर ; सीधे पहुँच ।

उत्तर तह (क) अ.—तुरंत, हठात्, सहसा ।

उत्तर तह, उत्तर तह (सम्) सं.—बिजली ।

उत्तर तह (क) वि.—समतल, सपाट, चौरस । उत्तर तह (क) अ.—हठात्, सहसा, अचानक ।

उत्तर तह (क) सं—बच्चों का एक खेल जिसमें उनको तब तक जोर से चक्कर काटने दिया जाता है जब तक वे बेहोश नहीं होते ।

उत्तर तह (क) सं.—बाँस की चटाई या आड़, टट्टी, पटसन के कपड़े की आड़ ।

उत्तर तह (क) सं—समतलता ; सिकुड़न ; सार या जीवन की आवश्यकता ।

उत्तर तह (क) क्रि.—लड़बड़ा, हकला, रुक रुक कर बोल ; अस्पष्ट बोल ; थपथपाने दे, छोटी छोटी वस्तु से मारने दे (प्रे.) ।

(१) उत्तर तह (क) क्रि.—थपथपा, छोटी वस्तु से मार, ताड़न कर, ताली बजा ; खट-खटा ; ढकेल, लगा, चला ; मार दे या मार गिरा ; निकाल । सं. — खटखटाना ; बीमारी का फैलाव. अभाग्य का ताड़न ; चेचक. शीतल रोग ; समतलता ; धार ; तलवार की धार ; तरफ, दिशा, ओर ।

(२) उत्तर तह (क) सं.—सन का कपड़ा ; जैन या बौद्ध साधु का परिधान । (अ. दे) सं.—छोटा घोड़ा. टट्ट ।

उत्तर तह (क) सं.—(ताली) बजानेवाला, मारनेवाला, पीटनेवाला ; खटखटानेवाला ।

उत्तर तह (क) सं.—समतलता ; लोहे या लकड़ी की तस्तीरी, थाली ; सूप ; बीजकोश, फली ; बाँस या सुपरी की लकड़ी जो दो भागों में चीरी गयी हो ।

उत्तर तह (क) सं.—स्त्रियों का जूता या चप्पल ।

(१) उत्तर तह (क) सं.—विघ्न, बाध, रोक, रोक-थाम, टोक ; देरी, विलम्ब ; विघ्न, व्याकुलता, विकलता, डर, चिंता । उत्तर तह तहकट्ट = उत्तर तह तहकट्ट — रोक (पानी की धारा को रोक) । उत्तर तह तहकट्ट (क) सं.—रोकने के लिए रखा गया ।

डंठु तथ्य

पर्य। डंठु तथ्य तडवडिसु (क) क्रि.—
चलने में झिझक। डंठु तथ्य तडमाडु (क)
क्रि.—बाधा या विघ्न उपस्थित कर। डंठु
तथ्य तडवायु (क) क्रि.—देर हो, विलम्ब
हो। डंठु तथ्य तडवरिसु (क) क्रि.—हिच-
किया, झिझक; लड़खड़ा।
(२) डंठु तड (तद्) सं.—तटः (तत्) ; किनारा।
डंठु तड तडकस, डंठु तड (क) सं.—बाधा,
रोक-थाम; विकलता; चोट, आघात।
डंठु तड तडकिसु (क) क्रि.—टटोलने या
खोजने दे (प्रे.)।
डंठु तड तडकु (क) क्रि.—टटोल, खोज, अंधेरे
में (किसी चीज को) खोज। सं.—टट्टी,
भाड़।
डंठु तड तडगणि; डंठु तड तडगुणि (क) सं.—
एक दाल विशेष (The pulse Vigna)।
डंठु तड तडत (क) सं.—('डंठु तड' से) —
रोकने की क्रिया; प्रतिरोध; (वस्त्र) ठीक
प्रकार से धारण करने की क्रिया।
डंठु तड तडदु, डंठु तड तडदु (क) कृ.—रोक
कर, टोक कर।
डंठु तड तडप (क) सं.—देरी, विलम्ब।
डंठु तड तडपु (क) सं.—विघ्न, बाधा, रोक-
थाम; विरोध; बाध; शरीर के निचले भाग
में जानेवाला कपड़ा।
डंठु तड तडयु (क) सं.—देरी, विलम्ब। क्रि.—
डंठु तड तडहु, डंठु तड तडगु, डंठु तड तडकु
डंठु तड तडयु—रोक; छू, स्पर्श कर, हाथ
धीरे-धीरे से रगड़, धीरे से थपकी दे।
डंठु तड तडवे (क) सं.—बार, दफे।
डंठु तड तडसलु, डंठु तड तडसु (क) सं.—पार-
स्परिक रोकथाम।
डंठु तड तडसु (क) क्रि.—रोक, अटकाव डाल,
विघ्न डाल; ठहर, रुक जा; रुकने दे (प्रे.)।
डंठु तड तडहु (क) क्रि.—दे. डंठु तड क्रि.—सं.
रोकथाम, अटकाव, विघ्न।
डंठु तड तडाक, डंठु तड तडाग (सम्) सं.—
तालाब, पुष्करिणी।
डंठु तड तडि (क) सं.—डंडा, लाठी, सौटा;

ऊनी कपड़े या सूती कपड़े की जीन; गद्दा,
बिछावन। क्रि.—देर कर, विलम्ब कर,
ठहर।
डंठु तड तडिके (क) सं.—टट्टी, बाँम की आड़।
डंठु तड तडित् (सम्) सं.—विजली।
डंठु तड तडित्वत् (सम्) सं.—बादल।
डंठु तड तडिसु (क) क्रि.—रोक, बाधा उपस्थित
कर, ठहर।
डंठु तड तडि (क) क्रि.—ठहर, प्रतीक्षा कर;
विलम्ब कर; रोक, ठहरा; प्रतीक्षा करने दे;
बाधा उपस्थित कर; वश में कर (जैसे क्रोध
को वश में करना), सन्न कर सहन कर।
सं.—विघ्न, अटकाव, बाधा; लकड़ी आदि
का टुकड़ा; देर, विलम्ब, आकर्षण।
डंठु तड तडि (तद्) सं.—तटः (तत्)।
डंठु तड तडि (क) सं.—अण्डकोश।
डंठु तड तडि (क) वि.—(समास में) — ठण्डा,
शीतल। डंठु तड तडि तणणे इदे—शीतल
है, ठण्डा है।
डंठु तड तडलु (क) सं.—चिनगारी।
डंठु तड तडव, डंठु तड तडारि, डंठु तड तडवर,
डंठु तड तडवार डंठु तड (तद्) सं.—स्थल-
वार (तत्); पहरेदार।
डंठु तड तडवु, डंठु तड तडिवु (क) सं.—वृषि,
संतोष, पर्याप्ति।
डंठु तड तडलु, डंठु तड तडिसु (क) वि.—गोला,
भीगा हुआ, ठण्डा, शीतल।
डंठु तड तडि (क) क्रि.—ठण्डा हो, शीतल हो;
वृष हो, संतोष पा; थक जा, श्रान्त हो।
सं.—लज्जा, शर्म।
डंठु तड तडिगे, डंठु तड तडिगे (क) सं.—थाली।
डंठु तड तडिगु, डंठु तड तडिसु (क) क्रि.—वृष
कर, संतुष्ट कर। सं.—वृषि, संतुष्टि।
डंठु तड तडिवु (क) सं.—वृषि, संतुष्टि।
डंठु तड तडिसु (क) वि.—दे. डंठु तड क्रि.—
डंठु तड।
डंठु तड तडिवु (क) सं.—दे. डंठु तड; शीत-
लता, ठण्डापन।
डंठु तड तडिगे, डंठु तड तडिगे (क) वि.—ठंडा,
शीतल; अच्छा, मनभाया।
डंठु तड तणस (क) वि.—दे. डंठु तड।
डंठु तड तणाने, डंठु तड तणितु, डंठु तड
तणितु (क) वि.—दे. डंठु तड।
डंठु तड तणु (क) सं.—दे. डंठु तड।
डंठु तड तणवण (क ?) सं.—वीणा-ध्वनि।
डंठु तड तड (सम्) सं.—ब्रह्मा; वायु। सर्व—
वह।
डंठु तड तड (सम्) वि.—कैला हुआ, बड़ा हुआ।
डंठु तड तड (सम्) सं.—वायु, हवा।
डंठु तड तड (क) सं.—कठिनाई, उलझन,
समस्या।
डंठु तड तड (सम्) सं.—संस्था, दल, समूह,
श्रेणी, स्तोम; यज्ञकर्म।
डंठु तड तड (तद्) सं.—तत्त्वं (तत्); यथार्थ
सिद्धान्त।
डंठु तड तडकाल (राम्) अ.—तत्काल; तुरंत,
उसी समय।
डंठु तड तड (तद्) सं.—तथ्य (तत्), सचाई,
वास्तविकता।
डंठु तड तडत, डंठु तड तडत, डंठु तड तडत (क)
सं.—कंपन, गड़गड़ी, विकलता, विभ्रम।
डंठु तड तड, डंठु तड तड, (क) सं.—अण्डा।
डंठु तड तड (क) सं.—ठोकर खाना, ठोकर;
आफत, दुर्भाग्य।
डंठु तड तडतु (तद्) सं.—दे. डंठु तड।
डंठु तड तडत (सम्) वि.—तैयार, सज्जद।—
डंठु तड (सम्) सं.—तैयारी, तडतता।
डंठु तड तडिगि (क) सं.—झंझर, सुगही;
डंठु तड तड (सम्) सं.—वास्तविक दशा, परि-
स्थिति; वास्तविक मिद्वान्त; वास्तविक-
रूप; सचाई, निष्कर्ष, वस्तु; परमात्मा;
सांख्य के अनुसार पच्चीस पदार्थ; नृत्य
विशेष; मन।
डंठु तड तडसम (सम्) सं.—उसके समान;
संस्कृत के वे शब्द जो कन्नड में ज्यों के त्यों
प्रयुक्त होते हैं।
डंठु तड तडगत (सम्) सं.—बुद्ध; जिन।
डंठु तड तड (सम्) सं.—सचाई, सत्य, वास्त-
विकता।

डदरु तदकु (क) क्रि. — मार, पीट, ताडन कर ।

डदरु तदगिणि (क) सं.—सफेद चना ।
डदरु तदलु (क) सं.—काँटों का ढाँचा जो बाग-बगीचों में दरवाजे के रूपम काम में लाया जाता है ।

डदरु तदिगिणि (क) सं.—संगीत में ताल देने का शब्द ।

डदरु तदिगे (तद्) सं.—तृतीया (तत्) ; तीज तिथि ! ।

डदरु तदुकु, डदरु तदिकु (क) सं.—गज-प्रिय नामक वृक्ष (The Gum Olibanum Tree) ।

डदरु तदे (क) क्रि.—दे. डदरु

डदरु तदिन (सम्) सं.—वह दिन ; दिन में ; दिन-ब-दिन ; मृत तिथि, श्राद्ध दिन ।

डदरु तदल (सम्) सं.—एक प्रकार का बाण, एक प्रकार का धनुष ।

डदरु तद्व (सम्) सं.—संस्कृत से आये हुए विकृत शब्द ।

डदरु तदलु (क) सं.—दे. डदरु

डदरु तन (क) प्र.—भाववाचक प्रत्यय ; उदा.—
डदरु तन प्रेप्तन = स्त्रीत्व, डदरु तन कलितन = वीरता ।

डदरु तनक, डदरु तनक(क)अ.—तक्र, तलक ।
डदरु तनकि, डदरु तनखि, डदरु तनखे (अ दे.) सं.—तनकीह (फ़ारसी) ; परीक्षा, जाँच-पड़ताल ।

डदरु तनतु, डदरु तनतु(क)सर्व.—उसका ।
डदरु तनय (सम्) सं.—बेटा, पुत्र ।
डदरु तनये—स्त्री. लिं. ।

डदरु तनि (क) क्रि.—अधिक हो, बढ़, वृद्ध हो, विकसित हो, संपूर्ण हो, सारयुक्त हो । सं.—अधिकता, वृद्धि, विकास, सारयुक्तता, संपूर्णता, समृद्धि ; मीठापन । डदरु तनिगु (क) सं.—सुगंधि की समृद्धि ।
डदरु तनिगेदरु (क) क्रि.—अधिक या पूर्णरूप से फैल । डदरु तनिगेदरु (क) सं.—अधिक प्रकाश ।

(१) डदरु तनु (क) वि.—ठण्डा, शीतल ।

(२) डदरु तनु (सम्) सं.—शरीर, देह ; चम, चमड़ा । वि.—पतला, दुबला ; छोटा ; महीन ; कोमल, मुलायम ; कम, थोड़ा, परिमित । —ज, जड जात (सम्) सं.—बेटा, पुत्र । —जे, जडे जाते (सम्) सं.—बेटी, पुत्री । —त्र (सम्) सं.—कवच । —त्राण (सम्) सं.—कवच । —त्र (सम्) सं.—पतला होना । —भव (सम्) सं.—डदरु । —मध्य (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम । —विदाह (सम्) सं.—अत्यधिक शरीरिक ताप ।

डदरु तनुवु (क) वि.—दे. डदरु (१),
डदरु तनूज, डदरु तनूभव (सम्) सं.—पुत्र, बेटा ।

डदरु तनूजे (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।
डदरु तनूजठ तनूनपात, डदरु तनूजठ तनूनपात (सम्) सं.—पुत्र ; अग्नि ।

डदरु तनूरुह (सम्) सं.—शरीर के रोम ; पक्षी का पर ।

डदरु तने (क) सं.—पशुओं का गर्भ, प्रजन ।

डदरु तन (क) सर्व.—अपना ।

डदरु तन्नि (क) क्रि. रु.—लाइए. ले आइए ।

डदरु तन्नु (क) सर्व.—अपना, आप ।

डदरु तन्नि (सम्) सं.—कृशांगी, कोमलांगी स्त्री ; एक वृत्त का नाम ।

(१) डदरु तप (क) सं.—फल, गोबर आदि के गिरते समय निकलनेवाली ध्वनि ।

(२) डदरु तप (सम्) सं.—तपस्या ; उष्णता, गर्मी ; पीड़ा, कष्ट ; ध्यान, आलोचन ; पुण्यकर्म ; शास्त्र विहित कर्मानुष्ठान . जनलोक के ऊपर का लोक ; माघमास (कुछ लोगो के अनुसार फाल्गुणमास) ।

डदरु तपकने (क) अ.—तुरंत, अचानक ।

डदरु तपदे (तद्) सं.—खंडी, छोटा ढोल ।

डदरु तपन (सम्) सं.—सूर्य ; सूर्यकांत मणि ; ग्रीष्म ऋतु ; नरक विशेष ; आक या मदार का पौधा ; शिवजी ; ग्रह विशेष ; मन का ताप । —सुत (सम्) सं.—कर्ण ; यम ; शनि ; सुग्रीव । —सुतसुत

सुतसुत (सम्) सं.—कर्ण का पुत्र वृषकेतु ।
डदरु तपनीय (सम्) सं.—सोना, हेम ।
डदरु तपराखु (क) सं.—तमाचा, थप्पड़ ; लात ।

डदरु तपसि, डदरु तपसिग (तद्) सं.—तपस्विम् (तत्) ; तपस्वी ।

डदरु तपसु, डदरु तपस्ये (तद्) सं.—तपस् (तत्) ; तपस्या ।

डदरु तपस्वि (सम्) सं.—तपस्वी, तापस ।

डदरु तपस्विनि (सम्) सं.—तपस्या करनेवाली स्त्री ।

डदरु तपस्सु (तद् मं.—तपस् (तत्) ।

डदरु तपाध्य (सम्) सं.—वर्षाकाल ।

डदरु तपालु (अ. दे.) सं.—दे. डदरु

डदरु तपित (सम्) वि.—गरम किया हुआ, उष्ण । डदरु तपिते = खराब या भ्रष्ट स्त्री ।

डदरु तपिसु (सम्) क्रि.—गरम हो ; तपस्या कर ; पीड़ा सह ।

डदरु तपेलि, डदरु तपले, डदरु तपले (क) सं.—एक गोलाकर बर्तन जिसमें चावल पकाया जाता है ।

डदरु तम (सम्) वि.—तपा हुआ, गरम किया हुआ, जलाया हुआ, पिघला हुआ संतप्त पीड़ित ; तपस्या करनेवाला ।

डदरु तप (क) सं.—दे. डदरु (१) .

डदरु तपडि (क) सं.—गलत कदम ।

डदरु तपने (क) अ.—अचानक, सहमा, तुरंत ।

डदरु तपल. डदरु तपलु (क) सं.—पहाड़ की समतल भूमि, प्रस्थ, अधित्यका ।

डदरु तपल (क) सं.—दे. डदरु

डदरु तपले (क) सं.—दे. डदरु

डदरु तपसि (क) सं.—एक प्रकार का जंगली आम का वृक्ष ।

डदरु तपसिसु (क) क्रि.—ताली बजा ।

डदरु तपित (क) सं.—गलती, अशुद्धि, दोष, चूटि ।

डदरु तपिसु (क) क्रि.—बचा, रक्षा कर ; प्राप्त होने न दे ; उपयोगी न हो ; पार हो ;

डरसु तपु

चुक। डरसु तपु तपिहोगु=हाथ से निकल जा. बच जा।

डरसु तपु (क) क्रि.—प्राप्त न हो, अप्राप्त हो, न मिल, छूट जा, हाथ से निकल जा ; गलत कदम रख, पीछे हट, दोष या अपराध कर, झुटि कर, खो जा; स्खलित हो; अदृश्य हो; ठोकर खा; छिप। सं.—अपराध, झुटि, दोष, गलती, अशुद्धि ; अनुचितता ; पाप। डरसु विट तपुविके (क) सं.—दोष या झुटि करना ; बचना।

डरसु तवक, डरसु तवकु (अ. दे.) सं.—तवक (अरबी) पान-सुपारी रखने की थाली। डरसु तवटे (तद्) सं.—दे. डरसु।

डरसु तव्वरिसु, डरसु तव्वरिसु (क) क्रि.—घबड़ा जा, विकल हो ; चकित हो, पैर फिसल जा, ठोकर खा, गिर पड़।

डरसु तव्वलि (क) सं.—अनाथ बालक या बालिका।

डरसु तव्विबु (क) सं.—विभ्रम, भ्रम ; घबराहट, चकित होना।

डरसु तव्विल (क) सं.—दे. डरसु ; नीच पुरुष या वस्तु।

डरसु तव्वु (क) क्रि.—आलिंगन कर, छाती से लगा; (लकड़ी के परिमाण को) बाहुओं में समा। सं.—आलिंगन ; लकड़ी का उतना परिमाण जितना कि बाहुओं में समा सके।

डरसु तव्विल (क) सं.—दे. डरसु।

डरसु तम्, डरसु तावु (क) सर्व—आप, स्वयं।

डरसु तम (तद्) सं.—तमस् (तद्) ; अंधकार, अंधेरा।

डरसु तमटे (तद्) सं.—दे. डरसु।

डरसु तमर (तद्) सं.—टीन, जस्ता ;

डरसु तमरु (सम्) सं.—अंधेरा ; राहु ; कालापन, तमोगुण ; क्लेश, दुःख ; पाप ;

नरक का अंधकार ; भ्रम।

डरसु तमस्विनि (सम्) सं.—रात।

डरसु तमस्सु (तद्) सं.—दे. डरसु।

डरसु तमाल (सम्) सं.—तमाल वृक्ष ; तमालपत्र।

डरसु तमालि (सम्) सं.—कई पौधों के नाम।

डरसु तमापे (अ. दे.) सं.—तमाशा (अरबी, फ़ारसी)।

डरसु तमि (सम्) सं.—रात।

डरसु तमित्त, डरसु तमित्ते (सम्) सं.—अंधेरा ; रात।

डरसु तमोगुण (सम्) सं.—तमोगुण ; त्रिगुणों में तीसरा।

डरसु तम्, डरसु तम्म (क) सर्व—अपना (कर्ता व. व. अन्य पुरुष)।

डरसु तम्म (क) सं.—छोटा भाई, अनुज।

डरसु तम्मट, डरसु तम्मटे (तद्) सं.—दे. डरसु।

डरसु तम्मड (क) सं.—देर, विलंब ; दे. डरसु।

डरसु तम्मडि (क) सं.—पुजारी, मंदिर का अनुचर या सेवक।

डरसु तम्मनु, डरसु तम्मनु. डरसु तम्मदु (क) सर्व—अपना (कर्ता व. व. अन्य पुरुष)।

डरसु तम्मै (क) सं.—(नाक, कान आदि का कोमल भाग।

डरसु तयार, डरसु तयारु (अ. दे.) वि.—तैयार (हिं.)।

डरसु तयारि (अ. दे.) सं.—तैयारी (हिं.)।

डरसु तयारिसु (अ. दे.) क्रि.—तैयार कर, बना।

डरसु तरं (क) अ.—सही ठीक, क्रमबद्ध।

डरसु तरंग (सम्) सं.—लहर, हिलोर।

डरसु तरंगवति, डरसु तरंगिणि (सम्)

सं.—नदी।—तट नाथ (सम्) सं.—समुद्र।

डरसु तर, डरसु तरह (अ. दे.) सं.—तरह-

क्रम, रीति, तरीका ; मकान का खण्ड।

डरसु तरकट (क) सं.—कठोरता, निष्ठुरता।

डरसु तरकलु (क) सं.—सूखा पत्ता, सूखा

शरीर, सूखी भूमि ; चिकनापन न होना

चिपचिपा होना, रवा ; कण ; रूक्षता, खुरखुरापन।

डरसु तरकारि (अ. दे.) सं.—तरकारी (हिं.)। डरसु तरकु (क) सं.—दे. डरसु।

डरसु तरक्षु (सम्) सं.—सेई ; बाघ।

डरसु तरगडे (क) सं.—कमी, न्यूनता ; नुकसान, हानि, घाटा ; बेकार हुई वस्तु

(wastage)।

डरसु तरगवि (क) सं.—दे. डरसु।

डरसु तरगार (क) सं.—राज।

डरसु तरगु (क) सं.—डूबना, कम होना, घटना ; हानि, बेकार होना ; दलाली, कमीशन ;

सूखा पत्ता।

डरसु तरट, डरसु तरटु (क) वि.—गंजा, मोटा, खुरदरा।

डरसु तरडु (क) सं.—अण्डकोश।

डरसु तरण (सम्) सं.—पार करना ; विजय, जीत ; डंड ; नाव, वेड़ा ; स्वर्ग।—क

(सम्) सं.—पार करानेवाला।

डरसु तरणि (सम्) सं.—नाव, नौका ; सूर्य,

प्रकाश की किरण ; एक प्रकार का गुलाब।

डरसु तरपण्य (सम्) सं.—भाड़ा, किराया।

डरसु तरपु (क) सं.—घटिया किस्म का रत्न या हीरा।

डरसु तरफु (अ. दे.) सं.—तरफ, ओर, दिशा में।

डरसु तरवेतु (अ. दे.) सं.—तरवियत (अरबी) ; शिक्षण, प्रशिक्षण।

डरसु तरल (सम्) वि.—कॉपनेवाला, थर थरानेवाला ; चंचल, अस्थिर, विनश्वर ;

उत्तम, चमकीला ; पनीला ; सं.—तरल

पदार्थ, बालक, लड़का ; हार की बीच की मणि ; एक वृत्त का नाम।

डरसु तरले (सम्) सं.—मौड़, उबले हुए चावल का जल विशेष।

डरसु तरवार, डरसु तरलवार (अ. दे.) सं.—कृपाण, खड्ग।

डरसु तरवारि (अ. दे.) सं.—दे. डरसु।

डरसु तरस (सम्) सं.—मांस, गोشت।

डरसु तरसु (क) क्रि.—मैना, किसी चीज़ को ले आने दे। वि.—सूखा, निरुपयोगी,

बेकार।

डरळ तरह (अ.दे.) सं.—तरह (अरवी) ; प्रकार, भाँति, ढंग ; स्थिति, बनावट ।
 डरळर तरहर, डरळरुँ तरहरिके (क) सं.—सहनशीलता, शांति । डरळरुँ तरहरिसु (क) क्रि.—शांत हो, शांत रह, सहन कर ।
 डरळरुँ तरहीन (सम्) वि.—क्रमरहीन, व्यवस्थारहित ।
 डरळ तरळ (तद्) वि. और सं.—दे. डरळ.
 डरळ तरळु (क) सं.—सूखा फल ; गरी ; मेवा ।
 डरळ तरळे (तद्) सं.—वालिका, लड़की ।
 डरळ तरा (अ. दे.) सं.—दे. डरळ.
 डरळ तरासु, डरळ तरासु (अ. दे.) सं.—तराजू (फारसी) ।
 डरळ तरावळि (सम्) सं.—अनेक प्रकार या ढंग ।
 डरळ तरातुरि (तद्) सं.—शीघ्रता, त्वरा (तत्) ; जल्दी ।
 (१) डर तरि (क) सं.—कण, रवा ; रुक्षता, खुरखुरापन ।
 (२) डर तरि (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर ; खरोच, फटकार बता ।
 डर तरावळु तरिगोट (क) सं.—अग्निशिखा नामक वृक्ष ।
 डर तरावळु तरियिसु, डर तरावळु तरिसु (क) क्रि.—दे. डर तरावळु ; कटवा ।
 डर तर (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष ।
 डर तरावळु तरकुटि (सम्) सं.—गिलहरी ।
 डर तरावळु तरुटिगि (क) सं.—एक झाड़ी (Cassiatora) ।
 डर तरावळु तरुण (सम्) वि.—जवान, युवा ; छोटा ; कोमल, मुलायम ; नवीन, नया, ताज़ा, जिंदादिल । सं.—युवा पुरुष ।
 डर तरावळु त्व (सम्) सं.—यौवन, जवानी ।
 डर तरावळु तरुणि (सम्) सं.—युव स्त्री, जवान लड़की ।
 डर तरावळु तरुपु (क) सं.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरुवळि (क) सं.—बालक, लड़का ; बालिका, लड़की ।—डर तन (क) सं.—

लड़कपन, बालपन ।
 डर तरावळु तरुवळि (क) सं.—विवाहिता कन्य को घर ले आने की क्रिया ।
 डर तरावळु तरुवळि, डर तरावळु तरुह (क) सं.—ले आना, लाने की क्रिया ।
 डर तरावळु तरुटिगि (क) सं.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरगु (क) सं.—सूखा पदार्थ, सूखा पत्ता, सूखी रोटी या दोसा ।
 डर तरावळु तरुजे (क) सं.—घोड़े को पहनाने का एक गहना ।
 डर तरावळु तरुट (क) वि.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरुतरिसु (क) क्रि.—घबड़ा जा, विकल या व्याकुल हो ।
 डर तरावळु तरुवु (क) क्रि.—ठहर, रुक ।
 डर तरावळु तरुले, डर तरावळु तरुले, डर तरावळु तरुले (क) सं.—सूखापन, बेकार या व्यर्थ बात । — मनुष्य मनुष्य = व्यर्थ या निरुपयोगी पुरुष ।
 डर तरावळु तरु (क) क्रि.—काट, टुकड़े कर, रगड़ा जा, खुरचा जा, छिला जा, छोटे छोटे कण हो । सं.—कण, रवा ; खूँटा, शंकु ; जुड़े रहने या स्थिर रहने की स्थिति ; खदिर या कथा वृक्ष । — डर तरावळु मिंडि (क) सं.—ऋतुमती ।
 डर तरावळु तरुवु (क) सं.—सूखी रेत ।
 डर तरावळु तरुय (क) सं.—खदिर या कथा वृक्ष ।
 डर तरावळु तरुसु (क) क्रि.—कटवा (मे.) ।
 डर तरावळु तरु (क) क्रि.—मिल, जुड़ ; पासजा ; प्रवेश कर ; व्यस्त रह । सं.—मिले रहने या जुड़े रहने की स्थिति ।
 डर तरावळु तरुण (क) सं.—उचित या योग्य समय ।
 डर तरावळु तरुवु, डर तरावळु तरुवु, (क) क्रि.—दे. डर तरावळु. सं.—पत्थर उठाने की बड़ी लकड़ी या डंडा ।
 डर तरावळु तरु (क) क्रि. और सं.—दे. तल ।
 डर तरावळु तरुय (क) सं.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरु (सम्) सं.—बहस, वादविवाद, युक्ति ; कल्पना, अनुमान ; संदेह ; न्याय-शास्त्र, तर्कशास्त्र, आकांक्षा, कारण, हेतु ।

डर तरावळु तरुवळु मनुष्य मनुष्य = व्यर्थ तर्क-माडुववनु मूर्खनिर्गित कड़े—तर्क करनेवाला मूर्ख से गया बीता है (कह.) ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—तार्किक, प्रश्न करनेवाला ; उभेदवार, जिज्ञासु, प्रार्थी ।
 डर तरावळु तरुवळु तरुवळु, डर तरावळु तरुवळु तरुवळु, डर तरावळु तरुवळु तरुवळु, डर तरावळु तरुवळु तरुवळु (क) कि—आलिंगन कर । सं.—आलिंगन, मृदंग का एक भेद ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) क्रि.—तर्क कर, वाद-विवाद कर ।
 डर तरावळु तरुवळु (क) सं.—आलिंगन ।
 डर तरावळु तरुवळु (क) क्रि.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—भयभीत करना ; डराना, डैट, भयसना ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—अँगूठे के पास की अँगुली ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) क्रि.—डरा, धमका, भयसना, कर ; निवारण कर, हटा ।
 डर तरावळु तरुवळु (अ. दे.) सं.—अनुवाद, भाषांतर ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) खे.—बछड़ा ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—पितृयज्ञ विशेष ; प्रसन्न करना, संतुष्ट तर्पण, करना ; प्रसन्नता ; समिधा । डर तरावळु तरुवळु = तर्पण कर ; संतुष्ट हो, प्रसन्न हो ।
 डर तरावळु तरुवळु (क) सं.—आलिंगन ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—यज्ञस्तम्भ का शिरो-भाग ।
 डर तरावळु तरुवळु (क) सं.—व्यर्थ बात, गपशप, व्यर्थ या निरुपयोगी मनुष्य ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—प्यास, तृषा ; कामना, इच्छा ; नाव ; सूर्य ; समुद्र ।
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—प्यास, तृषा ।
 डर तरावळु तरुवळु (क) सं.—दे. डर तरावळु.
 डर तरावळु तरुवळु (सम्) सं.—सतह ; हथेली ; निचला भाग, पैदी, गहराई, रंध्र, छेद, गड्ढा ; ताड़ का वृक्ष ; बाँह ; थण्ड ; नीचता ; चमड़े का खोल ; तरवार की

मूठ; बाय हाथ से वीणा के तार बजाना; काठ, लकड़ी; सरोवर; सात नरकों में एक।

डलसु तलपिसु (क) क्रि.—पहुँचा (प्रे.)।

डलसु तलपु (क) क्रि.—पहुँच; हाथ लग, मिल, प्राप्त हो।

डलसु तलारि (तद्) सं.—स्थसवारः (तद्); पहरेदार।

डलसु तलावु (अ. दे.) सं.—तालाव।

डलसु तलिन (सम्) वि.—पतला, दुबला; कम, थोड़ा; साफ, स्वच्छ; पृथक, नीचे का।

डलसु तलपु (क) क्रि.—दे. डलसु।

डलसु तले (क) सं.—सिर, मस्तक; पीढ़ी; प्रधान या मुख्य पदार्थ।—कल्लु, कटु (क) सं.—शीर्ष वेधन; अक्षर पर आड़ी रेखा; खेत का किनारा।—कल्लु कायि (क) सं.—सिर, मस्तक।—कल्लु कूदलु (क) सं.—सिर के बाल।—कल्लु केल्ले (क) सं.—औंधा या उल्टा होना; गर्व, घमंड।—कल्लु कल्लु कल्लुमारि (क) सं.—शैतान, धूर्त।—डलसु तलेगडे (क) क्रि.—पीढ़ी वीत जाना।—कल्लु गायु (क) क्रि.—रक्षा कर; आधार बन, सहारा दे।—कल्लु गिबु, कल्लु दिबु (क) सं.—तकिया।—कल्लु गोयिक (क) सं.—हत्यारा कसाई; ठग, धोखेबाज़।—कल्लु तिरुगु (क) सं.—सिर में चक्कर।—कल्लु तिरुक (क) सं.—घमंडी, अहंकारी, उन्मत्त व्यक्ति।—डलसु तेरिगे (क) सं.—जज़िया।—कल्लु दूगु (क) क्रि.—सिर हिला; स्वीकार कर; संतुष्ट हो।—कल्लु दोरु (क) सं.—सिर दिखा; प्रकट हो।—कल्लु नोवु (क) सं.—सिर दर्द।—कल्लु बागलु (क) सं.—प्रवेशद्वार।—कल्लु बागु (क) क्रि.—सिर झुका, मस्तक नवा।—कल्लु बुरेडे (क) सं.—खोपड़ी।—डलसु बेसर (क) सं.—मानसिक अशांति, थकावट।—कल्लु मारि (क) सं.—कसाई, हत्यारा।—कल्लु कल्लु, कल्लु कल्लु, कल्लु कल्लु

(क) क्रि.—सिर मुँडा; व्यर्थ में अपनी चीज़ गवाँ या हानि पा।—कल्लु मारु (क) सं.—परंपरा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी।—कल्लु सुत्तु (क) सं.—सिर में चक्कर।—कल्लु यादव (क) सं.—प्रधान पुरुष, मुखिया।—कल्लु योडु (क) सं.—खोपड़ी।—कल्लु वीडु (क) सं.—प्रधान स्थान।—कल्लु हिडि (क) क्रि.—सिर पकड़; सिर को लग।—कल्लु हिडिकि (क) सं.—लंपट स्त्री।—कल्लु होक (क) सं.—दुराचारी पुरुष; दुष्ट; सुँहजोरी करने वाला।

डलसु तलोदरि (सम्) सं.—पत्नी, भार्या; कुशांगी, सुंदरी।

डलसु तल्य (सम्) सं.—चारपाई, पलंग, सेज; पत्नी, भार्या; मकान के ऊपर की मंज़िल, अटारी; गाड़ी में बैठने का स्थान।

डलसु तल्ल (सम्?) गरोवर, तालाव।

डलसु तल्लज (सम्) सं.—प्रसन्नता; उत्तमता।

डलसु तल्लण (क) सं.—भय, भीति; विभ्रम, घबराहट; दुःख।

डलसु तल्लणिसु (क) क्रि.—अमित हो, घबड़ा जा, भयभीत हो, काँप, थरथरा।

डलसु तल्लर (क) सं.—दे. डल्लर।

डलसु तवक, डलसु तवकु (तद्) सं.—[‘तम्’ संस्कृत धातु से]—प्रेम; इच्छा; कातरता, उतावलापन; जल्दबाज़ी, शीघ्रता।

डलसु तवकि, डलसु तवकिग (तद्) सं.—कातर पुरुष, उतावला या जल्दबाज़ी करने वाला मनुष्य।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) क्रि.—पछोर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवडु, डलसु तवडु (क) सं.—भूसी, भूसा, चोकर।

डलसु तवलाय, डलसु तवलायि (तद्); सं.—तांबूल (तद्); पान।

डलसु तवसि (तद्) सं.—तपस्विन् (तद्); तपस्वी।

डलसु तवलिषु (क) क्रि.—नाश कर; झाड़; झाड़ा।

डलसु तविर् डलसु तविरु (क) सं.—गरीबी, दारिद्र्य, आवश्यकता।

डलसु तविल्, डलसु तविलु (क) सं.—दे. डलसु।

(१) डलसु तविषु (क) क्रि.—कम कर, घटा, क्षीण कर, नाश कर।

(२) डलसु (तद्) क्रि.—दे. डलसु।

डलसु तवु (क) क्रि.—कम हो, घट, बेकार हो, अंत हो, क्षीण हो, नष्ट हो; नाश कर, घटा। सं.—नाश, क्षीणता, क्षय, घटना।

डलसु तवुगे, डलसु तौगे, डलसु तवुकु (क) सं.—नाश, क्षय, अंत।

डलसु तवुडु (क) क्रि.—दे. डलसु।

डलसु तवुडे (क) सं.—झरखेरी या करौंदा वृक्ष।

डलसु तवुडगि (क) सं.—अजगंधि नामक पौधा।

डलसु तवुडु (क) सं.—दे. डलसु।

डलसु तवुरु (क) सं.—दे. डलसु।

डलसु तवुरु, डलसु तवुरु (क) सं.—मायका, माता का घर।

डलसु तवुलित (क) सं.—लड़ाई या एक दौंव-पेंच।

(१) डलसु तवे (क) क्रि.—सब सवे — घिस जा, घट जा; पर्याप्त न हो; नष्ट हो; असंतुष्ट हो। वि.—अधिक, पूरा, पूर्णतः, अच्छी तरह।

(२) डलसु तवे (अ. दे.) सं.—तवा (हिं)।

डलसु तसकलु, डलसु तसकु (तद्) सं.—[‘तस्कर’ से]—ठगई, धोखा, छल, कपट।

डलसु तसकने (क) अ.—‘तसक्’ शब्द के साथ।

डलसु तसदीकु, डलसु तस्तीकु (अ. दे.)

सं. — तसद्दुक् (अरवी) ; त्याग, दान, भक्ति, खैरात ।
 डंरुं तस्कर (सम्) सं.—चोर, डाकू ; चोरी ।
 डंरुं तस्करे (सम्) सं.—छी चोर ।
 डंरुं तहकीकु (अ. दे.) सं. — तहकीकु (अरवी) ; सत्य का अन्वेषण ।
 डंरुं तहसीलु, डंरुं तासीलु (अ. दे.) सं.—तहसील (अरवी) ; लगान या कर की आमदनी । डंरुं दार = तहसील-दार ।
 डंरुं तहतह (क) सं. — उताबलापन, कौतूहल ; व्याकुलता ।
 डंरुं तहिकार [डंरुं तहिकार] (क) सं.—साथी ।
 डंरुं तळ (क) क्रि.—जुड़, लग, संलग्न हो, संयुक्त हो, मिल जा, अत्यधिक पास आ ; प्रकट हो ; विघ्न हो, बाधा उपस्थित कर, रुकावट बन ; विरोध कर, प्रतिहत हो ;
 (१) डंरुं तळ (क) सं.—डर, भ्रम, घबराहट, चकित होना ; उबलते समय आनेवाली ध्वनि ; विपर्यय, अंतर ; चमक, दमक, कांति ; सूर्योदय ।
 (२) डंरुं तळ (तद्) सं.—स्थल (तत्) ; स्थान, जगह ; तलवा ।
 डंरुं तळकु (क) सं.—कांति, छवि, दमक, चमक ।
 डंरुं तळप, डंरुं तळपु, डंरुं तळपु (क) सं.—कांति, छवि, चमक ; बाल का रंग, कालापन ।
 डंरुं तळमळिषु (क) क्रि.—वैचैन हो, घबरा जा ; तिलमिला ।
 डंरुं तळर (क) क्रि.—हिल ; काँप, थर-थरा ; चल, निकल । सं.—हिलना, चलना, निकलना ; थरथराना, काँपना ।
 डंरुं तळरु (क) क्रि.—चल, निकल, प्रस्थान कर ।
 डंरुं तळल् (क) क्रि.—खिल (कली का खिलना), विकसित हो ।
 डंरुं तळवर (तद्) सं.—दे. डंरुं ।
 डंरुं तळवु, डंरुं तळहु (क) सं.—रुकावट, विघ्न, बाधा ; देर, विलंब ।

डंरुं तळहदि, डंरुं तळहि (तद्) सं.—नींव, बुनियाद ।
 डंरुं तळामळ (तद्) सं.—हथेली पर का आँवला ।
 डंरुं तळार (तद्) सं.—दे. डंरुं ।
 डंरुं तळि (क) क्रि.—जल, सेचन कर, छिड़क ; छिटक ; खिल, विकसित हो ; पल्लवित हो ; किसलय निकल ; प्रकट हो, व्यक्त हो । सं.—छिड़कना, जलसेचन ; बाड़ ; मेड़ ; आश्रय स्थान, सुसाफरखाना ; धर्मशाला, ब्राह्मणों को भोजन देने का स्थान ; वंश, पीढ़ी ; नस्ल ; काँपल, पल्लव ; लकड़ी का टुकड़ा । वि.—स्वच्छ, साफ, निर्मल ।
 डंरुं तळिगे (क) सं.—थाली ।
 (१) डंरुं तळिर् (क) क्रि.—खिल, पल्लवित हो ; किसलय निकल ।
 (२) डंरुं तळिर्, डंरुं तळिर् (क) सं.—पल्लव, किसलय ; काँपल ।
 डंरुं तळिर्चु (क) क्रि.—पल्लवित या विकसित होने दे ।
 डंरुं तळिसु (क) क्रि.—चूर्ण कर, पुड़िया कर, कूटकर चावल का चोकर निकाल ; छिड़क, छिड़का ।
 डंरुं तळु (क) सं.—दे. डंरुं ।
 डंरुं तळुकु (क) सं.—स्थिरता, अचलता । क्रि.—आघात कर, प्रहार कर, चोट कर ; रोक ।
 डंरुं तळुगु (क) क्रि.—हाथ से रगड़ ; रोक ।
 डंरुं तळुपु (क) सं.—दे. डंरुं ।
 डंरुं तळवु (क) सं.—स्थिरता, अचलता ; विघ्न, देर, विलंब । क्रि.—रोक ; देर कर, विलंब कर ; अचल हो ; आकुल हो ।
 डंरुं तळे (क) क्रि.—आधार हो, सहारा बन, धारण कर, वहन कर ; दूसरे के ऊपर डाल (जैसे कपड़े आदि) ; ढो ; पा ; प्राप्त कर ; ले, धर । सं.—बंधन-सूत्र, पगहा ; पागल-पन, अज्ञाति ।
 डंरुं तळकु (क) क्रि.—शरीर पर । गंधादि का लेपन कर । सं.—लेपन ।

डंरुं तळपडि, डंरुं तळपडि (क) सं.—निकासना, हटाना ।
 डंरुं तळवु (क) क्रि.—काल-हरण कर, यों ही समय बिता ; देर कर ; प्रतीक्षा कर । सं.—विलंब, देर ; कालहरण ।
 डंरुं तळळंक (क) सं.—भय, भीति, घबराहट ।
 डंरुं तळळि (क) सं.—संबंध, सम्मेलन, संघ ; विग्रह, झगड़ा छेड़ना ; निंदा, आक्षेप, अभियोग ।
 डंरुं तळळु (क) क्रि.—ढकेल, आगे की ओर धक्का दे ; चला ; फेंक ; अस्वीकार कर, अमान्य कर, तज । सं.—ढकेलना ; मेवा ।
 डंरुं तळल् (क) सं.—मेवा ।
 डंरुं तळि (क) सं.—लाठी डंडा, बड़ी लकड़ी का टुकड़ा स्थूलदार ।
 डंरुं तळे (क) सं.—छाता, छतरी ।
 डंरुं तळिक्कु, डंरुं तळिक्कु (क) क्रि.—आलिंगन कर ।
 डंरुं तळिक्के (क) सं.—आलिंगन ।
 डंरुं तळिगु (क) क्रि.—दे. डंरुं ।
 डंरुं तळ्पल् [डंरुं तळ्पल्] (क) सं.—डंरुं ।
 डंरुं तळ्पु, डंरुं तळ्पु (क) सं.—दे. डंरुं ।
 डंरुं ता (क) सर्व.—मैं, अहं का भाव । क्रि.—ले, आ, ला ।
 डंरुं तां (क) सर्व.—आप, स्वयं, खुद ।
 डंरुं तांकु (क) सं.—स्पर्श, छूना, जुड़ना ; मिलन स्थान ; खेत, मैदान ; संगीत में मेल ।
 डंरुं तांगु (क) क्रि.—मिल, जुड़, लग ; टकरा ; छू ; ले, धर, धारण कर, वहन कर, आधार बन ।
 डंरुं तांडु (क) क्रि.—लौघ, पार कर ; उछल नाच ।
 डंरुं तांडव (सम्) सं.—नृत्य, नाच, विदोष कर शिवजी का मृत्य ।

उ०००० ताम्र

उ०००० ताम्र (क) सं.—दे. उ००००.
 उ०००० ताम्र (अ. दे.) सं.—उ००००.
 उ०००० ताम्र (सम्) वि.—श्रांत, थका हुआ,
 क्षिणिल, संतप्त ; मुरझाया हुआ ।
 उ०००० ताम्र (सम्) वि.—तंत्र संबंधी,
 कला या सिद्धांत में निपुण ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (तद्) सं. ताम्र
 (तत्) ; ताम्र ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—एक वृक्ष The tree
 Dolichan drone falcate seem) ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (क) सं.
 —थाली ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—ताम्र. पान ;
 सुपारी ।
 उ०००० ताम्र (सम्)—नागलता, पान
 का पौधा ; पान बेचनेवाला ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—तंबोली,
 पान बेचनेवाला ।
 उ०००० ताम्र (तद्) सं.—उ००००.
 उ०००० ताम्र (क) सं.—कछुवा ।
 उ०००० ताम्र (क) क्रि.—छुआ, स्पर्श करा ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र, उ००००
 ताम्र (अ. दे.) सं.—ताम्र (अरबी) ;
 जागृति की आज्ञा ।
 उ०००० ताम्र (क) क्रि.—स्पर्श कर, छू, छुड़,
 मिल, लग ; टकरा । सं.—स्पर्श, छूना,
 मिलन स्थान ; खेत, मैदान ; संगीत में
 मेल ।
 उ०००० ताम्र उ०००० ताम्र (क) सं.—
 क्रोध, रोष, रौद्र, भयंकरता ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.— मिलन स्थान,
 खेत, मैदान ; संगीत में मेल ।
 उ०००० (क) क्रि. = उ०००० ताम्र ।
 उ०००० ताम्र (क) क्रि. = उ०००० ताम्र—ठहर ;
 लॉघ, पार कर, छूद । सं.— झुकना ; टेढ़ा
 होना ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—छिपने का स्थान ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—(बच्चों की बोली में)
 स्तन ।

उ०००० ताम्र (अ. दे.) सं.— ताम्र, नया,
 नवीन ।
 उ०००० ताम्र (सम्)—राम ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (सम्) सं.—
 ताम्र नामक राक्षसी जिसको राम ने मारा
 था । — उ०००० ताम्र (सम्) सं.— झगड़
 स्वभाव ।
 उ०००० ताम्र (तद्) सं.— झगड़ालू
 स्त्री ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— कानों की बाली ।
 उ०००० ताम्र (तद्) ।
 उ०००० ताम्र (क) क्रि.—लगा ; पीट ।
 उ०००० ताम्र (क) क्रि.—लग, रगड़ खा, छू ;
 पीट । सं.—लगना, संघटन, रगड़ ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—एक तृण विशेष ;
 धक्का ; मारना, पीटना ; शब्द, शोर, धड़-
 कन ; तालवृक्ष ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र
 (सम्) सं.—ताम्र, मारना, कोड़ा लगाना ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (तद्)
 सं.— व्यजन. ताम्र के पत्ते का पंखा ।
 उ०००० ताम्र (तद्) सं.— ताम्र, तालवृक्ष क
 रस, शराब ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—एक प्रकार का
 बतख ।
 उ०००० ताम्र (सम्) क्रि. — मार, कोड़े
 लगा, पीट ।
 उ०००० ताम्र (तद्) सं.—स्थान (तत्) ; ताल ;
 (तत्) ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— पिता ; पितामह,
 दादा ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—बहुत छेद
 या रंध्र, पूरे के पूरे छेद ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र,
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (क?) सं.—ताम्र (अरबी) ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— अभिप्राय,
 आशय, उद्देश्य, सारांश ; अर्थ, अवार्थ,
 विवरण ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—उपेक्षा, तिर-
 स्कार, घृणा, निंदा ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (क) सर्व.— आप,
 खुद, स्वयं ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— सूत, रेशा ;
 संगीत में तान, आलाप ।
 उ०००० ताम्र. उ०००० ताम्र (अ. दे.) सं.—कपड़े
 का बंडल या टुकड़ा ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— गरमी, भभक ; दुःख,
 पीड़ा, संकट ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—तीन ताम्र—
 दैहिक, दैविक और भौतिक ; अद्भुत ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—साधु, धर्मेनिष्ठ ;
 तपस्या संबंधी ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—[उ०००० ताम्र
 —तमिल] कुंडी, अर्गल ।
 उ०००० ताम्र (सम्) क्रि.— गरम हो ;
 जल ; पीड़ा सह ; सावधान करना ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—नाच घर, विट-गृह ।
 उ०००० ताम्र (अ. दे.) सं.—एक प्रकार का
 रेशमी कपड़ा ।
 उ०००० ताम्र (क) सं.—कछुवा ।
 उ०००० ताम्र (क) सर्व.—आप, स्वयं (अन्य
 पुरुष व. व.)
 उ०००० ताम्र (क) सं.— गर्व, अहंभाव,
 घमंड ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—सोना ; स्वर्ण ;
 ताम्र ; कमल ।
 उ०००० ताम्र, उ०००० ताम्र (क) सं.—
 कमल ; एक प्रकार का कुछ रोग ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—भूम्यामलकी
 वृक्ष ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—अंधकार ; दुष्टजन ;
 अधमजन ; साँप ; घुघू ; उल्लू ; एक
 मनु का नाम ; शिवजी का एक अनुचर ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.— रात, निशा ।
 उ०००० ताम्र (सम्) सं.—ताँवा ; ताँवे के
 सङ्घ लाल रंग ; एक प्रकार का कुछ
 रोग ।

ठालवृंत ताम्रक

ठालवृंत ताम्रक (सम्) सं.—ताँवा ; ताँवे का लोटा ।
 ठालवृंत ताम्रकर्ण (सम्) सं.—पश्चिम दिशा के हाथी अंजन की हथिनी का नाम ।
 ठालवृंत ताम्रचूड (सम्) सं.—मुर्गा, कुकुर ।
 ठालवृंत ताम्रतुंड (सम्) सं.—तोता ।
 ठालवृंत ताम्रध्वज, ठालवृंत ताम्रकेतु (सम्) सं.—एक राजा का नाम जिसकी कथा जैमिनि-भारत में वर्णित है ।
 ठालवृंत ताम्रपर्ण (सम्) सं.—दक्षिण भारत की एक नदी ; लंका के एक नगर का नाम ।
 ठालवृंत ताम्रमुखि (सम्) सं.—ताँवे के सदृश्य मुखवाला, गोरा आदमी (European) ।
 ठालवृंत ताम्राक्ष (सम्) सं.—कौआ ; कोयल ।
 ठालवृंत ताम्राधरे (सम्) सं.—लाल होंठ-वाली स्त्री ।
 ठालवृंत ताय, ठालवृंत तायि, ठालवृंत ताये (क) सं.—माता, माँ । ठालवृंत तायंतदे ठालवृंत तायितंदे = माँ बाप ।
 ठालवृंत तायत, ठालवृंत तायति (क) सं.—दे. ७३.
 ठालवृंत तार, ठालवृंत तारो (क) क्रि. रू.—ला, लाओ । स्त्री. लिं. में ठालवृंत तारे का प्रयोग होता है जिसका अर्थ है—आओ री ।
 (१) ठालवृंत तार (सम्) वि.—उँचा, उच्च ; चमकदार ; उत्तम, श्रेष्ठ, स्वादिष्ट । सं.—नदीतट ; मोती की चमक ; उच्चस्वर ; ग्रह, नक्षत्र ; नदी ; पर्वत ; पहाड़ ; सफेद रंग ; चाँदी ; आँख की पुतली ; एक राक्षस का नाम ; मोती ।
 (२) ठालवृंत तार (अ.दे.) सं.—धोखा, छल ।
 ठालवृंत तारक (सम्) वि.—ले जानेवाला, रक्षक, उद्धारक । सं.—एक राक्षस का नाम जिसे कार्तिकेय ने मारा था ।—छत्र जित (सम्) सं.—कार्तिकेय ।—मदन मथन (सम्)

सं.—कार्तिकेय ।—७० अरि, ०७ रिपु = कार्तिकेय ।
 ठालवृंत तारकराज (सम्) सं.—चंद्रमा ।
 ठालवृंत तारकि (सम्) सं.—नक्षत्र, तारा ; चित्रा नक्षत्र ; विशाख नक्षत्र ।
 ठालवृंत तारके (सम्) सं.—नक्षत्र ; तारा ; आँख की पुतली ।
 ठालवृंत तारगे (तद्) सं.—तारक (तद्) ; नक्षत्र ।
 ठालवृंत तारण (सम्) सं.—पार होना, बचना ; नौका, वेड़ा ; अठारहवें वर्ष का नाम, तारण संवत् ।
 ठालवृंत तारणि (सम्) सं.—नाब, नौका ; वेड़ा ।
 ठालवृंत तारतम्य (सम्) सं.—न्यूनाधिक्य, थोड़ा-बहुत, अंतर ।
 ठालवृंत तारल् (क) सं.—झाड़ी ।
 ठालवृंत तराबल (सम्) सं.—नक्षत्रों का प्रभाव ।
 ठालवृंत तारिणि (सम्) सं.—दुर्गा ; बौद्धों की एक देवी ।
 ठालवृंत तारीकु, ठालवृंत तारीखु (अ.दे.) सं.—तरीख (अरबी) ; तिथि, दिनांक ।
 ठालवृंत तारु (क) सं.—अपशकुन ।
 ठालवृंत तारुण्य (सम्) सं.—यौवन, युवा-वस्था, जवानी ।—२३ वति (सम्) सं.—युवती, जवान लड़की ।
 ठालवृंत तारे (सम्) सं.—तारा, नक्षत्र ; आँख की पुतली ; सुंदर या स्वच्छ मोती ; चाँदी ; हवा, वायु ; बृहस्पति की पत्नी का नाम ; वाली की पत्नी का नाम ।
 ठालवृंत तारु (क) क्रि.—सूख, सूखा हो, झड़ जा, शोषित हो । सं.—अशुभ ।
 ठालवृंत तारुडि (क) सं.—रूखापन सूखापन ।
 ठालवृंत तारि (क) सं.—एक बड़ा वृक्ष, कलि-द्रुम (Terminalia belerica) ।
 ठालवृंत तारिग (क) सं.—सूखी वस्तुओं का ढेर ।
 ठालवृंत तारु (क) वि.—सूखा, सूखा । क्रि.—

थोड़ा रह, ठहर, व्यस्त होकर हिल ; दौड़ ।
 सं.—सुपारी का गुच्छ ।
 ठालवृंत तारु, ठालवृंत तारु (अ.दे.) सं.—Tar (अंग्रेजी), तारकोल ।
 ठालवृंत तारे (क) सं.—दे. ७३.
 ठालवृंत तारके ठालवृंत तारके (क?) सं.—प्रत्यक्ष निरीक्षण ।
 ठालवृंत तारिक (सम्) सं.—न्यायदर्शनवेत्ता, तर्कशास्त्रज्ञ ।
 ठालवृंत तार्क्य (सम्) सं.—गरुड ; घोड़ा ; अरुण ; गाड़ी ; सर्प ; पक्षी ।—ध्वज (सम्) सं.—विष्णु ।—ठालवृंत नायक (सम्) सं.—गरुड ।—ठालवृंत शैल (सम्) सं.—एक प्रकार का काजल या अंजन ।
 ठालवृंत तार्ण (सम्) सं.—एक प्रकार की घास ।
 ठालवृंत तार्य (सम्) वि.—पार करने योग्य ; जीतने योग्य । सं.—नाव का किराया, भाड़ा ।
 ठालवृंत ताल (सम्) सं.—तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ ; ताली बजाना ; संगीत में ताल ; फड़फड़ाहट, हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ; तलवार की मूँठ ; चटखनी, ताला ।
 ठालवृंत तालक (सम्) सं.—हटताल ; चटखनी, ताला ।
 ठालवृंत तालजंघ (सम्) वि.—ताड़ के वृक्ष के समान जौघवाला ।
 ठालवृंत तालध्वज (सम्) सं.—बलराम ।
 ठालवृंत तालनंदन (सम्) सं.—ताड़ के वृक्षों का कुंज ।
 ठालवृंत तालरत्र, ठालवृंत तालपत्रिक (सम्) सं.—ताड़ का पत्ता ; ताड़ के पत्ते से बनाया गया कर्णाभरण ।
 ठालवृंत तालपर्ण (सम्) सं.—एक प्रकार सुगंध द्रव्य, वनसौंफ ।
 ठालवृंत तालमधु (सम्) सं.—ताड़ी, शराब ।
 ठालवृंत तालवृंत (सम्) सं.—पंखा, व्यजन ।

अण्ड तालव्य

अण्ड तालव्य (सम्) वि. — ताल से संबंधित ।
 अण्ड तालांक (सम्) सं. — बलराम ।
 (१) अण्ड तालि (क) सं. — मांगल्य, मंगल-सूत्र का आभरण ।
 (२) अण्ड तालि (तद्) सं. — स्थाली (तत्); कटोरा, बटलोई ।
 अण्ड तालीसु (अ. दे.) सं. — तालिम (अरबी); शिक्षण; कुस्ती ।
 अण्ड तालु (सम्) सं. — ताल ।
 अण्ड तालुक, अण्ड तालुकु (अ. दे.) सं. — तालुक, तहसील, जिले का एक भाग ।
 अण्ड तावड (क) सं. — पत्रहार, पत्र-मणियों का हार ।
 अण्ड तावरे (क) सं. — कमल, पद्म ।
 अण्ड तावि (क) सं. — घोड़े के पैरों में पहनाने का चाँदी या सोने का बलय ।
 (१) अण्ड तावु (तद्) सं. = स्थान (तत्); जगह, स्थान ।
 (२) अण्ड तावु (क) सर्व. — आप (आदर-सूचक); स्वयं, आप, खुद (अन्यपुरुष व. व. में) ।
 (३) अण्ड तावु, अण्ड ताव (अ. दे.) सं. — ताव, कागज़ का पत्रा ।
 अण्ड तालीसु (अ. दे.) सं. — दे. उल्लेख ।
 अण्ड तासु (क?) सं. — एक घंटा ।
 अण्ड ताहि, अण्ड ताहे (क) सं. — दे. अण्ड ।
 अण्ड तालु, अण्ड तालु (क) क्रि. — सहन कर, सत्र कर, थोड़ा रह, थोड़ा ठहर, प्रतीक्षा कर, शांत रह; धारण कर, धर, वहन; पा ले. प्राप्त कर; क्षमा कर, मार्जन कर; हूय. झड़ ।
 अण्ड ताल (तद्) सं. — संगीत में ताल ।
 अण्ड तालद, अण्ड तालिद, अण्ड तालद, अण्ड तालु (क) सं. — साग, उबालकर मिच-मसाला मिलाई हुई तरकारी ।
 अण्ड तालि (क) सं. — दे. अण्ड (१)
 अण्ड तालिके अण्ड तालिमे अण्ड तालमे

(क) सं. — सहनशीलता, सत्र करना. शांति, सहना ।
 अण्ड तालिसु (क) क्रि. — १. खाना परिपक्व कर या बना; तीक्ष्ण या नुकीला बना (जैसे आयुध) ।
 अण्ड तालु (क) क्रि. — दे. अण्ड ।
 अण्ड तालुमे, अण्ड तालुविके (क) सं. — दे. अण्ड ।
 अण्ड ताले (तद्) सं. — ताल: (तत्); ताड़ का पेड़ ।
 अण्ड तालुदु (क) क्रि. — धर, धारण कर ।
 (१) अण्ड ताल (तद्) सं. — ताल: (तत्); ताड़ का पेड़ ।
 (२) अण्ड तालु अण्ड तालु (क) सं. — कुण्डी, अर्गला; धान, फूल आदि का तना; तल, निचला भाग, निम्नता ।
 अण्ड ताल (क) सं. — रथ, गाड़ी का निचला भाग ।
 अण्ड तालु (क) सं. — तना, डंटल, निचला भाग, तल ।
 अण्ड ताले (क) सं. — एक प्रकार का सुगंधित पुष्प (Pandanus flower) ।
 अण्ड तालि, अण्ड तालि, अण्ड तालि (क) सं. — महीना, मास; चंद्र ।
 अण्ड तालिमे (क) सं. — तिलक, टीका ।
 अण्ड तालिमे (क) सं. — संक्रांति का अगला दिन ।
 अण्ड तिदि (क) सं. — खाना, मिठाई, नाश्ता, अल्पाहार, भक्ष; खुजली ।
 अण्ड तिदि, अण्ड तिदि (सम्) सं. — इमली, इमली का पेड़ ।
 अण्ड तिदि (क) सं. — समूह, समुदाय, भीड़, श्रेणी, गिरोह, भीड़भाड़ । — यस्मि हसु = भीड़ हो ।
 अण्ड तिदु, अण्ड तिदु (क) क्रि. रू. — (उसने) खाया — नपुंसक लिंग — अन्यपुरुष एक वचन ।
 अण्ड तिदु, अण्ड तिदु (सम्) सं. — तेंदू का पेड़ ।

अण्ड तिदि (क) सं. — अपव्ययी, धन उढ़ानेवाला ।
 अण्ड तिदि (क) क्रि. — खाना खा, रोटी आदि खा । सं. — पूर्णता, अधिकता ।
 अण्ड तिदु (क) क्रि. — भर, पूरा कर; खाना खा । यस्मि हसु अण्ड तिदु हसु हल्लु तिदु तदे (या अण्ड तिदु तिन्नुत्तदे) — गाय घास खाती है ।
 अण्ड तिदुविके (क) सं. — खाना (Eating) ।
 अण्ड तिदु (क) सं. — सनकी स्वभाव, पागलपन; तुतलाहट ।
 अण्ड तिदु (क) क्रि. — रगड़वा, मर्दन करा ।
 अण्ड तिदु (क) क्रि. — मर्दन कर, रगड़; कठोर व्यवहार कर, दुःखा ।
 अण्ड तिदु (सम्) वि. — तीता, कहुआ ।
 अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदे, अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदे, अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदे, अण्ड तिगदु (क) सं. — छिलका, छाल, बल्कल ।
 अण्ड तिगदि (क) सं. — कपट, छल, वंचना ।
 अण्ड तिगदु (क) सं. — मण्डूकपर्ण नामक वृक्ष ।
 (१) अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदे (क) सं. — दे. अण्ड ।
 (२) अण्ड तिगदु (क) क्रि. — दे. अण्ड ।
 अण्ड तिगणे (क) सं. — खटमल ।
 अण्ड तिगदि, अण्ड तिगुरि (क) सं. — चक्र, कुम्हार का चक्र ।
 अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदु (क) सं. — तमिल-वाला, द्रविड ।
 अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदु (क) सं. — अण्ड तिगदु का स्त्री. लिं. तमिल-वाली, द्रविड स्त्री ।
 अण्ड तिगदु, अण्ड तिगदे (क) सं. — दे. अण्ड ।
 अण्ड तिगणे (क) सं. — दे. अण्ड ।
 अण्ड तिगुरि (क) सं. — दे. अण्ड ।
 (१) अण्ड तिगुर (क) क्रि. — मल, मोज,

अरुगण तिरुगणि, अरुगण तिरुगणे. (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगणु (क) क्रि.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगु (क) क्रि.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगुणि (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगुविके (क) सं.—धूमकड़ी, धूमना-फिरना, भ्रमण।

अरुगण तिरुगुह (क) सं.—निष्कृति, ऋण से छुटकारा।

अरुगण तिरुप (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुपु (क) सं.—धूमनेवाला, सोने या चाँदी के आभरण (कर्णभरण, नथ आदि) की रूक। क्रि.—चक्र काटने दे, घुमा।

अरुगण तिरुपे (क) सं.—दे. अरुगण. — गार=मिथारिणी।

(१) अरुगण तिरुवु (क) क्रि.—धुमा, फेर, चक्र काटने दे।—कल्लु (क) सं.—(ओखली में) पीसने का पत्थर।

(२) अरुगण तिरुवु (क) सं.—धूमना, फिरना; धनुष की डोर।

अरुगण तिरुहु (क) क्रि.—फिरा, घुमा, चक्र काटने दे। सं.—फेर, चक्र।

अरुगण तिरुल्ल, अरुगण तिरुल्लु (क) सं.—अरुगण.

अरुगण तिरुगणन (सम्) सं.—अंतर्धान, लोप, अदृश्य होना।—असु (सम्) क्रि.—अंतर्धान हो, दिखाई न पड़, छिप जा।

अरुगण तिरु (क) क्रि.—विनिमय कर; प्रदान कर, दे दे।

अरुगण तिरु, अरुगण तिरु (क) सं.—शीघ्रता से किसी चीज़ को फेंकने की क्रिया। अरुगण तिरु (क) क्रि.—काट, काट डाल; जुटा।

अरुगण तिरु, अरुगण तीरु (क) क्रि.—चुका, पूरा कर; परिहार कर; नाश कर। अरुगण तिरु (क) क्रि.—सीधा कर। सं.—सीधापन।

अरुगण तिरु, अरुगण तिरु (क) सं.—धनुष की डोरी।

अरुगण तिरु, अरुगण तिरु (सम्)

वि.—टेढ़ा, तिरछा, बाँका, झुका हुआ, चक्र, मुड़ा हुआ। सं.—टेढ़ी चाल चलने-वाला पशु या पक्षी।

अरुगण तिरु (सम्) सं.—तिल; तिल का पौधा।

अरुगण तिरु (सम्) सं.—वृक्ष विशेष (क्षुरक); शरीर पर का छोटा-सा काला चिह्न विशेष; तिलक; टीका; अलंकरण; दो वृत्तों का नाम; एक प्रकार का घोड़ा; फुफ्फुस; फूली हुई कोई वस्तु।—अरुगण तिरु (सम्) सं.—क्षुरक वृक्ष।

अरुगण तिरु (सम्) सं.—तिल का तेल।

अरुगण तिरु (सम्) सं.—तिल का खेत।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—एक तरह का गीत।

अरुगण तिरु (क) क्रि.—चुभ, भोंक; मुष्टि प्रहार कर, मुष्टि से मार; कुत्ते के गले के बंधन को खोल। वि.—चुभनेवाला।

अरुगण तिरु (क) सं.—चुभना, चुभन, भोंकना।

अरुगण तिरु (सम्) सं.—पुण्य नक्षत्र; पौष मास।

अरुगण तिरु (तद्) सं.—त्रिशूल (तद्), त्रिशूल।

अरुगण तिरुगणन तिरुगणन (क) सं.—एक प्रकार का खेल जमीन पर लकीरें खींचकर आमने-सामने के दल पार करने का प्रयत्न करते हैं।

अरुगण तिरु (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगणन तिरुगणन (क) सं.—समझ, बुद्धि, ज्ञान, जानकारी।

अरुगण तिरु (क) क्रि.—समझ, ज्ञान प्राप्त कर, जानकारी प्राप्त कर; समझ में आ, साफ हो, निर्मल हो; मालूम हो। सं.—निर्मलता, स्वच्छता, समझ, समझदारी, सूझ, मालूम होना, स्पष्टता; चपक, पीने का बर्तन।

अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—समझा, मालूम करा, जता; शांत कर, क्रोध का उपशमन कर; शांत रह; तृप्ति पा; स्पष्ट कर, बता।

अरुगण तिरुगणन तिरुगणन (क) सं.—ज्ञानना, ज्ञान, अनुभव।

अरुगण तिरुगणन तिरुगणन (क) सं.—दे. अरुगण तिरुगणन (क) सं.—दे. अरुगण तिरुगणन.

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—शांति, स्नेह, सौहार्द, प्रणय; ज्ञान, जानकारी, बुद्धि।

अरुगण तिरुगणन, अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगणन, अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—ज्ञान ले, समझ ले; मालूम कर।

अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—अरुगण.

अरुगण तिरुगणन तिरुगणन, अरुगण तिरुगणन (क) सं.—दे. अरुगण तिरुगणन.

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—अरुगण तिरुगणन — कृशता, महीन या पतला होना।

अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—समझा, जता, ज्ञान करा, मालूम करा।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—ज्ञान, जानकारी, बुद्धि, मति।

अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—जल, दग्ध हो, झुलसा। सं.—आग।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगणन (सम्) वि.—पैना, तीव्र; गरम; उग्र, प्रचंड; कड़ा, जोरदार, दृढ़; कर्कश, कठोर, टेढ़ा; हानिकार, अशुभ; कुशाग्र; चतुर, बुद्धिमान; डाही; त्यागी, भक्त। सं.—विष; कोई आयुध; तीव्रता, तीक्ष्णता, लोहा; युद्ध, समर।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—लता, लतिका; तार, धीणा का तार।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—रगड़ना, फूंकना।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—खुजली, खुजलाहट, सुर-सुरी; अत्यधिक कामना; तीव्रच्छा, लालसा; व्यर्थ झगड़ा; सरोकार।

अरुगण तिरुगणन (क) क्रि.—मल, रगड़, दबा, तेज़ कर, तीक्ष्ण कर; सुधार; हवा बह, झल, झू, स्पर्श कर; रो, रोदन कर; ऐंठन डाल।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—खाऊ, पेदू।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—खाना, आहार, भोजन।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—दे. अरुगण.

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—मेड़ का खूँटा।

अरुगण तिरुगणन (क) सं.—लौंग, लौंग का वृक्ष।

ॐॐ तीर्थ (सम्) सं. — ॐॐ तीर्थ—
(तद्)—रास्ता, मार्ग, घाट, सोपान ; पुण्य-
क्षेत्र, जलस्थान ; नदी, तटाक ; हाथ के
कई भाग जो देवकार्य और पितृकार्य के
लिए पवित्र माने जाते हैं ; पवित्र व्यक्ति,
आदि दर्शन, पङ्कदर्शन ; सद्वंशज, ब्राह्मण ;
अष्टादश ; मंत्री जो राजा के सहायक होते
हैं ; यति, मुनि ; विद्वान् ; जिन ; पतिव्रता

उ००८ तुंड (सम्) सं.—मुखः चेहरा, चोंच,
थूथन (सुभर का); हाथी की सूँड;

हो ; सदाक्त हो ; भर, पूर्ण कर ; भा (उदा-

...देवदुर्ग उचन नुं डुंभु डुंभु देवरु अवन
मे तुंभु डुंभु—भगवान् उसके शरीर पर
आये। सं.—भराव, पूर्णता; वृत्त, डंठल,
नाभि, पिंडिका।

(१) डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (सम्)
सं.—एक गंधर्व का नाम।

(२) डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.
डुंभु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभु; द्रोण, सफेद
(छोटे-छोटे) फूलों का पौधा।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (अ. दे.) सं.—
सेना का एक भाग, टुकड़ी, रोटी का
टुकड़ा।

डुंभु तुंभु, डुंभु तुंभु (क) सं.— जंग,
सुरचा, धातु का मैल।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे.
डुंभु—द्वार दार (अ. दे.) सं.— ज़िले
का अधिकारी।

डुंभु तुंभु (क) सं.—दे. तुंभु क्रि.— भीड़
हो, घेर, झपट।

डुंभु तुंभु (सम्) वि.— हल्का, खाली,
रहित, व्यर्थ; नीच, कमीना; छोटा, तिर-
स्करणीय; गरीब, अभागा।

डुंभुडु तुंभु (क?) सं.—उपेक्षा, तिरस्कार,
धृणा, निंदा।

डुंभु तुंभु (क) सं.—अधर, होंठ, ओष्ठ।

डुंभु डुंभु तुंभु (क) सं.—विलकुल अंतिम
(वस्तु)।

डुंभु तुंभु (तद्?) सं. ज़ुटि (तद्?) — मँह-
गाई, अधिक दाम, बहुत दाम।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—शक्ति कम हो या
घट, निर्बल हो।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—चोर, तस्कर, दगा-
बाज, ठग।

डुंभु तुंभु (क) सं.—स्त्री चोर, ठगिनी,
धोखेबाज स्त्री।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—चोरी, डकैती, लूट-
मार, धोखा, दगा, चोरी गई वस्तु।

डुंभु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभु तुंभु (क) सं.—चोरी का माल।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—फल का भंडार।

डुंभु तुंभु (क) सं.—पहनने के वस्त्र, पह-
चनाव, गहना।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु
डुंभु (क) क्रि.—पहना, पहनना, धारण
करा या करवा।

डुंभु तुंभु (क) क्रि.—पहन, धर, धारण कर;
धनुष पर (बाण) चढ़ा। सं.— पहनना,
धारण।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—ग्रहण कर, पक-
ड़वा, झट पकड़वा।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—सत्वर, ग्रहण कर,
झट पकड़, छीन।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु — डं
तन=चोरी; धोखा; नटखटी।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—नौकादण्ड, नाव का

डंडा।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—एक प्रकार का डोल।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.— टुकड़ा, भाग,
हिस्सा।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.— टुकड़ा, हिस्सा।
क्रि.— हिला।

डुंभु तुंभु (क) क्रि.—चल, पग रख; पैर से
कुचल।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—हिलवा (प्रे)।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.— हिल, हिलकर
नीचे गिर (जैसे बर्तन से पानी गिरता है)।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु
तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु (२).

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—निपुण, चतुर पुरुष।

डुंभु तुंभु (क) सं.—कौर, मुँहभर, ग्रास।

डुंभु तुंभु, डुंभु तुंभु (क) सं.—अंतिम भाग,
नोक, अग्र भाग, सिरा।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.—ऊन,
कोमल रोम, पशुमीना।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (अ. दे.)
सं.—तोप (तुर्की); बंदूक।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (अ. दे.)
सं.—तूफान (भरबी); आँधी।

डुंभु तुंभु (क) सं.—घी, घृत।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे.
डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.—
कोमल रोम; ऊन; पशुओं के कोमल
रोम।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—पंख, फर; कोमल
रोम; खरगोश आदि के कोमल रोम।

डुंभुडु तुंभु (क) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (अ. दे.) सं.—दे. डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—चोर को पहचान,
अमुक चोर है—यह सूचित कर। सं.—
खोजा जाना।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.— दे.
डुंभुडु.

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (सम्) वि.
शोरगुल मचानेवाला, कोलाहल, शोरगुल।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—चेत, होश में
आ, जाग; प्रसन्न हो, प्रबोधित हो।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—भीग, गीला हो।

डुंभुडु तुंभु (क) क्रि.—खींच, घसीट; पसार।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (क) सं.

पायस, खीर।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (अ. दे.) सं.—

तुर्क, मुसलमान।

डुंभुडु तुंभु (अ. दे.) सं.— तुर्क देश का

घोड़ा।

डुंभुडु तुंभु (सम्) सं.—घोड़ा; सात फी
संख्या।—मैथिल मेघ=अश्वमेघ।

डुंभुडु तुंभु (सम्) सं.— घोड़ा; जेल;
अनुयास का एक भेद।— नदन वदन=

किन्नर; हयग्रीव।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (सम्) सं.—घोड़ा; एक
वृत्त।

डुंभुडु तुंभु, डुंभुडु तुंभु (अ. दे.)
सं.—तुरा (भरबी); पगड़ी के ऊपर रखने

का एक आभरण; फूलों का बंधा गुच्छा

जो आदरार्थ आदरणीय व्यक्ति के हाथ में दिया जाता है ।

ड००००००० तुराषाट्, ड००००००० तुराषाट् (सम्) सं.—इन्द्र ।

ड०० तुरि, ड००० तुरुवु (क) क्रि.—खराश, तराश । सं.—खुजली, खुजलाहट ।

ड००००० तुरीय (सम्) वि.—चौथा । —वर्ण=शूद्र ।

ड०००० तुरुक (अ. दे.) सं. दे. —ड००००.

ड००००० तुरुकिति (अ. दे.) सं.= मुस्लिम स्त्री ।

ड०००० तुरुवु (क) क्रि. और सं.—दे. ड००.

ड००००० तुरुक (सम्) सं.—दे. ड००००.

ड०००० तुरुकु (क) क्रि.—दे. ड०००००.

ड०००० तुरुगु (क) क्रि.—दे. ड०००००.

ड०००० तुरुचि (क) सं.—एक पौधा विशेष ।

ड०००० तुरुसु, ड०००० तुरुसु (क) क्रि.—खुरच, नोच ।

ड००००० तुरुकिं (क) सं.—खुजली, खुजलाहट ।

ड००००० तुरुचि (क) क्रि.—दे. ड००००.

ड०००० तुरु, [ड००० तुरु] (क) सं.—गाय, गौ ; मीठा नीम ।—ठार कार, ठार कार (क)

सं.—चरवाहा, ग्वाला ।

ड००००० तुरुकु, [ड०००० तुरुकु] (क) क्रि.—टूँस, घुसेड़, दबाकर भर ।

ड०००० तुरुग, ड०००० तुरुगु (क) सं.—

भीड़, जमाव ।

ड००००० तुरुगल् (क) सं.—भीड़, जमाव ।

ड०००००० तुरुगार, [ड००००० तुरुगार] (क)

सं.—गोपालक, ग्वाला ।

ड०००००० तुरुगार्ति (क) सं.—गोपकान्ता, ग्वालिन ।

ड००००० तुरुगु (क) क्रि.—भीड़ हो, जमाव हो, घिर आ, एकत्रित हो, इकट्ठा हो, आकीर्ण हो, संकीर्ण हो ।

ड०००००० तुरुगल् (क) सं.—दे. ड००००००.

ड००००० तुरुबि, ड००००० तुरुवे (क) सं.—

एक लंबा पौधा (Sida Indica) ।

ड०० तुरु, ड००० तुरु, ड००० तुरु (सम्) सं.—

तराजू ; माप, तौल ; समानता, सादृश्य ;

लगभग पाँच सेर का एक प्राचीन परिमाण ;

एक रुपये का एक तौला ; एक प्रकार का

बर्तन ; एक प्रकार की दिव्य परीक्षा (तोल-

कर की जाती है) ।

ड००० तुरुन (सम्) सं.—तोल ; तुलना ।

ड००० तुरुसी, ड००० तुरुसि (सम्) सं.—

तुलसी का पौधा ।

ड०००००० तुराभार (सम्) सं.—किसी

व्यक्ति के समतोल का सोना, चाँदी आदि

जो दूसरों को दान में दिया जाता है ।

ड००० तुल्य (सम्) वि.—एक ही प्रकार का,

बराबर, समान, सदृश्य ; उपयुक्त ;

अभिन्न ।

ड००० तुवर (सम्) वि.—कसैले स्वाद का ;

दाडी रहित ।

ड०००० तुवाल, ड०००० तुवाल (अ. दे.)

सं.—तौलिया ।

ड००० तुष (सम्) सं.—भूसा, भूसी ; कुटकी,

पिसू ।

ड०००० तुषार (सम्) सं.—कोहरा, सर्दी,

ओस, पाला । वि.—ठण्डा, कुहरे का ।—

ड००० अद्रि (सम्) सं.—हिमालय ।

ड००० तुष्ट (सम्) वि.—प्रसन्न, संतुष्ट वृत्त ।

ड००० तुष्टि (सम्) सं.—संतोष, प्रसन्नता,

आनन्द ।

ड००० तुसु, ड००० तुस, ड०००० तुसुकु (क)

वि.—थोड़ा, कुछ ।

ड०००० तुहिन (सम्) सं.—शीत, हिम, ओस,

कोहरा ; चाँदनी ; कर्पूर, कपूर ।—ड०००

कर (सम्) सं.—चाँद ।—ड००० गिरि =

हिमालय ।

ड००० तुरु, ड००० तुरुव, ड०००० तुरुवु (क)

सं.—तुरु बोली बोलनेवाला ; तुरु बोली ।

ड०००००० तुरुकायिसु, ड००००० तुरुकु (क)

क्रि. दे. ड०००००.

ड०००० तुरुसि (तद्) सं.—दे. ड००००.

ड०००० तुरुकु (क) क्रि.—दे. ड०००००.

ड०००० तुरुकु (क) क्रि.—दे. ड००००० ;

छिड़का, जलसेचन कर ; मिला, जोड़ ; फेंक—ड००० विक् (क) सं.—हिलना, टप-कना, प्राधार ।

ड०००००० तुरुकु (क) क्रि.—हिल, (बर्तन से) बाहर टपक ।

ड०००० तुरुकु (क) क्रि.—लुढ़क, जोर से उछल, कूद ।

ड०००० तुरुत (क) सं.—पैर से कुचलना ।

ड०००० तुरुति (क) क्रि.—पैर से कुचल, पैर से

मर्दन, पदाघात कर ; सता, आघात कर,

पीड़ा दे ; झड़ जा, निर्बल हो ; पैर से

कुचला जा, दबा जा ; बहिष्कृत हो ;

चारों ओर घुमा । सं.—पैर से कुचलना,

मर्दन करना, पदाघात ; कुचली गई वस्तु ।

ड०००००० तुरुकिल (क) सं.—सूखे पत्ते, मुर-

झाये या झड़े पत्ते ।

ड००००० तुरुत (क) सं.—दे. ड००००.

ड००००० तुरुल्लि, ड००००० तुरुल्लि (क) सं.

नमस्कार, नमस्ते, सिर झुकाना, हाथ जे-

कर प्रणाम करने की क्रिया ; वीरता, शूरता

बहादुरी ; काम, नौकरी, सेवा, गुलामी ।

ड००००० तुरुसु, (क) क्रि.—कुचलवा, पैर

मर्दन करवा ।

ड००००० तुरुहि, ड००००० तुरुत (क) सं.—

ड००००.

ड००० तू (क) सं.—घृणा सूचक शब्द ;

समय आनेवाली ध्वनि ; शहनाई की ध्वनि

ड००००० तूकु (क) क्रि.—तोल (तौलना),

झूल ; झुला । सं.—तौलने, हिलने

झूलने की क्रिया ;

ड००००० तूतु (क) क्रि.—प्रवेश करा

करवा । सं.—छेद, रंध्र ; धूकते

की ध्वनि ।

ड००० तूक (क) सं.—भार, वजन, तौल ;

योग्यता, गौरव ।

ड०००००० तूकिके (क) सं.—ऊँघ, तंद्रा ।

ड००००० तूकिके (क) सं.—तोलना ; तोलने

क्रिया ।

ड००००० तूकिरि, ड००००० तूकिरि (क) सं.

नाच, नृत्य ।

ॐॐॐ तूकु (क) सं.—भार, वजन; हिलना, झुमना ।

ॐॐॐॐॐ तूगलट (क) सं.—हिलना, आंदोलन ।

ॐॐॐॐ तूगिके (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ तूगिमु (क) कि.—तोलना, झूलना, हथर-वधर हिलने दे ।

ॐॐॐॐ तूगु (क) कि.—तोल; झूल, झूम, लटक, हिल, लहरा । सं.—तोलना; झूलना, लटकना आदि ।

(१) ॐॐॐ तूण (क) सं.—आवेश, खलबली ।

(२) ॐॐॐ तूण,, ॐॐॐ तूणि, ॐॐॐॐॐ तूणीर (सम्) सं.—तरकस ।

ॐॐॐॐ तूतु (क) सं. छेद, रंध; बिल ।

ॐॐॐॐ तून (तद्) सं.—स्थूणा (तत्); खंभा । ॐॐॐॐ तूपरे, ॐॐॐॐ तूयरे (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ तूपर, ॐॐॐॐ तूपर (क) सं.—छोटी, बूंदे, जलकण, फुहार, फुहारा ।

ॐॐॐॐ तूबु (क) सं.—नाभि, पिंडिका; चक्र की नाभि; तालाब का जलमार्ग; आयुधों को पकड़ने की मूठ का रंध; कर्णाभरण की नली ।

ॐॐॐॐ तूरिके (क) सं.—फटकन, ओसाना ।

ॐॐॐॐ तूरल (क) सं.—दूर जाना, दूर गया हुआ ।

ॐॐॐॐ तूरलु (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ तूरिसु, ॐॐॐॐ तूरिसु (क) कि.—फटका, पछोरने का कार्य करा; उड़वा, हिलवा; प्रवेश करा; हँस ।

ॐॐॐॐ तूरु, ॐॐॐॐ तूर ॐॐॐॐ तूरु] (क) कि.—चला, फटक, पछोर, ओसा; उड़ा, हिल, गिर पड़; उड़, दूर जा; एकाएक छलंग मार; प्रवेश कर, किसी रंध में प्रवेश कर, घुस; टपक, फुहार हो । सं.—छोटा कण या बूंद; घुसना ।

ॐॐॐॐॐ तूरुविके (क) सं.—पछोरना, फटकना ।

ॐॐॐॐ तूण (सम्) वि.—तेज, वेगवान, शीघ्रगामी, फुर्तीला ।

ॐॐॐॐ तूय (सम्) सं.—वाद्ययन्त्र विशेष औजारों का समूह ।

ॐॐॐॐ तूल (सम्) सं.—रुई; आकाश, वायु-मण्डल; शह तूत ।

ॐॐॐॐ तूलिका, ॐॐॐॐ तूलिके (सम्) सं.—चितेरे की कूची, पेंसिल; सूती बत्ती; रुई भरा गद्दा; छेद करने का औजार ।

ॐॐॐॐ तूलिनि (सम्) सं.—शाल्मली, सेमल ।

ॐॐॐॐ तूले (क) सं.—कपास का वृक्ष; बत्ती ।

ॐॐॐॐॐ तूणीं (सम्) अ.—मौन रूप से, चुपचाप ।

ॐॐॐॐ तूल, ॐॐॐॐ तूलु (क) कि.—दूर, आगे या नीचे जा; पीछा कर, अनुगमन कर; हमला कर; प्रारंभ कर ।

ॐॐॐॐ तूलग (क) सं.—आवेग, आवेश; उत्साह ।

ॐॐॐॐ तूलु (क) कि.—दे. ॐॐॐॐ. सं.—आवेश, आवेग; हमला, आक्रमण ।

ॐॐॐॐ तूलुदु (क) कि.—चला, हटा, दूर कर; फैला ।

ॐॐॐॐ तूण (सम्) सं.—घास; नरकुल, सर-पत ।

ॐॐॐॐॐ तूणध्वज (सम्) सं.—घोंस ।

ॐॐॐॐॐ तूणीकृत (सम्) वि.—तूण के बरा-बर देखी गई (वस्तु), तुच्छ ।

ॐॐॐॐॐ तूतीय (सम्) वि.—तीसरा ।

ॐॐॐॐॐ तूतीया, ॐॐॐॐॐ तूतीये (सम्) सं.—तिथि, तीज; करण कारण ।

ॐॐॐॐ तूस (सम्) वि.—संतुष्ट, अघाया हुआ, प्रसन्न ।

ॐॐॐॐ तूसि (सम्) सं.—संतोष, अघाई, प्रस-न्नता ।

ॐॐॐॐ तूपित (सम्) वि.—प्यासा, पिपासु; लोलुप, लोभी ।

ॐॐॐॐ तूपे (सम्) सं.—प्यास, पिपास ।

ॐॐॐॐ तूपक (सम्) वि.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐ तूणे (सम्) सं.—प्यास; लालच, लोलुपता; अमिलापा ।

(१) ॐॐॐॐ तूंग (क) सं.—दक्षिण दिशा ।

(२) ॐॐॐॐ तूंगु (क) सं.—नारियल का पेड़ ।

ॐॐॐॐ तूंगल, ॐॐॐॐ तूंगलु (क) सं.—दक्षिण दिशा ।

ॐॐॐॐ तूंगु (क) कि.—तैर । सं.—दक्षिण ।

ॐॐॐॐ तूंगले (क) सं.—अयंगर ब्राह्मणों की एक शाखा ।

(१) ॐॐॐॐ तूंगु (क) सं.—नारियल । — ॐॐॐॐ मर=नारियल का पेड़ ।

(२) ॐॐॐॐ तूंगु (क) कि.—छिड़क, फेंक, ठहर ।

ॐॐॐॐॐ तूंगुह (क) सं.—चिड़ियों का उतरना ।

ॐॐॐॐॐ तूंगिसु (क) कि.—पछोरने का काम करा (प्रे.) ।

ॐॐॐॐॐ तूंगु (क) कि.—पछोर, फटक, ओसा ।

ॐॐॐॐॐ तूंगे (क) सं.—गढ़ा, गठरी, पोदली, बंडल ।

ॐॐॐॐॐ तूंगलु (क) सं.—चरागाह ।

ॐॐॐॐॐ तूंगेरलु (क) सं.—दक्षिण की हवा ।

ॐॐॐॐॐ तूंगेने (क) अ.—अधिक, बहुत, अन-गिनत ।

ॐॐॐॐॐ तूंगे, ॐॐॐॐॐ तूंगे (क) सं.—आलिंगन करना, आलिंगन; चक्कर; गेंडुरी (मै. प्र.); समूह, समुदाय ।

ॐॐॐॐॐ तूंगु (क) कि.—तैरा, तैरवा; अचेत हो, होश उड़; खुजली को चाट; डर, घबरा जा ।

ॐॐॐॐॐ तूंगेने (क) अ.—दे. ॐॐॐॐ.

ॐॐॐॐॐ तूंगेसु (क) कि.—आलिंगन कर, अंक भर, गले मिल ।

ॐॐॐॐॐ तूंगडु (क) सं.—निंदा कर, गाली दे । सं.—निंदा ।

ॐॐॐॐॐ तूंगेदु हाकु (क) कि.—निकाल दे, हटा, दूर कर ।

ॐॐॐॐॐ तूंगल, ॐॐॐॐॐ तूंगलु (क) सं.—कंधा ।

डैंगसु तेगसु (क) किं. — उठना निकालने दे,
 हटवा; दूर करा, स्वीकार करा या करवा ।
 डैंगळ तेगहु (क) सं. — लेना ; मानी हुई,
 कल्पना ।
 डैंगळ तेगळ (क) सं. — दे डैंगळ.
 डैंगळ तेगळि, डैंगळी तेगळिगे (क) सं. —
 इन्द्रलुप्तक, सिर के बाल झड़ने का रोग ।
 डैंगळ तेगळ, डैंगळ तेगळु, [ङळ का भी
 प्रयोग होता है] (क) किं. — निंदा कर,
 गाली दे, अनादर कर । सं. — निंदा, गाली ।
 डैंग तंगि, डैंग तेगे (क) किं. — उठा, उठा
 ले, ले ; चुरा ; खरीद ले ; हटा, दूर कर,
 निकाल ; आकर्षित हो, खिंच जा ; रगड़,
 घिस, मर्दन कर, पीस ; खींच, बाहर निकाल
 (जैसे बाण निकालना) ; आरंभ कर, शुरू
 कर, खोल (जैसे दरवाजा) ; (लकीर, चित्र
 आदि) खींच, कसीदे का काम कर ; उपाय
 सोच, योजना निकाल ; ले, वहन कर,
 भार सह ; कम हो, घट ; अदृश्य हो ;
 तज, छोड़ । डैंगळ तेगळु, डैंगळ तेगळु
 कोंडु डोगु — ले जा । डैंगळ तेगळु
 हाकु — निकाल, फेंक, हटा ।
 डैंग तेगु (क) किं. — दे. डैंग.
 डैंग तेगे (क) किं. — दे. डैंग ; भाग, चले जा ।
 डैंगळ तेगळिगे (क) सं. — लेना, उठाना,
 हटाना, निकालना, अपवारण, अदृश्य होना ।
 डैंगसु तेगसु, डैंगळसु तेगळिसु, डैंगसु तेगिसु
 (क) किं. — डैंग तेगे का प्रेरणार्थक रूप ।
 डैंग तेगु (क) सं. — गड़वा, खड़ा ।
 डैंगसु तेगिसु (तद्) किं. — [‘त्यज्’ से] —
 त्याग, छोड़ ।
 डैंग तेगु (क) क. — खुले रूप से ।
 डैंग तेगसु, डैंग तेगसु (क) किं. —
 पीडा से कराह ।
 डैंग तेगि (क) सं. — अण्डा ।
 डैंग तेगिगे (क) सं. — नौकर, सेवक,
 चाकर, चपरासी ; संबंध ; साथी, मित्र ।
 डैंगसु तेगिसु (क) किं. — दिलवा, चुकवा ;
 निकट संबंध में ला, घुसेड़, प्रवेश करा,

लगा, रोप, पिरो, उँडेल ; प्रवेश कर, घुस, गुँथा जा ।
 ठैत्तीसु तैत्तीसु (अ. दे.) वि.—तैत्तीस ;
 ठैत्तु तैत्तु (क) कृ. देकर, चुकाकर । किं.—
 ँठ, मरोड़, तिरछा कर ; ँठ जा, मरीड़ा जा, तिरछा हो ।
 ठैत्तसु तैत्तसु (क) सं.—खुजली, खुजलाहट, सुरसुरी ।
 ठैत्तै (क) सं.—बाल, अनाज़ की बाल ; मुँडेरा, किले की दीवार का उन्नत भाग ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) सं.—लट्ठों का वेड़ा ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) अ.—चुपचाप, मौन रूप से, बिना बोले, आराम से ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—होश में आ, चेतना पा, सचेत हो, मूर्च्छा से उठ ; चैतन्य दे ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—चैतन्य पा, होश में आ, सचेत हो, सावधान हो ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—उछल, कूद ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—रगड़े, घिस ; मँज, मल, लेपन कर ; नाश कर, मिटा ; लूट ; भगा ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—चयन कर, जमा कर, राशि कर, ढेर कर ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) सं.—समूह, समुदाय, ढेर, राशि ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—रोक, विलंब कर ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—रगड़ घिस ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) सं.—राशि, राशि पर राशि होना, ढेर का ढेर ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) सं.—विवाह के समय वर-वधू को दी जानेवाली भेंट, उपहार । किं.—भेंट दे, उपहार दे ।
 ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—लपेट खा, चक्कर काट ; मिल, जुड़, संयुक्त हो ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—खुला, खुलवा ।
 ठैत्तु तैत्तु, ठैत्तु तैत्तु (क) किं.—चल,

जा; काँप हिल, झूल; चला जा, प्रस्थान कर ।

डै०४८ तेरळिके, डै०४९ तेरळके (क) सं.— जाना, चलना, प्रस्थान ।

डै०४९० तेरळिचु, डै०४९१, तेरळचु (क) क्रि.— चला, प्रस्थान करा, जाने दे, हिलवा, कँपा ।

डै०४९२ तेरळु (क) क्रि.—दे. डै०४९३; गोल हो; अधिक हो, असंख्य हो, अनगिनत हो; राशि हो ।

डै०४९४ तेरळे (क) सं. — पिण्ड; सार, रस; कोमल अंश ।

डै०४९५ तेरळके (क) सं. — हिलना, काँपना, संचालन, जाना; राशि, ढेर, समूह, श्रेणी ।

डै०४९६ तेरिमेदु (क) सं.—एक छोटा पौधा (*Linum mysorenses* Heyne) ।

डै०४९७ तेरे (क) सं.—तरंग, वीचि, उमि, लहर; सिकुडन, झुरी, पशुओं के शरीर के सिकुडन; पर्दा, यवनिका, कांडपट ।—डै०४९८ तेरे = पर्दा उठा ।—डै०४९९ बटे (क) सं.— पर्दे का कपड़ा ।—डै०५०० सुत्तु (क) सं.— पर्दे का आवरण ।

डै०५०१ तेर (क) सं.— खुले रहना, स्वच्छता, प्रकाश; तरह, ढंग, विधान, रीति, प्रकार; कन्याशुल्क ।

डै०५०२ तेरगे, डै०५०३ तेरिगे, (क) सं.— लगान, कर, चुगी, मालगुजारी ।

डै०५०४ तेरपु (क) सं.— अवकाश, रिक्तता, रिक्त स्थान, अंतर, स्थान, जगह, विश्रान्ति, छुट्टी, गुंजाइश ।

डै०५०५ तेरवि, डै०५०६ तेरेवे (क) सं.—खुलना, प्रकट, होना ।

डै०५०७ तेरवु (क) सं.—खुलना, ढंग, विधान, रीति; रिक्तता ।

डै०५०८ तेरहु (क) सं.—दे. डै०५०९.

डै०५०९ तेरिगे (क) सं.—दे. डै०५१०.

डै०५१० तेरिसु (क) क्रि.— खुला, खुलवा; लगान या कर चुकवा ।

डै०५११ तेरु (क) क्रि.—दे. (कर या लगान) दे ।—डै०५१२ विके=देना ।

३६३ त्रे (क) क्रि.—खुल जा, अनावरण हो; खोल। सं.—कर, लगान, भूमिकर।
 ३६३० त्रेगे (क) सं.—कर, लगान।
 ३६३०० त्रेयिसु (क) क्रि.—खुलवा।
 ३६३०० त्रेल (क) सं.—तेलुगु भाषी पुरुष।
 ३६३०० त्रेलमिति ३६३०० त्रेलमिति (क) सं.—तेलुगु भाषी स्त्री।
 ३६३०० त्रेल (क) सं.—दे. ३६३००.
 ३६३०० त्रेलमिति (क) सं.—दे. ३६३००.
 ३६३०० त्रेलटि. ३६३०० त्रेलटु, ३६३०० त्रेलट्ट, ३६३०० त्रेलट्टि (क) सं.—उपहार, भेंट, सौगात।
 ३६३०० त्रेल्लिग (तद्) सं.—तेली। ३६३०० त्रेल्लिगिति = तेलिन।
 ३६३०० त्रेल्लेसु, ३६३०० त्रेल्लेसु, ३६३०० त्रेल्लेसु (क) क्रि.—मन्द हो; भीमा हो; अधिक हो, बढ़।
 ३६३०० त्रेवट्ट (क) क्रि.—ओसा, पछोर।
 ३६३०० त्रेवडे (क) सं.—खेत का बांध, खेत का छोटा मेड़।
 ३६३०० त्रेवर् (क) क्रि.—दे. ३६३००.
 ३६३०० त्रेवर्, ३६३०० त्रेवर (क) क्रि.—रगड़, घिस; सता, तंग कर। सं.—टीला, चढ़ाव, पहाड़ी।
 ३६३०० त्रेवर (क) क्रि.—डकैती कर, लूट, चोरी कर।
 ३६३०० त्रेवल (क) सं.—खुजली की बीमारी।
 ३६३०० त्रेवल, ३६३०० त्रेवल (क) क्रि.—रेंग, घुटनों के बल चल।
 ३६३०० त्रेवुल (क) सं.—दे. ३६३००.
 ३६३०० त्रेल् (क) वि.—पतला, महीन, सूक्ष्म, सुंदर, चारु। ३६३०० त्रेल् इदे—पतला है।
 ३६३०० त्रेलुपु, ३६३०० त्रेलुवु, ३६३०० त्रेलुपु (क) सं.—पतलापन, महीन होना; सूक्ष्मता, तरलता।
 ३६३०० त्रेलुल (क) सं.—सुंदरता, चारुता।
 ३६३०० त्रेल्लन्न (क) वि.—पतला, महीन।

३६३०० त्रेल्लिस्तु, ३६३०० त्रेल्लिस्तु (क) सं.—चह जो पतला हो।
 ३६३०० त्रेल्लु (क) क्रि.—ढकेल; फेंक।
 ३६३०० त्रेकि (क) सं.—समूह, राशि, ढेर।
 ३६३०० त्रेकु (क) सं.—डकार। क्रि.—डकार ले।
 ३६३०० त्रेगु (क) सं.—सागौन वृक्ष; सादृश्य, समानता।
 ३६३०० त्रे, ३६३०० त्रेय, ३६३०० त्रेयु (क) क्रि.—घिस, रगड़; घिस घिस कर घट, घिस जा।
 ३६३०० त्रेकु (क) क्रि.—तैर; हाँप; डकार ले। सं.—दमा, हाँपना; डकार।
 ३६३०० त्रेग, ३६३०० त्रेग (क) सं.—सागौन का पेड़।
 ३६३०० त्रेगु (क) क्रि.—डकार ले। सं.—डकार; सागौन का पेड़।
 ३६३०० त्रेज, ३६३०० त्रेजस्, ३६३०० त्रेजस्सु (सम्) सं.—तेजी, तेजदार; आग की शिखा, भभक; चमक; सूक्ष्मता; सौंदर्य; सूर्य; किरण; बल, पराक्रम; पौरुष; अनिल, वायु; तन, देह, शरीर; भवन, घर; स्फूर्ति; चरित्रबल; वीर्य; सार; अग्नि; गुँदा; पित्त; ताज़ा मक्खन; घोड़े का वेग; सुवर्ण; ब्रह्म; सत्त्वगुण (सांख्य के अनुसार)।
 ३६३०० त्रेजस्वि (सम्) वि.—चमकीला, प्रचण्ड, प्रसिद्ध। सं.—एक पौधे का नाम।
 ३६३०० त्रेजि (सम्) सं.—घोड़ा, अरब का घोड़ा।
 ३६३०० त्रेट, ३६३०० त्रेटे (क) सं.—निर्मलता, शुद्धता (पानी की)।
 ३६३०० तेन (क) अ.—और भी, उस प्रकार।
 ३६३०० तेनु (क) सं.—शहद, मधु।
 ३६३०० तेपे; ३६३०० त्यापे (क) सं.—पैबंद, चिपपड़।
 ३६३०० तेमान (क) सं.—घिसाई, धातुओं की परीक्षा में होनेवाली हानि; बेकार होना; कामचोरी।

३६३०० तेय, ३६३०० तेयु (क) क्रि.—रगड़, घिस।
 ३६३०० तेर, ३६३०० तेरु (क) सं.—रथ।
 ३६३०० तेरण (क) सं.—मेहन्दी का पौधा।
 ३६३०० तेरयिसु, ३६३०० तेरयसु (क) क्रि.—पीछे जा, पीछे हट; किसी प्रयत्न से पीछे हट; पीछे हटा।
 ३६३०० तेरिसु (क) क्रि.—पहुँचा।
 ३६३०० तेरु (क) सं.—दे. ३६३००. क्रि.—(अंत तक) पहुँच; सफल हो, गमन स्थान पहुँच।
 ३६३०० तेरुडे (क) सं.—सफलता, उत्तीर्णता।
 ३६३०० तेल्, ३६३०० तेलु (क) क्रि.—तैर, पानी के ऊपरी भाग में रह; फिसल; पीछे जा; शिथिल हो, ढीला हो, अचेत हो, बेहोश हो।
 ३६३०० तेलिसु (क) क्रि.—तैरा; (मृष्ट्यु के समय) आँखें फाड़ कर गौर से देख; (वचन से) पीछे हट।
 ३६३०० तेल् (क) क्रि.—तैर; ढीला या शिथिल हो। वि.—तैरनेवाला।
 ३६३०० तेव (तद्) सं.—तेम: (तत्); आर्द्रता, गीला होना।
 ३६३०० तेवुलि, ३६३०० तेवुल (क) सं.—बाल झड़ने का रोग।
 ३६३०० तेळिद (क) सं.—सच्चा मित्र।
 ३६३०० तेल्, ३६३०० तेल् (क) सं.—विच्छेद।
 ३६३०० ते (क) सं.—नाच में 'थै थै'।
 ३६३०० तैल (सम्) सं.—तेल।
 ३६३०० तैलप (सम्) सं.—चालुक्य वंश का एक राजा।
 ३६३०० तैलि (अ. दे.) सं.—थैली (हिं.)
 ३६३०० तैलीन (सम्) सं.—तिल का खेत।
 ३६३०० तौकु (क) क्रि.—शरीर के आगे झुका, नत हो।
 ३६३०० तोंगल् (क) सं.—गुच्छा, मज्जरी, ढेर।
 ३६३०० तोंगले (क) सं.—धागा; कटिसूत्र।
 ३६३०० तोंगु (क) क्रि.—लटक, झूल; झुक, नत हो।

१९३० तोचु (क) क्रि.—मन में आ, सूझ; दिख; प्रकट हो।

१९३१ तोजे (क) सं.—रीति, पद्धति, विधान, ढंग, रीति-नीति।

१९३२ तोट (क) सं.—बाग, बगीचा।—
गा० गार, गा० गार, ग० वळ, ग० वाळ,
(क) सं.—माली।

१९३३ तोटि (क) सं.—हाथ का हाथ से भिड़ना, झगड़ा, लड़ाई, फूट; निम्न श्रेणी का सेवक, मेहतर।—गा० कार, गा० कार=लड़नेवाला, झगड़ालू।

१९३४ तोटिग (क) सं.—माली, बागवान।
१९३५ तोटे (क) सं.—दे. उ०ग०।

१९३६ तोड़ (क) सं.—दे. उ०ग०; एक प्रकार का सफेद चूहा; नीलगिरि की एक जाति के लोग।

१९३७ तोडि (क) सं.—एक राग का नाम।

१९३८ तोडु (क) क्रि.—निकल, निकाल; बड़े बर्तन से छोटे बर्तन में पानी निकाल; तागा लपेट; कान का मल निकाल; खोद, गड्ढा बना, बिल बना। सं.—जोड़ना, लगाना, चढ़ाना (धनुष पर बाण); जोड़ा, समता, सादृश्य; नहर।

१९३९ तोड़े (अ. दे.) सं.—सोने का बलय।

१९४० तोदन (सम्) सं.—पीड़ा, कष्ट; अकुश, (गाय बैल को चलाने में उपयोगी) उसकाव।

१९४१ तोदु (क) सं.—उपाय, युक्ति।—गा० गार, गा० गार=समय पर युक्ति निकालने-वाला।

१९४२ तोप, १९४३ तोफ (अ. दे.) सं.—तोप (तुर्की); बंदूक।

१९४४ तोपु (क) सं.—पेड़ों का समूह, वन।

१९४५ तोमर (सम्) सं.—लोहे का डंडा; बछी, साँग।

१९४६ तोय (सम्) सं.—पानी, जल।—ज = कमल।—२० निधि=समुद्र।

१९४७ तोयिसु (क) क्रि.—गीला कर, भिगो।

१९४८ तोर (क) वि.—बड़ा, मोटा, तगड़ा, स्थूल।

१९४९ तोरण (सम्) सं.—तोरण, शुभ सूचक अलंकार की वस्तुएँ—केले के पौधे और आम के पत्ते जो द्वार, मण्डप आदि में बाँधे जाते हैं।

१९५० तोरिद (क) सं.—बड़ा या मोटा आदमी।

१९५१ तोर्, १९५२ तोरु [१९५३ तोर्, १९५४ तोरु] (क) क्रि.—दिख, दिखाई पड़, दिखाई दे, प्रकट हो, व्यक्त हो, लग, सूझ, संभूत हो, गोचर हो; दिखा, प्रकट कर।

१९५५ तोरुद, १९५६ तोरु (क) सं.—प्रकट होना दिखाना।

१९५७ तोरिक्के, १९५८ तोर्के (क) सं.—प्रकट होना, दिखाई पड़ना; दिखाना, प्रकट करना; देखना, अभिमत।

१९५९ तोरिसु [१९६० तोरिसु] (क) क्रि.—दिखा, दिखला, प्रकट कर, प्रकट करा।

१९६१ तोरुविके (क) सं.—प्रकट होना, दिखाई पड़ना।

१९६२ तोर्पु १९६३ तोर्पे (क) सं.—दे. उ०ग०।

१९६४ तोल्, १९६५ तोलु (क) सं.—खाल, चर्म, चमड़ा; रास्ता, मार्ग।

१९६६ तोल (सम्) सं.—भार, वजन; २१२ माशे का तोल; एक तोला।

१९६७ तोले (क) सं.—मोतियाबिन्द नामक आँख का रोग।

१९६८ तोवे (क) सं.—दाल, सूप:।

१९६९ तोषण (सम्) सं.—संतोष, वृत्ति, प्रसन्नता।

१९७० तोपेखाने (अ. दे.) सं.—तोशखाना (तुर्की, फ़ारसी); खज़ाना, धनागार।

१९७१ तोसु (क) क्रि.—दे. उ०ग०।

१९७२ तोहु (क) सं.—झरमुट, झाड़ी, समूह, घेरा, घोखा, कपट; छिपने का स्थान, मेड़; फँसाना।

१९७३ तोल्, १९७४ तोलु (क) सं.—बाहु, बाँह, भुजा; शाखा, डाल।

१९७५ तोल् (क) सं.—भेड़िया।

१९७६ तोले (क) सं.—बड़ा चमगादड़।

१९७७ तौडु (क) सं.—चावल की भूसी।

१९७८ तौलव (क) वि.—तुलु देश से संबंधित।

१९७९ त्यक्त (सम्) वि.—छोड़ा हुआ, फँका हुआ, दिया हुआ।

१९८० त्यजन (सम्) सं.—त्यागना, छोड़ना, देना, अस्वीकार करना।

१९८१ त्यजयिसु; १९८२ त्यजिसु (सम्) क्रि.—त्याग दे, छोड़; अस्वीकार कर, जा, जाने दे, विसर्जन कर।

(१) उ०ग० त्याग, (क) सं.—सागौन का पेड़।

(२) उ०ग० त्याग (सम्) सं.—[उ०ग० चाग—(तद्)]—त्याग, छोड़ना; वियोग, विराग; भेंट, दान, उदारता।

१९८३ त्याज्य (सम्) वि.—त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य। सं.—अशुभ समय।

१९८४ त्यापे (क) सं.—पैबंद।

१९८५ त्याव, १९८६ त्यावु, १९८७ त्यावे (तद्) सं.—तेम: (तत्); गीला होना, आर्द्रता।

१९८८ त्रपिष्ट (सम्) वि.—अत्यंत संतुष्ट।

१९८९ त्रपु (सम्) सं.—टीन, जस्ता।

१९९० त्रपे (सम्)—व्याकुलता; शर्म, लाज।

१९९१ त्रय (सम्) सं.—तीन; तिगुना।

१९९२ त्रयि (सम्) सं.—तीनों वेदों का समूह; त्रिगङ्गा, त्रिमूर्ति, त्रिपट्टा; सौभाग्यवती स्त्री जिसके पति और बच्चे हो; प्रतिभा, बुद्धि।

१९९३ त्रयोदशि (सम्) सं.—त्रयोदशी तिथि।

१९९४ त्रस्त (सम्) वि.—भयभीत, डरा हुआ, डरपोक, शीर।

१९९५ त्राण, १९९६ त्राणे (सम्) सं.—रक्षा, बचाव; सहायता, आश्रय।

१९९७ त्रास (सम्) वि.—गतिशील। सं.—भय, डर, शंका; व्याकुलता, पीड़ा; तक-

ದಂಡಪ್ರಣಮ ದೃಢಪ್ರಣಮ, ದಂಡಪ್ರಣಮ ದೃಢ-
ಪ್ರಣಮ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಾಷ್ಟಾಂಗ ನಮಸ್ಕಾರ ।

दंड्यात्तु दंडयात्रे (सम्) सं.—विजय-
यात्रा ; आक्रमण, हमला ।

दंड्यात्तु दंडहस्त, दंड्यात्तु दंडपाणि
(सम्) सं.—यम, द्वारपाल, दंड धारण
किया हुआ ; कार्तिकेय का नाम ।

दंड्यात्तु दंडाधिप, दंड्यात्तु दंडाधीश्वर,
दंड्यात्तु दंडनाथ (सम्) सं.—सेनापति,
सेनानायक ; न्यायाधीश, दारोगा ।

दंड्यात्तु दंडासन (सम्) सं.—एक प्रकार
का बाण या धनुष ।

दंड्यात्तु दंडाहत (सम्) सं.—डंडे से पीटा
हुआ मट्ठा, छाल ।

(१) दंडि दंडि (क) सं.—कोप, क्रोध, रोष,
क्रूरता ; बड़प्पन, महानता, बल, शक्ति,
साहस ; अधिकता, बहुलता ।

(२) दंडि (सम्) सं.—दंडधारी ; द्वारपाल
द्वाररक्षक ; कुम्हार ; यम ; राजदूत ;
संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि का नाम ;
किनारा, तट ; तराजू का काँटा ; बसूला,
कुल्हाड़ी ।

दंडिच दंडिके, दंडिगं दंडिगे (सम्) सं.—
लाठी, डंडा ; श्रेणी, पंक्ति ; रस्सी ; मोतियों
की लड़ी ।

दंडिगं दंडिग, दंडिगं दंडिगे (तद्) सं.—
दंडिका (तत्) ; तराजू का काँटा । रीढ़
की हड्डी ; वीणा का दंड ; वीणा ; पालकी
का दण्ड ; जड़ी ; मोतियों की लड़ी ;
रस्सा ; पंक्ति, अवलि ।

दंडिड दंडित (सम्) वि.—दंड दिया हुआ,
सजायफ्ता, वह जिसपर जुर्माना लगाया
गया हो ।

दंडिद दंडिपाद (सम्) सं.—एक साँप का
नाम ।

दंडिसु दंडिसु (सम्) क्रि.—सजा-दे, दंड दे,
जुर्माना लगा ; वश में कर ।

दंडु दंडु (तद्) सं.—सेना । दंडु
सोदरमावने ? दंडिल्लि सोदरमावने ?
—सेना में कोई मामा है ? अर्थात् कौन
किसका है ? (कह-)

(१) दंडि दंडे (क) अ.—पास, समीप ।

(२) दंडि दंडे (तद्) सं.—तार ; माला,
हार, पुष्पमाला ; व्यायाम का एक प्रकार ;
घुटने की टेक ; धनुष पकड़कर चलाने का
हाथ ; सेना की पंक्ति ; गहरी पकड़,
चंगुल ; किनारा, तट ।

दंडोर दंडोर, दंडोर दंडोरे (अ. दे.)
सं.—ढिँढोरा (हिं.)]

दंड दंत (सम्) सं.—दाँत ; हाथी का
दाँत ; हाथी ; पर्वतशृंग, चोटी ; पर्वत
का प्रकार या भेद ; बत्तीस की संख्या ;
कंटक, काँटा ; वृक्ष विशेष ; — चर्वण
चर्वण (सम्) सं.—दाँतों से चबाना । —
चर्वण चर्वण (सम्) सं.—ओष्ठ, होंठ । —
चर्वण धावन (सम्) सं.—दाँत साफ़
करना, कुल्ला ; दातौन । — चर्वण भाग (सम्)
—हाथी का माथा । — चर्वण वासस
(सम्) सं.—होंठ ।

दंडावल दंडावल (सम्) सं.—गज, हाथी ;
गजासुर । — ७० अरि (सम्) सं.—शिवजी ।

दंडि दंति (सम्) सं.—हाथी ; क्रोटन
(Croton) का पौधा, आठ की संख्या ;
काला धतूरा । — दंडि कपोल (सम्)
सं.—हाथी का गंडस्थल ।

दंडिच दंडिके (सम्) सं.—क्रोटन का पौधा ।

दंडिच दंडिपुर (सम्) सं.—हस्तिनापुर ।

दंडिच दंडिमुख (सम्) सं.—गणेश ।

दंडिच दंडितुर (सम्) वि.—बड़े दाँतवाला,
खाबड़, बड़नुमा, भद्दा ।

दंडिच दंडे (सम्) सं.—हाथीदाँत ।

दंडिच दंड्य (सम्) सं.—दाँतों के सहारे
उच्चारित होनेवाले वर्ण ।

दंडिच दंड्यक (सम्) सं.—साँप ।

दंडिच दंडुग (क) सं.—व्याकुलता, उपद्रव,
कष्ट, तकलीफ़ ; उलझन, क्लेश ।

दंडिच दंपति (सम्) सं.—दंपती, पति-पत्नी ;
घर का स्वामी ।

दंडिच दंभ (सम्) सं.—[दंडिच दंभ — (तद्)]
पाखंड, छल, वंचना ; अभिमान, अहंकार ;
पाप, दुष्टता ; ईर्ष्या ।

दंडिच दंभक (सम्) सं.—पाखंडी ; पखंड ।

दंडिच दंभोलि (सम्) सं.—इन्द्र का
वज्र ।

दंडिच दंश (सम्) सं.—डसना, काटना, डंक ;
मारना ; सर्प का विषदन्त ; काटना, चीरना
दाँत ।

दंडिच दंशक (सम्) सं.—गोमखी, मक्खी,
ढाँस ।

दंडिच दंशन (सम्) सं.—कवच ; काटने की
क्रिया ।

दंडिच दंष्ट्र (सम्) सं.—बड़ा दाँत, हाथी का
दाँत ।

दंडिच दंष्ट्रि (सम्) सं.—वनैला शूकर ; सेई ;
साँप ।

दंडिच दंडन दंडन, दंडिच दंडन दंडन-
तन, दंडिच दंडन (क) सं.—बहुदुरी,
पराक्रम ।

दंडिच दंडिसु (क) क्रि.—हथिया, स्वाधीन
कर, हड़प ले ।

दंडिच दंडु (क) क्रि.—मिल, प्राप्त हो, हाथ
लग, अधिकार में आ ; सुधर, अच्छा हो,
बच । सं.—मिलना, प्राप्ति, स्वाधीनता ;
संपत्ति ; लकड़ी का डंडा, शंकु, कीला ।

दंडिच दक्ष (सम्) वि.—निपुण, चतुर, निष्णात,
योग्य, बुद्धिमान । सं.—दक्षप्रजापति ;
तपस्वी, संन्यासी ; सुर्गा ; योग्यता, निपु-
णता । — दंडिच कन्ये (सम्) सं.—सती-
दुर्गा । — दंडिच (सम्) सं.—निपुणता,
चतुराई, योग्यता, सामर्थ्य ।

दंडिच दक्षारि (सम्) सं.—वीरभद्र ।

दंडिच दक्षिण (सम्) सं.—दायाँ हाथ या
बाँह ; दक्षिण दिशा । वि.—योग्य,
निपुण ; सीधा, सच्चा, ईमानदार ।

दंडिच दक्षिणारति, दंडिच दक्षिण-
णायन (सम्) — सूर्य की गति विशेष-
दक्षिणायन ।

दंडिच दक्षिणे (सम्) सं.—दक्षिण, ब्राह्मणों
को दान में दिया जानेवाला द्रव्य ; दक्षिण
दिशा ; दान, भेंट ; शुल्क या दान की
संपत्ति ।

दंढि दृगि (अ. दे.) सं.—कामुक या दुराच-
रिणी स्त्री ।
दंढि दृगद (क) सं.—काम, कार्य ।
दंढि दृगा, दंढि दृगे (अ. दे.) सं.—दृगा
(अरवी) ; धोखा ।—दंढि दृगद खोरतन =
धोखेवाजी ।
दंढि दृगने (क) अ.—‘ धरा धग् ’ करते हुए
(आग का जलना) ।
दंढि दृगध (सम्) वि.—जला हुआ, जलने-
वाला, अशुभ ; पीड़ित, सताया हुआ ।—
दंढि दृगध (सम्) सं.—अभागा मनुष्य ।
दंढि दृगिधके (सम्) सं.—भुने हुए चावल ।
दंढि (क) सं.—इमली के बीजों की दाल ।—
दंढि (क) सं.—एक खेल ।
दंढि दृद (क) सं.—वि.—घना, निविड,
बहुल, सांद्र, घोर । सं.—रजाई, गद्दा,
तोशक ।
दंढि दृदगिणु (क) क्रि.—घना हो, निविड
हो, सांद्र हो ।
दंढि दृदणे (क) सं.—घनत्व, निविडता,
सांद्रता ; भीड़, कोलाहल, बड़ा जन-
समूह ।
दंढि दृदयिसु, दंढि दृदयु (क)
क्रि.—घना हो, निविड हो, सांद्र हो ।
दंढि दृदिति (क) सं.—कमरबंद, मेखला ;
लुगी ।
दंढि दृदिसु (क) क्रि.—दे. दंढि दृदिसु ;
रगड़, मिटा ; निंदा कर, गाली दे ।
दंढि दृदु (क) सं.—राशि, ढेर, दल ; ठोकर
खा, भीड़, समूह, सेना ।
(१) दंढि दृद (क) सं.—एक अनुकरणात्मक
शब्द ।
(२) दंढि दृद (तद्) सं.—तटः (तत्), किनारा,
तट ।
दंढि दृदकु (क) सं.—वर्तनों के टकारने की
ध्वनि ।
दंढि दृदिके (क) सं.—तीव्रता,
प्रचंडता ।
दंढि दृदालि, दंढि दृदालि (क) सं.—
मोटी स्त्री ।

दंढि दृदिति (क) सं.—लाठी, डंडा, दण्ड ;
शिश्न, लिंग ।
दंढि दृदिति (क) सं.—दंडधारी ।
दंढि दृदिसु (क) क्रि.—दे. दंढि दृदिसु ।
दंढि दृदुम (क) सं.—मोटा आदमी ।
दंढि दृदु, दंढि दृदुय (अ. दे.) सं.—एक
चौथाई मन ।
दंढि दृदु (क) वि.—मूर्ख, बेवकूफ, मूढ़ ।
सं.—समीपता, मिलन ; द्वित्वाक्षर ।—उत्त
—(क) सं.—मूर्खता, बेवकूफी ।
दंढि दृदुस (क) सं.—डोम का डोल ।
दंढि दृदु (क) सं.—मूर्ख स्त्री ; पदाँ, टट्टी,
यवनिका ; पिंजड़ा ; पशुशाला ; बकरों का
समूह ; घर के ऊपर का समतल भाग ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—धब्बा, काला निशान,
चिन्ती ; कलंक ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—मूर्ख या बेवकूफ स्त्री ।
दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु
दुदुदु (क) सं.—व्यभिचारिणी स्त्री ।
दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु (क) सं.—
थकावट, श्रान्ति ।
(१) दंढि दृदु (क) क्रि.—थक जा, श्रान्त
हो, संतुष्ट हो, अथा ।
(२) दंढि दृदु (तद्) सं.—धनिन् (तत्) ;
मालिक. स्वामी ।—उत्त तन (तद्) सं.—
स्वामित्व ।
दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु
(क) सं.—वस्त्र ; साड़ी ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—दे. दंढि दृदुदु ।
दंढि दृदुदु (क) क्रि.—थकावट उत्पन्न कर,
श्रान्त कर ; तृप्त हो, संतुष्ट हो ।
दंढि दृदु (क) सं.—दे. दंढि दृदु ।
दंढि दृदु (सम्) वि.—दिया हुआ, भेंट किया
हुआ, प्रदान किया हुआ ; सौंपा हुआ ;
रखा हुआ ।—उत्त क, उत्त पुत्र (सम्) सं.—
गोद लिया हुआ पुत्र ।
दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु (तद्) सं.—
धनूरः (तत्) ; धनूरा ।
दंढि दृदुदु (क) क्रि.—अंदर की गरमी

के कारण शरीर पर फोड़ा हो, छाला पड़,
फफोला हो, दाद हो ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—एक वृक्ष (careya
arboreya) ।
दंढि दृदु (क) वि.—टूटा फूटा (तद्) सं.—
दाद ।
दंढि दृदु (सम्) सं.—एक प्रकार का कुष्ठ ।
दंढि दृदु (सम्) सं.—दही । दंढि दृदु (सम्)
सं.—कैथा ।—दंढि दृदु (सम्) सं.—
मट्ठा, छाछ ।—दंढि दृदु (सम्) सं.—
एक सर्प का नाम ; एक बंदर का नाम ।—
दंढि दृदु (सम्) सं.—मथानी ।—
दंढि दृदु (सम्) सं.—ताजा मक्खन ।
दंढि दृदु (सम्) सं.—एक ऋषि का
नाम ।
दंढि दृदु (सम्) सं.—दृधोदन (सम्)
सं.—दही भात ।
दंढि दृदु, दंढि दृदु (तद्) सं.—धनम्
(तत्) ; गाय ; गाय-बैल ।
दंढि दृदु (तद्) सं.—ध्वनिः (तत्) ; नाद,
स्वर, आवाज़ ।
दंढि दृदु (सम्) सं.—दक्ष की एक पुत्री का
नाम जो कश्यप की पत्नी और दानवों की
माता थी ।—दंढि दृदु (सम्) सं.—राक्षस ।
(१) दंढि दृदु (क) वि.—बड़ा, मोटा, तगड़ा,
गाढ़ा, घना, स्थूल ।
(२) दंढि दृदु (तद्) सं.—दर्पः ; (तत्),
असिमान, पराक्रम ।
दंढि दृदुदु, दंढि दृदुदु (क) वि.—
मोटा ; गाढ़ा ।
दंढि दृदुदु (अ. दे.) सं.—दफादार
(अरवी, फ़ारसी) ; पुलिस की टोली का
नायक ।
दंढि दृदुदु (अ. दे.) सं.—दफ़तर (फ़ारसी) ;
बही, हिसाब, कागज़ात ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—रंग पोतने की कूची ।
दंढि दृदुदु (क) सं.—धड़कन ।
दंढि दृदुदु (अ. दे.) क्रि.—
(‘ दवाना ’ से)—दवा, धमका, आड़े हाथों
ले (मुह) ।

दब्बुल दब्बल, दब्बुल दब्बल, दब्बुल दब्बल,
(क ?) सं.—मोटी और बड़ी सुई ।

दब्बुल दब्बुल (क) क्रि.—दबा, ढकेल ।

दब्बुल दब्बुल (क) सं.—बाँस की शलाका या
तीली । (अ. दे.) सं.—चपत, थप्पड़,
मार ।

दब्बुल दब्बुल (सम्) वि.—थोड़ा, छोटा, हल्का ।
सं.—समुद्र ।

दब्बुल दम्, दब्बुल दम् (सम्)—पालना, वश-
वर्ती करना; संयम, बाह्य वृत्तियोंको रोकना;
सजा; दंड, जुमाना; घर; मन की दृढ़ता;
कीचड़ ।

दब्बुल दम् (अ. दे.) सं.—दमड़ी (हिं.),
पैसे का १/४ भाग ।

दब्बुल दम्न (सम्) सं.—पालना, वश में
लाना, संयम में रखना; दवाना; सजा
देना, दण्ड देना; आत्म संयम ।

दब्बुल दम्न (तद्) सं.—धर्म; (तत्) धर्म ।

दब्बुल दम्न (अ. दे.) सं.—दम्न ।

दब्बुल दम्न (क) सं.—दुहाई, दोहाई ।

दब्बुल दम्न (अ. दे. ?) सं.—रास्ते की मरम्मत करने का एक उप-
करण ।

दब्बुल दम्न (सम्) वि.—दवाने योग्य, वश में
करने योग्य ।

दब्बुल दम्न, दब्बुल दम्न, दब्बुल दम्न (सम्) सं.—
करुणा, रहम, सहानुभूति ।

दब्बुल दम्न, दब्बुल दम्न (सम्) सं.—
दयावान्, कृपालु ।

(१) दब्बुल दम् (सम्) वि.—फटा हुआ, चिरा
हुआ । सं.—गुफा, रंध्र, बिल; भय,
डर; शंख; झरना ।

(२) दब्बुल दम् (अ. दे.) सं.—दर (फ़ारसी);
द्वार, दरवाज़ा कीमत, मूल्य ।

दब्बुल दम् (क) वि.—रुख, मोटा, जो चिकना
न हो, सूखा, खुरदरा ।

दब्बुल दम् (अ. दे.) सं.—दरखास्त
(फ़ारसी); प्रार्थना-पत्र, अर्जी ।

दब्बुल दम् (अ. दे.) सं.—दर्जी
(फ़ारसी);

दब्बुल दरबार, दब्बुल दरबार, दब्बुल दरबार
दरबार, दब्बुल दरबार (अ. दे.) सं.—
दरबार (फ़ारसी); राजसभा ।

दब्बुल दरहास (सम्) सं.—मन्द मुस्कान ।
दब्बुल दरि, दब्बुल दरि (सम्) सं.—गुहा, गुफा;
घटी ;

दब्बुल दरित (सम्) वि.—फटा हुआ, विभक्त;
डरा हुआ; भीत ।

दब्बुल दरिद्र (सम्) वि.—निर्धन, गरीब ।
सं.—निर्धनता, गरीबी ।—उत्तम,—उत्तम,
उत्तम (सम्) सं.—दरिद्रता, निर्धनता ।

दब्बुल दरिसण, दब्बुल दरिसण, दब्बुल दरिसण
दरसन (तद्) सं.—दर्शनम् (तत्); दर्शन ।
दब्बुल दरि (तद्) सं.—दे. दब्बुल.

दब्बुल दकु (क) सं.—प्राप्ति, पाना; संपत्ति ।
दब्बुल दर्जा, दब्बुल दर्जा (अ. दे.) सं.—दर्जा
(अरबी); वर्ग, श्रेणी; पद ।

दब्बुल दर्जा (अ. दे.) सं.—दे. दब्बुल.

दब्बुल दर्दुर (सम्) सं.—मैंदक; बादल;
शहनाई; पर्वत, एक पर्वत का नाम ।

दब्बुल दर्दुर (सम्) सं.—दाद ।

दब्बुल दर्प (सम्) सं.—अहंकार, अहंभाव;
गर्व, घमण्ड; गर्मी ।

दब्बुल दर्भ दब्बुल दर्भ (सम्) सं.—कुशा,
एक प्रकार की पवित्र घास ।

दब्बुल दर्वि (सम्) सं.—कलछी, चमचा; साप
का फन ।

दब्बुल दर्श (सम्) सं.—दर्शन; दृश्य, तमाशा;
अमावास्या; यज्ञ विशेष ।

दब्बुल दर्शन (सम्) सं.—देखना, अवलोकन;
जाना, समझना, पहचानना; दृश्य; आँख;
पर्यवेक्षण; रूप, वर्ण, आकार; उपस्थित
होना; भेंट करना; स्वप्न; बुद्धि,
समझ, परख; निर्णय; धारणा; धर्म
संबंधी ज्ञान; दार्शनिक सिद्धांत, दर्शन,
दर्पण; आईना; गुण, नीति; यज्ञ विशेष ।

दब्बुल दर्शिसु (सम्) क्रि.—देख, अवलोकन
कर ।

दब्बुल दल (क) अ.—सचमुच, अवश्य, निश्चि-
तरूप से ।

दब्बुल दल (सम्) सं.—दल, टुकड़ा, भाग
अंश; आधा; म्यान; छोटा; अंकुर
किसलय, कोंपल; किसी हथियार की नोक
सेना की टुकड़ी; डेर, राशि, परिमाण
समूह; शरीर का अंग; मिलावट, मिश्रण
दब्बुल दलालि, दब्बुल दलालि (अ. दे.)
दलाल (अरबी) ।

दब्बुल दलित (सम्) वि.—रौंदा हुआ;
हुआ, दबाया हुआ, पदाक्रांत ।

दब्बुल दव (सम्) सं.—अग्नि; दावाग्नि
जंगल, वन, चित्रमूल नामक पौधा ।

दब्बुल दवडु, दब्बुल दवडे, दब्बुल दवडे (तद्)
सं.—जबड़ा ।

दब्बुल दवन (तद्) सं.—दमनक: (तत्)
अजजटी या तपस्वी नामक पौधा (The
Plant Artemisia Indica) ।

दब्बुल दवस (तद्) सं.—यवसं (तत्)
अनाज ।

दब्बुल दवाग्नि, दब्बुल दवानल (सम्)
सं.—दावाग्नि ।

दब्बुल दव्वारिक (तद्) सं.—
(तत्); द्वारपाल, पहरेदार ।

दब्बुल दश (सम्) सं.—दस ।—क (सम्)
सं.—दस का समूह ।

दब्बुल दशग्रीव, दब्बुल दशकंधर (सम्)
सं.—दशकंध—रावण ।

दब्बुल दशन (सम्) सं.—काटना; दाँत ।

दब्बुल दशस (सम्) सं.—ओष्ठ, होंठ ।

दब्बुल दशभुज (सम्) सं.—शिवजी ।

दब्बुल दशमांश (सम्) सं.—दशमिक,
दशमलव, दसवाँ भाग ।

दब्बुल दशरथ (सम्) सं.—राम के पिता ।

दब्बुल दशवक्त्र, दब्बुल दशवदन, दब्बुल
दशदशिर, दब्बुल दशानन (सम्) सं.—
रावण; दसदशिर (तद्) ।

दब्बुल दशावत (सम्) सं.—भागवान्
पुरुष ।

दब्बुल दशावतार (सम्) सं.—विष्णु के
दस अवतार ।

दश दशे, दश दशा (सम्) सं — (दश दशे — तद्) — कपड़े की झालर; बत्ती; जीवन की दशा; अवस्था; काल; अवधि; परिस्थिति; मन की दशा; कर्मों का फल; ग्रहों की स्थिति; भाग्य; भूत आदि; वाण; धनुष की प्रत्यंचा; खरगोश।
 दश दशे (क) सं. — भूसी, एक प्रकार की भूसी।
 दश दशे, दश दशे (तद्) सं. — दशहरा, नवरात्रि।
 दश दशे (क) सं. — शूल, काँटा, नौकदार छूट।
 दश दशे (क) सं. — दे. दशे।
 दश दशे (सम्) सं. — जलाना, आग में भस्म करना; आग, अग्नि।
 दश दशे (सम्) क्रि. — दहन कर, जल, भस्म कर।
 दश दशे (सम्) वि. — जलाने योग्य, दश।
 दश दशे (तद्) सं. — दल, पता।
 दश दशे, दश दशे, दश दशे (क) सं. — संधि, मियन; फाँक।
 दश दशे (क) वि. — मोटा, घना, स्थूल, घनत्व।
 दश दशे (क) सं. — मोटाई, स्थूलता, घनत्व।
 दश दशे (अ. दे.) सं. — दे. दशे।
 दश दशे, दश दशे (क) क्रि. — सीकर मिला, जोड़; पान-पान या मिले रहकर विकसित हो, फैल; दीख।
 दश दशे, दश दशे (क) सं. — दे. दशे।
 दश दशे (क) सं. — छियों का वस्त्र, साड़ी।
 दश दशे (क) क्रि. — दे. दशे।
 दश दशे (क) क्रि. — आवृत्त हो, घेर, फैल, अधिक व्याप्त हो, वृद्धि हो।
 दश दशे (क) सं. — चतुरंग बल, सेना।
 दश दशे (क) सं. — सेना का हलचल, चढ़ी लट, लट-मार। — दशे (क) क्रि. — हल-चल या शोभ में पड़।

दश दशे, दश दशे, [दश दशे] (क) सं. — सेनानायक।
 दश दशे (क) सं. — शृंगला, जंजीर।
 दश दशे, दश दशे (क) सं. — लौ; छोर; बढनेवाली नुकीली लता।
 दश दशे (क) क्रि. — पार कर, तर, लाँघ। सं. — वह दूरी जो पैदल पार की जा सके।
 दश दशे (क) सं. — मोटा आदमी, तगड़ा आदमी; मूर्ख।
 दश दशे (सम्) वि. — पालतू, वशवर्ती; आत्म-संयम।
 दश दशे (सम्) सं. — आत्म-संयम, वश में करना।
 दश दशे (अ. दे.) सं. — धाँधली (हिं.); भीड़, शोरगुल, कोलाहल, गड़-बड़ी।
 दश दशे (सम्) सं. — पति-पत्नी का संबन्ध, विवाह, वैवाहिक संबन्ध।
 दश दशे (सम्) सं. — अस्मिनी, कपटी, छलिया, ढोंगी।
 दश दशे (सम्) सं. — दक्ष प्रजा-पति की कन्या का नाम; दुर्गा; दक्ष की पुत्रियाँ और चन्द्र की पत्नियाँ — २७ नक्षत्र। — दशे नाथ (सम्) सं. — शिव; चन्द्र।
 दश दशे (सम्) वि. — दक्षिण का निवासी।
 दश दशे (सम्) सं. — नम्रता, शिष्टता; कृपालुता, दया; शिष्टाचार; ईमानदारी; दश दशे (अ. दे.) सं. — दखला (अरबी); प्रस्तुत करना; दर्ज करना; प्रमाण।
 दश दशे (अ. दे.) सं. — प्रमाण, प्रमाण संबन्धी कागजात।
 दश दशे, दश दशे (क) सं. — एक पौधा (Cocculus Villosus)।
 दश दशे, दश दशे (क) सं. — पढ़ने-लिखने में गति या शीघ्रता, कला-निपुणता; उतावलापन।

दश दशे (क) क्रि. — पार करवा या करा, तार, लघन कर या करा।
 दश दशे (क) क्रि. — पार कर, लघन कर, (वचन को) भंगकर, पीछे हट; मृत हो, मर जा, चल बस, (समय) व्यतीत हो, गुजर जा। सं. — पार करना, लघन।
 दश दशे (अ. दे.) सं. — दाढ़ी (हिं.)।
 दश दशे (सम्) सं. — दाढ़िम, अनार।
 दश दशे, दश दशे, दश दशे (सम्) सं. — अनार।
 दश दशे (तद्) सं. — इम्टा (तद्); बड़ा दाँत, हाथी का दाँत, साँप का दाँत, हाथी के दाँत का अन्तिम भाग; दाढ़।
 दश दशे, दश दशे, दश दशे (अ. दे.) सं. — दाना (हिं.) अनाज।
 दश दशे (सम्) वि. — विभाजित, कटा हुआ। (तद्)। सं. — दातृ (तद्); देनेवाला, दाता।
 दश दशे (तद्) सं. — दातृ (तद्)।
 दश दशे (सम्) सं. — दाता, देनेवाला, दानी उदार पुरुष।
 दश दशे (सम्) सं. — हसिया, लवित्र।
 दश दशे (सम्) सं. — देना, रौपना, दान, भेंट; रिश्वत; चार उपायों में से एक।
 दश दशे (सम्) सं. — राक्षस। — ७० अरि (सम्) सं. — देवता।
 दश दशे (सम्) सं. — जुर्माना, बलात्कार-पूर्वक दिलाना।
 दश दशे (सम्) वि. — दिलाया हुआ, जुर्माना किया हुआ, दिया हुआ; निबटाया हुआ, फैसला किया हुआ।
 दश दशे (क) सं. — फैलाव, विस्तार, वृद्धि; कदम के फासले की नाप।
 दश दशे, दश दशे, दश दशे (सम्) सं. — डोरा, सूत, तार, रस्सी; कमरबंद, पटुका; चढ़ी पट्टी या बन्धन; किरण; विद्युत् रेखा।
 दश दशे (सम्) सं. — गाय-बैल बांधने की रस्सी।

डदास केट्ट—दो दासों पर भरोसा रखकर
अन्धा दास विनष्ट हुआ (कह.) । — १३
गित्ति (सम्) सं.—वैष्णव भक्त (दास) की
पत्नी ।

ದಾಸವೆಣಿ ದಾಸವಣ, ದಾಸವಾಣಿ ದಾಸವಾಣ ದಾಸ
ವಾಳ ದಾಸವಾಡ (ಕ) ಸಂ.—ಜಪಾ ಪುಷ್ಪ, ಸದಾ-
ಗುಲಾಬ, ಅಡ್ಡಹುಲ ।

दासी दासि (सम्) ; सं.—दासी, चाकरनी,
स्त्री गुलामः । ईडी, वेदया । दासीगे भयविल्ल
बिल्ल, वेःतीगे दयविल्ल दासिगे भयविल्ल
वेशिगे दयविल्ल — दासी को भय नहीं,
वेदया को दया नहीं (कह-) ।

दासैय दासेय, दासैर दासेर (सम्) सं.
—नौकर, सेवक, दास ।

ॐ दाह (सम्) सं.—जलन, आग, बहुत
जलन, ताप ; प्यास, तृष्णा ; पीड़ा, दर्द,
चाह ।

ದಾಹಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಜಲ, ಜಲಾ ।
ದಾಳ ದಾಳ (ಕ) ಸಂ.—ಪಾँಸಾ ।

ದಾಳಿಂಬ ದಾಡ್ಲಿ, ದಾಳಿಂಬರ ದಾಡ್ಲಿ, ದಾಳಿಂ
ಬರ ದಾಡ್ಲಿ, ದಾಳಿಂಬೆ ದಾಡ್ಲಿ, ದಾಳಿಂಬೆ

दाळिंबू (तद्) सं.—दाडिमः (तद्) ; अनार।
 दा० दाळि, दा० दाळि (तद्) सं.—धाटी
 (तद्) ; आक्रमण, हमला ।

८०८ दिंक (सम्) सं.—जू का अण्डा, लीख ।
 ८०९ दिंकु (क) क्रि.—कूद, उछल ; फुदक ।
 ८१० दिंड, ८११ दिंडिग (क) सं.— एक
 वृक्ष का नाम ; गिरिकर्णिका ।

ଦିଂଢ଼ଳ ଡିଂଢ଼ଳ (କ) ସଂ. — ଦୀର୍ଘସୂନ୍ତ, ଶ୍ୟୋ-
ନାକ ।

ଦିଂଡାଳ ଟିଂଡାଳ, ଦିଂଡିଗ ଟିଂଡିଗ, ଦିଂଡୁଗ
 ଟିଂଡୁଗ (କ) ସଂ.—ଦେ. ଦିଂଡଳ.

ଦିଂଶିଂଗତନ (କ) ସଂ.—ରୁଖା ସ୍ବଭାବ;
ନଟକପନ ।

८०७७ दिंडु (क) सं.—राशि; ढेर, गोलाकार
ढेर, या टुकड़ा, काठ या घास का बंडल।

(गट्टा); मोटा तना; मूठ या हल केलिए उपयोगी काठ; काठ, लकड़ी का टुकड़ा छिलके के अन्दर का सार भाग (फलों के अन्दर का); केले के पौधे का भीतरी

ದಾಷ್ಟಕ ದಾಢಿಕ, ದಾಷ್ಟೀಕ ದಾಢೀಕ (ಕ?)

दास दास (सम्) सं.—दास, सेवक, गुलाम ।

ಕುರುಡ ದಾಸ ಕೆಟ್ಟು, ಎರಡು ದಾಸರಿಗೊ ನಂಬಿ ಕುರು

कोमल भाग ; मोटापन, तगड़ापन ; बल ; गर्व ; नटखटपन ।

दिंडुच दिंडुक (क) सं. — मोटा या तगड़ा आदमी ।

दिंडुग दिंडुग (क) सं. दे. दिंडुग ।

दिंडे दिंडे, दिंडु दिंडु (क) सं. — गोला-कार बड़ा पत्थर ।

दिंडेगिदि, दिंडेगिति (क) सं. — नटखट स्त्री ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — तकिया ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) अ. — हठात्, सहसा, तुरंत ; फौरन ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दिशाओं में रहनेवाली हाथी, वे हैं—ऐरावत, पुंडरीक, वामन, कुमुद. अञ्जन पुष्प-दंत, सार्वभौम और सुप्रतीक ; आठ की संख्या ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिक् (तत्) ; दिशा, निर्देश, संकेत ; रक्षण, रक्षा, मदद । — दिंडु दिंडु (तद्) क्रि. — असहाय हो, अनाथ हो (सुह.) । — दिंडु दिंडु (तद्) क्रि. — मार्ग दिखा ; पार कर, मदद कर (सुह.) ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दे. दिंडु । दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दिशाओं के अधिपति ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — क्षितिज ; दूरवर्ती स्थान ।

दिंडु दिंडु (सम्) वि. — निरंग ; नंगा । सं. — एक जैन-संप्रदाय ; भैरव ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) सं. — भय, डर, भीति, घबराहट ।

दिंडु दिंडु (क) क्रि. — उतार, नीचे उतार (दिंडु दिंडु—तेलुगु) ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु (क) क्रि. — नीचे आ, उतर ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिंडु मण्डल (तद्) ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु (सम्) वि. — लिखा हुआ, लिपा हुआ, विष में बुझा हुआ । सं. — विपैला बाण ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — सभी दिशाओं के देशों को जीतना ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिष्ट (तत्) ; सत्य, सच, सचमुच ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (तद्) वि. — छट (तत्) ; ढीठ, साहसी, हिम्मतवाला, दिलेर, वीर । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — वीरता, साहस ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिष्ट (तत्) ; नज़र, निगाह । — दिंडु दिंडु (तद्) क्रि. — देख, अवलोकन कर, विचार कर ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिष्ट (तत्) ; स्थिर, बली ; दृढ़ता, बल ; सचाई (मै प्र.) । दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) सं. — टीला, पहाड़ी ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — बड़े दरवाजे में छोटा दरवाजा, दीवार में बना हुआ छेद ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — टीला ; पुलिन ; दीप ; राशि, ढेर ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दक्ष प्रजापति की पुत्री और कश्यप की पत्नी । यही दैत्यों की माता है । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दैत्य, राक्षस ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — वर ; पति ; दो बार विवाहिता स्त्री ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दिन, रोज़, दिवस ; तीस की संख्या । — दिंडु दिंडु (तद्) वि. — रोज़ाना ; प्रतिदिन । — दिंडु दिंडु (सम्) सं. — सूर्य ; बारह की संख्या । — दिंडु दिंडु (तद्) वि. — दैनिक कार्य । — दिंडु दिंडु (सम्) सं. — सूर्य । — दिंडु दिंडु (तद्) रोज़, प्रतिदिन ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — अनाज ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — रोज़, प्रतिदिन ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) सं. — टीला, छोटी पहाड़ी । (तद्) वि. — दिव्य (तत्) । दिंडु दिंडु (क) सं. — बरात ; बोटल का डट्टा ।

दिंडु दिंडु (क) क्रि. — चक्कर काट । सं. — नाचते समय चरणों की तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) अ. — बलपूर्वक, दृढ़ता से, जोर से ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — टीला, पहाड़ी ; काठ, लकड़ी का बड़ा टुकड़ा ; डण्ठल ; घना सबल घेरा ; कुपेवाला पदार्थ ।

दिंडु दिंडु (क) वि. — बड़ा, बलवान्, महान् ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — बड़ा आदमी ; महान् पुरुष, ब्राह्मण ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (क) सं. — बड़प्पन, महानता, मुख्यता, प्रधानता, गौरव ।

दिंडु दिंडु (क) सं. — विभ्रम, सिर में चक्कर । क्रि. — दबा, ढकेल ।

दिंडु दिंडु (क) अ. — चकराते हुए ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दिन, दिवस ; स्वर्ग ; आकाश ; जंगल ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दिन, रोज़ ।

दिंडु दिंडु, दिंडु दिंडु (अ. दे.) सं. — दिवान-प्रधान मन्त्री ; ज़िले का शासनाधीन ; दरबार, राजसभा ; सरकार ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दीपावलि (तत्) ; दिवाली । (अ. दे.) सं. — दिवाला (हिं.) ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — स्वर्ग ; गगन, आकाश । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — देवता । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — कामधेनु । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — नायक = दिंडु दिंडु । — दिंडु दिंडु (तद्) सं. — आकाश ।

दिंडु दिंडु (सम्) वि. — दैवी, स्वर्गीय, अलौकिक, अद्भुत, चमकीला, बहुत बढ़िया, श्रेष्ठ, मनोहर, सुन्दर । — दिंडु दिंडु (सम्) सं. — स्वर्गीय संगीत ; गन्धर्व ।

दिंडु दिंडु (सम्) सं. — दे. दिंडु ।

दिंडु दिंडु (तद्) सं. — दिशा (तत्) ।

चाला से चलाना, धीरे चलाना ।

द्वैष्णु द्वेष्ट, द्वैष्णु द्वेष्टु (तद्) सं. — द्वैषं
(तत्); भूत, पिशाच ।

द्वितीय देवि, द्वितीय देवि (क) सं.— सुंदरता, लालित्य, मनोहरता ।

द्वितीय देवि (क) सं.— दे. द्वितीय.

द्वितीय देगल, द्वितीय देगुल (तद्) सं.— देवकुल (तद्); मंदिर, देवालय । द्वितीय देगुलिग= पूजारी ।

द्वितीय देदु, द्वितीय देदु (क) सं.— डंडल, वृत्त ।

द्वितीय देव (सम्) सं.— [द्वितीय धाव — तद्] — देव, देवता; राजा; आदर सूचक शब्द; इंद्र: शिव; दीर्घ वर्ण का संकेत; मूल, मूढ़ ।

द्वितीय देवकि (सम्) सं.— वसुदेव की पत्नी और श्रीकृष्ण की माता ।—द्वितीय नंदन= श्रीकृष्ण ।

द्वितीय देवकुसुम (सम्) सं.— लौंग, लवंग ।

द्वितीय देवखतक (सम्) सं.— नैसर्गिक, सरोवर ।

द्वितीय देवगोह (सम्) सं.— मंदिर, शिवालय ।

द्वितीय देवतरु (सम्) सं.— कल्पवृक्ष । मंदार वृक्ष; अश्वत्थ वृक्ष, संतान वृक्ष; पारिजात वृक्ष ।

द्वितीय देवतायन (सम्) सं.— मंदिर ।

द्वितीय देवताचर्च (सम्) सं.— देव-पूजा, अर्चन ।

द्वितीय देवते, द्वितीय देवता (सम्) सं.— देवी; देवता ।

द्वितीय देवदत्त (सम्) सं.— अर्जुन के शंख का नाम: ऊपर-नीचे देखना; जंभाते समय निकलनेवाली हवा; एक व्यक्ति का नाम ।

द्वितीय देवदासि (सम्) सं.— मंदिर में नाचने के लिए नियुक्त स्त्री ।

द्वितीय देवन (सम्) सं.— सौंदर्य, चमक, प्रकाश; पाँसे का खेल, जुआ; क्रीडा, आमद-प्रमोद; बाग, वाटिका; कमल; स्पर्धा; व्यापार, धंधा; प्रशंसा ।

द्वितीय देवनदि (सम्) सं.— नगा ।

द्वितीय देवनागरि (सम्) सं.— देवनागरी लिपि ।

द्वितीय देवभूमि (सम्) सं.— अकाश-गंगा; स्वर्ग, पवित्र भूमि ।— द्वितीय (सम्) सं.— आर्य ।

द्वितीय देवयज्ञ (सम्) सं.— होम, हवन । द्वितीय देवयोनि (सम्) सं.— किन्नर, गंधर्व, अप्सरा आदि ।

द्वितीय देवर, द्वितीय देव (सम्) सं.— पति का बड़ा या छोटा भाई; देवर या जेठ ।

द्वितीय देवरम्य (सम्) सं.— एक वृत्त का नाम ।

द्वितीय देवराज, द्वितीय देवराजेंद्र (सम्) सं.— इन्द्र; एक नाम ।

द्वितीय देवर्षि (सम्) सं.— नारद, अत्रि आदि ऋषि ।

द्वितीय देवल, द्वितीय देवलक (सम्) सं.— ब्राह्मण जो देवता की चढ़त पर अपना निर्वाह करता है; एक नाम ।

द्वितीय देववर्धक (सम्) सं.— विश्वकर्मा, देवताओं का बढ़ई ।

द्वितीय देवघ्नी (सम्) सं.— देवी, देवता की पत्नी; अप्सरा ।

द्वितीय देवस्थान (सम्) सं.— मंदिर, देवालय ।

द्वितीय देवस्व (सम्) सं.— मंदिर की संपत्ति ।

द्वितीय देवांग (सम्) सं.— जुलाहा, एक प्रकार का वस्त्र; रेशमी वस्त्र; पुरुष की जननेंद्रिय; एक व्यापारी का नाम ।

द्वितीय देवांगने (सम्) सं.— दे. द्वितीय देवांग ।

द्वितीय देवाद्रि (सम्) सं.— मेरु पर्वत ।

द्वितीय देवानांप्रिय (सम्) सं.— देवताओं का प्रिय; मूल, मूढ़; मूर्खता; बकरा; अशोक की उपाधि ।

द्वितीय देवार (तद्) सं.— देवागारं (तद्); स्वर्ग; मंदिर ।

द्वितीय देवि (सम्) सं.— देवी; दुर्गा; स्त्रियों लिए आदरसूचक शब्द; रानी; राजकुमारी; चैचक; सरस्वती; एक दवाई का पौधा ।

द्वितीय देविके (सम्) सं.— एक नदी का नाम ।

द्वितीय देश (सम्) सं.— स्थान, भाग, कोई स्थान; प्रांत; विभाग; नियम, क़ायदा ।—द्वितीय भाषे (सम्) सं.— प्रांतीय भाषा ।

द्वितीय देशस्थ (सम्) सं.— ब्राह्मणों की एक शाखा जो उत्तर से दक्षिण में आकर बस गयी है ।

द्वितीय देशांतर (सम्) सं.— अन्य देश, दूसरा देश, विदेश । द्वितीय देशांतर (तद्) ।

द्वितीय देशाधि, द्वितीय देसाधि (सम्) सं.— ज़िले या गाँव का मुख्य अधिकारी; ब्राह्मणों के एक वंश का नाम ।

द्वितीय देशावार, द्वितीय देशावर (सम्) सं.— एक देश से दूसरे देश जाकर भीख माँगना; भिक्षा; विदेश; निर्यात ।

द्वितीय देशि, द्वितीय देसि (सम्) सं.— किसी देश से संबंधित; प्रान्त की बोली या भाषा; एक राग का नाम ।

द्वितीय देशिक (सम्) सं.— मार्गदर्शक; गुरु, आचार्य; यात्री, मुसाफिर; शिव ।

द्वितीय देशीय, द्वितीय देश्य (सम्) वि.— देश या प्रान्त से संबंधित (पत्र, शब्द आदि) ।

द्वितीय देस (तद्) सं.— देश: (तद्); देश ।

द्वितीय देसि (क) वि.— उपयुक्त, योग्य ।

द्वितीय देसिकार्ति (क) सं.— रूपवती, सुंदरी स्त्री ।

द्वितीय देशिगार, [गार गार] (क) सं.— कारिगर, कलाकार ।

द्वितीय देसिंग (तद्) सं.— देवासिंह; (तद्); देवताओं का सिंह; शिव ।

द्वितीय देसिमार्ग (सम्) सं.— देश या प्रांत की भाषा-शैली ।

द्वितीय देह (सम्) सं.— शरीर, देह ।—द्वितीय धारण (सम्) सं.— जीवन, अस्तित्व ।

द्वितीय देहलि (सम्) सं.— देहरी, डोही ।

द्वितीय देहांत (सम्) सं.— मृत्यु, मौत ।

द्वैत च दैहिक (सम्) वि.—देह से संबंधित, शारीरिक ।

द्वैतैय दैतेय, द्वैत दैत्य (सम्) सं.— राक्षस, दैत्य । — गुरु गुरु = शुक्राचार्य ! — द्वैत ध्वंसि = विष्णु ।

द्वैत दैत्य (सम्) सं. — दीनता, गरीबी, निर्धनता; उदासी, शोक; निर्बलता; कमीनापन ।

द्वैत दैत्य (तद्) सं.—दे. दैत्य.

द्वैत दैवत (सम्) सं.—देवता, देव, देवता से संबंधित ;

द्वैत दैवयोग (सम्) सं. — संयोग सौभाग्य, मौका ।

द्वैत दैवाधीन (सम्) सं. — मृत्यु, मौत ।

द्वैत दोंग (क) सं.—बैल, नदी ;

द्वैत दोंगर (क) सं.—सुराख, खोखला ।

द्वैत दोंडले (क) सं. — एक पौधे का नाम ।

द्वैत दोंडे (क) सं.—मोटा बना हुआ या ठोस पदार्थ, गुच्छा ।

द्वैत दोंदले, द्वैत दोंदण, द्वैत दोंदणि, द्वैत दोंदुलि (क) सं. — भीड़, समूह, जन-समूह ।

द्वैत दोंदि, द्वैत दोंद्रे (क) सं.—दीवत, मशाल ।

द्वैत दोंब, द्वैत दोंबर (तद्) सं. — डेम: (तत्); अत्यंत नीच जाति का आदमी, डोम । द्वैत दोंबरगिति— स्त्री. लिं. ।

द्वैत दोंबि (क) सं.—भीड़, समूह, जन-समूह, कोलाहल; शोरगुल, मारपीट ।

द्वैत दोंबिग (तद्) सं.—दे. द्वैत.

द्वैत दोंबे (क) सं.—दे. द्वैत.

द्वैत दोंगर, द्वैत दोंग (क) सं.— खोखला ।

द्वैत दोंगे (क) क्रि.—नख से खोद, खोद, निकाल (जैसे कान से मल निकालना) ।

द्वैत दोड्ड (क) वि.—बड़ा, महान्, श्रेष्ठ,

उन्नत, विशाल, विस्तृत, स्थूल, मजबूत, सशक्त । द्वैत दोड्डप्प = ताऊ, द्वैत दोड्डम्प—ताई ।

द्वैत दोड्डतन, द्वैत दोड्डव (क) सं.—बड़प्पन, बड़ाई, महानता, श्रेष्ठता; गौरव ।

द्वैत दोड्डस्तन, द्वैत दोड्डस्तिके (क) सं.—दे. द्वैत.

द्वैत दोड्डि (क) सं. = काँजी हाउस; पशुओं को फँसाकर बांधने की शाला ।

द्वैत दोड्डितु. द्वैत दोड्डितु (क) क्रि.—दे. द्वैत.

द्वैत दोड्डेस (क) सं.—नाच, नृत्य ।

द्वैत दोड्डिल (क) सं.—एक पौधा (Atlan-tia manophylla) ।

द्वैत दोणे (क) सं.—तरकस, निपंग; नैसर्गिक सरोवर, चट्टान पर का जलाशय ।

द्वैत दोण (क) सं.—लाठी, दंड, डंडा, सोंटा ।

द्वैत दोद्रे (क) सं.—राशि, समूह, समुदाय; भीड़, समूह; कोलाहल, अस्पष्ट बात ।

द्वैत दोद्रेग (क) सं.—भीड़ या समूह का व्यक्ति ।

द्वैत दोन्ने (क) सं.—दोना ।

द्वैत दोप्प, द्वैत दोप्पाने (क) वि.—स्थूल, मोटा; बड़ा, तगड़ा । सं. — स्थूलता; मोटा होना ।

द्वैत दोप्पे (क) सं.—दोना ।

द्वैत दोव्विसु (क) क्रि.—दबवा, ढंकेलने दे (प्रे.) ।

द्वैत दोव्वु (क) क्रि.—दबा, ढकेल, आगे या पीछे दबा ।

द्वैत दोम्मलिसु (क) क्रि.—चकर काट; संभ्रमित हो, घबड़ा जा ।

द्वैत दोरकिसु (क) क्रि.—प्राप्त करा या करवा; प्राप्त कर ।

द्वैत दोरकु (क) क्रि.—प्राप्त हो; मिल, उपलब्ध हो, हाथ लग ।

(१) द्वैत दोरे (क) क्रि.—प्राप्त हो; मिल उपलब्ध हो; प्रकट हो; सदृश्य या समान हो. योग्य हो; पास-पास हो । सं. — समता, सादृश्य; समीपता, उपयुक्तता या योग्यता ।

(२) द्वैत दोरे (तद्) सं.—धुर्य: (तत्) — राजा, नृपति; प्रधान, मुखिया; स्वामी, प्रभु । — तन = राजा होना, प्रभुत्व । द्वैत दोरेयिसु (क) क्रि — दे. द्वैत.

द्वैत दोरेसानि (क) सं. — स्वामिनी, मालकिन, रानी ।

द्वैत दोरे (क) सं.—वेद्या; कुटिनी ।

द्वैत दोरे (क) सं.—एक प्रकार की दवा या बीज जिसका उपयोग मद्य बनाने में होता है ।

द्वैत दोरेस (क) सं.—घोखा, फरेब, कपट ।

द्वैत दोरेल्ल (क) वि.—बड़ा, विस्तृत । — द्वैत दोरेल्ल = बड़ी तोंद ।

द्वैत दोरेकरि (क) सं.—घास खोदने का एक उपकरण ।

द्वैत दोरेचु (क) क्रि.—लट, झपट कर बटोर ।

द्वैत दोरेटि (क) सं.—लगा ।

द्वैत दोरेण (तद्) सं.—द्रोण: (तत्?)— नंगा, नग्न ।

द्वैत दोरेणि (तद्) सं.—द्रोणी (तत्)—नाव, नौका ।

द्वैत दोरेण्डोरे (क) सं.—द्वैत दोरेण्डोरे = बड़ी तोंदवाला. द्वैत दोरेण्डोरे = बड़ी तोंदवाली स्त्री ।

द्वैत दोरेतर, द्वैत दोरेत्र (तद्) सं.— ('धौत' से?)—धोती ।

द्वैत दोरेवि (अ. दे.) सं.—धोबी (हिं) ।

द्वैत दोरेमि, द्वैत दोरेमे (क) सं.— मच्छर, पिस्सु ।

द्वैत दोरेगायि (क) सं.—पकनेवाला फल ।

(१) द्वैत दोरे (क) सं.—पकना, पक्व होना

(२) मो०० दोरे, मो०० दोर (सम्) सं.—
धागा ।
मो००० दोर्वल (सम्), मो०००० दोर्वल
(तद्) सं — भुजबल ।
मो०००० दोर्वति, मो००००० दोर्वति (तद्)
सं. — धोती ।
मो००० दोष (सम्) सं.—दोस (तद्)—त्रुटि,
अपराध, कसूर, ऐव ; कलंक, भर्त्सना ;
बुराई, खराबी ; हानि ; दुष्परिणाम ; रोग ।
मो००० दोषि (सम्) वि. — अपराधी, त्रुटि
करनेवाला ; अपवित्र, भ्रष्ट ; बुरा ।
मो००० दोषे, मो०००० दोषा (सम्) सं.—
सायंकाल ; कालिमा, रात्रि ।
मो००० दोसे (क) सं. — दोसा ; उड़द की दाल
और चावल को पीसकर बनाया जानेवाला
खाद्य पदार्थ ।
मो००० दोस्ति (अ. दे.) सं. — दोस्ती
(फारसी) ; मित्रता ।
मो००० दोह (सम्) सं.—दुहना ; दूध ।
मो०००० दोहद (सम्) सं. — गर्भवती स्त्री
की रुचि ; गर्भ ; अमिलाषा, प्रबल अमि-
लाषा. कामना ; वृक्षों की अमिलाषा ।
मो०००० दोहन (सम्) सं.—दुहना ; दुधैडी ।
मो०००० दोहित्र (तद्) सं. — दौहित्र ;
(तत्) ; पुत्री का पुत्र ; नाती ।
मो०००० दोहिल (क) सं.—प्रकटन, प्रका-
शन, किसी बात को फैलाना ; शिकायत
करना ।
मो००० दोल (तद्) सं.—मो०००० दोला (तत्) ;
झूला, हिंडोला ; पालकी ।
मो०००० दोलु (तद्) सं. — डौल ; (तत्) ;
बड़ा डोल ।
मो०००० दौर्जन्य (सम्) सं. — दुर्जनता ;
दुष्टता, नीचता ; बुराई ।
मो०००० दौर्भाग्य (सम्) सं. — दुर्भाग्य ;
बुरी दशा ।
मो०००० दौहित्र (सम्) सं.—दे. मो०००००.
मो००००० दौहित्र (सम्) सं.—स्वर्ग
और पृथ्वी ।
मो०००० द्युति (सम्) सं.—प्रकाश, कांति, छवि,

चमक ; सौंदर्य ; प्रकाश की किरण ।
मो०००० द्युति (सम्) सं.—गंगा ।
मो०००० द्युम्न (सम्) सं.—प्रकाश, कांति,
आभा ; संपत्ति ; बल, शक्ति, विक्रम ।
मो०००० द्युत (सम्) सं. — जुआ, क्रीडा, खेल ;
जुआ खेलनेवाला ।
मो०००० द्युत (सम्) सं. — चमक, प्रकाश,
आभा ; सूर्य की धूम ; गरमी ।
मो०००० द्युतन (सम्) सं.—चमकना, प्रका-
शित होना ; देखना, दृष्टि ।
मो०००० द्युतिसु (सम्) क्रि. — प्रकाशित
हो, चमक ; प्रकट हो ।
मो०००० द्रव (सम्) सं.—गमन, भ्रमण, मति ;
टपकना, चूना ; खेल, आमोद, विहार ;
पनीलापन, तरलता, तरल पदार्थ ; वेग ।
वि.—टपकनेवाला, तर, तरल, पनीला ।
मो०००० द्रवति (सम्) सं.—नदी ।
मो०००० द्रविड, मो०००० द्रविळ (तमिळ) सं. —
तमिळनाड और उसके निवासी ।
मो०००० द्रविण (सम्) सं.—संपत्ति, ऐश्वर्य,
पैसा, धन ; वस्तु ; शक्ति, बल ; सुवर्ण ;
चाँदी ।
मो०००० द्रविसु (सम्) क्रि.—द्रवित हो, गल,
तरल हो ; पसीज जा ।
मो०००० द्रव्य (सम्) सं.—वस्तु, चीज़ ; धन,
पैसा, संपत्ति ; जीवद्रव्य ; काठ की मूर्ति ;
उपयुक्त पदार्थ ; औषध, दवा ।
मो०००० द्राक्षा. मो०००० द्राक्षे (सम्) सं.—
अंगूर, अंगूर की लता । — मो००००० पाक (सम्)
—संद्राक्षापाक ; कविता का प्रसाद गुण ।
मो०००० द्रावे (तत्) सं.—द्रापः (तत्) मूल,
वेवकृफ ।
मो०००० द्रावक (सम्) सं.—द्रव रूप में होने-
वाला पदार्थ ; पिघलानेवाला ; चोर ;
चतुर आदमी ; लंपट ; मोम ।
मो०००० द्राविके (सम्) सं.—लार ।
मो०००० द्राविड (तत्) सं. — तमिळवाला ;
पंच द्राविडों में एक ।
मो०००० द्रुण (सम्)—विच्छू ।
मो०००० द्रुणे (सम्) सं.—धनुष की डोर ।

मो००० द्रुत (सम्) वि.—तेज़ ; फुर्तीला, वेग-
वान् ; शीघ्र, जल्दी, तुरंत । सं.—बिछू ;
वृक्ष ; परिहास करनेवाला अभिनेता, विदू-
षक । — मो०००० पद (सम्) सं.—एक वृत्त का
नाम ।
मो०००० द्रुपद (सम्) सं. — द्रौपदी के पिता
का नाम ।
मो०००० द्रुम (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष ।
मो०००० द्रोण (सम्) सं. — चार सौ बाँस
लंबी झील ; जलपूर्ण मेघ ; वनकाक ;
बिच्छू ; वृक्ष ; सफ़ेद फूलों का पेड़ ; द्रोणा-
चार्य ।
मो०००० द्रोणि (सम्) सं. — काठ की बाल्टी ;
जलाधार नौद ; घाटी ; १२८ सेर की
तौल ।
मो०००० द्रोह (सम्) सं.—उत्पात, उपद्रव ;
वैर, द्वेष ; विद्रोह ; विश्वासघात ; अपराध ।
मो०००० द्रोहि (सम्) वि. — अपराधी,
विद्रोही, अपकारी ।
मो०००० द्रु (सम्) वि.—दो ।
मो०००० द्रुद्र (सम्) सं. — जोड़ा, युग्म ;
लड़ाई, युद्ध, झगड़ा ; संदेह, शक ; गुप्त-
भेद ; रहस्य ; द्वंद्व समास । — मो००००० प्रास
(सम्) सं.—अनुप्रास अलंकार का एक
भेद ।
मो०००० द्रुय, मो०००० द्रुयि (सम्) सं. —
जोड़ा, जुड़ा ; दो प्रकार का स्वभाव ।
मो०००० द्रुदश (सम्) वि.—बारह, बारहवाँ ।
मो०००० द्रुपर (सम्) सं. — पाँसे का वह
पहल जिसपर दो खुदे हो ; संदेह ; अनि-
श्रय ; तीसरे युग का नाम ।
मो०००० द्रुार (सम्) सं. — द्वार, दरवाज़ा ;
माध्यम, रास्ता, मार्ग, साधन ।
मो०००० द्रुारपालक (सम्) सं.—द्वारपाल,
पहरेदार, दरबान ।
मो०००० द्वि (सम्) वि.—दो, दोनों ।
मो०००० द्वितीय (सम्) वि.—दुगुना ; दूसरा ;
दो ; जोड़ा ।

द्वितीयः (सम्) सं.—जोड़ा, युग्म ; पत्नी ; विभक्ति विशेष ; चन्द्रमास की दूसरी तिथि ।

द्विष्ट (सम्) सं.—द्विष्ट ; जोड़ा, जुटा ; शब्द को दुहराना ।

द्विधा (सम्) अ.—दो भागों में, दो प्रकार से ।

द्विप (सम्) सं.—हाथी ।

द्विरेफ (सम्) सं.—भ्रमर, काला मधुकर ।

द्विरेफ (सम्) सं.—घृणा, तिरस्कार ; शत्रुता ; बदला लेने की प्रवृत्ति ।

द्विरेफ (सम्) सं.—शत्रु ।

द्विरेफ (सम्)—दो का भाव, दुई ; द्वैत-वाद ।

द्विरेफ (सम्) वि.—दोहरा, दूना ।

द्विरेफ (सम्) वि.—द्वीप संबंधी ; चीते का ; व्याघ्रचर्म से ढका हुआ ।

द्विरेफ (सम्) सं.—व्यासजी का नाम ।

द्विरेफ (सम्) सं.—गणेश ।

द्विरेफ (सम्) सं.—ताँवा ।

द्विरेफ (सम्) सं.—दो दिनों की अवधि ।

ध

ध—कनक-वर्णमाला का तैतीसवाँ अक्षर ; तवर्ग का चौथा व्यंजन ।

ध—धक्का (अ. दे.) सं.—धक्का-मुक्की (हिं.) लड़ाई, झगड़ा ।

ध—धक्का (क) सं.—स्थूण, निहाई ।

ध—धग (सम्) सं.—जलन, ज्वाला, आग ; लौ, चमक, गरमी, ताप ।

ध—धट (सम्) सं.—तराजू, तुला ; तराजू द्वारा परीक्षा ।

ध—धण (क) सं.—धनुष इत्यादि की ध्वनि ।

ध—धण (क) अ.—धन्य ! धन्य !, अच्छा ।

ध—धत्त (सम्) सं.—धत्ता ।

ध—धन (सम्) सं.—संपत्ति, दौलत, कोई मूल्यवान् वस्तु ; पशुधन ।

ध—धनजय (सम्) सं.—संपत्ति या धन पर विजय पाना ; अग्नि ; आग ; अर्जुन ; एक लेखक का नाम ; सिर की वायु ।

ध—धनद, धनद, (सम्) सं.—कुवेर ।—सं. सख = शिवजी ।

ध—धनप, धनपति, धनपति धना-धिप (सम्) सं.—कुवेर ।

ध—धनाल, धन धति, धन धनिक (सम्) वि.—धनी, अमीर, संपन्न ।

ध—धनुः, धनुस्, धनुस् धनुस् (सम्) सं.—धनुष, कमान ।

ध—धनुर्धर, धनुर्धर धनुर्धारि (सम्) सं.—धनुष धारण करनेवाला, तीरंदाज ।

ध—धनुर्धर (सम्) सं.—चंद्रलता ।

ध—धनुष्कोटि (सम्) सं.—धनुष का अग्र भाग ; एक स्थान का नाम जो रामेश्वरम के पास है ।

ध—धन्य (सम्) वि.—धन देनेवाला ; धनवान् ; भाग्यवान् सुकृती, सुखी ; सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम । सं.—धन, संपत्ति ।

ध—धन्यते (सम्) सं.—सुकृत, सौभाग्य, धन्य होना ।

ध—धन्यवाद (सम्) सं.—शुक्रिया, धन्यवाद ।

ध—धन्व (सम्) सं.—धनुष ; मरुभूमि ।

ध—धन्वतरि (सम्) सं.—सूर्य ; देव-वैद्य ।

ध—धन्वि (सम्) सं.—धनुर्धारी, तीरंदाज ; कई पौधों के नाम ।

ध—धमन (सम्) सं.—एक प्रकार का नरकुल ।

ध—धम्मिल्ले (सम्) सं.—अनुसाल्व की पत्नी का नाम ।

ध—धरणि, धरणी धरणी (सम्) सं.—भूमि, पृथिवी ; जमीन, एक की संख्या ।

ध—धरणिचक्रेश, धरणीचक्रेश धरणीचक्रेश, धरणीचक्रेश धरणीचक्रेश (सम्) सं.—राजा ।

ध—धरणीधर (सम्) सं.—पर्वत ; शेष ; कच्छप ; विष्णु ; शिव ; राजा ; दिग्गज ।

ध—धरधर (क) अ.—अच्छा ; बहुत ।

ध—धरधर धराधर (सम्) सं.—पर्वत ; विष्णु ।

ध—धरधर धराधर (सम्) सं.—भूमि ।

ध—धरित्री, धरित्री धरित्री (सम्) सं.—भूमि, पृथिवी ।

ध—धरियसु, धरिसु, धरियसु धरियसु (सम्) क्रि.—धारण कर, धर ।

ध—धर्म (सम्) वह कर्म जिसके करने से इह में अभ्युदय और पर में मोक्ष की प्राप्ति होती है ; दर्पण ; प्रचलन, पद्धति ; कर्तव्य ; न्याय, समानता ; सादृश्य ; पक्षपात ; व्यक्ति की वृत्ति, चरित्र ; नेम ; ईश्वर-भक्ति ; कर्तव्याकर्तव्य अवधारणा ; यज्ञ ; सत्संग, धर्मात्मा पुरुषों का सांगत्य ; भक्ति ; विधान ; उपनिषद् ; उत्पात ; चाप, धनुष ; शिव ; राजा ; धर्मदेवता ; यम ; युधिष्ठिर का नाम ।

ध—धर्मशास्त्र (सम्) सं.—कर्तव्या-कर्तव्य अवधारण शास्त्र ।

ध—धर्मसंहिता (सम्) सं.—मनु आदि की स्मृतियाँ ।

ध—धर्मसंकट (सम्) सं.—दुविधा, धर्मसंकट ।

ध—धर्मस्थल, धर्मस्थल, धर्मस्थल (सम्) सं.—कर्नाटक का एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान ।

ध—धर्वण (सम्) सं.—अवज्ञा, अपमान ; आक्रमण, सतीत्वहरण ; रति, संभोग ; कुवाच्य, गाली ।

ध—धर्वणि (सम्) सं.—वेष्टा, व्यभिचारिणी स्त्री ।

ध—धव (सम्) सं.—मनुष्य ; पति, स्वामी, प्रभु, एक पौधा ।

ध—धवल धवल धवल (सम्) सं.—सफेद रंग ; सफेद कागज ; एक प्रकार का कपूर ; श्रेष्ठ बैल ; बूढ़ा बैल । वि.—सुन्दर, मनोहर ।

धनंतिम धवलम, धनंतिम धवलम, (सम्)

सं.—सफेदी ।

धनंति धवल (सम्) सं.—सफेद गाय ।

धनंति धाति (सम्) सं.—आक्रमण, हमला ।

धनंति धातु, धनंति धातार (तद्) सं.—धातु (तद्) ।

धनंति धातु (सम्) सं.—प्रधान या मूल उपादान, पञ्चतत्व; निसृत्तः; (पसीना आदि); वात, पित्त और कफ; खनिज पदार्थ; क्रिया संबंधी धातु; जीवात्मा; परमात्मा; इंद्रिय; इंद्रिय-कर्म; हड्डी । धनंति धातु (सम्) सं.—सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; वाहक, समर्थक, रक्षक; विष्णु; जीव; सप्तर्षियों का नाम; विवाहिता स्त्री का प्रेमी, व्यभिचारी ।

धनंति धात्रि, धनंति धात्री (सम्) सं.—दाई, धाय; पृथिवी; आँवले का वृक्ष ।

धनंति धात्रिके (सम्) सं.—दे. धनंति.

धनंति धात्रिधर (सम्) सं.—पर्वत ।

धनंति धात्रीजात (सम्) सं.—वृक्ष, पेड़ ।

धनंति धात्रीधव (सम्) सं.—राजा ।

धनंति धात्रीफल (सम्)—आँवला ।

धनंति धानुष्क (सम्) सं.—धनुर्धारी, तीरं-दाज्ञ ।

धनंति धान्यक (सम्) सं.—धनिया ।

धनंति धाम (सम्) सं.—घर, मकान, रहने का स्थान; खाली स्थान, जगह; शरीर; कुल, वंश, कुटुंब; प्रकाश, चमक; महिमा; गौरव; बल, पराक्रम; प्रकाश की किरण । धनंति धार (सम्) सं.—धरना; धरनेवाला, समर्थक; बहनेवाला, टपकनेवाला; तुषार, हिम; तरंग, लहर ।

धनंति धारक (सम्) सं.—धरनेवाला; पेटी, ट्रंक (Trunk); स्तंभ, खंभा ।

धनंति धारण (सम्)—धारण करने की क्रिया या भाव; धारणा, बुद्धि, समझ; दृढ़ निश्चय; मर्यादा; विश्वास ।

धनंति धारणे (क ?) सं.—धारण ।

धनंति धाराळ (क) सं.—उदारता; पूर्ण

स्वातंत्र्य, छुटकारा । धनंति धाराळि—उदार पुरुष ।

धनंति धारिणि, धनंति धारिणी, धनंति धारुणि (सम्) सं.—पृथिवी ।

धनंति धारे, धनंति धारा (सम्) सं.—दे. धार; सिरा, नोक, धार ।

धनंति धारुष्क धार्तराष्ट्र (सम्) सं.—धृतराष्ट्र का पुत्र; एक प्रकार का हंस ।

धनंति धार्मिक (सम्) वि.—धर्मात्मा, पुण्यात्मा; सच्चा, सत्यप्रिय; धर्मनिष्ठ ।

धनंति धार्ष्ट्य (सम्) सं.—दे. धार्ष्ट्य ।

धनंति धावन (सम्) सं.—धोना, साफ करना, सफाई ।

धनंति धिक्करिषु (सम्) क्रि.—धिक्कार कर, फटकार ।

धनंति धिक्कार (सम्) सं.—धिक्कार, फटकार ।

धनंति धिगिल् (क) सं.—भय, भीति, डर ।

धनंति धिषण (सम्) सं.—बृहस्पति का नाम ।

धनंति धिषणा, धनंति धिषणे (सम्) सं.—वाणी, वक्तृता; बुद्धि; प्रशंसा; कमण्डलु, प्याला ।

धनंति धी (सम्) सं.—बुद्धि, समझ ।

धनंति धीमति (सम्) सं.—बुद्धिमति स्त्री ।

धनंति धीर (सम्) वि.—वीर, साहसी; दृढ़, दृढ़ मन का; शांत, गंभीर; आत्म-संयमी; बुद्धिमान । सं.—जैन संन्यासी; समुद्र; केसर, कुंकुम । — धीर तन = धीरता ।

धनंति धुर (क) सं.—लड़ाई, युद्ध ।

धनंति धुरंधर (सम्) वि.—जुआं होने-वाला; जीतने योग्य; प्रधान, नेता, मुखिया; सद्गुणों से संपन्न; आवश्यक कर्तव्य-भार से दबा हुआ ;

धनंति धुरीण (राम्) वि.—भार होने योग्य; धुरीण, काम-धंधे में लिप्त पुरुष; प्रधान, मुखिया, नेता; अग्रणी ।

धनंति धुरे, धनंति धुरा (सम्) सं.—बोझ, भार ।

धनंति धुवित्र (तद्) सं.—धुवित्र (तद्); पंखा ।

धनंति (सम्) सं.—एक सुगंध द्रव्य जिसको आग में जालने से धुआँ निकलता है ।

धनंति धूम (सम्) सं.—धुआँ; बादल ।—

धनंति धूमकेतु (सम्) सं.—अग्नि, आग; उल्का; धूमकेतु, पुच्छलतारा । — धनंति शकट (सम्) सं.—रेल ।

धनंति धूम्ये (सम्) सं.—धुएँ की घटा ।

धनंति धूम्र (सम्) वि.—धुमिले रंग का, भूरा; लाल और काले का मिश्रण; बैंगनी; अंधकार । — धनंति क (सम्) सं.—ऊंट । — धनंति पान (सम्) सं.—बीड़ी, सिगरेट आदि पीना ।

धनंति धूर्जटि (सम्) सं.—शिव ।

धनंति धूर्त (सम्) वि.—दगाबाज़, धोखा देनेवाला; उपद्रवी; चालाक ।

धनंति धूलि धूलि धूली, धनंति धूलि (क) (सम्) सं.—धूल, गर्द ।

धनंति धूसर (सम्) वि.—भूरे रंग का । सं.—भूरा रंग ।

धनंति धूलिकोटि (तद्) सं.—धूल का किला अर्थात् मिट्टी का किला ।

धनंति धूलिपट, धनंति धूलिपट्ट (तद्) सं.—धूल ही धूल, संपूर्ण नाश ।

धनंति धूलिपटल (तद्) सं.—धुएँ की घटा ।

धनंति धूले (तद्) सं.—धूल ।

धनंति धृत (सम्) वि.—पकड़ा हुआ, धरा हुआ वहन किया हुआ, आया हुआ, समर्थित, रखा हुआ, वजाया हुआ, रक्षित; धिसा हुआ, उपयोग किया हुआ, अभ्यास किया हुआ; तौला हुआ ।

धनंति धृष्ट (सम्) सं.—दुर्योधन के पिता का नाम; एक नाग का नाम; एक पक्षी; अंधा मनुष्य ।

धनंति धृति (सम्) सं.—पकड़ना, धरना आदि; दृढ़ता, स्फूर्ति, दृढ़ संकल्प; सन्तोष, आनंद, प्रसन्नता ।

धनंति दृष्ट (सम्) सं.—ढीठ, साहसी या अशिष्ट व्यवहार करनेवाला पुरुष; अस्मि-मानी; लंपट, कुकर्म ।

दोस्रो धेनु (सम्) सं.—गाय; भूमि; भेंट, पुरस्कार ।

दोस्रो धेनुके (सम्) सं.—दुधार-गाय; हथिनी; एक अच्छा विशेष ।

दोस्रो धेनुक (सम्) सं.—गायों का समूह ।

दोस्रो धेनुके (सम्) सं.—धीरज, धीरता;

चित्त की स्थिरता; साहस; गांभीर्य;

शांति।—संठ वंत = धैर्यवान् । — ठा

शालि = धैर्यवान् ।

दोस्रो धोरण (सम्) सं.—वाहन, सवारी;

तेज़ी या सुंदरता से चलनेवाला; घोड़े की

चाल; ध्यान, ढंग, विधान, शैली;

उद्देश्य ।

दोस्रो धोरणे (सम्) सं.—अच्छी शैली;

उपेक्षा, लापरवाही, ध्यानहीनता ।

दोस्रो धौत (सम्) वि.—साफ़ किया हुआ;

चमकाया हुआ । सं.—चाँदी ।

दोस्रो धौम्य (सम्) सं.—श्रेष्ठ बैल; एक

ऋषि का नाम ।

दोस्रो ध्यान (सम्) सं.—ध्यान, प्रगाढ़ चिंता,

मानसिक प्रत्यक्ष ।

दोस्रो ध्रुव (सम्) वि.—ध्रुव, अचल, स्थिर,

नित्य, निश्चित, दृढ़; पक्का, ठीक । सं.—

ध्रुवतार; पृथिवी का अक्ष देश; वटवृक्ष;

वृक्ष का तना; खंभा; (संगीत में) टेक;

समय, काल, युग; ब्रह्मा; विष्णु; शिव;

उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव जो भगवद्भक्त थे ।

दोस्रो ध्रुवे (सम्) सं.—यज्ञ का करछुल या

चमचा; वृक्ष विशेष ।

दोस्रो ध्वंस (सम्) सं.—विनाश, नाश, नष्ट

होना; पतन ।

दोस्रो ध्वंस (सम्) सं.—नाश करना;

पतन, मरना, नाश ।

दोस्रो ध्वज (सम्) सं.—पताका, झंडा; चिह्न,

संकेत ।

दोस्रो ध्वज (सम्) सं.—पताका, झंडा; चिह्न,

संकेत ।

दोस्रो ध्वज (सम्) सं.—पताका, झंडा; चिह्न,

संकेत ।

दोस्रो ध्वनि (सम्) सं.—ध्वज, नाद, स्वर;

शब्द; साहित्य में प्रयुक्त ।

दोस्रो ध्वस्त (सम्) वि.—पतित, गिरा हुआ;

विनष्ट; अदृश्य ।

दोस्रो ध्वान (सम्) सं.—आवाज़, नाद,

स्वर; लय ।

दोस्रो ध्वान्त (सम्) सं.—अंधकार ।

न न

न न—कन्नड-वर्णमाला का चौतीसवाँ अक्षर,

तवर्ग का अंतिम व्यंजन ।

न न (सम्) अ.—नहीं, न ।

न नं कु, न नं कु (क) सं.—हरिण,

हिरन ।

न नं कु, न नं कु (क) क्रि.—थोड़ा चाट,

थोड़ा खा (जैसे अचार) । न नं कु (क)

सं.—विष, जहर ।

न नं नट, न नं नट (क) सं.—रिश्तेदार,

नातेदार; बंधु, मित्र ।—न नं नट = रिश्ते-

दारी ।—न नं नट = रिश्तेदारी । — न नं

नटिके = रिश्तेदारी ।

न नं नटिके (क) सं.—रिश्तेदारी, संबंध ।

न नं नटिके (क) सं.—स्त्री रिश्तेदार ।

न नं नट, न नं नट (क) सं.—रिश्तेदारी,

संबंध; मित्रता ।

न नं नट (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष; कृष्ण

के पिता नंद; एक वृत्त ।

न नं नट (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम;

मैंडक; कृष्ण की तलवार का नाम; कोई

भी तलवार; प्रसन्नता ।

न नं नट (सम्) सं.—प्रसन्नता; पुत्र;

इन्द्र की फुलवारी; एक संवरसर का नाम ।

न नं नट (सम्) सं.—श्रीकृष्ण ।

न नं नट (सम्) सं.—पुत्री, बेटी ।

न नं नट (क) वि.—अमिट, सदा रहने-

वाला ।—न नं नट दीप = सदा जलनेवाला

दीपक ।

न नं नट (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष;

पुत्र; शिव के एक अनुचर का नाम—नंदी-

श्वर; वृक्ष विशेष (The tree of cedrala

toona) ।

न नं नट (सम्) वि.—प्रसन्न, हर्षित,

संतुष्ट ।

न नं नट (सम्) सं.—मैसूर राज्य

का एक बड़ा पर्वत ।

न नं नट (सम्) सं.—प्रसन्न करने

वाली; प्रसन्न स्त्री; पुत्री; नंदिनी धेनु ।

न नं नट, नंदिन (तद्) सं.—नंदावर्त:

(तद्) ।

न नं नट (सम्) सं.—शिव;

मित्र; पुत्र; नंदिवृक्ष ।

न नं नट, नंदिवाह, नंदिवाहन

(सम्) सं.—शिव ।

न नं नट (क) क्रि.—बुझा, मिटा ।

न नं नट (क) क्रि.—बुझा, तेजहीन हो,

प्रकाशहीन हो; मुरझा जा; नष्ट हो, बरबाद

हो, मिटा जा ।

न नं नट (सम्) सं.—प्रसन्नता, हर्ष; संपत्ति,

धन; शक्ति, गौरी; प्रथमा, षष्ठी और

एकादशी तिथियाँ ।

न नं नट (सम्) सं.—सफ़ेद

फूलों का एक पौधा; विचित्र प्रकार का

चित्र; पश्चिमी द्वार के बिना चतुःशाला

एक बड़ी मछली विशेष ।

न नं नट (क) सं.—विश्वास, भरोसा,

यकीन ।

न नं नट, नंविगस्त (क) सं.—विश्वास पात्र

मनुष्य ।

न नं नट, नंविगस्तिके (क) सं.—विश्वास,

सचाई, ईमानदारी ।

न नं नट (क) सं.—दे. नं नट.

न नं नट (क) क्रि.—विश्वास उत्पन्न कर,

नंविगस्तिके (क) सं.—विश्वास उत्पन्न

करना ।

न नं नट (क) क्रि.—विश्वास कर, भरोसा

कर ।

न नं नट (क) सं.—दे. नं नट.

न नं नट, नंविगस्तिके (क) सं.—विश्वास उत्पन्न कर,

नंविगस्तिके (क) सं.—विश्वास उत्पन्न

करना ।

न नं नट (क) क्रि.—विश्वास कर, भरोसा

कर ।

न नं नट (क) सं.—दे. नं नट.

नट्टि नकारिख

विनोद, अपहास, मजाक । — ७८ अक्षर, ७८ कार = मसखरा, विदूषक ।

नट्टि नकारिख (सम्) क्रि. — न कह, अस्वीकार कर, इनकार कर ।

नट्टि नकासि, नट्टि नकासु (अ. दे.) सं. — नकाशी ।

नट्टि नकुल (सम्) सं. — नेवला; धर्मराज के एक छोटे भाई का नाम । — ८९७ केतु, ८९७ ध्वज (सम्) सं. — एक मंत्री का नाम । — ७० अरि (सम्) सं. — साँप ।

नट्टि नकि (क) सं. — मिजराव ।

नट्टि नक्कु, नट्टि नक्कु (क) क्रि. — चाट, चख । नट्टि नक्कु (क) कृ. — हँसकर ।

नट्टि नक्के (क) सं. — सियार, लोमड़ी ।

(१) नट्टि नक्त (क) सं. — कहावत, लोकोक्ति ।

(२) नट्टि नक्त (सम्) सं. — रात्रि, रात ; उपवास जो रात में किया जाता है । — ४८ चर (सम्) सं. — शक्षस ; उल्लू ; चोर, विली । — ५०० मुखे (सम्) सं. — सायं काल ।

नट्टि नक्त (सम्) सं. — मगर, मकर ।

नट्टि नक्ष (अ. दे.) सं. — नक्शा (अरबी) ।

नट्टि नक्षत्र (सम्) सं. — तारा ; ग्रह ; मोती ; २० की संख्या ।

नट्टि नक्षत्रेश (सम्) सं. — चाँद, चंद्रमा ।

नट्टि नक्षे (अ. दे.) सं. — दे. नट्टि

नट्टि नख (सम्) सं. — नख, हाथ-पैर के नाखून ।

नट्टि नखपंजर (सम्) सं. — पंजा ।

नट्टि नखर (सम्) सं. — हाथ का नख, पंजा ।

नट्टि नखरायुध, नट्टि नखायुध (सम्) सं. — सिंह, बाघ, मुर्गा । — ९० वैरि = हाथी ।

(१) नट्टि नग (क) सं. — गहना, आभूषण ; वस्तु ; टुकड़ा ; वस्तुओं का बोझा ; बैल का बोझा ।

(२) नट्टि नग (सम्) सं. — पर्वत ; साक्ष की संख्या ; एक वृक्ष ।

नट्टि नगकुलिश (सम्) सं. — इन्द्र ।

नट्टि नगचाप (सम्) सं. — शिव ।

नट्टि नगज (सम्) सं. — पर्वत में उत्पन्न, हाथी ।

नट्टि नगजे, नट्टि नगजाते (सम्) सं. — पार्वती ।

नट्टि नगडि, नट्टि नगडि (क) सं. — जुकाम, सर्दी ।

नट्टि नगदि, नट्टि नगदु (अ. दे.) सं. — नकद (अरबी) ।

नट्टि नगधरे (सम्) सं. — पृथिवी, भूमि ।

नट्टि नगप, नट्टि नगपति (सम्) सं. — हिमालय ।

नट्टि नगनंदन (सम्) सं. — पर्वत के पास की फुलावरी ।

नट्टि नगर, नट्टि नगारि (सम्) — शहर, नगर ।

नट्टि नगवैरि (सम्) सं. — इन्द्र ।

नट्टि नगात्मजे (सम्) सं. — पार्वती ।

नट्टि नगारि (अ. दे.) सं. — नगाड़ा, नगारा ।

नट्टि नगिसु (क) क्रि. — हँसा ।

नट्टि नगु (क) क्रि. — हँस, मुस्करा । सं. — हँसी, मुस्कराहट, प्रसन्नता, हर्ष ; विकास ।

नट्टि नगे (क) क्रि. — हँस, मुस्करा । सं. — हँसी, मुस्कराहट ।

नट्टि नगेगार, नट्टि नगेवडिकार (सम्) सं. — विनोद करनेवाला, हँसानेवाला, विदूषक ।

नट्टि नगेवडि, नट्टि नगेवडि (सम्) सं. — हँसने की स्थिति ।

नट्टि नगिगु (क) सं. — गोक्षुर या त्रिकंटक पौधा ।

नट्टि नगु (क) क्रि. — (बर्तन को) चोट लग, आघात लग ; कुचला जा । सं. — चोट लगना ।

नट्टि नग्न (सम्) वि. — नंगा, विवस्त्र ; असभ्य । सं. — नंगा भिक्षुक ; शिव ; नग्नता, नंगा होना ।

नट्टि नगनाट (सम्) सं. — बौद्ध या जैन नंगा संन्यासी ।

नट्टि नगने, नट्टि नगनिके (सम्) सं. — नंगी स्त्री ; निर्लज्ज स्त्री ।

नट्टि नच्चण (सम्) सं. — नर्तन (तत्) ; नाच ।

नट्टि नच्चिके, नट्टि नच्चिके (क) सं. — प्रियता ; विश्वास, भरोसा ।

नट्टि नच्चिसु (क) क्रि. — प्रिय लग, अभिराम लग ; विश्वासपात्र बन ।

नट्टि नच्चु (क) क्रि. — अच्छा लग ; विश्वास कर, भरोसा कर । सं. — प्रियता, प्रीति, चाह, आशा ; विश्वास ; भरोसा ; संदेह, शंका ।

नट्टि नजुगु (क) क्रि. — कुचल, मार, आघात कर ; चूर्ण कर ; कुचला जाना या चूर्ण किया जाना ।

नट्टि नजु (क) सं. — कुचला जाने या चूर्ण होने की स्थिति ।

नट्टि नट (सम्) सं. — अभिनेता ; निम्न श्रेणी के क्षत्रिय का पुत्र ; अशोक वृक्ष ; एक प्रकार का नरकुल ।

नट्टि नटक (सम्) सं. — नट, अभिनेता ।

नट्टि नटकु, नट्टि नटिके, नट्टि नटिगे, नट्टि नटकु, नट्टि नटदु, नट्टि नटिके, नट्टि नटिगे, नट्टि नटदु (क) सं. — अंगुलियों को मरोड़ने से निकलनेवाली ध्वनि ; अंगुली चटकाना ।

नट्टि नटने (सम्) सं. — अभिनय, नाच, स्वाँग, बहाना, दिखावा ।

नट्टि नटि, नट्टि नटि (सम्) सं. — नाचनेवाली, नटी, अभिनेत्री ।

नट्टि नटिसु, नट्टि नटिसु (सम्) क्रि. — नाच, नृत्य कर, अभिनय कर ; स्वाँग कर ।

नट्टि नटुव, नट्टि नटुव (सम्) सं. — नट, नाचनेवाला ।

नट्टि नट्ट (क) वि. — बीच का, केंद्र का ।

नट्टि नट्टविग, नट्टि नट्टविग (सम्) सं. — दे. नट्टि

नट्टि नट्टविगिति, नट्टि नट्टविगिति (सम्) सं. — दे. नट्टि

नट्टि नट्टि (क) वि. — मनोहर ; सुन्दर । सं. — रोपना, रोपाई ।

नब्बु नट्ट (क) सं.—फैलनेवाली घास की जड़ ।

नब्बु नट्टे (क) वि.—बीच का मध्य का ।

नब्बु गोंबु (क) सं.—बीच की डाली ।

नब्बु नड, नब्बु नडु (क) सं.—कमर, कटि ।

—नब्बु कट्टु (क) क्रि.—कमर कस ।

नब्बु नडक (क) सं.—कंपन, थरथराहट, वेपथु ।

नब्बु नडगु (क) क्रि.—काँप, थरथरा, कंपित हो ।

नब्बु नडतें (क) सं.—चाल, गति ; चाल-चलन, व्यवहार, शील, चरित्र । — नब्बु वंत = चरित्रवान् ।

नब्बु नडपु (क) सं.—चलन, चाल, गति । क्रि.—चला ; पोषण कर, पाल ।

नब्बु नडयिसु, नब्बु नडसु, नब्बु नडिसु, नब्बु नडयिसु (क) क्रि.—चला, गमन करा, चलवा, गमन करने दे, निभा, पूरा कर ।

नब्बु नडवडिके, नब्बु नडवडि, नब्बु नडवडिके, नब्बु नडवडि (क) सं.—चरित्र, शील, चाल-चलन ; रुढ़ि, पद्धति ।

नब्बु नडवु, नब्बु नडवु (क) सं.—बीच. मध्य ; कटि, कमर । — नब्बु नडवु = मध्य-तर ।

(१) नब्बु नडवे (क) सं.—घर के प्रवेश द्वार के सामने का स्थान ; पगडंडी, छोटी राह । नब्बु नडवे, नब्बु नडवे (क) अ.—बीच में, के मध्य ।

नब्बु नडविके (क) सं.—चलाना, गमन कराना ।

नब्बु नडह (क) सं.—चलना, चाल ; चाल-चलन ।

नब्बु नडवडि — (क) सं.—नब्बु नडवडि दे. नब्बु नडवडि.

नब्बु नडि (क) क्रि.—चल, जा, गमन कर, हट । वि.—बीच का ।

नब्बु नडिके, नब्बु नडिगे (क) सं. = नब्बु नडगे—चलना, चाल, गति ।

नब्बु नडिवे (क) अ.—बीच. में ।

नब्बु नडिसु (क) क्रि.—दे. नब्बु नडिसु.

(१) नब्बु नडु (क) सं.—कमर, कटि ; केंद्र, मध्य भाग. घोड़े की पीठ । — नब्बु कट्टु (क) क्रि.—कमर कस, तैयार हो । सं.—मौंजी, कमरबंद, सेखला ।

(२) नब्बु नडु, नब्बु नडु (क) क्रि.—रोप, डाल, लगा, स्थिर कर, स्थापित कर, गाढ़, कायम कर ।

नब्बु नडु (क) सं.—कंपन, थरथराहट, कंपकंपी ; हिलना ; भय ; वेपथु ।

नब्बु नडुगिसु (क) क्रि.—कँपा, डरा ; हिला ।

नब्बु नडगु (क) सं.—काँप, थरथरा ; हिल ; डर. घबड़ा । सं.—कंपन, कंपकंपी ।

नब्बु नडवण (क) वि.—बीच का, मध्य का, केंद्र का ।

नब्बु नडवु (क) सं.—दे. नब्बु (१).

नब्बु नडवे (क) अ.—दे. नब्बु.

(१) नब्बु नडे (क) क्रि.—दे. नब्बु. सं.—जाना, चलना, चाल, गमन ; व्यवहार, चरित्र, चाल-चलन । — नब्बु नडि (क) सं.—आचार-विचार ।

(२) नब्बु नडे (क) अ.—ढटता से, स्थिरता से । नब्बु नडेयिसु (क) क्रि.—दे. नब्बु नडेयिसु.

नब्बु नडवडि (क) सं.—दे. नब्बु नडवडि.

नब्बु नडेसु (क) क्रि.—दे. नब्बु नडेसु.

नब्बु नडिड (क) सं.—कमर का पिछला भाग, जाँघ का जोड़ ; नत होना, झुकना ; वक्रता । — नब्बु नडिड = चपटी नाक ।

नब्बु नडपु (क) सं.—मित्रता, स्नेह, प्रेम, प्रीति, प्रणय ; सन्निकटता, संबंध ; सुंदरता, मनोहरता. लालित्य, शोभा ; अच्छाई । नब्बु नड (सम्) वि.—नत, झुका हुआ. टेढ़ा वक्र, कुटिल ।

नब्बु नडि (सम्) सं.—झुकाव, प्रणाम ; विनम्रता ; धनुष ।

नब्बु नडु (क) सं.—तुतलाहट, तुतलाना ; तोतली या अस्पष्ट बात ।

नब्बु नडु (अ. दे.) सं.—नथ ।

नब्बु नड (सम्) सं.—शब्द करना, शोर ; बड़ी नदी ।

नब्बु नडि, नब्बु नडि (सम्) सं.—नदी । — नब्बु नडि = नदी का तट ।

नब्बु नडिपु (क) क्रि.—बुझा ; शांत कर । नब्बु नडि (सम्) सं.—ननद, पति की बहन ।

(१) नब्बु नडिसु (क) सं.—सचाई, सत्य । अ.—सचमुच । नब्बु नडिसु कनसु ननसायितु । — स्वप्न सच हुआ ।

(२) नब्बु नडिसु (क) क्रि. = नब्बु नडेसु—गीला कर, भिगो, आद्र कर ।

नब्बु नडि (क) क्रि.—गीला हो, भीग । सं.—अंकुर, कली ।

नब्बु नडेसु (क) क्रि.—दे. नब्बु.

नब्बु नडे (क) सं.—गीला होना, भीगना । नब्बु नड (क) सर्व.—मेरा, मेरी, अपना, अपनी ।

नब्बु नडि (क) सं.—सचाई, सत्य ; ईमान दारी, प्रेम, प्रीति, संबंध ।

नब्बु नडि (सम्) सं.—हिजड़ा, क्लीब ; नपुंसक लिंग ।

नब्बु नडि (सम्) सं.—पोता । नब्बु नडि = पोती ।

नब्बु नडि (क) सं.—फल या वृक्ष को लगी चोट ।

नब्बु नडि (अ. दे.) सं.—नफा (अरबी) ; लाभ । नब्बु नड, नब्बु नड (सम्) सं.—आकाश, गगन, आलमान । — नब्बु नड, नब्बु नड (सम्) सं.—देवता, किन्नर आदि ; पक्षी ।

नब्बु नडि (सम्) सं.—चक्र, पहिया । नब्बु नडि (सम्) सं.—आकाश-मार्ग ।

नब्बु नड, नब्बु नड (क) सर्व.—हम । नब्बु नड (क) क्रि.—चबा ; जुगाली कर, पागुर कर । सं.—जुगाली, पागुर ।

नब्बु नड (सम्) क्रि.—नमस्कार कर ; प्रणाम कर ।

नब्बु नड (सम्) सं.—प्रणाम, नमस्कार, सिर झुकाना ।

नमः नमस्ये

नमः नमस्ये (सम्) सं.—पूजन, सम्मान, प्रणाम ।

नमः नमस्ये (अ. दे.) सं.—नमाज (फारसी) ।

नमः नमस्ये (सम्) क्रि.—नमन कर, नमस्कार कर, प्रणाम कर ।

नमः नमस्ये (अ. दे.) क्रि.— ('नमूद' से)—दिखा, प्रकट कर, ध्यान में ला, कह, लिख ।

नमः नमस्ये (अ. दे.) सं.—नमूना (फारसी); उदाहरण ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—धिस, कृश हो, पतला या दुबला हो, कम हो; दुःखी हो, दरिद्र हो ।

नमः नमस्ये (सम्) वि.—नत, झुका हुआ, विनीत; टेढ़ा; पूजा करनेवाला, भक्त ।
—उं ते—विनय ।

(१) नमः नमस्ये (क) वि.—सुंदर, साफ, अच्छ, चिकना, ललित ।

(२) नमः नमस्ये (सम्) सं.—पथ प्रदर्शक; वर्ताव, व्यवहार; विवेक, दूरदर्शिता; नीति, न्याय; समता, आर्जव, सत्यशीलता; कल्पना; व्यवस्था; सिद्धांत, मूलवाक्य; विधि; मार्ग, विधान; मत, अभिप्राय; उपयुक्तता, औचित्य; नाटकीय भावाभिव्यक्ति ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—ले जाना; व्यवस्था करना पास, लाना, खींचना; आंख, नेत्र; शासन करना, अधिकार करना; प्राप्त करना ।—छुद छुद (सम्) सं.—पलक ।
जल (सम्) सं.—अंसु ।—उं जल (सम्) सं.—शिव ।

(१) नमः नमस्ये (क) सं.—नाड़ी, स्नायु ।

(२) नमः नमस्ये (सम्) सं.—अर्जुन; मनुष्य, आदमी ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नरक; एक असुर का नाम; बहुत गंदी जगह ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—कुचल, रौंद, कूट, चूर्ण कर । सं.—रौंदना, कूटना ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—मनुष्य ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—बढ़ाव रुक । सं.—बढ़ाव रुकना; विषाद, असंतोष । —नमः गार (क) सं.—असंतुष्ट पुरुष ।

नमः नमस्ये (क) सं.—रुक्षता, खुरदरापन ।
नमः नमस्ये (क) सं.—सफेद बाल वाली स्त्री ।
नमः नमस्ये (क) सं.—नरदेव, नरपति, नरपाल (सम्) सं.—राजा ।

नमः नमस्ये (क) सं.—नरक, नरक, नरक (क) क्रि.—कराह, पीड़ा से रो, वेदना से चिछा, दुःखी हो ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—दुःख दे, पीड़ा दे ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—राजा ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—सियार, जंबुक, लोमड़ी ।
नमः नमस्ये (क) क्रि.—दे, नरक ।

नमः नमस्ये (क) सं.—सफेद रंग ।
नमः नमस्ये (क) क्रि.—सफेद हो (बालों का सफेद होना) ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—राजा ।

नमः नमस्ये (क) अ.—शीघ्रता से, जल्द-बाजी में ।

नमः नमस्ये (क) सं.—नमिगे, निरिगे (क) सं.—कोछ ।

नमः नमस्ये (क) सं.—महँक, सुगंध, खुशबू ।
नमः नमस्ये (क) सं.—कण, गर्द ।

नमः नमस्ये (क) सं.—त्रिपण या किंशुक वृक्ष ।

नमः नमस्ये (क) सं.—एक वृत्त का नाम ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नाचनेवाला, नट ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नाचनेवाली, नटी ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नाचना ।

नमः नमस्ये (सम्) क्रि.—नाच, नर्तन कर ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नर्मदा, नर्मदा (सम्) सं.

—विनोद करने या मन बहलानेवाली स्त्री; नर्मदा नदी ।

नमः नमस्ये (क) सं.—दे. नमः ।

(१) नमः नमस्ये (क) वि.—(समास में) अच्छा, सुन्दर, मनोहर । उदा.—नमः नमः नमः = अच्छा घोड़ा, नमः नमः = अच्छी स्त्री, प्रियतमा ।

(२) नमः नमस्ये (क) वि.—(समास में) चार संख्या का सूचक; जैसे—नमः नमः या नमः नमः = चालीस ।

(१) नमः नमस्ये (क) सं.—प्रसन्नता, हर्ष ।

(२) नमः नमस्ये (सम्) सं.—एक राजा का नाम; एक संवत्सर का नाम ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—नमिगे (तद्) —नली; हड्डी ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—कुबेर के पुत्र का नाम ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—मुरझाने या कुम्हलाने दे; कपड़े के तह को खराब कर ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—कपड़े का तह खराब हो; मुरझा जा, कुम्हाला जा, कांतिहीन हो ।

नमः नमस्ये (क) सं.—प्रसन्नता; दुर्बलता, अशक्तता ।

नमः नमस्ये (क) क्रि.—प्रसन्न हो; आनंदित हो, संतोष से नाच । सं.—संतोष; प्रसन्नता, आनंद ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—कमल, सरसिज; कुमुद ।

नमः नमस्ये (सम्) सं.—कमल, कमलिनी; कमल-समूह; कमलों का सरोवर ।

नमः नमस्ये (क) सं.—दे नमः (१) ।

नमः नमस्ये (क) सं.—प्रेम, प्रीति, स्नेह, मैत्री; अच्छाई, हित, शुभ, प्रगति । —नमः गार्ति=सुंदर या प्रिय स्त्री ।

नमः नमस्ये (क) सं.—अच्छा मनुष्य; प्रेमी, पति, प्रिय । सं.—अच्छाई, सुंदरता ।

नमः नमस्ये (तद्) सं.—पानी का नल ।

नव नव (सम्) वि. — नौ ; नया, ताज़ा ; आधुनिक ।

नवकोटिनारायण (सम्) सं.—श्रीकृष्ण जिनके नौ करोड़ बच्चे थे ; वह व्यक्ति जिसके कई बच्चे हो ; एक बड़े व्यापारी का नाम (लोक कथा में वर्णित) ।

नवग्रह (सम्) सं.—सूर्य आदि नौ ग्रह ।

नवगण, नवगण (क) सं. — प्रियंगु, छोटा अनाज विशेष (The Italian millet) ।

नवनीत (सम्) सं.—मक्खन, नवनीत ।—छोटी चोर (सम्) सं.—कृष्ण ।

नवपल्लव (सम्) सं. — प्रवाल, विद्रुम, मूँगा ।

नवमि (सम्) सं.—नवमी तिथि ।

नवरस (सम्)—शृंगार आदि नवरस ।

नवरात्रि, नवरात्रि, नवरात्रि (सम्) सं.—दशहरा, नवरात्रि ।

नवरु, नवरु नवरु (क) वि.—मुलायम, कोमल, मृदु, मोहक ।

नवल्, नवल् नवल्. नवल् नविल् (क) सं.—मोर, मयूर ।

नवसिग (क) सं.—दूसरों को सताने वाला पुरुष ।

नविरु नविरु नविरु (क) सं. — दे. नवल्.

नवीन ; (सम्) वि.—नया, नवीन ; आधुनिक ; अवर्चीन ।

नवलु (क) सं.—मयूर, मोर ; नीलकंठ पक्षी ।

नवे (क) सं.—खुजलाहट, सुरसुरी ; गुदगुदी ।

नव्य (क) वि.—नया, नव ।

नव्वर (सम्) वि. — नष्ट होनेवाला, मिटनेवाला ।

नष्ट (सम्) वि.—खोया हुआ जो अदृश्य हो, मिटा हुआ ; विनष्ट । सं. — नुकसान, हानि, नाश ।

नसरि (क) सं.—श्रेष्ठ मधु या शहद ।

नसि, नसि, नसिकु, नसिकु (क)

घिस जा, जीर्ण हो, क्षीण हो ; दुर्बल हो, मिट. बरबाद हो ; अचेत हो, होश उड़ ।

सं.—घिसना, जीर्णता, क्षीणता ; मिटना ; दुर्बलता ; चैतन्यहीनता ।

नसु (क) वि.—छोटा । अ. — थोड़ा, तनिक, कुछ, ज़रा, अणु ।

नसे (क) सं.—दे. नसि ; कामातुरता, विषयासक्ति ।

नसेनसे (क) वि.—झिझिक करनेवाला ; मीन-मेख देखनेवाला ।

नसे (सम्) सं. — नसा, नाक । नसि = नस्य, सुंघनी ।

नसेगार, नसेगार (क) सं. — मन्मथ ।

नस्त (सम्) सं.—नाक ।

नस्य (सम्) सं.—नस्य, नस्य (तद्) — सुंघनी ।

नल (क) वि.—दे. नल (१) (तद्) सं. — एक राजा का नाम ।

नलपाक (क) सं. — बढ़िया खाना, नल-पाक ।

नलि (क) क्रि.—झुक, नत हो, नवा । सं.—कोमलता, नरमी ।

नलिन (तद्) सं. — नलिन (तद्) ; कमल ।

नल्लि (क) सं.—केकड़ा ।

ना (क) वि.—चार का अर्थ सूचक (समास-में) । सर्व.—मैं ।

नाचिके (क) सं.—लज्जा, लाज, शर्म ।

नाचु (क) क्रि.—शरमा, लज्जित हो ।

नाटु (क) क्रि.—रोप, लगा ; गाढ़, स्थिर कर ।

नांत (क) सं.—गंध बू, महक ।

नादि (सम्) सं.—नांदी, नाटक के पूर्व आशीर्वादात्मक स्तुति ; प्रारंभ ।

नांदु (क) क्रि.—भिगो, शीतल कर ; गल ; द्रव हो ।

नांब (क) सं.—आर्द्र करनेवाली सुस्त या अलसी ।

नांबु (क) सं. — सस्ती, उदासीनता ।

नाक (सम्) सं.—स्वर्ग, नाकु, नाकु (क) वि.—चार

नाग (सम्) सं.—अहि, सर्प, आठ की संख्या ; हाथी ; जल

कोई भी प्रसिद्ध पुरुष ; शरीर की वायुओं में से एक, जिससे ढकारें आती

अग्नि ; बादल ; अधकार ; पेड़ ; दुष्ट मनुष्य ; एक पौधा, नागकेसर ;

नागधातु ; एक प्रकार की समुद्री मछली नागभूषण (सम्) सं.—शिव ।

नागचन्द्र (सम्) सं. — कन्नड एक प्रसिद्ध कवि (१२ वीं शति) का

जिनहोंने 'पंप-रामायण' लिखी है ।

नागर (सम्) सं.—नाग, साँप ; गहना । वि.—नगर में उत्पन्न, नगर संबंध

शिष्ट, चतुर, चालाक ; बुरा । नागरिक, नागरीक (

सं.—नागरिक । नागवलि, नागवलि (

सं.—पान, पान की लता । नागशयन, नागशयन (

सम्) सं.—विष्णु । नागस्वर (सम्) सं. — शहनाई

बजनेवाला संगीत स्वर विशेष । नागार्जुन (सम्) सं.—एक

आचार्य ; एक वैद्य का नाम । नागाशन (सम्) सं.—मोर ;

गरुड । नागेंद्र (सम्) सं. — बड़ा हाथी ; इन्द्र ।

नाचिके, नाचिके (क) सं. शर्म, लाज, लज्जा ।

नाचिकेगोडु (क) सं. — होना, निर्लज्जता । नाचिसु (क) क्रि. — लज्जित

शरमा ।

नारु नाह (क) सं.—रेशा, छिलके के अंदर का रेशा, बल्क।
 (१) नारु नाह (क) क्रि.—गंध आ, महक। सं.—गंध, बू।
 (२) नारु नाह (क) क्रि.—गीला कर, भिगो, आर्द्र कर।
 नारु नाह (क) वि.—(समास में)—चार।
 नारु नाह, नारु नाह (सम्) सं.—कमलनाल; नली।
 नारु नाह (क) सं.—जिह्वा, जीभ।
 नारु नाह (क) सं.—दे. नारु।
 नारु नाह (सम्) सं.—दे. नारु।
 नारु नाह (क) वि.—चार की संख्या।
 नारु नाह (क) सं.—चार लोग।
 नारु नाह (सम्) सं.—नाविक., मल्लाह।
 नारु नाह (तद्) सं.—दे. नारु।
 नारु नाह (क) सं.—हम।
 नारु नाह (तद्) सं.—नौ; (तत्); नाव, नौका।
 नारु नाह (सम्) सं.—बरबादी, नाश, भिदाना; अदृश्यता; हानि; मृत्यु।
 नारु नाह, नारु नाह (अ. दे.) सं.—नाश (फारसी); कलेवा।
 नारु नाह (सम्) सं.—सुघनी।
 नारु नाह, नारु नाह (सम्) सं.—नाक।
 नारु नाह (सम्) अ.—नहीं।
 नारु नाह (सम्) सं.—वेद और ईश्वर को न माननेवाला।
 नारु नाह, नारु नाह (क) सं.—दिन, समय, काल।
 नारु नाह (तद्) सं.—नली।
 नारु नाह (तद्) सं.—नारियल।
 नारु नाह, नारु नाह (क) सं.—दे. नारु।
 नारु नाह (क) सं.—कल (आनेवाला दिन)।

नारु नाह (क) सं.—देश, प्रदेश, प्रान्त।
 नारु नाह (क) सं.—घंटे का लटकन।
 नारु नाह, नारु नाह (तद्) सं.—२४ मिनट का समय, घटिका।
 नारु नाह (क) क्रि. रू.—खड़ा रह।
 नारु नाह (सम्) सं.—निंदा करनेवाला, गाली देनेवाला।
 नारु नाह, नारु नाह (सम्) सं.—निंदा, कुवाच्य, गाली।
 नारु नाह, नारु नाह (क) क्रि. रू.—वह (पु. लि.) खड़ा हुआ।
 नारु नाह (सम्) सं.—नीम का पेड़।
 नारु नाह, नारु नाह (क) सं.—नींबू, नींबू का पेड़।
 नारु नाह (सम्) उ.—यह उपसर्ग है जिसका अर्थ 'नीचापन, नीचे की ओर और नहीं' है।
 नारु नाह (सम्) अ.—पास, समीप।
 नारु नाह (तद्) सं.—निकार: (तत्) ढेर, समूह, झुंड, गट्टा; सार; उचित पुरस्कार या भेंट; द्रव्यकोश।
 नारु नाह (सम्) सं.—अधिकता, आधिक्य; नीचता।
 नारु नाह (सम्) सं.—मैदान, खुली जगह; पडोस।
 नारु नाह (सम्) सं.—राक्षसों की माता; रावण की माता।
 नारु नाह (सम्) सं.—अभिलाषा।
 नारु नाह (सम्) सं.—दे. नारु; घर; आवासस्थान।
 नारु नाह (सम्) सं.—मारना, वध, हत्या।
 नारु नाह (सम्) सं.—लतागृह: लता-मंडप; गुफा।
 नारु नाह (सम्) सं.—घर, मकान।
 नारु नाह (क) सं.—सत्य, सचाई। अ.—सचमुच, निश्चय ही।
 नारु नाह (क) क्रि.—पाँव की उंगली के बल खड़ा हो और झुक।

नारु नाह (सम्) सं.—स्वर, ध्वनि, झनकार।
 नारु नाह (सम्) सं.—फेंकने या ढालने की क्रिया; गिरवी, धरोहर, बंधक; गुप्त या गढ़ा हुआ धन।
 नारु नाह (सम्) वि.—समस्त, संपूर्ण, सब।
 नारु नाह, नारु नाह (क) वि.—लाल, तप-तपाता हुआ, चमकदार।
 नारु नाह (सम्) सं.—जंजीर, बेड़ी।
 नारु नाह (क) सं.—सदी, जुकाम।
 नारु नाह (अ. दे.) सं.—निर्णय, निश्चित करना।
 नारु नाह (सम्) सं.—वेद, वेदसंहिता; वेद का कोई अंश; वेदभाष्य, आस वचन; धातु; निश्चय, विश्वास; न्याय; हाट, मंडी, बाजार; बनजार, फेरीवाला सौदागर; रास्ता, मार्ग; नगर, शहर; साँप, भुजंग।
 नारु नाह (क) क्रि.—सीधा कर, उठा; तन कर खड़ा होने दे।
 नारु नाह (क) क्रि.—सीधा हो, तनकर खड़ा हो।
 नारु नाह, नारु नाह (क) सं.—सीधापन, तनाव।
 नारु नाह, नारु नाह (क) क्रि.—जुटा, समूह कर, जमा।
 नारु नाह (क) क्रि.—दे. नारु।
 नारु नाह (क) क्रि.—दे. नारु। सं.—सीधापन, तनाव।
 नारु नाह, नारु नाह (अ. दे.) सं.—निगाह (फारसी); ध्यान।
 नारु नाह, नारु नाह (क) सं.—हाथी का दांत।
 नारु नाह (क) सं.—निर्लेज या मूर्ख-पुरुष।
 नारु नाह (सम्) सं.—रोक, अवरोध; दमन; संयम; पराभव, पराजय; नाश, विनाश; चिकित्सा; सजा, दण्ड; गाली, कुवाच्य, फटकार; पीडन; पकड़ना, ग्रहण;

२०३७११२५ नियोगिसु (सम्) क्रि. — किसी

काम में लगा, प्रेरित कर, प्रवृत्त कर, आज्ञा दे, लगा ।

२०००० निरक्षर (सम्) वि.—मूर्ख, गँवार, अपढ़ ।

२०००० निरंतर (सम्) अ.—लगातार, अविच्छिन्न ।

२०००० निरपेक्षे (सम्) सं. — अनिच्छा, विरक्ति. उदासी ।

२०००० निरभिमान, २०००० निरहंकार (सम्) सं.—गर्वहीनता, घमंड न होना ।

२०००० निराकांक्षे (सम्) सं. — आकांक्षा या इच्छा न होना ।

२०००० निराकार (सम्) सं. — आकार न होना ; विष्णु ; शिव, परमात्मा ।

२०००० निराहारि (सम्) सं.—वह जो कुछ नहीं खाता, वह जिसके पास खाने के लिए कुछ न हो ।

२०००० निराळ (तद्) सं. — निराविल (तत्); मानसिक शांति, आकाश ।

२०००० निरले, २०००० निरिले (क) सं.— एक पक्षी विशेष ।

२०००० निरीक्षिसु (क) क्रि.—देख, निरख ; प्रतीक्षा कर ।

२०००० निरीह (सम्) वि.—प्रयत्नहीन, इच्छाहीन ।

२०००० निरुक्त (सम्) वि.—प्रकट हुआ, कहा, हुआ, व्याख्या किया हुआ । सं. — एक प्रसिद्ध व्याख्या का नाम जो यास्क द्वारा की गई है ; वेद के छे अंगों में से एक ।

२०००० निरुत (क) अ.—सदा, हमेशा, सच-सुच, ज़रूर ।

२०००० निरुद्योगि (सम्) सं. — वेकार मनुष्य, वह मनुष्य जिसको कोई नौकरी न हो । २०००० निरुद्योग=वेकारी ।

२०००० निरुपम (सम्) वि. — उपमारहित, बेजोड़. अद्वितीय ।

२०००० निरूपिसु (सम्) क्रि. — निरूपण कर ; कह, व्यक्त कर, प्रकट कर, शासन कर, आदेश दे ।

२०००० निरे (क) क्रि.—मार, हत्या कर, वध कर ।

२०००० निरोधिसु (सम्) क्रि. — निरोध कर, रोक, संयमित कर, निग्रह कर ।

२०००० निरड्डु (क) सं. — वारिपर्णी (Pistitia Stratiotes) ।

२०००० निरुते (क) सं. — सौंदर्य, मनोहरता, लावण्य ।

२०००० निरि (क) क्रि.—व्यवस्थित कर, तैयार कर, ठीक प्रकार से रख । सं.—कोंछ ; सौंदर्य, लावण्य ; व्यवस्था, उपयुक्तता ।

२०००० निरिगं (क) सं.—मीठा आम ।

२०००० निरिगे (क) सं.— कोंछ ; प्रदर्शन ; विन्यास ।

२०००० निरिसु (क) क्रि. — रख, धर, नीचे रख, व्यवस्थित कर, तैयार कर, ठीक प्रकार से रख । सं.—प्रबंध, विन्यास ।

२०००० निरुग (क) सं.—दे. २००००.

२०००० निरुगे (क) सं.— प्रबंध, ठीक प्रबंध, विन्यास ।

२०००० निरुक्ति (सम्) सं.—नाश, विनाश, मृत्यु देवता ।

२०००० निर्जन (सम्) वि.—एकांत, सुनसान ; जनरहित ।

२०००० निर्झर, २०००० निर्झरिणि (सम्) सं.—झरना ।

२०००० निर्णयिसु (सम्) क्रि. — निर्णय कर, फैसला कर ।

२०००० निर्णायक (सम्) सं. — निर्णय करनेवाला ।

२०००० निर्णजक (सम्) सं.—रजक, धोबी । २०००० निर्दय, २०००० निर्दये (सम्) सं.—क्रूरता ; करुणा न होना ।

२०००० निर्दिष्ट (सम्) वि.—निर्देश किया हुआ, निश्चित ।

२०००० निर्देशिसु (सम्) क्रि.—निर्देश कर, दिखा ; बता, आज्ञा दे ।

२०००० निर्दोष (सम्) वि.—दोष रहित,

अपराध न किया हुआ, भोला । — उक्ते (सम्) सं.— दोषराहित्य, भोलापन ।

२०००० निर्धरिसु (सम्) क्रि.—निश्चय कर, निर्णय कर, किसी वस्तु के मूल्य का निर्णय कर ।

२०००० निर्धूत (सम्) वि.—हिलाया हुआ, हटाया हुआ, त्याग हुआ, अस्वीकृत ।

२०००० निर्नाम (सम्) सं.—नाश, विनाश, नामोनिशान मिटाना ।

२०००० निर्निर्, २०००० निर्निर (क) अ.— निमित्त या कारण के बिना, अकारण ।

२०००० निर्नेर, २०००० निर्नेर (क) अ.— दे. २००००.

२०००० निर्मल (सम्) वि.—शुद्ध, साफ ।

२०००० निर्मले (सम्) सं.—पतिव्रता स्त्री ; सोन नदी ।

२०००० निर्माण (सम्) सं.—रचना, बनाना सृष्टि, बनावट, रूप ।

२०००० निर्माल्य (सम्) सं.— निर्माल्य, देवता पर से उतारे हुए फूल ।

२०००० निर्मिसु (सम्) क्रि.—निर्माण कर, बना ।

२०००० निर्याण (सम्) सं.—बाहर निकलना ; यात्रा, प्रस्थान ; नगर के बाहर की ओर जानेवाली सड़क ; अदृश्य होना ; मृत्यु ; मोक्ष, मुक्ति ; हाथी की आंख का बाहरी कोना ; पशुओं के पैरों में बांधने की रस्सी ।

२०००० निर्यातन (सम्) सं.— बदला चुकाना ; ऋण चुकाना ; भेंट, उपाहार ; प्रतीकार, बदला ।

२०००० निर्याम, २०००० निर्यामक (सम्) सं.—मछाह, कर्णधार ।

२०००० निर्लक्ष्य (सम्) सं.— लापरवाही, उपेक्षाभाव ।

२०००० निर्धर्तिसु (सम्) क्रि.—पूरा कर, पूर्ण कर, समाप्त कर ।

२०००० निर्वाण (सम्) सं.— बुझने की क्रिया ; अंतर्धान ; मृत्यु, मौत ; मोक्ष ;

कैवल्य; मज्जन, डूबना; एक प्रकार का तप; उत्तरक्रिया, क्रिया-कर्म; काम, कार्य; जीव, आज्ञा; हाथी; शरीर, देह; वस्त्र-हीनता, नग्नता।

२००००० निर्वप, २००००० निर्वपण (सम्) सं.—डालना; देना।

२००००० निर्वह (सम्) सं.—लाचारी, विवशता; प्राप्ति, सिद्धि; करना, चलाना; सहारा देना, समर्थन करना; पर्याप्ति, काफी होना;

२००००० निर्वहिसु (सम्) सं.—पूरा कर, निभा, कर।

२००००० निर्वोर्ग (सम्) सं.—वह स्त्री जिसके पति और संतान मर गये हों।

२००००० निल्, २००००० निल्ल, २००००० निल्लु (क) क्रि.—खड़ा हो, ठहर, रुक, टिक।

२००००० निल (क) वि.—स्थित, बचा हुआ। सं.—बचत; शेष; ताक।

२००००० निलकु, २००००० निल्लकु, २००००० निल्लु (क) मिल, लग, मिलने क्रि.—अवस्था तक आ, हाथ लग, पहुँच में आ; प्रारंभ कर, मन लगा।

२००००० निलय (सम्) सं.—छिपने का स्थान, जानवरों का बिल, चिड़ियों का घोंसला; घर, आवासस्थान।

२००००० निलबु, २००००० निल्लबु (क) सं.—खड़े रहना; स्थान, स्थिति, हाल; ऊँचाई; दरवाज़े की चौखट; सीधा खड़ा रहने-वाला; शेष; वचत; फुरसत; रुकावट; ठहराव।

२००००० निलिकिसु, २००००० निल्लिकिसु, (क) क्रि.—पहुँचा, हाथ लगने दे, मिलने दे (प्रे.)।

२००००० निलिकु (क) क्रि.—दे, २०००००

२००००० निलिप, २००००० निल्लिप (सम्) सं.—देवता।

२००००० निलिसु, २००००० निल्लिसु (क) क्रि.—खड़ा कर, रोक, अटका, ठहरा, गति का अवरोध कर, छोड़, त्याग कर।

२००००० निल्ल, २००००० निल्लु (क) क्रि.—खड़ा रह, रुक जा, ठहर, टिक।

२००००० निल्लुबु (क) क्रि.—पुंजीकरण कर, जुटा, राशि कर; भीड़ लग, असंख्य हो; लिपट (जैसे साँप करता); उछल, कूद।

२००००० निल्लुबुविके (क) सं.—खड़े रहना, ऊँचाई, फ़द।

२००००० निल्लिसुविके (क) सं.—खड़ा करना, रोकना, ठहराना, टिकाना, अटकाना।

२००००० निल्लुविके (क) सं.—खड़े रहना, ठहरना, स्थिति, ठहराव।

२००००० निवारिसु (क) क्रि.—थपथपी लगवा (प्रे.)।

२००००० निवरु (क) क्रि.—थपथपी लगा, हाथ से कौमलापूर्वक थपकी दे।

२००००० निवार्तिसु (सम्) क्रि.—लौटा, वापस जाने दे, हटा, छोड़, निकाल।

२००००० निवसन (सम्) सं.—कपड़े पहनना; पहनावा; भीतर पहनने का वस्त्र।

२००००० निवलिषु, २००००० निवलिषु (क?) क्रि.—(किसी चीज़ को) धीरे से हिला, निछावर कर, राई—नोन आदि लगा (दृष्टि-दोष दूर करने के बाद)।

२००००० निवृत्ति (सम्) सं.—वापसी, अंतर्धान, अवसान, समाप्ति; कर्मत्याग, विरक्ति, वैराग्य; त्याग; शांति; आराम, विश्राम; परमानंद; संन्यास।

२००००० निवेदिसु (सम्) क्रि.—कह, बतला, जता; दे, अर्पण कर।

२००००० निवेश (सम्) सं.—प्रवेश, द्वार; डेरा, पड़ाव; घर, गृह।

२००००० निश, २००००० निशे, २००००० निशीथिनि (सम्) सं.—रात, रात्रि।

२००००० निशठ, २००००० निशठे (सम्) —सत्य, सचाई, ईमानदारी।

२००००० निशरण (सम्) सं.—मारना, वध।

२००००० निशाकर (सम्) सं.—चंद्रमा।

२००००० निशाचर (सम्) सं.—रात में चलने-वाला; राक्षस; चोर; चंद्रमा; उल्लू; एक पक्षी विशेष; पाठीन, मछली; क्रूर सर्प;

२००००० निशाटन, २००००० निशादर्शि (सम्) सं.—उल्लू।

२००००० निशानाथ, २००००० निशापति, २००००० निशामणि, २००००० निशिकर, २००००० निशीथिनीनाथ (सम्) सं.—चंद्रमा।

२००००० निशि (सम्) सं.—रात, रात्रि।

२००००० निश्चयिसु (सम्) क्रि.—निश्चय कर, निर्णय कर।

२००००० निषेक (सम्) सं.—छिटकना, ऊपर डालना; गर्भाधान-संस्कार।

२००००० निषेधिसु (सम्) क्रि.—निषेध कर, रोक, मना कर, अस्वीकार कर।

२००००० निष्क (सम्) सं.—निष्क (तद्)—कंठ या छाती का स्वर्ण-हार; सोने का सिक्का; सोना।

२००००० निष्कर्षिसु (सम्) क्रि.—निष्कर्ष कर, निश्चय कर।

२००००० निष्क्रमण (सम्) सं.—बाहर जाना, बाहर निकलना; एक संस्कार जिसके अनुसार चार मास के बच्चे को बाहर लाकर सूर्य का दर्शन कराते हैं।

२००००० निष्ठान (सम्) सं.—मसाला, चटनी; काँजी।

२००००० निष्ठुर, २००००० निष्ठूर (सम्) वि.—कड़ा; कठोर, रुक्ष, क्रूर, दयारहित; तीक्ष्ण; हेय। सं.—निष्ठुरता।

२००००० निष्ठे (सम्) सं.—निष्ठा; स्थिति, प्रतिष्ठा, ठहराव; भक्ति, श्रद्धा, पूज्य बुद्धि, विश्वास; उत्कृष्टता, निपुणता, योग्यता; समाप्ति; नाटक का दुःखांत; नाश, मृत्यु; निश्चय, निश्चयात्मक ज्ञान; चिंता, संताप। २००००० निष्फल (सम्) वि.—व्यर्थ, बेकार, वृथा, फलरहित।

२००००० निखद (तत्) सं.—निश्चय (तत् ?); निश्चितता, सत्य।

२००००० निखर्ग (सम्) सं.—प्रकृति, स्वभाव; सृष्टि, स्वरूप; देना, दान।

२००००० निशि (क) क्रि.—अंगूठे और तर्जनी से रगड़ या निचोड़।

२२००० निस्पृहे, २२००० निस्पृहते (सम्) सं.—इच्छा-राहित्य, कामनाहीनता ।

२२००० निस्पृह (तद्) सं.—दे. २२०००. — २२००० कांते=देव स्त्री ।

२२००० निष्कृ (क) सं.—पहुँच, ऊपर तक जा, फैल, व्याप्त हो, हाथ को लग ; संचार कर ; फैला ।

२२००० नी, २२००० नीं (क) सर्व.—तू ; तुम ।

२२००० नींदु (क) क्रि.—फेंक ; चूस ।

२२००० नीगिसु (क) क्रि.—निकलवा, जाने दे, अदृश्य कर, मिटा, खो ।

२२००० नीगु (क) क्रि.—खो, मिटा, तज, छोड़, हानि पा, निकाल, हटा, समाप्त कर, अदृश्य कर, चुका ।

२२००० नीच (सम्) वि.—नीच, अधम, तुच्छ ; दुष्ट, खल, खोटा । २२००० नीच संग अभिमान भंग—नीच व्यक्ति का सांगत्य गौरव को नष्ट करता है (कह) ।

२२००० नीट, २२००० नीळ (क) वि.—सीधा, लंबा ।

२२००० नीटु (क) सं.—सीधापन ; सरलता, सौंदर्य, नाज़, शुद्धता, सुघर होना ।

२२००० नीड (सम्) सं.—घोंसला ।

२२००० नीडर् (क) सं.—सिर में चक्र, अचेतनता ।

२२००० नीडु (क) क्रि.—फैला, पसार, आगे कर, दे, डाल । सं.—दीर्घता, पसारना, फैलाना ; विलंब ; आधिक्य ।

२२००० नीति (सम्) सं.—पथप्रदर्शन ; चाल-चलन, शील ; भव्यता, औचित्य, समीचीनता ; सन्मार्ग ; राजनीति ; पद्धति, धारा ; युक्ति, उपाय ; आचार-पद्धति, समाज-कल्याण के लिए निर्दिष्ट किया हुआ आचार या व्यवहार ; प्राप्ति, उपलब्धि ; दान, भेंट, चढ़ावा ; संबंध, सहारा ।

२२००० नीम्, २२००० नीनु (क) सर्व.—तू ; तुम ।

२२००० नीम् ; २२००० नीनु (क) सर्व.—तुम (आदरसूचक) ; आप ।

२२००० नीर्, २२००० नीरु (क) सं.—पानी, जल । — २२००० आट (क) सं.—जलश्रीडा ।

२२००० नीरम् (सम्) सं.—जल, पानी । — २२००० ज = कमल ; मोती ।

२२००० नीरद (सम्) सं.—बादल, मेघ । — २२००० मार्ग (सम्) सं.—आकाश ।

२२००० नीराजन, २२००० नीराजने (सम्) सं.—नीराजन, किसी देवता की आरती उतारना ; अर्घ्यों का मार्जन ।

२२००० नीरु (क) सं.—जल, पानी ।

२२००० नीर (क) सं.—सुंदर पुरुष, प्राणप्रिय, प्रियतम, प्रेमी ।

२२००० नीरते (क) सं.—शोभा, सौंदर्य, कांति, लावण्य ।

२२००० नीरिगे (क) सं.—कोंछ (साड़ी का कोंछ) ।

२२००० नीरु (क) सं.—राख, पुड़िया, पौडर (Powder) ।

२२००० नीरे (क) सं.—सुन्दर या मनोहर स्त्री, प्रिया ।

२२००० नील (सम्) सं.—नीलवर्ण ; नीला रत्न, नीला पहाड़ ; एक वानर का नाम ; पाप, पातक ; कुवेर का एक धनागार ; मंद-बुद्धिवाला ; घर का एक भेद ; नीलका पौधा ।

२२००० नीलि (सम्) सं.—नील का पौधा ; एक रोग ; नीले रंग की मक्खी ।

२२००० नीलि (सम्) सं.—नीवी, नारा, इज़ार-बंद ; पण, दांव, होड़ ; पूँजी ; योग, संगम ; युग्म, जोड़ा ; करुणा ; मैथुन ; घोड़े की जीन या काठी ।

२२००० नीविसु (क) क्रि.—घीरे से मलने दे । (प्रे.)

२२००० नीवु (क) क्रि.—घीरे से रगड़ ; मल, मालिश कर । सर्व.—तुम ; आप ।

२२००० नीळ, २२००० नीळु (क) क्रि.—दे. २२०००.

२२००० नीळ (क) सं.—लंबा, सीधा, ऊँचा ; फैला हुआ ।

२२००० नीळु (क) सं.—लंबाई, दो, होना ।

२०००० नुंगु (क) क्रि.—निगल । — २०००० विके ह = निगलना ।

२०००० नुंदिसु (क) क्रि.—बुझा, बुझवा ।

२०००० नुंदु (क) क्रि.—बुझ (दीपक या आग) ।

२०००० नुपु (क) सं.—चिकना होना, चिकना-हट, मृदुता, स्निग्धता ।

२०००० नुगि (क) क्रि.—पुड़िया हो, चूर्ण हो,

२०००० नुगिचु (क) क्रि.—खिसक, पार हो ।

२०००० नुगु, २०००० नुसु, २०००० नुगु,

२०००० नुगु (क) क्रि.—धुस, प्रवेश, कर ; आगे बढ़, बढ़े चल ।

२०००० नुगुचु (क) क्रि.—धुसा, प्रवेश कर ।

२०००० नुगि, २०००० नुगु (क) सं.—सहजन का वृक्ष ।

२०००० नुगिसु (क) क्रि.—आगे बढ़वा ; चूर्ण करा (प्रे.) ।

२०००० नुगु (क) क्रि.—आगे बढ़, बढ़े चल ; कुचला जा ।

२०००० नुचु (क) सं.—छोटे-छोटे कण, रवा, चूर्ण ।

२०००० नुडि (क) क्रि.—बोल, कह, बता । सं.—बोल, बोली ; भाषा ; ध्वनि ; शब्द ; वाक्य, चरण ।

२०००० नुडित (क) सं.—बात, भाषा, वाणी ।

२०००० नुडिवळि (क) सं.—बोलना, बोलने की रीति या विधान ।

२०००० नुडिसु (क) क्रि.—बोलने दे, बुला ; बजा, ध्वनि उत्पन्न कर ।

२०००० नुडिसुह, २०००० नुडिह (क) सं.—बोलना, भाषण ।

२०००० नुण, २०००० नुणु (क) वि.—चिकना, मुलायम, कोमल, प्रिय ।

२०००० नुणुचु (क) क्रि.—खिसक, फिसल, चूक ।

२०००० नुणु, २०००० नुणु (क) सं.—चिक-नापन, स्निग्धता, कोमलता, प्रियता ।

२०००० नुणुगे, २०००० नुणुने (क) वि.—चिकना, स्निग्ध, मुलायम ; चूर्ण, पुड़िया, गोल, गंजा ।

(१) ॐ००० पंगु (क) सं. — नैतिक बंधन, अनुग्रह, उपकार ।

(२) ॐ००० पंगु (क) वि.—लंगडा, लूला, अपाहिज ।

ॐ००० पंच (सम्) वि. — पांच; अपूर्व, अनुपम ।

ॐ००० पंचक (सम्) वि.—पांच का बना, वह जिसमें पाँच हो । सं.—पांच का समूह; पांच की संख्या ।

ॐ००० पंचकज्जाय (क) सं. — चूड़ा, गुड़, गरी, तिल और चना—इनको मिलाकर बनाई गई एक मिठाई ।

ॐ००० पंचकल्याण (सम्) सं. — जैन साधुओं की पांच अवस्थाएँ — गर्भावतरण, जन्माभिषेक, परिनिष्क्रमण, केवलज्ञान और निर्याण ।

ॐ००० पंचगव्य (सम्) — गाय के पांच पदार्थ (दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर) ।

ॐ००० पंचगौड, ॐ००० पंडगौड (सम्) सं.—बंगाल और उत्तरीभाग, उसके निवासी ब्राह्मण ।

ॐ००० पंचचामर (सम्) सं. — एक वृत्त का नाम ।

ॐ००० पंचतंत्र (सम्)—नीति विषयक पांच अध्यायों का एक संस्कृत-ग्रंथ जो बहुत प्रसिद्ध है ।

ॐ००० पंचेत, ॐ००० पंचख (सम्) सं.—पांच होना; मृत्यु ।

ॐ००० पंचदार (तेलुगु) सं.—शकर ।

ॐ००० पंचपरमेष्टि (सम्) सं.—पांच प्रधान जैन गुरु — सूर्यजीवास, अर्हन्, आचार्य, उपाध्याय, सर्वकटु ।

ॐ००० पंचपल्लव (सम्) सं. — पांच कोंपल—आम्र, जंबु, कपिल, बीजपूरक और बिल्व ।

ॐ००० पंचपात्रे (सम्) सं. — ताँबे का जलपात्र जिसे रखकर संध्यावन्दन किया जाता है; पांच बर्तनों का समूह ।

ॐ००० पंचप्राण (सम्) सं. — प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान ।

ॐ००० पंचम (सम्) वि.—पांचवां भाग । सं.—शूद्र, संगीत के सप्तस्वरों में पांचवां; कोयल का स्वर, राग विशेष; मैथुन ।

ॐ००० पंचलोभि (सम्) सं.—कदर्य, दीन पुरुष ।

ॐ००० पंचलोह (सम्) सं.—सोना, चाँदी, ताँबा, लोह और सीसा ।

ॐ००० पंचवाद्य (सम्) सं.—भेरि, शंख, श्रृंग (सींगा), घंटा और वीणा ।

ॐ००० पंचशर ॐ००० पञ्चबाण (सम्) सं.—कामदेव । पञ्चशर (तद्) ।

ॐ००० पंचांग (सम्) सं. — तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण का विवरण देने वाली पुस्तक, तिथिपत्र ।

ॐ००० पंचेकरिसु (सम्) क्रि. — पांच गुना कर ।

ॐ००० पंचु (क) क्रि. — भाग कर, बाँट, हिस्सा कर (सम्) सं. — भाग, हिस्सा, बाँटना ।

ॐ००० पंजर (सम्) सं. — पिंजड़ा; ठठरी, कंकण ।

ॐ००० पंजार (क) सं.—मीठी खाद्य वस्तु ।

ॐ००० पंजि, ॐ००० पंजिके (सम्) सं.—पूनी; बही, लेखा; पत्ता; तिथिपत्र ।

ॐ००० पंजु (क) सं.—दीवट, मशाल ।

ॐ००० पंजे (क) सं.—दारिद्र्य, गरीब, असहाय पुरुष ।—डर तन (क) सं. — दारिद्र्य, गरीबी, असहायता ।

ॐ००० पंति (क) सं. — कुदान; भोजन ।

ॐ००० पंटिसु (क) क्रि.—सिर नीचे हो, लुढ़क; भीत हो ।

ॐ००० पंड, ॐ००० पंडक (तद्) सं.—शंड; (तद्); नपुंसक ।

ॐ००० पंडित (सम्) सं. — पंडित, विद्वान्, विद्वान् ब्राह्मण; वैद्य (मै. प्र.) ।

ॐ००० पंत (तद्) सं.—पणितं (तद्); दौंव, होड़; चुनौती ।

ॐ००० पंति (तद्) सं.—पंक्ति (तद्) ।

ॐ००० पंतुवराळि (क) सं.—एक राग का नाम ।

ॐ००० पंथ (सम्) सं.—रास्ता, मार्ग ।

ॐ००० पंदर, ॐ००० पंदर (क) सं. — पण्डाल, मण्डप ।

ॐ००० पंदर (क) सं.—पण्डाल, मण्डप ।

ॐ००० पंदि (क) सं.—सूकर, सुभर ।

ॐ००० पंदे (क) सं.—डरपोक, भीरु ।

ॐ००० पंघ (तद्) सं.—दे. ॐ०००.

ॐ००० पंप (क) सं. — समभाग या हिस्सा; कन्नड के एक सुविख्यात कवि का नाम जिन्होंने 'पंप-भारत' और 'आदि पुराण' की रचना की है ।

ॐ००० पंपाक्षेत्र (सम्) सं.—पंपा सरोवर के पास का स्थान, हंपि ।

ॐ००० पंपे (सम्) सं.—पंपासरोवर ।

ॐ००० पंबल् (क) सं.—प्रबल इच्छा, ललचाना, तरसना ।—असु (क) क्रि.—तरस, प्रबल इच्छा कर ।

ॐ००० पकपक (क) अ. — जल्दी, शीघ्र; 'हा हा' करके ।

ॐ००० पकीर, ॐ००० फकीर (अ. दे.) सं.—फकीर (अरबी); साधु ।

ॐ००० पक्क (तद्) सं.—पक्षः (तद्)—पर, पंख; कंधा; बाजू; समीपता, पड़ोस; पोषण, सहारा; पक्ष (शुक्ल या कृष्ण पक्ष) ।

ॐ००० पक्कने, ॐ००० फक्कने (क) अ.—हठान् तुरंत, एकदम ।

ॐ००० पक्क्रे, ॐ००० पक्कले (क) सं.—एक प्रकार का बर्तन ।

ॐ००० पक्का (अ. दे.) सं.—चतुर या चालाक पुरुष ।

ॐ००० पक्कि (तद्) सं.—पक्षिन् (तद्); पक्षी, चिड़िया । (अ. दे.) सं.—ढंग, विधान ।

ॐ००० पक्कु (तद्) सं.—रक्षः (तद्); सहारा, समर्थन, अनुकूल होना ।

ॐ००० पक्के (क) सं.—जगह, घर, शयनागार; बगल, करबट; बिछावन, खाट, पलंग; समीपता, सामीप्य; आज का पेट ।

ॐ००० पक्व (सम्) वि.—पका हुआ, पक्का; भुना हुआ, उबला हुआ; जीर्ण, किया हुआ ।

ॐ पक्ष

ॐ पक्ष (सम्) सं. — दे. ॐ; पक्षी; सित्ति, दीवार; समूह, आधिक्य । — ॐ ज (सम्) सं. — चंद्रमा । — ॐ पात (सम्) सं. — तरफदारी, पक्षपात ।

ॐ पक्षि (सम्) सं. — पक्षी, चिड़िया; तरफदार । — ॐ राज (सम्) सं. — गरुड ।

ॐ पगडि (अ. दे.) सं. — पगडी (हि.) । ॐ पगडे (क) सं. — एक छोटा वृक्ष; एक बड़ा वृक्ष (Mimsops elengi); चौसरा का खेल; चौसर की गोटी, अक्ष ।

ॐ पगदि (क) सं. — राजकर, कर; नजराना । ॐ पगल, ॐ पगलु (क) सं. — दिन का समय, दिन ।

ॐ पगिन, ॐ पगिनु (क) सं. — पेड़ों का रस, गोंद ।

ॐ पगिल् (क) क्रि. — चिपक, मिल, लग; फैल, व्याप्त हो, निराश हो, कुंश पा ।

ॐ पगे (क) सं. — द्वेष, विरोध, वैर; बदला । — ॐ कार (क) सं. — शत्रु, वैरी । — ॐ तन (क) सं. — शत्रुता ।

ॐ पचडि, ॐ पचडि (क) सं. — रायता, व्यंजन विशेष ।

ॐ पचन (सम्) सं. — पकाना, रसोई; भाग; रसोई बनाने के साधन, बर्तन, ईधन ।

ॐ पचारिसु (क) क्रि. — निंदा कर, झिड़की दे, चुभनेवाली बात कह ।

ॐ पचे, ॐ पचे (क) वि. — हरा, तजा । सं. — मरकत, पन्ना ।

ॐ पच्च (तत्) सं. — प्रसाधन (तत्); सजावट, शृंगार, भूषा । — ॐ डिसु (तद्) क्रि. — सजा, शृंगार कर ।

ॐ पचने (क) वि. — हरा । — ॐ बण = हरा रंग ।

ॐ पच्वारि (क) सं. — वृक्ष विशेष ।

ॐ पच्चि (क) सं. — भाग, हिस्सा ।

ॐ पचु (क) वि. — हरा । क्रि. — अव्यक्त ध्वनि कर, फुसफुस कर ।

ॐ पचुगे (क) सं. — एकांत स्थान, एकांत मंत्रणा ।

ॐ पचे (क) वि. — हरा । सं. — हरापन, हरा रंग; पीत वर्ण; किसलय, पल्लव; बढ़नेवाले अनाज का रंग; मरकत, पन्ना; घनसार, कपूर; देवकणिश नामक पौधा; बेंत, नरकुल ।

ॐ पज (तद्) सं. — (पदज + ज) — शूद्र ।

ॐ पजलि (तद्) क्रि. — प्रज्वलित हो, चमक ।

ॐ पज्जे (तद्) सं. — पद्धति; (तत्) पदचिह्न; चिह्न, निशान ।

(१) ॐ पट (क) सं. — 'पट पट' ध्वनि ।

(२) ॐ पट (सम्) सं. — वस्त्र, कपड़ा; महीन कपड़ा; रेशमी कपड़ा; घूँघट; पर्दा; चित्र; लिखने का कपड़ा; छत, छप्पर; चित्र; झण्डा; पाल; पतंग; शतरंज का पट या बोर्ड; पौधों को पानी देने के लिए बनाया गया स्रोत (मै. प्र.); एक वृक्ष (The tree Buchanania latifolia); पटरी या कपड़े का टुकड़ा; कोई भी चीज़ जो अच्छी बनी हो । — ॐ क (सम्) सं. — सूत का कपड़ा; तंबू । — ॐ कार (सम्) सं. — चित्तरा; जुलाहा ।

ॐ पटकारु (क) सं. — कंखमुख, चिमटा ।

ॐ पटकुटि (सम्) सं. — डेरा, तंबू ।

ॐ पटल (सम्) सं. — छज्जा, छत; पर्दा; घूँघट; समूह, ढेर; आख ढँकने का घूँघट; टोकरी ।

ॐ पटह (सम्) सं. — ढोल; मृदंग, तबला ।

ॐ पटाकि — ॐ पटाके (अ. दे.) सं. — पटाका, पटाखा ।

ॐ पटारने (क) अ. — 'पट' शब्द के साथ ।

ॐ पटिक (तद्) सं. — स्फटिक; (तत्) फटिक ।

ॐ पटिंग (क) सं. — बदमाश, गुंडा, नीच, लफंगा, कामुक । — ॐ तन = बदमाशी, नीचता ।

ॐ पटीर (सम्) सं. — चन्दन; कामदेव; पेड़; खेत; चलनी; बादल; खेलनी की गोली; ऊँचाई; मूली; गठिया; मोतिया बिंदु ।

ॐ पटु (सम्) वि. — पटु, चतुर, निपुण, योग्य ।

ॐ पटोलिके (सम्) सं. — चचींडा; परवल ।

ॐ पट्ट (तद्) सं. — वस्त्र, कपड़ा; राजाशा की पट्टी; चौराहा; पर्दा, आवरण; नगर; ग्राम; सिंहासन, अधिकार । — ॐ ॐ द आने = शाही हाथी । — ॐ ॐ के बा = राजा बन, सिंहासनारूढ हो ।

ॐ पट्टगे (क) सं. — प्राप्त करना, प्राप्ति, उपलब्धि; पकड़ना, पकड़; धैर्य ।

ॐ पट्टि, ॐ पट्टे (क) सं. — स्थूणा, निहाई ।

ॐ पट्टण (तद्) सं. — पत्तनम् (तत्); नगर, शहर ।

ॐ पट्टमहिषि (तद्) सं. — पटरानी ।

ॐ पट्टशाले, ॐ पट्टसाले, (तद्) सं. — बैटक, वाचन-भवन ।

ॐ पट्टाभिषेक (सम्) सं. — राज तिलक, मुकुटधारण की क्रिया ।

(१) ॐ पट्टि (क) सं. — नीचे रखने का स्थान; घर; गोष्ठ; अहीरों का अड्डा ।

(२) ॐ पट्टि (क) सं. — पट्टी, लंबी पट्टी; माथे पर रखने का एक आभूषण; रेखा, धारी; सूत ।

ॐ पट्टु (क) क्रि. — पकड़, धर, पकड़ ले; लगे रह । सं. — पकड़; कतार; निर्णय, हठ; स्वभाव; लेप, मलहम; संयोग, संदर्भ; कड़ा स्थान ।

ॐ पट्टे (क) सं. — रेशा, छिलका, पैड़ का छाल, वलकल । (तद्) सं. — रेशम; गंजा सिर ।

ॐ पट्टे, ॐ पट्टे, ॐ पट्टे (क) सं. — खोखला ।

ॐ पट्टण (तद्) सं. — पत्तनम् (तत्); नगर, शहर ।

संठयिसु पठयिसु, संठिसु पठिसु (सम्) क्रि.

—पठन कर, पढ़।

संठु पठ्य (सम्) वि.—पढ़ने योग्य, पाठ्य।

संठग पठग (क) सं.—पानेवाला, इच्छा करनेवाला।

संठग पठगु, संठग पठगु (क) सं.— जहाज़; बड़ी नाव।

संठति पठति (क) सं.—स्त्री, औरत।

संठपा पठपाळि, संठपा पठपाळि (क) सं.—वेश्या, रंडी, पैसा कमानेवाली स्त्री।

संठपा पठपा (क) सं.—पाना, कमाई, श्रम।

संठपा पठपा (क) सं.—नीचे रखना या गिराना; सतानेवाला।

संठपा पठपा, संठपा पठपा (क) सं.—पश्चिम दिशा।

संठपा पठपा (क) सं.—पाना, कमाई, श्रम।

संठपा पठपा, संठपा पठपा (क) सं.—बरामदा।

(१) संठपा पठपा (क) सं.—पाना; ढंग, रीति, विधान, पद्धति; एक माप; द्वारबंध, अंगल; रिकाब, पादधारिणी; रतन का एक तौल; अनाज के रूप में दी जानेवाली मजदूरी।

(२) संठपा पठपा (तद्) सं.—प्रति (तत्) समानता, समता, तुलना।

संठपा पठपा (क) सं.—पासंग।

संठपा पठपा (क) सं.—छोटा कपड़ा; चीथड़।

संठपा पठपा (क) क्रि.—प्रयत्न कर, कोशिश कर, प्रयास कर।

संठपा पठपा (तद्) सं.—द्वाररक्षिका, नौकरानी।

संठपा पठपा (क) क्रि.—प्राप्त करा, हासिल करा।

संठपा पठपा (क) सं.—प्राप्त कराना।

संठपा पठपा, संठपा पठपा, संठपा पठपा (तद्) सं.—प्रतिहार; (तत्); द्वाररक्षक, प्रतिहारी।

संठपा पठपा (क) क्रि.—पढ़, लग, हो; (क्रिया जा); मर; डूब; सो; भोग; चोद; कमा। सं.—पढ़ना; डूबना; पश्चिम; गुफा या पत्थरों के बीच की जगह जहाँ मृग रहते हैं।

संठपा पठपा (क) सं.—मिट्टी का बड़ा हण्डा। संठपा पठपा, संठपा पठपा, संठपा पठपा (क) सं.—पश्चिम दिशा, प्रतीची।

संठपा पठपा (क) सं.—पश्चिम दिशा।

संठपा पठपा (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर, कमा; सह, वहन कर। सं.—समूह, बल, सेना; छेद; बड़ा पत्थर।

संठपा पठपा (क) सं.—दे. संठपा.

संठपा पठपा (क) सं.—सैनिक, सिपाही। संठपा पठपा, संठपा पठपा (क) सं.—सेनापति।

संठपा पठपा (क) सं.—सयानापन, यौवन प्राप्त होना, यौवन।

संठपा पठपा (क) सं.—फल, पका हुआ फल।

संठपा पठपा (सम्) सं.—पाँसे से खेलना या दाँव लगाकर खेलना; दाँव पर रखी हुई वस्तु; मजदूरी, भाड़ा; शर्त, ठहराव; पुरस्कार, इनाम; मिका; मूल्य, दाम; तौल; दो तोले; पैसे, रुपया; धंधा, व्यापार; दूकान; निश्चित परिमाण।—
संठपा कांते (सम्) सं.—वेश्या, रंडी।

संठपा पठपा (तद्) सं.—प्रणीत (तत्); दीप-पात्र, मिट्टी का दीपपात्र।

संठपा पठपा (क) सं.—लाठी, बड़ा डंडा।

संठपा पठपा (सम्) वि.—स्तुत, सम्मानित; मोल किया हुआ; दाँव पर लगाया हुआ।

संठपा पठपा (क) सं.—माथा, ललाट; तना; वह खान जहाँ पत्थर चीरते हैं, खोह, गुफा; पहाड़ की बगल; क्रूर मृगों के बाल।

संठपा पठपा (क) अ.—कुछ हद तक।

संठपा पठपा, संठपा पठपा, संठपा पठपा (क) सं.—सँवारना, बनाना, तैयार करना, ठीक करना; क्रम; माथे पर धारण

करने का एक गहना।

संठपा पठपा (क) क्रि.—करा, करवा, बनवा।

संठपा पठपा (क) क्रि.—कर, बना, तैयार कर, सजा कर; सं.—फल।

संठपा पठपा (सम्) वि.—बिक्री के लिए, मोल-भाव के लिए; प्रशंसा के योग्य, सम्मान के योग्य। सं.—मोल की वस्तु; दूकान।

संठपा पठपा (सम्) सं.—उड़ना, उड़ान।—
गंग, गंग (सम्) सं.—पक्षी; पतंग; सूर्य; बाण।

संठपा पठपा (सम्) सं.—पक्षी।

संठपा पठपा (सम्) सं.—गिरना, अस्त होना; डूबना; उड़ने की क्रिया; नीचे आने की क्रिया; पात, नाश, हास; मृत्यु।

संठपा पठपा (सम्) सं.—पति, शौहर; स्वामी, प्रभु, शासक, रक्षक।

संठपा पठपा (क) क्रि.—लौटा, वापस दे; सहायता कर, मदद कर; पसंद कर, प्रियता प्रकट कर, दया से देख।

संठपा पठपा (सम्) सं.—वह स्त्री जिसके पति जीवित हो।

संठपा पठपा (सम्) सं.—पतिव्रता स्त्री।

संठपा पठपा (सम्) सं.—नगर, शहर; बस्ती।

संठपा पठपा (क) सं.—तरकस, तूणीर।

संठपा पठपा (अ. दे.) सं.—राजकर का परीक्षक।

संठपा पठपा (क) सं.—कपास; रुई।

संठपा पठपा (क) सं.—जोड़, पकड़; दीवार पर लटकाने की अलमारी।

संठपा पठपा (क) क्रि.—लगा, जोड़ संयुक्त कर, मिला; चिपका, चढ़वा।

संठपा पठपा (क) क्रि.—लग, संयुक्त हो, चिपक जा; चढ़। सं.—लगाना, पकड़ चिपकना; झगड़ा, कलह; मित्रता। वि.—दस की संख्या।

संज्ञा पत्रो, संज्ञा पत्रो (क) सं.—
जोड़, संबन्ध ।

संज्ञा पत्रो (क) सं.—द्रव्य-वचना,
फरेबी, सरकार को देने योग्य द्रव्य में
धोखा देना ।

संज्ञा पत्रो (अ. दे.) सं.—पता ।—संज्ञा हचु
= पता लगा ।

संज्ञा पत्रि (सम्) सं.—पत्नी ।

संज्ञा पत्र (सम्) सं.—पर, पंख, डैना ; पत्ता ;
पत्र, चिट्ठी ; कागज़ ; तलवार की धार,
छुरी, चाकू ; कमल की पौखुरी ।

संज्ञा पत्रिके (सम्) सं.—पत्रिका, लिखा
हुआ पत्र ; चिट्ठी ।

संज्ञा पत्रिन्द्र (सम्) सं.—गरुड ।

संज्ञा पथ (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता पथ ।

संज्ञा पथिक (सम्) सं.—यात्री, पथिक,
राहगीर ।

संज्ञा पथ्य (सम्) सं.—पथ्य, रोगी के लिए
हितकर वस्तु या आहार ।

(१) संज्ञा पद (क) सं.—उपयुक्त स्थिति या
दशा, उपयुक्तता, समीचीनता ; धार,
तीक्ष्णता ।

(२) संज्ञा पद (सम्) सं.—पद, चरण, कदम,
पैर ; दो की संख्या ; घर ; ओहदा, पद ;
वस्तु, पदार्थ ; समय ; हेतु ; बहाना ;
व्यवहार ; आश्रय, सहारा ; शब्द ; पथ
का चरण ; गेयपद ।

संज्ञा पदक (सम्) सं.—पदक, गले का
आभूषण ।

संज्ञा पदपु, संज्ञा पदपु (क) सं.—
शीघ्रता, उतावलापन ; सौंदर्य, शौक,
विलास ।

संज्ञा पदर, संज्ञा पदर (क) सं.—तह ;
स्तर ; केंचुल ।

संज्ञा पदर (क) क्रि.—उतावला हो, घबड़ा ;
बड़बड़ा ।

संज्ञा पदवि (सम्) सं.—रास्ता, मार्ग ;
स्थान, जगह, संस्थान ; पद, ओहदा ।

संज्ञा पदाजि, संज्ञा पदाति, संज्ञा पदाति
पदातिक (सम्) सं.—पैदल सिपाही ।

संज्ञा पदार्थ (सम्) सं.—पदार्थ, वस्तु,
चीज़ ; शब्द का अर्थ ।

संज्ञा पदिक (सम्) सं.—पदाति, पैदल
सिपाही ।

संज्ञा पदिर् (क) सं.—दो अर्थवाली बात ;
स्वरों के प्रकार ।

संज्ञा पदुगु (क) क्रि.—झुक, नत हो ।

संज्ञा पदुल (क) सं.—सुख, संतोष, समा-
धान, कुशल-क्षेम (ह. कं.) ।

संज्ञा पदुलिग (क) सं.—सुखी मनुष्य ।

संज्ञा पदुलिर्, संज्ञा पदुलिर् (क)
क्रि.—आनंदित हो, संतुष्ट हो, उत्साहित
हो ।

संज्ञा पदुलिसु (क) क्रि.—आनंदित कर,
प्रसन्न कर, तुष्ट कर ।

संज्ञा पदे (क) क्रि.—इच्छा कर, अभिलाषा
कर, स्पंदित हो, चाह, उत्साहित हो । सं.
—इच्छा, चाह ।—संज्ञा पोय् (क)
क्रि.—हर्ष से मार या मार डाल ।

संज्ञा पद्विचि (क) सं.—अबाबील चिड़िया ।

संज्ञा पद्वु (क) सं.—बाज़, गिद्ध (ह. कं.) ।

संज्ञा पद्वति (सम्) सं.—पदचिह्न ; हंग,
विधान, तरह, तरीका ; रास्ता, मार्ग ;
श्रेणी, पंक्ति ।

संज्ञा पद्म (सम्) संज्ञा पद्म (तद्) —
कमल ; कुमुद ; गजबिंदु ; जल, पानी ;
कमलव्यूह ; एक सुगंधित पौधा जो दवाई
में काम आता है ; वक्रता, टेढ़ापन ; एक
सौंप ; चंद्रमा ; सरोवर ; आसन, बैठना ;
मुनि, एक मुनि का नाम ; दस खरब की
संख्या ।

संज्ञा पद्मराग (सम्) सं.—मानिक या
लाल रत्न ।

संज्ञा पद्मि (सम्) सं.—हाथी ; विष्णु । वि.
—कमल रखनेवाला ; ध्वजेदार ।

संज्ञा पद्मिनि (सम्) सं.—कमल ; कमलों
का समूह, सरोवर ; पद्मिनी जाति की स्त्री ।

संज्ञा पद्मे (सम्) सं.—पद्मा, लक्ष्मी ।

संज्ञा पनवु (क) सं.—संकेतस्थल, निर्दिष्ट
स्थान ।

संज्ञा पनस (सम्) सं.—कटहल, कटहल का
वृक्ष ।

संज्ञा पनि, संज्ञा हनि (क) सं.—बूंद, जलकण
(ह. कं.) । क्रि.—बूंद गिर या टपक ।

संज्ञा पनियाण, संज्ञा पनियार (क)
सं.—प्रसाद, मिठाई ।

संज्ञा पने (क) सं.—दाँत, तुकीला दाँत ; ताड़
का पेड़ ।

संज्ञा पन्न (क) सं.—गर्व, घमंड ; मद, मस्ती ।

संज्ञा पन्नग (सम्) सं.—सौंप ।

संज्ञा पन्नाडे (क) सं.—रेशे का जाल, ताड़
के पत्तों के नीचे का जालदार रेशा ।

संज्ञा पन्नि (क) सं.—डींग, गर्व घमंड ।

संज्ञा पन्ने (क) सं.—कर्पूर, कपूर ।

संज्ञा पप्प (क) सं.—दर्प, गर्व ।

संज्ञा पप्पक, संज्ञा पप्पुक, संज्ञा पप्पुक
(क) सं.—(शिकार खेलते समय) झुरमुट
मारना ।

संज्ञा पप्परिके, संज्ञा पप्परिके (क) सं.
—रुक्षता, अकौमलता, कर्कशता, क्रूरता ।

संज्ञा पप्पल, संज्ञा पप्पडि (तद्) सं.—पर्पट
(तत्)—पापड ।

संज्ञा पप्पाय, संज्ञा पप्पायि (क) सं.
पपीता ।

संज्ञा पप्पु (क) सं.—कोई भी ढाल, दायों
हुआ अनाज ।

संज्ञा पय, संज्ञा पयस् (सम्) सं.—दूध,
अमृत ; जल ।

संज्ञा पयण (तद्) सं.—प्रयाणम् (तत्) ;
प्रस्थान, यात्रा ।

संज्ञा पयस्विनि (सम्) सं.—दुधार गाय ;
नदी ; एक नदी का नाम ; रात ।

संज्ञा पयिन् (क) वि.—(समास में) दस
की संख्या ।

संज्ञा पयिर्, संज्ञा पयिर्, संज्ञा पयिर्
(क) सं.—छोटा हरा पौधा ; पैदावार,
फसल ।

संज्ञा पयोज (सम्) सं.—बादल ; कमल ।

संज्ञा पयोद, संज्ञा पयोधर (सम्)
सं.—बादल ; कुच ; ससुद्र ; आँख ।

संस्कृत-परिचय (क) क्रि. — किसल, खिसल ।
 संस्कृत पर (सम्) वि. — दूसरा; भिन्न, और; दूर, अलग; परे; पीछे का, बाद का; उच्च-तर, सर्वोच्च, प्रधान, प्रख्यात, अपरिचित; गैर; बढ़ती, बचत; छूटा हुआ, बचा हुआ; अंतिम; लीन, तत्पर ।
 संस्कृत परकीय (सम्) वि. — दूसरे का, दूसरा; अपरिचित ।
 (१) संस्कृत परके, (क) सं. — आशीर्वाद, दुआ; प्रार्थना (ह. क.) ।
 (२) संस्कृत परके संस्कृत परिके, संस्कृत परिगे (क) सं. — झाड़ू, बुहारी ।
 (१) संस्कृत परंगि (अ. दे.) सं. — फिरंगी, यूरोपियन ।
 (२) संस्कृत परंगि हण्णु (क) सं. — पपीता ।
 संस्कृत परचु (क) क्रि. — नोच, खरोच ।
 संस्कृत परजु, संस्कृत परजु (तद्) सं. — तलवार या चाकू की धार ।
 संस्कृत परज्योति (सम्) सं. — परम प्रकाश; परमात्मा ।
 संस्कृत परहु (क) क्रि. — प्रसारण कर, व्याप्त कर, फैला; हाथ या पैर से खोदकर निकाला । सं. — अंगुलीखनन; गुल्फ (ह. क.) ।
 संस्कृत परण (तद्) सं. — प्राण; (तत्) ; प्राण ।
 संस्कृत परतंत्र (सम्) सं. — दूसरों की अधीनता, परावलंबन ।
 (१) संस्कृत परद (क) सं. — व्यापरी, वणिक् ।
 (२) संस्कृत परद, संस्कृत परदे, संस्कृत पर्दे (अ. दे.) सं. — परदा (फारसी) ।
 संस्कृत परपु (क) सं. — फैल जा; फैला । सं. — फैलना ।
 संस्कृत परम (सम्) वि. — अति दूरवर्ती, अंतिम; सर्वोच्च; मुख्य, प्रधान । सं. — परमात्मा ।
 संस्कृत परमात्मा (सम्) सं. — भगवान्, सृष्टिकर्ता; जिनेश्वर; सूर्य; योद्धा; सिद्ध ।

संस्कृत परंपरे (सम्) सं. — परंपरा, क्रम, विधि; मारना, हत्या ।
 संस्कृत परयिसु (क) क्रि. — फेला, व्याप्त कर; हटा ।
 संस्कृत परल, संस्कृत परल, संस्कृत परल (क) सं. — मणि, पत्थर ।
 संस्कृत परलोक (सम्) सं. — (दूसरा) लोक; स्वर्ग ।
 संस्कृत परवि (क) सं. — मिट्टी का हंडा या बड़ा घड़ा ।
 संस्कृत परशु (सम्) सं. — परशु, कुल्हाड़ी । —
 राम = परशुराम जो जमदग्नि के पुत्र थे ।
 (१) संस्कृत परसु (क) क्रि. — आशीर्वाद दे, आशिष दे (ह. क.) ।
 (२) संस्कृत परसु (तद्) सं. — परशु; (तत्) ; कुल्हाड़ी ।
 संस्कृत परस्पर (सम्) वि. — आपस में ।
 संस्कृत परस्व (सम्) सं. — दूसरे की संपत्ति ।
 संस्कृत परलिंग (क) सं. — जार, व्यभिचारी ।
 संस्कृत पराकु (क) सं. — स्तुति, प्रशंसा; सावधानी ।
 संस्कृत पराक्रम (सम्) सं. — वीरता, पराक्रम, बल, शक्ति ।
 संस्कृत पराक्रमि (सम्) सं. — वीर पुरुष, बहादुर ।
 संस्कृत पराग (सम्) सं. — पराग, पुष्पराज; धूल, रेणु; पुष्परस, मधु; अरुण वर्ण; स्नान के समय काम में लाया जानेवाला सुगंध द्रव्य ।
 संस्कृत पराङ्मुखते (सम्) सं. — दूसरी ओर मुंह मोड़ना, अरुचि ।
 संस्कृत पराजय (सम्) सं. — हार, पराजय ।
 संस्कृत पराधीनते (सम्) सं. — पराधीनता, गुलामी ।
 संस्कृत पराभव (सम्) सं. — पराजय, हार; तिरस्कार, अपमान; नाश, अंतर्धान, एक संवत्सर का नाम ।

संस्कृत परामर्शिसु (सम्) सं. — संस्कृत परांवरिसु — परामर्श कर; जांच कर, परीक्षण कर ।
 संस्कृत परायण (सम्) वि. — गत; गया हुआ; निरत, प्रवृत्त, लीन, लगा हुआ, तत्पर ।
 संस्कृत परार्ध (सम्) सं. — दूसरा भाग, उत्तरार्ध; सर्वोच्च संख्या विशेष; ब्रह्मा के जीवन का आधा भाग ।
 संस्कृत पराशर (सम्) सं. — व्यासजी के पिता का नाम; एक स्मृतिकार का नाम ।
 (१) संस्कृत परि (क) क्रि. बह, प्रवहित हो, चल, रेंग, सरक, जा; अदृश्य हो, दूर हो (जैसे संकट, दुःख आदि) । वि. — बहनेवाला; चलनेवाला सं. — प्रकार, ढंग, विधान, रीति; मकड़े का जाल ।
 (२) संस्कृत परि (क) क्रि. = संस्कृत परे — फैल, व्याप्त हो, प्रसारित हो ।
 संस्कृत परिकर (सम्) सं. — अनुगत; सहचर; समूह, संग्रह, भीड़, जनसमूह; कमर-बंद, पटुका; प्रारंभ, आरंभ; तैयारी; उपकरण (पूजा के) ।
 संस्कृत परिकर्म (सम्) सं. — नौकर; देह में चंदन आदि लगाना, उबटन; पूजा, अर्चन ।
 संस्कृत परिकलिसु (सम्) क्रि. — अधिक हो, समृद्ध हो; फैल जा ।
 संस्कृत परिकांक्षे (सम्) सं. — बड़ी अभिलाषा ।
 संस्कृत परिकार (तद्) सं. — अनुगत सहचर; तैयारी, भोजन का उपस्कर ।
 संस्कृत परिकिसु (तद्) क्रि. — परीक्षा कर, परख ।
 संस्कृत परिक्रम (सम्) सं. — प्रदक्षिणा, फेरी देना ।
 संस्कृत परिगणिसु (सम्) क्रि. — पूरा गिन, ठीक-ठीक कथन कर या वर्णन कर ।
 संस्कृत परिगलित (सम्) वि. — गिरा हुआ, डूबा हुआ, बढ़ता हुआ, गलित, पिघला हुआ ।

अ० अ० परमहंस (सम्) क्रि. — परिग्रह कर, ले; पकड़; छिपा।

अ० अ० परिचय, (सम्) सं. — परिचय जान-पहचान, जानकारी।

अ० अ० परिचर्ये (सम्) सं. — परिचर्या, सेवा, उपस्थिति।

अ० अ० परिचार, (सम्) सं. — सेवा, उपस्थिति, — क (सम्) सं. — सेवक, नौकर; सहायक। अ० अ० परिचारिके = सेविका, नौकरानी।

अ० अ० परिच्छादने (सम्) सं. — कपड़ा, पद, आच्छादन, पोशाक।

अ० अ० परिच्छेद (सम्) सं. — काटना, दोनों ओर काटना, काट कर टुकड़े करना; सीमा, हद्द; अध्याय, सर्ग, पुस्तक का भाग; ठीक निर्देश, निश्चय।

अ० अ० परिजु (क) सं. — रूप, आकार, विधान, ढंग।

अ० अ० परिणति (सम्) सं. — नवन, झुकाव; पूर्णता; परिणाम; परिपाक, पाचन।

अ० अ० परिणमिसु (सम्) क्रि. — नीचे झुक, नत हो; बदल, परिवर्तित हो; परिपक्व हो; वृद्धावस्था पा।

अ० अ० परिणीत (सम्) वि. — विवाहित।

अ० अ० परिताप (सम्) सं. — बड़ी गरमी, उष्णता, ताप; पीड़ा, कष्ट, ज्वर; भय, कष्ट।

अ० अ० परित्याग (सम्) सं. — त्याग, त्यागने का भाव, छोड़ना; विराग, वैराग्य।

अ० अ० परित्राण (सम्) सं. — रक्षा, रक्षण, बचाव; छुटकारा, मुक्ति।

अ० अ० परिधान (सम्) सं. — धारण करना; वस्त्र, पोशाक; ओढ़नी।

अ० अ० परिधि (सम्) सं. — दीवार, हात, मंड, घेरा; पहिये का घेरा, सूर्यमण्डल या आकाश मंडल का घेरा; अग्निकुण्ड का घेरा; वृत्त।

अ० अ० परिपक्व (सम्) वि. — पूर्णरूप से पका या पकाया हुआ; बिलकुल पका हुआ, ठीक प्रकार से सेंका हुआ; भली भांति पड़ा हुआ, सुसम्पन्न, अच्छा ज्ञानी।

अ० अ० परिपाक (सम्) सं. — भली भांति पका हुआ; पाचन शक्ति; पका, पूर्णवृद्धि, परिपूर्णता; फल, परिणाम; चातुर्य, निपुणता, चालाकी।

अ० अ० परिपाटि (सम्) सं. — रुढ़ि, पद्धति, ढंग, परिपाटी।

अ० अ० परिपालिसु (सम्) क्रि. — पालन कर, रक्षा कर, पोषण कर।

अ० अ० परिपूरिसु (सम्) क्रि. — पूरा पूरा भर, परिपूर्ण कर।

अ० अ० परिप्लव (सम्) वि. — हिलता हुआ, काँपता हुआ; चंचल सं. — प्लावन; अत्याचार, जुलूम।

अ० अ० परिपोषिसु (सम्) क्रि. — चेतान्वनी दे, सावधान कर।

अ० अ० परिभविसु (सम्) क्रि. — तिरस्कार कर, अनादर कर।

अ० अ० परिभाविसु (सम्) क्रि. — तिरस्कार कर, अनादर कर; विचार कर, सोच, ध्यान दे, परीक्षण कर, परीक्षण कर।

अ० अ० परिमाण, अ० अ० परिमाण (सम्) सं. — नाप, नापना; तौल; संख्या; मूल्य।

अ० अ० परिमिति (सम्) सं. — परिमाण, नपा-तुला, परिमिति।

अ० अ० परिय (क) सं. — दौड़नेवाला।

अ० अ० परियंकार (क?) सं. — धच्छा योद्धा।

अ० अ० परियण, अ० अ० परियाण, अ० अ० परिवाण (क) सं. — थाल, बड़ी थाली।

अ० अ० परियिसु (क) क्रि. — दौड़ा, बहा, प्रवाहित कर।

अ० अ० परियुत (सम्) वि. — पूर्ण रूप से बढ़।

अ० अ० परिरंभ, अ० अ० परिरंभण (सम्) सं. — आलिंगन, आलिंगन करने की क्रिया।

अ० अ० परिवर्तिसु (सम्) क्रि. — परिवर्तन कर, बदल, हेर-फेर कर।

अ० अ० परिवाद (सम्) सं. — निंदा, कुवाच्य; अपवाद, बुराई, कलंक।

अ० अ० परिवादिति (सम्) सं. — सात तारों की वीणा।

अ० अ० परिवार (सम्) सं. — अनुचर वर्ग, अनुगमन करनेवाले; सेना।

अ० अ० परिवु (क) सं. — बहना, बहाव; छलांग, कुदान।

अ० अ० परिपृष्ठ (सम्) सं. — अधिपति, प्रधान, स्वामी, प्रभु।

अ० अ० परिपृष्ठे (सम्) सं. — परिव्रज्या, संन्यास।

अ० अ० परिवाजक (सम्) सं. — संन्यासी अ० अ० परिशोधन, अ० अ० परिशोधने (सम्) सं. — सफाई, स्वच्छता; त्यागना; अनुसंधान, शोध; शुद्धता, ठीक करना (मै. प्र.)।

अ० अ० परिषेचन (सम्) सं. — छिड़कना, नम करना, चारों ओर छिड़कना।

अ० अ० परिष्कार (सम्) सं. — परिक्रिया, सजावट, शृंगार, शोधन।

अ० अ० परिसर (सम्) सं. — किनारा, सीमा, सामीप्य; सृष्टि, अंत; नियम, आज्ञा।

अ० अ० परिसु (क) क्रि. — बहा, बहने दे (क)। बोल; बकबक कर।

अ० अ० परिहरिसु (सम्) क्रि. — परिहार कर, तज, त्याग, छोड़; अस्वीकार कर; नाश कर; ले ले, निकाल ले, दूर हटा; छिपा।

अ० अ० परिहास (सम्) सं. — हँसी, मज़ाक, दिछगी; क्रीड़ा, खेल; हँसानेवाला।

अ० अ० परीक्षिसु (सम्) क्रि. — परीक्षण कर, जांच कर। सं. — कसौटी;

अ० अ० परीक्षे (सम्) सं. — परीक्षा, जांच, पड़ताल।

अ० अ० परुटव (तद्) सं. — प्रथिमन् (तद्), चौड़ाई-महानता, विस्तार।

अ० अ० परुटवणे (तद्) सं. — दे. अ० अ० परुटव (तद्) सं. — पर्वन् (तद्); पुण्य-काल या दिन।

संयुक्त परुष (सम्) वि. — कठोर, कड़ा, सख्त, अत्यंत रूखा; निष्ठुर, निर्दय; तीक्ष्ण, उग्र, प्रचण्ड, तीव्र; सुस्त. आलसी। संयुक्त परुष (तद्) सं.—हर्ष। (तद्) सं.—स्पर्शः (तत्); हूना।

संयुक्त परे (क) क्रि.—फैल, व्याप्त हो; विस्तृत हो; पौ फट। सं.—विस्तार, फैलाव; झीना आवरण; प्याज का छिलका; केंचुली; मकड़े का जाल; झिल्ली; खजड़ी; निषेध।

संयुक्त परेपु (क) क्रि.—फैला, व्याप्त कर; प्रसारित कर। सं.—फैलाव, विस्तार।

संयुक्त परेत (सम्) सं.—प्रेत, भूत,।—राज (सम्) सं.—यम।

संयुक्त परकलु (क) सं.—कृशता, दुबला या पतला होना।

संयुक्त परकु, संयुक्त परकु; संयुक्त परकु (क) सं.—चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा (ह. क.)।

संयुक्त परटे (क) सं.—रुक्षता, खुरखुरापन, कठोरता, उलझे हुए बाल (बाल जो संवारे न गये हो)।

संयुक्त परमे (क) सं.—भृंग, भ्रपर।

(१) संयुक्त परि (क) क्रि.—फाड़, तोड़, काट, विच्छिन्न कर। सं.—फाड़ना, तोड़ना आदि; उड़ान, कुदान, छलांग।

(२) संयुक्त परि (क) क्रि.—अलंकार, कर, सज्जित हो। सं.—सजावट, शृंगार।

संयुक्त परिवु (क) सं.—फाड़ना, तोड़ना।

संयुक्त परे (क) सं.—खजड़ी, ढोल; निंदा, कुवाच्य, गाली; कृशता; पतला होना; दुर्बलता; पलक।

संयुक्त पर्चु (क) क्रि.—फुसफुसाहट कर।

संयुक्त पर्जन्य (सम्) सं.—जलद, मेघ, बादल, बादल जो पानी बरसावे, वृष्टि; इंद्र।

संयुक्त पर्ण (सम्) सं.—पर, पंख, पत्ता; पलाश वृक्ष।—शाळे (सम्) सं.—उटज, पर्णशाला।

संयुक्त पर्णे (सम्) सं.—पत्ता।

संयुक्त पर्दु (क) सं.—गिद्ध, चील (ह. क.)।

संयुक्त पर्बु (क) क्रि.—फैल, व्याप्त हो; विस्तृत हो।

संयुक्त पर्बु, संयुक्त पर्बुगे (क) सं.—फैलाव, विस्तार।

संयुक्त पर्यंक, संयुक्त पर्यंक (सम्) सं.—पलंग; पल्का, खाट; पालकी; योगासन विशेष; कमर, पीठ और घुटने में लपेटने का वस्त्र।

संयुक्त पर्यंत (सम्) सं.—घूमना-फिरना, भ्रमण।

संयुक्त पर्यण, संयुक्त पर्याण (क) सं.—दे. संयुक्त.

संयुक्त पर्यंत (सम्) सं.—परिधि, व्यास, सीमा, किनारा, छोर; समाप्ति, अवसान।

संयुक्त पर्याय (सम्) सं.—समानार्थवाची शब्द; क्रम, सिलसिला, परंपरा; प्रकार, ढंग; निर्माण, बनाने का काम; मौका, अवसर।

संयुक्त पर्यासि (सम्) सं.—काफी होनी; पूर्णता; उपलब्धि।

संयुक्त पर्व (सम्) सं.—गाँठ, ग्रंथि, जोड़; शरीर का अंग; भाग, अध्याय, सर्ग; अवधि, निर्दिष्ट काल; यज्ञ विशेष; पुण्य-काल, उत्सव; चंद्र या सूर्यग्रहण; पूर्णिमा, अमावास्या; संक्रांति; मौका, अवसर।

संयुक्त पर्वत (सम्) सं.—पहाड़; सात की संख्या सूचक शब्द।

संयुक्त पर्बु (क) क्रि.—फैल, व्याप्त हो; बह।

संयुक्त पर्बुके (सम्) सं.—पर्शुका, पसली।

संयुक्त पल् (क) सं.—दाँत (ह. क.)।

(१) संयुक्त पल, संयुक्त पलवु (क) अ.—कुछ, अनेक, कई।

(२) संयुक्त पल (सम्) सं.—चार कर्प के बराबर की तोल।

संयुक्त पलगे (तद्) सं.—तख्ता; ढाल; छोटा ढोल। [फलकं (तत्)]।

संयुक्त पलंबर, संयुक्त पलर् (क) सर्व.—कई (पु. लि.)।

संयुक्त पलहार, संयुक्त पलार, संयुक्त पलार.

(तद्) सं.—फलाहारः (तत्);

थोड़ा खाना।

संयुक्त पलांडु (सम्) सं.—प्याज।

संयुक्त पलायन (सम्) सं.—पलायन।

संयुक्त पलाल (सम्) सं.—पुआल, भूसी।

संयुक्त पलाश (सम्) सं.—पत्ता; पलाश या किंशुक वृक्ष; टेसू। वि.—तिक्त, कटुभा।

संयुक्त पलिंगे (तद्) सं.—दे संयुक्त.

संयुक्त पलुंवि (क) सं.—चिल्लातेवाला, अमोर; मयूर।

संयुक्त पलुंबु (क) क्रि.—आर्त ध्वनि कर, अकुला, व्याकुल हो।

संयुक्त पल्य, संयुक्त पल्ये, संयुक्त पल्ये (क) सं.—साग। संयुक्त कायिपल्य = तरकारी।

संयुक्त पल्ल (क) सं.—हाथी; भृंग, अमर।

संयुक्त पल्लकि, संयुक्त पल्लकि (तद्) सं.—पल्यकः (तत्); पालकी।

संयुक्त पल्लट (तद्) सं.—अदल बदल, परिवर्तन, विभ्रम, स्थान का बदलना, अव्यवस्था। (पर्ययः—तत्)।

संयुक्त पल्लण (तद्) सं.—पल्ययनम् (तत्); जीन, काठी; रास, लगाम।

संयुक्त पल्लव (सम्) सं.—पल्लव, किसलय; अंकुर; वीणा; कली, फूल; विस्तार, फैलाव; रत्न; पूँछ; केश; विट; दूर-चारी; हाथी का बच्चा; बालक; शब्द-समूह; कंकण, बाजूबंद।

संयुक्त पल्लविस (सम्) क्रि.—पल्लवित हो; विकसित हो; फैल।

संयुक्त पल्ला, संयुक्त पल्ल (क) सं.—एक सौ सेर या एक सौ बीस सेर अनाज का परिमाण।

संयुक्त पल्लि (क) सं.—छिपकली; गोंव,

संयुक्त पल्ललि (क) सं.—दंतहीन; सूर्य।

संयुक्त पल्ले, संयुक्त पल्लेय (क) सं.—दे. संयुक्त.

ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಪಾಂಡಿತ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಪण्डिताई, विज्ञता, निपुणता ।

ಪಾಂಡುರಂಗ ಪಾಂಡುರಂಗ (ಸಮ್) ಸಂ. — श्रीकृष्ण, एक व्यक्ति का नाम ।

ಪಾಂಡು ಪಾಂಡು (ಸಮ್) ಸಂ. — दक्षिण के एक राजवंश का नाम, उस राज्य के निवासी ।

ಪಾಂಡು ಪಾಂಥ, ಪಾಂಡು ಪಾಂಥಸ್ಥ (ಸಮ್) ಸಂ. — घूमनेवाला, यात्री ।

ಪಾಂಡು ಪಾಂ (ಕ) ಸಂ. — वीर, पराक्रमी या साहसी पुरुष ।

ಪಾಂಡು ಪಾಂಸುಲ, ಪಾಂಡು ಪಾಂಸುಲ (ಸಮ್) ಸಂ. — लंपट, नास्तिक मनुष्य ; शिवजी ।

(೧) ಪಾಂಡು ಪಾಕ (ಸಮ್) ಸಂ. — पशुओं का बच्चा ; एक दैत्य का नाम ।

(೨) ಪಾಂಡು ಪಾಕ (ಸಮ್) ಸಂ. — भोजन बनाने की क्रिया ; पचन-क्रिया ; हज़म करने की क्रिया ; अलंकार । — पाँच शाले (ಸಮ್) ಸಂ. — रसोई घर ।

ಪಾಂಡು ಪಾಕಿಡು (ಅ. ದೇ.) ಸಂ. — Pocket (अंग्रेज़ी), जेब, पाकेट ।

ಪಾಂಡು ಪಾಚಿ (ಕ) ಸಂ. — काई; दांतों पर का मल ; बच्चों की भाषा में—स्तन ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡ (ಕ) ಸಂ. — गाना । क्रि. — गीत गाना ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಲ, ಪಾಂಡು ಪಾಡಲಿ—(ಸಮ್) ಸಂ. — पाड़ वृक्ष का फूल, पाड़ वृक्ष ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಿ (ಕ) ಸಂ. — ढंग, विधान ; रूप, आकार, सादृश्य, साम्य, समता, समानता; हार, पराजय ; पतन, नाश ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಸಂ. — गिरना, गिराव, पतन ; विनाश ; बहाव की धारा ; अनुभव ; पाना ; ढंग, रीति ; सादृश्य, ठीक होना ; समय का परिमाण ; वश में करना ; नाश करना ; गिरफ्तार करना ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ. — पाठ; सबक ; पढ़ना, अध्ययन ; पुस्तक का पाठ—क क=पढ़ने-वाला ; विद्यार्थी ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಿ (ಸಮ್) ಸಂ. — पुराणों की कथा-सुनानेवाला ; मछली ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು, ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಕ್ರಿ. — गा, गीत गा, गान कर । (ह. क.) ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡ (ಕ) ಸಂ.—जगह, स्थान ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಸಂ.—सागौन का वृक्ष ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ग्राम, गाँव ; छोटे पौधों का जंगल ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—गवा, गान करा या करवा (ह. क.) ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.—गा, गान कर । सं.— गाना, गीत ; विधान, ढंग, उपयुक्तता ; सहना ; कष्ट ; सादृश्य, समता ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು, ಪಾಂಡು ಪಾಡುಮಿ (ತದ್) ಸಂ.— प्रथमा तिथि ।

ಪಾಂಡು ಪಾಣಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—हाथ ।—पुण्य ग्रहण (सम्) सं.—विवाह ।

ಪಾಂಡು ಪಾಣಿನಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—संस्कृत के प्रसिद्ध व्याकरणी विद्वान् ।

ಪಾಂಡು ಪಾಣು (ಕ) ಸಂ.—जार, लंपट, व्यभिचारी पुरुष ।

ಪಾಂಡು ಪಾಣು (ಕ) ಸಂ.—जारिणी या कामुक स्त्री, वेश्या ।

ಪಾಂಡು ಪಾತಕ (ಸಮ್) ಸಂ.—पाप । पातक पातकि =पापी ।

ಪಾಂಡು ಪಾತಕ ಪಾತರದವಲು, ಪಾಂಡು ಪಾತರ-ಗಿತ್ತಿ (ತದ್) ಸಂ.—('पात्र' से)—वेश्या, कुलटा ।

ಪಾಂಡು ಪಾತಾಲ, ಪಾಂಡು ಪಾತಾಲ (ಸಮ್) ಸಂ.— पाताळ लोक ।

ಪಾಂಡು ಪಾತಿ (ಕ) ಸಂ.—आलवाल, खोडुआ, थाला ; क्यारी ।

ಪಾಂಡು ಪಾತಿವ್ರತ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.—पतिव्रता धर्म ।

ಪಾಂಡು ಪಾತ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.—वर्तन ; प्याला ; कोई भी पवित्र जलपात्र ; जलाशय ; दान देने योग्य व्यक्ति ; अभिनेता, नट ; अमात्य ; नदी के दोनों तटों के बीच का स्थान ; योग्य या उपयुक्त व्यक्ति ; योग्यता, औचित्य ; अभिनय करना ; नाचना ।

ಪಾಂಡು ಪಾತ್ರ (ಸಮ್) ಸಂ.— योग्यता, उपयुक्तता, सामर्थ्य ।

ಪಾಂಡು ಪಾಥೇಯ (ಸಮ್) ಸಂ.—पाथेय, मैं रास्ते के लिए भोजन ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—पैर, शरण, प्रकाश किरण, तेजस् ; एक चौथाई पद्य का चरण ; वृक्ष की जड़ : पहाड़ तलहटी ; अंश, भाग ; अध्याय ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—वृक्ष, पेड़ ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು, ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಸಂ.—जार व्यभिचार । ('पारदार्य' से)

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—चप्पल, पादुका ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—पारा ।

(೧) ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಸಂ.—रंढी, चारिणी ।

(೨) ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ತದ್) ಸಂ.—पाटलं (तत् पाड़ वृक्ष का फूल ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಕ) ಸಂ.—व्यभिचारी लंपट ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು, ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—पैदल सिपाही ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡಿ, ಪಾಂಡು ಪಾಡಿ (ಕ) ಸಂ.—मार्ग ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು, ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—पादुका, खड़ाऊ ।

ಪಾಂಡು ಪಾಡು (ಸಮ್) ಸಂ.—पैर धोने के लिए जल ; पैर धोना ।

ಪಾಂಡು ಪಾನ (ಸಮ್) ಸಂ.—पीना, पान करना पीने का बर्तन ; पीने की चीज़ ; शरबत शराब ।

ಪಾಂಡು ಪಾನಕ (ಸಮ್) ಸಂ.—पानक, शरबत

ಪಾಂಡು ಪಾನೀಯ (ಸಮ್) ವಿ.—पीने योग्य सं.—पानक, शरबत ; पानी ।

(೧) ಪಾಂಡು ಪಾಪ (ಕ) ಸಂ.—छोटा शिशु ।

(೨) ಪಾಂಡು ಪಾಪ (ಸಮ್) ಸಂ.—पाप, गुनाह ; बुरा आदमी, दुष्ट, नीच ; बुरी दशा, बुरा हाल, दुर्भाग्य ।

ಪಾಂಡು ಪಾಪಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—पापी मनुष्य, दुष्ट, नीच ।

संज्ञा पापे (क) सं.—आँख की पुतली, कनीनिका ; चित्र ।
 संज्ञा पापम (सम्) सं.—बुराई, अपराध, पाप ।
 संज्ञा पापर (सम्) सं.—कमीना, पाजी, दुष्ट ; मूर्ख, मूढ़ ; निर्धन, असहाय ; क्षनपद ।
 संज्ञा पाय, संज्ञा पायि (क) क्रि.—लँघन, लंघन कर, पार कर, छलांग मार, भागे बढ़, किसी के जरिण जा; वह । सं.—जाना, लंघन ; हंग, विधान ; उपयुक्तता, समीचीनता ।
 संज्ञा पाय, संज्ञा पाया (क) सं.—नींव, बुनियाद ।
 संज्ञा पायिक (सम्) सं.—पदाति, पैदल सिपाही ।
 संज्ञा पायिसु (क) क्रि.—लँघने दे ; लंघन करा या करवा, पार करा या करवा, बहा या बहवा ।
 संज्ञा पायु (क) सं.—दे. संज्ञा.
 संज्ञा पार (क) क्रि.—समय की प्रतीक्षा कर, ताक में रह, प्रतीक्षा कर ; चाह, अभिलाषा कर ।
 संज्ञा पारंगत (सम्) सं.—पारंगत, निपुण, पार गया हुआ ।
 संज्ञा पारण, संज्ञा पारणे (सम्) सं.—पारण, उपवास के दूसरे दिन भोजन करना; समाप्ति ।
 संज्ञा पारदसु (क) क्रि.—इच्छा कर, चाह कर ।
 संज्ञा पारलौकिक (सम्) वि.—परलोक संबंधी ।
 संज्ञा पारसिक, संज्ञा पारसीक (अ.दे.) सं.—फारस का निवासी ; फारस का घोड़ा ।
 संज्ञा पारायण (सम्) सं.—आद्यंत पढ़ना, पढ़ना, पारायण ।
 संज्ञा पारावत (सम्) सं.—कवृत्तर । संज्ञा पारिवाण, संज्ञा पारिवाल (तद्) ।

संज्ञा पारावार (सम्) सं.—समुद्र ।
 संज्ञा पाराशर्य (सम्) सं.—व्यासजी ।
 संज्ञा पारि (सम् ?) सं.—प्याला, जलपात्र ।
 संज्ञा पारिजात, संज्ञा पारिजातक (सम्) सं.—पारिजात वृक्ष, देवतरु ।
 संज्ञा पारितोषिक (सम्) सं.—पुरस्कार ।
 संज्ञा पारिपाईवक (सम्) सं.—नौकर, अनुचर ।
 संज्ञा पारिभाषिक (सम्) सं.—सब लोगों से अंगीकृत, मामूली, सामान्य ; पारिभाषिक शब्द ।
 संज्ञा पारिरक्षक (सम्) सं.—संन्यासी, परिवाजक ।
 संज्ञा पारिव (तद्) सं.—पारावत; (तत्) कवृत्तर ।
 संज्ञा पारिषद (सम्) सं.—परिषद् में उपस्थित पुरुष, देवता के अनुयायी वर्ग ।
 संज्ञा पारिहार्य (सम्) सं.—कड़ा, कंगन ।
 संज्ञा पारीण (सम्) वि.—पूर्ण परिचित ।
 संज्ञा पारु (क) क्रि.—देख, निरख ; बढ़, हो ; कूद, उछल ।
 संज्ञा पारुष्य (सम्) सं.—परुषता, कठोरता, भाषा में अकोमलता, कुयाच्य ; हिंसा ।
 संज्ञा पारिलु (क) क्रि.—कुदा या कुदवा (ह. क.) ।
 संज्ञा पारु (क) क्रि.—कूद, उछल, लंघन कर, उड़ [गिर] । सं.—कुदान, उछलना, उड़ान ; एक प्रकार की नाव या जहाज ; व्यभिचार ; व्यभिचारिणी स्त्री ।
 संज्ञा पार्थि (सम्) सं.—अर्जुन का वेटा, वज्रवाहन ।
 संज्ञा पार्थिव (सम्) सं.—राजा ; शिव ; पेड़ ; गगन, नभ ; एक संवत्सर का नाम ।
 संज्ञा पार्थिवाक (सम्) सं.—जज, न्यायाधीश ।
 संज्ञा पार्थिके, संज्ञा पार्थिके (क) सं.—ब्राह्मणत्व ।

संज्ञा पार्थिके (क) सं.—ब्राह्मण स्त्री ।
 संज्ञा पार्थिव (सम्) सं.—पार्थिव, वगल, सामीप्य ।—संज्ञा नाथ (सम्) सं.—जैन अर्हत् का नाम ।
 संज्ञा पाल, संज्ञा पालु (क) सं.—दूध, क्षीर ; पेड़-पौधों का रस ; भाग, अंश, हिस्सा ।
 संज्ञा पालक (सम्) सं.—पालन करनेवाला, शासक, राजा ; राजकुमार ।
 संज्ञा पालि (सम्) सं.—संज्ञा पाकि (तद्)—श्रेणी, पंक्ति ; समूह ; किनारा, कोर ; दीवार ; दोनों ओर या पूरा बांधना ; कोई स्थान या क्षेत्र ; भाग, हिस्सा ; किसी अख की धार, नोक ; आदि, पूर्व ; शरीर, देह ; कान का छोर ; धब्बा, दाग ; पुल ; अंक, गोदी ; सूत्र, धागा ; लता ; बाण, तीर, भाग ; लज्जा, शर्म ; आर्द्रता ।
 संज्ञा पालिसु (सम्) क्रि.—पालन कर, रक्षा कर ; शासन कर ।
 संज्ञा पालुकार, संज्ञा पालुगार (क) सं.—भागी, हिस्सेदार, साझेदार ।
 संज्ञा पालुगारिके, संज्ञा पालुगारिके (क) सं.—साझेदारी ।
 संज्ञा पाले (क) सं.—नीलकंठ पक्षी ; कान का लटकता हुआ भाग ; एक बड़ा वृक्ष (Mimusops Kauki) सदा हरा रहनेवाला एक वृक्ष (Alstonia Scholaris)
 संज्ञा पालदार (क) सं.—दे. संज्ञा पालुगारिके (क) सं.—दे. संज्ञा पालुगारिके ।
 संज्ञा पावक (सम्) सं.—पावक, अग्नि, आग ; आचार ।
 संज्ञा पावड, संज्ञा पावडे (तद्) सं.—प्रावृत (तत्) ; वस्त्र ; लहंगा, घाघरा ।
 संज्ञा पावडिग (क) सं.—संपेरा (ह. क.) ।
 संज्ञा पावन (सम्) वि.—पवित्र, शुद्ध, पाप से छुड़ानेवाला । सं.—पवित्रता ; तप ; जल ; आग ; एक वृत्त का नाम ।
 संज्ञा पावसे (क) सं.—काई ।
 (१) संज्ञा पावु (क) सं.—साँप (ह. क.)

पाठ्य पाठ

(२) पाठ्य पाठ (तद्) सं.—पादः (तत्) एक चौथाई भाग ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—रस्सी, जंजीर, बंधन, फंदा ।—सं. पति (सम्) सं.—शिव ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पाठ्य ; पाठ्य ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पत्थर, शिला ; संख्या, विष ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (तद्) सं.—पाठ्य ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—विस्तर, सेज ; कुश्ती का दाँव-पेंच ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—सादृश्य, समानता ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—काई ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—दे. पाठ्य ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—बिछा । (विस्तर चटाई आदि बिछा) सं.—शय्या, विस्तर, बिछावन ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—तप्त सोने या चाँदी की छड़ी ।
 पाठ्य पाठ पाठ्य, पाठ्य पाठ्य, पाठ्य पाठ्य (क) सं.—डेर, छावनी, पड़ाव ; छोटा ग्राम ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—शून्यस्थान, खंडहर, नाश ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—श्रेणी, पंक्ति, क्रम, सिलसिला ।—कार (क) सं.—क्रम में रखनेवाला, प्रबंधक ।
 पाठ्य पाठ (क) वि.—(समास में) पीछे, पोछे का ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; भैंसा ; चूहा ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; सूर्य का एक गण ; छंदःशास्त्र के अनुसार संस्कृत के एक विद्वान का नाम ; छोटा उल्लू ;

सर्प विशेष ; एक संवत्सर (५५ वर्ष) का नाम ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—सूखने दे, सुखा, जाने दे, निकाल ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—सूख, वापस जा, निकल जा ; दूर हट, पृथक् हो ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—पीछे रह, बाद में आ, देर से आ ।
 पाठ्य पाठ (तद्) सं.—वीचिः (तत्) ; लहर ।
 पाठ्य पाठ (तद्) सं.—पिच्छ (तत्) ; मयूर की पूँछ, मयूर की पूँछ के पर ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—चाँदी ।
 पाठ्य पाठ (सम्) वि.—बहुत परेशान, घबड़ाया हुआ, भयभीत ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—पीज, धुन, ओट, कचरा निकालकर साफ़ कर । सं.—नया निकला फल ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—कान का मल या टैठ ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पिंड ; समूह, राशि, ढेर ; पिंड जो पितरों का दिया जाता है ; शरीर ; लोहा ; भोजन ; कौर ; टाँगा की पिंडुरी ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—गोला ; गूमड़ा ; भोज्य पदार्थों का गोलाकार कौर ; टाँगा की पिंडुरी ।
 पाठ्य पाठ (तद्) सं.—बंडल, गट्टा ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—निचोड़ ; दुह । (तद्) सं.—छुड़, गिरोह ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (अ) सं.—वह जो पीछे हो । अ.—पीछे, बाद में ; पहले ।
 पाठ्य पाठ (क) अ.—पीछे ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (क) अ. और सं.—दे. पाठ्य ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—अधिकता, महानता, उन्नति ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (क) सं.—एक पक्षी (Madras Bulbul) ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—अलग कर, वितरण कर ; संवार, कंधी कर ।

पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पेट, उदर ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—आंख का मैल ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—माप या तोल में न्यूनता ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—मोर का पंख, मोर की पूँछ ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) सं.—टोकरी ; पेटी ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—बया पक्षी ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—घड़ा, बटलोई, मथानी ।
 पाठ्य पाठ (क) क्रि.—पकड़, ग्रहण कर, मुट्ठी में भर, मजदूरी आदि देने में न्यूनता कर । सं.—पकड़ ; मुट्ठी ; हथिनी ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—इंद्र का वज्र ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—धातु ।
 पाठ्य पाठ (क) सं.—वेणी, चोटी, जूड़ा ककुद ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—तिल या सरस की खली ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पिता ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—दादा ; ब्रह्मा, आत्मज्ञानी ।
 पाठ्य पाठ (अ. दे.) सं.—फितूर (अरबी विद्रोह ; षड्यन्त्र) ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—पित्त प्रकोप ; पन ; मूर्खता ।
 पाठ्य पाठ पाठ्य पाठ (सम्) सं.—एक रोग, पित्त पांडु ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (क) —घर के पीछे का खुला स्थान ।
 पाठ्य पाठ (सम्) सं.—त्रिशूल ; पाठ्य पाठ का धनुष ।
 पाठ्य पाठ पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) सं.—शिवजी ।
 पाठ्य पाठ पाठ्य पाठ (सम्) सं.—एक का नाम ।
 पाठ्य पाठ, पाठ्य पाठ (सम्) —पिपासा, प्यास ।

३४९ पिप्पल (सम्) सं.—वट वृक्ष, बरगद का पेड़ ।

३४९ पिम् (क) अ. — (समास में) पीछे, बाद में ।

३४९ पिरंगि (अ. दे.) सं.—तोप, बंदूक ।

३४९ पिरि (क) वि.—बड़ा, गुरु, भारी, महान, श्रेष्ठ ।

३४९ पिरि (क) सं.—मांस, गोश्त ।

३४९ पिरिकि (क) सं.—डरपोक, भीरु ।

३४९ पिरि, ३४९ पिरि (क) सं.—पृष्ठ, नितम्ब ।

३४९ पिछ (क) वि.—छोटा ।

३४९ पिछणिगे (क) सं.—गदा ।

३४९ पिछि (क) सं.—पादांगुली की अंगूठी ।

३४९ पिशाच (सम्) सं.—पिशाच शैतान ; ३४९ पिशाचि—छी. लिं. ।

३४९ पिशुन (सम्) सं.— ३४९ पिसुण, ३४९ पिसुणु, ३४९ हिमुण (तद्) —

बतलानेवाला, निर्देश करनेवाला ; चुगल-खोर, दुर्जन, खल ; कमीना, नीच, तुच्छ, क्षुद्र, तिरस्करणीय ; मूर्ख ।

३४९ पिष्ट (सम्) सं.— ३४९ हिट्टु (तद्) — आटा ; सीसा ।

३४९ पिसरु, ३४९ पिसुरु (क) सं.—आंख का मेल ।

३४९ पिसुकु, ३४९ पिसुकु (क) क्रि.— दबा, हाथ से कुचल या मिला ; तिरस्कार की दृष्टि से देख ।

३४९ पिसुगुट्ट (क) क्रि.—कुसफुसा ।

३४९ पिस्तूल (अ. दे.) सं.—Pistol (अंग्रेजी) ।

३४९ पिळगु (क) क्रि.—फट जा, टूट जा ।

३४९ पिळिल् (क) क्रि.—खोल, फेंक, मुक्त, कर ।

३४९ पिळ्कु, ३४९ पिळ्कु (क) सं.—बाण का वह भाग जहाँ पंख हो ; धनुष का टेढ़ा भाग ।

३४९ पिळ्ळे (क) सं.—वह जो छोटा हो ; बच्चा ; शावक ; एक जाति विशेष ।

३४९ पिळि (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा-कर रस निकाल ; सूख जा ; नीरस हो ।

३४९ पिळ्ळे (क) सं.—बकरी, हिरन आदि का मल ।

३४९ पीकु (क) क्रि.—निकाल ; पकड़कर खींच, हटा ; मोड़ दे ।

३४९ पीचु (क) क्रि.—छिड़क ; फूट ; मार । सं.—अपक्व फल ।

३४९ पीठ (सम्) सं.—पीढ़ा, आसन, गद्दी ।

३४९ पीठिके (सम्) सं.—पीठिका ; पीठ, पीढ़ा ; मूल आधार ।

३४९ पीडिसु (सम्) क्रि.—सता, तंग कर, कष्ट दे, व्यथा दे ।

३४९ पीत (सम्) सं.—पीला, पीला रंग ; हलदी ; हरताल ; सोना ; लाल मेहंदी ।

३४९ पीन (सम्) वि.—मोटा, मांसल ; स्थूल ; बड़ा, गाढ़ा ; गोल ।

३४९ पीपायि (अ. दे.) सं.—पीपा (Tub) ।

३४९ पीपि (क) सं.—बच्चों का एक वाद्य, सीटी, फुंकनी ।

३४९ पीयूष (सम्) सं.—दूध ; अमृत ।

३४९ पीर, ३४९ पीरु (क) क्रि.—चूस (जैसे दूध, पानी आदि) ।

३४९ पीर, ३४९ पीरु (क) क्रि.—फेंक, विकीर्ण कर । सं.—फेकना, विकीर्ण करना ।

३४९ पीलि (क) सं.—मोरपंख, मोर की पूँछ, मोरपंख की आंस ।

३४९ पीलिगे (तद्) सं.—पीठिका (तत्) ; पीढ़ी ।

३४९ पुंख (सम्) सं.—बाण की वह जगह जहाँ पर लगे होते हैं ।

३४९ पुंगव (सम्) सं.—बैल ; श्रेष्ठ व्यक्ति ; एक पौधा ।

(१) ३४९ पुंज, ३४९ हुंज. (क) सं.—मुर्गा ।

(२) ३४९ पुंज (सम्) सं.—समूह, ढेर, राशि, संग्रह ।

३४९ पुंजु (क) सं.—मुर्गा ।

३४९ पुंड (क) सं.—आवारा, धूर्त, दुष्ट ; नटखट ।

३४९ पुंडरीक (सम्) सं.—सफेद कमल ;

सफेद रंग ; सफेद छत्र ; बाघ ; चीता ; मेंढक ; दक्षिण पूर्व दिशा का हाथी, दिग्गज ; कल्पवृक्ष ; ध्वज, पताका ब्रह्मा ; यति, मुनि ; घोड़े की ध्वनि ; एक पौधा ; आम्र-वृक्ष ।

३४९ पुंडायि (क) सं.—धूर्तता, दुष्टता, नटखटी ।

३४९ पुंड (सम्) सं.—लाल जाति की ईख ; माथे का तिलक ; कमल ; एक प्रान्त और उसके निवासी ।

३४९ पुंशलि (सम्) सं.—कुलटा, वेश्या ।

३४९ पुक्क (तद्) सं.—पुच्छ, पक्षी की पूँछ ।

३४९ पुक्कतन, ३४९ पुक्कतन (क) सं.—भीरता, भय ।

३४९ पुक्कलु (क) वि.—डरपोक, भीरु ।

३४९ पुक्कु (क) सं.—भय, डर, भीरता ।

३४९ पुक्कटे, ३४९ पुक्कटे (क ?) अ.—मुफ्त, निःशुल्क ।

३४९ पुगल्, ३४९ पुगिल् (क) सं.—कोकिलध्वनि ।

३४९ पुगिल् (क) सं.—दे. ३४९ ; प्रवेश करना, प्रवेशद्वार ।

३४९ पुगिसु (क) क्रि.—प्रवेश करा या करवा ।

३४९ पुगु (क) क्रि.—प्रवेश कर, अंदर आ । सं.—प्रवेश करना ।

३४९ पुगुल् (क) सं.—बुदबुदा, फुंसी, सुँह में होनेवाली फुंसी ।

३४९ पुगु (क) सं.—अहंकार, घमण्ड ।

३४९ पुच्छलि (क) सं.—नाश, हानि ; बुराई ।

३४९ पुच्छ (सम्) सं.—मोरपंख ; घोड़े की पूँछ ; पूँछ ।

(१) ३४९ पुट (क) सं.—कुदान, उछलना । ३४९ पुटविट्ट चिन्न (क) सं.—त गया सोना । वि.—छोटा ।

(२) ३४९ पुट (तद्) सं.—पृष्ठ, सफा ।

(३) ३४९ पुट (सम्) सं.—तह, परत ; अंजुली ; पत्तों का बना दोना ; फली,

ॐ पावु (तद्) सं.—पादः (तद्)

एक चौथाई भाग ।

ॐ पाश (सम्) सं.—रस्सी, जंजीर, बंधन, कंदा ।—ॐ पति (सम्) सं.—शिव ।

ॐ पाण्ड, ॐ पाण्ड (सम्) सं.—पाखंड ; पाखंडी ।

ॐ पाषाण (सम्) सं.—पत्थर, शिला ; संख्या, विष ।

ॐ पाषाण्डि, ॐ पासाण्डि (तद्) सं.—पाखंडी ।

ॐ पासरो (क) सं.—विस्तर, सेज ; कुश्ती का दाँव-पेंच ।

ॐ पासटि (क) सं.—सादृश्य, समानता । ॐ पासले (क) सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष ।

ॐ पासि (क) सं.—काई ।

ॐ पासिके (क) सं.—दे. ॐ पासि.

ॐ पासु (क) क्रि.—बिछा । (विस्तर चटाई आदि बिछा) सं.—शय्या, विस्तर, बिछावन ।

ॐ पाळ (क) सं.—तप्त सोने या चाँदी की छड़ी ।

ॐ पाळ्यगार, ॐ पाळ्यगार (क) सं.—छोटे प्रदेश या राज्य का नायक ; सेनापति ।

ॐ पाळ्य, ॐ पाळ्य, ॐ पाळ्य (क) सं.—डेरा, छावनी, पड़ाव ; छोटा ग्राम ।

ॐ पाळ (क) सं.—शून्यस्थान, खंडहर, नाश ।

ॐ पाळि (क) सं.—श्रेणी, पंक्ति, क्रम, सिलसिला ।—ॐ कार (क) सं.—क्रम में रखनेवाला, प्रबंधक ।

ॐ पिं (क) वि.—(समास में) पीछे, पोछे का । ॐ पिंग (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; भैंसा ; चूहा ।

ॐ पिंगल (सम्) सं.—पीला या भूरा रंग ; सूर्य का एक गण ; छंदःशास्त्र के अनुसार संस्कृत के एक विद्वान का नाम ; छोटा उल्लू ;

सर्प विशेष ; एक संवत्सर (५५ वाँ) का नाम ।

ॐ पिंगिसु (क) क्रि.—सूखने दे, सुखा, जाने दे, निकाल ।

ॐ पिंगु (क) क्रि.—सूख, वापस जा, निकल जा ; दूर हट, पृथक हो ।

ॐ पिंचु (क) क्रि.—पीछे रह, बाद में आ, देर से आ ।

ॐ पिंचे (तद्) सं.—चीचिः (तद्) ; लहर ।

ॐ पिंछ (तद्) सं.—पिच्छ (तद्) ; मयूर की पूँछ, मयूर की पूँछ के पर ।

ॐ पिंजरे (क) सं.—चाँदी ।

ॐ पिंजल (सम्) वि.—बहुत परेशान, घबड़ाया हुआ, भयभीत ।

ॐ पिंजु (क) क्रि.—पींज, धुन, ओट, कचरा निकालकर साफ़ कर । सं.—नया निकला फल ।

ॐ पिंजुष (सम्) सं.—कान का मल या ठेठ ।

ॐ पिंड (सम्) सं.—पिंड ; समूह, राशि, ढेर ; पिंड जो पितरों का दिया जाता है ; शरीर ; लोहा ; भोजन ; कौर ; टाँगा की पिंडुरी ।

ॐ पिंडक (सम्) सं.—गोला ; गूमड़ा ; भोज्य पदार्थों का गोलाकार कौर ; टाँग की पिंडुरी ।

ॐ पिंडि (तद्) सं.—बंडल, गट्टा ।

ॐ पिंडु (क) क्रि.—निचोड़ ; दुह । (तद्) सं.—छुड़, गिरोह ।

ॐ पिंतु, ॐ पिंते (अ) सं.—वह जो पीछे हो । अ.—पीछे, बाद में ; पहले ।

ॐ पिंदने (क) अ.—पीछे ।

ॐ पिंदु, ॐ पिंदे (क) अ. और सं.—दे. ॐ पिं.

ॐ पिंपु (क) सं.—अधिकता, महानता, उन्नति ।

ॐ पिंकलकि, ॐ पिंकलारि (क) सं.—एक पक्षी (Madras Bulbul) ।

ॐ पिंकु (क) क्रि.—अलग कर, वितरण कर ; संवार, कंधी कर ।

ॐ पिंचि, ॐ पिंचि (सम्) सं.—पेट, उदर ।

ॐ पिंचु (क) सं.—आंख का मैल ।

ॐ पिंचे (क) सं.—माप या तोल में न्यूनता ।

ॐ पिच्छ (सम्) सं.—मोर का पंख, मोर की पूँछ ।

ॐ पिट, ॐ पिटक (सम्) सं.—टोकरी ; पेटी ।

ॐ पिटक (क) सं.—बया पक्षी ।

ॐ पिठर (सम्) सं.—घड़ा, बटलोई, मथानी ।

ॐ पिडि (क) क्रि.—पकड़, ग्रहण कर, मुट्ठी में भर, मजदूरी आदि देने में न्यूनता कर । सं.—पकड़ ; मुट्ठी ; हथिनी ।

ॐ पिडुगु (क) सं.—इंद्र का वज्र ।

ॐ पिण (क) सं.—धातु ।

ॐ पिणिल् (क) सं.—वेणी, चोटी, जूड़ा ; ककुद ।

ॐ पिण्याक (सम्) सं.—तिल या सरसों की खली ।

ॐ पित, ॐ पितृ (सम्) सं.—पिता ।

ॐ पितामह (सम्) सं.—पितामह, दादा ; ब्रह्मा, आत्मज्ञानी ।

ॐ पितूरि (अ. दे.) सं.—फितूर (अरबी) ; विद्रोह ; षड्यन्त्र ।

ॐ पित्त (सम्) सं.—पित्त प्रकोप ; पागल-पन ; मूर्खता ।

ॐ पितामह पित्त कामाळे (सम्) सं.—एक रोग, पित्त पांडु ।

ॐ पित्तल, ॐ पित्तिल, (क) सं.—घर के पीछे का खुला स्थान ।

ॐ पिनाक (सम्) सं.—त्रिशूल ; शिवजी का धनुष ।

ॐ पिनाकपाणि, ॐ पिनाकि (सम्) सं.—शिवजी ।

ॐ पिनाकिनी (सम्) सं.—एक नदी का नाम ।

ॐ पिपास, ॐ पिपासे (सम्) सं.—पिपासा, प्यास ।

सिद्ध ७ विपल (सम्) सं.—वट वृक्ष, बरगद का पेड़ ।

सिद्ध ७ विम् (क) अ. — (समास में) पीछे, बाद में ।

सिद्ध ७ विरंगि (अ. दे.) सं.—तोप, बंदूक ।

सिद्ध ७ विरि (क) वि.—बड़ा, गुरु, भारी, महान, श्रेष्ठ ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—मांस, गोश्त ।

सिद्ध ७ विरि (क) सं.—डरपोक, भीरु ।

सिद्ध ७ विरे, सिद्ध ७ विरे (क) सं.—पृष्ठ, नितंब ।

सिद्ध ७ पिछ (क) वि.—छोटा ।

सिद्ध ७ पिछणिगे (क) सं.—गदा ।

सिद्ध ७ पिछि (क) सं.—पादांगुली की अंगूठी ।

सिद्ध ७ पिशाच (सम्) सं.—पिशाच शैतान ; सिद्ध ७ पिशाचि—स्त्री. लिं. ।

सिद्ध ७ पिशुन (सम्) सं.—सिद्ध ७ पिसुण, सिद्ध ७ पिसुण, सिद्ध ७ हिमुण (तद्) — बतलानेवाला, निर्देश करनेवाला ; चुगल-खोर, दुर्जन, खल ; कमीना, नीच, तुच्छ, क्षुद्र, तिरस्करणीय ; मूर्ख ।

सिद्ध ७ पिष्ट (सम्) सं.—सिद्ध ७ हिट्ट (तद्)—आटा ; सीसा ।

सिद्ध ७ पिसर, सिद्ध ७ पिसुर (क) सं.—आंख का मैल ।

सिद्ध ७ पिसुकु, सिद्ध ७ पिसुकु (क) क्रि.—दबा, हाथ से कुचल या मिला ; तिरस्कार की दृष्टि से देख ।

सिद्ध ७ पिस्तूल (क) क्रि.—फुसफुसा । सिद्ध ७ पिस्तूल (अ. दे.) सं.—Pistol (अंग्रेजी) ।

सिद्ध ७ पिळुगु (क) क्रि.—फट जा, टूट जा ।

सिद्ध ७ पिळिल् (क) क्रि.—खोल, फेंक, मुक्त, कर ।

सिद्ध ७ पिळुकु, सिद्ध ७ पिळुकु (क) सं.—बाण का वह भाग जहाँ पंख हो ; धनुष का टेढ़ा भाग ।

सिद्ध ७ पिळ्ळे (क) सं.—वह जो छोटा हो ; बच्चा ; शावक ; एक जाति विशेष ।

सिद्ध ७ पिळि (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा-कर रस निकाल ; सूख जा ; नीरस हो ।

सिद्ध ७ पिळ्ळे (क) सं.—बकरी, हिरन आदि का मल ।

सिद्ध ७ पीकु (क) क्रि.—निकाल ; पकड़कर खींच, हटा ; मोड़ दे ।

सिद्ध ७ पीचु (क) क्रि.—छिड़क ; फूट ; मार । सं.—अपक्व फल ।

सिद्ध ७ पीठ (सम्) सं.—पीढ़ा, आसन, गद्दी ।

सिद्ध ७ पीठिके (सम्) सं.—पीठिका ; पीठ, पीढ़ा ; मूल आधार ।

सिद्ध ७ पीडिसु (सम्) क्रि.—सता, संग कर, कष्ट दे, व्यथा दे ।

सिद्ध ७ पीत (सम्) सं.—पीला, पीला रंग ; हलदी ; हस्ताल ; सोना ; लाल मेहंदी ।

सिद्ध ७ पीन (सम्) वि.—मोटा, मांसल ; स्थूल ; बड़ा, गाढ़ा ; गोल ।

सिद्ध ७ पीपायि (अ. दे.) सं.—पीपा (Tub) ।

सिद्ध ७ पीपि (क) सं.—बच्चों का एक वाद्य, सीटी, फुंकनी ।

सिद्ध ७ पीयूष (सम्) सं.—दूध ; अमृत ।

सिद्ध ७ पीर, सिद्ध ७ पीरु (क) क्रि.—चूस (जैसे दूध, पानी आदि) ।

सिद्ध ७ पीर, सिद्ध ७ पीरु (क) क्रि.—फेंक, विकीर्ण कर । सं.—फेकना. विकीर्ण करना ।

सिद्ध ७ पीलि (क) सं.—मोरपंख, मोर की पूँछ, मोरपंख की आंस ।

सिद्ध ७ पीळिगे (तद्) सं.—पीठिका (तत्) ; पीढ़ी ।

सिद्ध ७ पुंख (सम्) सं.—बाण की वह जगह जहाँ पर लगे होते हैं ।

सिद्ध ७ पुंगव (सम्) सं.—बैल ; श्रेष्ठ व्यक्ति ; एक पौधा ।

(१) सिद्ध ७ पुंज, सिद्ध ७ हुंज, (क) सं.—सुर्गा ।

(२) सिद्ध ७ पुंज (सम्) सं.—समूह, ढेर, राशि, संग्रह ।

सिद्ध ७ पुंजु (क) सं.—सुर्गा ।

सिद्ध ७ पुंजु (क) सं.—आवारा, धूर्त, दुष्ट ; नटखट ।

सिद्ध ७ पुंजरी (सम्) सं.—सफेद कमल ;

सफेद रंग ; सफेद छत्र ; बाघ ; चीता ; मेंढक ; दक्षिण पूर्व दिशा का हाथी, दिग्गज ; कल्पवृक्ष ; ध्वज, पताका ब्रह्मा ; यति, मुनि ; घोड़े की ध्वनि ; एक पौधा ; आन्न-वृक्ष ।

सिद्ध ७ पुंडायि (क) सं.—धूर्तता, दुष्टता, नटखटी ।

सिद्ध ७ पुंड (सम्) सं.—लाल जाति की ईख ; माथे का तिलक ; कमल ; एक प्रान्त और उसके निवासी ।

सिद्ध ७ पुंशलि (सम्) सं.—कुलटा, वेष्टा ।

सिद्ध ७ पुक्क (तद्) सं.—पुच्छ, पक्षी की पूँछ ।

सिद्ध ७ पुक्कतन, सिद्ध ७ पुक्कतन (क) सं.—भीरुता, भय ।

सिद्ध ७ पुक्कलु (क) वि.—डरपोक, भीरु ।

सिद्ध ७ पुक्कु (क) सं.—भय, डर, भीरुता ।

सिद्ध ७ पुक्कट्टे, सिद्ध ७ पुक्कट्टे (क ?) अ.—सुफ्त, निःशुल्क ।

सिद्ध ७ पुगल्, सिद्ध ७ पुगिल् (क) सं.—कोकिलध्वनि ।

सिद्ध ७ पुगिल् (क) सं.—दे. सिद्ध ७ ; प्रवेश करना, प्रवेशद्वार ।

सिद्ध ७ पुगिसु (क) क्रि.—प्रवेश करा या करवा ।

सिद्ध ७ पुगु (क) क्रि.—प्रवेश कर, अंदर आ । सं.—प्रवेश करना ।

सिद्ध ७ पुगुल् (क) सं.—बुदबुदा, फुंसी, सुँह में होनेवाली फुंसी ।

सिद्ध ७ पुगु (क) सं.—अहंकार, घमण्ड ।

सिद्ध ७ पुच्छलि (क) सं.—नाश, हानि ; बुराई ।

सिद्ध ७ पुच्छ (सम्) सं.—मोरपंख ; घोड़े की पूँछ ; पूँछ ।

(१) सिद्ध ७ पुट (क) सं.—कुदान, उछलना । सिद्ध ७ पुटविट्ट चिन्न (क) सं.—तपाया गया सोना । वि.—छोटा ।

(२) सिद्ध ७ पुट (तद्) सं.—पृष्ठ, सफा ।

(३) सिद्ध ७ पुट (सम्) सं.—तह, परत ; अंजुली ; पत्तों का बना दोना ; फली,

री ; आच्छादन ; पलक ; घोड़े का सुम ;
फल ।
शुद्धि पुटाणि (क) वि.—छोटा ।
शुद्धि पुटाणे (क) सं.—मटर, भुना हुआ
।
शुद्धि (क) क्रि.—फूट, निकल, छिटक ।
शुद्धि (क) वि.—छोटा, लघु ।
शुद्धि (क) सं.—छोटी टोकरी, टोकरी ;
उदर ।
शुद्धिसु (क) क्रि.—पैदा कर, उत्पन्न-
जन्म दे ।
शुद्धि (क) क्रि.—जन्म ले, पैदा हो ।
—जन्म, उत्पत्ति ; काठ का चमचा ;
खेने का डंडा ।
शुद्धि (क) सं.—चूर्ण, पुड़िया, धूल ;
।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) क्रि.—
न, हँद, तलाश कर ।
शुद्धि (क) सं.—घाव, फोड़ा, व्रण ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—
सं.—ऊदविलाव ।
शुद्धि (क) सं.—धूल सी एक प्रकार
सिद्धि ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—
, तीर ।
शुद्धि (क) सं.—एक प्रकार का
।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—
ली का पेड़ ।
शुद्धि (क) सं.—दे. शुद्धि.
शुद्धि (सम्) सं.—पुण्य, सुकृत, नेकी,
आई, धार्मिक श्रेष्ठता । वि.—भच्छा,
इ, पवित्र, शुभ, मंगलप्रद ।
शुद्धि (सम्) सं.—धार्मिक कार्य ।
शुद्धि (सम्) सं.—पुण्यात्मा
व, भाग्यवान् । शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि
लु=स्त्री. लिं. ।
शुद्धि (सम्) सं.—पुत्तलिके, शुद्धि, शुद्धि (सम्)
—गुड़िया, गुड़िया ।
शुद्धि (तद्) सं.—पुतली, गुड़िया ।

शुद्धि, पुत्त, शुद्धि, पुत्तु (क) सं.—वल्मीक,
बाँबी, बिल ।
शुद्धि पुत्र (सम्) सं.—बेटा ; बच्चा । शुद्धि
पुत्रि—स्त्री. लिं. ।
शुद्धि पुत्रके शुद्धि पुत्रिके (सम्) सं.—
पुत्री, बेटा, गुड़िया ।
शुद्धि पुदि (क) क्रि.—प्रवेश कर, घुस, अंदर
जा, स्पर्श कर, मिल, एकाकार हो, लग ;
मिलाया जा, लगाया जा ; आच्छादित हो,
ढँक ; आच्छादन कर । सं.—द्वारपार्श्व ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—धार्मिक कार्य
के लिए संग्रह किया जानेवाला धन ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—मिलना,
मेल, सोझेदारी ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) क्रि.—घुस, प्रवेश कर ;
संकोच कर, सिकुड़ जा, छिप जा ; छिपा,
ढँक ।
शुद्धि (क) सं.—झुरमुट ; आच्छादन ;
ढकन ; छत ; तरकस, तूणीर ; आला ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर ।
सं.—आत्मा, जीव शरीर, परमाणु ; वह
जो टुकड़े हुआ हो ।
शुद्धि पुनः (सम्) अ.—पुनः, फिर ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—
कस्तूरी मृग ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—नरश्रेष्ठ ; सफेद
हाथी ; साँड ; सांप ; सदावहार पेड़ ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) क्रि.—मार, ताड़न कर ; वध
कर ; फेंक ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) क्रि.—चिल्ला, चीख,
कराह, रोदन कर ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—मारना, मार,
ताड़न, रोदन, कोलाहल ।
(१) शुद्धि पुर (क) सं.—झरना, नाला, छोटी
नदी ।
(२) शुद्धि पुर (सम्) सं.—नगर, शहर ; घर ;
गृह ; देह, शरीर ; गणना करना ; तीन
की संख्या का बोधक ; एक राक्षस का
नाम ।

शुद्धि पुरले शुद्धि पुरे, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.
—छोटे-छोटे सूखे वृण या लकड़ी के टुकड़े ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (अ. दे.) सं.—फुरसत
(अरबी) ; अवकाश ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—सामने रखना,
सम्मान ; पुरस्कार ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—पुराना, प्राचीन,
दीर्घकालीन, जीर्ण, सं.—प्राचीन काली
घटना, पुराण ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) वि.—प्राचीन, पुराना,
आदिकालीन, जीर्ण, घिसा हुआ ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—शिव ; विष्णु ।
शुद्धि पुरि (क) क्रि.—भून । सं.—मुरमुरा ;
रस्सी को दी जानेवाली मरोड़ ; बल, शक्ति,
हिम्मत, गर्व, साहस ; घमंड ;
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) क्रि.—द्वेष कर ;
स्पर्धा कर, होड़ ले ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—माद्री
तोता ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—स्पर्धा ; द्वेष-
करनेवाला ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—स्पर्धा, होड़ ; द्वेष ;
जाताशौच ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—पुरुष, मनुष्य, नर ;
पति ; आत्मा ; विश्वात्मा, विष्णु, ब्रह्मा,
शिव ; पुल्लिंग ; प्रथम मध्यम, उत्तम,
पुरुष ; आंख की पुतली ; एक वृक्ष ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—चार पुरु-
षार्थ—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—सत्त्व,
योग्यता, ज्ञान, अर्थ-सार ; शक्ति, शारी-
रिक सामर्थ्य ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—उन्नत या श्रेष्ठ पद
या स्थान ; मादा तोता ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—फोड़ा, फफोला ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (सम्) सं.—आगे-
जाना, प्रगति ।
शुद्धि, शुद्धि, शुद्धि (क) सं.—दे. शुद्धि.

संस्कृत-पृथुस्थान (सम्) सं. — नगर, शहर ।
 संस्कृत-पृथिवि (सम्) सं.—धरा, भूमि; पृथ्वी तत्त्व; बड़ी इलायची; एक छंद का नाम ।
 —साल पाल (सम्) सं.—राजा ।
 संस्कृत-पृष्ठ (सम्) वि.—पूछा हुआ ।
 संस्कृत-पृष्ठ (सम्) सं.—पृष्ठ, पीठ, पिछला भाग, पुस्तक का पन्ना ।
 संस्कृत-पेंग (क) सं.—मूर्ख या बेवकूफ मनुष्य ।
 संस्कृत-पेंगसु (क) सं.—बच्ची ।
 संस्कृत-पेंचे (क) सं.—मयूर, मोर ।
 संस्कृत-पेंटे (क) सं.—(मिट्टी का) ढेला ।
 संस्कृत-पेंड (क) सं.—छी; औरत ।
 संस्कृत-पेंडति, संस्कृत-पेंडिति (क) सं.—पत्नी ।
 संस्कृत-पेंडि, संस्कृत-पेंडि (क) सं.—गढ़ा, बंदल ।
 संस्कृत-पेंपु (क) सं.—महानता, विशालता, अधिकता, उन्नति ।
 संस्कृत-पेंकलिसु (क) क्रि.—अधिक हो, समृद्ध हो; गर्वित हो, घमंड कर ।
 संस्कृत-पेंगल (क) सं.—कंधा ।
 संस्कृत-पेंचर, संस्कृत-पेंचर (क) सं.—सावधानी ।
 (१) संस्कृत-पेंचु (क) क्रि.—अधिक हो । सं.—अधिकता ।
 (२) संस्कृत-पेंचु (तद्) सं.—पित्त (तत्); मूर्खता; पागलपन ।
 संस्कृत-पेंटारि, संस्कृत-पेंटारिगे (तद्) सं.—बड़ी पेटी ।
 संस्कृत-पेंट (क) सं.—(मिट्टी का) ढेला ।
 संस्कृत-पेंटल, संस्कृत-पेंटल (क) सं.—बच्चों की खेलने की बंदूक ।
 संस्कृत-पेंटिगे (तद्) सं.—पेटी ।
 संस्कृत-पेंटु (क) सं.—मार, प्रहार, चोट; गर्व; दर्प; साहस ।
 संस्कृत-पेंट्रे (क) सं.—मिट्टी का ढेला ।
 संस्कृत-पेंड (क) वि.—पीछे का, पिछला, पूर्व का ।
 संस्कृत-पेंडसु (क) सं.—कठोरता, कड़ापन, सख्ती, चिकना न होना; कड़ुआपन; (वाणी

की) की कठोरता; कष्ट, तकलीफ ।
 संस्कृत-पेंडेय (क) सं.—अन्य मनुष्य, नया आदमी ।
 संस्कृत-पेंण (क) सं.—स्त्री, औरत (ह. क.) ।
 संस्कृत-पेंण (क) सं.—शव, मुर्दा ।
 संस्कृत-पेंणगु, संस्कृत-पेंणसु (क) क्रि.—जूझ, लड़, झगड़ा कर । संस्कृत-पेंणसु (क) सं.—मिलन, आलिंगन ।
 संस्कृत-पेंणे (क) क्रि.—रस्सी आदि को मिलाकर मरोड़, पिरो । सं.—मरोड़; मिलन ।
 संस्कृत-पेंणु (क) सं.—स्त्री । संस्कृत-पेंणतन = स्त्रीत्व ।
 संस्कृत-पेंतु, संस्कृत-पेंतु (क) कृ.—जन्म देकर ।
 संस्कृत-पेंदे, संस्कृत-पेंदे (क) सं.—धनुष की डोरी ।
 संस्कृत-पेंह (क) वि.—बड़ा, महान । सं.—मूर्ख, बेवकूफ ।
 संस्कृत-पेंहि (क) सं.—बड़ी या अधिक आयु-वाली स्त्री; मूर्ख स्त्री ।
 संस्कृत-पेंने (क) सं.—एक नदी का नाम ।
 संस्कृत-पेंरे, संस्कृत-पेंरे (क) सं.—केंचुली ।
 संस्कृत-पेंर, संस्कृत-पेंरु (क) क्रि.—प्राप्त कर, उपलब्ध कर, पा; जन्म दे, उत्पन्न कर; गाढ़ा हो, जम जा (जैसे दही, घी आदि) (ह. क.) ।
 संस्कृत-पेंर (क) वि.—बाहर का, पराया, पीछे का, बाह्य अन्य ।
 संस्कृत-पेंरगु, संस्कृत-पेंरगे (क) सं.—वह जो पीछे हो ।
 संस्कृत-पेंरे (क) सं.—अर्धचंद्र, चंद्र ।
 संस्कृत-पेंरिसु (क) क्रि.—बढ़ा, अधिक, वृद्धि कर ।
 संस्कृत-पेंरु (क) क्रि.—बढ़ जा, अधिक हो, असंख्य हो, विस्तार हो; फूल जा । सं.—वृद्धि; बढ़ना, आधिक्य, विस्तार ।
 संस्कृत-पेंरुगे (क) सं.—आधिक्य, अधिकता । वृद्धि ।
 संस्कृत-पेंरे (क) सं.—अधिकता, महानता, बढ़प्पन, गौरव, सम्मान; गर्व, नाज ।

संस्कृत-पेंसर्, संस्कृत-पेंसरु, संस्कृत-पेंसरु(क) सं.—नाम; किसी का भी नाम; यश, कीर्ति ।
 संस्कृत-पेंसरु, संस्कृत-पेंसरु (क) सं.—मूंग (Green gram) (ह. क.) ।
 संस्कृत-पेंसु (क) सं.—भय, डर, भीति ।
 संस्कृत-पेंसरु, संस्कृत-पेंसरु (क) क्रि.—कॉप, भयभीत हो ।
 संस्कृत-पेंसरिसु (क) (क्रि)—डरा; कंपा ।
 संस्कृत-पेंसरु (क) सं.—झगड़ा, कलह ।
 संस्कृत-पेंसु (क) सं.—ढेंसु ढेंसु—लंगड़ा; लला, अपाहिज । संस्कृत-पेंसु — स्त्री. लिं. ।
 संस्कृत-पें (क) सं.—ढें है—पागलपन; विभ्रम, भ्रान्ति ।
 संस्कृत-पेंकुणि, संस्कृत-पेंकुलि (क) सं.—राक्षस; पागलपन; विभ्रम ।
 संस्कृत-पेंचक (सम्) सं.—उल्लू; हाथी की पूंछ की जड़; लीख ।
 संस्कृत-पेंचाट (अ. दे.) सं.—[‘पेच’ — (फारसी) से] कष्ट, तकलीफ, उलझन ।
 संस्कृत-पेंचकि (सम्) सं.—हाथी ।
 संस्कृत-पेंट (क) सं.—पगड़ी ।
 संस्कृत-पेंटे (क) सं.—बाजार, मंडी । (तद्) सं.—पेटी; टोकरी ।
 संस्कृत-पेंतु (क) सं.—राक्षस; भ्रान्ति, विभ्रम ।
 संस्कृत-पेंरु (क) सं.—लीख ।
 संस्कृत-पेंय (सम्) वि.—पीने योग्य; स्वादिष्ट, रुचिकर । सं.—पेय पदार्थ, शरबत ।
 संस्कृत-पेंर (क) वि.—बड़ा (समास में) ।
 संस्कृत-पेंरणि, संस्कृत-पेंरणे (क) सं.—नाच, नृत्य ।
 संस्कृत-पेंरु, संस्कृत-पेंरु (क) क्रि.—फैला, विकीर्ण कर, मुक्त कर; लाद, एक वस्तु पर दूसरी वस्तु रख । सं.—लादना, बोझ, भार ।
 संस्कृत-पेंरु (क) क्रि.—कॉप; धरथरा । सं.—कंपन ।

सैलव पेलव (सम्) वि.—सुकुमार, सुको-
मल ; पतला, दुबला ।

सैलव पेशल, सैलव पेशल (सम्) वि. —
कोमल, मुलायम, महीन, पतला ।

सैलव पेशिके (क) सं.—गंदगी, मैल, जुगुप्सा
(ह. क.) ।

सैलव पेलि, सैलव पेलि (क) सं.—पिटारी ।

सैलव पेल, सैलव पेल, [सैलव पेल] (क)
क्रि.—कह, बोल, बतला ; आशा दे ।

सैलव पेलिके सैलव पेलिके (क) सं.—
बोलना, धोल ; नाम, यश ।

सैलव पेलिके (क) सं.—कहना, बोलना,
बतलाना ।

सैलव पेल (क) वि.—ऊपर का ; बाह्य, दूसरा ।

सैलव पेल (सम्) सं.—इकावनवें संवत्सर
का नाम ।

सैलव पेल (अ. दे.) सं.—पैरों में बांधने
की छोटी-छोटी घण्टियां, पायल ।

सैलव पेल (अ. दे.) सं.—पायजामा ।

सैलव पेल (सम्) वि.—पिता संबंधी,
परंपरा से प्राप्त ।

सैलव पेल (सम्) वि.—पित्त संबंधी । सं.—
पित्त ; पागलपन ; मूर्खता ।

सैलव पेलवान्, सैलव पेलवान (अ.
दे.) सं.—पहलवान ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—सोना,
सुवर्ण, हेम ।

सैलव पेल (क) सं.—आवारा, ढीठ ।

सैलव पेल (क) सं.—मूंगा ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
खिचड़ी (मूंग की दाल और चावल से
बनाई जाती है) ।

सैलव पेल (क) क्रि.—उबाल, उफान
आने दे ।

सैलव पेल (क) क्रि.—उफान आ, उबल ;
फूल जा । सं.—उफान ।

सैलव पेल (क) क्रि.—ताक में रह । सं.—
ताक ।

सैलव पेल (क) सं.—दे. मल्ल.

सैलव पेल (क) सं.—सोने की कांति, सोने
की बेंत ।

सैलव पेल (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर ;
मिला, जोड़ । सं.—मिलन, मेल, समूह ;
मरण ।

सैलव पेल (क) कृ.—प्रवेश करके, घुसकर,
अंदर पहुँच कर ।

सैलव पेल पेलिके, सैलव पेलिके
पेलिके (क) सं.—कोयल, कोकिल ।

सैलव पेल (क) सं.—कर, राजकर ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
चमक, दमक, कांति, छवि ।

सैलव पेल (क) सं.—विस्तार ।

सैलव पेल, सैलव पेल, सैलव
पेल (क) सं.—प्रशंसा, कीर्ति । क्रि.—

—प्रशंसा कर, स्तुति कर ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
प्रशंसा करना, प्रशंसा, स्तुति ।

सैलव पेल (क) क्रि.—प्रवेश करा, घुसा ।

सैलव पेल (क) क्रि.—प्रवेश कर, जा, घुस ।

सैलव पेल (क) क्रि.—धुआँ निकल या आ ।
धूम्रपान कर । सं.—धुआँ, धूम्र ।

सैलव पेल (क) वि.—साफ, शुद्ध ; सफेद ।

सैलव पेल (क) क्रि.—प्रकट हो, स्फुरित
हो ।

सैलव पेल (क) सं.—चमक, कांति ;
नदी ।

सैलव पेल (क) सं.—मूक, गूंगा ।

सैलव पेल, सैलव पेल, सैलव पेल
(तद्) सं.—पुटः (तद्) पोटली ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—खोखला,
कोटर ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
भूसा, भूसी ।

सैलव पेल (क) सं.—खोखला, कोटर ; पेट,
उदर ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
चमक, कांति, आभा, सौंदर्य ; दर्प, वैभव,
शक्ति ।

सैलव पेल (क) क्रि.—काँप, थरथरा ;
निकल जा, स्फुरित हो, प्रकट हो ।

(१) सैलव पेल (क) सं.—एक प्रकार की
पालकी ।

(२) सैलव पेल (तद्) सं.—पृथ्वी
(तद्) ; भूमि ।

सैलव पेल, सैलव पेल पेल (क)
क्रि.—पिता, मार (प्रे.) ।

सैलव पेल (क) क्रि.—मार, पीट ; निकल आ ;
काँप, लग । सं.—उदर, पेट ; विस्तार ;

लंबाई ; बाण का भाग जो निकाला गया
हो ; कोंछ ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) क्रि.—
लग, जुड़, मिल । सं.—लगना, मिलना ;
झगड़ा, कलह ।

सैलव पेल (क) सं.—लड़ना ; झगड़ा,
लड़ाई ।

सैलव पेल (क) क्रि.—जोड़, जुड़, लग,
मिल ।

सैलव पेल (क) क्रि.—उमड़, निकल,
फूल, फट जा, उत्पन्न हो ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
—दिन (Day-time) सवेरा, प्रातःकाल ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) क्रि.—
(दिया) जला ;

सैलव पेल (क) क्रि.—(दिया) जल, जल
उठ ; अधिक जल जा । सं.—ज्वाला,
जलना ; सूर्य, समय ।

सैलव पेल पेल (क) सं.—पीड़ा, संकट,
दुःख, दर्द ।

सैलव पेल (क) सं.—ओढ़नी ; ढकन ;
छत, छज्जा ।

सैलव पेल, सैलव पेल (क) सं.—
झाड़ी, पौधों का समूह ।

सैलव पेल (क) क्रि.—उठ, निकल आ,
फूटकर आ, बाहर आ ; प्रसिद्ध हो ।

सैलव पेल पेल (क) सं.—फूटकर आना,
निकलना ; प्रसिद्धि ।

सैलव पेल (क) क्रि.—कर, संपन्न कर ।

पौदिसु पौदिसु (क) क्रि.—ढक, ओढ़ा ।
 पौदुं (क) क्रि.—छिपा ।
 पौदे (क) क्रि.—ढक, ओढ़ा । सं.—
 तरकस, तूणीर ; झुरमट, पौधों का समूह ;
 गट्टा, बंडल ; छप्पर ।
 पौदु (क) क्रि.—प्राप्त कर, पा, उप-
 लब्ध कर ।
 पौन् (क) सं.—सोना, सुवर्ण, हेम ।
 पौनल् (क) सं.—झरना ; नदी ।
 पौन्न (क) सं.—कन्नड के एक प्राचीन
 कवि का नाम जो 'रत्नत्रय' में एक है ।
 पौय्, पौयि (क) क्रि.—डाल,
 ऊपर से डाल ; मार, पीट, ताड़न कर । सं.—
 मारना, पीटना ; डालना ।
 पौयु (क) सं.—मारना, पीटना ;
 ताड़न, प्रहार ।
 पौरल्, पौरल् (क) क्रि.—
 लुढ़क, लुंठित हो ।
 पौरल् (क) सं.—राशि, ढेर ।
 पौरल् (क) क्रि.—लुढ़का ।
 पौरिक्, पौरिगे (क) सं.—
 झाड़, बुहारी ।
 (१) पौरि (क) क्रि.—पालन कर, पोषण
 कर, रक्षा कर, पालित हो । सं.—पालन-
 पोषण ।
 (२) पौरि (क) क्रि.—जुड़, मिल, संयुक्त
 हो । सं.—मिलना, पास-पास होना ;
 सामीप्य, पड़ोस ; बाड़ा, परत ।
 पौरिसु (क) क्रि.—पालन-पोषण
 करा या करवा ।
 पौर, पौर (क) क्रि.—सिर
 पर वहन कर या धारण कर, उठा ।
 पौर, पौरिगे, पौरिगु (क)
 अ.—बाहर ।
 पौरिगे (क) सं.—सिर पर का बोझा ;
 धंधा, काम ।
 पौरिसु (क) क्रि.—सिर पर वहन
 कर, लाद ।

पौरि (क) सं.—बोझा, भार (गट्टा
 आदि) ।
 पौरि (क) सं.—लहर, तरंग ।
 पौरिगे (क) सं.—मिलन, स्पर्श,
 साहचर्य, सामीप्य ।
 पौरिगेकार (क) सं.—सहचर,
 मित्र ।
 पौरि (क) क्रि.—लग, सादृश्य या
 समान हो ; सी । सं.—नीचता, तुच्छता,
 कमीनापन ।
 पौरि, पौरि (क) सं.—क्षेत्र,
 खेत ।
 पौरि (क) सं.—अलूत स्त्री, चमा-
 रिन, हरिजन स्त्री ।
 पौरि (क) सं.—लंपट, व्यभिचारी ।
 पौरि, पौरि (क) सं.—
 ढंग, निधान, रीति ; परिस्थिति ।
 पौरि (क) सं.—गंदगी, मैल ।
 पौरि (क) सं.—अशुचि, बच्चे के जन्म
 के कारण होनेवाली अशुद्धि ; स्त्रियों का
 रजस्वला होना ।
 पौरि (क) सं.—नीचता, कमीनापन ।
 पौरि, पौरि (क) सं.—
 निष्ठुरता ; बुराई ।
 पौरि (क) सं.—नीच काम, बुराई ।
 पौरि, पौरि, पौरि, पौरि (क) सं.—
 वि.—नया, नवीन, नव ।
 पौरि (क) सं.—देहरी ।
 पौरिसु (क) क्रि.—पौरिसु
 पौरिसु — लगा, मिला, जोड़ा ; मथ,
 हिला ।
 पौरि (क) क्रि.—हिल, आंदोलित हो,
 मथा जा, रगड़, भोंक ; रस्सी की मरोड़ ।
 सं.—मथानी ।
 पौरि, पौरि (क) क्रि.—
 चबा, चर्वित कर ।
 पौरि (क) सं.—चमक, दमक, कांति,
 प्रकाश, झलना, प्रेख ।
 पौरि (क) क्रि.—प्रकाशित हो, चमक,
 दमक ; लुंठित हो ; इधर-उधर हिल, झल ।

पौरि (क) सं.—निस्तार पदार्थ,
 थोथा, बेकार ।
 पौरि (क) सं.—आकार, रूप ।
 पौरि, पौरि (क) सं.—
 रहने का स्थान, शहर, नगर, बस्ती ।
 पौरि (क) सं.—नदी ; मार्ग, रास्ता ।
 पौरि (क) सं.—सूर्य, प्रातःकाल,
 समय ।
 पौरि (क) क्रि.—जा, गमन कर ; प्रस्थान
 कर, चल ।
 पौरि (क) सं.—जानेवाला ; आवारा,
 दुष्ट, बेकार आदमी ।
 पौरि (क) सं.—आवारा, दुष्ट,
 लफंगा ।
 पौरिसु (क) क्रि.—चला, गमन
 करा ।
 पौरि (क) क्रि.—जा, गमन कर, चल ;
 निकल जा ।
 पौरि (क) सं.—भीरु ; कापुर ; आवारा,
 गुण्डा, दुष्ट ।
 पौरि (क) सं.—मिलाना ; सादृश्य,
 समानता ; स्पर्धा, होड़ ; खोखला, कोटर ;
 कदरा ।
 पौरि (क) सं.—जोड़, मिलाप ; विभाग,
 टुकड़े करना ।
 पौरिसु (क) क्रि.—गूँथ ; पिरो ।
 पौरि (सम्) सं.—किसी जानवर का
 बच्चा ; नाव ; जहाज़ ; बख, पढ़नावा ।
 पौरि (सम्) सं.—सुअर या थूथन ।
 पौरि (क) क्रि.—लड़, मल्लयुद्ध कर ।
 सं.—मल्लयुद्ध, झगड़ा, लड़ाई ; विल ।
 पौरिसु (क) क्रि.—लड़ा, युद्ध करा
 या करवा ।
 पौरि (क) सं.—मल्ल, पहलवान ;
 मल्लयुद्ध, लड़ाई, संघर्ष ; विरोध ।
 पौरि (क) सं.—लड़ना ; युद्ध, संघर्ष ।
 पौरि (क) क्रि.—समान हो, सादृश्य
 हो । सं.—सादृश्य ।
 पौरि (क) वि.—नीच, लफंगा ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸಮಾನತಾ ದಿವಾ,
ತುಲನಾ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ದೇ. ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ.

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು, ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಕ) ಸಂ.—ಸಮಾ-
ನತಾ, ಸಾಧನ ; ತುಲನಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ಪೋಷಣ ಕರ ;
ರಕ್ಷಣ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು, ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
ವೀರ, ವಿದ್ವಾನ್ ಕರ, ಡುಕಡೆ ಕರ । ಸಂ.—ಡುಕಡಾ,
ಭಾಗ, ಖಂಡ, ವಿಭಕ್ತ ಪದಾರ್ಥ ; ರಚನಾ, ಕಲಾ
ಕೀ ರಚನಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಕ) ಸಂ.—ಖೋಖಲಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.—ಕೌಜ (ಅರಬಿ) ;
ಸೆನಾ, ಡುಕಡಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪುತ್ರ ಕಾ ಪುತ್ರ, ಪೋತಾ ।
ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು=ಪೋತಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪೌರುಷ, ವಿಕರ್ಮ,
ಬಹಾದುರಿ । ವಿ.—ಪುರುಷ ಸಂಬಂಧಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಕಟನ, ಸೂಚನಾ ;
ಘೋಷಣಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಕಟನ ಕರ
ಪ್ರಕಾಶಿತ ಕರ ; ಘೋಷಣಾ ಕರ, ಬತಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಕಟಣ ಪಗರಣ
(ತದ್)—ವಿಷಯ, ಪ್ರಸಂಗ ; ಅಧ್ಯಾಯ, ಪರಿಚ್ಛೇದ ;
ಅವ ರ, ಮೌಕಾ ; ಮುಖಬಂಧ, ಭೂಮಿಕಾ ; ರೂಪಕ
ಕಾ ಏಕ ಭೇದ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಕಾಶಿತ
ಕರ, ಪ್ರಕಟ ಕರ, ಚಮಕಾ ; ಪ್ರಸಿದ್ಧ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಫುಟಕರ,
ಫುಟಕಲ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಸ್ವಭಾವ ; ಬನಾವಟ,
ಆಕಾರ ; ಪರಂಪರಾ ; ಉದ್ಗಮ ಸ್ಥಳ ; ಸಾಂಖ್ಯ
ದರ್ಶನ ಮೇ ಉಕ್ತ ಪ್ರಕೃತಿ ; ನಮೂನಾ ; ಆದರ್ಶ ;
ಸ್ತ್ರೀ ; ನಿಸರ್ಗ ; ಕುದರತ ; ಅಮಾತ್ಯ, ಮಂದಿ ;
ಗುಣತ್ರಯ ; ತತ್ವ ; ರಾಜತಂತ್ರ ಕೇ ಅಂಗ ; ಕರನ
ಯೋಗ್ಯ ಕಾರ್ಯ ; ಕಾರಣ, ಹೇತು ವಿಶೇಷ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ
ಅಭ್ಯಾಸ, ಶೀಲ ; ಬಲಿ ; ಆದಿ ಅನೇಕ ಅಂತ ;
ತ್ಯಾಗನಾ, ತ್ಯಾಗ ; ಸಮೂಹ ; ರಜ, ಧೂಲ ; ಪ್ರಧಾನ,
ಶ್ರೇಷ್ಠ ; ಜನನೇಂದ್ರಿಯ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಕೃತಿ, ಹಂಗ,
ತರೀಕಾ ; ಸಂಸ್ಕಾರ, ಕರ್ಮ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಧೋನಾ, ಸಾಫ
ಕರನಾ ; ಮೌಜನಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಗಾಡಾ, ಕಠೋರ,
ಹಠ, ಅಧಿಕ, ಬಹುತ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಅತ್ಯಂತ ತೀವ್ರ,
ತೇಜ, ಉಗ್ರ, ಪ್ರಖರ, ಬಲವಾನ್, ಭಯಾನಕ ; ಕ್ರೋಧಿ ;
ಸಾಹಸಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—
ಪ್ರಚಾರ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಬಹುತ, ಅಧಿಕ,
ವಿಪುಲ ; ಬಡಾ, ವಿಸ್ತೃತ ; ಪ್ರಸಿದ್ಧ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಹಕಾ ಹುಖಾ, ಪರಿ-
ವೇಶಿತ, ಗೋಪ್ಯ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ರಾತ್ ಕೊ ಜಾಗನ-
ವಾಲಾ ; ರಕ್ಷಕ, ಅಸಿಂಹಾ ; ಕುಣ ಕಾ ಏಕ
ನಾಮ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಬ್ರಹ್ಮಾ ; ಬ್ರಹ್ಮಾ
ಕೇ ದಸ ಪುತ್ರ ; ರಾಜಾ ; ಲಿಂಗ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ವಹ ಸ್ತ್ರೀ ಜಿಸಕೇ
ಬಚ್ಚೆ ಹೊ ; ಮಾತಾ ; ಗರ್ಭವತೀ ಸ್ತ್ರೀ ; ಭಾಣಿ ಕೀ
ಪತ್ನಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಜಾ, ಲೋಗ ; ಸಂತಾನ,
ಖೋಲಾಡ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಜ್ಞಾ, ಬುದ್ಧಿ, ಜ್ಞಾನ,
ಪ್ರತಿಭಾ, ವಿವೇಕ, ಸಮಜ ; ಬುದ್ಧಿಮಂತಿ ಸ್ತ್ರೀ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ಪ್ರಜ್ವಲಿಸು
ಕರ, ಜಲಾ ; ಚಮಕಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಣಾಮ, ನಮಸ್ಕಾರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರೇಮ, ಪ್ರೀತಿ ;
ಮೈತ್ರಿ, ಸ್ನೇಹ ; ಅನುಗ್ರಹ, ದಯಾ ; ವಿನಯ, ಯಾಚನಾ ;
ವಿವಾಹ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಅಂಕಾರ ; ಏಕ ಛೋ
ಹೋಲ, ಮೃದಂಗ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಣಾಮ, ಪ್ರಣಿಪಾತ (ಸಮ)
ಸಂ.—ನಮಸ್ಕಾರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ವಿ.—ಗರಮ, ಉಷ್ಣ,

ಜಲನೇವಾಲಾ, ಪಿಡಾಕರ, ಸಂತಪ್ತ ಕರನೇವಾಲಾ ;
ಸಾಹಸಿ, ವೀರ, ಪರಾಕ್ರಮಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು, ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು, ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ)
ಸಂ.—ಪ್ರತಿಶೋಧ, ಬದಲಾ ; ವಿರೋಧ, ವಿಪಕ್ಷತಾ,
ಸಾಮನಾ, ಚಿಕಿತ್ಸಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ವಿರೋಧ,
ವಿಪರೀತ ಹೊನಾ ;

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿಶೋಧ,
ಬದಲಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪೀಕದಾನ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ವಿರೋಧ ;
ಘಾತ, ಚೊಟ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿಜ್ಞಾ, ವಾದಾ,
ವಚನ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿನಿಧ್ಯ (ಸಮ)
ಸಂ.—ರೋಜ, ಹರ ದಿನ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರಥಮಾ ತಿಥಿ ;
ಗೌರವ, ಸಮ್ಮಾನ, ನಿಮ್ನತಾ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—
ಉತ್ಪಾದನ ಕರ, ಉಪಯೋಗ ಕರ, ಸಮಜ್ಞಾ ; ನಿರೂಪಿತ
ಕರ, ಕಿಸಿ ವಾತ್ ಕೊ ಸ್ಥಿರ ಕರ, ನಿಂದಾ ಕರ,
ನಿಂದಾರೋಪಣ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ವಿವ್ವ
ಉತ್ಪನ್ನ ಕರನೇವಾಲಾ, ವಿವಿಧಭೂತ ; ಪ್ರೇತ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ವಿರೋಧ
ಕರ, ಸಾಮನಾ ಕರ, ಮುಕಾವಲಾ ಕರ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿಭಾ ; ಬುದ್ಧಿ,
ಉಜ್ವಲತಾ, ಚಮಕ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಛೇದಾಂತ,
ಉದಾಹರಣ ; ಪ್ರತಿಮಾ, ಮೂರ್ತಿ ; ಅನುಕೃತಿ, ಸಾಧನ ;
ಹಾಥಿ ಕೇ ದೊನೊ ದೊನೊ ಕೇ ಬೀಚ ಕಾ ಸ್ಥಾನ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿಮಾ, ಮೂರ್ತಿ ;
ಸಾಧನ, ಅನುಕೃತಿ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ಪ್ರತಿರೋಧಿ
(ಸಮ) ಸಂ.—ಚೋರ, ಡಾಕ್ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಸಂ.—ನಿವೇಧ, ಮನಾಣಿ ;
ಅಸ್ವೀಕೃತಿ, ಅಮಾನ್ಯತಾ ; ಖಂಡನ ; ನಕಾರಾತ್ಮಕ
ಶಬ್ದ ।

ಪ್ರತಿಷ್ಠಿತ ಪಾಲಿಸು (ಸಮ) ಕ್ರಿ.—ಸ್ಥಾಪನಾ ಕರ

कायम कर; किसी प्रतिमा को प्रतिष्ठित कर;
सिद्ध कर ।
सु० ३५६ प्रतिहार, सु० ३५६ प्रतीहार,
(सम्) सं. — द्वार; द्वारपाल; जादूगर;
इन्द्रजाल ।
सु० ३५७ प्रतीक्षे (सम्) सं.—प्रतीक्षा; आशा ।
सु० ३५८ प्रतीति (सम्) सं. — निश्चित ज्ञान,
विश्वास, भरोसा; धारणा, कीर्ति; सम्मान,
प्रतिष्ठा ।
सु० ३५९ प्रतीति (सम्) सं.—स्त्री,
रमणी ।
सु० ३६० प्रतीर (सम्) सं.—किनारा, तट ।
सु० ३६१ प्रतूर्ण (सम्) वि.—तेज, वेगवान ।
सु० ३६२ प्रत्यक्ष (सम्) सं.—नयनगोचर होना;
दर्शन देना, साक्षात्कार; जो सच्चा, साफ़
या स्पष्ट हो, स्पष्टता; दिशा; तल्प;
सभी वस्तुएँ ।
सु० ३६३ प्रत्यनीक (सम्) सं. — शत्रु, शत्रु-
सेना ।
सु० ३६४ प्रत्यय (सम्) सं.—विश्वास, भरोसा;
ज्ञान, बुद्धि, धारणा, निश्चयत्व; अनुभव,
बोध; कारण, हेतु; प्रसिद्धि, ख्याति;
शपथ; धातु या मूल शब्द के साथ जोड़ा
जानेवाला अक्षर या शब्द, प्रत्यय; चाल,
प्रचलन, रीति; परमुखापेक्षी; प्रजा; विल ।
सु० ३६५ प्रत्याख्यान (सम्) सं.—अस्वी-
कृति; तिरस्कार; खंडन ।
सु० ३६६ प्रत्यागत (सम्) वि.—लौटा हुआ,
वापस आया हुआ ।
सु० ३६७ प्रत्यादेश (सम्) सं. — प्रतिवाद,
तिरस्कार, अस्वीकृति ।
सु० ३६८ प्रत्युक्ति (सम्) सं. — प्रत्युत्तर,
उत्तर ।
सु० ३६९ प्रत्येकिसु (सम्) क्रि.—पृथक् कर,
अलग कर ।
सु० ३७० प्रथम (सम्) सं. — फैलाना; यश,
कीर्ति ।
सु० ३७१ प्रथम (सम्) वि. — पहला, प्रथम;
श्रेष्ठ, प्रधान ।
सु० ३७२ प्रदक्षिण, सु० ३७३ प्रदक्षिणे (सम्)

सं.—प्रदक्षिणा, किसी पूज्य को दायीं ओर
कर भक्तिपूर्वक उसके चारों ओर घूमना ।
सु० ३७४ प्रद्युति (सम्) सं. — जगमगाहट,
प्रकाश, आभा ।
सु० ३७५ प्रधान (सम्) सं. — मुख्य वस्तु;
मुखिया, प्रधान; बुद्धि; परब्रह्म; प्रधान
सचिव । वि.—मुख्य, खास, प्रसिद्ध, उत्तम ।
सु० ३७६ प्रध्वंस (सम्) सं. — पूर्ण रूप से
नाश; विकीर्ण होना, छिड़कना; बंधन;
रिपु, शत्रु; दावाभि; कुच; आकाश ।
सु० ३७७ प्रध्वान (सम्) सं.—बहुत शोरगुल ।
सु० ३७८ प्रपंच (सम्) सं.—संसार, दुनिया;
प्रदर्शन; विस्तार, बाहुल्य; भ्रम; धोखा ।
सु० ३७९ प्रपात (सम्) सं.—जलप्रपात; ढल-
आ चट्टान; पहाड़ का उतार या ढाल;
उड़ान; बहाव के ऊपर से अपने को नीचे
गिरा देना ।
सु० ३८० प्रबंध (सम्) सं. — बंधन, अविच्छि-
न्नता; संबद्ध चर्चा या वर्णन; कोई भी
रचना; योजना ।
सु० ३८१ प्रबोधिसु (सम्) क्रि.—समझा-
बुझा, ज्ञान करा ।
सु० ३८२ प्रभजन (सम्) सं.—पवन, वायु;
आँधी ।
सु० ३८३ प्रभविसु (सम्) क्रि.—उत्पन्न हो,
जन्म ले, निकल ।
सु० ३८४ प्रभुते. सु० ३८५ प्रभुत्व (सम्) सं.—
स्वामित्व, साहिबी; महत्व, बड़ाई ।
सु० ३८६ प्रमत्त (सम्) वि.—मदमत्त, उन्मत्त,
पागल; लापरवाह, असावधान ।
सु० ३८७ प्रमथ (सम्) सं. — शिव के गण;
घोड़ा । — लोढ़ नाथ, लोढ़ नायक =
शिव ।
सु० ३८८ प्रमदवन (सम्) सं.—राजा का
उपवन जो अंतःपुर से संबद्ध रहता है ।
सु० ३८९ प्रमदा, सु० ३९० प्रमदे (सम्) सं.—
सुंदरी स्त्री, रमणी ।
सु० ३९१ प्रमाण (सम्) सं. — नाप, माप;
आकार; पैमाना, श्रेणी; सीमा, मात्रा;
साक्षी, गवाही; न्यायाधीश; यथार्थ ज्ञान

का साधन; धर्म; कारण; मिलन; सींग;
शास्त्र; सामीप्य ।
सु० ३९२ प्रमाद (सम्) सं.—गलती, अशुद्धि;
नशा, मद, पागलपन; उपेक्षा, असाव-
धानी ।
सु० ३९३ प्रमुख (सम्) वि.—मुख्य, प्रधान;
संमुख, सामने । सं.—प्रतिष्ठित पुरुष;
ढेर, समुदाय ।
सु० ३९४ प्रमोदिसु (सम्) क्रि.—प्रमोद
कर, खुशी मना, प्रसन्न रह, आनंदित रह ।
सु० ३९५ प्रयत्न (सम्) सं.—प्रयत्न; कोशिश,
प्रयास; कष्ट, कठिनाई ।
सु० ३९६ प्रयाण (सम्) सं.—यात्रा; प्रस्थान;
आगे जाना; आक्रमण; मृत्यु । — मारु-
माडु—प्रस्थान कर ।
सु० ३९७ प्रयाणिक (सम्) सं.—यात्रा करने-
वाला; यात्री; मुसाफिर ।
सु० ३९८ प्रयुक्ति (सम्) सं.—उपयोग,
इस्तेमाल, उपयोग; प्रयोजन, उद्देश्य;
उकसाना, उत्तेजना; परिणाम ।
सु० ३९९ प्रयोगिसु (सम्) क्रि.—प्रयोग
कर, व्यवहार कर, अनुष्ठान कर ।
सु० ४०० प्रयोजक (सम्) सं.—उपयोगी
या किसी काम में आनेवाला मनुष्य ।
सु० ४०१ प्रलपन (सम्) सं.—वार्तालाप, संभा-
षण; व्यर्थ की बात, बकवाद, प्रलाप;
विलाप ।
सु० ४०२ प्रलय (सम्) सं.—नाश, लय होना;
जल-प्लावन; मृत्यु, मौत; मूर्छा, बेहोशी;
आतप, धूप ।
सु० ४०३ प्रवर्तने (सम्) सं.—कार्यारंभ,
कार्यसंचालन; प्रेरणा, उत्तेजना; प्रवृत्ति,
चालचलन; आचरण, पद्धति, ढंग ।
सु० ४०४ प्रवहिसु (सम्) क्रि.—बह, प्रवाहित,
हो ।
सु० ४०५ प्रवाद (सम्) सं.—वार्तालाप, संवाद;
किंवदन्ती, जनश्रुति, अफवाह, जन-उक्ति ।
सु० ४०६ प्रवाल (सम्) सं.—मूंगा, विटम;
कौपल, किसलय; हरापन, हरियाली;

केश, विकुर ; छ ; लाल रंग ; वीणा का भाग विशेष ।

संस्कृत प्रवृत्ति (सम्) सं.—झुकाव ; चाल-चलन ; स्वभाव ; बढ़ती, उन्नति ।

संस्कृत प्रश्ने (सम्) सं.—प्रश्न ; सवाल । —
२३३ एतु = प्रश्न उठा ।

संस्कृत प्रश्रय (सम्) सं.—विनय, विन-म्रता ; प्रेम, स्नेह ; सम्मान ।

संस्कृत प्रसक्ति (सम्) सं.—वार्तालाप का विषय ; विवादग्रस्त विषय ; संबंध, संसर्ग ; व्याप्ति ; प्रयत्न ।—डैरें देगे (सम्) क्रिं. किसी बात को उठा ।

संस्कृत प्रसाधन (सम्) सं.—सजावट ; शृंगार, वेश-भूषा करना ; सुव्यवस्था करना ।

संस्कृत प्रसिद्ध (सम्) वि.—विश्रुत, विख्यात, मशहूर ।

संस्कृत प्रसूतिक, संस्कृत प्रसूते (सम्) सं.—प्रसूतिका, जच्चा स्त्री ।

संस्कृत प्रस्तारिषु, संस्कृत प्रस्तारिषु (सम्) क्रि.—फैला, विस्तार कर ; जमीन को चौरस कर ।

संस्कृत प्रस्तावने (सम्) सं.—प्रशंसा, सराहना ; आरंभ ; भूमिका, उपोद्घात ।

संस्कृत प्रहसन (सम्) सं.—हँसी, मज़ाक, दिह्लगी, अट्टहास ; हँसानेवाला नाटक ।

संस्कृत प्रहरि (सम्) सं.—चौकीदार, पहरे-दार ; घंटा बजानेवाला ।

संस्कृत प्रांशु (सम्) वि.—ऊँचा, उन्नत, उत्तुंग ; लंबा, दीर्घ, विस्तृत, बड़ा ;

संस्कृत प्राचीन (सम्) वि.—पुराना ; पूर्व का, पूर्वी ।

संस्कृत प्राजापत्य (सम्) सं.—विवाह का एक प्रकार ; तपस्या का एक ढंग ; यज्ञ विशेष ; अनधिकार साहस ।

संस्कृत प्राण (सम्) सं.—जान, प्राण ; जीवन ; साँस, प्राणवायु ; आत्मा, जीव ; इन्द्रिय ; परब्रह्म ; प्राण के समान कोई वस्तु या व्यक्ति ।

संस्कृत प्राप्ति, संस्कृत प्राप्ति (सम्)

क्रि.—मिल, प्राप्त हो, उपलब्ध हो ; अधीन में आ, वश में आ ।

संस्कृत प्राय (सम्) सं.—तारुण्य, यौवन ; जीवन की अवस्था ; जीवन से प्रस्थान, प्रस्थान, आधिक्य, विपुलता, प्राचुर्य ; बहु-मत, सबसे बड़ा वंश ; निर्मलता ; प्रधान, मुख्य ; सादृश्य ।

संस्कृत प्रारब्ध (सम्) सं.—बुरी चीज़, दुर्भाग्य, बद्किस्मत, प्रारब्ध कर्म ।

संस्कृत प्रार्थिसु (सम्) क्रि.—प्रार्थना कर, विनय कर, स्तुति कर ; किसी वस्तु की अभिलाषा कर ।

संस्कृत प्रास, संस्कृत प्रासु (सम्) सं.—अनु-प्रास अलंकार ।

संस्कृत प्रिये (सम्) वि.—प्यारा, मनोहर ; प्रेमी, स्वामी, पति ।

संस्कृत प्रिये (सम्) सं.—प्रेमिका, प्रेयसी, पत्नी ।

संस्कृत प्रीति (सम्) सं.—हर्ष, आनंद ; सुख ; प्रेम, स्नेह ; अनुराग ; अनुकंपा, अनुग्रह ; मैत्री ।

संस्कृत प्रेकण (तद्) सं.—प्रियंशु ।
संस्कृत प्रेख, संस्कृत प्रेखे (सम्) सं.—
झूलना, हिंडोला ।

संस्कृत प्रेत (सम्) सं.—प्रेत ; भूत ।

संस्कृत प्रेम (सम्) सं.—प्रेम ; स्नेह, प्रीति ; अनुकंपा ; प्रसन्नता ; एक छंद का नाम ।

संस्कृत प्रेरिसु, संस्कृत प्रेरिषु (सम्) क्रि.—प्रेरणा दे, उकसा ।

संस्कृत प्रोक्षिसु (सम्) क्रि.—प्रोक्षण कर, छिटका, छिड़का ।

संस्कृत प्रोत्साहिसु (सम्) क्रि.—प्रोत्सा-हित कर, उकसा ।

संस्कृत प्रौढ (सम्) वि.—पूर्ण वय को प्राप्त, वयस्क ; विवाहित ; बूढ़ा ; पका हुआ ; गाढ़ा, घना, सतेज ; बलवान्, साहसी ।

संस्कृत प्रौढिमे (सम्) सं.—सुन्दरता, उत्कृ-ष्टता, प्रौढत्व ।

संस्कृत प्लवंग (सम्) सं.—मेंढक ; बंदर ;
रोड़ा ; एक संवत्सर का नाम ।

संस्कृत प्लवंग (सम्) सं.—मेंढक ;
बंदर ।

फ

फं फ—कन्नड वर्णमाला का छत्तीसवाँ अक्षर, पवर्ग का दूसरा व्यंजन ।

फं फुनै फक्ने (क) अ.—तुरंत, फौरन, 'फक् फक्' करके ।

फं फुजुतु, फं फुजुति (अ. दे.) सं.—फुजीहत (अरबी) ; गड़बड़ी, व्याकुलता, बुरा हाल ।

फं फड (क) अ.—भला ! शाबाश !
फं फणि (सम्) सं.—साँप, नाग । —
फं फति (सम्) सं.—नागेंद्र, सर्पराज ।

फं फल (सम्) सं.—फल ; फसल, पैदा-वार ; नतीजा, परिणाम ; फायदा, लाभ, व्याज ; मुक्ति, मोक्ष ; ढाल ; तलवार की धार ; तीर की नोक ; जायफल ; तखता ।

फं फसलि, फं फसलु (अ. दे.) सं.—
फसल (अरबी) ; उपज, पैदावार ।

फं फाल (सम्) सं.—हल की नोक ; माथा, फाल, सीमांत भाग ; सूती कपड़ा ; गद्दा ।

फं फालाक्ष (सम्) सं.—शिवजी ।
फं फालाक्षु (अ. दे.) सं.—फरियाद (फारसी) ; शिकायत ; अभियोग ।

फं फेरिस्तु (अ. दे.) सं.—फेहरिस्त (फारसी) ; सूची ।

फं फौजु (अ. दे.) सं.—फौज (अरबी) ;
सेना ।

ब

बं ब—कन्नड-वर्णमाला का सैंतीसवाँ अक्षर ; पवर्ग का तीसरा व्यंजन ।

बं बंक्र (क) वि.—टेढ़ा, झुका हुआ, वक्र ('वंकः'—तत् ?) ।

बं बंकु (क) क्रि.—टेढ़ा हो, वक्र हो, झुक, तिरछा हो ।

७०८ वंके (क) सं.—गोंद ।

७०९ वंग (तद्) सं.—भंगः (तत्) ; दूटने का भाव ।

७०९ वंगड़े (क) सं.—मछली विशेष ।

७०९ वंगड्डु (क) सं.—एक प्रकार की सूखी घास ।

७०९ वंगरलि (क) सं.—एक पौधे का नाम ।

७०९ वंगल, ७०९ वंगले (अ. दे.) सं.—Bungalow (अंग्रेजी) ; इमारत, भवन, मकान ।

७०९ वंगार (तद्) सं.—भृंगारः (तत्) ; सोना, हेम ।

७०९ वंगु (क ?) सं.—एक प्रकार का चर्मरोग ।

७०९ वंजर, ७०९ वंजरु (तद् ?) सं.—ऊसर भूमि ।

७०९ वंजे (तद्) सं.—बंधा (तत्) ; बाँझ ।

७०९ वंट (तद्) सं.—वंटः (तत्) ; नौकर, चाकर । (तद्) सं.—भटः (तत्) —योद्धा, सिपाही ।

७०९ वंटगे, ७०९ वंटन (तद्) सं.—नौकरी, वीरता, पराक्रम ।

(१) ७०९ वंड (क) सं.—ऊन ।

(२) ७०९ वंड (तद्) सं.—भौंड, वस्तु ; द्रव्य, मूल्य, भाव ; निर्लेज पुरुष, नीच, दुष्ट । —उं= निर्लेजता ।

७०९ वंडण (तद्) सं.—भंडनम् (तत्) ; युद्ध, लड़ाई ।

७०९ वंडलु (क) सं.—दलदल, पंक, कीचड़ ।

७०९ वंडवल, ७०९ वंडवलु, ७०९ वंडवाल, ७०९ वंडवाल, ७०९ वंडवाल, ७०९ वंडवाल (तद् ?) सं.—मूलधन, पूँजी ।

७०९ वंडाय, ७०९ वंडायि (म) सं.—कलह, झगड़ा ।

७०९ वंडि (क) सं.—चक्र, पहिया ; गाड़ी, चैलगाड़ी । —चर कार=गाड़ीवान ।

(१) ७०९ वंडु (क) सं.—मधु ; मकरंद, पुष्परस ।

(२) ७०९ वंडु (क) सं.—निर्लेज या वेशर्म मनुष्य, नीच ।

७०९ वंडे (क) सं.—ऊन ; चटान, शिला ।

७०९ वंतु (क) क्रि. रू.—आया (न लिं., ए. व.—व्या. भा. में.) । उदा.—उं=

७०९ आने वंतु—हाथी आया, गडि ७०९ गाडि वंतु—गाड़ी आयी ।

७०९ वंदनिके, ७०९ वंदुरिके (तद्) सं.—एक पौधा विशेष ।

७०९ वंदु (क) कृ.—आकर, पहुँचकर ।

७०९ वंदुमाडु (अ. दे.) क्रि.—बंद कर ।

७०९ वंदूक, ७०९ वंदूकु (अ. दे.) —वंदूक (हिं.) ।

७०९ वंदोवस्तु (अ. दे.) सं.—वंदोवस्तु (फ़ारसी) ; भूमि-कर की व्यवस्था ; व्यवस्था, प्रबंध ।

७०९ वंध (सम्) सं.—बंधन, बांधने का फीता, डोरी, पकड़, गिरफ्तारी ; संबंध, मेल ।

७०९ वंधन (सम्) सं.—बांधने की क्रिया ; रस्सी, जंजीर, वेड़ी ; कारागार ; वध, हिंसा पट्टी ।

७०९ वंधु (सम्) सं.—नातेदार, रिश्तेदार, संबंधी ।

७०९ वंधुक, ७०९ वंधुल, (सम्) सं.—रंडी का पुत्र ।

७०९ वंधुर, ७०९ वंधूर (सम्) वि.—तरंगित, लहराता हुआ, असमान, झुका हुआ, टेढ़ा ; सुंदर, मनोहर ।

७०९ वंधु (क) सं.—पत्ते या छिलके का रस या गोंद ।

७०९ वंधल (क) सं.—समूह, राशि, ढेर, झुंड, गुच्छा ।

७०९ वंधल, ७०९ वंधलने (क) अ.—बहुत थकावट से ।

७०९ वंधु (क) सं.—खोखला, वाँस ।

७०९ बक (सम्) सं.—बगुला ; ढोंगी ; एक राक्षस का नाम ; एक वृक्ष का नाम (The tree sesbana grandiflora) ।

७०९ बकरे, ७०९ बक्रे (क) सं.—बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा ।

७०९ बकट (क) वि.—खाली, रिक्त, शून्य ।

७०९ बक्रे (क) सं.—दे. बकरे ; भूनने का तवा ।

७०९ बकुडि (क) क्रि.—चकित हों, गड़बड़ में पड़ । सं.—चकित होना. घबराहट ; भय, डर, दुःख ।

७०९ बक्रे (क) सं.—मिठास, मीठा होना, अच्छाई ।

७०९ बगडु (क) क्रि.—पैर फैला, ऊर विस्तार ।

७०९ बगरगे, ७०९ बगरिगे, ७०९ बगेरगे (क) सं.—सूखी नदी में पानी के लिए खोद गया गड्ढा ।

७०९ बगरु (क) क्रि.—खरोच, नख से खनन कर ।

७०९ बगसिगे, ७०९ बगसु, ७०९ बगसे, ७०९ बोगसे, ७०९ बोगसि, ७०९ बोगसे (क) सं.—अंजलि, चुल्हा ।

७०९ बगलु, ७०९ बगुलु, (क) क्रि.—भूँक ; बक ।

७०९ बगि (क) क्रि.—चीर, बॉट पृथक कर, अलग, छितरा, खरोच, खोद ।

७०९ बगुड (क) सं.—उन्नत नाभिवाला ।

७०९ बगुल, ७०९ बगुलु, (क) क्रि.—भूँक, बक । सं.—भूँकना ।

७०९ बगे (क) क्रि.—विचार कर, परिशीलन कर, मन में ला, ध्यान दे, जान । सं.—विचार परिशीलन, उद्देश्य, लक्ष्य, ध्येय, मन का भाव ; भाग, हिस्सा, अंश ; ढंग, श्रेणी, वर्ग, प्रकार ।

७०९ बगेरगे (क) सं.—कच्चा या अस्थायी कुँआ ।

७०९ बगड (क) सं.—तलछट ; दलदल ; पानी जिसमें गोबर मिला हो ।

७०९ बगडिय (क) सं.—बड़बड़ानेवाला, मूर्ख ।

७०९ बगणे (क) सं.—कूकना, पुकार ।

७०९ बगने (क) अ.—तुरंत, जल्दी ।

बगरी बगरी

बगरी (क) सं.—छाती, वक्ष, छाती का गढ़।

बगरी बगरी (क) क्रि.—झुका, टेढ़ा कर; कूक; पुकार।

बगरी बगरी (क) क्रि.—झुक जा, टेढ़ा हो, वश में हो।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) अ.—के बारे में, के संबंध में।

बगरी बगरी (क) वि.—बुग; हरा; छोटा।

बगरी बगरी (क) सं.—स्वर्ग, अमरलोक।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—गंदे पानी का नल, मोरी।

बगरी बगरी (क) सं.—पोई नाम की लता।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) क्रि.—रख, एक तरफ रख — छिपा, ढक; पतला हो, दुर्बल हो।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (अ. दे.) सं.—बाजार (फारसी)।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—दे. बगरी।

बगरी बगरी (क) सं.—('भृज्' धातु से?) तरकारी या अनाज पीसकर बनाई गई चटनी; चने के आटे से बनाया जानेवाला एक नमकीन।

बगरी बगरी (अ. दे. ?) सं.—मटर।

बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—मण्डलाकार, गोल, वृत्त।

बगरी बगरी (क) वि.—खाली, शून्य।

बगरी बगरी (क) अ.—चक्कर काटते हुए, घूमते हुए।

बगरी बगरी (क) सं.—पेट, उदर; भेद, संबंध विच्छेद।

बगरी बगरी (क) वि.—दे. बगरी।

(१) बगरी बगरी (क) सं.—रुक्षता, खुरखुरापन, कठोरता।

(२) बगरी बगरी (तद्) सं.—कपड़ा, वस्त्र; मार्ग, रास्ता। बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—प्याला, कटोरी, छोटा जलपात्र।

बगरी बगरी (क) वि.—दुर्बल, अशक्त; पतला, दुबला, कुश। सं.—उत्तर दिशा।

बगरी बगरी (क) सं.—दुबला, पतला या दुर्बल पुरुष।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—दुबला होना, दुर्बलता।

बगरी बगरी, बगरी बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—उत्तर दिशा।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—अयंगर ब्राह्मणों की एक शाखा।

बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी (तद्) सं.—वर्धक; (तद्); बढ़ाई।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—मारना, पीटना, ताड़न, पिटाई।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—पतला होना; गरीबी, निर्धनता।

बगरी बगरी बगरी बगरी (क) सं.—थकावट, श्रान्ति।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—पतला, दुबला या दुर्बल होना, कुशता।

बगरी बगरी बगरी (अ. दे.) सं.—बढ़प्पन, बढ़ाई।

बगरी बगरी (क) क्रि.—पीट, मार, ताड़न कर; चूर्ण कर; बढ़ा, चला।

बगरी बगरी (क) सं.—मारना, पीटना; धड़कना; तकलीफ, वृद्धावस्था के कारण तकलीफ।

बगरी बगरी (क) सं.—लाठी, डंडा, हथौड़ी।

बगरी बगरी (क) क्रि.—पिटा, ताड़न करा; परोस।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—मारना, पीटना, पिटाई।

बगरी बगरी (क) सं.—सुस्त, मूर्ख पुरुष।

बगरी बगरी (तद्) सं.—वृद्धि: (तद्) धन की बढ़ती, सूद।

बगरी बगरी (क) वि.—रिक्त, खाली; मूर्ख, सुस्त।

बगरी बगरी (क) सं.—निरूपयोगी या बेकार मनुष्य।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—ढेर, राशि, मोटा होना।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—दे. —बगरी।

बगरी बगरी (तद्) सं.—वर्ण: (तद्); रंग।

बगरी बगरी (तद्) सं.—वर्णन। बगरी बगरी बगरी बगरी = वर्णन कर। बगरी बगरी बगरी बगरी = बगरी बगरी।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—धान।

बगरी बगरी (क) सं.—सूखी तरकारी; मेवा।

बगरी बगरी (क) वि.—नंगा, नग्न।

बगरी बगरी बगरी (क) सं.—तरकस, तूणीर।

बगरी बगरी बगरी (अ. दे.) सं.—बतासा (हिं.)।

बगरी बगरी, (तद्) सं.—वर्ति: (तद्); बत्ती; दीपक की बत्ती।

बगरी बगरी (क) क्रि.—सूख जा पानी आदि सूखना।

बगरी बगरी (क) सं.—सूखना, शुष्कता।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) क्रि.—जीवित रह, जीवन निर्वाह कर, जी। सं.—जीवन, जिंदगी।

बगरी बगरी, बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) सं.—निम्न पुरुष, सेवक।

बगरी बगरी (क) सं.—कठिन श्रम।

बगरी बगरी (तद्) सं.—वार्ता (तद्) बैंगन का पौधा।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (अ. दे.) क्रि.—बदल जा, परिवर्तित हो, फेरफार हो। अ.—के बदले, बदले में; दूसरा।

बगरी बगरी बगरी (अ. दे.) सं.—परिवर्तन।

बगरी बगरी (क) सं.—पंक, दलदल, बगल, पार्श्व; सामीप्य।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) क्रि.—जिला, जीवित कर।

बगरी बगरी, बगरी बगरी (क) क्रि.—जी, जीवित रह।

बगरी बगरी (क) सं.—जीवन। क्रि.—जी, जीवित रह।

बगरी बगरी (क) सं.—कला-निपुणता, कौशल।

बद्ध वृक्ष (सम्) वि. — बंधा हुआ ; गिर-
फ्तार किया हुआ ; पकड़ा हुआ ।
बद्ध वनपु (क) सं. — एक बड़ा वृक्ष (Ter-
minalia tomentosa) ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — आइए, पधारिए । सं.
— शमी वृक्ष ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष, बद्ध बह (क) कृ. —
आनेवाला ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — छिपा, निक्षेप कर ;
गाली दे, निंदा कर । सं. — खुला स्थान ।
बद्ध वृक्ष = (तिर की) माँग ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — अभिलाषा, कामना,
इच्छा, लालसा ; आशा, निधि, निक्षेप ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. —
मैदान, खुला स्थान, क्षेत्र ; आकाश ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — पीपल ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — इच्छा कर, अभि-
लाषा कर, कामना कर ; — बिक्रे (क)
सं. — इच्छा, अभिलाषा ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क)
सं. — गालियाँ, निंदा ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — सायंकाल, शामको ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — एक वृक्ष, ताड़ का
वृक्ष ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — गाली दे, निंदा कर ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — निंदा करा या करवा ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — भा ; हो, उत्पन्न हो ;
पहुँच ; मिल, संभव हो ।
बद्ध वृक्ष (अ. दे.) वि. — बरखास्त
(फारसी) ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — प्रियंगु ;
ज्वार ; बाजरा ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — खोखला, सारहीनता ;
वांझ ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — सिंदूरी ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — लिखना,
लिखावट, लेख ।

बद्ध वृक्ष (क) सं. — लिखना, लिखा-
वट ; लिपि ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — आना, आगमन ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — बुला, आने दे ;
लिखा, लिखा ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध
(ग्रा.) ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दे. बद्ध ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दे. बद्ध ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — लिख, लेखन-कार्य कर ;
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — सुखापन, शुष्कता ;
अकाल ; सूखी लकड़ी ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — उपला ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे.
बद्ध ; आलस्य, सुस्ती ।
बद्ध वृक्ष (क) वि. — नंगा, नग्न ; मामूली,
साधारण ; बेकार, निरर्थक, व्यर्थ का ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — सूख, सूख जा, नीरस
हो ; पतला ; कुश हो ; अदृश्य हो । सं.
— सूखी भूमि ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — रंग, वर्ण । — बद्ध
इसु (क) क्रि. — रंग लगा ; चित्र बना ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — मर जा, मृत हो ।
सं. — मृत्यु, मरण ; बढ़ती, वृद्धि, महानता,
उन्नति ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — मृत्यु, मरण ।
बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — अनार्य, जंगली,
पामर, मूर्ख ; एक प्रकार का चंदन वृक्ष ।
बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — कुश, दर्भ ; मोर ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — दृढ़ हो, बलवान हो,
सशक्त हो । सं. — बल, शक्ति ; दृढ़ता ;
आधिक्य ।
(१) बद्ध वृक्ष (क) वि. — दायीं, दक्षिण भाग
का ।
(२) बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बल, शक्ति, जोर
प्रचंडता, उग्रता ; सेना ; सहायता ; साधन ;
स्थूलता ; रूप, आकार ; इंद्रिय, वायस,
कौशा ; बलराम ; एक राक्षस का नाम,
आकाश ; जल, पानी ; काला रंग ; आहुति ।
बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बलवान पुरुष ।

बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — बलात्कार,
अनुरोध, जोर देना ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — वृद्धि ; बल, साहस ;
दृढ़ता ; मुख्यत्व ।
(१) बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — बढ़, वृद्धि पा, दृढ़
हो, मोटा हो, कड़ा हो, अकोमल हो ;
दृढ़ बना ; ठीक तरह से गाड़, लगा ।
(२) बद्ध वृक्ष (सम्) सं. — कर, राज कर ;
किसी देवता को अर्पित पदार्थ ; भूतयज्ञ ;
पूजन, अर्चना ; एक राक्षस का नाम ; सेना-
पति ; सुजन, सज्जन ; बल, शक्ति ; कीर्ति,
यश ; उत्सव ; रजक, धोबी ; कौशा ;
गंधक ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) क्रि. —
— दृढ़ कर या बना ; लगा, बांध ;
समर्थन कर ; वृद्धि कर ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्ति, दृढ़ता ; आधिक्य ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्ति ; साहस,
बलात्कार ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — बल, शक्ति ; क्षमता
दक्षता, दृढ़ता, जोर, मुख्यत्व ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — जाल, फंदा । — बद्ध गार
(क) सं. — मछुआ ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — दे. बद्ध ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) सं. — बद्ध ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — शक्तिमान पुरुष ।
बद्ध वृक्ष (क) वि. — जाननेवाला, ज्ञानी ;
विद्वान । — बद्ध तन (क) सं. — जानकारी
ज्ञान, बुद्धिमत्ता । — बद्ध विक्रे = बद्ध ।
बद्ध वृक्ष, बद्ध वृक्ष (क) वि. —
बलवान, दृढ़, जाननेवाला ।
बद्ध वृक्ष (क) अ. — और, फिर ।
(१) बद्ध वृक्ष (क) सं. — युद्ध, लड़ाई,
संग्राम ।
(२) बद्ध वृक्ष (तद्) सं. — भ्रमर (तद्)
भौरा, मधुकर ।
बद्ध वृक्ष (क) क्रि. — तीक्ष्ण करा,
तलवार की धार आदि को ठीक करा ।
बद्ध वृक्ष (क) सं. — पकड़ी वृक्ष (The
waved-leaved fig-tree) ; कपीतन या

सुपाश्वक वृक्ष (The tree Hibiscus-populneoides) ।

बसर् बसर्, बसर् बसर्, [बसर् बसर्]

(क) सं.—गर्भ ।

बसर् बसर्, बसर् बसर् (क) सं.—
गर्भवती स्त्री । (बसर् बसर् या बसर् बसर्
भी लिखा जाता है) ।

बसर् बसव (तद्) सं.—वृषभः (तत्) ; सांड ।
बसर् बसवि (तद्) सं.—देवदासी ।

बसर् बसि (क) क्रि. — रस, रसकर बह,
टपक ; चावल को उबालने के बाद उसमें
पानी को निकाल ; धार ठीक कर या तीक्ष्ण
कर । सं.—नौक ।

बसर् बसिदु (क) अ.—बह जो पैना हो ।

बसर् बहल (तद्) सं.—बहल (तत्) ; बहुत,
अधिक, विपुल, बड़ा ।

बसर् बहादुर, बसर् बहादुरि (अ.दे.)
सं. — बहादुर (फारसी) ; वीर पुरुष ।

बसर् बहिस् (सम्) अ.—बाहर, बाहर की
ओर, बाहरी ।

बसर् बहिस्करिस् (सम्) क्रि.—बहि-
ष्कार कर, दूर रख ।

बसर् बहिष् (सम्) सं.—रजस्वला स्त्री ।

बसर् बहुदु (क) क्रि. रु.—हो सकता है,
हो सकेगा, संभव है, संभव होगा ।

बसर् बहुल (सम्) वि.—बहुत, अधिक,
प्रचुर, ज्यादा । बसर् बहुल—(तद्) ।

बसर् बलकिसु, बसर् बलकिसु (क)
क्रि.—हिला, डगमगा, घुमा, चमका
(तलवार चमकाना) ।

बसर् बलकु, बसर् बलकु (क) क्रि.—हिल,
हुल, लचक, चमक ।

बसर् बलगा (क) सं.—परिवार के जन, रिश्ते-
दार ; भीड़, समूह ; टोली, सेना, टुकड़ी ।

बसर् बलकु (क) क्रि.—झुक जा, नत हो ।

बसर् बलप (क) सं.—पाटी का पत्थर, एक
प्रकार का पत्थर जो लिखने में काम आता है ।

बसर् बलवे (क) सं.—टाल, सूखी घास भूसे
का ढेर ।

बसर् बलकिसु, बसर् बलकिसु बसर्
बलसु (क) क्रि.—बढ़ा, अभिवृद्ध या उन्नत
कर, बढ़ने दे ।

बसर् बलवि, बसर् बलविगे (क) सं.—
वृद्धि, बढ़ना, बढ़ती, उन्नति ।

बसर् बलसु (क) क्रि.—मँडरा, चकर काट,
घेर, चारों ओर घूम, भ्रमण कर ; घिरा जा ।
सं.—भ्रमण, चकर ; एक प्रकार का कवच ;
एक वृत्त या तह ; घारी ।

बसर् बलि (क) क्रि.—लीप, पोत, गोवर से
लीप ।

बसर् बलिक (क) अ.—बाद में, के बाद, के
पश्चात् या उपरांत ।

बसर् बलुकु, बसर् बलुकु (क) क्रि.—
दे, बसर् और बसर् ।

बसर् बलुवे (क) सं.—बड़ा ढेर ।

बसर् बलुविके (क) सं.—वृद्धि, बढ़ती ।
बसर् बलुविके = विवाह के समय कन्या
को दी जानेवाली संपत्ति ।

बसर् बलुवु (क) सं.—भार, बोझा, वजन ।

बसर् बले (क) क्रि.—बसर् बले—बढ़, वृद्धि पा ।
(तद्) सं.—बल्यः (तत्) चूड़ी । — गार
गार (तद्) सं.—चूड़ियाँ बेचनेवाला ।

बसर् बलिकिसु (क) क्रि.—झुका या झुकवा ।

बसर् बलकु (क) क्रि.—झुक, टेढ़ा हो ।

बसर् बलकुडि (क) सं.—डर, भीति ।

बसर् बलपल, बसर् बलपलिके (क) सं.—
बढ़ती, बढ़ना, वृद्धि ; बढ़ी आभा ।

बसर् बलल (क) सं.—मापने का साधन,
प्रस्थ ।

बसर् बलिल (तद्) सं.—बलिः (तत्) ; बेल,
लता ।

बसर् बललु (क) सं.—लियार, लोमड़ी ।

बसर् बल (क) क्रि.—जी, जीवित रह, जीवन
चला ।

बसर् बलके [बसर् बलके] (क) सं.—रुद्धि,
प्रयोग, उपयोग ।

बसर् बलकु (क) क्रि.—दे, बसर् ।

बसर् बलल, बसर् बलल, [बसर् बलल];

(क) क्रि.—थक जा, थकावट का अनुभव
कर, श्रान्त हो ।

बसर् बललिके, बसर् बललिके (क) सं.—
थकावट, श्रान्ति ।

बसर् बललके, बसर् बललके (क) सं.—
थकावट ।

बसर् बललु, बसर् बललिसु (क)
क्रि.—थकावट उत्पन्न कर, निश्चष्ट कर ।

बसर् बलसु, बसर् बलसु (क) क्रि.—विता,
व्यतीत कर उपयोग में ला ।

(१) बसर् बलि (क) सं.—मार्ग, रास्ता ;
जगह, स्थान ; सामीप्य ; पास होना ; साह-
चर्य ; ढंग, विधान ; क्रम ; वंश, जाति । अ.—
पाश्चात्, बाद को ; और ।

(२) बसर् बलि (क) सं.—उपहार, भेंट ;
स्वागत करनेवाला, निमंत्रण देनेवाला ; क्रि.—
दे, बसर् ।

बसर् बलिक, बसर् बलिक (क) अ.—दे,
बसर् (ह. क.) ।

बसर् बलिके (क) सं.—दे, बसर् ।

बसर् बलिलु (क) क्रि.—नीचे गिरा या
टपका ।

बसर् बललुकु (क) क्रि.—जी, जीवित रह ।

बसर् बांगि (अ. दे.) सं.—बहंगी (हिं.) ।

बसर् बांगल (क) सं.—आकाश-समुद्र,
आकाशगंगा ।

बसर् बांडु, बसर् बांडु (अ.दे.) सं.—
Bond (अंग्रेजी)—संबंध, सट्टा ; एक वाद्य
विशेष ।

बसर् बांडु (अ.दे.) सं.—बांध (हिं) ; बड़ा
पुल ; मंड ।

बसर् बांब (क) सं.—कुम्हार ; गड़रिया ।

बसर् बा, बसर् बायु (क) क्रि.—फूल, सृज
(सृजना) ।

बसर् बाकु (अ. दे.) सं.—छुरी, छुरा ।

बसर् बागल, बसर् बाकल, बसर्
बाकल, बसर् बागल, बसर् बागल (क)
सं.—द्वार, दरवाजा ।

बसर् बागि, बसर् बागे (क) सं.—शिवांगी
नामक वृक्ष, शिरीष वृक्ष ।

। बाबा ने बाळीवे, बापू बाळीवे बाबा ने
। बाळीवे (क) सं.—जीवन ।

बाहु

बाहु बाहु (क) क्रि. — दे. बाहु ।

बाहु बाहुक, बाहु बाहुक (क) सं. — तरकारी जो सुखायी गई हो और जिसमें मिर्च-मसाला डाला गया हो ।

बाहु बाहु (क) सं. — दे. बाहु; कृषि, जोताई ।

बाहु बिक (क) सं. — गर्व, घमंड, नाज ।

बाहु बिकण, बाहु बिकणि (तद्) सं. — व्यजन (तद्); पंखा ।

बाहु बिक (तद्) सं. — अन्नक; भृङ्ग, भौरा ।

बाहु बिकिण (क) सं. — एक पौधा विशेष ।

बाहु बिकिण (क) सं. — गगरी, छोटा घड़ा ।

बाहु बिंदु (सम्) सं. — जलकण, बूंद; बिंदी; निशान ।

बाहु बिंब (सम्) सं. — मण्डल; चन्द्रमा या सूर्य का मण्डल; मूर्ति; छाया, परछाई; दर्पण; घड़ा; कुंदरु; इन्द्रचाप; आकाश; वृष्टि, वर्षा; वस्त्र ।

बाहु बिह, बाहु बिह (तद्) सं. — व्यूह ।

बाहु बिकारि (अ. दे.) सं. — ('मिलारी' से) — मिश्रक ।

बाहु बिककु; बाहु बिकलु (क) सं. — हिचकी; तुतलाना; तुतलाहट ।

बाहु बिककुल (क) सं. — हिचकी; वमन ।

बाहु बिकके (तद्) सं. — भिक्षा ।

बाहु विनि (क) क्रि. — बांध, वश में कर; पकड़कर रख, कस; दृढ़ हो, बद्ध हो; घमण्डी हो । सं. — बन्धन, कसाव; लगाम । कमर की पट्टी; गर्व, घमण्ड ।

बाहु विगुह, बाहु विगिह, बाहु विगिणु (क) सं. — दृढ़ता, बन्धन, कसाव ।

बाहु बिच्चणिसु, बाहु बिच्चलिसु (क) क्रि. — फैला, विस्तार कर, व्याप्त कर; वर्णन कर ।

बाहु बिचत (क) सं. — विस्तार, फैलाव । वि. — विस्तृत, बड़ा ।

बाहु बिचरिके (क) सं. — विस्तार, फैलाना, फैलाव ।

बाहु बिचु (क) क्रि. — फैला, (गट्टा आदि) खोल, मुक्त कर; शिथिल कर; खुल जा ।

सं. — फैलाव, खोलना, खुलना ।

बाहु बिजयगेय (तद्) सं. — पधार, आगमन कर ।

बाहु बिज्जणिगे (तद्) सं. — व्यजन, पञ्चा ।

बाहु बिज्जु (क) सं. — खाऊ चिड़िया; नाश, विनाश ।

(१) बाहु बिज्जे (क) सं. — बड़प्पन, महानता ।

(२) बाहु बिज्जे (तद्) सं. — विद्या ।

बाहु बिट्ठल (क) वि. — बड़ा ।

बाहु बिट्ठि (क) अ. — मुफ्त, निशुल्क ।

बाहु बिट्ठे (क) सं. — दे. बाहु ।

बाहु बिट्ठेरु (क) सं. — भाला, बरछी ।

बाहु बिडिते, बाहु बिडिते (क) सं. — अन्तर, अवकाश, स्थान, मध्यान्तर; फुरसत; फुटकर ।

बाहु बिडिदि (क) सं. — यात्रियों के ठहरने का अस्थायी स्थान ।

बाहु बिडय (क) सं. — राशि, ढेर, भीड़; क्रोध, रोष; दया, दाक्षिण्य ।

बाहु बिडार (क) सं. — दे. बाहु ।

बाहु बिडि (क) क्रि. रू. — छोड़िए, त्यागिए, जाने दीजिए ।

बाहु बिडकु, बाहु बिडकु (क) सं. — अलग हुआ या टूटा हुआ ।

बाहु बिडिके, बाहु बिडिते (क) सं. — फुटकर, फुटकल; अंतर ।

बाहु बिडिसु (क) क्रि. — शिथिल कर, मुक्त कर, निकाल, छोड़ा, (समस्या आदि को) सुलझा ।

बाहु बिडु (क) क्रि. — छोड़, तज, त्याग, खोल, मुक्त कर, शिथिल कर, अलग कर, दूर हो; कम कर । शिथिलता, ढिलाई, खुलना; अलगवाव ।

बाहु बिडु (क) सं. — बहुत श्रमसाध्य कार्य ।

बाहु बिणिगे (क) सं. — एक पौधे का नाम ।

बाहु बिणिते (क) सं. — शक्ति, पराक्रम, जोर ।

बाहु बिणितु, बाहु बिणितु (क) सं. — बोझिल, भारी या बड़ा पदार्थ ।

बाहु बिणु (क) वि. — मोटा, बड़ा, भारी ।

बाहु बित्तर (तद्) सं. — विस्तार (तद्), फैलाव ।

बाहु बित्तरिसु (तद्) क्रि. — विस्तार कर, फैला, वर्णन कर ।

बाहु बित्त (क) सं. — बीज ।

बाहु बित्ति (तद्) सं. — पुस्तक; दीवार; आधार ।

बाहु बिस्तु (क) क्रि. — बीज बो । सं. — बीज ।

बाहु बिदर, बाहु बिदर (क) सं. — बाँस, वंश ।

बाहु बिदिगे (तद्) सं. — द्वितीया तिथि ।

बाहु बिदिर्, बाहु बिदिरु (क) क्रि. — तितर-बितर हो, चारों ओर फैल, विकीर्ण हो, फेंका जा; ढीला कर, ढीला हो । सं. — बाँस ।

बाहु बिदुर, बाहु बिदुरु (क) क्रि. और सं. — दे. बाहु ।

बाहु बिदण, बाहु बिदण, बाहु बिदिन, बाहु बिदिण, बाहु बिदि (क) सं. — न्योता, भोजन के लिए निमन्त्रण; त्योहार; भोज ।

बाहु बिनुगु (क) सं. — नीच, कमीना, पामर या तुच्छ पुरुष ।

बाहु बिन्नगे (क) अ. — अचानक ।

बाहु बिन्नण, बाहु बिन्नाण (तद्) सं. — विज्ञान (तद्); ज्ञान, जानकारी; कौशल, निपुणता, चातुर्य ।

बाहु बिन्नने (क) अ. — अचानक ।

बाहु बिन्नविसु (तद्) क्रि. — ('विज्ञापन' से) — विनय कर, प्रार्थना कर, निवेदन कर ।

बाहु बिन्नह, बाहु बिन्नप (तद्) सं. — विनय, प्रार्थना, निवेदन ।

बाहु बिपण्ड, बाहु बिपण्ड (क) सं. — चिड़ियों की चहचहाहट ।

बिम्बु गं विम्बने बिम्बु गं विम्बने(क) अ.—
दृढतापूर्वक, कसकर, जोर से, बलपूर्वक ।
बिम्बु गं विम्बनिसि (क) सं.—गर्भवती स्त्री ।
बिम्बु विम्बु (क) वि.—बड़ा । सं.—बड़प्पन;
गर्व ।
बिम्बु गं विम्बग, बिम्ब गीग (क) सं.—
ताला ।
बिम्बु विम्बु, बिम्बु विम्बु (क) सं.—टूटा
हुआ भाग, संधि, जोड़, दरार ।
बिम्बु विम्बु, बिम्बु विम्बु (क) सं.—दरार,
फटन ।
बिम्बु विम्बु (क) क्रि.—फट जा, टूट जा; चटक ।
खिल, प्रस्फुटित हो, खुल; चीर; दरार
पड़; गाड़ी का वेग रुक । सं — प्रस्फुटन,
फटन, दरार ।
बिम्बु विम्बु, बिम्बु विम्बु (क) सं.—काग,
बोतल का डट्टा; घुंटी, वीणा के तार कसने
की कील ।
बिम्बु विम्बु, बिम्बु विम्बु (क) सं.—कठो-
रता, दृढता, रूक्षता; अकोमलता, सुलायम
न होना, कड़ा होना ।
बिम्बु विम्बु बिम्बु विम्बु (क) सं.—दृढता;
कसाव; रूक्षता, रूखापन; निष्ठुरता ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—दृढता, कठोरता,
रूक्षता ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—दे. बिम्बु.
बिम्बु बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) अ.—
शीघ्र, तुरंत, तेजी से ।
१) बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—वेच, विक्रय कर;
खरीद ।
२) बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु
(क) सं.—धनुष, कमान ।
बिम्बु बिम्बु (सम्) सं.—बिल, सुराख,
छेद ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—बिल्व वृक्ष ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—दे. बिम्बु सं.—
एक छोटा वृक्ष जिसके फूल लाल होते हैं ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु बिम्बु बिम्बु
[गल गार] (क) सं.—तीरंदाज़, धन्विन् ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—भू, भौंहे ।

बिम्बु बिम्बु (अ. दे.) सं.—बिम्बु ।
बिम्बु बिम्बु (सम्) सं.—बिल्व वृक्ष ।
बिम्बु बिम्बु (तद्) सं.—कमल ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु
बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—धूप,
आतप ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—
फेंक; दूर हटा । —बिम्बु बिम्बु=फेंकना ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) वि.—गरम,
उष्ण ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—सामीप्य संबंध,
जुड़ना, दृढता से मिलना; टाँका ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—फेंकना ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—दे. बिम्बु.
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) सं.—उष्णता, गरमी ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—
धूप ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु
(क) वि. और अ.—सफेद ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु,
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—
सफेदी, सफेद रंग ;
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु
बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, (क) क्रि.—गिर पड़,
गिर; हाथ से छूट; पतित हो ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—
पेड़ों की जटाएँ ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—गिरा, गिरवा ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—गिर पड़; गिरा ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—समाप्त हो, अंत हो, पतित
हो, विनष्ट हो, मर ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—ताला; समधी ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) सं.—
समधिन ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—पीछे हट; झिझक;
मोटा हो, स्थूल हो; फूल जा ।
बिम्बु बिम्बु (सम्) सं.—बीज; मूल ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—काली
लकड़ीवाला एक पेड़; दरार, फटन ।

बिम्बु बिम्बु (क) सं.—पड़ाव, शिबिर;
घर ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—ठहरना, शिबिर,
पड़ाव; स्थान, घर; ढेर, राशि; भीड़;
वेकार भूमि, व्यर्थता ।
बिम्बु बिम्बु (तद्) सं.—बीधि: (तद्); मार्ग,
रास्ता, सड़क ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (सम्) वि.—घृणित; निष्ठुर,
भयानक; बर्बर ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (सम्) वि.—दे. बीभत्स;
सं.—अर्जुन का नाम ।
बिम्बु बिम्बु (तद्) सं.—वीर पुरुष, योद्धा;
वीरभद्र ।
बिम्बु बिम्बु (तद्) सं.—गढ़रिये की स्त्री ।
बिम्बु बिम्बु (अ. दे.) सं.—अलमारी ।
बिम्बु बिम्बु, (अ. दे.) बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—
स्वेच्छा से प्रदान कर; सानंद वितरण कर;
फेंक (जैसे देला, बाण आदि) ।
बिम्बु बिम्बु (क) सं.—रसोई का बर्तन, उप-
करण विशेष ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क)
सं.—व्यजन, पंखा ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) सं.—अंत, विनाश ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—पिसवा; चूर्ण करा
या करवा, चक्की चलवा ।
बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—पीस, चूर्ण कर, चक्की
चला; (जाल) फेंक ।
बिम्बु बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) सं.—(पीसने)
की चक्की ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु, बिम्बु
बिम्बु (क) क्रि.—गिर, गिर पड़, पतित
हो; छूट, खिसक जा । सं — गिरना,
गिराव; वह जो नीच या घुरा हो; व्यर्थ,
वेकार; (लिखने में) गलती; बीमारी के
कारण गिर पड़ना; छोटना ।
बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु (क) सं.—
दे. बिम्बु.
बिम्बु बिम्बु बिम्बु, बिम्बु बिम्बु बिम्बु (क) क्रि.—
गिरा; पतित कर ।

बिंध्यु ब्रीडल, बिंध्यु ब्रीडल (क) सं.
—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु बुक, बिंध्यु बुक (क ?) सं.—हृदय,
कलेजा ।
बिंध्यु बुगारि, बिंध्यु बुगारि (क) सं.—बेर
का पेड़ ; लट्टू ।
बिंध्यु बुगुटि, बिंध्यु बुगुड (क) सं.—
सूजन, फूलना ।
बिंध्यु बुगि (क) सं.—गाल, कपोल ।
बिंध्यु बुगे (क) सं.—सोता, स्रोत ; फौवारा ।
बिंध्यु बुट्टि, बिंध्यु बुट्टे (क) सं.—टोकरा,
टोकरा ।
बिंध्यु बुद (तद्) सं.—बुध्नः (तत्), बर्तन की
तली, तल ।
बिंध्यु बुदकट्ट (तद्) सं.—वंश, कुल,
कुटुंब, परिवार ।
बिंध्यु बुदमे, बिंध्यु बुदमे (क) सं.—
एक प्रकार का खीरा ।
बिंध्यु बुदिके (क) सं.—छोटा
हमर ।
बिंध्यु बुडि (क) सं.—(शीशे का) बोतल ;
कुपी ।
बिंध्यु बुइ (क) सं.—सूजन ।
बिंध्यु बुत्ति (तत्) सं.—भुक्तिः (तत्) ; आहार,
भोजन ।
बिंध्यु बुदुद (तत्) सं.—बुदुदः
(तत्) ; बबूला ।
बिंध्यु बुद (सम्) वि.—जाना हुआ, समझा
हुआ ; बुद्धिमान, पंडित । सं.—गौतम
बुद्ध ; जैन या बौद्ध धर्म का संन्यासी ।
बिंध्यु बुद्धि (सम्) सं.—मति, धीशक्ति,
समझ, विवेक, ज्ञान । — नंड वन्त
(सम्) सं.—बुद्धिमान नंडवंत वन्तलु =
बुद्धिमती स्त्री ।
बिंध्यु बुध्न (सम्) सं.—तल, नीचे का
भाग, बर्तन की तली, तलुवा, औन्नत्य
बिंध्यु बुधुधे (सम्) सं.—भूख ।
बिंध्यु बुरकि, बिंध्यु बुरकि (अ. दे.) सं.—
बुरका (अरबी) ।

बिंध्यु बुरगल, बिंध्यु बुरगल (क) सं.
—भुना हुआ चावल ।
बिंध्यु बुरगु (क) सं.—फेन ; एक अनु-
करणमूलक शब्द ।
बिंध्यु बुरुडे, बिंध्यु बुरुडे, [बिंध्यु
बुरुडे, बिंध्यु बुरुडे] (क) सं.—खोपड़ी,
गोल बर्तन, शीशा, चिमनी (Chimney),
खोखला ।
बिंध्यु बुरुदे (क) सं.—पंक, कीचड़, दल-
दल ।
बिंध्यु बुरुलि, बिंध्यु बुरुलि, बिंध्यु बुलि
(क) सं.—लवा, बटेर ।
बिंध्यु बुरुडि (क) सं.—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु बुव (क) सं.—भात, चावल, खाना
(बच्चों की भाषा में) ।
बिंध्यु बुसुगुट्ट (क) क्रि.—फुफकार ।
बिंध्यु बुदि (अ. दे.) सं.—बूंदी, एक मिठाई ।
बिंध्यु बुचि (क) सं.—कीड़ा, कीट ; मूत्र
(बच्चों की भाषा में) ।
बिंध्यु बुजु, बिंध्यु बुजे, बिंध्यु बुदे, बिंध्यु
बुसि, बिंध्यु बुसु (क) सं.—सड़ाव, सड़ना,
फिसी चीज के सड़ने पर ऊपर दीखनेवाला
सफेद अंश ।
बिंध्यु बुटक, बिंध्यु बुटाट (क) सं.—
दिखावट, फरेब, कपट, बाह्याङ्कुर ।
बिंध्यु बुटाटिके (क) सं.—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु तु (क) सं.—अश्लील बात ; निर्ल-
ज्जता । — ग (क) सं.— निर्लज्ज
पुरुष ।
बिंध्यु बुदि, [बिंध्यु बुद] (तद्) सं.—भूनिः
(तत्) ; भस्म, राख ।
बिंध्यु बुदु (तत्) वि.—सफेद । — कंबुध
कुंबल = सद रंग का कुम्हड़ा ।
बिंध्यु बूर, बिंध्यु बूरग, बिंध्यु बूरग,
बिंध्यु बूरगे (क) सं.—शालमली वृक्ष
(The silk collon tree) ।
बिंध्यु बूव (क) सं.—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु बुद (सम्) सं.—बुंद, समूह ।
बिंध्यु बुदित (सम्) वि.—उगा हुआ, बढ़ा
हुआ ; गर्जता हुआ ।

बिंध्यु बृहत्, बिंध्यु बृहत् (सम्) वि.—
—बड़ा, बड़ा भारी, विशाल, चौड़ा ।
बिंध्यु बें (क) वि.—गरम, उष्ण (समास में)
सं.—पीठ ।
बिंध्यु बेंकि, बिंध्यु बेंके (क) सं.—भाग, अग्नि ;
उष्णता ।
बिंध्यु बेंगाडु (क) सं.—मरुभूमि, रेगि-
स्तान ।
बिंध्यु बेंचे (क) सं.—छोटा सरोवर ।
बिंध्यु बेंदु, बिंध्यु बेंदु, बिंध्यु बेंदु (क)
सं.—शिकार, आखेट ।
बिंध्यु बेंडु (क) सं.—निस्सार वस्तु, हलकी
लकड़ी, हलकी चीज ।
बिंध्यु बेंडे (क) सं.—भिंडी ।
बिंध्यु बेंडेकु (क) सं.—एक प्रकार का
सागौन वृक्ष ।
बिंध्यु बेंकस (क) सं.—विस्मय, आश्चर्य ।
बिंध्यु बेंकु (क) सं.—बिल्ली, मार्जाल ।
बिंध्यु बेंगडु (क) क्रि.—चकित हो, घबड़ा ।
सं.—आश्चर्य, भीति, घबराहट ।
बिंध्यु बेंगर्, बिंध्यु बेंगल् (क) सं.—
भीति, घबराहट ; आश्चर्य ।
बिंध्यु बेंचगे, बिंध्यु बेंचने (क) अ.—गरम,
उष्ण ।
बिंध्यु बेंचर (क) सं.—वेग, तेजी, अमण,
विस्मय, भीति ।
बिंध्यु बेंचलिसु (क) क्रि.—अमित हो,
चकित हो ; घबड़ा जा ।
बिंध्यु बेंचिगे (क) वि.—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु बेंचु (क) क्रि.—घबड़ा जा, चकित हो ।
सं.—चकित होना, घबराहट ; दृढ़ संबंध
या संयोग ।
बिंध्यु बेंजर (क) सं.—दे. बिंध्यु.
बिंध्यु बेंजे (क) सं.—चढ़ाहाहट ।
बिंध्यु बेंह (क) वि.—मजबूत, दृढ़, कठोर,
कड़ा । सं.—पहाड़, पर्वत ।
बिंध्यु बेंदु (क) वि.—कठिन, कर्कश, कठोर,
दृढ़ । सं.—पहाड़, पर्वत ; चोट ; मुहर लगाने
का उपकरण । क्रि.—घुसेड़, बलपूर्वक
प्रवेश करा ; मुहर लगा ; धाक जमा ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दे. ३४
नमो.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — वड़, उपज हो, फसल
हो। सं. — वड़ना; फसल, उपज।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — दे. ३४.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — डर जा; भीत
हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — हिलना, कौपना,
कपन, चंचलता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — प्रकाश, चमक, जग-
मगाहट।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — सफेद रंग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — गोरा आदमी; भोला
मनुष्य, साधु मनुष्य।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) वि. — सफेद।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — जाल, फंदा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — चाँदी।

(२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — पक
जा, बन, तैयार हो।

(२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — याचना की ध्वनि। क्रि.
— याचना कर, माँग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — कामातुरता, इन्द्रिय-
सुख; चाह, अनुराग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकारी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकार, आखेट, मृगया।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकार।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दीन व्यक्ति, याचक।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — चाहिए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — मूर्ख, बेवकूफ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — वेग से, शीघ्र, जल्दी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — छेद, रंध्र, विल;
अश्रक।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — जासूसी।
— छोर कार = गुप्तचर, जासूस।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — संताप, मनस्ताप,
दुःख।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — आग, गरमी, दावाग्नि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — विरह; कामातुरता,
इन्द्रिय-सुख।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकार, आखेट; आखेट-
का प्राणी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकारी, शिकार
खेलनेवाला।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शिकारी, किरात या शबर
जाति का व्यक्ति। अ. — नहीं, मत।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — व्याघ्रिन, शबर स्त्री।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — बेड़ी (हिं.)।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — माँग, याचना कर।
सं. — किरातों का समूह।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — याचना, माँग, प्रार्थना।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — वेताल: (तत्)।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — रोग, बीमारी, दर्द।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — व्यापारी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. —
पका, खाना बना, रसोई कर।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — पेड़-पौधों
की जड़ या मूल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — कंद-मूल बेचनेवाला।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — पृथक, अलग।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — पृथकता,
अलगाव।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — दे. ३४.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — कपिल,
कैथ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — बाढ़, झाड़ियों की
आड़।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — चिंता, विकलता,
व्याकुलता।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — नीम का पेड़।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — ग्रीष्म ऋतु, गरमी का मौसम।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — ग्रीष्म ऋतु, गरमी का मौसम।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — उदास हो,
थक जा, ऊब जा, मन में आलस्य हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — उवाई,
उदासी, बेजार होना।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) अ. — चाहिए। सं. — जासूसी।
— छोर कार, छल कार (क) सं. — जासूस,
गुप्तचर।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — हवि (अग्नि में)। ल।
सं. — गड़बड़ी, भ्रम, घबराहट; पागलपन।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — इच्छा, अभिलाषा;
असंगल वार्ता; आग में मनुष्य का नाश,
नरयज्ञ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — दे. ३४.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — आहुति; अँति,
भ्रम, गड़बड़ी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दाल; द्विदल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — दे. ३४.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — बैरागी, वीतरागी।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — सिनेमा,
फिल्म।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) क्रि. — झूठ बोल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — गोंद; वृक्षों का
रस।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — शरीर, देह; रस्सी
का गट्टा।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — दिये का पात्र,
पुतली जिराके जुड़े हाथों पर दीपक रखा
जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — बौंस, वंश।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — बौंस, वंश।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — छोटा
ढोल।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — गुड़िया, पतली।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — जेब; सिखारी की
झोली, थैली।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — फुसी, छोटा फोड़ा,
बुदबुदा; छोटा विल जो चूहे द्वारा बनाया
गया हो।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — अंजलि।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — अंजलि।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय (क) सं. — अंजलि।

भीरगं बोगल, भीरगं बोगल (क) क्रि.
भूक; बक बक कर ।
भीरगं बोगिसु (क) क्रि. — छुका, टेढ़ा
कर ।
भीरगं बोगु (क) क्रि. — टेढ़ा हो, छुक ।
सं. — टेढ़ापन, छुकाव ।
भीरगं बोगु (क) सं. — ऊन, कोमल रोम ।
वि. — पोपला, दंतहीन ।
भीरगं बोजु, भीरगं बोजे (क) सं. —
तोड़ ।
भीरगं बोट्ट (अ. दे.) सं. — अंगुली, पैर
की अंगुली; अंगुली का परिमाण, छोटा परि-
माण; बूंद । (तद्) सं. — वृत्त; तिलक ।
भीरगं बोट्टि, भीरगं बोट्टे (क) क्रि. — मार,
पीट ।
भीरगं बोट्टे (क) सं. — छिलका, पेड़ों का
छाल ।
भीरगं बोट्टि, भीरगं बोट्टे (क) सं. — बुलबुला ।
भीरगं बोट्टे (क) सं. — फफोला, छाला;
कोलाहल, कलकल, चीख पुकार ।
भीरगं बोट्टे (क) सं. — ब्रह्मा (तत्) ।
भीरगं बोट्टे (क) क्रि. — गाली दे, निंदा
कर । सं. — गाली, निंदा । भीरगं बोट्टे
बोट्टे (क) सं. — गाली, निंदा । भीरगं बोट्टे
बोट्टे (क) क्रि. — गाली दे, निंदा कर ।
— बोट्टे = निंदा ।
भीरगं बोरल (क) सं. — झाड़ू, बुहारी । अ.
— उल्टा ।
भीरगं बोरल (क) अ. — 'बोसक,
आवाज' के साथ ।
भीरगं बोरल (क) वि. — हल्का, जो भारी
न हो ।
भीरगं बोरल (क) सं. — लेपन-कार्य, लगाना ।
भीरगं बोरल, भीरगं बोरल (क) सं. —
साधारणतया चने के आटे से बनायी जाने-
वाली एक नमकीन खाने की चीज़ ।
भीरगं बोरल (क) सं. — बर्तन का टूटा हुआ
भाग ।

भीरगं बोगल (क) सं. — निंदा, गाली
(ग्रा.) ।
भीरगं बोट (क) सं. — दन्तहीन पुरुष, पोपले
मुँह का आदमी ।
भीरगं बोट्टि (क) सं. — दन्तहीन स्त्री; वह
स्त्री जिसके सिर के बाल मुँहाये गये हो ।
भीरगं बोट्टे, भीरगं बोट्टे (क) सं.
— कारनीस, खम्भे के ऊपर रखने का पत्थर
या लकड़ी ।
भीरगं बोट्टे (क) सं. — फूलना, पर अंदर
या सार न होना, (जैसे फूला बगन, खीर
आदि) ।
भीरगं बोट्टे, भीरगं बोट्टे (क) सं. —
जताना, समझाना, ज्ञापन ।
भीरगं बोन (क) सं. — भात, पकाया गया
चावल ।
भीरगं बोनगरे (क) सं. — एक कण्टीला
पौधा ।
भीरगं बोन, भीरगं बोन (क) सं. —
चूहे आदि को फंसाने का फन्दा ।
भीरगं बोर (क) सं. — दे- भीरगं ।
भीरगं बोरल, भीरगं बोरल, भीरगं बोरल
बोरल, भीरगं बोरल (क) अ. — उल्टा ।
(१) भीरगं बोर (क) सं. — टीला, पहाड़ी ।
(२) भीरगं बोर (तद्) सं. — बदारी (तत्);
बेर का पेड़ ।
भीरगं बोर, भीरगं बोर (क) सं. — एक
जाति, कहार ।
भीरगं बोल (क) सं. — एक प्रकार का
धनुष; मृत्यु, मरण ।
भीरगं बोल, भीरगं बोल (क) सं. — मुण्डित
सिरवाला ।
भीरगं बोलि, भीरगं बोलि (क) सं. —
मुण्डित सिरवाली ।
भीरगं बोलिसु (क) क्रि. — सिर मुँह ।
भीरगं बोल, भीरगं बोल (क) वि. —
मुण्डा हुआ ।
भीरगं बोल (क) सं. — एक प्रकार का बाण;
मुण्डित होने की स्थिति ।

भीरगं बौद्ध (सम्) वि. — बुद्धि से संबन्धित;
बुद्ध से संबन्धित । सं. — बौद्ध धर्म की अनु-
यायी; विष्णु का एक अवतार ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — परमात्मा, परब्रह्म;
वेद; स्तुति की एक ऋचा; आगम; ज्ञान,
सुज्ञान, ब्रह्मविद्या; शुद्धचरित्र; मुक्ति,
मोक्ष; तप, तपस्या; ओदन. अन्न; वस्तु;
धन, संपत्ति; विप्र, ब्राह्मण; परमार्थ जानने
वाला; सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा; विष्णु; शिव;
सूर्य; प्रतिभा; प्रधान, मुख्य ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्मचारी
का व्रत, चार आश्रमों में प्रथम ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — एक नदी का
नाम; एक प्रकार का विष ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्राह्मणों के
रहने का नगर; प्राचीन विद्या-केंद्र ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्मांड द्वार,
मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — वेद और
वेदांत ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — वीणाविशेष ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्मा की शक्ति;
सरस्वती ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्माण्ड ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्महत्या (तत्)
— वह जिसने ब्राह्मण को मार दिया हो;
पापी, हत्यारा ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्राह्मण;
करनेवाला, ब्रह्मवादि; अग्नि ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्राह्मणत्व ।
भीरगं बूह (सम्) सं. — ब्रह्मा की मूर्ति-
मती शक्ति; सरस्वती; वाणी; कहानी,
कथा; धर्मानुष्ठान; दुर्गा; रोहिणी नक्षत्र;
ब्राह्मण की पत्नी, एक पौधा विशेष ।

३० भ

३० भ — कलह-वर्णमाला का अड़तीसवाँ अक्षर;
पर्वण का चौथा व्यंजन ।
३० भं, ३० भं (क) सं. — शब्द की ध्वनि ।

ध००८ भंग

ध००८ भङ्ग (सम्) सं.—टूटने का भाव ; दरार ; पृथक्ता ; टुक, अंश, हिस्सा, पतन, नाश ; भगदड़ ; पराजय ; असफलता, अस्वीकृति ; रुकावट ; गड़बड़ी ; प्रतिबन्ध, स्थगित करना ; फेर, मोड़ ; सिकुड़न झुकाव ; गमन ; लकवा रोग ; छल, धोखा ; नहर जलमार्ग ।

ध००८० भगार (तद्) सं.—दे. bhagad.

ध००८१ भंगि (सम्) सं.—भंग करना ; छल, धोखा ; रूप, आकार ; ढंग, प्रकार ।

ध००८२ भंगिसु (सम्) क्रि.—तोड़, भंग कर ; विनष्ट कर ।

ध००८३ भंड (सम्) सं.—भाँड़, हँसोड़ा, विदूषक ; वर्णसंकर जाति विशेष ।

ध००८४ भंडन (सम्) सं.—कवच ; लड़ाई, युद्ध ; दुष्टता, उपद्रव ।

ध००८५ भंडार (सम्) सं.—भण्डार, भाँडा-गार ।

ध००८६ भंडारि (सम्) सं.—भाँडागार की देखरेख करनेवाला, कोशाध्यक्ष ।

ध००८७ भंडिल, ध००८८ भंडीर (सम्) वि.—अच्छा, समृद्ध, शुभ, मंगलकारी, भाग्य-शाली । सं.—सौभाग्य, आनंद ; दूत ; कलाकार, कारीगर ।

ध००८९ भक्तुति (तद्) सं.—भक्ति : (तत्) ।

ध००९० भक्त (सम्) वि.—विभक्त, विभाजित, बाँटा, हुआ, खंड किया हुआ । सं.—भक्त, पूजक, उपासक । ध००९१ भक्ते—स्त्री. लिं. ।

ध००९२ भक्ति (सम्) सं.—पृथक्ता, भिन्नता ; सेवा, पूजन ; ईश्वरानुराग ।

ध००९३ भक्ष (सम्) सं.—घी या तेल में तला हुआ खाद्य पदार्थ, भोज्य पदार्थ ।

ध००९४ भक्षण (सम्) सं.—ध००९५ भक्षण—खाना ।

ध००९६ भक्षिसु (सम्) क्रि.—खा, भक्षण कर ।

ध००९७ भक्ष्य (सम्) सं.—दे. भक्ष ; जल, पानी ।

ध००९८ भगंदर (सम्) सं.—एक रोग ; एक ऋषि का नाम ।

ध००९९ भगवति (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ; लक्ष्मी ।

ध०१०० भगिनीपति (सम्) सं.—बहनोई ।

ध०१०१ भग्न (सम्) वि.—टूटा हुआ ; विनष्ट ; निराश किया हुआ ।

ध०१०२ भजन, ध०१०३ भजने (सम्) सं.—भजन, सेवा, पूजा ; खण्ड ।

ध०१०४ भजिसु (सम्) क्रि.—भजन कर, उपासना कर ।

ध०१०५ भट (सम्) सं.—योद्धा, सिपाही, वीर ।

ध०१०६ भट्ट (सम्) सं.—विद्वान, पंडित, दार्शनिक ; उपाधि विशेष ; परंपरागत नाम ।

ध०१०७ भट्टिनि, (सम्) सं.—ऊँचे पद की स्त्री ; सम्राज्ञी, महारानी ।

ध०१०८ भद्र (सम्) वि.—शुभ, मंगलकारी, अच्छा, सुन्दर ; आनन्दकारी ; श्रेष्ठ, श्लाघ्य । सं.—प्रसन्नता, सौभाग्य ; साँड़, बैल ; सोना ; छेदन ; एक वाद्य विशेष ; जागरूकता, सावधानी । ध०१०९ भद्रवागिरु = सावधान रहो ।

ध०११० भद्रकालि, ध०१११ भद्रकालि (सम्) सं.—शिव की शक्ति, काली, पार्वती, दुर्गा ।

ध०११२ भद्रासन (सम्) सं.—सुन्दर आसन, सिंहासन ।

ध०११३ भप्परे (अ. दे. ?) सं.—बाप रे ! अच्छा ! शाबाश !

ध०११४ भय (सम्) सं.—भय, डर, भीति ।

ध०११५ भयानक (सम्) वि.—डरावना भयावह । सं.—भय, डर ; भयानक रस ।

ध०११६ भरक् (क) सं.—घास काटते समय आनेवाली ध्वनि ।

ध०११७ भरणि (सम्) सं.—एक नक्षत्र का नाम ।

ध०११८ भरत (सम्) सं.—नट, अभिनेता ; भरतमुनि ; नाट्यशास्त्र ; राम के भाई भरत ; शकुन्तला और दुष्यन्त के पुत्र का नाम ; अग्नि ; पहाड़ी ; मनुष्य ; ज्वार, समुद्र-प्रवाह ।

ध०११९ भरतखंड, ध०१२० भरतवर्ष (सम्) सं.—भारत, हिन्दुस्तान ।

ध०१२१ भरद्वाज (सम्) सं.—एक ऋषि का नाम ; भरतपक्षी ।

ध०१२२ भरवस, ध०१२३ भरवसे (अ. दे.) सं.—भरोसा, विश्वास ।

ध०१२४ भरित (सम्) वि.—भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, परिपूर्ण ।

ध०१२५ भरुक (सम्) वि.—भुना हुआ मांस ।

ध०१२६ भरत, ध०१२७ भरतार, ध०१२८ भरतु, ध०१२९ भरतु (सम्) सं.—पति, प्रभु, स्वामी, रक्षक ।

ध०१३० भरत्सन (सम्) सं.—भरत्सना, फटकार, धमकी, डाँटडपट ।

ध०१३१ भरम्य (तद्) सं.—भर्मम् (तत्) ; सोना, सुवर्ण ।

ध०१३२ भररे, ध०१३३ भररे, ध०१३४ भररे, ध०१३५ भररिरे (क) अ.—अच्छा ! खूब ! शाबाश !

ध०१३६ भरतक, ध०१३७ भरतकि (सम्) सं.—मिलावे का पेड़ ।

ध०१३८ भरलक (सम्) सं.—रीछ, भालू ।

ध०१३९ भरव (सम्) वि.—पैदा हुआ, उत्पन्न । सं.—जन्म, उत्पत्ति ; पुनर्जन्म ; जीवन ;

सांसारिक अस्तित्व, संसार ; शिव ; स्वास्थ्य ; श्रेष्ठता, उत्कृष्टता ।

ध०१४० भरवदीय (सम्) वि.—आपका ।

ध०१४१ भवारि (सम्) सं.—कामदेव ।

ध०१४२ भवितव्य (सम्) सं.—होनहार, भाग्य, भावी ।

ध०१४३ भविसु (सम्) क्रि.—हो, संभव हो, कारण हो ।

ध०१४४ भव्य (सम्) वि.—उचित, योग्य, अच्छा, उत्कृष्ट, सुन्दर, शुभ, भाग्यवान, प्रसन्न । सं.—शुभपरिणाम ; मुक्तजीव ।

ध०१४५ भसित (सम्) सं.—राख, भस्म ।

ध०१४६ भांड (सम्) सं.—बर्तन ; पेटी ; कोई भी औज़ार या यंत्र ; बाजा ; माल, सामान ; माल की गाँठ ; बहुमूल्य सामान ; नदीगर्भ ; भाड़पन, मस्खरापन ।

ॐॐॐॐॐॐ मांडागार (सम्) सं.—भांडार ; धनागार ।

ॐॐॐॐॐॐ भाग (सम्) सं.—भाग, अंश, हिस्सा ; वंशवारा ; भाग्य ; चतुर्थांश ; स्थान, जगह ।
ॐॐॐॐॐॐ भागधेय (सम्) सं.—हिम्सा, भाग ; भाग्य, सौभाग्य, संपत्ति, आनन्द ; कर ; अर्थागम ।

ॐॐॐॐॐॐ भागि (सम्) वि.—भागोंवाला ; भाग-लेनेवाला, संबंधी ; अधिकारी, मालिक ; भाग्यवान् ।

ॐॐॐॐॐॐ भागीदार (सम्) सं.—हिस्सेदार ; साझेदार ।

ॐॐॐॐॐॐ भागीरथि (सम्) सं.—गंगा, भागी-रथी ।

ॐॐॐॐॐॐ भाग्य (सम्) सं.—प्रारब्ध, किस्मत ; सौभाग्य, समृद्धि ; हर्ष, कुशलता । —
ॐॐॐॐॐॐ वंत = भाग्यवान् पुरुष ।

ॐॐॐॐॐॐ भाग्ये (सम्) सं.—भाग्यवती स्त्री ।

ॐॐॐॐॐॐ भाट, ॐॐॐॐॐॐ भाटक (सम्) सं.—
ॐॐॐॐॐॐ बाढगे ॐॐॐॐॐॐ बाढिगे,—किराया, भाड़ा, मजदूरी ।

ॐॐॐॐॐॐ भाद्रपद (सम्) सं.—भादों का महीना ।

ॐॐॐॐॐॐ भानु (सम्) सं.—प्रकाश की किरण ; सूर्य ; प्रभु, राजा ; बारह की संख्या का द्योतक ; एक छन्द ।

ॐॐॐॐॐॐ भाम (सम्) सं.—क्रोध, रोष ; आभा, चमक ; सूर्य ; वहनोई ।

ॐॐॐॐॐॐ भामा, ॐॐॐॐॐॐ भासे (सम्) सं.—
ॐॐॐॐॐॐ भामिनी, क्रोधना स्त्री ; सुन्दरी स्त्री ; राधा का नाम (मै. प्र.) ।

ॐॐॐॐॐॐ भार (सम्) सं.—बोझ : भारीपन, अतिशयता ; बड़ी मात्रा ; तौल विशेष ।

ॐॐॐॐॐॐ भारत (सम्) सं.—भरतवंशज ; भार-तवर्ष, हिन्दुस्तान ; महाभारत (ग्रंथ) ।

ॐॐॐॐॐॐ भारति (सम्) सं.—सरस्वती ; विद्वान् पुरुष ।

ॐॐॐॐॐॐ भार्गव (सम्) सं.—शुक्राचार्य ; पर-शुराम ।

ॐॐॐॐॐॐ भार्या, ॐॐॐॐॐॐ भार्ये (सम्) सं.—पत्नी ।

ॐॐॐॐॐॐ भाल्लक (सम्) सं.—रीछ, भाल् ।
ॐॐॐॐॐॐ भाव (सम्) सं.—अस्तित्व ; घटना, होना ; दशा, अवस्था ; पद, ओहदा ; वास्तविकता ; स्वभाव, हावभाव, आचरण ; भावना ; मन, आत्मा, हृदय, परमात्मा ; वहनोई ('भामः' का तद्) ।

ॐॐॐॐॐॐ भावकि (सम्) सं.—सौंदर्यप्रिय स्त्री ।

ॐॐॐॐॐॐ भावज (सम्) सं.—कामदेव, प्रेम ।

ॐॐॐॐॐॐ भावने (सम्) सं.—भावना, विचार, कल्पना ।

ॐॐॐॐॐॐ भावि (सम्) सं.—भावी, भविष्य, होन-हार, भाग्य ।

ॐॐॐॐॐॐ भाषांतर (सम्) सं.—अनुवाद, तर्जुमा ।

ॐॐॐॐॐॐ भाषे (सम्) सं.—भाषा ; वाणी ; वचन, वादा ।

ॐॐॐॐॐॐ भास्कर (सम्) सं.—सूर्य ; बारह की संख्या ; एक छंद का नाम ; कई व्यक्तियों का नाम ।

ॐॐॐॐॐॐ भाळलोचन, ॐॐॐॐॐॐ भाळविलोचन (सम्) सं.—शिवजी ।

ॐॐॐॐॐॐ भिक्षात्र (सम्) सं.—भिक्षा-से प्राप्त खाना, भीख ।

ॐॐॐॐॐॐ भिक्षुक (सम्) सं.—भिक्षुक, भिखारी ।

ॐॐॐॐॐॐ भिक्षुकि (सम्) सं.—भिखारिन ।

ॐॐॐॐॐॐ भित्ति (सम्) सं.—दीवार ; टुकड़ा ; टूटी हुई वस्तु, तोड़ना, चीरना, विभाजित करना ।

ॐॐॐॐॐॐ भिन्न (सम्) वि.—टूटा हुआ, चीरा हुआ ; पृथक, अलग, भिन्न ।

ॐॐॐॐॐॐ भीकर (सम्) वि.—भयंकर, डरावना ।

ॐॐॐॐॐॐ भीति (सम्) सं.—भय, डर ; खतरा ।

ॐॐॐॐॐॐ भीम (सम्) वि.—भयंकर, भयावह । सं.—शिव, रुद्र ; यम ; भीमसेन ; वीर-पुरुष, भट ; कन्नड-बसवपुराण के कर्ता का नाम ।

ॐॐॐॐॐॐ भीरु, ॐॐॐॐॐॐ भीरुक (सम्) वि.—भयभीत, डरपोक ।

ॐॐॐॐॐॐ भीषण (सम्) वि.—भयंकर, भया-नकर स ।

ॐॐॐॐॐॐ भीष्म (सम्) वि.—भयंकर । सं.—गांगेय, भीष्म पितामह ।

ॐॐॐॐॐॐ भीष्मसु (सम्) सं.—गंगाजी ।

ॐॐॐॐॐॐ भुजिसु (सम्) क्रि.—खा, भोजन कर ।

ॐॐॐॐॐॐ भुक्त (सम्) वि.—खाया हुआ । सं.—खाना, भोजन ।

ॐॐॐॐॐॐ भुक्ति (सम्) सं.—भोजन, खाना, आहार ; उपभोग ।

ॐॐॐॐॐॐ भुज (सम्) सं.—मुजा, बाहु ; मोड़ ; घुमाव ।

ॐॐॐॐॐॐ भुजग, ॐॐॐॐॐॐ भुजंग, (सम्)—सं.—साँप ; जार ।

ॐॐॐॐॐॐ भुजमध्य (सम्) सं.—छाती ।

ॐॐॐॐॐॐ भुवन (सम्) सं.—जगत, लोक ; चौदह की संख्या ।

ॐॐॐॐॐॐ भू (सम्) सं.—भूमि, पृथ्वी, जमीन, ज़िला, देश । — ॐॐॐॐॐॐ जात (सम्) सं.—पेड़ । — ॐॐॐॐॐॐ जाते (सम्) सं.—सीता ।

ॐॐॐॐॐॐ भूत (सम्) वि.—विगत, बीता हुआ, भूत ; प्राप्त, उपलब्ध, उचित, योग्य, सदृश, समान । सं.—भूत ; प्रेत, राक्षस ; तत्व ; वास्तविक घटना ; भूतकाल ; संसार, जगत ; आर्य, देवभूमिज ; नवग्रह ; अठारह ; जाति-समूह ।

ॐॐॐॐॐॐ भूति (सम्) सं.—संपत्ति, ऐश्वर्य ; वैभव, राज्यश्री, गौरव ; राख ; भुना हुआ मांस ।

ॐॐॐॐॐॐ भूदार (सम्) सं.—सुअर ।

ॐॐॐॐॐॐ भूदेव (सम्) सं.—ब्राह्मण ।

ॐॐॐॐॐॐ भूपाल (सम्) सं.—नरेश, राजा ।

ॐॐॐॐॐॐ भूमि (सम्) सं.—भूमि, जमीन ; जगह, स्थान ।

ॐॐॐॐॐॐ भूमिके (सम्) सं.—भूमिका, पीटिका ; मंज़िल, खण्ड ; नाटक में किसी का चरित्र या अभिनय ।

खमीरा; पीच; महेरी; गूदा, सार, सिर; आभूषण विशेष ।

०८८ मंडक, ०८८ मण्डगे, ०८८ मण्डिगे, (क) सं.—मैदा से बनाया जाने-वाला एक खाद्य (भोज्य) पदार्थ ।

०८८ मंडप (सम्) सं.—दे. ०८८ मंडल (सम्) सं.—गोला, वृत्ताकार विस्तार, व्यास; सूर्य या चन्द्र का वृत्त; ग्रह के घूमने की कक्षा; समूह, समुदाय, दल; समीप का जिला या प्रांत; शिकार खेलने का पैतरा विशेष; तांत्रिक मन्त्र विशेष; ऋग्वेद का खण्ड विशेष; अड़तालीस दिनों की अवधि ।—०८८ मंडलिक (सम्) सं.—प्रांत या जिले का मुख्य अफसर ।

०८८ मंडल (सम्) सं.—मण्डली, 'समूह, समुदाय ।

०८८ मंडलिक (सम्) सं.—मण्डलाधिकारी ।

०८८ मंडि (क) सं.—घुटना ।—सु सु (क) क्रि.—बैठ ।

०८८ मंडूक (सम्) सं.—मैंदक ।

०८८ मंडूर (सम्) सं.—लोह कीट ।

०८८ मंडे (तद्) सं.—सिर ।

०८८ मंतण (तद्) सं.—मन्त्रणा (तत्) ।

०८८ मंतन (क) सं.—कुल, वंश (व्या. भा.) ।

०८८ मंतु (तद्) सं.—मथानी; दोष, गलती ।

०८८ मंत्र (सम्) सं.—मन्त्र, वैदिक वाक्य ।

०८८ मंत्रि (सम्) सं.—सचिव, राजा का अमात्य; मन्त्र जागनेवाला ।

०८८ मंत्रिक (तद्) सं.—मांत्रिकः (तत्); ऐंद्रजालिक, जादूगर ।

०८८ मंत्रिसु (सम्) क्रि.—मन्त्र कर; सलाह कर ।

०८८ मंथ (सम्) सं.—मन्थन, हिलाना; मथानी; शराबत जिसमें कई वस्तुएँ मिली हों; धौल की बीमारी, मोतियाबिंद ।

०८८ मंथन (सम्) सं.—मथना ।

०८८ मंथनि (सम्) सं.—वह घड़ा जिसमें दही रखकर मथा जाता है ।

०८८ मंथि (सम्) सं.—मथानी ।

०८८ मंद (सम्) वि.—धीमा, सुस्त, दीर्घ-सूत्री; उदासीन, तटस्थ; मूर्ख, मन्दबुद्धि वाला, अज्ञानी; नीच, खोखला, पोला; कोमल, मुलायम; छोटा, हल्का; अभागा, दुःखी, मुरझाया हुआ; दुष्ट, बदमाश, पापी । सं.—यम; शनिग्रह; हाथी विशेष; प्रलय ।

०८८ मंदबुद्धि, ०८८ मंदमति (सम्) सं.—मूर्ख, वेवकूफ ।

०८८ मंदयिसु, ०८८ मंदैसु (सम्) क्रि.—गाढ़ा हो, जम जा ।

०८८ मंदर (सम्) सं.—मन्दरपर्वत; मंदार का वृक्ष; स्वर्ग । वि.—गाढ़ा, घना ।

०८८ मंदलिंगे (क) सं.—चटाई ।

०८८ मंदकिनि (सम्) सं.—गंगा ।

०८८ मंदक्रांत (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

०८८ मंदार (सम्) सं.—मूँगे के वृक्ष का फूल ।

०८८ मंदि, ०८८ मंदि (क) सं.—लोग, जन ।

०८८ मंदिर (सम्) सं.—मंदिर, घर, भवन ।

०८८ मंदिवाल, ०८८ मंदिवाल (क) सं.—अत्यधिक परिचय या प्रेम जो अशांति, क्रोध आदि का कारण बनता है ।

०८८ मंदु (क) सं.—नीलगिरि में तोड़ जाति के लोगों का ग्राम ।

०८८ मंदुर, ०८८ मन्दुरे (सम्) सं.—अश्वसाला, घुड़साल ।

०८८ मंदि (क) सं.—दे. ०८८ मंदि; पशुओं का समूह; गोशाला ।

०८८ मंदोदरि (सम्) सं.—०८८ मंडोदरि (तद्)—रावण की पटरानी का नाम ।

०८८ मंद्र (सम्) वि.—नीचा, गहरा, गम्भीर, पोला । सं.—मन्द्रस्वर ।

०८८ मकर (सम्) सं.—मकर, मगर; कुवेर की नवनिधियों में से एक ।

०८८ मकुट, ०८८ मगुट (सम्) सं.—किरीट, ताज ।

०८८ मकरि, ०८८ मकि (क) सं.—टोकरी ।

०८८ मकल, ०८८ मकलु (क) सं.—बच्चे; संतान ।

०८८ मखमल्ल (अ. दे.) सं.—मखमल (अरबी); मुलायम वस्त्र ।

०८८ मखे, ०८८ मखे (सम्) सं.—मघा नक्षत्र ।

०८८ मग (क) सं.—पुत्र, बेटा, आत्मज; गन्ध, सुगन्ध ।

०८८ मगचु (क) क्रि.—उल्टा, उल्टा दे, औंधा रख; पलट (जैसे पुस्तक का पन्ना पलटना); औंधा गिर; रगड़, घिसकर चौंका कर ।

०८८ मगट, ०८८ मगुट, ०८८ मोगट, ०८८ मोगुट (क) सं.—रेशमी वस्त्र; पीतांबर ।

०८८ मगवु, ०८८ मगु, ०८८ मगुवु (क) सं.—बच्चा, शिशु ।

०८८ मगल, ०८८ मगलु (क) सं.—बेटी, पुत्र ।

०८८ मगलमा (क) सं.—पति की विश्वासपात्र स्त्री, पतिव्रता ।

०८८ मगि, ०८८ मगे (क) सं.—छोटा घड़ा ।

०८८ मगिल, ०८८ मगलु (क) सं.—छत का जोड़ ।

०८८ मगुचु (क) क्रि.—दे. ०८८ मगलु ।

०८८ मगुल, ०८८ मगुलु (क) क्रि.—घूम जा, उलट जा, वापस जा, पीछे जा; पुनः होने दे या कर ।

०८८ मगुलुचु (क) क्रि.—दे. ०८८ मगलु ।

०८८ मग (क) सं.—करघा ।

०८८ मगल, ०८८ मगलु (क) सं.—पार्श्व, बगल । अ.—के पास, बगल में, की ओर ।

०८८ मगिगल, ०८८ मगिगलु (क) सं.—दे. ०८८ मगलु ।

मगु

मगु (क) क्रि.—गर्जन कर । सं.—
वशीकरण, वशीकृत होना ।

मगुल, मगुल (क) सं.—
—दे, मगुल ।

मगु (सम्) वि.—निमज्जित, डूबा
हुआ ।

मगु (सम्) सं.—इन्द्र ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

मगुल (सम्) सं.—मचर्चिका,
सर्वोत्तमता ।

दीवार पर चूना लगाने के लिए उपयोग में
लाया जानेवाला नारियल का रेशा ।

मगुल (सम्) सं.—मगुल ; महन्त के रहने
का स्थान ; स्कूल, विद्यालय ।—मगुल पति =
महन्त ।

(१) मगुल (क) सं.—एड़ी, गाड़ी का
पिछला भाग ; छोटा बांध, छोटी नहर ।

(२) मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल, मगुल,
मगुल (क) सं.—जल की गहराई ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ;
तह । मगुल (क) क्रि.—तह कर ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) क्रि.—
रख ; छिपा रख ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) क्रि.—
मगुल (क) क्रि.—टेंटा कर ; तह करा ।

मगुल (क) सं.—मगुल, परत ।
मगुल (क) सं.—खी ; पत्नी ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) क्रि.—
कैल, व्यास हो, बढ़ । सं.—फलाव, व्याप्ति,
बढ़ना, बढ़ती ।

मगुल (क) सं.—आंचल, गोद ।

मगुल (क) सं.—शुद्धि, निर्मलता, शुद्ध
वस्त्र ; एड़ी । क्रि.—तह कर ; मर जा,
मृत हो, चल बस ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) क्रि.—मार डाल ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—धोवी, रजक ।

मगुल (क) सं.—धोवी ।

मगुल (क) सं.—धोवी, मगुल (क) सं.—धोवी ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ।

मगुल (क) सं.—मगुल, मगुल (क) सं.—मगुल ।

मगुल (क) सं.—तलछट, कीचड़ ; गुग्गुल,
अगरु ; कौली ; मूख मनुष्य ।

(१) मगुल (क) सं.—तलछट, चिपचपा
होना ।

(२) मगुल (सम्) सं.—होल ।

मगुल (क) सं.—मिटी,
मृत्तिका ; जमीन, फर्श ।

मगुल (अ. दे.) सं.—मन, तौल विशेष ।
मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मगुल (क) सं.—छोटी गाय या भैंस ।

मोड्डुयु मतत्रय (सम्) सं. — अद्वैत, द्वैत और विशिष्टाद्वैत मत ।

मोड्डुल्लिं मतल्लिके (सम्) सं. — अपनी जाति की सर्वश्रेष्ठ वस्तु ।

मोड्डि मति (सम्) सं. — बुद्धि, समझदारी, ज्ञान; मत, हृदय, विचार; विश्वास, राय; संकल्प ।

(१) मोड्डु मत्त, मोड्डु० मत्त (क) अ. — फिर, पुनः; और, अतिरिक्त ।

(२) मोड्डु मत्त (सम्) वि. — मस्त, मतवाला, उन्मत्त. पागल; अहंकारी ।

मोड्डु मत्तर् (क) सं. — भूमि का एक परिमाण या नाप ।

मोड्डु मत्ति (क) सं. — शरीर पर का छोटा धब्बा, चित्ती; अर्जुन वृक्ष; सालवृक्ष ।

मोड्डुन मत्तिन (क) वि. — दूसरा, दूसरे का, अन्य, इतर ।

(१) मोड्डु मत्तु (तद्) सं. — मदः (तत्); नशा ।

(२) मोड्डु मत्तु (क) अ. — और, एवं, तथा; फिर, पुनः; अतिरिक्त ।

मोड्डु मत्ते (क) अ. — फिर, पुनः, तत्पश्चात्; उपरांत ।

मोड्डु० मत्तेभ (सम्) सं. — मदमत्त हाथी; एक वृत्त ।

मोड्डु० मत्सर (सम्) सं. — डाह, ईर्ष्या, जलन ।

मोड्डु मत्स्य (सम्) सं. — मछली; विष्णु का एक अवतार; एक देश और उसके राजा का नाम ।

मोड्डुन मथन (सम्) सं. — मथने की क्रिया ।
मोड्डु मथि (सम्) सं. — मथानी ।

(१) मोड्डु मद (क) सं. — मिलना; विवाह; शादी ।

(२) मोड्डु मद (सम्) सं. — नशा, मस्ती, मद; अहंकार; लंपटता, कामुकता; अनुराग, प्रेम; हर्षातिरेक; शराब, मदिरा; शहद; सुश्क, कस्तूरी; वीर्य; कपास; मधुकर, अमर; लहर ।

मोड्डुग मदग, मोड्डुग मदगु (क) सं. — पानी के बहाव का द्वार ।

मोड्डु मदडु (क) सं. — मूर्ख, मूढ़, बेवकूफ ।

मोड्डुन मदन (सम्) सं. — नशीली; काम-देव; प्रेम, अनुराग; धतूरे का पौधा, मोम, बकुलवृक्ष; मधुमक्खी; अच्छा, तपस्वी; वसंतकाल ।

मोड्डु मदर (तद्) सं. — मद्रं (तत्); हर्ष, आनन्द ।

मोड्डुग मदरंग, मोड्डुग मदरंगि (क) सं. — मेहंदी ।

मोड्डु मदल् (क) सं. — विवाह, शादी ।

मोड्डुग मदलिग (क) सं. — वर । मोड्डुग मदलिगिति = वधू ।

मोड्डुग मदवणिगिति, मोड्डुग मदवणिगिति (क) सं. — वधू ।

मोड्डुग मदवणिग, मोड्डुग मदवणिग, मोड्डुग मदवलिग (क) सं. — वर, दूल्हा ।

मोड्डुग मदवन (क) सं. — पति ।

मोड्डुग मदवलिगे (क) सं. — वर, दूल्हा ।

मोड्डुग मदिरा, मोड्डुग मदिरै (सम्) सं. — मदिरा, शराब ।

मोड्डुग मदिल् (क) सं. — दीवार ।

मोड्डुग मदिवे, मोड्डुग मदुवे (क) सं. — शादी, विवाह ।

मोड्डुग मदले, मोड्डुग मदले, मोड्डुग मदले (तद्) सं. — मर्दलः (तत्) — मृदंग ।

मोड्डुग मदडु (क) सं. — औषध; विषेली पुड़िया, बारूद आदि ।

मोड्डुग मद्य (सम्) सं. — नशीला पेय पदार्थ, शराब, मदिरा ।

मोड्डुग मद्यप (सम्) शराबी ।

मोड्डुग मधु (सम्) सं. — शहद, पुष्परस; मदिरा; जल; चीनी; मधुरता; वसंत ऋतु; मधु दैत्य; अशोक वृक्ष; चैत्र-मास; अमृत ।

मोड्डुग मधुर (सम्) वि. — मीठा; सुन्दर, मनोज्ञ । सं. — मिठास; शरबत; लाल-

गन्ना; शकर, गुड; विप; जस्ता; एक प्रकार का धाम ।

मोड्डुग मधुवत (सम्) सं. — अमर, भौरा ।

मोड्डुग मध्य (सम्) सं. — बीच, मध्य, मध्य का भाग; कमर, कटि ।

मोड्डुग मध्यम (सम्) वि. — बीच का, मध्य का, मध्यवर्ती; निरपेक्ष । सं. — मध्य भाग; कटि, कमर; व्याकरण में मध्यम पुरुष ।

मोड्डुग मध्यस्त, मोड्डुग मध्यस्थ (सम्) सं. — मध्यवर्ती; उदासीन, तटस्थ ।

मोड्डुग मध्याह्न (सम्) सं. — दोपहर, मध्याह्न ।

मोड्डुग मनवरिके (क) सं. — ज्ञान, समझ, जानकारी ।

मोड्डुग मनवार्ते (क) सं. — घरेलू काम ।

मोड्डुग मन (सम्) सं. — मन, चित्त ।

मोड्डुग मनश्शास्त्र (सम्) सं. — मनो-विज्ञान ।

मोड्डुग मनन (सम्) सं. — चिंतन; बुद्धि, समझदारी; तर्क द्वारा निकाला हुआ परिणाम ।

मोड्डुग मनवे, मोड्डुग मनवि, मोड्डुग मनुवे (क) सं. — प्रार्थना, विनय ।

मोड्डुग मनसु, मोड्डुग मनस्सु (सम्) सं. — मन; हृदय, चित्त ।

मोड्डुग मनस्ताप (सम्) सं. — मन का ताप; द्वेष, अनयन ।

मोड्डुग मनीषि (सम्) वि. — पंडित, बुद्धिमान ।

मोड्डुग मनीषे, मोड्डुग मनीषा (सम्) सं. — बुद्धि, समझ; प्रतिभा ।

मोड्डुग मनुज, मोड्डुग मनुष्य (सम्) सं. — मनुष्य, आदमी ।

मोड्डुग मनुस (तद्) सं. — मनुष्य ।

मोड्डुग मनुसि (तद्) सं. — स्त्री ।

मोड्डुग मने (क) सं. — घर, मकान, गृह; कमरा ।

मोड्डुग मनेतन (क) सं. — कुल, वंश, घराना ।

मोड्डुग मनोज (सम्) सं. — कामदेव, प्रेम ।

महोदर (सम्) सं.—बड़ी तोंद ;

एक रोग ; एक राक्षस का नाम ।

महल, महल (क) सं.—

बाल, रेत, सैकत ।

महल (क) सं.—दुकान, कोठी ।

महल (क) सं.—बुद्धपन, मूर्खता ;

बाल, रेत ।

महल (क) सं.—आंखों का प्रकाश

मंद होना ।

महल, महल (क) सं.—वर्षा, वृष्टि,

बरसात ।

महल (क) क्रि.—अदृश्य करा,

ओझल करा ; नाश कर ।

महल (क) क्रि.—ओझल हो, अदृश्य

हो ; नष्ट हो ।

महल (क) सं.—आम, आम का पेड़ ।

महल (क) अ.—शाबाह !

महल (क) सं.—आम (समास में) ।

महल (क) क्रि.—अवज्ञा कर,

उपहास कर, उलाहना दे, लज्जित कर ।

महल (क) सं.—मुझल सूत्र ।

महल (क) क्रि.—मन्द प्रकाश

करा या ओझल करा ।

महल (क) क्रि.—छिप, ओझल हो,

वंचित कर ।

महल (क) वि.—न रुकनेवाला,

न ठहरनेवाला ।

महल (क) क्रि.—रुकवा ।

महल (क) क्रि.—ठहरा, रोक, प्रति-

षेध कर ।

महल (क) सं.—मांस, गोश्त ।

महल (क) सं.—कसाई, मांस

बेचनेवाला ।

महल (क) क्रि.—दे, महल

में ; रहस्य का उद्घाटन ।

महल (क) सं.—जिले या

तालुका का भाग ।

महल (क) क्रि.—फलों को पकने

दे ।

महल (क) क्रि.—पक (फलों का पकना) ।

महल (क) सं.—माघ मास ।

महल (क) क्रि.—मन्द करा ; धूमिल

करा, ओझल करा ; छिपा । सं.—छिपाना,

छिपाव ।

महल (क) सं.—करना, बनाना, काम,

धन्धा ; ढंग, प्रकार ; सौंदर्य, चारुता, मनो-

हरता ; जादू ।—गार गार=जादूगार ।

(१) महल (क) सं.—आला, छज्जा ;

लाश ले जाने की टिखटी ।

(२) महल (क) सं.—मंजिल, अट्टालिका ;

हर्ष ।

महल (क) मं.—सकान की ऊपरी

मंजिल ।

महल (क) क्रि.—करा या करवा,

तैयार करा ।

(१) महल (क) क्रि.—कर, बना, तैयार

कर, कोई कार्य कर ।—विक्के (क) सं.—

करना, क्रिया ।

(२) महल (क) सं.—आला, छज्जा ।

महल (क) क्रि.—रोक,

निवारित कर, निवारण कर ; मुक्त हो,

अलग ; पहले ही अच्छा हो ।

महल (क) सं.—लड़का, छोकरा ।

महल (क) सं.—लाल पद्मराग ।

महल (क) क्रि.—रुकवा, निषेध

करा ।

महल (क) सं.—वात,

वचन, शब्द, उक्ति ।

महल (क) सं.—हाथी ; श्वपच ।

महल (क) सं.—माता, मातुग, महल

मातुगार (क) सं.—वाचाल, बातूनी ।

महल (क) सं.—बातूनी

स्त्री ।

महल (क) सं.—मामा ; धतूरे का

पौधा ।

महल (क) सं.—मामा की

पत्नी, मामी ।

महल (क) सं.—माता ; जगज्जननी ।

महल (क) अ.—केवल, मात्र,

भर । सं.—नाप, परिमाण ।

महल (क) सं.—परिमाण ; ठीक-

ठीक, नाप, अणु ; क्षण, पल ; छोटा माप,

अंश ।

महल (क) सं.—दे, महल

महल (क) सं.—

मातंग (क) ; मोची ।

महल (क) वि.—मीठा, शहद से

तैयार किया हुआ, वसंतकालीन, मधु दैत्य के

वंश का । सं.—श्रीकृष्ण ; वसंतक्रतु, वशा-

खमास ; कुवेर ; राजा ; कामिनी, स्त्री ;

पुरुषों का नाम ।

महल (क) सं.—मधुरता,

मिठास ; दयाशीलता ; सात्विक नायक क

एक गुण ।

महल (क) सं.—नाप, तौल, परि-

माण ; समानता, सादृश्य ; प्रमाण ;

सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, गर्व, घमण्ड,

मद ।—कायु (क) क्रि.—इज्जत

की रक्षा कर ।

महल (क) वि.—मन सम्बन्धी,

मानसिक, मानसरोवर पर रहनेवाला ।

सं.—मानसरोवर ।

महल (क) सं.—मानिनी स्त्री ;

मान्य स्त्री ।

महल (क) सं.—एक प्रकार की

धास ।

महल (क) सं.—मानव-प्रकृति,

मनुष्यत्व ; मानव-जाति, मानवसमुदाय ।

महल (क) वि.—मानने योग्य,

आदरणीय, पूज्य । सं.—माननीय व्यक्ति ;

राजा ; मान्यता ; वह भूमि या खेत जिसके

लिए भूमि-कर की छूट मिली हो ।

महल (क) सं.—कामदेव ।

महल (क) सं.—कामदेव ।

महल (क) सं.—मलबार का निवासी मुसलमान या

ईसाई ।

मोय माय, मोय माय (क) क्रि.—
मन्द प्रकाश हो, मन्द पड़; ओझल हो,
छिप जा, चल जा ।

मोय माय, मोय माये (सम्) सं.—
माया, छल, प्रवचना, अदृश्य होना ।

मोयावि मायावि (सम्) सं.—धोखेबाज़,
छलिया; बाज़ीगर, ऐंद्रजालिक ।

मोय मार, मोय मारु (क) सं.—छः फुट
की नाप ।

मोय मारण (सम्) सं.—मारना, हत्या
करना, नष्ट करना ।

मोय मारि (सम्) सं.—मारी, महामारी,
सांक्रामिक रोग; दुर्गा ।

मोय मारुत (सम्) सं.—मारुत, पवन,
हवा ।

मोय मारुलि (क) सं.—एक प्रकार की
घास ।

मोय मार, मोय मारु (क) क्रि.—सामने
हो, सामना कर, विरोध कर ।

मोय मारण (क) सं.—मोय मोय दिवस
मारनेय दिवस—दूसरा दिन, बाद का दिन ।

मोय मारणे (क) वि.—बाद का, दूसरा ।

मोय मारुलि (क) सं.—बनिया, वैश्य ।

मोय मारिसु, [मोय मारिसु] (क)
क्रि.—बेचवा, बेचने दे; अदल-बदल करवा ।

मोय मारु (क) क्रि.—बेच, विक्रय कर ।

सं.—दो गज की लंबाई, फैले हुए दोनों
हाथों का परिमाण; अदल-बदल ।

मोय मारुलि (क) सं.—दूसरा धन्धा या
काम ।

मोय मार्ग (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता,
सड़क; पगडंडी; चिह्न, निशान; खोज,
अनुसंधान; ढंग, विधान, पद्धति; मार्गशीर्ष
मास ।

मोय मार्गण (सम्) सं.—खोज, अनुसं-
धान; माँगना; पूछना; माँगनेवाला, मिखारी;
बाण; वैरी, शत्रु; नरकजीवी; एक वृक्ष ।

मोय मार्जार, मोय मार्जाल (सम्)
सं.—बिल्ली ।

मोय मारुव (सम्) सं.—मृदुता, कौमलता,
नरमी ।

मोय मारु (क) सं.—परिवर्तन, बदलना।
मोय मारु (क) सं.—रिपु, शत्रु ।

मोय मालति (सम्) सं.—मालती की
लता और फूल ।

मोय मालिके (सम्) सं.—माला, हार ।

मोय मालिन्य (सम्) सं.—मलिनता,
अशुद्धि, मैलापन ।

मोय मालिसु (क) क्रि.—तिरछी दृष्टि से
देख, कटाक्ष कर, घूर ।

मोय मालीक (सम्) सं.—मालिक
(अरबी); स्वामी, प्रभु ।

(१) मोय मालु (क) क्रि.—झुक जा। क्रि.
—झुकाव, टेढ़ापन ।

(२) मोय मालु (अ. दे.) सं.—माल
(अरबी), सामान ।

मोय माले, मोय माल्य (सम्) सं.—
दे. मोय ।

मोय माव (तत्) सं.—माम (तत्) सं.—
मामा; ससुर ।

मोय मावत, मोय मावतिग (अ. दे.)
सं.—मोय मावतिग—महावत ।

मोय मावि (क) सं.—गर्भाशय ।

मोय मावु (क) सं.—आम, आम्र ।

मोय मावुलिग (क) सं.—लुब्धक, व्याध,
शिकारी ।

मोय माप (सम्) सं.—उर्द, उडद; तौल
विशेष ।

मोय मास (सम्) सं.—मास, महीना;
वारह की संख्या ।

मोय मासर (क) सं.—सौंदर्य, चारुता;
धूसर वर्ण ।

मोय मासलु (क) वि.—गंदा, मैला ।

मोय मासु (क) क्रि.—गंदा हो, मैला,
मलिन हो । सं.—मलिनता, मैलापन,
गंदगी; गर्भाशय, जरायु ।

मोय माहात्म्य (सम्) सं.—महिमा,
महत्त्व, गौरव ।

मोय माहिषि (सम्) सं.—भैंस ।

मोय माळ (क) क्रि.—बंद हो, समाप्त हो,
छूट ।

मोय माळमुकि (क) सं.—पति का
संग न छोड़नेवाली स्त्री ।

मोय माळ (क) क्रि.—कर, कोई काम कर ।

मोय माळके (क) सं.—करना, क्रिया;
ढंग, रीति ।

मोय मिंगु (क) क्रि.—निगल ।

मोय मिचिसु (क) क्रि.—चमका, प्रकाशित
करा ।

मोय मिचु (क) क्रि.—चमक, दमक,
प्रकाशित हो, दीप्तिमान हो । सं.—चमक,
दमक, आभा ।

मोय मिट्टे (क) सं.—एक प्रकार का अन्न,
समूह, राशि ।

मोय मिड (क) सं.—उपपति, जार; वीर;
उपद्रव मचानेवाला ।

मोय मिडगार (क) सं.—उपपति, जार।
मोय मिडगति, मोय मिडि (क) सं.—
जारिणी, व्यभिचारिणी, वैश्या ।

मोय मिडु (क) सं.—कामातुरता, लंपटता;
उठा होना, उभार ।

मोय मिक्कु (क) अ.—शेष, अधिक; बचत।
मोय मिगते (क) सं.—बचत ।

मोय मिगिल्, मोय मिगिलु (क) सं.—
अधिकता, श्रेष्ठता, समृद्धि, बढ़ती ।

मोय मिगिसु (क) क्रि.—बचा, किसी चीज़
को कम होने न दे ।

मोय मिगु (क) क्रि.—बच जा; अधिक हो,
समृद्ध हो ।

मोय मिगे (क) सं.—समृद्धि, आधिक्य;
पूरक ।

मोय मिटकिसु, मोय मिटकु, मोय
मिडगरिसु (क) क्रि.—पलक मार,
आँखें चमका ।

मोय मिटल, मोय मिटलि, मोय मिटले,
मोय मिटले (क) सं.—एक वृक्षविशेष ।

मोय मिड मिडि मिडि नोडु (क) क्रि.—
डकुर.डकुर देख; घूर ।

मिड्, मिडि

मिड्, मिडि, मिडिने (क) अ.—दुःखी होकर ।
मिड्, मिडि, मिडिने (क) सं.—टीला पहाड़ी ; समूह ।
मिड (क) अ.—दुःख से ।
मिडि (क) सं.—पूँदी ; पतंग, शलभ ।
(१) मिडि (क) सं.—झाड़ियों का समूह ; छोटी झाड़ी ।
(२) मिडि (क) क्रि.—अंगुली से उछाल, अंगुली से टपटपा, अंगुली से बजा ; टंकार कर ; लाघ ; पार करने दे ; (धूस) बहा ।
मिडि, मिडि, मिडिने, मिडिने, मिडिने (क) सं.—पतंग, शलभ ।
मिडिने, मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—दुःख दे, शोक दे, पीड़ा दे ; चिंतित हो, व्याकुल हो ; क्रियाशीलता दिखा ; काँप । सं.—दुःख, शोक ; हिलना, आंदोलन ; पराक्रम ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—दे. मिडिने ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—चमक, आभा प्रकट कर, टिमटिमा, झिलमिल ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—चमक, आभा ।
मिडिने (क) सं.—चर्मपाश, चमड़े की रस्सी ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—तरबूजा ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—चमचा, काठ का चमचा ।
मिडिने (क) वि.—छोटा, लघु ।
मिडिने (सम्) वि.—परिमित ; नपा हुआ, जैसा हुआ ।
मिडिने (सम्) सं.—मान, परिमाण ; यथार्थज्ञान ; सीमा, हद ।
मिडिने (सम्) सं.—मित्र, दोस्त ; सूर्य ।
मिडिने (सम्) सं.—जोड़ा, जुटा ; जुड़े बच्चे ; संगम, संभोग ; मिथुन राशि ।

मिडिने, मिडिने (सम्) सं.—मित्र, दोस्त ।
मिडिने (क) क्रि.—कूट, मर्दन कर ; रगड़, कुचल ; वध कर, मार ; घात कर, नाश कर ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—कूट, मर्दन करा या करवा ।
मिडिने (क) सं.—तरबूजे की वेल ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—दे. मिडिने ; निम्न ध्वनि में बोल, बड़बड़ा । सं.—चमक, आभा, कांति ।
मिडिने (क) वि.—चमकनेवाला, प्रकाशमान ।
मिडिने (क) क्रि.—चमक, चकाचौंध उत्पन्न कर । सं.—विजली, चौंध, कांति ।
मिडिने (क) सं.—विजली, कांति, चौंध ।
मिडिने (क) सं.—जल में रहनेवाला एक पक्षी ।
मिडिने (सम्) सं.—मिलन, मिलाप, भेंट, समागम ।
मिडिने (सम्) सं.—मिलावट, सम्मिश्रण ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—हिल, डुल, झूम ।
मिडिने (क) क्रि.—दे. मिडिने ; हिला, स्पंदित कर । सं.—हिलना, स्पंदन ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—चमक, कांतिमान हो, लसित हो । सं.—कांति, चमक ।
मिडिने (क) सं.—चमड़े की रस्सी, मिडिने (क) क्रि.—लुण्ठित हो, लुटक ; इधर-उधर हिल ; समृद्ध हो, बढ़, समृद्ध हो ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—चमचा ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—इधर-उधर हिल ; चकरा ।
मिडिने (क) क्रि.—स्नान कर, नहा ; नहला ; डाल । सं.—स्नान ।

मिडिने, मिडिने (क) सं.—जलकौआ, मछरंग ।
मिडिने (क) क्रि.—उछल ; कूद, छलांग मार ; जड़ से निकाल फेंक, निकाल बाहर कर, उत्पाटन कर, उखाड़ ; दबा, पटक, अंगुली से दबा ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—मछली । तारा, नक्षत्र ।—गार (क) सं.—मछुआ ।
मिडिने (क) सं.—दे. मिडिने ।
मिडिने (क) क्रि.—नहला ।
मिडिने (क) क्रि.—स्नान कर, नहा ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—मिडिने ।
मिडिने—सीमा से बाहर हो, अतिक्रमण कर, पार कर, अधिक हो ।
मिडिने, मिडिने (क) सं.—किसी उद्देश्य से अलग रूप में रखी हुई वस्तु ; मनौती की वस्तु ।
मिडिने (क) क्रि.—दे. मिडिने ।
मिडिने (क) उ.—(समास में) पहले, पूर्व ।
मिडिने, मिडिने (क) क्रि.—आगे बढ़, बढ़े चल ।
मिडिने, मिडिने, मिडिने, मिडिने, मिडिने, मिडिने (क) सं.—नेवला, नकुल ।
(१) मिडिने (सम्) सं.—मुँड़ा हुआ या गँजा सिर ; सिर, माथा ; नाई ; भृंग वृक्ष ।
(२) मिडिने (क) सं.—चूमना, चुस्बन ; छोटा कपड़ा ।—छोटा आहु (क) क्रि.—चूम, चुस्बन कर ।
मिडिने (तद्) सं.—विधवा स्त्री जिसका सिर मुँड़ा हुआ हो ; विधवा ; व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या ।
मिडिने (क) अ.—आगे, सामने, पहले ।
मिडिने (क) वि.—आगे का, सामने का, भावी ; विरुद्ध ।
मिडिने (क) अ.—आगे, सामने ; पहले, अग्र ; पश्चात् ।

मूढुमुलु मुदु (क) वि.—आगे या पहले
दौड़नेवाला।

मूढुमुलु मुदु (क) अ.—दे. मूढु. सं. —
सुरही जैसा वर्तन।

मूढुमुलु मुदु (म ?) सं.—बंबई।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—आगे बढ़, सामने
आ।

मूढुमुलु मुदु (क) अ.—अग्र भाग, सामने
का भाग।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं. — नथ ; दर्पण;
आईना।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु
मुदु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क)

क्रि.—मुँह के सामने आ या गिर पड़;
मँडरा, भिनभिना।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं. — ताज़, किरिटी;
कलंगी।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं.—दर्पण. आईना।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं. — कली, खिलने-
वाली, कली; कली जैसी वस्तु; एक वृत्त

का नाम।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु,
मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) क्रि. — कुला कर।—

विक्रे=कुला करना।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.
व्यर्थ प्रयास कर और निराश हो (किसी

भारी चीज़ को उठाने का श्रम व्यर्थ होना)।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—मुँह में ले लेकर
खा, जल्दी-जल्दी खा; मुँह में सूँस

सं.—गर्व, अहंकार; भाण्ड, वर्तन; खण्ड,
टुकड़ा, अंश।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु,
मूढुमुलु मुदु (क) सं.—कले का पानी,

गंधूष जल।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं. — समाप्ति,
पूर्णता, अंत, मंगल।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं.—मोक्ष, निःश्रेयस्।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं.—मुक्ता, मोती।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं.—मुख, चेहरा; अंगला
भाग, धार, आयुधों का अग्र भाग; दिशा;

प्रधान, मुख्य; चोंच; भूमिका।

मूढुमुलु मुदु (सम्) वि. — प्रधान, मुख्य,
विशिष्ट।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) क्रि. —
समाप्त कर, पूरा कर।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—समाप्त हो, अंत हो।
संकुचित हो; हाथ जोड़; बन्द कर,

मूँद।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) सं.
—मेघ, बादल; गगन, नभ।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—नाक।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—दे. मूढुमुलु।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—वेतन, मज़दूरी
आदि का निर्णय।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.
मूँद, निमीलित कर। (तद्) सं.—कली,

खिलनेवाला फूल।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—कॉटेदार वृक्ष
(Acacia Suma)

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—संकुचित कर,
बन्द कर।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—ढोकर खाकर
गिर; लड़खड़ा।

(१) मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—ढोकर खा, गिर
पड़। सं.—गड़ढा।

(२) मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—जीर्णावस्था के
कारण बढ़ती निकल। सं.—बढ़ती (किसी

चीज़ खराब हो जाने से निकलनेवाली बढ़ती)।

मूढुमुलु मुदु (सम्) सं.—सुन्दरी स्त्री, तरुणी,
चतुर स्त्री, मूँद स्त्री; अनजान स्त्री।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—ढंक, ढाँक; बन्द
कर।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—मूर्छित हो,
बेहोश हो।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—ढक्कन।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—बढ़ती, वृद्धि, उन्नति।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—पहुँच, स्पर्श
कर।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु (क) सं.—
स्पर्श, छूना, संवन्ध, स्त्रियों का मासिक

धर्म।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु
मुदु (क) सं.—दे. मूढुमुलु।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—मूर्ख, बेवकूफ।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—छुआ, लगा,
पहुँचा।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—पहुँच, लग, छू,
स्पर्श कर। सं.—स्त्री-रज, स्त्रियों का

मासिक धर्म; विघ्न, बाधा, रोक; ठहराव;
न्यूनता, कमी।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—खर्च, व्यय,
खर्च करने की रकम या अनाज।

मूढुमुलु मुदु (क) सं.—उपाय या साधन
विहीन व्यक्ति।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—जूड़ा बांध, केश शृंगार
कर। सं.—जूड़ा; मुकुट (देव-मुकुट);

अनाज का एक परिमाण (४२ शेर); अनाज
का गट्ठा; समाप्ति, अंत, नाश।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—समाप्त कर, अंत
कर। सं.—मनौती का पैसा या आभरण

जो देवता को समर्पित किया जाता है।

मूढुमुलु मुदु (क) क्रि.—किसी दूसरे के
केश या जूड़े में फूलों का शृंगार कर।

मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु मुदु, मूढुमुलु
मुदु (क) क्रि.—झुक जा, सिकुड़ जा, वक्र हो, झुका, तिरछा

कर।

ಮುಸುಡು ಮುಸುಡು

ಮುಸುಡು ಮುಸುಡು (ಕ) ಸಂ.—ಕನ್ಧಾ, ಕನ್ಧೆ ಕಾ

ಊಪರಿ ಭಾಗ ।

ಮುಣಿಗು ಮುಣಿಗು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಡುಬಾ, ನಿಮ-
ಜ್ಜಿತ ಕರ ಯಾ ಕರಾ; ಬರವಾದ ಕರ ।

ಮುಣುಗು ಮುಣುಗು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಡುಬ, ನಿಮಜ್ಜಿತ
ಹೊ.; ಸ್ನಾನ ಕರ; ನೃಪ ಹೊ । ಸಂ.—ಡುಬಕಿ ।

ಮುತ್ತು ಮುತ್ತು, ಮುತ್ತುಗ ಮುತ್ತುಗ, ಮುತ್ತುಲ ಮುತ್ತುಲ,
ಮುತ್ತುಕ ಮುತ್ತುಕ, ಮುತ್ತುಗ ಮುತ್ತುಗ,
ಮುತ್ತುಲ ಮುತ್ತುಲ, ಮುತ್ತುಗ ಮುತ್ತುಗ,
ಮುತ್ತುಗ ಮುತ್ತುಗ (ಕ) ಸಂ.—ಪಲಾಶ, ಕಿಂಶುಕ;

ಪಲಾಶ ವೃಕ್ಷ ।

ಮುತ್ರಿಗೆ ಮುತ್ರಿಗೆ (ಕ) ಸಂ.—ಘೇರನಾ, ಆಕ್ರಮಣ ।

ಮುತ್ತು ಮುತ್ತು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಘೇರ. ಆಕ್ರಮಣ, ಘೇರ

ಹಾಲ । ಸಂ.—ಬುಡಾಪಾ, ವೃದ್ಧಾವಸ್ಥಾ; ಕುಂಭನ ।

(ತದ್) ಸಂ.—ಸುಕಾ, ಮೋತಿ ।

ಮುತ್ಯೈದೆ ಮುತ್ಯೈದೆ (ಕ) ಸಂ.—ಸುಮದ್ದಲಿ, ಸುಹಾ-
ಗಿನಿ ಸ್ತ್ರೀ ।

ಮುತ್ಯ ಮುತ್ಯ (ಕ) ಸಂ.—ದಾದಾ । (ತದ್) ಸಂ.—
ಸುಕಾ, ಮೋತಿ ।

ಮುದ ಮುದ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಖಾನ್ದ, ಹರ್ಷ ।

ಮುದಕ ಮುದಕ, ಮುದುಕ ಮುದುಕ (ಕ) ಸಂ.—
ವೃದ್ಧಾ ಆದಮಿ ।

ಮುದಕಿ ಮುದಕಿ, ಮುದುಕಿ ಮುದುಕಿ (ಕ) ಸಂ.—
ವೃದ್ಧಿ ಸ್ತ್ರೀ, ಬುದ್ಧಿಯಾ ।

ಮುದುರು ಮುದುರು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ತಹ ಕರ, ಮೊಡ;
ಸಿಕ್ಕುಡ ಜಾ ।

ಮುದಿ ಮುದಿ (ಕ) ಸಂ.—ಬುಡಾಪಾ, ವೃದ್ಧಾವಸ್ಥಾ ।—
ತನ ತನ=ಬುಡಾಪಾ ।

ಮುದು ಮುದು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಬಡ, ವೃದ್ಧ ಹೊ, ಉತ್ತರ
ಹೊ । ವಿ.—ವೃದ್ಧಾ ।

ಮುದುಡು ಮುದುಡು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಸಿಕ್ಕುಡ ಜಾ, ಸಂಕು-
ಚಿತ ಹೊ; ಸಂಕುಚಿತ ಕರ, ಆಕುಂಚಿತ ಕರ;
ಲಪೆಡ (ಚರಾಁ ಲಪೆಡನಾ) ।

ಮುದ್ದರ ಮುದ್ದರ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮುದ್ದರ ।

ಮುದ್ದಿಸು ಮುದ್ದಿಸು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪ್ಯಾರ ದಿಖಾ;
ಬೊಸಾ ದೆ, ಚೂಮ ।

ಮುದ್ದು ಮುದ್ದು (ಕ) ಸಂ.—ಕುಂಭನ; ಪ್ಯಾರ,
ಪ್ರೇಮ ।

ಮುದ್ದೆ ಮುದ್ದೆ (ಕ) ಸಂ.—ಪಿಂಡ, ಗೋಲಾಕಾರ;
ರಾಶಿ, ರಾಗಿ ಕಾ ಪಿಂಡ ।

ಮುದ್ದುರಂಶಾಲೆ ಮುದ್ದುರಂಶಾಲೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಪ್ರೆಸ (Press) ।

ಮುದ್ದಿಕೆ ಮುದ್ದಿಕೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮುದ್ದಿಕಾ; ಅಂಗುಡಿ,
ಮುದ್ದುರ ।

ಮುದ್ದೆ ಮುದ್ದೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮುದ್ದುರ. ಛಾಪ ।

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ತ.—ಪಹಲೆ, ಪೂರ್ವ (ಸಮಾಸ ಮೆ) ।

ಮುನಸಪು, ಮುನಸಪು ಮುನಸೀಪು
(ಅ. ದೆ.) ಸಂ.—ಮುನಸಿಫ (ಅರಬಿ) ।

(೧) ಮುನಿ ಮುನಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಗುಸ್ಸೆ ಮೆ ಆ,
ಕ್ರುದ್ಧ ಹೊ, ರುಢ ಹೊ । ಸಂ.—ಕ್ರೋಧ ।

(೨) ಮುನಿ ಮುನಿ, (ಸಮ್) ಸಂ.—ಯತಿ, ತಪಸ್ವಿ;
ಸನ್ಯಾಸಿ ।

ಮುನಿವು ಮುನಿವು, ಮುನಿಸು ಮುನಿಸು (ಕ) ಸಂ.—
ಕ್ರೋಧ, ರೋಷ, ಗುಸ್ಸಾ ।

ಮುನ್ ಮುನ್, ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಅ.—ಸಾಮನೆ,
ಆಗೇ; ಪಹಲೆ, ಪೂರ್ವ ।

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಅ.—ದೆ. ಮುನ್.

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಬುಡಾಪಾ ವೃದ್ಧಾವಸ್ಥಾ ।

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುನ್ ಮುನ್ (ಕ) ಸಂ.—ಗರಮ

ಮುರುಚು ಮುರುಚು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಮರೊಡ, ತಿರಳಾ
ಕರ ।

ಮುರುಡನೆ ಮುರುಡನೆ (ಕ) ಸಂ.—ಏಕ ಪೌಢಾ,
ವರ್ತಕಿ ನಾಮಕ ಪೌಢಾ ।

ಮುರುಡಿ ಮುರುಡಿ (ಕ) ಸಂ.—ಏಕ ಛೋಟಿ ಜಾಡಿ ।

ಮುರುಡು ಮುರುಡು (ಕ) ಸಂ.—ರೂಕ್ಷತಾ; ಕುರುಕುರಾ-
ಪನ ।

ಮುರುಂಟು ಮುರುಂಟು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜಲಾ, ಜ್ವಲಿತ
ಕರ ।

ಮುರುವು ಮುರುವು (ಕ) ಸಂ.—ದೆ. ಮುರು.

ಮುರುಡು ಮುರುಡು (ಕ) ಸಂ.—ಮೊಡ, ಛೆಂ, ತಿರಳಾ-
ಪನ ।

ಮುರೆ ಮುರೆ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಛೇಕಾರ ಕರ, ಛೇಕಾರ
ಉತ್ಪನ್ನ ಹೊ ।

ಮುರು ಮುರು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ದೆ. ಮುರು. ಸಂ.—
ಡುಕಡಾ, ಅಂಶ, ಖಣಡ ।

ಮುರುಕಿ ಮುರುಕಿ (ಕ) ಸಂ.—ಏಕ ಪೌಢೆ
ಕಾ ನಾಮ; ಅಶುದ್ಧತಾ, ಅಶುಚಿ, ಗಂದಗಿ, ಮೊಲಾ-
ಪನ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ನಾಶ, ಬರವಾದಿ;
ಚೂರ್ಣ ಕರನಾ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಖಣಡ, ಡುಕಡಾ ।
ಕ್ರಿ.—ತಿರಳಾ ಕರ; ಸುಖವಿಕಾರ ಕರ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಅಲ್ಪಮತಿ ಯಾ ಮೂರ್ಖ
ಮನುಷ್ಯ, ನಿಕಿ ಪುರುಷ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ದೆ. ಮುರುಚು.

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಅಸಹ್ಯ ಹೊ;
ಕರಾಹ, ಹಿಕ್ಕಿಕಿ ಬಾಂಧ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ದರಿಡ್ರ ಯಾ ಗರಿಬ
ಆದಮಿ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಹಠ, ಹಠಾಲ್,
ಬಹಿಷ್ಕಾರ; ಛಲ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಮೂಠ । (ಕ) ಸಂ.—
ಏಕ ವೃಕ್ಷ (The Vomit Nut) ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ಮೂಠ, ಆವರಣ, ಛಿಂಟ ।

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ದೆ. ಮುರುಕು.

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ದೆ. ಮುರುಕು.

ಮುರುಕು ಮುರುಕು (ಕ) ಸಂ.—ದೆ. ಮುರುಕು.

सं. — मुख, चेहरा, सूरत (प्रायः व्यंग्य करते समय इसका प्रयोग होता है) ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — मनहूस आदमी ; कर्कश स्वभाव का मनुष्य ; कापुरुष, भीरु ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — दे. मूसुंढि ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — मुख के चारों ओर आ या फैल, घेर, आवृत्त हो । सं. — पर्दा, वृंघट ; समूह, छुट ।
 मूसुंढि मुसुंढि (अ. दे.) अ. — तैयार सज्जद ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (सम्) अ. — पुनः, फिर ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मुहूर्त, उप-युक्त समय, ४८ मिनट का समय ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — काँटा, कंटक ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — रुष्ट हो, गुस्से में आ, क्रुद्ध हो, रूठ जा । सं. — कीड़ा ; कारण ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — क्रोध, रोष, गुस्सा ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — गोताखोर ।
 मूसुंढि मुसुंढि, [मूसुंढि मुसुंढि] (क) क्रि. — डूबा, निमज्जित कर ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि [मूसुंढि मुसुंढि] (क) क्रि. — डूब, निमज्जित हो ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — डूब, निमज्जित हो ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — हानि, नुकसान ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — डूब, निमज्जित हो ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) वि. — तीन (समास में) ; पहला, पूर्व का ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मूसुंढि, गंगा आदमी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — गाड़ी का मँह, गाड़ी

के जुए का छोर । (सम्) सं. — मूसुंढि स्त्री ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — नथ ।
 मूसुंढि मुसुंढि (तद्) सं. — दे. मूसुंढि ।
 मूसुंढि मुसुंढि (तद्) सं. — दे. मूसुंढि (सम्) ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — नाक, नासिका ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — गट्टा, गठरी ; बंडल, बोरा ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — पूर्व दिशा, सूखा हुआ गोबर का पिण्ड ; मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — तकिया, टेकनी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — सुयोदय ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — तूणीर ; तरकस ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — उदय हो, उग, उत्पन्न हो ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) वि. — मूसुंढि, वेवकूफ ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — मुँह, चेहरा ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — सामना कर, ललकार ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — ललकार ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) वि. — तिगुना ।
 मूसुंढि मुसुंढि, [मूसुंढि मुसुंढि] (क) वि. — तीन संख्या ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — वेवकूफ मनुष्य ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — वेहोशी संगीत में मूसुंढि ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — वेहोशी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — प्रतिमा, रूप, आकार ; शरीर, देह ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — माथा, सिर । — ज = सिर के केश ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मूसुंढि, जड़ ; किसी वस्तु का निचला भाग, स्रोत ; एक नक्षत्र का नाम, अंत ; नाश ।
 मूसुंढि मुसुंढि (तद्) अ. — के द्वार, के जरिए ।
 मूसुंढि मुसुंढि (तद्) सं. — मूसुंढि ।

मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मूसुंढि, जड़ी-बूटी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) क्रि. — कराह, दुःख या पीड़ा के कारण चिल्ला ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — कोना, कोण ।
 मूसुंढि मुसुंढि, (सम्) सं. — मूसुंढि, कीमत, दाम ; मजदूरी ; मूलधन ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — चूहा ; चोर ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — दे. मूसुंढि ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — सूँघ, आघ्राण कर ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — हड्डी, अस्थि ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — छोटा, नाटा या नगा होना ; वह मनुष्य जिसके कान कट गये हो ; मूसुंढि, वेवकूफ ; एक गाली ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — कर्णहीन स्त्री, वह स्त्री जिसके कान न हों ; वह स्त्री जिसके कान में कोई आभूषण न हो ; विधवा ; सुराही की टोंटी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — चौपाया ; हिरन ; बारहसिंगा, शिकार ; चन्द्रलान्छन ; कस्तूरी ; खोज, तलाश ; याचना, माँग ; पशु ; सियार ; मृगशिरस ; नरक ; मार्गशीर्ष मास ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — शिवाजी । मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — पार्वती ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — कमलनाल की जड़ ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मृत्यु, मरण, मौत ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — एक बाजा, मृदंग ।
 मूसुंढि मुसुंढि (सम्) सं. — मिष्टान्न ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — मेथी ।
 मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — एक खेल ।
 मूसुंढि मुसुंढि, मूसुंढि मुसुंढि (क) सं. — प्रसन्नता, पसदंगी ।

मै०११ मे०

मै०११ मे० (क) क्रि.—पसंद कर, प्रसन्न हो, मान । सं.—प्रसन्नता, प्रियता, पसंदगी, संतोष, तुष्टि ।
 मै०११ मे० (क) सं.—कदम, पग, पद ; सोपान, सीढ़ी ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—चला, जाने, दो ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—पग रख, चरणों से दबा, कुचल । सं.—खड़ाऊँ, चप्पल, जूता ; सीढ़ी, सोपान ; पैरों की अंगुली में पहनने की अंगूठी ।
 मै०११ मे० (क) सं.—गला ।
 मै०११ मे० (क) सं.—सोपान, सीढ़ी ।
 मै०११ मे० (क) सं.—काली मिर्च । मै०११ मे० (क) सं.—लाल मिर्च । मै०११ मे० (क) सं.—हरी मिर्च ।
 मै०११ मे० (क) अ.—मृदुता से, मृदु, कोमल ।
 मै०११ मे० (क) सं.—पलिस्तर ।
 मै०११ मे० (क) वि.—मृदु, कोमल ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—लगा, मिट्टी लगा, चूना लगा ।
 मै०११ मे० (क) सं.—गद्दा, बिस्तर ।
 मै०११ मे० (क) सं.—मूर्ख मनुष्य ।
 मै०११ मे० (क) सं.—देह, शरीर, शरीर का भाग ।
 मै०११ मे० (क) सं.—आभा, चमक, पालिश ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—घूम, इठला, अकड़ से घूम ; दीख, प्रकाशित हो ।
 मै०११ मे० (क) सं.—उत्सव, जुलूस ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—दे, मारना ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—दे, मारना । सं.—चमक, आभा, दीप्ति ।

(१) मै०११ मे०, 'मै०११ मे०, मै०११ मे०, मै०११ मे० (क) क्रि.—चबा ।
 (२) मै०११ मे० (क) सं.—पका हुआ फल ।
 मै०११ मे० (क) सं.—पागुर, जुगाली ।—अड्डा (क) क्रि.—पागुर कर, किसी चीज़ को चबा ।
 मै०११ मे० (क) अ.—धीरे, शनैः, आहिता ।
 मै०११ मे० (क) सं.—झाड़ियों का समूह, कुंज ।
 मै०११ मे० (क) सं.—काना ।
 मै०११ मे० (क) सं.—काली मिर्च ।
 मै०११ मे० (क) वि.—मै०११ मे०, मै०११ मे० —ऊपरी ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—चर, घास खा (पशुओं का चरना) । सं.—बकरी की 'मे-मे' ध्वनि ।
 मै०११ मे० (क) सं.—स्पर्धा, होड़ ।
 मै०११ मे० (क) सं.—बकरी ।
 मै०११ मे० (क) सं.—मेखला, करधनी, कमरबन्द, किंकणी ।
 मै०११ मे० (क) सं.—ऊपरी भाग ।
 मै०११ मे० (क) सं.—बादल, वारिद । —वाहन (सम्) सं.—इन्द्र ; शिव ।
 मै०११ मे० (क) वि.—काला, श्यामल । सं.—अंधकार, कालापन ।
 मै०११ मे० (अ. दे.) सं.—मेज़ (फ़ारसी) ।
 मै०११ मे० (क) सं.—मोजा ।
 मै०११ मे० (क) सं.—महानता, बड़प्पन ; प्रधान या मुख्य सेवक : खलिहान का खूँटा ।
 मै०११ मे० (क) सं.—औदुम्बर वृक्ष ; गूलर का पेड़ ।
 मै०११ मे० (क) सं.—टीला, ऊपर उठी हुई भूमि ।
 मै०११ मे० (क) अ.—और फिर, तथा, अति-रिक्त ; या, अथवा ।
 मै०११ मे० (तद्) सं.—मोम ।

मै०११ मे० (क) अ.—दे. मै०११.
 मै०११ मे०, मै०११ मे०, मै०११ मे० (क) सं.—टोकरी, चटाई आदि बनानेवाला ।
 मै०११ मे० (सम्) सं.—पृथ्वी, भूमि ।
 मै०११ मे० (सम्) वि.—स्निग्ध, कोमल, चिकना । सं.—चर्वी ।
 मै०११ मे० (सम्) सं.—यज्ञ ; यज्ञीय पशु ।
 मै०११ मे०, मै०११ मे०, मै०११ मे० (क) सं.—पालकी । (सम्) सं.—हिमालय की पत्नी का नाम ।
 मै०११ मे०, मै०११ मे० (क) सं.—चारा । —गाड़ गाड़—चरागाह ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—चरवा, चरने दे ।
 मै०११ मे० (क) क्रि.—चर, घास खा ।
 मै०११ मे० (सम्) सं.—मेखल, सुरगिरि ।
 मै०११ मे० (क) सं.—राशि ; टीला, उन्नत स्थान ।
 मै०११ मे० (तद्) सं.—मर्या (तत्) ; सीमा, हद, सरहद ।
 मै०११ मे०, मै०११ मे० (क) अ.—ऊपर ; पर ।
 मै०११ मे० (क) वि. और अ.—ऊपर का, उन्नत, श्रेष्ठ, अच्छा ।
 मै०११ मे० (क) सं.—ऊपरी वस्त्र, उत्तरीय ।
 मै०११ मे० (क) सं.—ऊपर की पंक्ति ।
 मै०११ मे० (क) सं.—ओढ़नी ; उत्तरीय, ऊपर का वस्त्र ।
 मै०११ मे० (क) अ.—दे. मै०११.
 मै०११ मे० (क) सं.—चारा ।
 मै०११ मे० (सम्) सं.—मेड़ ; मेघराशि ।
 मै०११ मे० (अ. दे.) सं.—मिस्तरी, कारी-गर, राज ।
 मै०११ मे०, मै०११ मे० (सम्) सं.—पेशाब : पेशाब करने की क्रिया ; पेशाब की बीमारी ।
 मै०११ मे० (तद्) सं.—समागम, संयोग, जमाव ; मेला ; विनोद, तमाशा ; शहनाई ; वाद्य विशेष ।

०९६३० मेळविसु (तद्) क्रि.—मिला, जमा कर, संयुक्त कर ।

०९६३० मैत्रि (सम्) सं.—मित्रता; दोस्ती ।

०९६३० मैनाक (सम्) सं.—एक पर्वत का नाम जो हिमालय का पुत्र माना जाता है ।

०९६३० मैलि (अ. दे.) सं.—मील ।

०९६३० मैलिगे (क) सं.—अशुद्धि, अशुचि ।

०९६३० मोंड (तद्) वि.—‘(मुण्ड’ से)—कटा हुआ, छोटा । सं.—हठी पुरुष ।

०९६३० मोंडु मोंडुडन मोंडुतन (क) सं.—हठवादिता, जिद्दी स्वाभाव ।

०९६३० मोंकळ, मोंगळ मोगगर (क) सं.—राशि, ढेर, श्रणी ; भीडि ; अधिकता, विपुलता ।

०९६३० मोंक्ता (तद्) अ.—मुखतः, सामने ।

०९६३० मोंग (तद्) सं.—मुख, चेहरा ।

०९६३० मोंगचु (क) क्रि.—दे. मोंगळु.

०९६३० मोंगसु (क) क्रि.—कटिबद्ध हो, तैयार हो; काम में लग ; दूट पड़, घेर, आक्रमण कर । सं.—इच्छा, अभिलाषा ।

०९६३० मोंगळु (क) सं.—छत का जोड़ ।

०९६३० मोंगुबु, मोंगु मोंगु (क) सं.—शिशु, बच्चा ।

०९६३० मोंगे (क) क्रि.—भर ले, बड़े बर्तन में से छोटे बर्तन में पानी निकाल ; घेर, आक्रमण कर ; अधिक हो । सं.—मिट्टी का बर्तन विशेष । वि.—उपजाऊ ।

०९६३० मोंगु, मोंगु मोंगे (क) सं.—कलिका, कली ।

०९६३० मोंटकु (क) वि.—छोटा, कटा हुआ ।

०९६३० मोंटु (क) क्रि.—किसी के सिर पर मुष्टि-प्रहार कर, धूँसा दे । सं.—मुष्टि-प्रहार ।

०९६३० मोंटु (क) सं.—अण्डा ; नारियल का रेशा ।

०९६३० मोंडवि (क) सं.—चेहरे पर छोटा मुहासा ।

०९६३० मोंणकालु (क) सं.—घुटना ।

०९६३० मोंणकै (क) सं.—कोहनी ।

०९६३० मोंत्त (क) सं.—राशि; ढेर, गिरोह, समूह, निकर ।

०९६३० मोद, मोदळ मोदळ, मोदळु मोदळु (क) वि.—पहला, प्रथम, पूर्व, आदि ; पहले ।

०९६३० मोदु (क) सं.—पिण्ड, राशि ; बुद्धपन, बुद्ध ।

०९६३० मोने (क) सं.—नोंक, निशित पदार्थ ; युद्ध, लड़ाई ।

०९६३० मोन्ने (क) सं.—परसों (गया हुआ दिन ।)

०९६३० मोवु (क) सं.—धुँधलापन, अंधेरा, मन्द प्रकाश ।

०९६३० मोम्म, मोम्मग मोम्मग (क) सं.—पोता, पुत्र या पुत्री का पुत्र ।

०९६३० मोरकु (क) क्रि.—चक्र काट, घूम ; गर्व कर ।

०९६३० मोरडि (क) सं.—एक पौधा ; टीला, पहाड़ी ।

०९६३० मोरडु (क) सं.—रुक्षता, खुरखुरापना

०९६३० मोरडे (क) सं.—दे. मोरडि.

०९६३० मोरडु (क) सं.—कलकल ध्वनि ; गर्जन ।

०९६३० मोरे (क) क्रि.—कलकल कर, गर्जन कर, मरमर ध्वनि कर ; फरियाद कर, शिकायत कर ।

०९६३० मोर [मोर मोर] (क) सं.—पछोरने का रूप ।

०९६३० मोरुटे, मोरुले मोरुले (क) सं.—प्रियाल नामक वृक्ष (Buchanamiya latifolia);

०९६३० मोरु (क) क्रि.—गर्जन कर, गरज । सं.—गर्जन ; कराहने की ध्वनि, शिकायत, फरियाद ; आश्रय, बारी ।

०९६३० मोल (क) सं.—खरगोश ।

०९६३० मोले (क) सं.—स्तन, कुच, पयोधर ।

०९६३० मोल्ले (क) सं.—जुही, कुंद ।

०९६३० मोल्लेग (क) सं.—गरीब, कंगाल ।

०९६३० मोसर, मोसरु मोसरु (क) सं.—दही, दधि ।

०९६३० मोसळे (क) सं.—मगर, नक्र ।

०९६३० मोहरं (अ. दे.) सं.—सुहर्ष ।

०९६३० मोळके, मोळके मोळके (क) सं.—अंकुर ।

०९६३० मोळे (क) क्रि.—अंकुर फूट या विकल । सं.—अंकुर ; कीला, लोहे की कील ; सुरसुरी ।

०९६३० मोळु (क) क्रि.—अतिक्रमण कर ।

०९६३० मोळ, मोळ मोळ (क) सं.—एक हाथ (A cubit) की नाप ।

०९६३० मोळु (क) क्रि.—बज उठ ; गरज, गर्जन कर ; बाजा बजा । सं.—वाद्य-ध्वनि ; अशनपार्णि नामक पौधा ।

०९६३० मोळु (क) क्रि.—सिर झुका, नमन कर । सं.—नमस्कार ।

०९६३० मोकु (क) सं.—ऊपर का भाग, शिखर, चोटी ; तना ;

०९६३० मोक्ष (सम्) सं.—मोक्ष, मुक्ति ; मरण ; एक वृक्ष ।

०९६३० मोच (सम्) सं.—मुक्ति, मोक्ष ; केले का वृक्ष ; शोभाजन वृक्ष ।

०९६३० मोचक (सम्) सं.—वैराग्य ; मोक्ष : मुक्ति ; भक्ति ; सेमल या शालमली वृक्ष ; केले का पेड़ ।

०९६३० मोचु (क) सं.—वैधव्य ।

०९६३० मोट (क) वि.—छोटा कटा हुआ ; मूर्ख ।

०९६३० मोटु (क) सं.—टूट ।

०९६३० मोड (क) सं.—मेघ, बादल, वारिद ।

०९६३० मोडि (क) सं.—अस्पष्ट या टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट ।

०९६३० मोत्ते (क) सं.—केले के फूल के ऊपर का आवरण ; बाहरी छिलका ।

०९६३० मोदक (सम्) सं.—मोदक, मिठाई विशेष । वि.—प्रसन्नकारक ।

०९६३० मोदिसु (सम्) क्रि.—प्रसन्न हो ; आनंदित हो ।

०९६३० मोदु (क) क्रि.—मार, पीट, ताड़न कर । सं.—बड़ी फुंसी ।

हुआ; बंधा हुआ; जुए में जुता हुआ, सहित, संयुक्त; निपुण, चतुर।

ॐॐॐ युक्ति (सम्) सं. — मेल, मिलाप, संगम; प्रयोग, उपयोग, व्यवहार; उपाय, ढंग; चलन, रस्म; उपयुक्तता; हेतु; परिणाम; आधार; रचना, संभावना; धातु की मिलावट; अलंकार विशेष।

ॐॐॐ युग (सम्) सं. — जुआ, जुआठ; जोड़ा, जुट; पति-पत्नी; युग, समय या काल, विशेष; चार की संख्या; चार हाथ की नाप; एक दवाई; पुरुष, पुस्त, पीढ़ी; एक वर्ष का समय। — ७० आदि (सम्) सं. — वर्षारंभ, युगादि श्योहार।

ॐॐॐ युग (सम्) सं. — जोड़ा, जुट, संयम, समागम।

ॐॐॐ युद्ध (सम्) सं. — संग्राम, लड़ाई, रण। — ००० रंग (सम्) सं. — युद्धभूमि।

ॐॐॐ युधिष्ठिर (सम्) सं. — धर्मराज।

ॐॐॐ युव, ॐॐॐ युवक (सम्) सं. — जवान, वयस्क, तरुण।

ॐॐॐ युवति (सम्) सं. — जवान स्त्री, युवती।

ॐॐॐ यूक, ॐॐॐ यूके (सम्) सं. — जुआँ, चीलर।

ॐॐॐ यूथ (सम्) सं. — गिरोह, गल्ला, समूह, दल, टोली।

ॐॐॐ यूथ (सम्) सं. — यज्ञस्तंभ, कीर्ति-स्तंभ, जयस्तंभ।

ॐॐॐ यूथि हाकु (तद्) क्रि. — धोखा दे।

ॐॐॐ यूक्त् (सम्) सं. — हल के जुए की रस्सी, चमड़े का तस्मा।

ॐॐॐ योग (सम्) सं. — मिलान, मेल, मिलाप; संसर्ग, स्पर्श, संबध; प्रयोग; ढंग, रीति, तरीका; परिणाम; नतीजा; जुआ; उपयुक्तता; पेशा, धंधा; दगाबाजी, धोखा; उपाय; उत्साह, उद्योग; चिकित्सा; जादू, टोना; प्राप्ति, उपलब्धि; धन-संपत्ति; नियम, आदेश; निर्भरता; शब्द-

विन्यास, शब्दव्युत्पत्ति, पतंजलि का योग दर्शन; ज्योतिष संबन्धी योग विशेष; भक्ति; जासूस, भेदिया, गणित में जोड़; सद्गुण; काया, देह; एक प्रकार की नाव।

ॐॐॐ योगक्षेम (सम्) सं. — कुशल-क्षेम, खैरियत।

ॐॐॐ योगि (सम्) सं. — योगी।

ॐॐॐ योग्य (सम्) वि. — उपयुक्त, योग्य, ठीक, उपयोगी।

ॐॐॐ योग्यते (सम्) सं. — क्षमता, योग्यता लियाकत।

ॐॐॐ योचिसु (सम्) क्रि. — सोच, विचार कर, चिंतन कर।

ॐॐॐ योजने (सम्) सं. — योजना, संयोग; मेल, मिलाप, उपाय।

ॐॐॐ योध (सम्) सं. — योद्धा, सिपाही; युद्ध, लड़ाई।

ॐॐॐ योषे (सम्) सं. — स्त्री; पत्नी।

ॐॐॐ यौवन (सम्) सं. — तारुण्य, जवानी।

ॐॐॐ यौवराज्य (सम्) सं. — युवराज का पद।

ॐ र

ॐ र — कन्नड-वर्णमाला का इकतालीसवाँ अक्षर।

ॐ रंके (क) सं. — बैल का डकारना।

ॐ रंगनाथ (सम्) सं. — नाम; विष्णु।

ॐ रंगभूमि (सम्) सं. — (नाटक का नेपथ्य) रंगमंच।

ॐ रंगवलि, ॐ रंगवलि (सम्) सं. — रंग भरने का काम, रंगपूर, जमीन पर सपेद पत्थर के चूर्ण से चित्र बनाना।

ॐ रंगाजीव (सम्) सं. — चित्रकार।

ॐ रंगोलि (सम्) सं. — दे. ॐ रंगवलि।

ॐ रंजक (सम्) सं. — उत्तेजक; चितेरा; लाल चन्दन; इंगुर।

ॐ रंजिसु (सम्) क्रि. — रंजन कर, प्रसन्न कर; प्रकट हो, शोभित हो, ललित हो।

ॐ रंटे (क) सं. — छोटा हल; मार-पीट, झगड़ा।

ॐ रंटे (सम्) सं. — विधवा स्त्री; वेश्या, स्त्री के लिए एक गाली। — ७० तन = वैधव्य।

ॐ रंध्र (सम्) सं. — छेद, सूराख, बिल; न्यूनता, कमी, दुर्बल अंग।

ॐ रंप (क) सं. — कोलाहल; गड़बड़ी।

ॐ रंषिगे (क) सं. — मोचीका छुरा।

ॐ रंवे (क) सं. — डाली; छोटी शाखा।

ॐ रंभे (सम्) सं. — केले का पौधा; एक अप्सरा का नाम — रंभा; वेश्या; उदक, पानी।

ॐ रंभस् रंभस् रंभस् (सम्) सं. — रफ्तार, वेग, शीघ्रता।

ॐ रंभस् रंभस् (तद्) सं. — रक्त, खून।

ॐ रंभस् रंभस् (तद्) सं. — राक्षस।

ॐ रंभस् रंभस् (तद्) सं. — राक्षसी।

ॐ रंभस् रंभस् (तद्) सं. — रक्षा, रक्षण।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — खून, लहू; लाल रंग; जाफ़ान; राग, अनुराग, प्रेम; तान्त्र। वि. — प्यारा, प्रेमी, प्रिय; सुन्दर, मनोहर।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — रक्त पीनेवाला, राक्षस।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — कुन्दरु की बेल।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — अतिसार का रोग।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — मैसा; एक संवत्सर का नाम।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — रक्षक, देखभाल करने-वाला।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — रखवाली, रक्षा; बचाव, चौकसी।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) क्रि. — रक्षा कर, रख-वाली कर, बचाव।

ॐ रंभस् रंभस् (सम्) सं. — रक्षा, बचाव, रक्षण; विभूति, भस्म; होम करने के बाद अग्नि से निकाली जानेवाली काली राख।

ॐ रंभस् रंभस् (क) सं. — कन्नड के एक छन्द का नाम; व्यर्थ की बात, गप्पे; बखेड़ा।

०३३ रचने (सम्) सं.—रचना, निर्माण, बनावट, बनाने का ढंग; ग्रन्थ; व्यूह-रचना; मानसिक कल्पना।

०३३ रचयिस् (सम्) क्रि.—रचना कर, ग्रन्थ की रचना कर, निर्माण कर।

०३३ रच्ये (क) सं.—बच्चों की चिल्लाहट; हो-हल्ला; किसी रहस्य को सब लोगों के सामने प्रकट करना।

०३३ रज, ०३३ रजस् (सम्) सं.—रज, धूल, मैल; पुष्परज।

०३३ रजक (सम्) सं.—धोबी।

०३३ रजत (सम्) सं.—चाँदी, चाँदी जसा धवल; सोना; निर्मलता, स्वच्छता; मोती का हार या आभूषण; पर्वत विशेष।

०३३ रजनि, ०३३ रजनी (सम्) सं.—रात; दुर्गा; एक पौधा; हरिद्रा, हल्दी।—०३३ रज कर (सम्) सं.—चंद्रमा।—०३३ रज (सम्) सं.—चंद्रमा; राक्षस।

०३३ रजपुत्र (सम्) सं.—राजपूत।

०३३ रजस्, ०३३ रजस्सु (सम्) सं.—धूल, रज; पुष्परज; त्रिगुणों में दूसरा; स्त्रियों का मासिक धम।

०३३ रजस्वले (सम्) सं.—रजस्वला या मासिक धर्मवती स्त्री, सयानी लड़की।

०३३ रजायि (अ. दे.) सं.—रजाई।

०३३ रज्जु (सम्) सं.—रस्सी, डोर; स्त्रियों के सिर की चोटी; शरीरस्थ रंग विशेष।

०३३ रटन (सम्) सं.—प्रसन्नता सूचक चिल्लाहट; रटना, चिल्लाने की क्रिया।

०३३ रटन (क) सं.—शोरगुल, गली देने की ध्वनि।

०३३ रट्ट (क) सं.—दे, रच्ये; दफती, गत्ता, पुस्तक का आवरण।

०३३ रट्टि (तद्) सं.—राट् (तत्) — राजा, शालम; रेड्डी (एक जाति के लोग)।

०३३ रण (सम्) सं.—शोरगुल, कोलाहल; संग्राम, युद्ध; आनन्द।

०३३ रणाजिर (सम्) सं.—युद्धभूमि।

०३३ रणे (क) सं.—डोर; रस्सी।

०३३ रत (सम्) वि.—अनुरक्त, लगाहुआ; प्रसन्न, हर्षित। सं.—हर्ष, आनन्द; मैथुन।

०३३ रति (सम्) सं.—आनन्द, हर्ष, संतुष्टि; अनुराग, प्रेम, प्रीति; कामक्रीडा, सम्भोग; कामदेव की पत्नी का नाम।

०३३ रत्न (सम्) सं.—रत्न, जवाहर, बहुमूल्य पत्थर या कोई पदार्थ।

०३३ रत्नकर (सम्) सं.—कन्नड के प्रसिद्ध कवि का नाम; समुद्र।

०३३ रथ (सम्) सं.—रथ, एक सवारी; घोड़ा; शरीर; चरण, पैर; अवयव, अंग; आनन्द, हर्ष; अभिलाषा; नरकुल, सरपट।

०३३ रथिक (सम्) सं.—सूत, सारथी; गाड़ी पर सवार, रथ का मालिक।

०३३ रदि (सम्) सं.—हाथी।

०३३ रत्न (तद्) सं.—रत्न (तत्); कन्नड के एक प्रसिद्ध कवि का नाम जिन्होंने 'गदा-युद्ध' काव्य की रचना की है।

०३३ रन्ने (तद्) सं.—बहुत सुन्दरी या रूपवती स्त्री।

०३३ रफ्तु (अ. दे.) सं.—रफ्त (फारसी)—भोजना।

०३३ रव्बु (क) क्रि.—धंस जा, घट जा।

०३३ रभस (सम्) सं.—उत्साह, धुन; ताकत, जोर; क्रोध; उग्रता, जबरदस्ती; आनन्द, हर्ष; जोर की ध्वनि।

०३३ रमण (सम्) सं.—आनन्दकारक; प्रिय, पति, आनन्द।

०३३ रमणि (सम्) सं.—रमणी, सुन्दरी युवती; पत्नी।

०३३ रमे (सम्) सं.—पत्नी, गृहिणी; स्त्री; लक्ष्मी; सौभाग्य, किस्मत; संभोग।

०३३ रम्य (सम्) वि.—सुन्दर, रमणीय, मनोहर।

०३३ रय्य (तद्) सं.—संपत्ति; रमणीयता, सौंदर्य।

०३३ रल्लक (सम्) सं.—कंबल, ऊनी वस्त्र; पलक।

०३३ रव (सम्) सं.—शब्द, नाद, ध्वनि, शोर।

०३३ रवदि (क) सं.—ज्वार का पत्ता।

०३३ रवळि (क) सं.—चीख-पुकार, कोलाहल।

०३३ रवळिगे (क) सं.—बाँस की छोटी टोकरी।

०३३ रवळिसु (क) क्रि.—चिल्ला, चीख, पुकार।

०३३ रवानिसु (अ. दे.) क्रि.—रवाना कर, भेज।

०३३ रवि (सम्) सं.—सूर्य; बारह की संख्या; पर्वत; धन, संपत्ति; एक वृत्त का नाम।

०३३ रवे (तद्) सं.—लवः (तत्); रवा, सूजी, अनाज का छोटा टुकड़ा।

०३३ रश्मि (सम्) सं.—प्रकाश की किरण; पलक; रस्सी, डोरी; रास, लगाम; अंकुश।

०३३ रस (सम्) सं.—फल आदि का रस, वृक्षों का रस, सत्व; तरल पदार्थ; जल; शृंगारादि रस; मदिरा, आसव; स्वादिष्ट पदार्थ; चटनी, मसाला; त्रिष; पारा; गोंद; मनोज्ञता, सौंदर्य; शरीरस्थ पदार्थ विशेष; वीर्य; कोई भी खनिज पदार्थ; पडरस; रुचि; उत्साह।

०३३ रसवति (सम्) सं.—रसोई घर।

०३३ रसायण (सम्) सं.—रसायन।

०३३ रसारुह (सम्) सं.—पेड़, वृक्ष।

०३३ रसाल (सम्) सं.—आम का वृक्ष। ईख, ईख विशेष।

०३३ रसिक (सम्) सं.—रसिया मनुष्य, सहृदय मनुष्य, भावुक नर।

०३३ रसिके (सम्) सं.—गन्ने का रस, शीरा; जिह्वा; कमरबन्द; घाव से निकलनेवाला तरल पदार्थ; पीव।

०३३ रसुमे (तद्) सं.—दे, रट्टे।

०३३ रस्ते (अ. दे.) सं.—रास्त, सड़क।

०३३ रहस्य (सम्) सं.—गुप्तावात, मर्म, रहस्य, राज।

०३३ राका, ०३३ राके (सम्) सं.—पूर्णिमा, पूर्णिमा की रात।

००५५ राक्षस (सम्) सं.—निशाचर; कुबेर के एक अनुचर का नाम; एक संवत्सर का नाम।

००५५ राक्षसि (सम्) सं.—राक्षसी, राक्षस की स्त्री।

००५५ राग (सम्) सं.—रंग; लाल रंग; अनु-राग, प्रीति; भाव, भावना; हर्ष, आनन्द; क्रोध, रोष; संगीत में राग, सौंदर्य; मनोज्ञता।

००५५ रागि (क) सं.—एक अनाज, रागी।

००५५ राच (तद्) सं.—राजन् (तत्); क्षत्रियों की एक उपजाति।

००५५ राज (सम्) सं.—राजा, नरेश; प्रधान, नेता, क्षत्रिय; चन्द्रमा; मंन्यासी, घर, मकान; सफेद रंग; काला रंग।

००५५ राजधानि (सम्) सं.—राजधानी, राज्य या देश का मुख्य नगर।

००५५ राजसभे (सम्) सं.—राजसभा, दरबार, आस्थान।

००५५ राजिसु (सम्) क्रि.—प्रकाशित हो, चमक, लसित हो, विराजमान हो।

००५५ राजीनामे (अ. दे.) सं.—राजी-नामा (फ़ारसी)—इस्तीफ़ा, त्यागपत्र।

००५५ राजीव (सम्) सं.—एक प्रकार की मछली; हिरन विशेष; नील कमल; सिर के केश; पानी, जल; समूह, समुदाय।

००५५ राज्य (सम्) सं.—राज्य (सम्) सं.—शासन, राज्याधिकार।

००५५ राज्यभार (सम्) सं.—शासन, राज्य करना।

००५५ राटण, ००५५ राटणे, ००५५ राटणे, ००५५ राट्णे (क) सं.—चर्खी, रईस; रईस।

००५५ राणि (तद्) सं.—रानी।

००५५ रात्र, ००५५ रात्रि (सम्) सं.—रात, निशा।

००५५ राट्ठांत (सम्) सं.—सिद्धांत, उसूल; तर्क में अति, विभ्रम।

००५५ राम (सम्) वि.—प्रसन्नकार, सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ; कृष्णवर्ण; सफ़ेद। सं.

—रामचंद्र, दाशरथी; परशुराम; बलराम; प्रेमी; हिरन विशेष; घोड़ा।

००५५ राय (तद्) सं.—राजन् (तत्)—राजा; राव (आदर-सूचक शब्द)।

००५५ रायि (क) सं.—पत्थर, ककड़; इजेहर Rubber)।

००५५ रावि (क) सं.—बोधि वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपल का पेड़।

००५५ रावुत, ००५५ राहुत, ००५५ राव्त (क ?) सं.—घुडसवार; सिपाही।

००५५ राशि (सम्) सं.—ढेर, समूह; ज्योतिष-में राशि जिनकी संख्या बारह है।

००५५ राष्ट्र (सम्) सं.—राज्य, साम्राज्य; देश, मुल्क; प्रजा, जाति।

००५५ रास (सम्) सं.—गोपों की प्राचीनकाल की एक क्रीड़ा; कोलाहल, शोरगुल।

००५५ रिंवन, ००५५ रिंगण (सम्) सं.—रेंगना, घुटनों चलना; विचलित होना।

००५५ रिक्कट (क) सं.—मौन, चुप्पी, खामोशी।

००५५ रिक्त (सम्) वि.—खाली, रीता; दुर्बल, कंगाल।

००५५ रिक्थ (सम्) सं.—उत्तराधिकार या विरासत में मिली हुई संपत्ति।

००५५ रिपु (सम्) सं.—शत्रु, अरि।

००५५ रिसालु, ००५५ रिसाले (अ. दे.) सं.—रिसाला (अरबी), घोड़े की सेना।

००५५ रीढ़े (सम्) सं.—अपमान, तिरस्कार।

००५५ रीति (सम्) सं.—रीति, पद्धति, ढंग, तरह।

००५५ रंजे (क) सं.—पीतल का डोल।

००५५ रंड (सम्) सं.—सिर रहित शरीर; सिर जो शरीर से अलग हुआ हो।

००५५ रंडिके (सम्) सं.—युद्धभूमि; देहली; अलौकिक शक्ति।

००५५ रंद्र (क) वि.—विशाल, मनोहर।

००५५ रुक्म (सम्) वि.—चमकीला, प्रकाश-मान। सं.—सोना।

००५५ रुक्ष (तद्) वि.—रुक्ष (तत्)।

००५५ रुचाळिसु (क ?) क्रि.—तुलन

कर, समता दिखा।

००५५ रुचि (सम्) सं.—स्वाद, ज्ञायका; अभि-लाषा, इच्छा, आनन्द; भूख; आभा, दीप्ति, प्रकाश, चमक; किरण; सौंदर्य।

००५५ रुजु (अ. दे.) सं.—हस्ताक्षर, दस्तखत; प्रमाण, दलील।

००५५ रुद्धु, ००५५ रुब्बु (क) क्रि.—पीस ओखली में ढाक कर पीसना।

००५५ रुद्र (सम्) वि.—भयानक, भयंकर। सं.—शिवजी; ग्यारह की संख्या।

००५५ रुद्राक्षि, ००५५ रुद्राक्षे (सम्) सं.—रुद्राक्ष का पेड़।

००५५ रुधिर (सम्) सं.—रक्त, खून।

००५५ रूपायि (अ. दे.) सं.—रूपया।

००५५ रुमालु (क) सं.—पगड़ी।

००५५ रुक्ष (सम्) सं.—रुक्ष, खुरखुरा, कड़ा, कठोर।

००५५ रुढि (सम्) सं.—प्रचलन, पद्धति, परि-पाटी; जन्म, उत्पत्ति; बढ़ती, फैलाव, वृद्धि, प्रथा; प्रसिद्धि, ख्याति।

००५५ रूप (सम्) सं.—आकार, सूरत, शक्त; स्वभाव, प्रकृति; रीति, ढंग; पहचान; लक्षण; मूल, प्रतिमा।

००५५ रूपक (सम्) सं.—अलंकार विशेष; आकार, सूरत, रूप; मूर्ति, प्रतिकृति; लक्षण; किस्म, जाति; मान या तौल विशेष।

००५५ रूपवति (सम्) सं.—सुन्दरी स्त्री।

००५५ रूपायि (अ. दे.) सं.—रूपया।

००५५ रूपु (तद्) सं.—रूप, आकार; सौंदर्य, चारुता।

००५५ रुहिसु (तद्) क्रि.—रूपित हो, प्रकट हो।

००५५ रेंके (क) सं.—दे. ००५५.

००५५ रेंजे (क) सं.—एक वृक्ष (The tree Mimusus elengi)।

००५५ रेव्हे, ००५५ रेव्हे (क) सं.—डाली, छोटी शाखा।

००५५ रेव्हु (क) सं.—लिखने के लिए उपयोगी सरकण्डा।

०१८० रेकु

०१८० रेकु (क) सं.—पतला पतरा; सोना, सुवर्ण; फूल या दल या पँखुड़ी।

०१८० रेखे (सम्) सं.—रेखा, पंक्ति, लाइन।

०१८० रेगिसु (क) क्रि.—चिढ़ा, क्रुद्ध करा या करवा।

०१८० रेगु (क) क्रि.—रुष्ट हो, क्रुद्ध हो, बिगड़ पड़।

०१८० रेणु (सम्) सं.—धूल, रज; पुष्परज; हथिनी।

०१८० रेणुका, ०१८० रेणुके (सम्) सं.—जमदग्नि की पत्नी और परशुराम की माता; एक दवाई।

०१८० रेवति (सम्) सं.—बलराम की पत्नी का नाम; एक नक्षत्र का नाम।

०१८० रेवु (क) सं.—स्थान, ठहरने का स्थान बन्दरगाह;

०१८० रेक्षि, ०१८० रेक्षे (अ. दे.) सं.—रेशम, रेशमी वस्त्र।

०१८० रेप्ते (अ. दे.) सं. दे.—०१८० रेप्ते

०१८० रेवत (सम्) सं.—धनी पुरुष; पाँचवें मनु का नाम; एक पर्वत का नाम; एक राजा का नाम।

०१८० रेणके (सम्) सं.—दे. ०१८० रेणके

०१८० रेण्डे (क) सं.—दलदल, पंक।

०१८० रोक्क (अ. दे.) सं.—नकद रुपया, रोकड़।

०१८० रोक्कु, ०१८० रोक्के, ०१८० रोजु, ०१८० रोज्जे (क) सं.—दे. ०१८० रोक्के

०१८० रोक्के (क) सं.—दे. ०१८० रोक्के

०१८० रोटी (अ. दे.) सं.—रोटी।

०१८० रोणकु (क) सं.—छलांग, कुदान, छलांग मारना।

०१८० रोक (सम्) सं.—कम्प, प्रकम्प; छिद्र; नाव, जहाज।

०१८० रोग (सम्) सं.—रोग, बीमारी।

०१८० रोगि (सम्) वि.—रोगी, बीमार।

०१८० रोचक (सम्) सं.—भूख; वह दवा जिससे भूख बढ़े। वि.—रुचिकारक, स्वादिष्ट; अनानन्ददायक।

०१८० रोजा (अ. दे.) सं.—गुलाब।

०१८० रोते (क) सं.—गन्दगी, कोई भी गंदा पदार्थ।

०१८० रोदन (सम्) सं.—रोना, रुदन, विलाप।

०१८० रोध (सम्) सं.—रोक, प्रतिबन्ध।

०१८० रोम (सम्) सं.—रोंगटा, रोम।

०१८० रोमंछन रोमांचन (सम्) सं.—पुलकित होना।

०१८० रोष (सम्) सं.—०१८० रोस (तद्) —रोष, क्रोध।

०१८० रोसु (क) क्रि.—जुगुप्सा प्रकट कर, नाक सिकोड़। सं.—दलदल, पंक।

०१८० रोहिणि (सम्) सं.—चौथे नक्षत्र का नाम।

०१८० रौद्र (सम्) वि.—भयंकर, उग्र, प्रचण्ड, क्रोधाविष्ट। सं.—क्रोध; भयंकरता; उत्ताप, गरमी।

०१८० रौप्य (सम्) वि.—चाँदी का। सं.—चाँदी।

०१८० रौरव (सम्) सं.—इक्कीस नरकों में एक।

७८

७८—कन्नड-वर्णमाला का बयालीसवां अक्षर। ७८ रूचि, ७८ रूचि (क) सं.—हाथी और घोड़े का झूल।

७८ रूचिके, ७८ रूचिके (क) सं.—हौदा।

७८ रूक्के, ७८ रूक्के (क) सं.—पर, पंख, डेना।

७८ रूट्टे, ७८ रूट्टे (क) सं.—पर, बाहू, भुजा।

७८ रूप्पे, ७८ रूप्पे (क) सं.—पलक।

७८ रूक्के, ७८ रूक्के (क) सं.—चोली, कुर्ती।

७८ रूक्कट (क) सं.—दे. ०८८ रूक्कट

७८ रूप्प (क) सं.—मेषशाला, बकरी की बांधने की जगह।

७८

७८—कन्नड-वर्णमाला का तैंतालीसवां अक्षर। ७८ लंका, ७८ लंके (सम्) सं.—श्रीलंका, राक्षसराज रावण की राजधानी का नाम।

७८ लंग (अ. दे.) सं.—लहंगा, घाघरा।

७८ लंगोटी (अ. दे.) सं.—कौपीन लंगोटी।

७८ लंघिसु (सम्) क्रि.—लॉव, लंघन कर, पार कर, उलंघन कर।

७८ लंच (क) सं.—घूस, रिश्वत।

७८ लंघन लंपटतन, ७८ लंघन लंपटते (सम्) सं.—लंपटता, काम-वासना; व्यभिचार।

(१) ७८ लंपटे (क) सं.—थकावट, श्रान्ति।

(२) ७८ लंपटे (सम्) सं.—लंपट स्त्री, व्यभिचारिणी।

७८ लंपु (क) सं.—सौंदर्य, चाहता; सुख, शक्ति, ऊँचाई।

७८ लंब (सम्) वि.—लम्बा, प्रशस्त, बड़ा।

७८ लंबल, ७८ लंबल (तद्) सं.—लम्बनम् (तद्)—बड़ा हार, गले का हार जो नाभि तक लटकता हो।

७८ लंबाडि, ७८ लंबाडि लम्बाणि, ७८ लम्बाणि (अ. दे.) सं.—एक बनजारा जाति।

७८ लंबोदर (सम्) सं.—विनायक गणेश।

७८ लंकुट, ७८ लंकुट (सम्) सं.—लाठी, डंडा।

७८ लंकुमण (तद्) सं.—लक्ष्मण; (तद्)।

७८ लंकोट, ७८ लंकोट (क) सं.—लफाफा।

७८ लंकण (तद्) सं.—लक्षणम् (तद्)।

७८ लंकि, ७८ लंकि (क) सं.—इन्द्राणि या शेफालिका वृक्ष।

७८ लत्तक (सम्) सं.—चिथड़ा, फटा हुआ कपड़ा; लाख।

७६ लक्ष (सम्) सं.—चिह्न, पहचान, निशाना ; दिखावट, बहाना ; एक लाख (संख्या) ।

७६० लक्षण (सम्) सं.—चिह्न, पहचान ; किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे वह पहचानी जाय ; परिभाषा ; शुभ या अशुभ चिह्न, विशिष्टता, उत्तमता ।

७६१ लक्ष्मि (सम्) सं.—सौभाग्य, समृद्धि ; संपत्ति ; लक्ष्मी ; धनी या सुन्दरी स्त्री ; स्त्रियों का नाम ; एक पौधे का नाम ; आभ्रवृक्ष ; हल्दी ।

७६२ लक्ष्य (सम्) सं.—निशाना, चिह्न ; लक्ष्य, उद्देश्य ; ध्यान, विचार ; बहाना, बनावट, कपट ।—७६३ लोडु (सम्) क्रि.—ध्यान दे (मुह.) ।

७६४ लगान, ७६५ लगाम, ७६६ लगामु (अ. दे.) सं.—लगाम (फ़ारसी), रास ।

७६७ लगने (तद्) सं.—संगीत के स्वरों का मेल ।

७६८ लग्न (सम्) सं.—लग्न, शुभ कार्य करने का शुभ मुहूर्त ; विवाह, शादी : वह समय जब सूर्य किसी राशि में जाता है ; भाट, प्रातःकाल राजा को उठानेवाला ; मदगज, मस्त हाथी ; दिन या रात का १/१२ भाग । वि.—लग्ना हुआ ; चिपटा हुआ ।

७६९ लग्नीच लघ्नपत्रिके (सम्) सं.—विवाह (या उपनयन) का निमंत्रण-पत्र ।

७७० लघु (सम्) वि.—हल्का ; छोटा ; संक्षिप्त ; शीघ्र, जल्दी ; निर्बल ; नीच, निस्सार ; कोमल, मृदुल ; मनोज्ञ, अच्छा ; अभागी ; चंचल । सं.—काला अगर ।

७७१ लज्जा, ७७२ लज्जे (सम्) सं.—लज्जा, शर्म, लाज ।

७७३ लज्जे (तद्) सं.—लज्जा, लाज ।

७७४ लडकटिसु (अ. दे.) क्रि.—[‘लड़-खड़ा’ से ?]—आतुर हो, घबरा. अवि-श्रांत हो ।

७७५ लड्ढिणी (क) सं.—बेलन ।

७७६ लडायि (अ. दे.) सं.—लड़ाई ; झगड़ा, कलह ।

(१) ७७७ लड्डु (क) वि.—निस्सार, निर्बल, कमज़ोर ।

(२) ७७८ लड्डु (अ. दे.) सं.—लड्डु, मिठाई विशेष ।

७७९ लतिके, ७८० लते (सम्) सं.—लता, बेल ।

७८१ लव, ७८२ लवा ; ७८३ लवो (क) अ.—चोम मारने की ध्वनि ।

७८४ लवध (सम्) वि.—प्राप्त हो, उपलब्ध, पाया हुआ, लिया हुआ ।

७८५ लभिसु (सम्) क्रि.—प्राप्त हो, उप-लब्ध हो ।

७८६ लय (सम्) सं.—लीनता, मग्नता, लीन होना ; एकाग्रता ; नाश ; संगीत का ताल ; विश्राम स्थान ; आलय ; मानसिक अकर्षण्यता ; आलिंगन ।

७८७ ललन (सम्) सं.—क्रीड़ा, खेल, आमोद ७८८ ललने (सम्) सं.—स्त्री, रमणी ; कामिनी स्त्री ।

७८९ ललाट (सम्) सं.—माथा, भाल ।

७९० ललाम (सम्) सं.—तिलक, बिंदी ; चिह्न, निशान ; अच्छा लक्षण ; ध्वज, पताका ; प्राधान्य, गौरव, महानता ; आभूषण ; सींग, श्रृंग ; सॉड, बैल ; घोड़ा ; सूर्य ; चंद्रमा ; अग्र, नौक ; अंश, किरण ; लाल रंग ; धवल वर्ण ; लाख ; क्रीडा-कैली ; नाद, स्वर ।

७९१ ललित (सम्) वि.—मनोहर, सुन्दर ; क्रीडासक्त ; प्रिय, उत्तम ; कोमल ; सीधा सं.—क्रीडा, खेल ; आमोद-प्रमोद ।

७९२ ललिते (सम्) सं.—स्त्री ; स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।

७९३ लल्ले (तद्) सं.—प्रेम, स्नेह, प्रीति ; सुवन ।

७९४ लव (सम्) अ.—थोड़ा, अत्यल्प परि-माण । सं.—लौंग ; जायफल ।

७९५ लवंग (सम्) सं.—लवंग का पौधा, लौंग ।

७९६ लवण (सम्) सं.—नमक, समुद्री नमक ।

७९७ लवणि ; ७९८ लवणे (तद्) सं.—चमक, सौंदर्य, दीप्ति ; अंगविन्यास, आगे-पीछे झुकना ।

७९९ लवलविके (क) सं.—औत्सुक्य, तत्परता ; लालसा ।

८०० ललुन (सम्) सं.—लहसुन ;

८०१ ललित (सम्) वि.—मनोहर, सुन्दर ; प्रादुर्भूत, प्रकट हुआ ।

८०२ लस्तक (सम्) सं.—धनुष का मध्य-भाग ।

८०३ लहरि (सम्) सं.—लहर, तरंग ।

८०४ लल्लि (क) सं.—केकड़ा ।

८०५ लालंगल (सम्) सं.—हल ; ताड़ का वृक्ष ।

८०६ लालंगूल (सम्) सं.—पूँछ ।

८०७ लालंछन (सम्) सं.—चिह्न, निशान ; नाम, संज्ञा ; धब्बा, दाग, लांछन ; भूसीमा ।

८०८ लांत्र, ८०९ लांद्र (अ. दे.) सं.—(Lantern) (अंग्रेज़ी) ; लालटेन !

८१० लांवि (तद्) सं.—लकड़ी का बड़ा टुकड़ा ।

८११ लाक्षणिक (सम्) सं.—लाक्षणिक. वह जो लक्षणों को जानता हो ।

८१२ लाक्षा, ८१३ लाक्षे (सम्) सं.—लाख ; लाख का कीड़ा ।

८१४ लागायितु, ८१५ लागायु (अ. दे.) अ.—से, लेकर, प्रारम्भ से ।

८१६ लाका लागा हाकु, ८१७ लाका लागा होड़े (क) क्रि.—कलैया मार, कलैया खा, हार जा ।

८१८ लाघव (सम्) सं.—लघुता ; अल्पता, हल्कापन ; असम्मान, तिरस्कार ; तत्परता फुर्ती ।

८१९ लाज, ८२० लाज (सम्) सं.—लावा, खील ।

८२१ लाटिसु (क) क्रि.—मार, ताड़न कर ।

(१) ८२२ लाडि, ८२३ लाळि (क) सं.—चिमटा ।

(२) ८२४ लाडि (अ. दे.) सं.—नाड़ा ।

८२५ लाहु (अ. दे.) सं.—लड्डु ।

ॐ ई ई लौकिक (सम्) वि. — सांसारिक, साधारण, मामूली ।

ॐ व

ॐ व — कन्नड-वर्णमाला का ४४ वां अक्षर ।
ॐ व (क) प्र. — 'वाला' अर्थसूचक (क्रिया के साथ) उदा. — ॐ व विडुव — छोड़नेवाला (या छूटनेवाला), ॐ व बरुव — जानेवाला, ॐ व होगुव — जानेवाला ।

ॐ वं क (तद्) वि — वक्र, टेढ़ा ; तिरछा ।
ॐ वं कि (क) सं. — एक आभरण ; एक प्रकार का चाकू या तलवार ; एक प्रकार का अंकुश ।

ॐ वं डि (क) सं. — एक प्रकार का आयुध ; छुरा ।

ॐ वं ग (सम्) सं. — बंगाल ; सीसा ; टीन ।

ॐ वं ग (क) सं. — समूह, समुदाय, भीड़ ।

ॐ वं ग (क) सं. — सोना, सुवर्ण ।

ॐ वं च (सम्) सं. — धोखा देनेवाला, धोखेबाज़, छलिया । ॐ वं च कि — स्त्री. लिं. ।

ॐ वं च न, ॐ वं च ने (सम्) सं. — छल, कपट, धोखा, प्रवञ्चना ।

ॐ वं च ल (सम्) सं. — नरकुल या बैत ।

ॐ वं च क (सम्) सं. — बँटवारा ; बाँटनेवाला ; हिस्सा ; अंश ।

ॐ वं च (सम्) सं. — नौकर, चाकर ; अविवाहित पुरुष ; बर्छा, शूल ।

ॐ वं च (सम्) प्र. — 'वान्' के अर्थ में, जैसे — ॐ वं च गुणवन्त — गुणवान्, ॐ वं च बुद्धिवन्त — बुद्धिमान् ।

ॐ वं च न, ॐ वं च ने (सम्) सं. — अभिवादन, नमस्कार ; पूजा, अर्चना ; सम्मान ; प्रशंसा ।

ॐ वं च र, ॐ वं च रे (क) सं. — छलनी ।

ॐ वं चि (सम्) सं. — मागध, सूत, भाट ।
ॐ वं च (सम्) वि. — वन्दन करने योग्य, वन्दनीय, पूज्य, प्रणम्य ।

ॐ वं चि (क) सं. — दे. ॐ वं चि.

ॐ वं च्या, ॐ वं च्ये (सम्) सं. — बाँझ ।

ॐ वं च (सम्) सं. — वंश, कुल, घराना ; बांस ; रीढ़ की हड्डी ; समूह ; तपस्या ; शहतीर, बल्ली, लट्ठा ; गन्ना, ईख ; जल, पानी ; साल वृक्ष ।

ॐ वं चि (सम्) सं. — मुरली, बांसुरी ।
ॐ वं चि वकालत्तु (अ. दे.) सं. — वकालत ।
ॐ वं चि वकील (सम्) सं. — वकील, प्लीडर ।
ॐ वं चि वक्तव्य (सम्) सं. — कथन, वक्तृता ; विषय ; नियम ।

ॐ वं चि वक्त्र (सम्) सं. — मुख, चेहरा ।
ॐ वं चि वक्र (सम्) वि. — वक्र, टेढ़ा, बांका ; घुंगुराला ; निष्ठुर, कठोर ; अकरुण ; धोखेबाज़ ।

ॐ वं चि वक्रोक्ति (सम्) सं. — एक अलंकार का नाम ।

ॐ वं चि वक्ष, ॐ वं चि वक्षस् (सम्) सं. — छाती ; कुच, चूची ।

ॐ वं चि वचन (सम्) सं. — बोलने की क्रिया, वाणी, बात, कथन, पाठ, पुनरावृत्ति ; उक्ति, वानी ; परामर्श, सलाह ; वर्णन, बयान ; शब्दार्थ ; व्याकरण में वचन (एकवचन, बहुवचन) ।

ॐ वं चि वज्र (अ. दे.) सं. — वज्र (अरवी) ; भार, बोझा ।

ॐ वं चि वजा (अ. दे.) सं. — निकालना, रद्द करना, हटाना । — ॐ वं चि माडु = रद्द कर, हटा ।

ॐ वं चि वज्र (सम्) सं. — हीरा ; इन्द्र का वज्र ; इस्पात, अबरक ; एक पौधा विशेष । वि. — कड़ा, कठोर ।

ॐ वं चि वट (सम्) सं. — बरगद का पेड़ ; रस्ती, डोरी, बन्धन ; गोली, छोटी गोलाकार वस्तु ; चपाती ; कौड़ी ; कामदेव ; हाथी का मद ; जूठन ; वृत्त, गोल आकार ।

ॐ वं चि वटार ; ॐ वं चि वटार (क ?) सं. — जगह, स्थान ; घरों का समूह, वह स्थान जहाँ चार-पाँच घर एक अहाते में हों ।

ॐ वं चि वटगुट्ट (क) कि. — मेंढक का 'टर टर' आवाज़ करना ।

ॐ वं चि वटवाग्नि (सम्) सं. — बड़वानल, दावाग्नि ।

ॐ वं चि बड़ि (क) सं. — गरमी, उष्णता ।

ॐ वं चि वड़े (तद्) सं. — बड़ा, उड़द की दाल से बना बड़ा ।

ॐ वं चि वणिज्य, ॐ वं चि वणिज्ये (सम्) सं. — व्यापार, सौदागरी ।

ॐ वं चि वत्स (सम्) सं. — बछड़ा ; बेटा, संतान ; संवत्सर ; छाती ; कुच ; निर्मलता ; निशान ; वरुण ।

ॐ वं चि वत्सक (सम्) सं. — छोटा बछड़ा ; दवाई का एक पौधा ।

ॐ वं चि वत्सर (सम्) सं. — वर्ष, संवत्सर ।

ॐ वं चि वद (सम्) कि. — कह, बोल । वि. — बोलनेवाला ।

ॐ वं चि वदन (सम्) सं. — मुख, मुँह ; बोलने की क्रिया ।

ॐ वं चि वदान्य (सम्) वि. — तेज़ बोलनेवाला, सुभाषी ; उदार ।

ॐ वं चि वध, ॐ वं चि वधे (सम्) सं. — मारना, हत्या ।

ॐ वं चि वधु, ॐ वं चि वधू (सम्) सं. — पुत्रवधू, पत्नी स्त्री, कौरव ; दुलहिन ।

ॐ वं चि वन (सम्) सं. — वन, जंगल, अरण्य ; बगीचा ; घर, आवास ; सोता, जल ; चमक, कांति ।

ॐ वं चि वनधि (सम्) सं. — समुद्र ।

ॐ वं चि वनमालि (सम्) सं. — विष्णु ; श्रीकृष्ण ।

ॐ वं चि वनरुह (सम्) सं. — कमल ।

ॐ वं चि वनिते (सम्) सं. — वनिता, स्त्री ; पत्नी, प्रेमपात्री]

ॐ वं चि वनेजमित्र (सम्) सं. — सूर्य ।

ॐ वं चि वन्य (सम्) वि. — वनसंबन्धी, जंगली । सं. — वन की पैदावार ।

ॐ वयु

ॐ वयु (सम्) सं. — शरीर, देह; व्यक्ति, पुरुष, रूप, आकार।

ॐ वयु (सम्) सं. — वपा, चर्बी, बसा; मन्त्र, गुफा, चींटियों द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला।

ॐ वयु (सम्) सं. — कै; वह जल जिसे हाथी अपनी सूंड में भरकर फेंकता है।

ॐ वयु (सम्) सं. — कै, उल्टी, थूक; अग्नि में आहुति देना।

ॐ वयु (सम्) सं. — चींटी।

ॐ वयु, ॐ वयु (क) क्रि. — ले जा, उठा ले जा, डो।

ॐ वयु, ॐ वयु (सम्) सं. — वय, उम्र, आयु।

ॐ वयु (सम्) सं. — समवयस्क, सहयोगी, मित्र।

ॐ वयु (सम्) सं. — ॐ वयु ओयार — नाज, नखरा, सुंदर चाल या वेश-भूषा।

ॐ वर (सम्) सं. — चुनाव, पसंदगी; व दान, आशीर्वाद, भेंट; पुरस्कार; याचना, विनय; दूल्हा, वर; दामाद; गौरवा पक्षी; लंपट आदमी, केसर। वि. — श्रेष्ठ, उत्तम, सर्वोत्तम, बेहतर।

ॐ वरु (अ. दे.) सं. — वरक।

ॐ वरु (सम्) सं. — दहेज।

ॐ वरु (सम्) सं. — वार्ता (तत्); समाचार, रिपोर्ट।

ॐ वरु (सम्) सं. — वर, दूल्हा; प्रेमी, पति।

ॐ वरु (सम्) सं. — वर और वधू का ठीक जोड़ा।

(१) ॐ वरु, ॐ वरु (क) सं. — पंक्ति, कतार, श्रेणी, जाति; नस्ल।

(२) ॐ वरु (तद्) सं. — बारी, दफा।

ॐ वरु (सम्) सं. — कौड़ी; रस्सी, धोरी; कमलगट्टा।

ॐ वरु (सम्) सं. — सुअर, शूकर; विष्णु का वराह अवतार।

ॐ वरु (क ?) सं. — एक राग का नाम।

ॐ वरि, ॐ वरि (क) सं. — सीमा, हद्द।

ॐ वरि (सम्) वि. — सर्वोत्तम, सब से बड़ा, सब से विस्तृत, सब से भारी।

ॐ वरुण (सम्) सं. — जलदेवता वरुण।

ॐ वरुण, ॐ वरुण (तद्) सं. — वर्ष, साल।

ॐ वरुण (सम्) सं. — लोहे की चद्दर या आवरण; बख्तर, कवच; ढाल; समूह, समुदाय।

ॐ वरुण (सम्) सं. — समूह; सेना।

ॐ वरुण (सम्) वि. — सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, मुख्य।

ॐ वरुण (सम्) सं. — मेमना; पालतू जानवरों का वच्चा।

ॐ वर्ग (सम्) सं. — श्रेणी, विभाग, कक्षा, जमात, जाति, समुदाय; दल, टोली, पक्ष; ग्रन्थविभाग, प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद; दो समान अंकों या राशियों का गुणनफल; शक्ति, ताकत।

ॐ वर्ग (सम्) सं. — वर्ण, वर्ण; तेज, कांति, दीप्ति, प्रभाव।

ॐ वर्ग (सम्) सं. — त्याग, मनाई; वैराग्य; हिंसा, मारण।

ॐ वर्ण (सम्) सं. — रंग; रूपरंग; सौंदर्य; श्रेणी, जाति, किस्म; अक्षर, स्वर; कीर्ति, महिमा; प्रशंसा, स्तुति। चार वर्ण — ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; सोना; केसर; तप, तपस्या; पुष्पहार; इन्द्रिय; मोक्ष, कैवल्य; कलिका, कली।

ॐ वर्ण (सम्) सं. — वर्णना, वर्णन, बखान।

ॐ वर्तक (सम्) सं. — व्यापारी, सौदागर; घोड़े का खुर; फूल, काँसा।

ॐ वर्तने (सम्) सं. — प्रवृत्ति, वृत्ति, प्रवर्तन, स्वभाव, रंग-ढंग।

ॐ वर्तमान (सम्) सं. — वर्तमान काल। वि. — विद्यमान, मौजूद।

ॐ वर्ति (सम्) सं. — दीपक की बत्ती; जाड़ू का दीपक; बर्तन के चारों ओर बाहर

निकला हुआ किनारा; धारी, रेख; एक लेपन।

ॐ वर्तिके (सम्) सं. — बत्ती; चित्तरे की कूची; रंग, रोगन; तीतर, बटेर।

ॐ वर्तिसु (सम्) क्रि. — लग, लागू हो; हो, संभव हो, घूम, आचरण कर; चिपक, लिपट।

ॐ वर्तुल (सम्) सं. — गोलाकार, गोल। ॐ वर्तुल (सम्) सं. — जन्म-दिनोत्सव, सालगिरह, वर्षगांठ।

ॐ वर्तुल (सम्) वि. — बढ़नेवाला, अभिवृद्ध होनेवाला।

ॐ वर्म (सम्) सं. — कवच, बख्तर; छाल; गुद्दा; मर्म।

ॐ वर्ष (सम्) सं. — वर्ष, साल; वर्षा, वृष्टि; दिन; सात द्वीपों का एक विभाग।

ॐ वर्षा (सम्) सं. — वर्षा ऋतु, वर्षा ऋतु का मौसम, पावस।

ॐ वल, ॐ वल (सम्) अ. — सच, मुच, अवश्य, जरूर।

ॐ वल (सम्) सं. — सफेद रंग।

ॐ वल (सम्) सं. — डलवा छत, छत।

ॐ वलय, ॐ वलय (सम्) सं. — चूड़ी, कंगन, कंकण, छल्ला; घेरा।

ॐ वल (क) सं. — स्तानांतरीकरण।

ॐ वल (क) सं. — भरतपक्षी, भरद्वाज पक्षी।

ॐ वल (क) सं. — दे. ॐ वल।

ॐ वल (सम्) सं. — पेड़ की छाल; मछली के शरीर का आवरण या पपड़ी।

ॐ वल (सम्) सं. — पेड़ की छाल का वल।

ॐ वल (सम्) वि. — प्यारा, मनोहर, सुंदर।

ॐ वल (सम्) सं. — सियार, गीढ़।

ॐ वल (सम्) सं. — लगाम, रास।

ॐ वल्मीक (सम्) सं. — विमौट, दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का ढेर।

संस्कृत वल्लिक (सम्) सं.—वीणा ।

संस्कृत वल्लभ (सम्) सं.—प्रेमी, पति, प्रेम-पात्र ; अध्यक्ष, पर्यवेक्षक ; प्रधान ग्वाला या गोप ।

संस्कृत वल्लभे (सम्) सं.—प्रेमिका, प्यारी, पत्नी ।

संस्कृत वल्लयिसु (क) क्रि.—पीछे हट, चले जा ।

संस्कृत वल्लरि (सम्) सं.—लता, वेल ; मंजरी ।

संस्कृत वल्लव (सम्) सं.—रसोड्या ।

संस्कृत वल्लि (सम्) सं.—लता, वेल ।

संस्कृत वल्लूर (सम्) सं.—सूखी मछली ; लतामंडप ; मंजरी ; रेगिस्तान, वीरान ; जंगल ।

संस्कृत वश (सम्) वि.—अधीन, काबू में किया हुआ । सं.—शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण, प्रभुत्व ; इच्छा, कामना, अभिलाषा ।

संस्कृत वशे (सम्) सं.—स्त्री ; पत्नी ; गाय ; बाँझ गाय ; ननद ; हथिनी ।

संस्कृत वसडि, संस्कृत वसडु (क) सं.—जबड़ा ।

संस्कृत वसति (सम्) सं.—निवास स्थान, ठहरने का स्थान, घर ; रात ; सुविधा, आराम ।

संस्कृत वसन (सम्) सं.—वास, रहना ; घर ; वस्त्र, परिधान ।

संस्कृत वसंत (सम्) सं.—वसंत ऋतु, चैत्र-वैशाख मास ।

संस्कृत वसले (क) सं.—वरुण या तिक्तशाक वृक्ष (The tree crataeva roxburghii) ।

संस्कृत वसारे (क) सं.—बरामदा, बैठकखाना ।

संस्कृत वसु (सम्) सं.—धन-दौलत ; रत्न, जवाहर सवर्ण ; जल ; पदार्थ, वस्तु ; लवण विशेष ; एक जड़ी विशेष ; अग्नि ; एक श्रेणी के देवता ; अष्ट वसु (ऐश्वर्य) ; आठ की संख्या ; वस्त्र ; कानन ; अरण्य ; सामीप्य ; लगाम, रास ; बागडोर ; किरण ; सूर्य ; एक वृक्ष (The tree Sesbana gandiflora) ।

संस्कृत वसूल (अ. दे.) सं.—वसूल (अरबी) ; प्राप्ति, उपलब्धि ; लगान, भूमि-कर ।

संस्कृत वस्ति (क) सं.—गीलापन, आर्द्रता (वर्षा के बाद) ।

संस्कृत वस्तु (सम्) सं.—पदार्थ, चीज सारवान ; वस्तु-वास्तविक संपत्ति, धन-दौलत ; किसी नाटक या उपन्यास का कथानक ; खाका, ढाँचा ।

संस्कृत वस्त्र (सम्) सं.—कपड़ा ; रूमाल ।

संस्कृत वस्न (सम्) सं.—भाड़ा, मजदूरी । (तद्) सं.—वसन, कपड़ा ।

संस्कृत वहन (सम्) सं.—ले जाना, पहुँचना ; बहाव ; सवारी ; नाव, वेड़ा ।

संस्कृत वहने (सम्) सं.—नदी, झरना ।

संस्कृत वहिसु (सम्) क्रि.—उठा, वहन कर, ढो, ले जा, स्वीकार कर ; जिम्मेदारी ले ; उपयोग कर ।

संस्कृत वहि (सम्) सं.—आग, अग्नि ।

संस्कृत वल्लय, संस्कृत वल्लेय (तद्) सं.—दे. संल्लय ।

संस्कृत वांछल्यं (तद्) सं.—वात्सल्यं (तत्) ; स्नेह, प्रीति ।

संस्कृत वांछित (सम्) वि.—चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित ।

संस्कृत वांछे (सम्) सं.—वांछा, अभिलाषा, चाह ।

संस्कृत वांति (क) सं.—वमन, कै ।

संस्कृत वांशिक (सम्) सं.—बाँस काटनेवाला ; बंसी बजानेवाला ।

संस्कृत वांश्य (सम्) वि.—बाँस का बना हुआ ।

संस्कृत वाकरिके (क) सं.—कै, वमन

संस्कृत वाक्कु (तद्) सं.—वाक्, वाणी, बात ।

संस्कृत वाक्य (सम्) सं.—भाषण, शब्द, वाक्य, कथन ; आदेश, आज्ञा ।

संस्कृत वागीश (सम्) सं.—बृहस्पति ; ब्रह्मा ; एक व्यक्ति का नाम ; घट जिसका भाषा पर अधिकार हो ।

संस्कृत वाग्देवि, संस्कृत वाग्देवते (सम्) सं.—सरस्वती ।

संस्कृत वाग्मि (सम्) सं.—वाक्पटुता, वाग्मिता, वक्ता, वाग्मी ।

संस्कृत वाङ्मय (सम्) सं.—भाषा, वाणी, वाक्पटुता ; अलंकार शास्त्र ।

संस्कृत वाच्यमे (सम्) सं.—मौन रहनेवाला, मुनि ।

संस्कृत वाचक (सम्) सं.—बतानेवाला, कहने-वाला, व्याख्याता ।

संस्कृत वाचने (सम्) सं.—वाचन, पढ़ना, पाठ ; कथन, घोषणा ।

संस्कृत वाचस्पति (सम्) सं.—बृहस्पति ।

संस्कृत वाचिसु (सम्) क्रि.—पढ़, वाचन कर ; बोल, कह ।

संस्कृत वाच्य (सम्) वि.—कहने योग्य ; अभिधेय ; तिरस्करणीय । सं.—व्याकरण में वाच्य ।

संस्कृत वाजि (सम्) सं.—घोड़ा, अश्व ; बाण, तीर ; पक्षी ।

संस्कृत वाट (क) सं.—भूमि, छत्त आदि का ढलुवा होना ।

संस्कृत वाट्टे (क) सं.—गुठली, आम की गुठली ।

संस्कृत वाडव (सम्) सं.—बड़बानल ।

संस्कृत वाडिके (क) सं.—रुढ़ि, पद्धति, रिवाज ।

संस्कृत वाणि (सम्) सं.—बात, वचन, भाषा ; सरस्वती ।

संस्कृत वाणिग (क) सं.—भूत, शठ, दुष्ट ।

संस्कृत वाणिज (सम्) सं.—व्यापारी, बनिया ।

संस्कृत वाणिज्य (सम्) सं.—व्यपार, सौदा-गरी ।

संस्कृत वात (सम्) सं.—पवन, हवा, वायु देवता ; शरीरस्थ वात ; गठिया ।

संस्कृत वात्सल्य (सम्) सं.—वात्सल्य, छोटों के प्रति प्रेम-भाव ।

(१) संस्कृत वाद (क) सं.—गड़ढा, हाथी को पकड़ने के लिए बनाया गया गड़ढा ।

(२) संस्कृत वाद (सम्) सं.—बातचीत, कथन ; वादन, बजाना ; शास्त्रार्थ, वादविवाद, बहस ; टीका, व्याख्या भाष्य ।

संस्कृत वादि (सम्) सं.—बोलनेवाला, प्रगड़ने-

वाद्य वाद्य

वाला; वक्ता; वादी, मुद्दै; भाष्यकार, शिक्षक ।

वाद्य वाद्य (सम्) सं.—बजाने की ध्वनि ।

वायु वानप्रस्थ (सम्) सं.—चार आश्रमों में तीसरा; महुए का पेड़; पलाश वृक्ष ।

वायु वानर (सम्) सं.—बंदर ।

वायु वानेय (सम्) सं.—कैवर्त सुस्तक ।

वायु वापन (सम्) सं.—बुवाई; मुडन ।

वायु वाम (सम्) वि.—बायाँ; उल्टा; बुरा, दुष्ट; सुन्दर, मनोहर ।

वायु वामन (सम्) सं.—बौना या नाटा आदमी; विष्णु का एक अवतार; दक्षिण दिग्गज का नाम; अंकोट वृक्ष; एक आचार्य का नाम ।

वायु वाग्ने (क) सं.—तृणसंहति, घास का ढेर ।

वायु वायन (सम्) सं.—देवता के लिए मिष्टान्न का नैवेद्य; ब्राह्मण को व्रतादि के समय दिया जानेवाला उपहार (नारियल, चावल आदि) । वायु वागिन—तद् ।

वायु वायिदे (अ. दे) सं.—प्रतिज्ञा, प्रण; निश्चित समय, अवधि; किशन ।

वायु वायु (सम्) सं.—हवा, पवन; पवन-देव; शरीरस्थ पांच प्रकार की वायु (प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान); आकाश, अंतरिक्ष ।

(१) वायु वार (क) वि.—ढलुवा; ढालू । सं.—हिस्सा, भाग, किसानों से भू स्वामी को मिलनेवाला अनाज का हिस्सा ।

(२) वायु वार (सम्) सं.—दिन; ढकना; बड़ी संख्या; समुदाय, ढेर; बारी, दफा; अवसर; नदी के सामने का तट; द्वार, फाटक; पूँछ ।

वायु वारगिति (क) सं.—वायु और गिति—जेठानी या देवरानी ।

वायु वारण (सम्) सं.—हाथी; कवच; रोक, रुकावट, संयम; अडचन; बचाव, रक्षा ।

वायु वारसुदार (अ. दे.) सं.—वारिस (अरबी); उत्तराधिकारी ।

वायु वारांगने, वायु वारस्त्री (सम्) सं.—वेश्या ।

वायु वारि (सम्) सं.—जल, पानी; हाथी को बांधने की रस्सी या जंजीर; हाथी को पकड़ने के लिए बनाया जानेवाला गड्ढा; कैदी, बन्दी, एक औषध ।

वायु वारिस (सम्) क्रि.—दूर कर, हटा; रोक, अवरोध कर ।

वायु वारुणि (सम्) सं.—पश्चिम दिशा; मदिरा, शराब; दूर्वा ।

वायु वारे (क) सं.—दे. वायु (१) ।

वायु वार्ता, वायु वार्ते (सम्) सं.—समाचार, खबर, संवाद; बैंगन का पौधा; आजीविका, धंधा ।

वायु वार्धक्य, वायु वार्धक्य (सम्) सं.—बुढ़ापा ।

वायु वालग (क) सं.—राजसभा, दरबार ।

वायु वालधि (सम्) सं.—लांगूल ।

वायु वालु (क) क्रि.—ढालू हो, झुक ।

वायु वाविलि (क) सं.—सिंधुवार वृक्ष ।

वायु वास (सम्) सं.—निवास, रहना, घर, जगह, स्थान; परिधान, पोशाक ।

वायु वासने (सम्) सं.—वास; गंध, बू; सुगंध ।

वायु वासव (सम्) सं.—इन्द्र ।

वायु वासि (तद्) सं.—('वाचा' से) प्रण, प्रतिज्ञा, शपथ, वचन; अच्छी स्थिति; श्रेष्ठता, उत्तमता ।

वायु वासिसु (सम्) क्रि.—रह, निवास कर; सूँघ, गन्ध ले ।

वायु वास्तव (सम्) वि.—सच, निश्चित, निर्दिष्ट ।

वायु वाहन (सम्) सं.—वाहन, सवारी; रथ, गाड़ी ।

वायु वाहिनि, वायु वाहिनी (सम्) सं.—नदी; सेना; सेना का भाग — ८१

हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और, ४०५ पदाति ।

वायु विंगड (तद्) सं.—('विघटन' से) भाग, विभाग, टुकड़ा, खड़ा ।

वायु विंजु (क) सं.—वृजन पक्षी ।

वायु विंध्याचल (सम्) सं.—विंध्य पर्वत ।

वायु विकच (सम्) वि.—केशहीन; बिखरा हुआ; गंजा ।

वायु विकट (सम्) वि.—बड़ा, भयंकर; कुरूप, उग्र, जंगली ।

वायु विकलते, वायु विकलत्व (सम्) सं.—विकलता, व्याकुलता, चिंता; दुःख ।

वायु विकलांग (सम्) सं.—खण्डित अंगवाला, न्यूनांग, अंगहीन ।

वायु विकल्प (सम्) सं.—वैकल्पिक विषय या बात; संदेह, संकोच, अनिश्चय; हिच-किचाहट; गलती; भ्रम; भोलापन; अविश्वास; बुरा विचार ।

वायु विकार (सम्) सं.—विकृति, कुरूप, भद्दा रूप; परिवर्तन; बीमारी, रोग; मनपरिवर्तन ।

वायु विस्तीर्ण (सम्) वि.—फैला हुआ, व्याप्त ।

वायु विकृत (सम्) वि.—परिवर्तित, बदला; हुआ; बीमार; भ्रम, कुरूप, खंडित ।

वायु विक्रम (सम्) सं.—वीरता, पराक्रम; पग; चलना; एक संवत्सर का नाम ।

वायु विजय (सम्) सं.—महाकवि पंप के महाकाव्य का नाम । इसको 'पंप भारत' भी कहते हैं ।

वायु विक्षेप (सम्) सं.—घबराहट, बेचैनी, विकलता; भय, डर; इधर-उधर हिलना-डुलना; कटाक्ष ।

वायु विख्यात (सम्) वि.—प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त; मान्य ।

वायु विगर्हण (सम्) सं.—धिकार; भर्त्सना, फटकार ।

ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಕ) ಸಂ. — ಭಯಂಕರ ಯಾ
ಆಶ್ಚರ್ಯಜನಕ ವಸ್ತು ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಫೆಲಾವ ; ಆಕಾರ,
ಮूर्ತಿ ; ದೇಹ, ಶರೀರ ; ಶಬ್ದ ಕೊ ಅಲಗು ಕರನಾ ;
ಛಗಡಾ, ಕಲಹ ; ಸಮರ ; ಅಂಶ, ಭಾಗ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಮಾರನಾ ; ವಧ ;
ನಾಶ. ರೊಕ, ಬಚಾವ ; ಅಡ್ಡುಚನ, ಅಡ್ಡುಕಾವ ;
ಪ್ರಹಾರ, ಚೊಡ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಅಡ್ಡುಚನ, ಬಾಧಾ,
ವ್ಯಾಧಾತ ; ವಿರೊಧ ; ಸಂಕಟ ।—೦೦೩ ರಾಜ =
ವಿನಾಯಕ, ಗಣೇಶಜಿ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಚಾರ, ಭಾವನಾ,
ಖ್ಯಾಲ ; ಸಂದೇಹ, ಶಕ. ಹಿಚಕಿಚಾಹುಡ ; ಜಾಂಚ,
ಪರೀಕ್ಷಾ, ಅನುಸಂಧಾನ ; ನಿರ್ಣಯ, ಫೆಸಲಾ ;
ನಿಶ್ಚಯ, ಸಂಕಲ್ಪ ; ಸತರ್ಕತಾ, ಸಾವಧಾನಿ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ವಿ.—ಸುಂದರ, ಮನೊಹರ ;
ಆಶ್ಚರ್ಯಕರ । ಸಂ.—ಕನ್ನಡ ಕೆ ಏಕ ಛಂದ ಕಾ
ನಾಮ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಜಯ, ಜಿತ ;
ಅರ್ಜುನ ಕಾ ನಾಮ ; ವಿಷ್ಣು ಕೆ ದ್ವಾರಪಾಲ ಕಾ
ನಾಮ ; ಏಕ ಸಂವತ್ಸರ ಕಾ ನಾಮ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಭಿನ್ನ ಯಾ ದೂಸರಿ
ಜಾತಿ ; ಜಾತಿಹೀನ ; ನೆಚ ಜಾತಿ ಕಾ ಅಾದಮಿ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸಂತಾನವತಿ ಸ್ತ್ರೀ,
ಮಾತಾ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ವಿ.—ವಿಜಯಾಭಿ.
ಲಾಭಿ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—ಜಂಭಾಡೆ
ಲೆ ; ಪ್ರಸ್ಫುಟಿತ ಹೊ, ಖಿಲ ; ಫೆಲ ; ಆಮೊದ-
ಪ್ರಮೊದ ಕರ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಪನ ವಿಜ್ಞಾಪನ, ವಿಜ್ಞಾ
ಪನ ವಿಜ್ಞಾಪನೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿನಯ, ಪ್ರಾರ್ಥನಾ,
ವಿನತಿ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಜಾರ ; ಕಾಮುಕ, ಲೆಪಟ ;
ವಿಟ ಪುರುಷ ; ಧುರ್ದ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವೃಕ್ಷ ಯಾ ಲತಾ ಕಿ
ಶಾಖಾ, ಡಾಲ ; ಛಾಡೆ ; ಛತನಾರ ವೃಕ್ಷ ; ಅಂಕುರ,
ಕೊಂಪಲ ; ಸಘನ ವೃಕ್ಷೊ ಕಾ ಛುರಮುಡ ।
ವಿಗುಬಣೆ ವಿಗುಬಣೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪೆಡ, ವೃಕ್ಷ ; ವಡ-
ವೃಕ್ಷ ।

ವಿಡಕ ವಿಡಕ (ತದ್) ಸಂ.—ಟೊಕರಿ ।
ವಿಡಂಬ ವಿಡಂಬ, ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ, ವಿಡಂಬರ
ವಿಡಂಬರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ನಕಲ, ಅನುಕರಣ,
ಅನುಕರಣ ಕರಕೆ ಛಿಡಾನಾ ಯಾ ಅಪಮಾನ ಕರನಾ ;
ಕಪಟ, ವಂಚನಾ ; ಛಿಡಾನಾ ; ಸಜಾಕ, ಉಪಾಹಾಸ ;
ಪಿಡುನ ।
ವಿಡಾಯ ವಿಡಾಯ, ವಿಡಾಯಿ ವಿಡಾಯಿ (ಅ. ದೇ.)
ಸಂ.—ಬಡಪ್ಪನ, ಮಹಾನತಾ ।
ವಿಡಾರ ವಿಡಾರ, ವಿಡಾರ ವಿಡಾರ (ಕ) ಸಂ.—
ವಿಕಲತಾ, ಉಪದ್ರವ, ಕಪಟ ।
ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವ್ಯರ್ಥ ಕಾ
ವಾದ ಯಾ ಛರ್ವಾ ।
ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಧವಾ ; ಅಛಾ
ಛೊಡ ।
ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿತರಣ, ವಾಂಟನಾ ;
ಅರ್ಪಣ ; ಉದಾರತಾ ।
ವಿಡರ್ವ ವಿಡರ್ವ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಅನುಮಾನ, ಕಲ್ಪನಾ ;
ವಿಚಾರ, ವಿವಾದ ; ಸಂದೇಹ ।
ವಿಡಂಬನ ವಿಡಂಬನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಫೆಲಾವ, ಅಧಿಕಯ,
ವೃದ್ಧಿ ; ರಾಶಿ, ಡೆರ ; ಮಖ, ಯಜ್ಞ ; ಛಂದೊವಾ,
ಗಾಮಿಯಾನಾ ; ಯಜ್ಞೀಯ ಕುಂಡ ಯಾ ವೇದಿ ; ಅವಸರ,
ಮೊಕಾ ; ಫುರಸತ ; ಶ್ರೀಗ್ರತಾ । ವಿ. — ಶೂನ್ಯ,
ಖಾಲಿ ; ಮೂಲ, ಮೂಡ ।
ವಿಡೆ ವಿಡೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಧನ, ಪೆಸಾ, ಸಂಪತ್ತಿ ;
ವಸ್ತು ।
ವಿಡಗ್ಗ ವಿಡಗ್ಗ (ಸಮ್) ವಿ. — ಜಲಾ ಹುಡಾ ;
ಪಕಾಯಾ ಹುಡಾ ; ಹಜಮ ಕಿಯಾ ಹುಡಾ, ಜೊಣ ;
ನಟ ಕಿಯಾ ಹುಡಾ, ಸಡಾ ಹುಡಾ ; ಛತುರ, ಛಾಲಾಕ ।
ವಿಡ್ಯಾ ವಿಡ್ಯಾ, ವಿಡ್ಯೆ ವಿಡ್ಯೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಡ್ಯಾ,
ಶಿಕ್ಷಾ, ಜ್ಞಾನ, ವಿಡ್ವತ್ತಾ ।
ವಿಡ್ಯುಲೆ ವಿಡ್ಯುಲೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಜಲಿ ।
ವಿಡ್ರವ ವಿಡ್ರವ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪಲಾಯನ, ಛಗಡಾ ;
ಭಯ, ಡರ ; ಬಹಾವ ; ಪಿಘಲನ ।
ವಿಡ್ವತ್ತು ವಿಡ್ವತ್ತು (ಸಮ್) ಸಂ. — ವಿಡ್ವತ್ತಾ,
ಪಾಂಡಿತ್ಯ ।
ವಿಡ್ವಾಂಸ ವಿಡ್ವಾಂಸ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಡ್ವಾನ್, ಪಂಡಿತ ।
ವಿಡ್ವೆ ವಿಡ್ವೆ ವೆಡ್ವೆ ವೆಡ್ವೆ (ತದ್) ಸಂ. —
ವಿಧವಾ ಸ್ತ್ರೀ ।
ವಿಡ್ವಾಂಸ ವಿಡ್ವಾಂಸ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಡ್ವಾನ್, ಪಂಡಿತ ।
ವಿಡ್ವೆ ವಿಡ್ವೆ ವೆಡ್ವೆ ವೆಡ್ವೆ (ತದ್) ಸಂ. —
ವಿಧವಾ ಸ್ತ್ರೀ ।
ವಿಡ್ವಾಂಸ ವಿಡ್ವಾಂಸ (ಸಮ್) ಸಂ.—
ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತಾ ; ಬ್ರಹ್ಮಾ ।

ವಿಡ್ವಾಂಸ ವಿಡ್ವಾಂಸ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಡಂಗ, ತರಿಕಾ ;
ಪದ್ಧತಿ ; ವಿನ್ಯಾಸ ; ಅನುಛಾನ ; ತಂತ್ರ, ಉಪಾಯ ।
ವಿಧಿ ವಿಧಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ವಿಧಿ, ಭಾಗ್ಯ, ಕಿರ್ಮತ ;
ಪ್ರಣಾಲಿ, ಡಂಗ ನಿಯಮ ; ಆಜ್ಞಾ ; ವಿಷ್ಣು ;
ಶ್ರೇಷ್ಠ ವ್ಯಕ್ತಿ, ವಿಡ್ವಾನ್ : ವೈದ್ಯ ; ಸಮಯ, ಕಾಲ ;
ವಿಧ್ಯರ್ಥ (Imperative) ; ಕವಿ ; ಬ್ರಹ್ಮಾ,
ಸೃಷ್ಟಿಕರ್ತಾ ।
ವಿಧಿಸು ವಿಧಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ. — ಆಜ್ಞಾ ದೇ ;
ನಿಶ್ಚಯ ಕರ, ನಿರ್ಣಯ ಕರ, ಲಗಾ ।
ವಿಧಿಯೆ ವಿಧಿಯೆ, ವಿಧಿಯೆ ವಿಧಿಯೆ (ಸಮ್)
ಸಂ.—ಆಜ್ಞಾಕಾರಿತಾ, ವಿನಯಶೀಲತಾ, ವಿನ-
ಮ್ರತಾ । ವಿಧಿಯೆ ವಿಧಿಯೆ = ವಿನಮ್ರ ।
ವಿಧ್ಯಂಸ ವಿಧ್ಯಂಸ (ಸಮ್) ಸಂ.—ನಾಶ, ಬರಬಾದಿ ;
ಮರಣ ; ವೈರ, ಶತ್ರುತಾ ; ತಿರಸ್ಕಾರ, ಅನಾದರ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ, ವಿನಮ್ರ (ಸಮ್) ವಿ. —
ಛುಕಾ ಹುಡಾ, ನವಾ ಹುಡಾ ; ಡೆಡಾ ।
ವಿಧಿಯ ವಿಧಿಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ನಮ್ರತಾ, ಭದ್ರತಾ,
ಭದ್ರ ಆಚರಣ ; ಆಜ್ಞಾಕಾರಿತಾ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ತದ್) — ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್)
ಅ. — ಅತಿರಿಕ್ತ, ಸಿವಾ, ಬಗೈರ, ಅಭಾವ ಮೆ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ನಾಶ, ಬರಬಾದಿ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ನಿರ್ದಿತ, ಗಾಲಿ
ಪಾಯಾ ಹುಡಾ ; ನಿರ್ದಾರಹಿತ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಅದಲಬದಲ ;
ಗಿರವಿ, ಬಂಧಕ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—
ಲಗಾ ; ಕಿಸಿ ಕಾರ್ಯ ಕೆ ಲಿಫ್ ನಿಯುಕ್ತ ಕರ,
ತ್ಯಾಗ ಕರ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ವಿ.—ವಿನಮ್ರ, ಭದ್ರ,
ಸದಾಚಾರಿ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಮನೊರಂಜನ,
ಆಮೊದ-ಪ್ರಮೊದ, ಖೆಲ, ಕ್ರೀಡಾ ; ಹಟಾನಾ, ದೂರ
ಕರನಾ ; ಉತ್ಸುಕತಾ, ಉತ್ಕಂಠಾ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸ್ಥಾಪನ ; ಸಜಾ-
ವಡ, ಧರೊಹರ ; ಸಂಗ್ರಹ, ಸಮೂಹ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಪ್ರತಿಪಕ್ಷಿ ; ಶತ್ರು ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಬಾಜಾರ, ಹಾಡ,
ದೂಕಾನ ।
ವಿಧಿನ ವಿಧಿನ (ಸಮ್) ವಿ.—ಮೃತ, ನಟ, ಖೊಯಾ
ಹುಡಾ ; ಅಭಾಗಾ, ಬದಕಿರ್ಮತ ।

ॐ ईश्वरं विपरीत

ॐ ईश्वरं विपरीत (सम्) वि.—बहुत, अधिक, असंख्य, असामान्य ।
 ॐ ईश्वरं विपाक (सम्) सं.—परिपक्व होना ; पचन ; फल, परिणाम ; कर्म का फल ।
 ॐ ईश्वरं विपत्ति (तद्) सं.—विपदा, विपत्ति, संकट, कष्ट, दुःख ।
 ॐ ईश्वरं विप्र (सम्) सं.—ब्राह्मण ; कवि ; ऋषि ; किरण ; कुश, दर्भा ।
 ॐ ईश्वरं विप्रलम्भ (सम्) सं.—वियोग, विछोह ; प्रेमियों का वियोग ; शृंगार रस का भेद ; झगड़ा, विवाद ।
 ॐ ईश्वरं विप्लव (सम्) सं.—उपद्रव, हंगामा, नाश, बरबादी ; विपत्ति ।
 ॐ ईश्वरं विभक्ति (सम्) सं.—खण्ड, अंश ; व्याकरण में विभक्ति प्रत्यय ।
 ॐ ईश्वरं विभजितु (सम्) क्रि.—खण्ड कर, टुकड़े कर, विभाग कर ।
 ॐ ईश्वरं विभाकर (सम्) सं.—सूर्य ।
 ॐ ईश्वरं विभाग (सम्) सं.—विभाग, अंश, हिस्सा, खण्ड ।
 ॐ ईश्वरं विभाषे (सम्) सं.—दूसरी भाषा ; विकल्प ।
 ॐ ईश्वरं विभु (सम्) सं.—स्वामी, प्रभु, ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
 ॐ ईश्वरं विभूति (सम्) सं.—धन, संपत्ति, ऐश्वर्य ; राख, भस्म ।
 ॐ ईश्वरं विमर्शक (सम्) सं.—आलोचक, समीक्षक ।
 ॐ ईश्वरं विमलत्व (सम्) सं.—निर्मलता, शुद्धता ।
 ॐ ईश्वरं विमुक्त (सम्) वि.—मुक्त, छटा हुआ, त्याग हुआ, त्यक्त ।
 ॐ ईश्वरं विमुख (सम्) वि.—जिसने अपना मुख फेर लिया हो, अमनस्क ; विरुद्ध ।
 ॐ ईश्वरं विमोचिसु (सम्) सं.—विमोचन, कर, बंधन से मुक्त कर, छुटकारा दे ।
 ॐ ईश्वरं विच्यचर (सम्) सं.—पक्षी ; बंदर ; गंधर्व ।
 ॐ ईश्वरं वियुक्त, ॐ ईश्वरं वियुत (सम्) वि.—अलग, पृथक, छोड़ा हुआ, रहित, हीना ।

ॐ ईश्वरं वियोग (सम्) सं.—वियोग, विछोह, विरह ।
 ॐ ईश्वरं विरक्ति (सम्) सं.—वैराग्य, उदासी-नता, विमुखता ; अप्रसन्नता ।
 ॐ ईश्वरं विरल, ॐ ईश्वरं विरल (सम्) वि.—विरल, दुर्लभ ; थोड़ा कम ।
 ॐ ईश्वरं विरहि (सम्) सं.—वियोग सहनेवाला । पुरुष । ॐ ईश्वरं विरहिणि—स्त्री. लिं. ।
 ॐ ईश्वरं विराग (सम्) सं.—वैराग्य, उदासी-नता, आकांक्षाहीनता ।
 ॐ ईश्वरं विराम (सम्) सं.—रोकना, थामना ; अंत. समाप्ति ; ठहराव ; छंद में यति ; फुरसत ; अवकाश ।
 ॐ ईश्वरं विरोचन (सम्) सं.—सूर्य ; चंद्रमा ; अनल, अग्नि ; बलि के पिता का नाम, एक राक्षस ; बालक ।
 ॐ ईश्वरं विरोध (सम्) सं.—विपरीतभाव, शत्रुता, वैर, झगड़ा, विवाद ।
 ॐ ईश्वरं विलक्षण (सम्) वि.—अद्भुत, अनोखा ; लक्षणहीन ; भिन्न ।
 ॐ ईश्वरं विलंबि (सम्) सं.—एक संवत्सर का नाम ।
 ॐ ईश्वरं विलसित (सम्) वि.—चमकदार, प्रकाशमान, सुन्दर, मनोज्ञ ; प्रकट, प्रादुर्भूत ।
 ॐ ईश्वरं विलाप (सम्) सं.—विलाप, रुदन, क्रंदन ।
 ॐ ईश्वरं विलायति (अ. दे.) वि.—विलायती, विलयत से संबंधित ; विलायत ।
 ॐ ईश्वरं विलास (सम्) सं.—क्रीड़ा ; खेल, अमोद-प्रमोद, आह्लाद, सुखभोग ; मनोरंजन ; हाव-भाव, नाज़-नखरा ; सौंदर्य ।
 ॐ ईश्वरं विलीन (सम्) वि.—लगा हुआ, सटा हुआ, बैठा हुआ, डूबा हुआ ; छिपा हुआ ।
 ॐ ईश्वरं विलेपन (सम्) सं.—अंगराग, लेप, शरीर पर लगाने का सुगंध द्रव्य ।
 ॐ ईश्वरं विलोकन (सम्) सं.—देखना, अवलोकन, चितवन ।
 ॐ ईश्वरं विलोचन (सम्) सं.—आँख, नयन, नेत्र ; सूर्य ।

ॐ ईश्वरं विलोम (सम्) सं.—विपरीत क्रम, उल्टी रीति ।
 ॐ ईश्वरं विलोल (सम्) वि.—हिलने-डुलने-वाला, काँपनेवाला, चंचल ।
 ॐ ईश्वरं विवक्षितु (सम्) क्रि.—कहने या बोलने की इच्छा रख ; इच्छा कर ।
 ॐ ईश्वरं विवध (सम्) सं.—जुआठा ।
 ॐ ईश्वरं विवरणे (सम्) सं.—विवरण, व्यौरा, प्रकटन, प्रकाशन ।
 ॐ ईश्वरं विवर्णिसु (सम्) क्रि.—वर्णन कर, बखान कर ।
 ॐ ईश्वरं विवाक (सम्) सं.—जज, न्यायाधीश ।
 ॐ ईश्वरं विवाद (सम्) सं.—झगड़ा, कलह, प्रतिवाद ; मुकदमा ।
 ॐ ईश्वरं विवाह (सम्) सं.—शादी, परिणय ।
 ॐ ईश्वरं विविक्त (सम्) वि.—पृथक किया हुआ ; निर्जन, एकांत ; विवेकी ; पापरहित ; विशुद्ध ।
 ॐ ईश्वरं विवेक (सम्) सं.—सत् असत् का ज्ञान, समझ, बुद्धि, सत्यज्ञान ।
 ॐ ईश्वरं विवेचने (सम्) सं.—विवेक ; निर्णय, फैसला ।
 ॐ ईश्वरं विशदीकरिसु (सम्) क्रि.—स्पष्ट कर, वर्णन कर, विस्तार कर ।
 ॐ ईश्वरं विशाखे (सम्) सं.—विशाख नक्षत्र ।
 ॐ ईश्वरं विशारद (सम्) वि.—बुद्धिमान, चतुर ; कुशल, निपुण, पंडित ।
 ॐ ईश्वरं विशाल (सम्) वि.—बड़ा, महान्, लंबा-चौड़ा ; प्रशस्त ।
 ॐ ईश्वरं विशीर्ण (सम्) वि.—टूटा-फूटा ; सड़ा हुआ ; मुरझाया हुआ ; गिरा हुआ, पतित ; झुर्रियाँ पड़ा हुआ ।
 ॐ ईश्वरं विशुद्ध (सम्) वि.—साफ़, शुद्ध, पवित्र, पापरहित, ईमानदार ।
 ॐ ईश्वरं विशेष (सम्) सं.—विशिष्टता, विलक्षणता ; वैचित्र्य ;
 ॐ ईश्वरं विशेषण (सम्) सं.—व्याकरण में प्रयुक्त विशेषण ; अंतर, भेद ; किस्म, जाति ।
 ॐ ईश्वरं विशेषते, ॐ ईश्वरं विशेषत्व (सम्) सं.—दे. ॐ ईश्वरं.

विश्रमिसु विश्रमिसु (सम्) क्रि — आराम कर, विश्राम ले ।
 विश्रुत (सम्) वि.—प्रसिद्ध, प्रख्यात ।
 विश्लेष (सम्) सं. — अनैक्य, पार्थक्य ; वियोग. शोक ।
 विश्व (सम्) सं. — संसार, समस्त ब्रह्मांड ; विष्णु, शिव, परमात्मा ; गोपुर ; सोंठ ; तेरह की संख्या ; संस्कृत के एक कोश का नाम ।
 विश्वकर्म (सम्) सं. — विश्वकर्मा, देवताओं का शिल्प ; सूर्य ; ब्रह्मा ; शिव ; मंत्री ; नक्षत्र ; वायुत्रय ।
 विश्वसनीय (सम्) वि.—विश्वासपात्र ।
 विश्वस्ते (सम्) सं.—विधवा स्त्री ।
 विश्वास (सम्) सं.—प्रेम, प्रीति, स्नेह; विश्वास, उम्मीद ।
 विष (सम्) सं.—जहर, विष ; कडुवा पदार्थ ; जल, पानी ; मद, पागलपन ।
 विषम (सम्) वि.—असम, असमान, अनियमित, अव्यवस्थित ; बहुत कठिन ; रहस्यमय ; अप्रवेक्ष्य ; उग्र, प्रचंड, भीषण ; बुरा, प्रतिकूल ; अजीब ; चालाक ।
 विषय (सम्) सं.—विषय ; वस्तु, पदार्थ ; लौकिक आनन्द, भोग ; इंद्रिय-गोचर वस्तु ; प्रियतम, पति ; वीर्य ; धार्मिक कृत्य ; स्थान, जगह ; देश, राज्य ।
 विषाण (सम्) सं.—शृंग, सींग ; जानवरों का नोंकदार दाँत ।
 विष्टर (सम्) सं. — आसन ; बैठक ; सिंहासन ; कुश ; वृक्ष ।
 विष्णु (सम्) सं.—परब्रह्म, भगवान्, नारायण ।—क्रांति (सम्) सं.—एक लता जिसके फूल नीले होते हैं ।
 विश्वसेन (सम्) सं.—विष्णु, कृष्ण ; एक राजा का नाम ।
 विसंवाद (सम्) सं.—प्रतिज्ञाभङ्ग ; धोखा ; छल ।
 विसर्जन, विसर्जने (सम्)

सं.—परित्याग, त्याग, छोड़ना ; दान, भेंट ।
 विस्तर. विस्तर (सम्) सं.—
 विस्तर (तद्) — विस्तार, फैलाव, व्याप्ति ; बढ़ावा, वृद्धि ; विवरण, व्यौरा ।
 विस्तरिसु, विस्तरिसु (सम्) क्रि.—विस्तार कर, बढ़ा, विवरण दे. व्याख्या कर ।
 विस्फुरिसु (सम्) क्रि. — चमक, प्रकाशित हो, कंपित हो ।
 विस्मय (सम्) सं.—आश्चर्य ।
 विस्मृति (सम्) सं. — भूलना, विस्मरण ।
 विहंग, विहंग (सम्) सं.— पक्षी, चिड़िया ।
 विहति (सम्) सं. — प्रहार, चोट ; मारना ।
 विहरिसु (सम्) क्रि.—विहार कर, घूम । हटा, ले जा ; चहलकदमी कर ।
 विहित (सम्) वि.—उचित, उपयुक्त, योग्य ; किया हुआ, बनाया हुआ ; अनु-ष्ठित ।
 विहीन (सम्) वि. — रहित, हीन, बगैर, त्यक्त. त्यागा हुआ ।
 विह्वलते (सम्) सं. — विह्वलता, चिंता ।
 विह्वले, विह्वले (तद्) सं.— वीटि : (तद्) ; पान की बेल, पान ।
 विह्वल (क) क्रि.—फेंक, दूर हटा ।
 विह्वल (सम्) क्रि.—देख, अवलोकन कर, निहार ।
 विह्वल (सम्) सं.—दे. विह्वल ।
 विह्वल (सम्) सं.—वीणा ।
 विह्वल (सम्) सं.—जितेन्द्रिय साधु ।
 विह्वल (सम्) सं.—अग्नि, आग ।

विह्वल (सम्) सं.—
 श्रेणी, पंक्ति ; रास्ता, मार्ग ।
 विह्वल (सम्) सं.—वीर, बहादुर, पराक्रमी पुरुष ।—गल्लु गल्लु=वीरों की यादगार में स्थापित शिला ।—ते, ते, ते (सम्) सं.—वीरता, पराक्रम ।
 विह्वल (क) सं.—एक प्रकार का ढोल ।
 विह्वल (सम्) सं. — लिंगायत, लिंगायत संप्रदाय ।
 विह्वल (सम्) सं.—वीरता ; पराक्रम ; शक्ति, सामर्थ्य ; साहस, स्फूर्ति ; पुंसत्व, जनन विशेष ।
 विह्वल (क) वि.—१/८ मन, १/१६ भाग, परिमाण विशेष ।
 विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल, विह्वल (तद्) सं.—पान ।
 विह्वल (सम्) सं.—फल या पत्र का डंडुल, वृत्त ।
 विह्वल (सम्) सं.—गण, समूह, समुदाय, ढेर ।
 विह्वल (सम्) सं.—वृंदावन ; भूमि पर बनाया गया वह चौकोर स्थान जहाँ तुलसी का पौधा लगाया जाता है और रोज उसकी पूजा की जाती है ।
 विह्वल (सम्) सं.—तुलसी का पौधा ।
 विह्वल (सम्) सं. — भेड़िया ; सियार ; काक, कौआ ।
 विह्वल (सम्) सं.—पेड़, पादप ।
 विह्वल (सम्) सं.—वृत्त, वृत्त का व्यास, गोलाकार ; छंद ; चलन, पद्धति ; कर्तव्य ; अमृत ; शत्रु ; एक राक्षस का नाम ; अध-कार, तिमिर । वि.—घिरा हुआ, ढका हुआ ; गया हुआ, विगत ; दृढ़ ।
 विह्वल (सम्) सं. — समाचार, खबर, रिपोर्ट ; किस्सा, कहानी, आख्यान ; ढंग, विधान, स्थिति ।
 विह्वल (सम्) सं.—वृत्त या पहिये का घेरा ; धन्धा, पेशा, व्यवसाय ; जीविका,

रोज़ी, मज़दूरी; चालचलन, आचरण;
वाक्य-रचना की शैली।
सुत्रक वृत्त सुत्रक वृत्तारि (सम्) सं.
—इन्द्र।
सुत्रक वृत्त (सम्) वि.—बूढ़ा; बड़ा हुआ;
बड़ा, लंबा।
सुत्रक वृत्ति (सम्) सं.—बढ़ती, उन्नति;
समृद्धि, आधिक्य; जाताशौच।
सुत्रक वृत्तिक (सम्) सं.—बिच्छू; वृत्तिक
राशि; मकर; केकड़ा।
सुत्रक वृष (सम्) सं.—बैल, सौंड; वृष
राशि; किसी जाति या समुदाय में सर्व-
श्रेष्ठ; सत्कर्म, पुण्यकर्म; इन्द्र; जिन;
मूसा; एक औषध विशेष।
सुत्रक वृषांक (सम्) सं.—शिव।
सुत्रक वृष्टि (सम्) सं.—वर्षा, बरसात।
सुत्रक वृष्टि (म?) क्रि.—धिर जा;
व्याप्त हो, टक जा।
सुत्रक वेकस (क) सं.—रुक्षता, सुखुरापन;
कर्कशता, कठोरता, करुणाराहित्य, अप्रसन्न
कारक।
सुत्रक वेगल (क) अ.—अधिक, बहुत।
सुत्रक वेगलिके (क) सं.—अधिक्य,
समृद्धि।
सुत्रक वेच (तद्) सं.—व्यय, खर्च।
सुत्रक वेष्टे (क) अ.—गरम, उष्ण।
सुत्रक वेग (सम्) सं.—गति, तेज़ी, रफ़्तार;
प्रवाह, बहाव; जलद्बाज़ी, शीघ्रता; प्रेम,
अनुराग; शरीर में से मल, मूत्रादि के
निकालने की प्रवृत्ति।
सुत्रक वेणि, सुत्रक वेणी (सम्) सं.—वेणी,
गुथी हुई चोटी; जलप्रवाह; एक नदी का
नाम।
सुत्रक वेणु (सम्) सं.—बाँस; नरकुल;
सुरली, बाँसुरी।
सुत्रक वेद (सम्) सं.—वेद, चारों वेद; ज्ञान;
वेदांग; ब्रह्मा; सूर्य।
सुत्रक वेदने (सम्) सं.—वेदना, पीड़ा,
दुःख।

सुत्रक वेदिके (सम्) सं.—वेदिका, चबूतरा,
बैठकी।
सुत्रक वेम (सम्) सं.—करवा।
सुत्रक वेश (सम्) सं.—घर, निवास; वेश,
पोशाक; वेष्टालय।
सुत्रक वेष्ट (सम्) सं.—घर, भवन।
सुत्रक वेष्टात्री, सुत्रक वेष्टे (सम्) सं.
—रंडी, चारांगना।
सुत्रक वेष्ट (सम्) सं.—वेश, पोशाक; अलं-
कार, सजावट; कपट, छल, धोखा।
सुत्रक वेष्टित (सम्) वि.—चारों ओर से
घिरा हुआ, अवरुद्ध।
सुत्रक वेष्टे (तद्) सं.—वेला, समय।
सुत्रक वेकल्य (सम्) सं.—बिकलता, घब-
ड़ाहट; झुट्टि, न्यूनता, दोष।
सुत्रक वेकल्य (सम्) सं.—विष्णु का नाम;
विष्णुलोक; इन्द्र।—यात्रे (सम्)
सं.—मृत्यु, मरण।
सुत्रक वेखरि (सम्) सं.—वाक्शक्ति, ढंग,
विधान, शैली।
सुत्रक वैचित्र्य (सम्) सं.—विचित्रता,
विलक्षणता, अनोखापन।
सुत्रक वैजयंति (सम्) सं.—झंडा,
पताका; मोतियों का हार।
सुत्रक वैज्ञानिक (सम्) वि.—चतुर,
निपुण।
सुत्रक वैदूर्य (सम्) सं.—एक रत्न
विशेष।
सुत्रक वैतरणि (सम्) सं.—नरक की एक
नदी का नाम।
सुत्रक वैदर्भि (सम्) सं.—दमयंती;
रुक्मिणी; काव्य की एक शैली।
सुत्रक वैदिक (सम्) वि.—वेद संबंधी, वेद
से निकला हुआ, वेदोक्त।
सुत्रक वैदिक (सम्) सं.—श्राद्ध, श्राद्ध दिन।
सुत्रक वैद्य (सम्) सं.—वैद्य, चिकित्सक,
डाक्टर।
सुत्रक वैनेतेय (सम्) सं.—गरुड।
सुत्रक वैभव (सम्) सं.—संपत्ति, विभव,
ऐश्वर्य; महिमा, महत्त्व, बड़प्पन।

सुत्रक वैमनस्य (सम्) सं.—अनबन;
उदासीनता; शोक, व्याकुलता।
सुत्रक वैर (सम्) सं.—वीरता; शत्रुता, वैर;
वैरी, शत्रु।
सुत्रक वैरागि (सम्) सं.—वैरागी, वीत-
रागी।
सुत्रक वैरि (सम्) सं.—अरि, शत्रु।
सुत्रक वैवर्ण्य (सम्) सं.—विवर्णता, एक
सात्विक अनुभाव, पीलापन।
सुत्रक वैशाख (सम्) सं.—वैशाख मास।
सुत्रक वैश्य (सम्) सं.—तृतीय वर्ण का
मनुष्य।
सुत्रक वैष्णव (सम्) वि.—विष्णु से संबं-
धित। सं.—विष्णुभक्त।
सुत्रक वैष्णव (क) अ.—की
तरह, की भाँति, के समान, के जैसे।
सुत्रक वैष्णव (क) अ.—दे. वैष्णव।
सुत्रक वैष्णव (सम्) सं.—परिहास, मज़ाक,
ताना, उलाहना, चुटकी।
सुत्रक वैजक (सम्) वि.—प्रकट करने-
वाला।
सुत्रक वैजक (सम्) सं.—व्यंजन वर्ण;
हाव-भाव; संकेत, चिह्न, निशान; पायस;
मूँछ, दाढ़ी; मासाला; चटनी आदि।
सुत्रक व्यक्त (सम्) वि.—प्रकटित, स्पष्ट,
प्रादुर्भूत, साफ़, वर्णित।
सुत्रक व्यक्ति (सम्) सं.—मनुष्य, आदमी;
व्यष्टि।
सुत्रक व्यग्रते (सम्) सं.—व्यग्रता, व्याकु-
लता, परेशानी।
सुत्रक व्यतिक्रम (सम्) सं.—क्रमानुसार
उलट-फेर या विपर्यय; दुर्भाग्य, बदकि-
स्मत।
सुत्रक व्यतिरेक (सम्) सं.—भेद, भिन्नता,
अंतर; एक अलंकार विशेष।
सुत्रक व्यतीत (सम्) वि.—गया हुआ,
विगत, बीता हुआ।
सुत्रक व्यत्यास (सम्) सं.—अंतर, भेद,
फरक; विरोध, वैपरीत्य।

व्यंघ्रि व्यथे (सम्) सं.—व्यथा, दुःख; चिंता, विकलता ।

व्यंघ्रिचर व्यभिचार (सम्) सं.—व्यभिचार, बदचलनी ।

व्यंघ्रि व्यय (सम्) सं.—व्यय, खर्च; एक संवत्सर का नाम ।

व्यंघ्रि व्यर्थ (सम्) वि.—निरर्थक, बेकार, अर्थरहित ।

व्यंघ्रि व्यवकलन (सम्) सं.—विच्छेद, अंकगणित में घटने की क्रिया ।

व्यंघ्रि व्यवधान (सम्) सं.—बीच में पड़नेवाली वस्तु, पर्दा, आवरण; दीवाल; रुकावट; अवकाश, स्थान ।

व्यंघ्रि व्यवसाय (सम्) सं.—कृषि, किसानी; उद्योग, धंधा, उद्यम । — गार = किसान, कृषक ।

व्यंघ्रि व्यवस्थे (सम्) सं.—व्यवस्था, प्रबंध इतजाम ।

व्यंघ्रि व्यवहारि (सम्) क्रि.—व्यवहार कर; उपयोग कर ।

व्यंघ्रि व्यवहार (सम्) सं.—व्यवहार, व्योहार; आचरण, चालचलन ।

व्यंघ्रि व्यसन (सम्) सं.—दुःख, पीड़ा; प्रक्षेप; वियोग, विच्छेद ।

व्यंघ्रि व्यस्त (सम्) वि.—पृथक् किया हुआ; विकीर्ण, बिखरा हुआ; विकल, गड़बड़, अस्तव्यस्त, विपरीत, उलटा-पलटा ।

व्यंघ्रि व्याकरण (सम्) सं.—व्याकरण ।

व्यंघ्रि व्याकुलते (सम्) सं.—व्याकुलता, विकलता, दुःख, चिंता ।

व्यंघ्रि व्याख्यान (सम्) सं.—निरूपण, भाषण, व्याख्या ।

व्यंघ्रि व्याख्ये (सम्) सं.—निरूपण, व्याख्या, टीका ।

व्यंघ्रि व्याघ्र (सम्) सं.—बाघ; एक असुर का नाम ।

व्यंघ्रि व्याज (सम्) सं.—कपट, छल, फरेब; बहाना, भिस; कारण ।

व्यंघ्रि व्याज्य (सम्) सं.—कलह, झगड़ा, सुकहमा ।

व्यंघ्रि व्याधि (सम्) सं.—रोग, बीमारी ।

व्यंघ्रि व्यापक (सम्) वि.—व्याप्त, फैला हुआ ।

व्यंघ्रि व्यापार (सम्) सं.—व्यापार, सौदागरी । — गार = व्यापारी, सौदागर ।

व्यंघ्रि व्यास (सम्) वि.—फैला हुआ, भरा हुआ, परिपूर्ण ।

व्यंघ्रि व्यायाम (सम्) सं.—कसरत; थकावट, श्रान्ति ।

व्यंघ्रि व्याल (सम्) सं.—सर्प, साँप; हिंस्र जन्तु; क्रूर, कपटी, धोखेबाज़ ।

व्यंघ्रि व्यालोल (सम्) वि.—काँपने वाला, थरथरानेवाला; अस्तव्यस्त ।

व्यंघ्रि व्यास (सम्) सं.—चाँट, वितरण, विभाग, विश्लेषण; विस्तार; अंतर, भेद; चौड़ाई; वृत्त का व्यास या घेरा; महर्षि व्यास ।

व्यंघ्रि व्युत्पत्ति (सम्) सं.—निकास, उत्पत्ति, शब्दसाधन-विधा ।

व्यंघ्रि व्यूह (सम्) सं.—समुदाय, समूह, भीड़, सेना ।

व्यंघ्रि व्योम (सम्) सं.—आकाश, गगन; वातावरण; शून्य ।

व्यंघ्रि व्रज (सम्) सं.—समूह, समुदाय; पशुशाला ।

व्यंघ्रि व्रण (सम्) सं.—घाव, क्षत, चोट ।

व्यंघ्रि व्रत (सम्) सं.—व्रत, उपवासादि नियम; आराधना, भक्ति; प्रतिज्ञा; कर्म, अनुष्ठान, कार्य ।

व्यंघ्रि व्रीडे (सम्) सं.—व्रीड़ा, लज्जा, शर्म ।

४ श

४ श—कन्नड-वर्णमाला का पैतालिसवाँ अक्षर ।

४००० शंकर (सम्) सं.—शिवजी । — ७७००, आचार्य (सम्) सं.—प्रसिद्ध दार्शनिक शंकराचार्य ।

४००० शंकि (सम्) क्रि.—सन्देह कर, शंका कर; अविश्वास कर; भय-भीत हो ।

४००० शंकु (सम्) सं.—तीर, बाण; भाला;

बरछा; मेख, कील; खूटा; खंभा; फटे हुए वृक्ष का तना; वड़ी की सुई; बारह अंगुल का माप; छिद्र, छेद; नाश, लय; संकीर्णता; एक प्रकार की मछली; साल वृक्ष; पत्तों की नसें; बाँबी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंका, संदेह, आशंका, डर ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४००० शंख (सम्) सं.—शंख; कनपुटी की हड्डी; माथे की हड्डी, इस खर्ब की संख्या; कुबेर की नवनिधियों में एक; व्यूह, सेना; सफेदी ।

४३७ शत्रु (सम्) सं.—शत्रु और दुश्मन ।
 ४३८ शनि (सम्) सं.—शनिग्रह ; दुष्ट मनुष्य ।
 ४३९ शपथ (सम्) सं.—शपथ, कसम ।
 ४४० शबर (सम्) सं.—एक पहाड़ी जाति, किरात; लुब्धक; एक प्रकार का हिरन, शिवजी; जीव; एक राक्षस; जल, पानी; हिम; मेघ ।
 ४४१ शब्द (सम्) सं.—शब्द, पद; ध्वनि, आवाज ।
 ४४२ शम, ४४३ शमे (सम्) सं.—शम, शांति, मानसिक शांति, इंद्रिय शमन ।
 ४४४ शय (सम्) सं.—निद्रा, नींद; सेज; खाट; हाथ ।
 ४४५ शयन (सम्) सं.—निद्रा, नींद; सेज, शय्या; खाट; स्त्री-संभोग ।
 ४४६ शयु (सम्) सं.—अजगर, बड़ा सर्प ।
 ४४७ शय्ये (सम्) सं.—शय्या, सेज ।
 ४४८ शर (सम्) सं.—बाण, तीर; एक प्रकार का नरकुल या सरपत; मलाई; पाँच की संख्या; सरोवर, तालाब; जल, पानी; ध्वनि, आवाज ।
 ४४९ शरण (सम्) सं.—रक्षा, आश्रयस्थान; आश्रयदाता; शरण देनेवाला; घर; कमरा, कोठरी; शिव-भक्त; लिंगायत ।
 ४५० शरणु (तद्) सं.—दे. ४४९.
 ४५१ शरत्काल, ४५२ शरदु (सम्) सं.—आश्विन और कार्तिक मास, शरद ऋतु ।
 ४५३ शरधर (सम्) सं.—मेघ, बादल ।
 ४५४ शरधि (सम्) सं.—समुद्र; चार की संख्या; नदी; कानन, अरण्य; तरकस ।
 ४५५ शरभ (सम्) सं.—शरभ, आठ पैरों-वाला एक जंतु विशेष; हाथी का वच्चा; शिवजी का एक अवतार; चीरभद्र ।
 ४५६ शरीर (सम्) सं.—देह, काया, गात्र, तनु ।
 ४५७ शरे (क) सं.—पुंज, समूह, राशि ।
 ४५८ शर्करे (सम्) सं.—मिश्री; चीनी,

शकर; बालू का कण, बालू, रेत; खण्ड, टुकड़ा; पथरी का रोग ।
 ४५९ शर्म (सम्) सं.—यह शब्द ब्रह्मणों के नामों के साथ लगाता है, शर्मा; आनंद, हर्ष; आशीर्वाद; घर; आधार ।
 ४६० शर्वरि (सम्) सं.—रात, रात्रि, निशा ।
 ४६१ शर्वाणि (सम्) सं.—पार्वती ।
 ४६२ शलाके (सम्) सं.—शलाका, लोहे की सलाई; तीर; बछी ।
 ४६३ शल्य (सम्) सं.—शलाका; कंटिली झाड़ी; नोंकदार अन्न, बाण; टुकड़ा, खण्ड; कृशांग; बाढ़, सीमा; पानी, जल; मद्र-देश के राजा का नाम; कष्ट; तकलीफ; कठिनाई ।
 ४६४ शव (सम्) सं.—मुद्रा, लाश ।
 ४६५ शश, ४६६ शशक (सम्) सं.—खरगोश ।
 ४६७ शशि (सम्) सं.—चंद्रमा; एक की संख्या; कपूर ।—४६८ शेखर, (सम्) सं.—चन्द्रशेखर, शिवजी ।
 ४६९ शस्त्र (सम्) सं.—हथियार, औजार, तलवार, चाकू आदि ।
 ४७० शस्य, ४७१ सस्य (सम्) सं.—अनाज; किसी वृक्ष की उपज या फल ।
 ४७२ शांढिल्य (सम्) सं.—एक मुनि का नाम; विल्व वृक्ष ।
 ४७३ शांत, (सम्) वि.—शमयुक्त, शांत, शांतिवाला; शिथिल, ढीला ।
 ४७४ शांति (सम्) सं.—शांति, स्थिरता; वेगादि का अभाव, नीरवता; चैन, आराम; समाप्ति, अवसान; विरक्ति; शांत करना; सौभाग्य, शुभत्व; बचाव ।
 ४७५ शांभवि (सम्) सं.—पार्वती ।
 ४७६ शाक (सम्) सं.—तरकारी, भाजी, पत्ती, फूल आदि, शाकाहार ।
 ४७७ शाक्त, ४७८ शाक्त्य (सम्) सं.—शक्तिपूजक, वामाचारी ।
 ४७९ शाखामृग (सम्) सं.—बंदर ।
 ४८० शाखे (सम्) सं.—शाखा, डाली; विभाग; किसी पुस्तक, संप्रदाय आदि का

भेद; बाजू; बाहें; वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रमभेद ।
 ४८१ शाण (सम्) सं.—कसौटी का पत्थर, सान रखनेवाला पत्थर; आरा ।
 ४८२ शादल (सम्) सं.—नव तृण संकुल, हरियाली ।
 ४८३ शानभोग, ४८४ शानुभोग (सम्) सं.—गाँव का पटवारी ।
 ४८५ शाने (क) अ.—बहुत, अधिक ।
 ४८६ शाप (सम्) सं.—श्राप, शाप; अकौसा; शपथ; गाली, भर्त्सना ।
 ४८७ शबास, ४८८ शबासु (अ. दे.) अ.—शाभाश ।
 ४८९ शाब्दिक (सम्) सं.—वैयाकरण; शब्दशास्त्रज्ञ ।
 ४९० शायि (अ. दे.) सं.—स्याही, मसी (Ink) ।
 ४९१ शारदे (सम्) सं.—सरस्वती; बुद्धि, सुबुद्धि; सार, निचोड़; ऋतु; मौसम ।
 ४९२ शार्दूल (सम्) सं.—बाघ, व्याघ्र; (समास के अंत में) उत्तम, सर्वश्रेष्ठ; एक छंद का नाम; एक राक्षस का नाम ।
 ४९३ शार्वरि (सम्) सं.—निशा, रात ।
 ४९४ शाल (सम्) सं.—साल वृक्ष; कोई भी वृक्ष; घेरा, हाता, प्राकार; शक्ति, सामर्थ्य; मछली विशेष । वि.—बड़ा, विशाल ।
 ४९५ शालग्राम (सम्) सं.—गंडकी नदी में मिलनेवाला गोलाकार पत्थर जिसकी विष्णु के रूप में पूजा की जाती है ।
 ४९६ शालभंजिके (सम्) सं.—गुडिया, पुतली; रंडी वेइया; एक खेल ।
 ४९७ शालु (अ. दे.) सं.—शाल; ऊनी शाल ।
 ४९८ शाले (सम्) सं.—शाला; कमरा, बड़ा कमरा; पाठशाला, स्कूल; वृक्ष की ऊपर की डाली या वृक्ष का तना (तद्) सं.—साड़ी ।

शब्दार्थ शक्ति (तद्) सं.—सर्व्व ।

शब्दार्थ शासन (सम्) सं.—आज्ञा ; आदेश ; पट्टा, टीप ; शास्त्र ; शिलालेख ; राजा की दान की हुई भूमि ।

शब्दार्थ शास्त्र (सम्) सं.—आदेश, आज्ञा, धर्माज्ञा, धर्मशास्त्र, धर्मग्रंथ ; पुस्तक ; किसी विशिष्टविषय का समस्त, क्रमिक ज्ञान ।

शब्दार्थ शिजिनि (सम्) सं.—पायजेब ; धनुष का रोदा ।

शब्दार्थ शिशोप, शब्दार्थ शिशुपे (सम्) सं.—शीशम का पेड़ ; अशोकवृक्ष ।

शब्दार्थ शिधिसु (सम्) क्रि.—दंड दे, सजा दे ; नियन्त्रण में रख ।

शब्दार्थ शिक्षे (सम्) सं.—शिक्षा, ज्ञान, विद्या ; शिक्षण ; वेदांगों में से एक ; सजा, दंड ।

शब्दार्थ शिखंडि (सम्) सं.—मोर, मयूर ; एक प्रकार का सर्प ; द्रुपद के एक पुत्र का नाम ; बलीब, नपुंसक ।

शब्दार्थ शिखि (सम्) सं.—मोर, मयूर ; अग्नि ; तीन की संख्या ; केतु उपग्रह ; वृक्ष का अग्र भाग ; सिर ; चोटी ; विप्र, ब्राह्मण ; कृष्णसर्प ; वृक्ष ; ताम्र, ताँबा ; चित्रक का वृक्ष ।

शब्दार्थ शिखे (सम्) सं.—शिखा, सिर की चोटी ; शिखर, शृंग ; लौ, किरण ; कामज्वर ; शाखा, टहनी, डाली ।

शब्दार्थ शिथिल (सम्) वि.—शिथिल, ढीला ; निर्बल, कमजोर ।

शब्दार्थ शिर (सम्) सं.—सिर ; वृक्ष की फुनगी ; सर्वोच्च स्थान ; बड़ा सर्प ।

शब्दार्थ शिरस्तेदार, शब्दार्थ शिरस्दार (अ. दे.) सं.—जिलाधिकारी या न्यायाधीश के नीचे रहनेवाला एक अफसर ।

शब्दार्थ शिरख, शब्दार्थ शिरखाण (सम्) सं.—कूँडा, लोहे की टोपी ।

शब्दार्थ शिलाशासन (सम्) सं.—शिला-लेख ।

शब्दार्थ शिलासार (सम्) सं.—लोहा ।

शब्दार्थ शिलीध्र (सम्) सं.—कुकरमुत्ता ; एक वृक्ष ; बाण ।

शब्दार्थ शिलीमुख (सम्) सं.—बाण, तीर ।

शब्दार्थ शिले (सम्) सं.—शिला, पत्थर, चट्टान ।

शब्दार्थ शिल्प (सम्) सं.—शिल्प, कला, दस्तकारी, कारीगरी ।

शब्दार्थ शिवशरण (सम्) सं.—शिवभक्त—जंगम या लिंगायत ।

शब्दार्थ शिवाचार (सम्) सं.—शैवों का आचार (वीरशैवों का आचार) । — दंड द्व = लिंगायत ।

शब्दार्थ शिवे (सम्) सं.—दुर्गा, पार्वती ; गीदड़ी ; शमीवृक्ष ; हल्दी ; दूर्वा ; गौरोचन ।

शब्दार्थ शिशिर (सम्) वि.—ठंडा, शीतल । सं.—शिशिर ऋतु ।

शब्दार्थ शिशु (सम्) सं.—बच्चा, बालक । — शिशु विहार (सम्) सं.—छोटे बच्चों का स्कूल (Nursery School) ।

शब्दार्थ शिशूपे (तद्) सं.—सेवा-शुश्रूषा ।

शब्दार्थ शिष्ट (सम्) वि.—शिक्षित, शालीन ; बुद्धिमान, विद्यार्थी ।

शब्दार्थ शिष्य (सम्) सं.—शिष्य, अन्तेवासी, विद्यार्थी ।

शब्दार्थ शिस्तु (अ. दे. ?) सं.—कर, लगान ; क्रमिकता, सजावट ; अनुशासन ।

शब्दार्थ शीघ्र (सम्) अ.—जल्दी, वेग से, तुरंत ।

शब्दार्थ शीत (सम्) सं.—ठण्डक, सर्दी । वि.—ठण्डा, (शीतल) ।

शब्दार्थ शीतल (सम्) वि.—ठंडा, सर्द ।

शब्दार्थ शीतले (सम्) सं.—शीतला रोग ; चेचक ।

शब्दार्थ शीर्ष (सम्) सं.—सिर ।

शब्दार्थ शील (सम्) सं.—चालचलन, आचरण, अच्छा स्वभाव ; सदाचार । — शील वन्त (सम्) सं.—चरित्रवान् पुरुष ।

शब्दार्थ शुठ, शब्दार्थ शुठकाय (सम्) सं.—मूर्ख, बेवकूफ ।

शब्दार्थ शुठि (सम्) सं.—सोंठ ।

शब्दार्थ शुंड (सम्) सं.—हाथी की सूंड ; मेंढक ।

शब्दार्थ शुभ (सम्) सं.—एक राक्षस का नाम ; मूर्ख मनुष्य ।

शब्दार्थ शुक्र (सम्) सं.—तोता ; आम का पेड़ ; शाल्मली वृक्ष ; सिरिस का पेड़ ; एक प्रकार सुगंध द्रव्य ; वस्त्र ; आंचल ; शुक्र देव ; शिवजी ।

शब्दार्थ शुक्त (सम्) सं.—मांस ; काँजी ; एक प्रकार का खट्टा पेय ।

शब्दार्थ शुक्ति (सम्) सं.—सीप ; शंख ; घोंघा ; सुगन्ध द्रव्य विशेष ; घोड़े की गर्दन या छाती की भौरी ।

शब्दार्थ शुक्र (सम्) सं.—शुक्रग्रह ; शुक्राचार्य ; ज्येष्ठ मास ; वीर्य ।

शब्दार्थ शुक्ल (सम्) वि.—सफेद, स्वच्छ । सं.—शुक्लपक्ष ; एक संवत्सर का नाम ; रेतस् ; आँख ; नेत्ररोग विशेष ।

शब्दार्थ शुचि (सम्) वि.—साफ़, शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र ; निष्कपट, सच्चा ; ठीक । सं.—विशुद्धता, निर्दोषता ; ईमानदार मन्त्री या मित्र ; ब्राह्मण ; योगी, यति ; अग्नि ; अमृत ; काष्ठ ; आपादमास ; प्रमुख, प्रधान ।

शब्दार्थ शुद्धते (सम्) सं.—शुद्धता, सफाई ; निर्मलता, पवित्रता ।

शब्दार्थ शुनक (सम्) सं.—कुत्ता ।

शब्दार्थ शुनासीर (सम्) सं.—इन्द्र ।

शब्दार्थ शुभ (सम्) वि.—शुभ, मंगलकर ; चमकीला, सुंदर ; सुखी, भाग्यवान् । सं.—कल्याण, मंगल, सौभाग्य, प्रसन्नता ; समृद्धि ; पराक्रम ; राजतिलक ; काँटेदार वृक्ष ; आभूषण ।

शब्दार्थ शुभ्रते (सम्) सं.—सफेदी, स्वच्छता ।

शब्दार्थ शुल्क (सम्) सं.—कर ; चुंगी ; मूल्य ; कन्याशुल्क ; विवाह के समय की भेंट ; लाभ, मुनाफा ।

शब्दार्थ शुल्ले (सम्) सं.—रस्सी ।

शब्दार्थ शुश्रूषे (सम्) सं.—शुश्रूषा, सेवा, कर्तव्य-परायणता ।

शुद्ध शुष्क (सम्) वि.—रूखा, सूखा; कटु; बुरा; निकम्मा कृश, दुबला ।
 शुद्ध शुष्क (सम्) सं.—जवा की वाल, भुट्टा ।
 शुद्ध शुष्क (सम्) सं.—सुखर ।
 शुद्ध शुष्क (सम्) सं.—चतुर्थ वर्णवाला ।
 शुद्ध शुष्क (सम्) वि.—रीता, खाली; नग्न, सुना । सं.—खाली स्थान; शून्य; आकाश; विंदी; अभाव ।
 शुद्ध शूर (सम्) सं.—वीर, योद्धा, बहादुर पुरुष ।
 शुद्ध शूर्प (सम्) सं.—सूप; दो द्रोण की एक तौल ।—शूर्प कर्ण (सम्) सं.—हाथी; गणेश ।—शूर्प कारि (सम्) सं.—मन्मथ ।
 शुद्ध शूल (सम्) सं.—शूल; सूली; मरण, मृत्यु ।
 शुद्ध शूल (सम्) सं.—शूल, वेड़ी, जंजीर ।
 शुद्ध शृंग (सम्) सं.—सींग; शिखर, चोटी; सींग बाजा; ऊँचाई, महानता; प्रभु, प्रधान; वृक्ष; एक ऋषि का नाम ।
 शुद्ध शृंगार (सम्) सं.—चतुष्पथ, चौराहा ।
 शुद्ध शृंगार (सम्) शृंगार रस, प्रेम, रसिकता; स्त्रीसंभोग; सजावट, अलंकार ।
 शुद्ध शृंगाल (सम्) सं.—सियार, लोमड़ी ।
 शुद्ध शोकदार (अ. दे.) सं.—कर वसूल करनेवाला एक अफसर ।
 शुद्ध शोमुपि (सम्) सं.—बुद्धि, समझ-दारी ।
 शुद्ध शेष (सम्) सं.—शेष, बचा हुआ वंश या पदार्थ ।
 शुद्ध शैत्य (सम्) सं.—ठंडक, सर्दी, शीतलता ।
 शुद्ध शैल (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।
 शुद्ध शैवल, शुद्ध शैवाल (सम्) सं.—सिवार, काई ।
 शुद्ध शोबेरि (क) सं.—सुस्त या आलसी मनुष्य ।

शुद्ध शोक (सम्) सं.—शोक, सन्ताप; दुःख ।
 शुद्ध शोण (सम्) सं.—लाल रंग; लाल गन्ना; आग; एक नदी ।
 शुद्ध शोणित (सम्) सं.—रक्त, खून; केसर ।
 शुद्ध शोधने (सम्) सं.—शोध, खोज, हूँटना; छान-बीन, जाँच; शुद्ध करना, ठीक करना; सुधार ।
 शुद्ध शोभन (सम्) सं.—संगलकार्य; विवाह के बाद प्रथम समागम; सौंदर्य, आभा; चमक ।
 शुद्ध शोभे (सम्) सं.—शोभा, कांति; सौंदर्य, मनोज्ञता ।
 शुद्ध शोषण (सम्) सं.—सोखना; चूसना; निघोटना; मुरझाना, कुम्हलाना ।
 शुद्ध शौण्ड (सम्) वि.—शराबी, मद्यप. नशे में चूर ।
 शुद्ध शौण्डि (सम्) सं.—पीपल ।
 शुद्ध शौच (सम्) सं.—शुचिता, सफाई; मलत्याग ।
 शुद्ध शौर्य (सम्) सं.—शूरता; पराक्रम, बल, ताकत ।
 शुद्ध श्मशान, (सम्) सं.—मसान, स्मशान ।
 शुद्ध श्मशान (सम्) सं.—दे. श्मशान ।
 शुद्ध श्यामल (सम्) वि.—काला, साँवला ।
 शुद्ध श्यामे (सम्) सं.—रात, रात्रि ।
 शुद्ध श्येन (सम्) सं.—वाजपक्षी; सफेद रंग ।
 शुद्ध श्रद्धे (सम्) सं.—श्रद्धा, पूज्यभाव; विश्वास ।
 शुद्ध श्रम (सम्) सं.—तकलीफ, कष्ट; संताप; श्रान्ति, थकावट । मेहनत, उद्योग; कसरत, अभ्यास ।
 शुद्ध श्रमण (सम्) सं.—बौद्ध या जैन संन्यासी ।

शुद्ध श्रवण (सम्) सं.—सुनना; कान; कर्ण; नक्षत्र विशेष ।
 शुद्ध श्रान्त (सम्) वि.—थका-मोड़ा; शान्त ।
 शुद्ध श्रान्ति (सम्) सं.—थकावट ।
 शुद्ध श्राद्ध (सम्) सं.—श्रद्धा से किया जाने वाला कार्य, श्राद्धकर्म ।
 शुद्ध श्रावक (सम्) सं.—सुननेवाला, श्रोता; शिष्य; जैनियों का एक वर्ग विशेष ।
 शुद्ध श्रितलेखे (सम्) सं.—पुस्तक ।
 शुद्ध श्री (सम्) सं.—धन, सम्पत्ति, समृद्धि; राजसी सम्पत्ति; गौरव; सौंदर्य; लक्ष्मी, धनलक्ष्मी; कोई गुण या सत्कर्म; अलौकिक शक्ति; अलंकार, भूषण; बुद्धि, प्रतिभा; बेल का पेड़; सरल वृक्ष; लवंग; एक प्रकार की चींटी; एक राग का नाम; छन्दविशेष का नाम ।
 शुद्ध श्रीगंध (सम्) सं.—चन्दन वृक्ष ।
 शुद्ध श्रीगिरि, शुद्ध श्रीपर्वत (सम्) सं.—तिरुपति के पहाड़ ।
 शुद्ध श्रीमंत (सम्) सं.—धनी, धनवान ।
 शुद्ध श्रीवत्स (सम्) सं.—विष्णु के वक्षस्थल का चिह्न विशेष ।—श्रीवत्स लांछन = विष्णु ।
 शुद्ध श्रीवैष्णव (सम्) सं.—श्रीरामानुज-सम्प्रदाय के अनुयायी लोग ।
 शुद्ध श्रुतकीर्ति (सम्) सं.—एक जैन मुनि का नाम । वि.—प्रसिद्ध ।
 शुद्ध श्रुति (सम्) सं.—सुनने की क्रिया; कान; अफवाह; वेद; ध्वनि, आवाज़ । चार की संख्या; संगीत में श्रुति ।
 शुद्ध श्रोणि (सम्) सं.—पंक्ति, रेखा, श्रेणी; समूह, समुदाय ।
 शुद्ध श्रेयस्सु (तद्) सं.—श्रेय, सौभाग्य, वृद्धि, भलाई ।
 शुद्ध श्रेष्ठे, शुद्ध श्रेष्ठ (सम्) सं.—श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, उत्तमता ।
 शुद्ध श्रोणि (सम्) सं.—कटि, कमर; जघन, नितम्ब ।

ॐॐॐ श्रोत्र (सम्) सं.—कान; हाथी की सूँड का अग्रभाग ।

ॐॐॐ श्रुथ (सम्) वि.—शिथिल, ढीला ।

ॐॐॐ श्लाघ (सम्) सं.—श्लाघा, प्रशंसा, सराहना ।

ॐॐॐ श्लेष्म (सम्) सं.—कफ, बलगम् ।

ॐॐॐ श्लोक (सम्) सं.—प्रशंसा, सराहना, स्तुति; कीर्ति, यश, श्लोक, पद्य, कोई छंद ।

ॐॐॐ श्वपच (सम्) सं.—चाण्डाल, निम्न जाति का आदमी ।

ॐॐॐ श्वश्रु (सम्) सं.—सास ।

ॐॐॐ श्वान (सम्) सं.—कुत्ता ।

ॐॐॐ श्वास (सम्) सं.—साँस; आह; हवा, दमा ।

ॐॐॐ श्वेत (सम्) वि.—सफेद। सं.—सफेद रंग; चाँदी; शंख; कौड़ी; शुक्रग्रह; सफेद जीरा सफेद बादल; एक पर्वतमाला का नाम; ब्रह्माण्ड का एक भाग ।

ॐ ष

ॐ ष—कन्नड-वर्णमाला का छियालीसवाँ अक्षर ।
ॐॐॐ षंड (सम्) सं.—समूह, समुदाय; ढेर; नपुंसक; हिंजडा ।

ॐॐॐ षंड (सम्) सं.—हिंजडा, नपुंसक, कापुरुष ।

ॐॐॐ षट् (सम्) वि.—छः की संख्या ।

ॐॐॐ षट्पदि (सम्) सं.—भौरी, भ्रमरी; कन्नड का एक छन्द ।

ॐॐॐ षट्स्थल (सम्) सं.—वीरशैव संप्रदाय के अनुसार छे स्थल; वे हैं—भक्ति, महेश्वर, प्रसाद, प्राणलिंग, शरण और ऐक्य ।

ॐॐॐ षट्स (सम्) सं.—छे प्रकार के रस या स्वाद (मीठा, नमकीन कड़ुआ, तीता, कसैला और खट्टा) ।

ॐॐॐ षण्मुख (सम्) सं.—कार्तिकेय ।

ॐॐॐ षरबत् (अ. दे.) सं.—शरबत ।

ॐॐॐ षरायि (अ. दे.) सं.—पायजामा ।

ॐॐॐ षष्ठी (सम्) सं.—षष्ठी तिथि ।

ॐॐॐ षोकि (अ. दे.) सं.—(शौक—अरबी) विलासिता ।

स स

स स—कन्नड-वर्णमाला का सैंतालिसवाँ अक्षर ।

स स (सम्) अ.—सम, तुल्य, सदृश्य, सह, साथ ।

सं० संक (क) सं.—सेतु, पुल ।

सं० संकट (सम्) सं.—तकलीफ, कष्ट, आपदा, संकट ।

सं० संकर (सम्) सं.—वर्णों की गड़बड़ी, वर्णों की असमानता; मिश्रण, मिलावट; संयोग ।

सं० संकलन (सम्) सं.—संकलन, एकत्रीकरण ।

सं० संकले (सम्) सं.—शृंखला (तत्); जंजीर, बेड़ी ।

सं० संकल्प (सम्) सं.—संकल्प, कार्य करने की इच्छा, इरादा, विचार ।

सं० संकोर्ण (सम्) वि.—तंग, सँकरा, संकुचित; मिला हुआ, मिश्रित; बिखरा हुआ, अस्पष्ट; मदमस्त ।

सं० संकीर्तने (सम्) सं.—प्रशंसा, स्तव, स्तुति ।

सं० संकुल (सम्) सं.—भीड़भाड़, जनसमुदाय, छुंड ।

सं० संकेत (सम्) सं.—संकेत, चिह्न, निशान; निर्देश, इशारा ।

सं० संकोच (सम्) सं.—संकोच, सिकुड़ना; डर, भय, मछली विशेष ।

सं० संकोले (तद्) सं.—दे. सं० सं० ।

सं० संक्षिप्त (सम्) वि.—संक्षिप्त; संक्षेप किया हुआ ।

सं० संक्षेप (सम्) सं.—संकोचन, घटाना; सार, संग्रह; निक्षेप, प्रक्षेप ।

सं० संख्ये (सम्) सं.—संख्या, अंक; गणना, गिनती ।

सं० संग (सम्) सं.—संसर्ग, साथ; मेल, ऐक्य, संगम; संयोग ।

सं० संगड (तद्) अ.—के साथ, के संग । सं.—साथ, संसर्ग; संयोग; संगम ।

सं० संगडिग (तद्) सं.—साथी, दोस्त, मित्र, प्रेमी ।

सं० संगति (सम्) सं.—मेल; संग, साथ संगत; संबंध; विषय, बात, समाचार ।

सं० संगम (सम्) सं.—मेल, मिलन, ऐक्य ।

सं० संगर (सम्) सं.—प्रतिज्ञा, वादा; युद्ध, लड़ाई; मांस; दुःख, व्यथा; दुर्भाग्य; मूर्ख पुरुष; शमीफल ।

सं० संगति (तद्) सं.—साथिन, सखी ।

सं० संगीत (सम्) सं.—संगीत, नाच-गान ।

सं० संगोष्ठि (सम्) सं.—गोष्ठी, संघ ।

सं० संग्रहिषु (सम्) क्रि.—संग्रह कर, एकत्रित कर, संक्षिप्त कर ।

सं० संग्राम (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई ।

सं० संगठने (सम्) सं.—रगड़, रगड़न; मेल, मिलाप, ऐक्य; भिड़ंत, लड़ाई मुठभेड़ ।

सं० संग्रह (सम्) सं.—संग्रह; रगड़न, रगड़; भिड़ंत, स्पर्धा ।

सं० संच, सं० संचु (क) सं.—युक्ति, तंत्र, उपाय; षडयंत्र, मन्त्रणा, बुद्धिमत्ता, चतुराई; चिह्न, पहचान ।

सं० संचय (सम्) सं.—एकत्रीकरण, पुंजीकरण, ढेर, राशि ।

सं० संचरिषु (सम्) क्रि.—गमन कर, चल, यात्रा कर; उपयोग में आ, संभव हो ।

सं० संचलते (सम्) सं.—कंपन, काँपना, थरथराना ।

सं० संचार (सम्) सं.—गमन, चलन,

चलना-फिरना, यात्रा ; कठिन मार्ग, कठिन यात्रा ।

३०३३० संचिसु (सम्) क्रि.—संचय कर, जमा कर ; संग्रह कर, व्यवस्थित रख ।

३०३३० संधु (क) सं.—दे. ३०३३०.

३०३३० संजीविनि (सम्) सं.—एक औषध जो जीवित करता है ।

३०३३० संज्ञे (तद्) सं.—संध्या, सायंकाल ।

३०३३० संज्ञे (तद्) सं.—संज्ञा, निशान ; चिह्न, संकेत, इशारा ; चेतन, होश ; नाम, आह्वय ।

३०३३० संडिगे (क) सं.—बरी, बड़ी ; मसाला ।

३०३३० संत (तद्) सं.—संत, साधु ।

३०३३० संतति (सम्) सं.—औलाद, संतान, वंश, कुल ।

३०३३० संतयिसु, संतय्यु, संन्तय्यु, सं० सं० संतयिसु (अ. दे.) क्रि.—सांत्वना दे ; तृप्त कर ।

३०३३० संतर्पणे (सम्) सं.—भोज, दावत ।

३०३३० संतस (तद्) सं.—हर्ष, प्रसन्नता ।

३०३३० संतान (सम्) सं.—औलाद, संतति ।

३०३३० संताप (सम्) सं.—अधिक ताप, उष्णता ; दुःख, व्यथा, कष्ट ; मनोव्यथा, पश्चात्ताप ।

३०३३० संताळ (क) सं.—संताळ जाति के लोग ।

३०३३० संतुष्ट (सम्) वि.—तृप्त, प्रसन्न, सुख ।

३०३३० संते (क) सं.—भीड़, जमाव ।

३०३३० संतोष (सम्) सं.—आह्लाद, आनंद, प्रसन्नता ।

३०३३० संदधि (तद्) सं.—संधान (तद्) ; प्रपूर्णता, व्याप्ति, संकीर्णता, भीड़ जन-समूह ।

३०३३० संदर्भ (सम्) सं.—संदर्भ, प्रसंग ।

३०३३० संदान (सम्) सं.—रस्सा, रस्सी ।

३०३३० संदाय (क) सं.—कर्जा चुकाना, भदा करना ।

३०३३० संदिग्ध (सम्) वि.—संदेहयुक्त ; अस्पष्ट, गड़बड़ ।

३०३३० संदिसु (तद्) क्रि.—मिल, मुलाकात कर, भेंट कर ; लग ।

३०३३० संदु (तद्) सं.—मेल, मिलाप ; जोड़ ; अवकाश, थोड़ा स्थान, गली ।

३०३३० संदेग, संदय्यु, संदेय ; (तद्), सं० सं० संदेह (सम्) सं.—संदेह, शक ।

३०३३० संदोह (सम्) सं.—दोहन, दुहना ; समूह, ढेर, राशि ।

३०३३० संधान (सम्) सं.—जोड़ना, मिलाना सम्मिश्रण, संयोग ; धनुष पर तीर चढ़ाना ।

३०३३० संधि (सम्) सं.—संधि, मेल, संयोग ; सुलह, मैत्री ; जोड़, गाँठ ।

३०३३० संधे (सम्) सं.—प्रातः या सायंकाल, भोर ; मेल, संधि ; संध्यावदन ।

३०३३० संपणे (तद्) सं.—चंपक पुष्प, चंपक वृक्ष ।

३०३३० संपत्ति, सं० संपत्ति, संपत्तु (सम्) सं.—संपदा, ऐश्वर्य, धन-दौलत ।

३०३३० संपादने (सम्) सं.—कमाई, प्राप्ति, उपलब्धि ।

३०३३० संपिगे (तद्) सं.—दे. ३०३३०.

३०३३० संपु, सं० संपु, संपु (क) सं.—चारुता, सौंदर्य ।

३०३३० संपुट (सम्) सं.—डिबिया ।

३०३३० संपूर्ण (सम्) वि.—पूरा, सब, समूचा ।

३०३३० संपे (क) सं.—दे. ३०३३०.

३०३३० संप्रदाय (सम्) सं.—पद्धति, परंपरा, रीति-नीति, संप्रदाय ।

३०३३० संपदे (सम्) सं.—दान, भेंट, पुरस्कार ; शीघ्रता ।

३०३३० संप्राप्ति (सम्) सं.—प्राप्ति, उपलब्धि ।

३०३३० संबधि (सम्) सं.—रिश्तेदार, नाते-दार ।

३०३३० संबरिसु (तद्) क्रि.—संहार कर, वध कर ।

३०३३० संबल (तद्) सं.—संबल (तद्) ; वेतन, तनखाह ।

३०३३० संबार, सं० संबर (तद्) सं.—(संभारः—तद्), मसाले की वस्तुएँ ।

३०३३० संबे (क) सं.—एक बेल (Canavalia-ensiformis) ।

३०३३० संबोधने (सम्) सं.—संबोधन कारक ।

३०३३० संभविसु (सम्) क्रि.—संभव हो, उत्पन्न हो, कारण हो ।

३०३३० संभावने (सम्) सं.—प्रतिष्ठा, सम्मान, आदर ; भेंट, उपहार, पुरस्कार, पारिश्रमिक ।

३०३३० संभाविसु (सम्) क्रि.—आदर कर, सम्मान कर ।

३०३३० संभाषणे (सम्) सं.—संभाषण, वार्तालाप ।

३०३३० संभोग (सम्) सं.—भुक्ति, उपभोग, अच्छी क्रीडा ; मैथुन ।

३०३३० संभ्रम (सम्) सं.—उत्साह, उमंग, वैभव, शान ; समारोह ; अरयानंद, अधिक प्रसन्नता ; होंठ ; धूमना, चकर खाना ; हर का पेड़ ।

३०३३० संयम (सम्) सं.—संयम, नियंत्रण निग्रह, रोक ।

३०३३० संयुक्त (सम्) वि.—लगा हुआ, मिला हुआ ।

३०३३० संयोग (सम्) सं.—समागम, मेल, मिलाप, संबंध ।

३०३३० संरक्षणे (सम्) सं.—रक्षण, वचाव देखरेख, निगरानी ।

३०३३० संवत्सर, सं० सं० संवत् (सम्) सं.—साल, वर्ष ।

३०३३० संवरिसु (सम्) क्रि.—जोड़, लगा ; ठीक कर, सवार, तैयार कर, योग्य बना ; पोषण कर ।

३०३३० संवर्तन (सम्) सं.—कल्पांत, प्रलय, जलप्लावन ।

संज्ञा के सविबोध संज्ञा सव्धे (क) सं.—पेड़ की सीधी डाल ।

संज्ञासद सभासद (सम्) सं.—सदस्य ।
संज्ञा सभे (सम्) सं.—सभा ; परिषद, गोष्ठी, समिति ।

संज्ञा सभ्य (सम्) वि.—सभ्य, कुलीन, विनम्र ; सभासद ।

संज्ञा सम (सम्) वि.—एक-सा, समान, बराबर ; तुल्य ; सदस्य ।

संज्ञा समंजस (सम्) सं.—उपयुक्तता, ठीक होना ; यश, कीर्ति ।

संज्ञा समते (सम्) सं.—समता ।

संज्ञा समनिसु (क) क्रि.—प्राप्त हो, उपलब्ध हो, मिल, बन, तैयार हो, उत्पन्न हो ।

संज्ञा समंतु (क) सं.—सौंदर्य, मनोहरता, शोभा ।

संज्ञा समन्वय (सम्) सं.—समन्वय, मिलन ; कुल, वंश ।

संज्ञा समय (सम्) सं.—वक्त, काल ; अवसर, उचित समय ; पद्धति, रीति ; कानून, कायदा, नियम ; आदेश, निर्देश, आज्ञा ; सिद्धांत, सूत्र ; समाप्ति, अंत ; साफल्य ; समृद्धि ; संकेत : कवि-समय, कवियों द्वारा निश्चित सिद्धांत ।

संज्ञा समयिसु, संज्ञा समसु (क) क्रि.—घिसा ; मार, वध कर ।

संज्ञा समर (सम्) सं.—युद्ध, लड़ाई ।

संज्ञा समरु (क) क्रि.—ठीक या उपयुक्त कर, सुंदर बना, सजा ।

संज्ञा समर्थते, संज्ञा समर्थत्वं (सम्) सं.—सामर्थ्य ।

संज्ञा समर्पिसु (सम्) क्रि.—समर्पण कर, अर्पण कर ।

संज्ञा समवाय (सम्) सं.—समुदाय, समूह ; ढेर, राशि ; घनिष्ठ संबंध, अदृष्ट संबंध ।

संज्ञा समष्टि (सम्) सं.—सब का समूह, कुल, एक साथ, समष्टि ।

संज्ञा समस्ये (सम्) सं.—समस्या ; उलझन ।

संज्ञा समागम (सम्) सं.—मेल, मिलन, भेंट ; हेल-मेल ।

संज्ञा समाचार (सम्) सं.—समाचार, खबर, सूचना ; आचरण, चालचलन, उचित व्यवहार ।

संज्ञा समाधान (सम्) सं.—चित्त की शांति, संतोष, संतुष्टि ; समाधि, ध्यान ; एकाग्रता ।

संज्ञा समाधि (सम्) सं.—एकाग्रता, ध्यान विशेष, तप ।

संज्ञा समानते (सम्) सं.—समानता, तुल्यता ।

संज्ञा समाप्ति (सम्) सं.—पूर्णता ; अंत, अवसान ।

संज्ञा समाप्ताय (सम्) सं.—परंपरागत पाठ ; परंपरा ; पाठ, गणना ; योग, जोड़, जमा ; समूह ।

संज्ञा समारंभ (सम्) सं.—समारोह, सभा, उत्सव ।

संज्ञा समाराधने (सम्) सं.—संतुष्ट करने का साधन, परिचर्या, सेवा ; ब्राह्मणों को भोज देना, दावत ।

संज्ञा समावेश (सम्) सं.—समावेश, मिलन ; प्रवेश, घुसाव ।

संज्ञा समास (सम्) सं.—समाहार, एकत्रीकरण ; समास ।

संज्ञा समालिसु (अ. दे.) क्रि.—संभाल, समहाल ।

संज्ञा समिति (सम्) सं.—सभा, समाज, संघ ; समूह, झुंड ; लड़ाई, समर, युद्ध, समता, समानता ।

संज्ञा समित्तु (तद्) सं.—समिधा ।

संज्ञा समिसु (क) क्रि.—दे. संज्ञा समयिसु ।

संज्ञा समीकरण (सम्) सं.—असम को सम करना ; बीजगणित की प्रक्रिया-विशेष ; सांख्य दर्शन ।

संज्ञा समीप (सम्) अ.—पास, निकट ।

संज्ञा समीर, संज्ञा समीरण (सम्) सं.—हवा, वायु, पवन ।

संज्ञा समुच्चय (सम्) सं.—समूह, समुच्चय, एक अलंकार विशेष ।

संज्ञा समुदाय (सम्) सं.—संग्रह, समुदाय ; कलह, युद्ध ।

संज्ञा समुद्रोष (सम्) सं.—बहुत बड़ी ध्वनि या घोष ।

संज्ञा समुद्धरण (सम्) सं.—ऊपर उठाना, ऊपर खींचना ; मूलोच्छेदन ; मुक्ति, छुटकारा ; वमन, कै ।

संज्ञा समुद्र (सम्) सं.—समुद्र, जलनिधि, सागर ।

संज्ञा समुद्रवह्नि (सम्) स.—बड़बानल ।

संज्ञा समुन्नति (सम्) सं.—उठान, ऊँचाई ; उच्च पद ; समृद्धि, अभ्युदय ; अहंकार, अभिमान ।

संज्ञा समूह (सम्) सं.—समुदाय, संग्रह, गिरोह ; झुंड ।

संज्ञा समे (क) क्रि.—घिस, घट, नष्ट हो ; तैयार हो, बन ; बना ।

संज्ञा समेत (सम्) अ.—साथ, सहित, युक्त ।

संज्ञा सम्मत (सम्) सं.—स्वीकृति, मान्यता ; मत, विचार, अभिप्राय, राय ।

संज्ञा सम्मति (सम्) सं.—स्वीकृति ; अभिलाषा, इच्छा ; मान, प्रतिष्ठा ; प्यार, स्नेह ; आज्ञा, आदेश (सै. प्र.) ।

संज्ञा सम्मद (सम्) सं.—आनंद, आह्लाद, बहुत प्रसन्नता ।

संज्ञा सम्मान (सम्) सं.—सम्मान, आदर, गौरव ।

संज्ञा सम्मार्जन (सम्) सं.—झाड़ना, बुहराना, सफाई ।

संज्ञा सम्मेलन, संज्ञा सम्मेलन (सम्) सं.—मेल, मिलावट, ऐक्य, जमा होना ।

संज्ञा सय, संज्ञा सेय, संज्ञा सै (क) अ.—

सीधे, ठीक, सही. जोर से, वेग से ।
क्रि.—शांत कर, रोक; शांत हो. रुक ।

संस्कृत (क) सं.—ईमानदार आदमी ।

संस्कृत, संस्कृत सैतु (क) सं.—सीधापन,
सही होना; समाधान, लघु (मात्रा),
लघु सूचक छोटी रेखा. विश्राम, आराम ।

संस्कृत सयद (क) सं.—सीधा-सादा आदमी,
ईमानदार आदमी ।

संस्कृत सयपु (क) सं.—नीति, न्याय, पुण्य,
सुकृत; नैपुण्य ।

(१) सं संर (सम्) सं.—हार, माला;
सरोवर, तालाब; तीर, बाण; लड़ी;
नमक, लवण; मलाई ।

(२) सं संर (क) सं.—एक अनुकरणमूलक
शब्द; = सं संरु—शिकार, आखेट ।
सं संरक (सम्) सं.—शराव, मदिरा;
पानपात्र: लोटा; स्वर्ग, गगन; वह सड़क
जिसका सिलसिला बराबर जाय ।

सं संरक संरकार, सं संरक संरकार (अ. दे.)
सं.—(Government) ।

सं संरक (क) सं.—माल, सामान; साव-
धानी. ध्यान देना ।

सं संरक संरक (क) अ.—तुरंत. फौरन ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—भौरा, मधुकर ।

सं संरक संरक (क) सं.—शिकार, आखेट ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—मार्ग, रास्ता, सड़क;
पद्धति, ढंग; सरल या सीधी रेखा ।

सं संरक संरदार (अ. दे.) सं.—सरदार
(फ़ारसी); नायक, प्रधान ।

सं संरक संरपणि, सं संरक संरपलि, सं संरक
संरपलि (क) सं.—शृंखला, जंजीर ।

सं संरक संरफराखु (अ. दे.) सं.—पदवृद्धि,
अफसर की कृपा दृष्टि ।

सं संरक संरबरायि (अ. दे.) सं.—सरबराही
(फ़ारसी); व्यवस्था ।

सं संरक संरक (सम्) वि.—सरल,
सुगम, आसान ।

सं संरक संरक (क) सं.—दे. सं संरक.

सं संरक संरक (सम्) सं.—विनोद, तमाशा,
हास-परिहास । वि.—स्वादित, रसीला,
रसदार; मनोहर, सुंदर; नया ।

सं संरक संरसि (सम्) सं.—सरोवर, तालाब ।

सं संरक संरसिज (सम्) सं.—कमल ।

सं संरक संरस्वति (सम्) सं.—सरस्वती नदी;
वाणी, सरस्वती ।

सं संरक संरहदु (अ. दे.) सं.—हृद, सीमा ।

सं संरक संरक, सं संरक संरक (क) सं.—बाण,
तीर ।

सं संरक संरकसु (क) क्रि.—टछल, लॉघ ।

सं संरक संरक (क) सं.—बाण, तीर; लोहे की
छड़ी या शलाका ।

सं संरक संरक (अ. दे.) सं.—संरक (अरवी) ।

सं संरक संरक (क) सं.—औसत ।

सं संरक संरक (क) क्रि.—जा, चल, सरक, एक
ओर हट; फिसल जा, गिर, (वृष्टि हो);
घट जा, कम हो, पलायन कर, दौड़ जा;
एक तरफ ले । सं.—सरकना, एक ओर
हटना, पलायन । अ.—ठीक, सही ।

सं संरक संरकतन, सं संरक संरकतन (क)
सं.—समानता, बराबरी ।

सं संरक संरक (क) सं.—समान श्रेणी या पद
का व्यक्ति ।

सं संरक संरक (क) सं.—स्त्रियों के पहनने का
गले का हार ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—समुद्र, सागर ।

सं संरक संरक (क) सं.—समता, समानता,
बराबरी; सीधापन ।

सं संरक संरक (क) क्रि.—एक ओर रख या
हटा, सरका ।

सं संरक संरक (क) सं.—बराबरवाला, समान
श्रेणी का व्यक्ति ।

सं संरक संरक (क) सं.—जंगली जानवरों का मार्ग ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—कमल ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—समुद्र ।

सं संरक संरक, सं संरक संरक
(सम्) सं.—कमल ।

सं संरक संरक (क) सं.—आँचल ।—अच्छा
कोडु—आँचल पसार; याचना कर ।

सं संरक संरक (क) सं.—गोद; करारा, पर्वत या
चट्टान की खड़ी दीवार ।

सं संरक संरक (क) सं.—गिरफ्तारी,
बंधन ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—व्याग, विराग; सृष्टि;
प्रकृति, स्वभाव; स्वीकृति; परिच्छेद,
अध्याय; प्रयत्न, दृढ निश्चय ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—सज्जी; खार या
क्षार विशेष ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—साँप; घुमाव; बहाव

सं संरक संरक (तद्) वि.—सब, सर्व ।

सं संरक संरक (क) सं.—जल कुकुट ।

सं संरक संरक (सम्) वि.—सब, समस्त, पूर्ण,
पूरा ।

सं संरक संरक (सम्) अ.—हर प्रकार से,
सब प्रकार से, सर्वथा ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—हमेशा, सदैव ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—दुर्गा,
पार्वती ।

सं संरक संरक (सम्) सं.—तोमर, एक अस्त्र ।

सं संरक संरक, सं संरक संरक (क) क्रि.—
प्रवेश कर, घुस; हो, संभव हो; अधीन
में हो, वशीभूत हो; चला जा, गुजर जा; चुक
जा; ठीक हो; प्रसिद्ध हो, ख्यात हो ।

सं संरक संरक (क) सं.—प्रवेश; घुसना; दफा,
बार ।

सं संरक संरक (क) सं.—हाथी; साँड; झुंड
में आगे जाने वाला जानवर ।

सं संरक संरक, सं संरक संरक, सं संरक संरक (क)
क्रि.—पालन कर, पोषण कर, रक्षा कर ।

सं संरक संरक (क) क्रि.—दे. सं संरक सं.—
प्रवेश; बल, बकात्कार; हेतु, उपयुक्त
कारण ।

सं संरक संरक (क) सं.—नये सूती कपड़े की
धुलाई ।

सं संरक संरक (अ. दे.) सं.—सलाह; सुझाव ।

सलामु (अ. दे.) सं. — सलाम
 (अरबी) नमस्कार ।
 सलिके, सलिके (क) सं. —
 चुकाना, चुकता ।
 सलिके (क) सं. — अति परिचय ;
 स्वातंत्र्य ।
 सलिल (सम्) सं. — जल, पानी ।
 सलु (क) क्रि. — दे. सलु ।
 सलुगे (क) सं. — दे. सली ।
 सलुवलि (क) सं. — रूढि, व्यावहार ;
 उपयुक्तता, योग्यता ।
 सलुवागि (क) अ. — के कारण, की
 वजह से ।
 सले (क) अ. — ठीक, अच्छी तरह ; पूर्णतः
 सं. — पैसा चुकाना ; गुना, गुणन ।
 सलुलि (सम्) वि. — बहुत सुंदर या
 मनोहर ।
 सलिसु (क) क्रि. — दे, प्रदान कर,
 समर्पित कर ; निवेदन कर ; पूरा कर, चुका ।
 सलु (क) क्रि. — योग्य हो, पसंद हो ;
 लगा, पहुँच ; समर्पित हो ।
 सल्ले (क) सं. — दे. सली ।
 सल (तद्) अ. — सम, बराबर, ठीक ।
 सल (तद् ?) सं. — कवच ।
 सल (क) सं. — कललुल, बड़ा चमचा ।
 क्रि. — गंदा हो, मैला हो ।
 सल (क) सं. — जोड़ा, जोड़ी ; जुड़वा ।
 सल (तद्) सं. — श्रमण ; जैन साधु ।
 सल (तद्) सं. — सौत, सपत्नी ।
 सल (क) सं. — ककड़ी ; खीरा ।
 सल (क) क्रि. — हो, संभव हो,
 उत्पन्न हो, तैयार हो ; प्राप्त हो ।
 सल (क) क्रि. — घिसने दे ;
 नाश कर ।
 सल (क) क्रि. — कटवा, पेड़ की
 शाखाएँ कटवा ; लगवा ।

संव० सवरु (क) क्रि.—पेड़ की शाखाएँ काट,
पेड़ काट, काटकर गिरा ; लगा, लेपन कर ;
चिकना बना ; घिस ; सिरपर हाथ फेर ;
पीठ ठोक ; तैयार कर ।

संव० सवसु (क) क्रि.—घिसा, नाश कर ;
तैयार कर, बना ।

संव० सवळदे (क) सं.—उदय, प्रातःकाल ।

संव० सवळतदे (क) सं.—प्रातःकाल, सवेरा ;
दूसरा दिन ।

संव० सवार (अ. दे.) सं.—सवार, घुड़सवार ।

संव० सवारि (अ. दे.) सं.—सवारी करना,
वाहन पर बैठना ।

संव० सवि (क) क्रि.—स्वाद ले, चख ; धीत
जा, व्यतीत हो । सं.—वह जो मधुर हो ;
अमृत ।

संव० सवुट्ट, स० सौट्ट (क) सं.—कल-
छुल, बड़ा चमचा ।

संव० सवुत्ते, स० सौत्ते (क) सं.—दे-
सव० सव० सवुसव, स० सौसव (क) सं.—
सुगंध, परिमल, मकरंद ।

संव० सुयुळ, स० सौळ (क) सं.—क्षार,
खारा, फीका ।

संव० सवे (क) क्रि.—चख, खा ; घिस जा ;
वन, तैयार हो ; बना ।

संव० ससने (क) अ.—चुप चाप, अब भी,
फिर भी ।

(१) सं० ससि (क) क्रि.—कपास धुन ; उखाड़,
निकाल ।

(२) सं० ससि (तद्) सं.—सस्य, छोटा पौधा ।

सं० ससिन (क) सं.—सीधापन ।

सं० ससिल् (क) सं.—एक प्रकार की
मछली ।

सं० सस्य (सम्) सं.—शस्य, छोटा पौधा ।

सं० सहकार (सम्) सं.—सहकार, सह-
योग ।

सं० सहगमन (सम्) सं.—सती होना,
पति के शव के साथ अस्म होना ।

ಸಹಚರಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸಹೇಲಿ, ಸಖಿ ।
 ಸಹಜ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸ್ವಾಭಾವಿಕ, ಸಹಜ, ಪ್ರಾಕೃತಿಕ ।
 ಸಹನೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸहनशीलता, शांति ।
 ಸಹಭಾವೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—भगिनी, बहन ।
 ಸಹಯೋಗ (ಸಮ್) ಸಂ.—सहयोग ।
 ಸಹವಾಸ (ಸಮ್) ಸಂ.—संगत, संगति मित्रता ; संभोग ।
 ಸಹಸ್ರ (ಸಮ್) ವಿ.—हजार की संख्या ।
 ಸಹಾಯಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—सहापाठी, गुरुभाई ।
 ಸಹಾಯ (ಸಮ್) ಸಂ.—मदद, सहायता ।
 ಸಹಾಯಿ (ಸಮ್) ಸಂ.—मित्र, सहायक ।
 ಸಹಿತ (ಸಮ್) ಅ.—साथ ; समेत ।
 ಸಹಿಸು (ಸಮ್) ಕ್ರಿ.—सहन कर, सह ; सब्र कर ।
 ಸಹೋದರ (ಸಮ್) ಸಂ.—सहोदर, भाई ।
 ಸಹೋದರಿ ಸಹೋದರ, ಸಹೋದರೆ (ಸಮ್) ಸಂ.—भगिनी, बहन ।
 ಸಹ್ಯ (ಸಮ್) ವಿ.—सहन करने योग्य ; दृढ़, मजबूत, ताक़तवर । सं.—सह्याद्रि नामक पर्वत ।
 ಸಹಿ (ಕ) ಸಂ.—ठंडक, सर्दी ।
 ಸಹಿ (ಕ) ಕ್ರಿ.—खींच ; आकर्षित कर ।
 ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕ (ಸಮ್) ವಿ.—सांक्रामिक रोग ।
 ಸಾಂಖ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.—सांख्य ; दर्शन सांख्य दर्शन का अनुगामी ; एक व्यक्ति का नाम ।
 ಸಾಂಗ (ಸಮ್) ವಿ.—सब प्रकार से परिपूर्ण, सब अंगों वाला ।
 ಸಾಂಗತ್ಯ (ಸಮ್) ಸಂ.—सहवास ; संगति ; एक छंद का नाम ।
 ಸಾಂತ (ತಡ್) ಸಂ.—शिवजी ।
 ಸಾಂತಪನ (ಸಮ್) ಸಂ.—एक प्रकार की कठोर तपस्या ।

संस्कृत संस्कृत (सम्) सं. — डॉक्टर, आश्वासन, संस्कृत ।

संस्कृत मांद्र (सम्) वि.—घना, गहरा, घोर, मजबूत ; विपुल, अधिक ; उग्र ; प्रचण्ड ; स्निग्ध, चिकना ; कोमल, नरम ; सुंदर, मनोहर ।

संस्कृत सांपराय (सम्) सं.—लड़ाई, मुठभेड़ ; भविष्य, भविष्य जीवन ; अनुसंधान, जिज्ञासा ।

संस्कृत सांप्रत (सम्) वि.—योग्य, उचित, ठीक, वर्तमान समय संबंधी ।

संस्कृत सांप्रदाय (सम्) सं.—संप्रदाय, परंपरा ।

संस्कृत सांव (सम्) सं.—शिवजी ।

संस्कृत सांवाणि (तद्) सं.—साम्राजि ; लोहबान ।

संस्कृत सांवात्रिक (सम्) सं.—पोत-वहिक ।

संस्कृत सांवस्वर (सम्) वि.—वार्षिक, सालाना । सं.—ज्योतिषी, दैवज्ञ, गणितज्ञ ।

संस्कृत साकिसु (क) क्रि.—पालन-पोषण करा या करवा ।

(१) संस्कृत साकु (क) क्रि.—पालन कर, पोषण कर, रक्षा कर । सं.—पोषण, पालन-पोषण । अ.—पर्याप्त, काफी ।

(२) संस्कृत साकु (क) क्रि.—फेंक । सं.—बहाना, स्वांग ।

संस्कृत साक्षात् (सम्) अ.—खुलमखुला, प्रत्यक्ष । सं.—रूप, आकार रोग, बीमारी ; शास्त्र, आयुध ; वार्ता विशेष ।

संस्कृत साक्षि (सम्) सं.—गवाह साक्षी ।

संस्कृत सागड़े (क) सं.—एक वृक्ष (Sleichera Trijuga) ।

संस्कृत सागर (सम्) सं.—समुद्र, जलनिधि ।

संस्कृत सागवलि, संस्कृत सागुवलि (क) सं.—खेती, कृषि ।

संस्कृत सागिसु (क) क्रि.—ले जाने दे, भिजवा ; चलवा ; कृषि करा या करवा ।

संस्कृत सागु (क) क्रि.—बढ़, आगे जा, चल ; फैल । सं.—आगे बढ़ना, उन्नति ; कृषि ।

संस्कृत साचा (अ.दे.) वि.—सच्चा ।

संस्कृत साटि (क) सं.—समानता, बराबरी, सानी ।

संस्कृत साणे (तद्) सं.—सान, कसौटी ।

संस्कृत सातानि (क) सं.—ब्राह्मणेतर वैष्णव जाति के लोग ।

संस्कृत सात्विक (सम्) वि.—असली, यथार्थ ; सच्चा, सत्य ; स्वाभाविक ; ईमानदार ; गुणवान, साहसी ; सात्विक गुणयुक्त ।

संस्कृत सादा (अ. दे.) वि.—सादा, साधारण, मामूली ।

संस्कृत साहु (क) सं.—एक सुगंध द्रव्य ; काला तिलक ।

संस्कृत सादृश्य (सम्) सं.—समानता, एक रूपता ; प्रतिकृति ।

संस्कृत साधक (सम्) सं.—साधना करनेवाला, निपुण, पटु ; अभ्यास, साधना ।

संस्कृत साधने (सम्) सं.—साधन, सामग्री, उपकरण ; उपाय, मुक्ति ; अनुसरण ; प्रणाम सबूत ; शोधन ।

संस्कृत साधारण (सम्) वि.—मामूली, सामान्य ।

संस्कृत साधु (सम्) सं.—पुण्यात्मा जन ; महात्मा, ऋषि, संत । वि.—योग्य, उचित ; उत्तम ; पुण्यात्मा, प्रतिष्ठित ; शुद्ध, मनोहर ।

संस्कृत साध्य ; (सम्) वि.—साध्य, साधनीय, होने योग्य ।

संस्कृत सानि (क) सं.—संगिनी ; वैश्या ।

संस्कृत सानुमत्, संस्कृत सानुमंत (सम्) सं.—पर्वत, पहाड़ ।

संस्कृत सान्निध्य (सम्) सं.—समीपता, नैक्य ; उपस्थिति, विद्यमानता ।

संस्कृत सापे (क) सं.—चटाई (ग्रा.)

संस्कृत सापेक्ष (सम्) वि.—अपेक्षा सहित, अपेक्षित ।

संस्कृत सामग्री (सम्) सं.—सामग्री, उपकरण ।

संस्कृत सामंत (सम्) सं.—सामंत राजा, पड़ोसी राजा ।

संस्कृत सामर्थ्य (सम्) सं.—सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता, पराक्रम ।

संस्कृत सामान्य (सम्) वि.—साधारण, मामूली ।

संस्कृत सामीप्य (सम्) सं.—निकटता, समीपता ।

संस्कृत सामुद्रिके (सम्) सं.—सामुद्रिक शास्त्र, हस्त-रेखाओं से शुभाशुभ कहने की विद्या ।

संस्कृत साम्यते (सम्) सं.—समता, समानता, साम्य, सादृश्य ।

संस्कृत साम्राज्य (सम्) सं.—साम्राज्य । संस्कृत साम्राट (सम्) सं.—सम्राट, चक्रवर्ती ।

संस्कृत साय्, संस्कृत सायु (क) क्रि.—मर जा, मृत हो ।

संस्कृत सायक (सम्) सं.—बाण, तीर ; तलवार ।

संस्कृत सायंकाल (सम्) सं.—शाम, संध्या ।

संस्कृत सार्, संस्कृत सारु, (क) क्रि.—समीप जा, पास जा ; घोषणा कर, हिंदोरा पीट । सं.—निचोड़, रस, शोरबा, रसम ।

संस्कृत सार (सम्) सं.—रस, निचोड़ ; तत्व ; गूदा ; असली पदार्थ ।

संस्कृत सारग, संस्कृत सारंग (सम्) सं.—चित्तल हिरन, बारहसिंगा ।

संस्कृत सारण (क) सं.—समीपता, निकटता ।

संस्कृत सारणिगे (क) सं.—चलनी, चालनी ।

संस्कृत सारणे (क) सं.—लीपना, लिपाई, पुताई ।

संस्कृत सारथ्य (सम्) सं.—रथवानी, कौच-वानी ।

संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—कुत्ता ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—दे. संस्कृत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—सारस पक्षी ; कमल ; स्त्री की कमर की करधनी, मेखला ; मृत्यु । यम ; पर्वत, पहाड़ ; समीपता, निकटता ; धूर्त, चतुर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—मदिरा, शराव ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—वार, दफा ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—दे. संस्कृत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—लीप, गोवर से जमीन को लीप ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—दे. संस्कृत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—दे. संस्कृत = समीपता ; मेल अ.—बड़ा, विशाल ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—घोषणा कर, हिंदोरा पिटवा ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—हिंदोरा पीट, घोषणा कर । सं.—दाल का 'रसम्' ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) वि.—अर्थवाला, उपयोगी, काम का ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) वि.—सब का, सब से संबंधित ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—पंक्ति, लाइन, श्रेणी । क्रि.—पर्याप्त हो, काफी हो बस हो ; चुक ; योग्य हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—ऋण, कर्जा, उधार ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—ऋणदाता, कर्जदार ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—पुतली, गुड़िया ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—मिलान, उपयुक्तता ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—कर्जदार ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—दे. संस्कृत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—और क्रि.—दे. संस्कृत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—पाँच प्रकार की मुक्तियों में एक ; दूसरे के साथ एक ही लोक में निवास ।

संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—अवकाश, फुरसत ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—साफ-सुथरा कर. ठीक कर ; चुप हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—ध्यान, अवधान, सावधानी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सं) सं.—संगत, संगति ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—गायत्री मंत्र ; उमा का नामांतर, पार्वती ; ब्रह्मणी ; सत्यवान् की पत्नी का नाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) वि.—हजार की संख्या ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—मौत, मृत्यु ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (अ.दे.) सं.—साहुकार ; धनवान, अमीर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—अष्टांग प्रणाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) वि.—सहस्र, हजार ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—सरसों ('संस्कृत-संज्ञा-सारांश' भी लिखा जाता है) ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) —साहस, पराक्रम ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—साहित्य, वाङ्मय ; एकत्र होना, मिलन, समुदाय ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (अ.दे.) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-सारांश ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (अ.दे.) सं.—साहव ; प्रभु, स्वामी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—पक्षी विशेष, बाज ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—सिंह, शेर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—शृंगार, अलंकरण ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) क्रि.—अलंकार कर, सजा, सिंगार कर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—काला बंदर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-सारांश ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—नाक ।

संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—शिंजिनी, प्रस्थंचा ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—नाक-भौंह सिकोड़, मुँह फुला ; नाराज़ हो ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—घिस, रगड़ ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—संदुर, ईगुर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—समुद्र, सागर ; नदी ; सिंध प्रान्त ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—हाथी, गज ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—छिड़क, छिड़का सींच ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—दर्जी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—छिड़क ; छिड़का ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—सीप ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—सिंधव (तद्), नाक का मैल, रेंट ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—गेंदुरी, बिड़ई ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—शेर ; वीर पुरुष ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—सिंहासन, राजगद्दी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (तद्) सं.—दे. संस्कृत-संज्ञा-सारांश ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) सं.—राहु की माता का नाम ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सं) सं.—रेत, बाल ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (अ.दे.) सं.—सिका, मुहर ; मुद्रिका, मोहर ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) सं.—कंधी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—उलझन में डाल ; पकड़वा ; ढूस ; लगा ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (क) क्रि.—मिल, पकड़ा जा, हाथ लग । सं.—उलझन, गुत्थी ।
 संस्कृत-संज्ञा-सारांश (सम्) वि.—तर, नम, पानी से सींचा हुआ ।

सिद्धि सिद्धक (सम्) सं.—भात, भात का पिंड ।

सिद्धि (क) क्रि.—(लकड़ी को) चीर या चूर चूर कर ।

सिद्धि (क) क्रि.—प्राप्त हो, मिल, उपलब्ध हो; पाया जा ।

सिद्धि, सिद्धि, सिद्धि, (सिद्धि सिद्धि) (क) सं.—लकड़ी का टुकड़ा, चौरा हुआ टुकड़ा ।

सिद्धि, (क) सं.—लजीला या शर्मानेवाला पुरुष ।

सिद्धि (क) सं.—दैत्य, राक्षस ।

सिद्धि (क) सं.—लजा, शर्म, लाज ।

सिद्धि (क) सं.—क्रोध, गुस्सा ।

सिद्धि (क) सं.—फटना (सिर में दर्द); गर्व से उछलना ।

सिद्धि (क) क्रि.—तितर-वितर हो, फैल, फट (दर्द हो) । सं.—सूक्ष्म होना, पतला होना; लोहे का बाँस या अंकुश : विकीर्णता, फैलाव; दाह या प्यास बुझाना, नापसंदगी; व्याकुलता, भय; गजमद ।

सिद्धि, सिद्धि (क) क्रि.—विकीर्ण हो, चारों ओर फैल । सं.—वज्र, बिजली ।

सिद्धि (क) क्रि.—चिढ़, क्रुद्ध हो । सं.—चिढ़चिड़ा स्वभाव ।

सिद्धि (क) सं.—चेचक ।

सिद्धि, सिद्धि (क) सं.—एक कंटोली झाड़ी ।

सिद्धि (क) सं.—दे. सिद्धि; आँख का मल ।

सिद्धि (सम्) वि.—सफ़ेद । सं.—सफ़ेद रंग; चाँदी ।

सिद्धि (सम् ?) सं.—व्यभिचारी, लंपट ।

सिद्धि—खी. लिं. ।

सिद्धि (तद्) सं.—अरथी, टिकठी ।

सिद्धि (क) क्रि.—(हाथ से) ढूँढ ।

सिद्धि (सम्) वि.—जिसका सधन सिद्ध हो चुका हो, सिद्ध; सफल; प्राप्त, उपलब्ध; निपुण. पटु; प्रसिद्ध; चमकीला, प्रकाशमान । सं.—सिद्ध पुरुष मुक्ति, मोक्ष; तैयारी ।—साँझ माहु = तैयार कर ।

सिद्धि (सम्) सं.—उसूल, सिद्धांत, मत ।

सिद्धि (सम्) सं.—गौतम बुद्ध; सफ़ेद सरसों; शिवजी ।

सिद्धि (सम्) सं.—सफलता, कृतकार्यता संस्थापना, प्रतिष्ठा, निश्चय, निर्णय, फैसला; पूर्णज्ञान; तैयारी; अणिमा आदि सिद्धियाँ; मोक्ष ।

सिद्धि (सम्) सं.—छींटा रोग, कोढ़ ।

सिद्धि, सिद्धि (अ.दे.) सं.—सिपाही (फ़ारसी) ।

सिद्धि (क) सं.—खंजन पक्षी ।

सिद्धि (क) सं.—सीप ।

सिद्धि (क) सं.—छिलका, फल आदि का बाहरी ढाँचा ।

सिद्धि (क) सं.—नौकर या चाकरों का समूह ।

सिद्धि (अ.दे.) सं.—मधुरता से ।

सिद्धि, सिद्धि (तद्) सं.—श्री, लक्ष्मी, ऐश्वर्य ।

(१) सिद्धि (क) सं.—साहस, वीरता, पराक्रम; गर्व ।

(२) सिद्धि (तद्) सं.—शिरीष ।

सिद्धि, सिद्धि (क) क्रि.—फँस, (उलझन में) पड़े ।

सिद्धि (क) वि.—पतला, महीन ।

(१) सिद्धि (क) क्रि.—दे. सिद्धि सं.—उलझन ।

(२) सिद्धि (अ.दे.) सं.—रेशमी कपड़ा, Silk.

सिद्धि (क) सं.—लकड़वग्गा ।

सिद्धि, सिद्धि (क) सं.—गेंडुरी, पूला; घास का गट्टा ।

सिद्धि, (क) सं.—दे. सिद्धि.

सिद्धि (क) सं.—एक मछली विशेष ।

सिद्धि (क) सं.—मधुरता, मीठापन; मीठा पदार्थ, मिठाई ।

सिद्धि (क) सं.—सीटी; शाखा, डाली; रेंट, आँख का मैल ।

सिद्धि (क) क्रि.—जल जा, जलकर काला हो । वि.—मधुर, मीठा । सं.—माधुर्य, मिठास ।

सिद्धि (क) सं.—जल जाने की स्थिति ।

सिद्धि, सिद्धि (क) सं.—छोटी सूखी मछली ।

सिद्धि (क) सं.—एक तरह का चामर ।

सिद्धि (क) सं.—शीकाई पौधा (Acacia concinna) ।

सिद्धि (क) सं.—क्रोध, गुस्सा, रोष ।

सिद्धि (सम्) सं.—सीताफल, फल विशेष ।

सिद्धि (सम्) सं.—हल के फाल से बनी रेखा; सीता, जानकी; एक प्रकार की घास ।

सिद्धि, सिद्धि (क) क्रि.—छींक । सं.—छींक, छींकना ।

सिद्धि (क) क्रि.—चूस (जैसे आम के फल को चूसना) ।

सिद्धि (क) सं.—ब्राँस की तीली ।

सिद्धि (सम्) सं.—एक संस्कार जो प्रथम गर्भस्थिति के चौथे, छठे या आठवें मास में किया जाता है; सिर के केशों की माँग; सीमा की चिह्न या रेखा ।

सिद्धि (सम्) सं.—सीमा, हद; समुद्र-तट, तट; विदेश ।

सिद्धि (क) सं.—नरम नारियल का पानी ।

सिद्धि (क) सं.—मिठास; मिठाई ।

सिद्धि, सिद्धि (क) सं.—लीख, जूँ का अंडा । क्रि.—लीख निकाल ।

१९८ सीरे तद्) सं.—साड़ी ।

१९९ सीरे (क) सं.—पंक्ति, श्रेणी, रेखा ; रेखाएँ ।

१९९० सीरु (क) क्रि.—छिड़क, फैल ; क्रुद्ध हो झगड़ने को तैयार हो ; चीख, कराह ।

१९९०० सीरुडु (क) सं.—चीरिका, झींगुर ।

१९९००० सीवरिसु (क) क्रि.—नफरत कर, जुगुप्सा प्रकट कर ; फूँक ।

१९९०००० सीवु (क) क्रि.—सजा, सिंगार कर ।

(१) १९९०००० सीस (क) सं.—एक छंद का नाम ।

(२) १९९००००० सीस १९९००००० सीसक (सम्) सं.—सीसा नामक धातु (Lead) ।

१९९००००० सील, १९९००००० सीलु (क) क्रि.—चीर, फाड़ ; टुकड़े कर ।

१९९०००००० सुक (तद्) सं.—शुल्क (तद्) ; कर, महमूल ; चुंगी ।

१९९०००००० सुकु (क) सं.—झुरी ; तह ।

१९९००००००० सुंदरगाळि (क) सं.—आंधी ; बवंडर ।

१९९००००००० सुड (तद्) सं.—बुढ़िया, छोटा चूहा ।

१९९००००००० सुडिसु (क) क्रि.—भाफ बना, भाफ बनकर घटा ।

१९९००००००० सुडु (क) क्रि.—भाफ हो ।

१९९००००००० सुंदर (सम्) वि.—चारु, मनोहर, प्रिय, खूबसूरत ।

१९९००००००० सुंदरि (सम्) सं.—सुंदरी स्त्री ।

१९९००००००० सुंदु (क) सं.—रति, संभोग ।

१९९००००००० सु (सम्) उ.—अच्छा, भला, सुंदर, मनोहर, सर्वोत्तम ।

१९९००००००० सुकर (सम्) वि.—जो सहज में किया जा सके ।

१९९००००००० सुकुमार (सम्) वि.—बहुत कोमल, सुलायम या नाजुक ।

१९९००००००० सुकु (सम्) सं.—सिकुड़न ; झुरी ।

१९९००००००० सुख (सम्) सं.—सुख, आनंद, हर्ष, प्रसन्नता ; समृद्धि ।

१९९००००००० सुगति (सम्) सं.—खुशबू, सुवास, सुरभि ।

१९९००० सुगंध (सम्) सं.—सुंदर दशा ; सुक्ति ।

१९९००० सुगम (सम्) वि.—आसान ।

१९९०० सुगि (क) क्रि.—लट, लट-मार कर ; ढर जा, भीत हो ।

१९९००० सुगुडतन (क) सं.—लालसा, तीव्र इच्छा ।

१९९०० सुगि (क) सं.—वसंत, चैत्रमास, फसल का काल ; बहार, आनंद ।

१९९० सुजन (सम्) सं.—सज्जन ।

१९९ सुटि (क) वि.—फुर्तीला, उत्साही, चतुर, होशियार ।

१९९ सुटु (क) क्रि.—अंगुली से संकेत कर ।

१९९ सुडु (क) क्रि.—जल, दाह उत्पन्न हो, आँच लग । वि.—जलनेवाला ।

१९९ सुण (तद्) सं.—चूना ।

१९९ सुतरां (सम्) अ.—विलकुल, सुतरां ।

१९९ सुति (तद्) सं.—श्रुति, वेद ।

१९९ सुतु (क) क्रि.—अंगुली से संकेत कर ।

१९९ सुत्तल (क) अ.—चारों ओर ; आसपास ।

१९९ सुत्तले (क) सं.—मन्दिर का हाता या प्राकार ।

१९९ सुत्तिगे (क) सं.—हथौड़ा ।

१९९ सुत्तिसु (क) क्रि.—घुमा, मँडराने दे ।

१९९ सुत्तु (क) क्रि.—घूम, चारों ओर घूम ; मँडरा । सं.—घुमाव ; मंडल ; विशालता ; परिणाम ।

१९९ सुत्तल (क) अ.—चारों ओर ।

१९९ सुदाम (सम्) सं.—एक गरीब ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण के मित्र थे । मेघ ; बादल ; समुद्र ; पर्वत ।

१९९ सुहि (तद्) सं.—खबर, समाचार ; वार्ता ।

१९९ सुधांशु (सम्) सं.—चन्द्रमा । कपूर ; अग्नि की एक जिह्वा ।

१९९ सुधाकर (सम्) सं.—चंद्रमा, इंदु ।

१९९ सुधारणे (सम्) सं.—सुधार, ठीक करना ।

१९९ सुधि, १९९ सुधी (सम्) सं.—बुद्धिमान या विद्वान पुरुष ।

१९९ सुधे (सम्) सं.—सुधा, अमृत ; पुष्पों का रस, शहद, रस ; गरा ।

१९९ सुनासीर (सम्) सं.—इंद्र ।

१९९ सुपर्ण (सम्) सं.—गरुड ।—चैत्र केतु = विष्णु ।

१९९ सुपर्णि (सम्) सं.—गरुड की माता ।

१९९ सुप्त (सम्) वि.—सोया हुआ ।

१९९ सुप्ति (सम्) सं.—नींद, निद्रा, सुस्ती ।

१९९ सुप्तिगे, १९९ सुप्तिगे (तद्) सं.—शय्या, सेज, बिस्तर ।

१९९ सुप्रतीक (सम्) वि.—सुंदर, सुंदर आकार का । सं.—पूर्वोत्तर दिशा का हाथी ।

१९९ सुप्रास (सम्) सं.—अनुप्रास अलंकार का एक भेद ।

१९९ सुवेदार (अ.दे.) सं.—सूवेदार (अरवी, फारसी) ।

१९९ सुव्वलु (क) सं.—खुरचुरापन (कपड़े पर या जानवरों के शरीर पर के रोम में) ।

१९९ सुभग (सम्) वि.—सुंदर, मनोहर, प्रिय ; मान्य । सं.—सुंदरता ।

१९९ सुभद्र (सम्) सं.—कृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा ।

१९९ सुभाषित (सम्) सं.—उत्तम वाणी, अच्छी तरह की बोली ।

१९९ सुमने (सम्) सं.—चमेली ; जाती पुष्प ।

१९९ सुमान, १९९ सुम्मान (सम्) सं.—बड़ी प्रसन्नता या आह्लाद ।

१९९ सुमार, १९९ सुमारु (क?) अ.—लगभग, करीब ।

१९९ सुमुख (सम्) सं.—सुंदर मुख ; पंडितजन ; गरुड ; गणेश ; स्मिति ; राजमार्ग ।

१९९ सुम्भ, १९९ सुम्भगे, १९९ सुम्भने (क) अ.—चुपचाप, यों ही, अकारण ।

संस्कृत सुचि, संस्कृत सुचि (क) क्रि.—उच्छवास छोड़ । सं.—उच्छवास, उसाँस ।

संस्कृत सुचि, संस्कृत सुचि, संस्कृत सुचि (क) सं.—उच्छवास ;

संस्कृत सुर (सम्) सं.—देवता ; तैत्तिरीय की संख्या ; सूर्य ; एक की संख्या ।

संस्कृत सुरगि, संस्कृत सुरगि (क) सं.—एक पेड़ जिसके फूल सुगंधित होते हैं ।

संस्कृत सुरगिरि (सम्) सं.—मेरु पर्वत ।

(१) संस्कृत सुरंग (अ.दे.) सं.—सुरंग ; छेद ।

(२) संस्कृत सुरंग (सम्) सं.—अच्छा रंग या वर्ण ; अधिक प्रेम ।

संस्कृत सुरत (सम्) सं.—अत्यंत हर्ष, बड़ी प्रसन्नता ; संभोग, रति ।

संस्कृत सुरधनु (सम्) सं.—इंद्रधनुष ।

संस्कृत सुरपादप (सम्) सं.—कल्पवृक्ष ।

संस्कृत सुरपुरि (सम्) सं.—देवलोक, अमरावती ।

संस्कृत सुरभि (सम्) सं.—सुगंध, महक ; कामधेनु ; सरस्वती, भारती ; गाय, काम-देव ; वन, अरण्य ; चंपक वृक्ष ; कदंब वृक्ष ; शमी वृक्ष ; एक प्रकार की सुगंधित घास ; वसंत ऋतु ।

संस्कृत सुरराज (सम्) सं.—इंद्र, देवराज ।

संस्कृत सुरवर्त्म (सम्) सं.—आकाश ; वातावरण ।

संस्कृत सुरले (सम्) सं.—तुलसी का पौधा ; और एक पौधा ।

संस्कृत सुरलि (क) सं.—लपेटी हुई वस्तु, गोल किया हुआ (कागज़ आदि) ।

(१) संस्कृत सुरि (क) क्रि.—(पानी आदि) डाल ; बरस ; चू ; पिरो ।

(२) संस्कृत सुरि संस्कृत सुरिगे (तद्) सं.—छुरी ।

संस्कृत सुरिवु, संस्कृत सुरिवु (क) क्रि.—(पानी आदि) डाल ।

संस्कृत सुरिसु (क) क्रि.—बहा, बरसा ।

संस्कृत सुरसु (क) सं.—केले के सूखे पत्ते ।

संस्कृत सुरंगे (अ. दे) सं.—सुरंग ; दीवार आदि बना छेद ।

संस्कृत सुरुदु, संस्कृत सुरुदु (क) क्रि.—लपेट, गोल कर ; कुम्हाला सिकुड़ जा ।

संस्कृत सुरुल (क) क्रि.—सिकुड़ जा ; लपेट जा ; कुम्हाला ।

संस्कृत सुरुलि, संस्कृत सुरुले (क) सं.—लपेटी हुई वस्तु ।

संस्कृत सुरे (सम्) सं.—सुरा, मदिरा, शराब ।

संस्कृत सुरि (क) क्रि.—‘सुर’ शब्द के साथ पी ।

संस्कृत सुरु (क) क्रि.—सिकुड़ जा, संकुचित हो । सं.—सिकुड़न ; छुरी ।

संस्कृत सुरु (क) सं.—प्रचुरता, आधिक्य, समृद्धि ।

संस्कृत सुलदु, संस्कृत सुलिदु (क) कु — छिलका । निकाल कर ।

संस्कृत सुलि (क) क्रि — छिलका निकाल (जैसे केले का छिलका निकालना) ; लट, दबोच । सं.—गाय, गौ ।

संस्कृत सुलिगे (क) सं.—लट, ढाका ।

संस्कृत सुलोचन (सम्) सं.—ऐनक, चश्मा ।

संस्कृत सुवर्ण (सम्) सं.—अच्छा रंग ; सोना, हेम ; सोने का सिका, अशर्फी, मोहर ।

संस्कृत सुवले, संस्कृत सुवले, संस्कृत सुवि (क) सं.—सुहागिन के गीत ।

संस्कृत सुशीलते (सम्) सं.—अच्छा स्वभाव या आचरण ।

संस्कृत सुश्राव्य (सम्) वि.—कानों को सुनने के लिए अच्छा लगनेवाला ।

संस्कृत सुपुति (सम्) सं.—गहरी नींद ; अज्ञान ।

संस्कृत सुष्ठु (सम्) वि.—अच्छा ; उत्तम, सुंदर । अ.—अधिक, ठीक, सचमुच ।

संस्कृत सुष्म (सम्) सं.—रस्सा, रस्सी ।

संस्कृत सुसिर (तद्) सं.—सुविरं (तद्) ; छेद, सुराव ।

संस्कृत सुसिल् (क) सं.—प्रातःकाल, उदय, प्रभात ; रति. संभोग ।

संस्कृत सुस्ति (अ.दे.) सं.—सुस्ती ; विलंब देर, आलस्य ।

संस्कृत सुस्तु (अ.दे.) सं.—आलस्य, शैथिल्य, ढिलाई, कमजोरी ।

संस्कृत सुहृद्, संस्कृत सुहृद (सम्) सं.— मित्र, दोस्त ।

संस्कृत सुलुवु (क) सं.—शब्द, ध्वनि, आहट ; पता, निशाना ।

संस्कृत सुल्लु (क) सं.—झूठ, असत्य, मिथ्या ।

संस्कृत सुलि (क) क्रि.—चारों ओर घूम, मँडरा, भ्रमण कर, चकरा । सं.—भ्रमण ; भँवर, जलावत ; केले, नारियल आदि का कोमल पत्ता ; कामचोर मनुष्य ; कपट, धोखा ।

संस्कृत सूकर (सम्) सं.—सुअर ।

संस्कृत सूकळ (तद्) सं.—अड़ियल धोड़ा, नटखट, पाजी ।

संस्कृत सूक (क) वि.—उचित, योग्य ; सुंदर ढंग से कहा हुआ ।

संस्कृत सूक्ष्म (सम्) वि.—बहुत छोटा, बारीक, अल्प, पतला, सुकुमार ; विलक्षण ; उत्तम ; तीक्ष्ण ; चालक । सं.—अणु, परमाणु ; परमात्मा ; महीन डोरा ; फरेब, धोखा ।

संस्कृत सूगरिसु, संस्कृत सूगरिसु (क) क्रि.—अकुला, घबड़ा जा, व्याकुल हो ; अमित हो ।

संस्कृत सूचक (सम्) वि.—सूचित करनेवाला सं.—सुई ; भेदिया, जासूस ; अध्यापक, शिक्षक ; तोरण ; वन, जंगल ; वित्त, धन ; कुत्ता, बिल्ली ; वानर, बंदर ; शिवजी ।

संस्कृत सूचने (सम्) सं.—सूचना, बतलाना ।

संस्कृत सूचि (सम्) सं.—सुई छेदन ; तालिका, सूची ; सैन्यग्रह ; सूच्य वनक्षेत्र ; नृत्यविशेष ; नाटकीय हावभाव ।

संस्कृत सूचिसु (सम्) क्रि.—सूचित कर, बतला ।

सोष् सृजि (तद्) सं.—सृष्टि; सृष्ट्यग्र ।
 सोष् सृष्टि (क) सं.—फुर्ती, तेजी, चपलता ।
 सोष् सृष्टि, सोष् सृष्टि, सोष् सृष्टि
 सृष्टाय (क) सं.—कंगन, कड़ा ।
 सोष् सृष्टि (क) क्रि.—जूड़े में खोंस ले ।
 सं.—(घास आदि आ) गढ़ा, बोझ ।
 सोष् सूत (सम्) सं.—सारथी, रथ हाँकनेवाला;
 बंदी, मागध, भाट; सूर्य; वड़ई; पौरा-
 णिक; पारा, पारद ।
 सोष् सूतक (सम्) सं.—जनन-मरण का
 आशौच, सूतक ।
 सोष् सूतिके (सम्) सं.—जच्चा स्त्री ।
 सोष् सूत्र (सम्) सं.—धागा, डोरी, सूत;
 तार; कठपुतली का तार या डोरी; संक्षिप्त
 सारगर्भित पद या वचन ।
 सोष् सूत्रधार (सम्) सं.—सूत्रधार,
 नाट्यशाला का व्यवस्थापक, प्रधान नट;
 धागा, डोरी ।
 सोष् सूदकर्म (सम्) सं.—रसोइये का
 काम ।
 सोष् सूनु (सम्) सं.—बच्चा; बेटी या
 बेटा; छोटा भाई; सूर्य ।
 सोष् सूप (सम्) सं.—सूप, शोरबा, पकी
 हुई दाल ।
 सोष् सूर, सोष् सूर (क) सं.—ओरी,
 ओलती ।
 सोष् सूरि (सम्) सं.—विद्वान्, पंडित ।
 सोष् सूरु, सोष् सूरु (क) क्रि.—
 शपथ कर । सं.—शपथ ।
 सोष् सूरे, सोष् सूरे (क) सं.—लट, डाका ।
 सोष् सूर्य (सम्) सं.—सूर्य, सूरज; अर्क
 का पौधा; बारह की संख्या ।—३०३
 कांति (सम्) सं.—एक पुष्प ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—गर्भ-
 स्थिति (विशेषतः जाववरों की)
 सोष् सूल्गाति, सोष् सूल्गति
 (तद्) सं.—प्रसवकारिणी दाई ।
 सोष् सूल् (क) सं.—दे. सोष्. साँस, श्वास ।

सोष् सूसक (क) सं.—रत्नगुच्छा, झालर,
 एक मस्तकाभरण ।
 सोष् सूसिके (क) सं.—प्रदर्शन, दिखाना ।
 सोष् सूसु (क) क्रि.—टपक, बूँद बूँद गिर;
 चू; छलक, उछल पड़, दीख, दिखाई,
 पड़; छलका; छिड़का ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—जोर की
 आवाज़, शोर-गुल ।
 सोष् सूल्सु, सोष् सूल्सु (क)
 क्रि.—सोष् सूल्सु—शोर-गुल कर ।
 सोष् सूल् (तद्) सं.—रंडी, वेश्या ।
 सोष् सूल्, सोष् सूल् (क) सं.—बार,
 दफा; बारी ।
 सोष् सूल्सु, सोष् सूल्सु (क) सं.—दूत का काम,
 राजदूत, संदेश-
 वाहक ।
 सोष् सूग (सम्) सं.—भिदिपाल, एक प्रकार
 की गदा ।
 सोष् सूमर (सम्) सं.—मृग विशेष, चमरी
 मृग ।
 सोष् सूष्टि (सम्) सं.—संसार की रचना;
 रचना; प्रकृति ।—३०४ कर्त (सम्) सं.—
 सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।
 सोष् सूडु (क) सं.—कंदुक, गेंद ।
 सोष् सूडु (क) क्रि.—घिस, रौंद, मल;
 नाश कर । सं.—रौंदना आदि ।
 सोष् सूके (तद्) सं.—ताप, उष्णता, उमस ।
 सोष् सूक्कु (क) क्रि.—घुसेड़, धँसा ।
 सोष् सूक्के (क) सं.—३०५ चक्के—लकड़ी के
 छोटे-छोटे टुकड़े ।
 सोष् सूखे सींगे सूगे (तद्) सं.—दे. सूडे.
 (१) सोष् सूजे (क) सं.—बाजरा ।
 (२) सोष् सूजे (तद्) सं.—सेज, शय्या;
 विस्तर ।
 सोष् सूटे (क) क्रि.—झुक; ँठ ।
 सोष् सूट्टि (तद्) सं.—श्रेष्ठिन (तत्); बनिया ।
 सोष् सूडकु (क) सं.—अकड़पन, ँठ,
 घमंड; गर्व ।

सोष् सूडवु (क) सं.—गर्व. घमंड; वक्रता ।
 सोष् सूडु (क) क्रि.—सी (सीना) ।
 सोष् सूडे (क) क्रि.—मोटा हो, फूल जा;
 घमंडी बन; (रोगटे) खट हो (सर्दी के
 कारण); झुक; सिकुड़; डर जा । सं.—
 वक्रता; डर, भय, घबराहट; एक पौधा;
 वर्तन विशेष ।
 सोष् सूणसु (क) क्रि.—ईर्ष्या कर, डह कर ।
 सं.—क्रोध, रोष; बदला ।
 सोष् सूणे (क) क्रि.—क्रुद्ध हो; धो; साफ कर ।
 सोष् सूदगे (क) सं.—कूडा-करकट । (तद्)
 सं.—अरथी, टिकठी ।
 सोष् सूरगु (क) सं.—डुराई, हानि; पाप,
 अपराध; आँचल ।
 सोष् सूरे (क) सं.—अंजलि, चुल्लू; मुट्टी भर,
 कारागार, जेल ।
 सोष् सूरगु, सोष् सूरगु (क) सं.—
 आँचल, अंचल ।
 सोष् सूरे (क) क्रि.—पीडा दे, दिक कर;
 सिकोड़ । सं.—बंधन, कारागार ।
 सोष् सूेलदि, सोष् सूेलदि (क) सं.—
 मकड़ी ।
 सोष् सूेलवु (क) सं.—छुट्टी; अनुमति ।
 सोष् सूेले (क) सं.—शोर-गुल; प्रतिध्वनि,
 गूँज; सोता, चश्मा ।
 सोष् सूेलत, सोष् सूेलवु (क) सं.—खिंचाव;
 पानी का धार में खिंचाव ।
 सोष् सूेलसु (क) क्रि.—द्वेष कर, ईर्ष्या कर;
 पिटवा ।
 सोष् सूेले (क) सं.—खिंचना, खिंचाव; छड़ी,
 दंड, बेंत । क्रि.—खींच, कर्षित कर; उठा
 ले; चढ़ा; उखाड़; जल्दी बह ।
 सोष् सूेले (क) सं.—खरोचने से बना घाव ।
 सोष् सूेकडा (तद्) सं.—प्रतिशत ।
 सोष् सूेगुडसि, सोष् सूेगुडि, सोष् सूेगुडि
 सूेगुडि, सोष् सूेगुडि सूेगुडि (क) सं.—
 मधुरक नामक पौधा ।
 सोष् सूेचन (सम्) सं.—सिंचन, छिड़काव,
 सिंचना, छिड़कना; बाल्टी, डोलची ।

सेतु (क) सं.—मात्सर्य, बदला ; क्रोध, रोष ।

सेतु (सम्) सं.—बांध, पुल ; टीला ; भूसीमा ; घाटी ।

सेतु (क) क्रि.—पी (बीड़ी, सिगरेट आदि पीना) ; (कुएँ से पानी) खींच ; सिकुड़ जा ।

सेतु (क) सं.—थकावट, श्रान्ति, आयास ।

सेतु (क) सं.—वृषि, खेती ।

सेना, सेने (सम्) सं.—सेना, फौज ।

सेतु (अ. दे.) सं.—सेव ।

सेतु (क) क्रि.—पहुँच, मिल, पास जा ; पसंद आ, रुचि कर लग । सं.—मिलना, मिलाप ।

सेतु (क) सं.—मिलना मिलाप ।

सेतु (क) सं.—संबंध, मेल, सांगत्य ; पशुओं का झुंड ।

सेतु (क) सं.—अंजलि, जुल्ल ।

सेतु (क) क्रि.—आक्षेप कर, तिरस्कार कर ; निंदा कर ।

सेतु (तद्) सं.—साड़ी ।

सेतु (सम्) सं.—सेवक, दास, नौकर ।

सेतु (सम्) सं.—सेवा, सेवा करना ।

सेतु (तद्) सं.—सेवती, एक प्रकार की जुही ।

सेतु (क) सं.—सेवई ।

सेतु (सम्) सं.—सेवा ; पूजा, अर्चन ।

सेतु (सम्) सं.—जयद्रथ का नाम ; सिंधु देश ; सिंधु देश का घोड़ा, घोड़ा ; लवण ; चंद्रमा ; तोता, शुक ।

सेतु (सम्) सं.—सिपाही, योद्धा ।

सेतु (क) क्रि.—लग, छू ; स्पर्श कर, पास आ । सं.—छूना ।

सेतु (क) सं.—कमर, कटि ।

सेतु (क) सं.—बवंडर ; आँधी ।

सेतु (क) सं.—हाथी की सूँड ।

सेतु (क) सं.—चरित्रहीन स्त्री या पुरुष ; गली ।

सेतु (क) अ.—सुंदर, मनोहर, अच्छी तरह ।

सेतु (क) सं.—सौंदर्य, सुंदरता, लावण्य, शोभा ।

सेतु (क) सं.—सिकुड़न, झुरी ; मद, अहंकार, घमंड । क्रि.—घमंड से चूर हो, मदमत्त हो ; छू, स्पर्श कर ।

सेतु (क) सं.—स्पर्श, छूना ; गंध, तीक्ष्ण गंध ।

सेतु (क) क्रि.—चमक, सुंदर लगा या दीख ।

सेतु (क) सं.—चमक, शोभा, कान्ति, सौंदर्य ।

सेतु (क) वि.—टेढ़ा, वक्र ; रूपहीन, विकृत ।

सेतु (क) वि.—दे, दी ।

सेतु (क) सं.—दीपक, दिया ।

सेतु (क) क्रि.—अंगुली मार या चुभ, छुट छुट कर ; चोंच से मार ।

सेतु (तद्) सं.—स्वस्व, संपत्ति, अपनी वस्तु ।

सेतु (क) सं.—फल या पत्तों के वृंत भाग से निकलनेवाला रस ।

सेतु (तद्) सं.—शून्य (A Cypher) ।

सेतु (क) सं.—पत्ता, कोई हरा पत्ता, भाजी ; निर्बलता, कमजोरी । क्रि.—मुरझा, सूख, कमजोर हो ।

सेतु (क) सं.—आहट, शब्द ।

सेतु (तद्) सं.—सौंदर्य, शोभा, लावण्य ।

सेतु (क) क्रि.—सूख, कुम्हला, मुरझा, कृश हो ।

सेतु (क) सं.—सुरक्षा जाना या सूख जाना ।

सेतु (क) सं.—लौकी ।

सेतु (क) सं.—घमंड, गर्व, मद, अहंकार ।

सेतु (क) सं.—शब्द । क्रि.—कह, बोल ।

सेतु (क) सं.—गंध, तीक्ष्ण गंध ।

सेतु (तद्) सं.—बहू, पुत्रवधू, पतोहू ; बहन की धेरी ।

सेतु (क) सं.—नथुना ; मच्छर, मशक ।

सेतु (क) क्रि.—भगा, मार भगा, खदेड़ ।

सेतु (क) क्रि.—छू, स्पर्श कर ; पा जा ।

सेतु (क) सं.—अंचल, आंचल गोद ।

सेतु (क) सं.—आँख की कोर ; नारियल का पत्ता ; ताड़ का पत्ता ; मोरपंख ; पतवार ; मोर, मयूर ।

सेतु (सम्) वि.—ऊँचा, उन्नत ।

सेतु (क) सं.—अचरज, आश्चर्य, विस्मय ।

सेतु (क) सं.—कलछुल (व्या. भा.) ।

सेतु (क) सं.—गाल का निचला भाग ।

सेतु (क) सं.—छोड़ा हुआ या त्यक्त धन ।

सेतु (तद्) सं.—सहोदर, भाई ।—माँ माँ (तद्) सं.—मामा ।—उट्टे अत्ते (तद्) सं.—मामी, फूफी ।

सेतु (तद्) क्रि.—छान ; साफ कर ।

सेतु (क) सं.—फुहार, बँदाबूंदी (वर्षा) ।

सेतु (तद्) सं.—सुहाग-गीत ।

सोम सोम (सम्) सं.—एक लता, सोम-
वल्ली ; अमृत ; चंद्रमा ; किरण ; कपूर ;
कुवेर ; शिव ; यम ; मुनि, यति ; जल ;
पवन, वायु ; मन ।

सोमवलि सोमवलि (सम्) सं.—सोम
लता ।

सोमो सोमो (क) सं.—आलसी या
सुस्त मनुष्य ।

सोमो सोमो (क) क्रि.—
चू, टपक, स्रवित हो ; गिर ; ढीला हो ;
गर्वहीन हों ।

सोमो सोमो (क) सं.—लौकी ; एक पक्षी ।

सोमो सोमो (क) क्रि.—
हार जा । सं.—हार, पराजय ।

सोमो सोमो (क) सं.—हार, पराजय ; हानि ।
सोमो सोमो (क) क्रि.—हरा, पराजित
कर ।

सोमो सोमो (क) सं.—
हार, पराजय ।

सोमो सोमो (क) सं.—केंचुली ; प्याज का
छिलका ।

सोमो सोमो (क) क्रि.—भगा, खदेड़ । सं.—
निशाना, चिह्न, पता ।

सोमो सोमो (क) सं.—छान (ग्रा.) ।

सोमो सोमो (क) सं.—निशाना, चिह्न, पता ।

सोमो सोमो (क) सं.—सुंदरता,
मनोहरता ।

सोमो सोमो (क) सं.—सुविधा ;
आसानी ।

सोमो सोमो (क) सं.—चंदन वृक्ष ।

सोमो सोमो (क) सं.—भलाई, भद्रता,
नेकी ; उदारता ; दया ।

सोमो सोमो (क) सं.—कललुल, बड़ा चमचा ।

सोमो सोमो (क) सं.—बिजली ;
एक अप्सरा का नाम ।

सोमो सोमो (क) सं.—प्रासाद, महल, सफेदी
से पुता हुआ भवन ; चाँदी ; अमृत, पीयूष
सत्य ; तृण, घास ।

सोमो सोमो (क) सं.—अच्छा भाग्य ;
शुभत्व, कल्याणत्व ; सुहागिन होना, सुहागा ;
मनोहरता, सौंदर्य ।—३० वति (सम्)
सं.—सुहागिन स्त्री ।

सोमो सोमो (क) वि.—चंद्रमा संबंधी,
सोम संबंधी, सुंदर, मनोहर ; मुलायम,
कोमल ; शुभ । सं.—सौंदर्य ; बुधग्रह ;
एक संवत्सर का नाम ।

सोमो सोमो (क) सं.—सुगंध, महक, खुशबू ।

सोमो सोमो (क) सं.—सुशीलता,
अच्छा स्वभाव ।

सोमो सोमो (क) सं.—कार्तिकेय ; शिव ;
शरीर ; राजा ; नदीतट ।

सोमो सोमो (क) सं.—कंधा ; पेड़ की
ढाली या गुदा ।

सोमो सोमो (क) वि.—नीचे गिरा हुआ,
बाहर निकला हुआ ; टपका हुआ ; छिड़का
हुआ, सूखा हुआ ।

सोमो सोमो (क) सं.—फिसला हुआ,
गिरा हुआ, ठोकर खाया हुआ ।

सोमो सोमो (क) सं.—खंभा ; पेड़ का
तना, धड़ ; दृढ़ता, कठोरता ; शील,
प्रकृति ; पर्वत ; मनुष्य ; एक सात्विक
भाव ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्तंभन, रोक-
थाम, मुग्ध होना, स्तब्ध रहना ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्तन, कुच, स्त्री की
छाती ।

सोमो सोमो (क) सं.—गुच्छा, गलदस्ता ।

सोमो सोमो (क) वि.—रौंका हुआ, सुन्न,
गतिहीन, अचल ; दृढ़, कठोर, सख्त ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्तोत्र, स्तुति, प्रशंसा ।

सोमो सोमो (क) वि.—शांत, निश्चल,
स्तब्ध ; कोमल, नरम ; गोला, तर, नम ।

सोमो सोमो (क) सं.—शांति, मानसिक
स्थिरता ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्तव, प्रशंसा ।

सोमो सोमो (क) सं.—राशि, ढेर ; टीला
बौद्धों के स्तूप या स्तंभ ।

सोमो सोमो (क) सं.—चोर, डाकू ।

सोमो सोमो (क) अ.—स्वल्प, थोड़ा-सा,
कुछ ।

सोमो सोमो (क) सं.—प्रशंसा, स्तव ।

सोमो सोमो (क) सं.—प्रशंसा ; संग्रह,
समुदाय, राशि, समूह ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्त्री, औरत, नारी ;
जानवर की मादा ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्त्री स्वभाव,
स्त्रीत्व ; स्त्रीलिंग ।

सोमो सोमो (क) सं.—वि.—ढका हुआ,
छिपा हुआ ।

सोमो सोमो (क) सं.—जगह,
स्थान ; सूखी भूमि ; खेत, भूभाग ;
समुद्र या नदी का तट ; विषय, विवादग्रस्त
विषय ; भाग ।

सोमो सोमो (क) सं.—शिवजी ; खंभा,
खूँटा, खूँटी ; घूपघड़ी का काँटा ; पेड़
का धड़ ; भाला, बरछा ।

सोमो सोमो (क) सं.—खड़े होने की क्रिया ।
अचलता, अटलता ; स्थल, जगह ; दशा,
स्थिति ; संबंध ; गाँव, कस्बा, जिला ;
पद, ओहदा ; पदार्थ, वस्तु ; वेदी ;
तीर्थस्थान ; अंतर ; विराम ; साहस्य,
समानता ; रहने का स्थान, घर ; उचित
स्थान ।

सोमो सोमो (क) सं.—स्थापना, कायम
करना, प्रतिष्ठा ।

सोमो सोमो (क) वि.—खड़ा रहनेवाला,
स्थायी, टिकाऊ, दृढ़ । सं.—स्थायी भाव ।

सोमो सोमो (क) सं.—बटलोई, बर्तन
विशेष ।

सोमो सोमो (क) वि.—अटल, अचल,
स्थिर ; स्थापित ।

सोमो सोमो (क) सं.—हालत, दशा,
परिस्थिति ; स्थिरता ।

५० स्थिर (सम्) वि.—अटल, अचल, दृढ, मज्जवृत; स्थायी. अनादि ।

५० स्थूल (सम्) वि.—मोटा; बड़ा; मज्जवृत दृढ; गाढ़ा; मूर्ख ।

५० स्थैर्य (सम्) सं.—स्थिरता, अचलता, दृढता, धैर्य ।

५० ज्ञान (सम्) सं.—ज्ञान, नहाना ।

५० त्रिध (सम्) वि.—चिकना, नेल से तर; चिपचिपा; प्यारा, प्रिय, मनोहर; कोमल, मुलायम; चमकीला ।

५० स्नेह (सम्) सं.—स्नेह, प्रेम, प्रीति; तेल; नमी; तरी; चिकनाहट ।

५० स्नेहित (सम्) सं.—मित्र, दोस्त ।

५० स्पन्दन (सम्) सं.—सिसकन, धड़कन; कंपन आंदोलन ।

५० स्पर्धे (सम्) सं.—स्पर्धा, होड़. प्रति-योगिता ।

५० स्पर्श (सम्) सं.—छूना, स्पर्श, लगाव; त्वचा का विषय; रोग, बीमारी; मुठ-मेड़; भेंट, दान; पवन, हवा; आकाश; संभोग, रति ।

५० स्पष्ट (सम्) वि.—स्पष्ट, साफ ।

५० स्पृहे (सम्) सं.—कामना, अभिलाषा, उत्सुकता ।

५० स्फटिक (सम्) सं.—फटिक, विल्लौर ।

५० स्फुरण (सम्) सं.—अंगों में फड़कन; कंपकपी. थरथराहट; चमक, दमक; मन में आना ।

५० स्फुरितु (सम्) क्रि.—मन को गोचर हो, मन में आ; प्रकाशित हो ।

५० स्फूर्ति (सम्) सं.—स्फूर्ति, स्फुरण; प्रकटन; प्राकट्य; धड़कन, थरथराहट ।

५० स्फोटन (सम्) सं.—फटना, तड़कन, अनाज फटकना; अंगुली फोड़ना या चटकाना ।

५० सार (सम्) सं.—कामदेव ।

५० सारणे (सम्) सं.—याद, स्मरण ।

५० सारितु (सम्) क्रि.—स्मरण कर ।

५० स्मार्त (सम्) सं.—स्मृति शास्त्र में दक्ष ब्राह्मण; एक संप्रदाय ।

५० स्मृति (सम्) सं.—याददाश्त, स्मरण करना, स्मरण; स्मृतिशास्त्र ।

५० स्मेर (सम्) सं.—मुस्कराहट । वि.—मुस्कानेवाला ।

५० स्पन्दन (सम्) सं.—रथ; जल. पानी; पवन, हवा; नदी; तिनिश का पैड़ ।

५० स्थमीक (सम्) सं.—मेघ, बादल; दीमक का मिट्टी का टीला; वृक्ष विशेष; समय, काल ।

५० स्यूत (सम्) वि.—सिला हुआ, छिदा हुआ । सं.—बोरा ।

५० स्वाधरे (सम्) सं.—एक वृत्त का नाम ।

५० स्रविसु (सम्) क्रि.—स्रवित हो, बह; टपक ।

५० स्रस्र (सम्) वि.—गिरा हुआ, टपका हुआ ।

५० स्रोत, स्रोतम् (सम्) सं.—जल प्रवाह, धार ।

५० स्वच्छ (सम्) सं.—साफ, विशुद्ध; सफेद; सुंदर; स्वस्थ ।

५० स्वतंत्रते (सम्) सं.—स्वतंत्रता, स्वातंत्र्य, आज़ादी ।

५० स्वधे (सम्) सं.—स्वधा, स्वतः प्रवृत्ति, स्वयंनिर्दिष्टता, स्वाभाविक चंचलता ।

५० स्वप्न (सम्) सं.—स्वप्न, सपना ।

५० स्वभाव (सम्) सं.—स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रकृति ।

५० स्वर (सम्) सं.—ध्वनि, आवाज, संगम ।

५० स्वरूप (सम्) सं.—रूप, आकार प्रकृति । वि.—समान, सदृश; सुंदर ।

५० स्वर्ग (सम्) सं.—स्वर्ग, नाक, देवलोक ।

५० स्वर्ण (सम्) सं.—सोना, हेम, अशर्फी । — १० गिरि = मेरु पर्वत ।

५० स्वर्णदि, स्वर्णस्वर्णवि, स्वर्णदि (सम्) सं.—देवगंगा, आकाश-गंगा ।

५० स्वल्प (सम्) वि.—थोड़ा, कम; तुच्छ ।

५० स्वस्र (सम्) सं.—बहन ।

५० स्वस्ति (सम्) अ.—कुशल-क्षेम, भलाई, कल्याण आदि का सूचक अव्यय ।

५० स्वस्त्रीय (सम्) सं.—बहन का पुत्र, भौजा; साला, बहनोई ।

५० स्वागत (सम्) सं.—सुखागमन, अग-वानी, स्वागत ।

५० स्वातंत्र्य (सम्) सं.—स्वतंत्रता, आज़ादी ।

५० स्वाद (सम्) सं.—ज़ायका, स्वाद, रुचि, चखना ।

५० स्वादु (सम्) वि.—मीठा, मधुर; प्रिय, मनोहर ।

५० स्वाधीनते (सम्) सं.—स्वाधीन रहना, स्वतंत्रता ।

५० स्वाभाविक (सम्) वि.—सहज, स्वाभाव संबंधी ।

५० स्वामि (सम्) सं.—प्रभु, मालिक; पति ।

५० स्वार्थ (सम्) सं.—स्वार्थ, खुदगर्जी ।

५० स्वीकरितु (क) क्रि.—स्वीकार कर, अंगीकार कर ।

५० स्वेच्छे (सम्) सं.—स्वेच्छा, अपनी इच्छा; स्वतंत्रता ।

५० स्वेद (सम्) सं.—पसीना ।

५० स्वेर (सम्) वि.—स्वेच्छाचारी, मन-मौजी; मंद, धीमा; सुस्त ।

५० स्वेरते, स्वेरिते (सम्) सं.—स्वेच्छाचारिता ।

८६

८६ ह—कन्नड-वर्णमाला का अड़तालीसवाँ अक्षर ।

८६ ह (क) प्र.—क्रियार्थक संज्ञा के अंत में, जैसे — १० हस्ति इरिसुह—रखना, नंगे नंगेह—कूदना, उछलना, १० हस्ति परीक्षि-सुह—परीक्षा करना आदि ।

ॐॐॐॐ हंकार (तद्) सं.—अहंकार ।

ॐॐॐॐ हंग (क) सं.—नीलकंठ पक्षी ; भृंग
(The fork-tailed strike) ।

ॐॐॐॐ हंगणे, ॐॐॐॐ हंगिणे, ॐॐॐॐ हंगु
(क) सं.—उपकार, कृतज्ञता, एहसान,
दाक्षिण्य ।

ॐॐॐॐ हंगरल, ॐॐॐॐ हंगरु (क) सं.—
एक सदा हरा रहनेवाला वृक्ष ।

ॐॐॐॐ हंगामि (अ. दे.) सं.—हंगाम
(फारसी) ; कूकों की अस्थायी नियुक्ति ।

ॐॐॐॐ हंगामु (अ. दे.) सं.—हंगामा
(फारसी) ।

ॐॐॐॐ हंगिसु (क) क्रि.—उलाहना दे ।

ॐॐॐॐ हंगु (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हंगुळिगे (क) सं.—स्टूल, तिपाई ।

ॐॐॐॐ हंगे (क) अ.—जैसे, तरह, भाँति ।

ॐॐॐॐ हंगिचे (क) स.—बाँटना, बाँटवारा
साधन, उपाय युक्ति ।

ॐॐॐॐ हंगिग (क) सं.—महावत ।

ॐॐॐॐ हंगु (क) क्रि.—बाँट, विभक्त कर ।
सं.—खपरैल ।

(१) ॐॐॐॐ हंगर (क) सं.—छाजन, पंडाल,
मंडप ।

(२) ॐॐॐॐ हंगर (तद्) सं.—पिंजड़ा ।

ॐॐॐॐ हंगरु (क) सं.—बाँस की तीली ।

ॐॐॐॐ हंगि (तद्) सं.—पूनी, वर्तिका ।

ॐॐॐॐ हंगिगे (क) सं.—घर ।

ॐॐॐॐ हंगे (अ. दे.) सं.—हंडा ।

(१) ॐॐॐॐ हंत (सम्) अ.—हर्ष, आश्चर्य,
दुःख, शोक आदि का सूचक अव्यय ।

(२) ॐॐॐॐ हंत (तद्) सं.—सोपान, सीढ़ी ;
बारी ।

ॐॐॐॐ हंतव्य (सम्) वि.—मारने योग्य,
वध करने योग्य ।

ॐॐॐॐ हंति (तद्) सं.—पंक्ति, कतार, श्रेणी ।

ॐॐॐॐ हंतु (सम्) वि.—मारनेवाला, हत्यारा ।

ॐॐॐॐ हंदर, ॐॐॐॐ हंदर (क) सं.—
दे. ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हंदि (क) सं.—सुअर, शूकर, वराह ।

ॐॐॐॐ हंदु (क) सं.—चल, हिल, डुल ।

ॐॐॐॐ हंदे (क) सं.—भीरु, दरपोक ।

ॐॐॐॐ हंदु (क) सं.—गर्व, जादू ।

ॐॐॐॐ हंदे, ॐॐॐॐ हंदि (क) सं.—एक स्थान
का नाम ।

ॐॐॐॐ हंदल (क) सं.—आतुरता, उत्कट
इच्छा ; चिंता ; तरसना ।

ॐॐॐॐ हंदलिसु (क) क्रि.—व्याकुल हो,
चिंतित हो, तरस ; आशा कर, ध्यान दे ।

ॐॐॐॐ हंदलु (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हंदु (क) सं.—बेल, लता ; रज्जु,
रस्सी ।

ॐॐॐॐ हंस (सम्) सं.—हंस पक्षी ; आत्मा,
जीवात्मा ; परमात्मा ; शिव ; विष्णु ;
कामदेव ; चंद्रमा ; एक राक्षस का नाम ;
मुनि ; महान् व्यक्ति ; कलमष रहित पुरुष ;
प्रकाश की किरण ; नेत्र, आँख ; घोड़ा ;
अमलता, निर्मलता ; कमल ।

ॐॐॐॐ हंसतूल (सम्) सं.—हंस के
कोमल पर ।

ॐॐॐॐ हंसमाले (सम्) सं.—हंसों की
उडान विशेष ; एक वृत्त का नाम ।

ॐॐॐॐ हंसि (सम्) सं.—हंसी, मादा हंस ;
एक वृत्त का नाम ।

(१) ॐॐॐॐ हंसे (क) सं.—काई ; दाँत का
मैल ।

(२) ॐॐॐॐ हंसे (सम्) सं.—हंस, मराल ।

ॐॐॐॐ हकीम (अ. दे.) सं.—हकीम (अरबी) ;
वैद्य ।

ॐॐॐॐ हकरिके, ॐॐॐॐ हकरिके (क) सं.—
केशिनी नामक पौधा । (The plant
Chrysopogon) ।

ॐॐॐॐ हकल, ॐॐॐॐ हकल, ॐॐॐॐ हकल
(क) सं.—(धान्य) बटोरना, उछ ।

ॐॐॐॐ हकल, ॐॐॐॐ हकल (क) सं.—
बच्चे, लड़के ।

ॐॐॐॐ हकले (क) सं.—परत का जमाव, बाहरी
कड़ा हिस्सा, छिलका या परत ।

ॐॐॐॐ हक्कि (तद्) सं.—पक्षी, पंछी, चिड़िया ।

(१) ॐॐॐॐ हकु (अ. दे.) सं.—हक (अरबी) ;
अधिकार ।

(२) ॐॐॐॐ हकु (क) सं.—पपड़ी, खुट्टी ।

ॐॐॐॐ हके (क) सं.—गोशाला, गोठ ; आश्रय,
सेज ।

ॐॐॐॐ हग (क) सं.—(धान्य रखने के लिए)
जमीन में बनाया गया गड्ढा, धान्यागार ।

ॐॐॐॐ हगर (क) अ. और वि.—हल्का ;
आसान ।

ॐॐॐॐ हगरण (क) सं.—गपशप, बकबास ।

ॐॐॐॐ हगरणिसु (क) क्रि.—गपशप कर,
बकबास कर ।

ॐॐॐॐ हगरणे (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हगरु (क) सं.—हल्कापन, लाघव
बालों में की रुसी ।

ॐॐॐॐ हगर्, ॐॐॐॐ हगर् (क) सं.—बाँस
की तीली ।

ॐॐॐॐ हगरे (क) सं.—ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हगल, ॐॐॐॐ हगलु (क) सं.—दिन,
दिवस-काल, अह्न ।

ॐॐॐॐ हगिनु (क) सं.—गोंद, नियाँस, वृक्षों
का चिपचिपा रस ।

ॐॐॐॐ हगुर (क) सं.—दे. ॐॐॐॐ ।

ॐॐॐॐ हगे (क) सं.—शत्रु, दुश्मन ; शत्रुता,
बैर । अ.—भाँति, तरह, जैसे ।

ॐॐॐॐ हगेतन (क) सं.—शत्रुता, बैर ।

ॐॐॐॐ हगेय, ॐॐॐॐ हगेयु (क) सं.—गड्ढा,
गर्त, जमीन में छेद ।

ॐॐॐॐ हगा (तद्) सं.—प्रग्रहः (तत्) ; रस्सी,
रस्सा ।

ॐॐॐॐ हगु (क) सं.—नीची जमीन ।

ॐॐॐॐ हचगे, ॐॐॐॐ हचने (क) वि. और
अ.—हरा, हरा-भरा; सरसब्ज ।

ॐॐॐॐ हचड (क) सं.—ओढ़नी; चादर ;
आवरण ।

ॐॐॐॐ हचिसु (क) क्रि.—(बत्ती) जला ;
लगवा ; कटवा ।

ॐॐॐॐ हचु (क) क्रि.—लगा, चिपका; नियुक्त
कर, उपयोग में ला ; सुलगा, जला ; रोप ;
लेपन कर ; छोटे-छोटे टुकड़े कर ।

हृत्वे (क) सं.—बेत, चीरा हुआ बाँस ।
हृजाम (अ.दे.) सं.—हजाम, नाई ।
हजार (क) सं.—बैठकखाना, बड़ा
हॉल ।

हट (तद्), हट (सम्) सं.—हट,
ज़िद् ; ज़बरदस्ती ।

हटिके, हटिगे, हट्टिगे
(क) सं.—घर ।

हट्टि (क) सं.—गोशाला ; घर ।—
कार (क) सं.—गवाला, गोपालक ।

हडग, हडगु (क) सं.—जहाज़,
पोत ।

हडत (क) सं.—सामने लाने की क्रिया ।
हडदे (क) सं.—धोबी, नाई आदि को
वर्ष में एक बार दिया जानेवाला अनाज ।

हडप (क) सं.—तांबूल रखने की छोटी
थैली ; नाई की थैली ।—
हडप=नाई,
हजाम ।

हडपाळि हडपिग (क) सं.—
तबोली ; नाई ।

हडि (क) क्रि.—पा, प्राप्त कर, जन, जन्म
दे ; सं.—दरवाजा ।

हडिके, हडिकु (क) सं.—
दुग्ध, बदवू ।

हडे (क) क्रि.—जन, जन्म दे ; पा, प्राप्त
कर ।

हडुविके (क) सं.—जन्म दे,
प्रसूति ।

हडु (क) सं.—दलदल, पंक ।

(१) हण (क) सं.—पेड़ का स्कंध ।

(२) हण (तद्) सं.—पणः (तत्) ; पैसा,
धन ।

हणजि, हणजे (क) सं.—पौधा,
नागमल्लिका ।

हणवत (तद्) सं.—धनवान ।

(१) हणि (क) सं.—पेड़ का स्कंध ।
क्रि.—बुन ; (वेणी का) झुंगार कर ।

(२) हणि (क) सं.—ललाट, माथा ।
क्रि.—पीट ; मार ; काट दे, पीटा जा ।

हणिकु, हणिकु (क) क्रि.—
घात में रह, छिप रह, तक में रह ।

हणिके (क) सं.—कंधी ; घौद, हत्था ।
हणिकु (क) क्रि.—

दे हणिकु
हणे (क) सं.—पेड़ का स्कंध या तना ;
ललाट, माथा ; माँद, बाड़ा ।

हणिक (क) सं.—सूर्यकान्त पुष्प ।

हणिकु (क) सं.—फल, पका फल ।
क्रि.—तैयार कर, साध ।

हणिके (क) सं.—दे. हणिके.

हट हट (सम्) वि.—चोटिल किया हुआ,
ताडित ; नष्ट हुआ, हताश ।

(१) हट (क) अ.—पूरा-पूरा, सब ।

(२) हट (तद्) सं.—हस्तः (तत्) ;
हाथ, कर ।

हट्टि, हट्टि, हट्टि (क)
सं.—बढ़ाई का रंदा ।

हट्टि (क) सं.—दे. हट्टि.

हट्टि, हट्टि, हट्टि, हट्टि, हट्टि, हट्टि
(क) अ.—पास, समीप, निकट ।

हट्टि (क) सं.—कपास, रुई ।

हट्टिसु (क) क्रि.—लगा, जोड़, चिपका
चढ़वा ; बत्ती जला ।

हट्टि (क) क्रि.—चढ़, ऊपर जा ; लग,
चिपक जा ; जल उठ, जलकर काला हो ;
ऊपर उठ ; लागू हो । वि.—दस की
संख्या ।

हट्टि (क) सं.—सामीप्य ; प्रियता ;
स्नेह, मैत्री ।

हट्टि (सम्) सं.—हत्या, वध ।

हट्टि (क) सं.—उचित या योग्य स्थिति,
हथियार आदि की धार ठीक होने की
स्थिति ।

हट्टि (क) सं.—कलाई, मणिबंध ।

हट्टि (क) सं.—उचित
या योग्य स्थिति, उचित ढंग या पद्धति,
सच्ची स्थिति ; तीक्ष्णता, धार ।

हट्टि (क) क्रि.—खोद, बिछा ; खोदकर
बिल बना । सं.—नींव, बुनियाद ।

हट्टिसु, हट्टिसु (क)
क्रि.—पुड़िया या चूर्ण करा ; दबाकर
मुलायम कर ।

हट्टि, हट्टि (क) सं.—
कच्चा ताज़ा फल ; ढंग, रीति ; कलाई ।

हट्टि (क) सं.—कुशल-क्षेम, मंगल,
शुभ ।

हट्टि (क) सं.—सुखी मनुष्य ।

हट्टि (क) सं.—बाज़ ; गिद्ध ; चील ।
(अ. दे.) सं.—सीमा, हद ।

हट्टि (क) सं.—वेद का भाग या
छंद ।

हट्टि (क) क्रि.—टपक, बूँद-बूँद गिर ;
पक, परिणत हो, तैयार हो । सं.—बूँद,
जलकण ।

हट्टि (क) क्रि.—बूँद बूँद गिर ;
टपक ।

हट्टि (क) सं.—हनुमान जी ।
हट्टि (क) सं.—पापड़ ।

हट्टि (क) सं.—मांस का टुकड़ा ।

हट्टि (तद्) सं.—प्रभा (तत्) ; कांति ।

हट्टि (तद्) सं.—व्योहार ; उत्सव,
पर्व ।

हट्टिसु (क) क्रि.—फैला, विस्तार
कर, (चढ़वा) ।

हट्टि (क) क्रि.—फैल, ऊपर चढ़ (जैसे
फैलती या चढ़ती हैं) ।

हट्टि (क) सं.—फैलाव, विस्तार ।

हट्टि (क) सं.—दे. हट्टि.

हट्टि (क) सं.—बेत ।

हट्टि (क) सं.—मूर्छा, बेहोशी ।

हट्टि (क) क्रि.—रस्ती बट । सं.—
गर्व, घमंड ।

ಹೆಮ್ಮುಗೆ ಹಮ್ಮುಗೆ (ಕ) ಸಂ. — ರಸ್ಸಿ, ಡೋರ, ಬೆಧನ ।
ಹೆಮ್ಮು ಹಯ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಘೋಡಾ ; ಸಾತ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ಕಾ ಧೌತಕ ।
ಹೆಮ್ಮು ಹಯನು, ಹೆಮ್ಮು ಹೆನು (ಕ?) ಸಂ. — ದೂಧ ಸೇ ಬನೇ ಪದಾರ್ಥ ; ದುಧಾರ ಗಾಯ ; ಜಲ, ಪಾನಿ ।
ಹೆಮ್ಮು ಹಯಿಲು, ಹೆಮ್ಮು ಹಯ್ಲು (ಕ) ಸಂ. — ವಿಭ್ರಮ, ಗಡಬಡಿ, ಧವರಾಹಡ ।
ಹೆಮ್ಮು ಹಯ್ಲು (ಕ) ಸಂ. — ಬಚ್ಚೆ, ಲಡಕೆ ಔರ ಲಡಕಿಯಾ ।
ಹೆಮ್ಮು ಹರು (ಕ) ಸಂ. — ಲಡಕಾ ।
(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ವಿ. — ಚೌಡಾ, ವಿस्तುತ ; ದೌಡನೆವಾಲಾ, ಬಹನೆವಾಲಾ ।
(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಶಿವ ; ಗ್ಯಾರಹ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ । ವಿ. — ಹರನೆವಾಲಾ, ದೂರ ಕರನೆವಾಲಾ ; ಹರನೆವಾಲಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಮನೌತೀ, ವಿನತೀ ; ಆಶೀರ್ವಾದ, ಸ್ವಸ್ತಿ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಜೊತಕರ ಬೋನೆ ಯೋಗ್ಯ ಬನಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಗಪ್ಪೆ ಲಡ ; ಬಕವಾದ ಕರ, ಬಕಬಕ ಕರ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಬಕವಾದ, ಗಪ ; ವ್ಯಂಗ್ಯ ಲೇಖ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಕಲಾಹಿ, ನಲಿ ; ಸೋನೆ ಔರ ರತ್ನೋ ಸೇ ಬನಾ ಕಲಾಹಿ ಕಾ ಕಂಗನ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲಾ, ಪ್ರಸಾರ ಕರ, ವ್ಯಾಸ ಕರ, ವಿಡಾ ; ಖರೊಚ । ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ತದ್) ಸಂ. — ಪ್ರಾಣ, ಜಾನ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಬನಿಯಾ, ವ್ಯಾಪಾರಿ, ವಣಿಕ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ವ್ಯಾಪಾರ, ವಾಣಿಜ್ಯ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಪ್ರಕಟನ, ಪ್ರಕಾಶನ, ದಿಖಾವಾ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಮಿಡ್ಡಿ ಕಾ ಹೆಡಾ ।

ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲ ; ಫೆಲಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಆಶಿಷ ದೇ, ದುಡಾ ದೇ ; ಸಂಕಲ್ಪ ಕರ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲಾ, ವ್ಯಾಸ ಕರ, ವಿಡಾ । ಸಂ. — ಫೆಲಾವ-ವಿಡಾನಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಜಾರ, ವ್ಯಾಪಾರಿ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಕಂಕಡ, ರತ್ನ, ಬಿಲೌರ ; ಉಂಡಿ ಕಾ ಪೌಷಾ ।
(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಬಹ, ಪ್ರವಾಹಿತ ಹೊ ; ಫಾಡ ; ದೌಡ, ಭಾಗ, ಹಡ ; ಅಂತ ತಕ ಪಹುಂಚ ; ಫೆಲ ।
(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ವಿಷ್ಣು, ಕೃಷ್ಣ ; ಸೂರ್ಯ ; ಚಂದ್ರಮಾ ; ಜಲ, ಪಾನಿ ; ವಾನರ ; ಘೋಡಾ ; ಸಿಂಹ ; ಶುಕ, ತೊತಾ ; ಮೌರ, ಮಯೂರ ; ಮೆಂಡಕ ; ಸಮುದ್ರ ; ದಿಶಾ ; ಸೌಪ ; ತೀರ, ಬಾಣ ; ಕೊಶ, ಮೆಂಡಾರ ; ಗಾಡೀ, ಶಕಡ ; ಇಂದ್ರ ; ಬ್ರಹ್ಮಾ ; ಯಮ ; ವಾಯು ; ಆಠ ಕೀ ಸಂಖ್ಯಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಸಂदेशವಾಹಕ ; ಜಾಸೂಸ, ಮೆದಿಯಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ವ್ರತ, ಮನೌತೀ ; ಉಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಹೆಂಗ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಕಿನಾರಾ ; ಉಪಾಂತ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹಿರನ, ವಾರಹಸಿಂಗಾ ।
ಹೆ ಹರ (ವಿ.) ಸಂ. — ಹರಾ ; ಪಿಲಾ । ಸಂ. — ಹರಾ ರಂಗ ; ತಲವಾರ ಆದಿ ಕೀ ಧಾರ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ವಿಷ್ಣು ಭಕ್ತ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹರಿದ್ರಾ ; ಹಲ್ಲೆ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸಿಂಹಾಸನ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಲಕ್ಷ್ಮಿ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಸಮೂಹ, ಸಮುದಾಯ ; ಕಾರ್ಯ, ವ್ಯವಹಾರ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಫಲಕ (ತದ್) ; ತಲ್ತಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ನಿಂದಾ ಕರ, ನಾಶ ಕರ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಬಿಲಖ, ರೊ ; ಕರಾಹ ।

ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಧಾರ, ಧಾರಾ, ಪ್ರವಾಹ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಪ್ರಕಾರ, ಹೆಂಗ, ಸಾಧನ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ತದ್) ಸಂ. — ಹರ, ಆನಂದ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫೆಲ. ವ್ಯಾಸ ಹೊ, ಬಿಡ ; ಚಮಕ, ಪ್ರಕಾಶಿತ ಹೊ, ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ಹೊ । ಸಂ. — ಪ್ರಾತಃಕಾಲ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ವಿ. — ಫಾಡಾ ಹುಡಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಫಾಡ ; ಫಡ ಜಾ ; ಫಾಡಾ ಜಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಆಯುಧೋ ಕೀ ಧಾರ ಯಾ ತೀಕ್ಷಣತಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಡೊಲ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಸೌಧ, ಪ್ರಾಸಾದ, ಮಹಲ್, ಭವನ ।
ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಆನಂದ, ಖುಷಿ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೌತ, ದಶನ, ದಂತ ।
(೧) ಹೆ ಹರ (ಕ) ಅ. — ಕಡೆ, ಅನೇಕ ; ಕುಡ ।
(೨) ಹೆ ಹರ (ಸಮ್) ಸಂ. — ಹರ, ಲಾಂಗಲ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ವೃಕ್ಷ ಪರ ಚಡನಾ । ಸಂ. — ಶರೀರ ಕಾ ಅಂಗ, ಗಾಲ ಕಾ ನಿಚಲಾ ಭಾಗ ।
ಹೆ ಹರ, ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ಉಕ ಪ್ರಕಾರ ಕಾ ಹೆಂಗಾ ।
ಹೆ ಹರ (ತದ್) ಸಂ. — ಫಲಕ (ತದ್) ; ತಲ್ತಾ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ನಿಂದಾ ಕರ, ನಾಶ ಕರ ।
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಸಂ. — ದೇ. ಹರಡಿ.
ಹೆ ಹರ (ಕ) ಕ್ರಿ. — ಬಿಲಖ, ರೊ ; ಕರಾಹ ।

ಹಲಕಾ (ಖ. ದೇ.) ಸಂ.—ನೀಚತಾ, ನೀಚ
ಪುರುಷ ।

ಹಲಕಾ (ಕ?) ಸಂ.—ಜೀನ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಕುಳಿ ಲೋಗ ; ಕಡೆ ಲೋಗ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಫಿಪಕಲಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ. ಹಲಕಾ.

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಕಾನ ಕಾ ಕೊಸಲ ಭಾಗ ;
ದೊಡ್ಡೆ ಆದಿ ಉಲಟಾನೆ ಕೆ ಲಿಫ್ ಉಪಯೋಗಿ
ಕಲಕುಲ ಕಾ ಉಕ ಉಪಕರಣ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ತೈಯಾರಿ ಕರ,
ಪ್ರವಂಧ ಕರ, ವ್ಯವಸ್ಥಾ ಕರ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹವನ, ಹೊಮ ।

ಹಲಕಾ (ತದ್) ಸಂ.—ಪ್ರವಾಲ, ವಿಧುಮ,
ಮೈಗಾ ।

ಹಲಕಾ (ಖ. ದೇ.) ಸಂ.—ಹವಾ, ಪವನ ।
ಸಮೀರ ।

ಹಲಕಾ (ಖ. ದೇ.) ಸಂ.—ಹವಾಲದಾರ, ಹವಾಲದಾರ
(ಖ. ದೇ.) ಸಂ.—ಹವಾಲದಾರ ।

ಹಲಕಾ (ತದ್) ಸಂ.—ಹವನ ಕರತೆ ಸಮಯ
ಅಗ್ನಿ ಮೆ ಡಾಲಿ ಜಾನೆವಾಲಿ ವಸ್ತು ; ವೀ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹೌಡು (ಕ) ಅ.—ಹೌಡು ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ವಿ.—ಹೊಮ ಕರತೆ ಯೋಗ್ಯ ।
ಸಂ.—ವೀ, ದೇವತಾಂಗೆ ಕೆ ಲಿಫ್ ಚಡಾವಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಅ.—ಅಕಸ್ಮಾತ್, ಹಠಾತ್ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸನ, ಹಸನು (ಕ)
ವಿ.—ಅಚ್ಚಾ, ಶುದ್ಧ, ನಿರ್ಮಲ, ಸ್ವಚ್ಛ ;
ಸುಂದರ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹರಾ, ಹರಾ
ರಂಗ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸು, ಹಸಿವು (ಕ) ಸಂ.—ಹುಳು,
ಖುಳು ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ವಿ.—ಹರಾ, ತಾಜಾ, ಕಚ್ಚಾ,
ಗಿಲಾ, ನಮ । ಕ್ರಿ.—ಹುಳು ಲಗ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಸಂನ್ಯಾಸಿ ಕಾ ವಸ್ತ್ರ
ವಿಶೇಷ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಕಿಸಾನ ಔರ ಭೂಸ್ವಾಮಿ
ಕಾ ಹಿಸ್ತಾ ಯಾ ಭಾಗ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ವಿ.—ಹೆಸತಾ ಹುಳಾ, ಹೆಸಾ
ಹುಳಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ. ಹಲಕಾ.

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿವು, ಹಸಿವು, ಹಸಿವು
(ಕ) ಸಂ.—ಹುಳು, ಖುಳು ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಗಂಧ, ದುರ್ಗಂಧ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿವು, ಹಸಿವು (ಕ) ಸಂ.—ಹಾರಿತ
ಪಕ್ಷಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿವು, ಹಸಿವು (ಕ) ಸಂ.—ಹೊಲಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿವು, ಹಸಿವು (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿ (ತದ್)
ಸಂ.—ಗಾಯ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಸಿವು, ಹಸಿವು (ಕ) ಸಂ.—ಬಚ್ಚಾ,
ಶಿಶು, ಬಾಲಕ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಮಂಗಲ ಆಸನ ; ವಿಜೌನಾ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಾಥ ; ಸುಡ ; ಉಕ
ಹಾಥ ಕಾ ಮಾಪ ; ಪರಿಮಾಣ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಾಥಿ ; ಉಕ ರಾಜಾ
ಕಾ ನಾಮ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಸ್ತಿನಾ-
ಪುರ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಹಸ್ತಿನಿ, ಚಾರ
ಪ್ರಕಾರ ಕಿ ಧರ್ಮೋ ಮೆ ಸೆ ಉಕ ; ಹಸ್ತಿನಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ವಿ.—ಪುರಾಣ, ಪ್ರಾಚೀನ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಚಮಕ, ದಮಕ,
ಕಾಂತಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪೀಡ, ಮಾರ ; ನಿರೋಧ
ಕರ ।

ಹಲಕಾ (ತದ್) ಸಂ.—ಪಿಲಾ ರಂಗ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಛೊಡಾ ಟುಕಡಾ, ಚೂರ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಗಡ್ಡಾ, ಗರ್ದ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಗಾಂವ, ಗ್ರಾಮ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ವಿ.—ಪುರಾಣ, ಪ್ರಾಚೀನ । ಸಂ.—
ಬೇಕಾರ ಪೌಠೆ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ನಾಶ ; ವಹ ಜೊ ನಶ್,
ಹೋ ಗಯಾ ಹೋ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಹಲಕಾ ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—
ಬಾಸಿ ಹೋ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ವಿ.—ಪುರಾಣ, ಪ್ರಾಚೀನ,
ಜೀರ್ಣ (ಹಲಕಾ ಔರ ಲಿಖಾ ಜಾತಾ ಹೇ) ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಪ್ರಾಚೀನತಾ ; ಪ್ರಾಚೀನ
ಪರಂಪರಾ, ಸ್ಮೃತಿ ಯಾ ಉಕ್ತಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ನಿಂದಾ ಕರ, ಗಾಲಿ ದೇ ।
ಸಂ.—ಗಾಲಿ, ನಿಂದಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಗಾಲಿ ನಿಂದಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ವನ, ಜಂಗಲ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ವಿ.—ಪುರಾಣ,
ಪ್ರಾಚೀನ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಫಲೋ ಕಾ ಧುಣ್ ಮೆ
ರಖನೆ ಕಿ ಕ್ರಿಯಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಅ.—ಜैसे, ವैसे, ಉಸ
ಖಾಂತಿ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಸರ್ಪ, ಸಾಂಪ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ. ಹಲಕಾ.

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಡಾಲ, ರಖ ; ಲಗಾ,
ರೊಪ ; ಬೊ, ಉಡೆಲ ; ಭರ ; ಫೆಕ ; ದೇ,
ಛೊಡ ; ಗಿರಾ ; ಪರೊಸ, ಮತ್ಯೆ ಮಡ್ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಹಾಗಲ್, ಹಾಗಲ್, ಹಾಗಲ್
ಹಾಗಲ್ (ಕ) ಸಂ.—ಕರೇಲಾ, ಕರೇಲಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಅ.—ದೇ. ಹಲಕಾ.

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಕಾಡೆ,
ಶೇವಲ್ ।

ಹಲಕಾ (ಸಮ್) ಸಂ.—ಸೊನಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಗೀತ,
ಗಾನಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಗೀತ ಗವಾ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಗೀತ ಗಾ । ಸಂ.—ಗಾನಾ,
ಗೀತ ; ಡಂಗ, ರೀತಿ ; ಕಠ, ತಕಲೀಫ್ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ವ್ಯಭಿಚಾರ ।—ಗೀತ
ಗಿತ್ತಿ (ಕ) ಸಂ.—ವ್ಯಭಿಚಾರಿಣಿ ಸ್ತ್ರೀ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಸಂ.—ಮಾರ್ಗ, ರಾಸ್ತಾ, ಪಥ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಪಾರ ಕರ, ಸೆ ಹೋತೆ
ಹುಣ್ ।

ಹಲಕಾ (ಕ) ಕ್ರಿ.—ಜಾ, ಪಾರ ಕರ ಜಾ,
ಕೂಡ, ಉಡ, ಫಾಡ, ಸೆ ಹೋಕರ ಜಾ ; ವಹಾ ;
ಡಕೆಲ ; ಸಾಂಗ ಸೆ ಮಾರ (ಜैसे-ಗಾಯ ಕರತೆ
ಹೇ) । ವಿ.—ಸುಂದರ, ಅಚ್ಚಾ । ಸಂ.—
ಪಾಲ ।

का०००० हायिसु (क) क्रि.—लगा, बहा, फैला ।
 का०००० हायु (क) क्रि.—दे. का००००.
 का०००० हार, का०००० हारु (क) क्रि.—उछल, कूद, फुदक ; उड़ ; चाह, अभिलाषा कर ।
 का०००० हार (सम्) सं.—हार, मोतियों का हार ।
 का०००० हारक, का०००० हारकु (क) सं.—कोद्रव, कोदों अनाज ।
 का०००० हारके, का०००० हारैके (क) सं.—कामना, शुभकामना ।
 का०००० हारसु (क) क्रि.—शुभ कामना प्रकट कर ; अभिलाषा कर ।
 का०००० हारव, का०००० हारव (क) सं.—ब्राह्मण ।—०००० गिति—छी. लिं. ।
 का०००० हारविसु (क) क्रि.—दे. का००००.
 का०००० हारिद्र (सम्) सं.—पीला रंग ; कंदब वृक्ष ।
 का०००० हारीत (सम्) सं.—कवूतर विशेष ।
 का०००० हारु (क) क्रि.—दे. का००००.
 का०००० हारु (तद्) सं.—सव्वल ।
 का०००० हारिसु, का०००० हारिसु (क) क्रि.—उड़ा ; कुदा ; दूर कर, हटा ; निकाल ।
 का०००० हारु (क) क्रि.—दे. का००००.
 का०००० हाल, का०००० हालु (क) सं.—दूध, क्षीर ; वृक्षों का सफ़ेद रस ।
 का०००० हालुवकि, का०००० हालेहकि (क) सं.—सगुन की चिड़िया ।
 का०००० हाले (क) सं.—कान का कोमल भाग ; सप्तपणी वृक्ष ; एक लता ।
 का०००० हावडिग का०००० हावाडिग (क) सं.—सपेरा ।
 का०००० हावळि (क) सं.—उपद्रव, पीडा, संकट ।
 का०००० हाविगे, का०००० हाबुगे (तद्) सं.—पादुका ।
 का०००० हावु (क) सं.—साँप ।
 का०००० हासिके, का०००० हासिगे (क) सं.—विस्तर, बिछौना, शय्या ।

का०००० हासु (क) क्रि.—फैला, बिछा, व्याप्त कर, रख । सं.—वह जो बिछा हुआ हो, तलप्र, शय्या ; ताना ; रंग-बिरंगा कपड़ा ।
 का०००० हासुगल्लु (क) सं.—(जमीन पर फैलाने का) पत्थर ।
 का०००० हासे (क) सं.—सुंदर आसन ।
 का०००० हास्य (सम्) सं.—हँसी ; हर्ष, उल्लास, आमोद, प्रमोद ।
 का०००० हाहाकार, का०००० हाहारव (सम्) सं.—चीत्कार ।
 का०००० हाहे (क) सं.—पुतली ; आँख की पुतली ; पाल, पट ।
 का०००० हालि, का०००० हाले (क) सं.—पत्तर, कागज का तख्ता ।
 का०००० हाल [का०००० हाल] (क) वि.—विनष्ट, बरबाद, भग्न ।
 का०००० हालत, का०००० हालित [का०००० हालत] (क) वि.—योग्य, उचित, प्रामाणिक ।
 का०००० हालि (क) सं.—क्रम, रीति, बारी ।
 का०००० हालु (क) वि.—दे. का००००.
 का०००० हिं (क) वि.—पीछे, पीछे का ।
 का०००० हिंगडिसु (तद्) क्रि.—विभक्त कर, बाँट ।
 का०००० हिंगिसु (क) क्रि.—बुझा, शांत कर, दूर कर, सोचने दे ।
 का०००० हिंगु (क) क्रि.—बुझ, शांत, पीछे हट, दूर हो, सूख ।
 का०००० हिंगु (सम्) सं.—हींग, हींग-का पौधा ।
 का०००० हिंवे (क) अ.—उसके बाद ।
 का०००० हिंजरे (क) सं.—चाँदी ।
 का०००० हिंजु (क) क्रि.—पीज, धुन ।
 का०००० हिंटे (क) सं.—मिट्टी का ढोंका, लोँदा ।
 का०००० हिंडि (क) सं.—खली, पिण्याक ।
 का०००० हिंडु (क) क्रि.—निचोड़, हाथ से दबा ; चकोटी काट । सं.—समूह, झुंड, गल्ला ।
 का०००० हिंदल, का०००० हिंदल, का०००० हिंदण का०००० हिंदु, का०००० हिंदिन (क) वि.—पीछे का, पिछला ; पुराना ; बाद का ।

का०००० हिंदे (क) अ.—पीछे ; पश्चात्, बाद में ।
 का०००० हिंपु (क) सं.—बड़प्पन, महानता, बड़पाई, उन्नति ।
 का०००० हिंकलु (क) सं.—खेत का छोटा नाला ।
 का०००० हिंकु (क) क्रि.—छोट, कंघी कर ।
 का०००० हिंके (क) सं.—बीट ।
 का०००० हिंगलिसु (क) क्रि.—अलगा, छोट, अनाज में कंकड़ निकाल ; थैली का मुँह खोल ।
 का०००० हिंगिसु (क) क्रि.—अलगा, छोट ; मंद कर, कम कर ; विस्तृत कर ।
 का०००० हिंगु (क) क्रि.—फैल, विस्तृत हो ; फूल, फूले न समा ; अलग हो, छँट जा ।
 का०००० हिचिकु, का०००० हिचुकु, (क) क्रि.—दबा, घोट ।
 का०००० हिट्टु (क) सं.—आटा ।
 का०००० हिडक (क) सं.—पकड़नेवाला ।
 का०००० हिडत (क) सं.—पकड़ना, पकड़ ; मितव्यय ।
 का०००० हिडलु, का०००० हिड्लु (क) सं.—बुहारी, झाड़ी ।
 का०००० हिडि (क) क्रि.—पकड़ ; धर ; घेर, हाथ में ले ; छीन, रोक ; लग । सं.—मूठ ; मुष्टि ।
 का०००० हिडिके (क) सं.—मुट्टी, मुठिया ; पकड़ ।
 का०००० हिडिकु (क) सं.—अंडकोश ।
 का०००० हिडिके (क) सं.—मुट्टी ; मूठ ।
 का०००० हिडिगलु (क) सं.—बुहारी, झाड़ू ।
 का०००० हिडित (क) सं.—दे. हिडत ।
 का०००० हिडिसु (क) क्रि.—पकड़ा, पकड़वा ; समा, धरा ।
 का०००० हिडुवळिदार (क) सं.—प्रभु, मालिक ।
 का०००० हिणि (क) सं.—ककुद, बैल का कव्व ।
 का०००० हिणिल, का०००० हिणिलु (क) सं.—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी ; चोटी, जूड़ा, कबरी ; मोरपंख ।

ॐ हित (सम्) वि.—उपयुक्त, उचित, ठीक, अच्छा, उपयोगी। सं.—हित; लाभ, फायदा।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—घर का पिछवाड़ा।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—घर का पीतल।

ॐ हितल (क) क्रि.—भिगोये दाने का छिलका दबाकर निकाल।

ॐ हितल (क) सं.—पुंख।

ॐ हितल ॐ हितल ॐ हितल (तद्) सं.—पिपली, बड़ा पीपल।

ॐ हितल (क) सं.—खली; निस्सार वस्तु, छिलका, चूसने के बाद बचा हुआ अंश।

ॐ हितल (सम्) वि.—ठंडा, शीतल। सं.—कोहरा, हिम, तुषार; चंद्रमा; नृप, राजा; अमृत; जल; पानी; घनसार, कपूर; कीर्ति; सफेद; लाल; प्रधान।

ॐ हितल ॐ हितल ॐ हितल (क) क्रि.—नीचा दिखा, घुणित कर; निंदा कर।

ॐ हितल (सम्) सं.—सोना, संपत्ति, धन। ॐ हितल (सम्) सं.—ब्रह्मा।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—नारंगी।

ॐ हितल (क) वि.—बड़ा। क्रि.—तोड़, टुकड़े कर; नाश कर; बाहर खींच, म्यान से निकाल।

ॐ हितल (क) सं.—बढ़पन, महानता।

ॐ हितल (क) वि.—बड़ा।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) क्रि.—हाथ से (फल आदि) दबा।

ॐ हितल (क) क्रि.—दे. ॐ हितल.

ॐ हितल (क) सं.—दरार।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल

ॐ हितल (क) सं.—ककुद्, बैल का कुट्ट। ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—जड़, अंकुर।

ॐ हितल (क) क्रि.—रस निकाल, दवाकर रस निकाल।

ॐ हितल (क) अ.—दे. ॐ हितल.

ॐ हितल (क) अ.—इस प्रकार, इस ढंग से, इस तरह।

ॐ हितल (क) सं.—वतिया।

ॐ हितल (क) क्रि.—तैर; बह; घसीट; तान।

ॐ हितल (सम्) वि.—त्यक्त, छोड़ा हुआ, वर्जित; अल्पतर; नीच।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) क्रि.—चूस, रस पी। सं.—एक अभूषण।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—तुरई।

ॐ हितल (क) सं.—मोरपंख, मोरपंख की आँख।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—मुर्गा।

(१) ॐ हितल (अ. दे.) सं.—हंडी।

(२) ॐ हितल (क) सं.—छोटा गाँव।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—सुँह में फफोला या फुंसी।

ॐ हितल (क) क्रि.—गाड़; दफन कर।

ॐ हितल (क) क्रि.—गड़वा।

ॐ हितल (क) क्रि.—घुस, प्रवेश कर।

ॐ हितल (क) सं.—खिचड़ी।

ॐ हितल (क) सं.—गर्वीला या घमंडी मनुष्य।

ॐ हितल (क) सं.—पागल आदमी। ॐ हितल—पागल स्त्री।

ॐ हितल (क) सं.—पागलपन। — ॐ हितल तन=पागलपन।

ॐ हितल (क) सं.—छत्ता।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—पहनावा, वस्त्र; नाड़ी।

ॐ हितल (क) क्रि.—उत्पन्न कर, जन्म

दे, जन, पदा कर।

ॐ हितल (क) क्रि.—पैदा हो, जन्म ले, उत्पन्न हो; निकल। सं.—जन्म, उत्पत्ति; दर्पी, लाठ का चमचा।

ॐ हितल (क) सं.—उत्पत्ति, उपलब्धि, बगीचे या खेत से प्राप्त होनेवाली वस्तु।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) क्रि.—हूँ, तलाश कर, खोज, जाँच-पड़ताल कर।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—लड़का, बालक—ॐ हितल (क) सं.—लड़कपन, (बचपन); लड़के का-सा स्वभाव।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—लड़की, बालिका।

ॐ हितल (क) सं.—पुड़ीया, चूर्ण, चुकनी, धूल।

ॐ हितल (क) क्रि.—दे. ॐ हितल.

ॐ हितल (क) सं.—लड़कपन। क्रि.—झाड़ दे।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—इमली।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—घाव, फुंसी, फोड़ा।

ॐ हितल, ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—पूर्णमा, पूनम।

ॐ हितल (सम्) वि.—हवन किया हुआ, होम किया हुआ।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—बल्मीक, चोंची।

ॐ हितल (क) क्रि.—घुस, गड़ जा, समा। ॐ हितल, ॐ हितल (क) क्रि.—धँसा, भरा।

ॐ हितल (क) सं.—जरायु।

ॐ हितल (क) क्रि.—समा; छिप, गुप्त रह; छिपाया जा। सं.—साक्षा; रक्षण, रक्षा।

ॐ हितल, ॐ हितल (क) सं.—स्नेह, रिश्ता, नाता।

हृद्दे (अ. दे.) सं.—ओहदा (अरबी) ; स्थान, पद ।

हृद् (क) सं.—फूल, पुष्प ।

हृद् (तद्) सं.—भू, भौह. भृकुटी ।

हृद् (अ. दे.) सं.—उत्साह ; जोश, गर्व ; उत्तेजना ।

हृद् (क) क्रि.—बरस, डाल ; मार, पीट । हृद् (क) सं.—भूसा, भूसी ।

हृद् (क) सं.—शोर-गुल ; चीत्कार, चिल्लाहट ।

हृद् (क) क्रि.—डलवा, पिटवा ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् ।

हृद् (क) वि.—रुक्ष, कड़ा, खुरखुरा ।

हृद् (क) सं.—चवेना, भूजा चटपटा ।

हृद् (क) सं.—कुलित्थ, कुलथी ।

हृद् (क) क्रि.—भून, भूज । सं.—तिरछा किया हुआ ; डोरी, रस्सी, धागा ; रीढ़ की हड्डी ।

हृद् (क) सं.—ईश्यालु व्यक्ति ।

हृद् (क) सं.—एक चर्म रोग, खुजली, चर्म की रुक्षता ; जुल-पित्ती नामक रोग ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् ।

हृद् (क) सं.—सार, सत्व ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् ।

हृद् (क) सं.—तृण, घास, पुआल ।

हृद् (क) क्रि.—पता लग, प्रकाश में आ ।

हृद् (क) सं.—समृद्धि ; ऐश्वर्य ।

हृद् (क) सं.—बाध, व्याघ्र ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) क्रि.—समृद्ध हो, समुन्नत हो ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद् ।

हृद् (क) सं.—हिरन, हरिणी ।

हृद् (क) सं.—फूल बेचने वाला ।

हृद् (क) सं.—फूल, पुष्प, कुसुम ।

हृद् (अ. दे.) सं.—होशियार, बुद्धिमान, उत्साही, सजग ।

हृद् (क) सं.—हृद्, असत्य । क्रि.—

हृद् बोल या कह ।

हृद् (क) सं.—हृद् बोलनेवाला ।

हृद् (क) सं.—खटाई, खटास । क्रि.—

खटा हो । वि.—खटा ।

हृद् (क) सं.—दे. हृद् (ग्रा.) ।

हृद् (क) सं.—कीड़ा, कीट ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद्, प्रारंभ कर ; प्रबंध कर, ठीक कर, व्यवस्था कर ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) क्रि.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

हृद् (क) सं.—हृद्, हृद् ।

लै००५० हेय

लै००५० हेय (क) वि.—बड़ा, घना, गुरु ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—चला, हिला, पीछे हटा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—बढ़प्पन, महानता ; वैभव, विलास ; उमंग ।
 लै००५० हेय (क) सं.—अतिशय, आधिक्य, वृद्धि, समृद्धि ; उन्नति ; गर्व, घमंड ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—चुन, वीन ; कंधी कर ।
 लै००५० हेय (क) वि.—बड़ा (समास में) ।
 लै००५० हेय (क) सं.—कंधा, स्कंध ।
 लै००५० हेय (क) सं.—घूस ।
 लै००५० हेय (क) सं.—आधिक्य, समृद्धि ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लै००५० हेय (क) सं.—सावधानी, जागृति ।
 लै००५० हेय (क) सं.—बढ़ती, समृद्धि, गर्व, घमंड ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—घमंड कर ; फूले न समा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लै००५० हेय (क) सं.—बढ़प्पन, बढ़ाई, महानता, महत्त्व । अ.—अधिक, बहुत ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—अधिक हो, प्रवृद्ध हो ; (तरकारी) काट, छोटे-छोटे टुकड़े कर । अ.—अधिक ।
 लै००५० हेय (क) सं.—दे. लै००५० हेय ।
 लै००५० हेय (क) सं.—बाँस की तीली ; गोदना, सैनिकों को डेर पर बुलाने के लिए नगाड़ा बजाना ।
 लै००५० हेय (क) सं.—पद, पग, कदम, चरण ।
 लै००५० हेय (क) सं.—मिट्टी का ढेला, लोँदा, कच्ची ईंट ; छुरमुट ।
 लै००५० हेय (क) सं.—आघात, चोट ।
 लै००५० हेय (क) सं.—साधिन, प्रेमिका, पत्नी ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लोँदा, मिट्टी का ढेला ।
 लै००५० हेय (क) सं.—गर्दन का पिछला भाग ।

लै००५० हेय (क) सं.—टोकरी ।
 लै००५० हेय (क) सं.—चालों के झड़ने का रोग ।
 लै००५० हेय (क) सं.—फन ।
 लै००५० हेय (क) सं.—मूर्ख मनुष्य । लै००५० हेय (क) सं.—स्त्री. लिं. ।
 लै००५० हेय (क) सं. = लै००५० हेय (क) सं.—मूर्खता ।
 लै००५० हेय (क) सं.—मूर्ख स्त्री ।
 लै००५० हेय (क) सं.—स्त्री, लड़की, औरत ; मादा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लाश, शव ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—उलझ पड़, जूझ, झगड़, संघर्ष कर ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लै००५० हेय (क) सं.—बटाई, बुनाई ।
 लै००५० हेय (क) सं.—वेणी, चोटी ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—वेणी बांध या केश-शृंगार कर । मूँथ ; बट ।
 लै००५० हेय (क) सं.—लै००५० हेय (क) सं.—डर, भय, भीति ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—डर जा, भीत हो ; घबरा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—प्रत्यंचा, धनुष की डोरी ।
 लै००५० हेय (क) सं.—रथ के पहिये की गति को रोकने के लिए उपयोग में लायी जानेवाली बड़ी रंभा या टेक ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—जम जा (दही का जमना) । सं.—जमना ; तृणमयी भूमि, तृण-संकुल ।
 लै००५० हेय (क) सं.—अंगूठा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—अंगूठा ।
 लै००५० हेय (क) वि.—बड़ा (समास में) ; जैसे—लै००५० हेय—बड़ा वृक्ष ।
 लै००५० हेय (क) सं.—गर्व, अभिमान, गौरव, बढ़प्पन ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय, लै००५० हेय,

लै००५० हेय (क) सं.—जूड़ा ; वेणी ।
 लै००५० हेय (क) सं.—नारंगी ।
 लै००५० हेय (क) क्रि.—खरोंच, खुरच, छील । सं.—साँप की केंचुली ; तेल पोतना, तेल देना ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय (क) क्रि.—जन, जन्म दे ; पा ; दही का जमना ।
 लै००५० हेय (क) वि.—दूसरा, अन्य ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय (क) सं.—प्रसव, प्रसूति ।
 लै००५० हेय (क) सं.—पीछे होना ; अधर्चंद्र ।
 लै००५० हेय (क) सं.—बुराई, हाति ; निष्ठुरता ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय (क) सं.—नाम ; मूँग । —लै००५० हेय (क) सं.—मूँग की दाल ।
 लै००५० हेय (क) सं.—बालों का जूड़ा ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय (क) सं.—लला, विकलांग ।
 लै००५० हेय (क) अ.—संबोधनात्मक अव्यय ।
 लै००५० हेय (क) अ.—कैसे ।
 लै००५० हेय (क) सं.—पागलपन ।
 लै००५० हेय (क) सं.—पागल आदमी ।
 लै००५० हेय (क) अ.—कैसे ।
 लै००५० हेय (क) सं.—भीरु, डरपोक । —लै००५० हेय = भीरुता ।
 लै००५० हेय (क) सं.—कारण ; उद्देश्य ; जरिया, साधन ।
 लै००५० हेय (क) सं.—भूत, प्रेत ।
 लै००५० हेय, लै००५० हेय (क) सं.—लै००५० हेय ।
 लै००५० हेय (क) सं.—सोना, सुवर्ण ; काले या भूरे रंग का घोड़ा ।
 लै००५० हेय (क) सं.—हेमंत ऋतु, अगहन और पूस मास ।
 लै००५० हेय (क) वि.—त्यागने योग्य, छोड़ने योग्य, तुच्छ । सं.—संकल्प ; क्रोध ; बहुत दूरी ; दुःख ; दुःख का विषय ; जगुप्सा ।

ढैरु हेरु (क) वि.—बडा, महान् (समास में) ।

ढैरु हेरल (क) अ.—अधिक, बहुत ।

ढैरु हेरले (क) सं.—नारंगी ।

ढैरु हेरल (क) अ.—दे, ढैरु ।

ढैरु हेरले (क) सं.—नारंगी ।

ढैरु हेर, ढैरु हेरु, [ढैरु हेर] (क) क्रि.

—लाद, बोझा, डाल ; फैला, व्यक्त कर ।

सं.—बोझा, भार ।

ढैरु हेरु (क) सं.—मल, विष्टा, पाखाना ।

ढैरु हेव (क) सं.—लजा, शर्म ।

ढैरु हेवरिसु (क) क्रि.—जुगुप्सा व्यक्त कर ; संकोच कर ।

ढैरु हेसिके, ढैरु हेसिगे (क) सं.—

गंदगी, जुगुप्सा, धिनौनी वस्तु ; घृणा ।

ढैरु हेलिके, ढैरु हेलिके (क) सं.—

कथन, कहना ; बात ; आज्ञा, आदेश ।

ढैरु हेलिवु, ढैरु हेलिवु (क) सं.—

उडती खबर ।

ढैरु हेलिसु, ढैरु हेलिसु (क) क्रि.—

कहला, कथन करा या करवा ।

ढैरु हेरु, ढैरु हेरु (क) क्रि.—कह, बोल,

बतला ; आज्ञा दे ।

ढैरु हेग (सम्) सं.—स्वातं ब्राह्मणों की एक

शाखा ।

ढैरु हेमत (सम्) सं.—हिमत ऋतु से

संबंधित ; जाड़े का मौसम ।

ढैरु हों (क) सं.—सोना, सुवर्ण (समास में) ।

ढैरु होंगर, ढैरु होंगर (क) सं.—

एक वृक्ष (The Indian Coral tree) ।

ढैरु होंगिय (क) सं.—सुवर्ण मृग ;

तेन्दुल—सा एक मृग ।

ढैरु होंगु (क) क्रि.—फूल, फूल जा,

सूजन हो ; फूले न समा, अधिक आनंदित

हो ।

ढैरु होंगे (क) सं.—स्यंदन या तिनिश वृक्ष,

तमाल वृक्ष (The Indian beech

tree) ।

ढैरु होंचु (क) सं.—ताक में रह, घात

में रह ; प्रतीक्षा कर ।

ढैरु होंड (क) सं.—गड्ढा, गर्त ; कृत्रिम

तालाब ।

ढैरु होंत (तद्) सं.—पंथ, पथ, रास्ता ।

ढैरु होंदसु, ढैरु होंदिसु (क)

क्रि.—मिला, ठीक कर, जोड़ ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—ठीक लग, मिल,

जुड़, उपयुक्त हो, योग्य हो ; मिल, प्राप्त

हो, पा ; मर जा, मृत हो ।

ढैरु होंकरि (क) सं.—कै, थूक ।

ढैरु होंकलु, ढैरु होंकलु (क) सं.—

नामि ।

ढैरु होंकु (क) सं.—बाना ।

ढैरु होंकुलु, ढैरु होंकुलु (क)

सं.—नामि ।

ढैरु होंगरु (क) सं.—कांति, चमक ।

ढैरु होंगलते, ढैरु होंगलिके,

ढैरु होंगलते, ढैरु होंगलिके,

ढैरु होंगलते, ढैरु होंगलते (क)

सं.—प्रशंसा, स्तुति, सराहना ।

ढैरु होंगलु, ढैरु होंगलु (क) क्रि.—

प्रशंसा कर, सराहना कर ।

ढैरु होंगु (क) क्रि.—जा, गमन कर, घुस,

प्रवेश कर ।

ढैरु होंगे (क) सं.—धुँआ, धूम । क्रि.—

धुँआ उठ ; धुँआ उत्पन्न कर ; क्रोध

उत्पन्न कर ।

ढैरु होंचु (क) क्रि.—ढाँक, ओढ़ा, डाल,

रख ; छिपकर रह ।

ढैरु होंद (क) सं.—बहरा आदमी ।

ढैरु होंदु (क) भूसा, छिलका ।

ढैरु होंदु (क) सं.—ढक्कन, आवरण ; पेड़

का खोखला ; पेट ; तोंद ।

ढैरु होंदु (क) सं.—पेड़ का खोखला ।

ढैरु होंदुके (क) सं.—तृण विशेष जिसे

हाथी खाता है ।

ढैरु होंदु (क) सं.—बिल, छेद, सुराख ।

ढैरु होंदु (क) सं.—मारना,

थपेड़ा ।

ढैरु होंदु, ढैरु होंदु (क) क्रि.—मार,

पीट, चोट कर ।

ढैरु होंदु (क) सं.—अनाज की बाल ; धान

का मुख्य धरन या बछा ।

ढैरु होंदुके (क) सं.—संघर्ष, युद्ध ;

कलह ।

ढैरु होंदु (क) सं.—उत्तरदायित्व, जिम्मे-

दारी, जिम्मा ; जामिन ।

ढैरु होंदु, ढैरु होंदु, ढैरु होंदु

होंदु, ढैरु होंदु, ढैरु होंदु (क) सं.—

प्रातःकाल, सवेरा ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—(दिया) जला,

सुलगा ; ओढ़ा ; बर्तन के निचले भाग में

('दर) खाने की चीज़ को जलने दे ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—(दिया) जल, सुलगा ;

बर्तन के निचले भाग में ('दर) खाने की

चीज़ जल जा । सं.—समय, काल ; दायिका,

जला हुआ भात या खाने की चीज़ ।

ढैरु होंदु (क) सं.—प्रातःकाल,

सवेरा ।

ढैरु होंदु (क) सं.—संताप, दुःख,

परेशानी ।

ढैरु होंदुके, ढैरु होंदुके (क) सं.—

ओढ़नी, अच्छादन, आवरण ।

ढैरु होंदु (क) सं.—बिल ; पेड़ का

खोखला ।

ढैरु होंदु, ढैरु होंदु (क) सं.—

झुरमुट, झाड़ी ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—ढाँक, ओढ़ा,

अच्छादित कर ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—ओढ़, पहन ।

ढैरु होंदुके (क) सं.—ओढ़नी, अच्छादन ;

छत ।

ढैरु होंदु (क) क्रि.—दे. ढैरु होंदु.

ढैरु होंदु (क) क्रि.—दे. ढैरु होंदु. सं.—

तरकस, तूणीर ; झुरमुट, कुंज ।

झारुं होरुं (क) सं.— नथुना ; धन
या पैसे का परिवर्तन ।

ಹೊಲಿಗೆ ಹೊಲಿಗೆ (ಕ) ಸಂ.—ದೇ. ಹೊಲಿಗೆ.

‘मौल्यं, होल्ले (क) सं.—नथुना ।

ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.—
ಗರ, ಸಹರ ।
ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ನದಿ ।
ಹೊ (ಕ) ಅ.— ಆಶ್ಚರ್ಯಸೂಚಕ ಅನ್ವಯ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಸಾಧನ, ಮಾರ್ಗ, ರಸ್ತಾ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಾ, ಗಮನ ಕರ
ಹೊಕ್ಕು, ಪಾಲ ಜಾ; ಸಂಭೋಗ ಕರ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಸಾಧನ, ಸಮಾನತಾ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಪೆಡ್ಡು ಕಾ ಖೊಖಲಾ;
ಖೊಖಲಾಪನ ।
ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಬಕರಾ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಯಜ್ಞ; ಭಸ್ಮ;
ಪಾಕಲಯ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ತಾಲ್ಲೂಕಾ ಕಾ ಏಕ
ಮಾಗ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಹೊಮ, ಹವನ ।
ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಬೆಲ; ಭೆಸಾ; ಬಧಿಯಾ
ಕೆಯಾ ಹುಖಾ ಬೆಲ ।
ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಬುಡ
ಕರ, ಸಂವರ್ಷ ಕರ, ಲಡ । ಸಂ.— ಛೇದ, ರಂಧ್ರ, ಬಿಲ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.—
ಹಾಮ, ಧಂಧಾ ।

ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಸೇವಕ, ನೌಕರ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.—
ಸಮಾನ ಹೊ, ಸದೃಶ ಹೊ, ತುಲ್ಯ ಹೊ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ಸಾಮ್ಯ, ಸಮಾನತಾ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ತುಲನಾ ಕರ,
ಸಾದೃಶ್ಯ ದಿಖಾ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ದೇ. ಹೊಕ್ಕು.
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ)
ಸಂ.— ದೇ. ಹೊಕ್ಕು.
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಕ್ರಿ.— ಜಾನೆ ಕಿ ಚಾಹ ಕರ,
ಜಾನೆ ಮೆಂ ತಸಾಹ ದಿಖಾ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ತದ್)
ಸಂ.— ಪೊಲಿಕಾ (ತದ್); ಗೊಳ್ಳು ಕೆ ಆಟೆ ಯಾ
ಸೂಜಿ ಸೆ ಬನಾಯಿ ಜಾನೆವಾಲಿ ಮಿಠಾई ವಿಶೇಷ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, [ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು] (ಕ) ಸಂ.—
ಫೌಕ, ಟುಕಡಾ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ)
ಸಂ.— ಕೊಡರ, ಪೆಡ್ಡು ಕಾ ಖೊಖಲಾ; ಬಿಲ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ದೇ. ಹೊಕ್ಕು.
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಅ. ದೇ.) ಸಂ.— ಹೊಕ್ಕು ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಕ) ಅ.— ಹೌ. ಠೀಕ, ಸಹಿ ।

ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು, ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು; (ಕ) ಅ.—
ಕೆಸೆ. ಕಿಸ ಪ್ರಕಾರ (ವ್ಯಾ. ಭಾ.) ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಗಹರಿ ಫೀಲ; ಬಡಾ
ಸರೋವರ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ವಿಜಲಿ; ನದಿ,
ಸರಿತಾ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ವಿ — ಛೊಟಾ; ಕಮ. ಥೊಡಾ ।
ಸಂ.— ಹಸ್ವ ಸ್ವರ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಶಬ್ದ. ಶೋರ-ಗುಲ.
ಕ್ಷೀಣತಾ, ನಾಶ, ಛೊಟಾಪನ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಸಂ.— ಆಹ್ವಾಹ, ಪ್ರಸನ್ನತಾ;
ಹರ್ಷ, ಆನಂದ ।
ಹೊಕ್ಕು ಹೊಕ್ಕು (ಸಮ್) ಮಂ.— ಇಂದ್ರ ಕಾ ವಜ್ರ;
ಬಿಜಲಿ; 'ಶಹಾಕಿ ವೃಕ್ಷ' ।

೪ ಲ

೪ ಲ—ಕನ್ನಡ = ವರ್ಣಮಾಲಾ ಕಾ ೪೯ ವಾ ಅಕ್ಷರ ।
೪ ಲ ಲೊಕ್ಕು (ಕ) ಸಂ.— ನಾರಿಯಲ ಕೊ ಹಿಲಾನೆ ಸೆ
ತಸಕೆ ಅಂದರ ಕೆ ಪಾನಿ ಸೆ ನಿಕಲನೆವಾಲಿ ಧ್ವನಿ ।

೬ ಲ

೬ ಲ—ಕನ್ನಡ = ವರ್ಣಮಾಲಾ ಕಾ ೫೦ ವಾ ಅಕ್ಷರ ।

ಸಮಾಪ್ತ

ಕತಿಪಯ ಮುಹಾವರೆ

ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು ಅಚ್ಚರಿಪಡುವುದು, ಅಚ್ಚರಿಬಡು
ವುದು ಅಚ್ಚರಿಬಡುವುದು, ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು
ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು—ಆಶ್ಚರ್ಯ ಚಕಿತ ಹೊನಾ, ತಾಜ್ಜುಬ
ಕರನಾ ।
ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು, ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು
ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು—ನಾಶ ಕರನಾ, ಬರವಾದ ಕರನಾ ।
ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು ಅಚ್ಚರಿವಡುವುದು—ಪ್ರಕಾಶಿತ
ಹೊನಾ, ಚಮಕನಾ, ಸುಂದರ ಲಗನಾ ।

ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು ಅಡವಿಪಾಲಾಗುವುದು—ಅನಾಥ
ಹೊನಾ, ಅಸಹಾಯ ಹೊನಾ; ದಿಶಾಭ್ರಮೆ ಹೊನಾ;
ವಿನಮ್ರ ಹೊನಾ ।
ಅಡವಿ ಬೀಳುವುದು ಅಡವಿ ಬೀಳುವುದು—ಬರವಾದ
ಹೊನಾ, ವೇಕಾರ ಹೊನಾ, ವ್ಯರ್ಥ ಹೊನಾ ।
ಅಡವಿ ಬೀಳುವುದು ಅಡವಿ ಬೀಳುವುದು—ಬೀಚ ಮೆಂ ಪಡನಾ,
ವಿಘ್ನ ಹೊನಾ, ರುಕಾವಟ ಬನನಾ; ನಮಸ್ಕಾರ
ಕರನಾ, ಪ್ರಣಾಮ ಕರನಾ ।

ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು—ಹಾಕುವುದು—
ಅಸಂತೋಷ ಪ್ರಕಟ ಕರನಾ, ಮುಂದೆ ಮೊಡನಾ ।
ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು—ಬಾಧಾ ತಪಸ್ವಿತ
ಕರನಾ; ವಿರೋಧ ಕರನಾ ।
ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು—ಸಾಮನೆ ರಖನಾ;
ಕ್ಷಮಾ ಮಾಗನಾ, ಮಾಫಿ ಮಾಗನಾ ।
ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು ಅಡವಿವಾಳಾಗುವುದು—ಪಾರ ಕರನಾ;
ದೂಸರಿ ಕೊರ ಚಲೆ ಜಾನಾ ।

ಕಡೆಹಾಯಿಸುವುದು ಕಡೆಹಾಯಿಸುವುದು—ಪಾರ करना;
 ಬಚಾನಾ, ರಕ್ಷಾ करना ।
 ಕಡ್ಡಮಾಡುವುದು ಕಡ್ಡಮಾಡುವುದು — (किसी को)
 खराब करना या हानि पहुँचाना ।
 ಕಲ್ಲು ಹಾಕುವುದು ಕಲ್ಲು ಹಾಕುವುದು — दूसरे के काम को
 खराब करना या उसमें अड़चन डालना ।
 ಕಾಲಾಡುವುದು ಕಾಲಾಡುವುದು—घूमना; सैर करना ।
 ಕಾಲಿಗೆ ಬೀಳುವುದು ಕಾಲಿಗೆ ಬೀಳುವುದು, ಕಾಲು
 ಬೀಳುವುದು ಕಾಲು ಬೀಳುವುದು—पैरों में पड़ना ;
 गिरागिराना, याचना करना ।
 ಕಾಲು ಕಟ್ಟುವುದು ಕಾಲು ಕಟ್ಟುವುದು—दूसरे के पैरों
 में पड़ना ; शादी या विवाह करना ।
 ಕಾಲು ಮೂಡುವುದು ಕಾಲು ಮೂಡುವುದು — आरंभ
 करना, श्रीगणेश करना ।
 ಕಾಲುನೆಟ್ಟುವುದು ಕಾಲುನೆಟ್ಟುವುದು—झगड़ने के लिए
 तयार होना , कलह करना ।
 ಕಾಲ್ತೆಗೆವುದು ಕಾಲ್ತೆಗೆವುದು, ಕಾಲು ತೆಗೆವುದು
 ಕಾಲು ತೆಗೆವುದು—भाग जाना ; चपत होना,
 नौ-दो ग्यारह होना ।
 ಕೆಸುಗಣ್ಣುವುದು ಕೆಸುಗಣ್ಣುವುದು — आँखें लाल
 करना , क्रुद्ध होना ।
 ಕೆಳ್ಳಡಿಸುವುದು ಕೆಳ್ಳಡಿಸುವುದು—नीचा दिखाना ।
 ಕೆರುವುದು ಕೆರುವುದು — (जोर से गरजना),
 लाल पीला होना ।
 ಕೆಯ್ ಕಟ್ಟುವುದು ಕೆಯ್ ಕಟ್ಟುವುದು — ग़रीब
 होना । विनीत होना ।
 ಕೆಯ್ ಕಾಲ್ ಕಟ್ಟಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಕೆಯ್ ಕಾಲ್
 कटिकोल्लवुदु—दीनता से याचना करना,
 गिरागिराना ।
 ಕೆಯ್ ಕಾಲು ಕೆಡುವುದು ಕೆಯ್ ಕಾಲು ಕೆಡುವುದು—
 किंकर्तव्यविमूढ होना ।
 ಕೆಯ್ ಕಾಲ್ ಬೀಳುವುದು ಕೆಯ್ ಕಾಲ್ ಬೀಳುವುದು—
 पैरों में पड़ना, दीनता से याचना करना ।
 ಕೆಯ್ ಕಾಲು ನಡೆಯುವುದು ಕೆಯ್ ಕಾಲು ನಡೆಯುವುದು
 जान में जान आना ; धीरज होना ।
 ಕೆಯ್ ಕೊಳ್ಳುವುದು ಕೆಯ್ ಕೊಳ್ಳುವುದು—प्रारंभ करना,
 हाथ में लेना ।
 ಕೆಯ್ ಕೆಡುವುದು ಕೆಯ್ ಕೆಡುವುದು — अपने अधिकार
 को खोना ; हार जाना ।
 ಕೆಯ್ ಕೊಡಿಸುವುದು ಕೆಯ್ ಕೊಡಿಸುವುದು—हाथ

जोड़, प्रार्थना कर।
 कैयू बिडुवुदु — (बीच में)
 सहायता न देना, मदद न करना।
 कैयू बिडुवुदु — हाथ फैलाना,
 मांगना।
 कैयू हाकुवुदु — किसी काम,
 में हाथ लगाना।
 गंडुबीलुवुदु — उलझन होना,
 उलझ जाना; पीछे पड़ना।
 गंडुमूटे कटुवुदु —
 बिस्तर गोल करना, जाने के लिए तैयार
 होना।
 गंडुमाडुवुदु = कैयू
 माडुवुदु — नीचा दिखाना,
 अपमान करना।
 गुंडांतर माडुवुदु —
 नींव डालना।
 गुंडु हारिसुवुदु — गोली
 मारना।
 गुंडा हाकुवुदु — चल
 बसना, मर जाना।
 जल (झल) नाधिसुवुदु — चल (छल) साधिसु-
 वुदु — बदला लेना।
 झल हिडियुवुदु — छलपूर्वक
 बात करना, धोखा देना।
 जंगल कैयूवुदु — जब कोचुकोल्लुवुदु
 डींग हांकना, घमंड करना।
 जंगल तेगुवुदु — झगड़ा,
 मोल लेना।
 जंगल हचुवुदु — फूट पैदा
 करना।
 जंगल जीव ईवुदु — जान देना।
 जंगल एतुवुदु — जान की रक्षा
 करना।
 जंगल कोडुवुदु — जान देना।
 जंगल हिडियुवुदु — जीव
 रक्षना, किसी के जीवन की रक्षा करना।
 जंगल कटुवुदु — कमर कसना।
 जंगल हाकुवुदु — धोखा
 देना; झूठों में धूल झाँकना।

ढोलू चोच्चुवुदु डोलू कोच्चुवुदु—डिंग
 हांकना ।
 तले चोच्चुवुदु तले कोच्चुवुदु—सिर देना,
 प्राणों को त्यागना ।
 तले तोगिसुवुदु तले तूगिसुवुदु — सिर
 हिलाना, स्वीकार करना ।
 तले मोडुवुदु तले माडुवुदु — युद्ध में
 सहायता देना ; सिर मुडाना ; हजामत
 करना ।
 तले बागिसुवुदु तले बागिसुवुदु — सिर
 नवाना, नमस्कार करना ।
 तले होडुकोळुवुदु—
 सिर धुनना ।
 दंगे वलुवुदु - दंगा करना,
 विद्रोह करना ।
 दबायिसुवुदु — आडे हा
 लेना ।
 दारि कडुवुदु — राक
 अटकना ।
 दिक्कुगेडुवुदु—
 होना ।
 द्रविसुवुदु—हृदय पिघल जाना
 नडुकडुवुदु — कमर कसना ।
 वंगनाम हाकुवुदु
 धोखा देना ।
 पत्ते हच्चुवुदु—पता लगाना
 बीमारे तगलुवुदु—बीमार
 मूलेगे बीलुवुदु—
 योगी होना ।
 मूलेगे हाकुवुदु—नि
 योगी होने के कारण फेंकना ।
 मेले बीलुवुदु—दूट पड़ना
 सोप्पु हाकुवुदु —
 करना , ध्यान देना ।
 हुडुगाट आडुवुदु
 खिलावाड करना , लड़कों की-सी
 रखना ।
 होडुगे होडुयुवुदु
 दूसरों की आजीविका या कमाई में
 डालना ।